CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

MANJUL - MANJUSHA

मञ्जुल-मञ्जूषा

(सुभाषित - कोष)

SHASTRI - PANDEY

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

MANJUL - MANJUSHA

मञ्जुल-मञ्जूषा

संशोधित संस्करण

REVISED EDITION

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

MANJUL - MANJUSHA

मञ्जुल-मञ्जूषा

(1574 सुभाषित-कोष)

सम्पादक :

श्री वेदप्रकाश शास्त्री ❋ प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय

प्रबन्ध सम्पादक :

राधेश्याम गुप्ता

नीता

नीता प्रकाशन

ए-4, रिंग रोड, साउथ ऐक्स्टेंशन, भाग-1, नई दिल्ली - 110049

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकाशक :

श्रीमती शान्तिदेवी गुप्ता

नीता प्रकाशन

ए-4, रिंग रोड, साउथ एक्सटेन्शन, भाग-1, नई दिल्ली - 110049

दूरभाष : 4636010, 30 फैक्स : (91-11) 4636011

ई-मेल : neetabooks@vsnl.com
Visit us at : www.neetaprakashan.com

P.O. Box : 3853

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन सुरक्षित हैं।

प्रथम संस्करण 1000 प्रतियाँ
द्वितीय संस्करण संशोधित 1000 प्रतियाँ

मूल्य : 550/-

लेजर कम्पोज़िंग—आकृति प्रिन्टोग्राफिक्स, नई दिल्ली-110058

मुद्रक : Gopsons Papers Ltd., Noida

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

JUSTICE RANGNATH MISHRA
MAMBER OF PARLIAMENT
(RAJYA SABHA)

सत्यमेव जयते

AB-89, SHAHJAHAN ROAD
NEW DELHI - 110 011
TEL.: 3782204 FAX : 3383217
E-mail : rmisra@sansad.nic.in

3rd April 2001

Manjul–Manjusha is a collection of 1574 pieces of advice and words of wisdom and guidance from the Vedas and other age-old Sanskrit texts and sayings. They cover various topics and situations.

The treatment is both innovative and scientific. The index gives easy reference to the subject matter.

The original text in Sanskrit with translations in Hindi and English not only helps to understand and coordinate but also improve one's command on the languages.

Rangnath Misra

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकाशकीय

"मञ्जुल-मञ्जूषा" नामक इस रत्नमाला को आप पाठकों के कर-कमलों में अर्पित करते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है।

"बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय" रूपी कल्याण-भावना से व्याप्त हमारी सांस्कृतिक विरासत ही आज विश्व-शान्ति और सामाजिक समरसता का आधार है। वैदिक वाङ्मय और संस्कृत साहित्य के ग्रन्थ ऐसे मञ्जुल वचनों से भरे पड़े हैं, जो व्यक्ति और समाज के पुनरुत्थान के लिए प्रेरक का कार्य कर सकते हैं। भारतीयों के मानस-पटल पर युगों से स्मृत ये सुभाषित, संस्कृत भाषा के ऐसे अमूल्य धरोहर हैं, जिनमें हमारे कवियों के अनुपम अनुभव समाहित हैं।

चिरकाल से मेरे मन में यह उत्कण्ठा थी कि एक ऐसा सुभाषित-संग्रह (आंग्ल अनुवाद के साथ) तैयार किया जाए जो सामान्य व्यक्ति-विशेष के लिए बोधगम्य होने के साथ-साथ हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा का ज्ञान रखने वालों के लिए भी उपादेय हो। इन सुभाषितों को अपनी वाणी में समाहित करने पर वाणी तो अलंकृत होगी ही, साथ ही जीवन के स्तर पर इन्हें सामान्य-व्यवहार में लाकर मानव स्व की भावना से ऊपर उठकर अपने परिवार, समाज और राष्ट्र-निर्माण तथा खुद के व्यक्तित्व-निर्माण के लिए भी कृतसंकल्प हो सकेगा।

विद्वान लेखकों श्री वेदप्रकाश शास्त्री तथा प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय जी ने अपने अथक प्रयास से मेरी इस इच्छा को साकार किया है। मैं इन लेखकों का अत्यन्त आभारी हूँ। इसके अतिरिक्त डा० शशिकान्त पाण्डेय के प्रति भी मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, जिनके सहयोग से इस पुस्तक को इस रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत कर सका।

आप पाठकवृन्द इन सुभाषितों से लाभान्वित होंगे, ऐसी आशा करता हूँ।

राधेश्याम गुप्ता
प्रबन्ध सम्पादक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Vachaspati Upadhyaya

Vice Chancellor
Sh. Lal Bahadur Shastri
Rashtriya Sanskrit Vidyapeeth

Member Secretary
Maharshi Sandipani Rashtriya
Vedavidya Pratishthan, Ujjain (M.P.)

April 02, 2001

FOREWORD

I feel immense pleasure in introducing to the public in general and to lovers of Sanskrit in particular, the collection of anthologies entitled **"MANJUL MANJUSHA"** which has been edited by Shri Veda Prakash Shastri and Prof. Ramesh Kumar Pandey in which Hindi and English translations have been provided for the benefit of large number of readers.

This collection of verses contains anthologies from the Vedas, the Upanishads, the Puranas, the Smritis and literature related to Niti. The Editors have classified the entire material provided in the collection under 16 heads giving the readers wide choice for enrichment of their knowledge in different fields. The entire collection projects the art of cultivating in oneself worldly wisdom that has an art of getting along in the world. One of the characteristics of this collection is its alphabetical arrangement of the verses, although it may seem uncomfortable in view of the fact that it transgresses the chronological order of the texts. The Editors have taken special care to make the translation reader-friendly.

The authors avowed aim is to put before younger generation a series of thought which will instil in them the "Art of Living" and will teach them the "Science of Being". I am quite confident that each gem of thought will be read by the young generation with profit and pleasure for the fulfilment of the aims and objectives of life.

I take this opportunity of congratulating the proprietor of M/s. Neeta Prakashan for publishing such a useful collection for the general public, specially for the younger generation. I hope they will keep their interest high in this field, which, unfortunately, has been neglected for quite some time now.

I wish the Editors and the publishers a grand success in their future endeavours of this kind.

वाचस्पति उपाध्याय

(Vachaspati Upadhyaya)

Sh. Lal Bahadur Shastri Rashtriya Sanskrit Vidyapeeth (Deemed University), Qutub Institutional Area, New Delhi - 110016
Tel.: (Off.) 6851253, 664003 ; (Resi.) 6851250, 6855099 Fax : 6520255
Email : vu_vidyapeetha@hotmail.com
vidyapeetham@vsnl.net

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संस्कृत वर्णमाला Alphabets of Sanskrit

स्वर Vowels

अ	*a*	आ	*ā*	इ	*i*	ई	*ī*	उ	*u*	ऊ	*ū*
ऋ	*ṛ*	ॠ	*ṝ*	ए	*e*	ऐ	*ai*	ओ	*o*	औ	*au*

अनुस्वार (ं) ṁ विसर्ग (:) ḥ अनुनासिक (ँ) m̐

व्यञ्जन Consonants

क	*ka*	ख	*kha*	ग	*ga*	घ	*gha*	ङ	*ṅa*
च	*ca*	छ	*cha*	ज	*ja*	झ	*jha*	ञ	*ña*
ट	*ṭa*	ठ	*ṭha*	ड	*ḍa*	ढ	*ḍha*	ण	*ṇa*
त	*ta*	थ	*tha*	द	*da*	ध	*dha*	न	*na*
प	*pa*	फ	*pha*	ब	*ba*	भ	*bha*	म	*ma*
		य	*ya*	र	*ra*	ल	*la*	व	*va*
		श	*śa*	ष	*ṣa*	स	*sa*	ह	*ha*

विशेष, Note :– सभी व्यञ्जनों में उच्चारण के लिए 'अ' मिला हुआ है, अन्यथा वे अगले स्वरयुक्त व्यञ्जन से मिले होते अथवा हलन्त होते = All consonants are added with *'a'* sound so that they may be pronounced, otherwise they remain alone or pronounced with the help of the next consonant which is followed by a vowel.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूर्वकथन

द्राक्षा म्लानमुखी जाता, शर्करा चाश्मतां गता।
सुभाषितरसस्याग्रे, सुधा भीता दिवं गता॥

अंगूर, शक्कर अथवा अमृत में जो मिठास तथा माधुर्य है, सुभाषित का माधुर्य उनसे कहीं बढ़-चढ़कर है। जब कोई मनुष्य अपने वार्तालाप, भाषण अथवा लेख को सुभाषितों से अलंकृत करता है तो उसका प्रभाव श्रोतागण अथवा पाठकगण पर अधिक पड़ता है। न केवल काव्य-कला का आनन्द इन सुभाषितों में भरा पड़ा है, अपितु जीवन की प्रायः सभी समस्याओं के समुचित समाधान की विधि सर्वत्र व्याप्त है। सुभाषितों का उपयोग अपने वक्तव्य को प्रभावशाली बनाने के लिए ही नहीं, अपितु अर्थाभिव्यक्ति की पूर्णता के लिए भी किया जाता है। भाषा में लालित्य एवम् अर्थच्छटा सुभाषित के बिना असम्भव है। यही कारण है कि सरल एवं सुललित भाषा को सिखाने के लिए किशोरावस्था से ही सुभाषितों को कण्ठस्थ कराने की परम्परा हमारे देश में रही है।

यह सुभाषित-संग्रह कई दृष्टियों से अन्य सुभाषित-संग्रहों से अलग है। इसमें किशोर छात्र-छात्राओं को ध्यान में रखते हुए पद्यों का संग्रह किया गया है। भाषा-शिक्षा की दृष्टि से सुललित-पद्यों का ही चयन किया गया है। इस सम्पूर्ण संग्रह में वर्ण-क्रम के आधार पर पद्यों को रखा गया है। अतः अलग से श्लोकानुक्रमणी नहीं दी गई है। संग्रह के अन्त में संगृहीत सुभाषितों के विषय की सूची दी गई है। इन सुभाषितों को देवनागरी में तथा रोमनलिपि में भी लिखा गया है और इनका अनुवाद हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में किया गया है, जिससे हिन्दी-ज्ञाता तथा अंग्रेजी के विद्वान् भी लाभ उठा सकें।

ये सुभाषित वेदों, उपनिषदों, पुराणों, स्मृतियों तथा नीति-ग्रन्थों से संगृहीत किए गए हैं। अत एव ये विविध विषयों को पल्लवित और पुष्पित करने के लिए उपादेय हैं।

जो भी इन सुभाषितों को हृदयंगम कर व्यवहार में लाने का प्रयास करेगा, उसकी वाणी और लेख स्वतः ही अलंकृत होकर श्रोताओं तथा पाठकों पर अपनी अमिट छाप छोड़ेंगे। प्रस्तुत संग्रह ऐसा सुभाषित-रत्न-भण्डार है जो बाल-वृद्ध सभी का कण्ठहार बनेगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

वेदप्रकाश शास्त्री
प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय-सूची (CONTENTS)

क्रम सं.	विषयाः Subjects	पृष्ठम् Page
1. सुभाषित–संग्रह		1-516
2. विषय–सूची	(SUBJECT INDEX)	
1. ईश्वर	(God)	519
2. आत्मा	(Soul)	519
3. कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य	(To be done or not to be done)	520
4. कामनाएँ	(Desires)	521
5. गुण और अवगुण	(Merits and demerit)	521
6. गृहस्थ	(House life)	522
7. जीवन की दशाएँ	(States of life)	524
8. दान	(Charity)	524
9. परिवेश	(Environment)	525
10. पुरुषों के भेद	(Kinds of men)	525
11. प्रार्थनाएँ	(Requests)	526
12. राजनीति	(Politics)	527
13. राष्ट्र–रक्षा	(Defence)	529
14. वस्तुएँ	(Things)	529
15. विधाता या काल और उसके कार्य	(Forturne or time and its works)	529
16. समय का विभाजन और उपयोग	(Time table and its use)	531
17. सेवाधर्म	(Sirvitude)	531
18. स्वास्थ्य	(Health)	531
19. सन्दर्भ ग्रन्थ – सूची	(Reference Books)	533

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अ = A

(1)

अकर्त्तव्येष्वसाध्वीव तृष्णा प्रेरयते जनम्।
तमेव सर्वपापेभ्यो लज्जा मातेव रक्षति॥

गुण - अवगुण सुभाषितरत्न भाण्डागारम् / 76 / 21

Akarttavyeṣvasādhvīva tṛṣṇā prerayate janam।
Tameva sarvapāpebhyo lajjā māteva rakṣati॥

Merits and demerits Subhāsita. R. Bhaṇḍa. / 76 / 21

तृष्णा मनुष्य को बुरी स्त्री के समान न करने योग्य कार्यों में लगा देती है, परन्तु इसके विपरीत लज्जा मनुष्य को माता के समान सभी पापों से बचाए रखती है।

Greed encourages the man for bad deeds but shyness keeps him off from all sins like his mother.

(2)

अकर्मशीलं च महाशनं च,
लोक-द्विष्टं बहुमायं नृशंसम्।
अदेशकालज्ञमनिष्टवेषम्,
एतान् गृहे न प्रतिवासयेत्॥

निन्दनीय मानव महाभा./उद्योग. / 37/35 ॥

Akarmaśīlaṁ ca mahāśanaṁ ca,
Lokadviṣṭaṁ bahumāyaṁ nṛśaṁsam।
Adeśakālajñamaniṣṭaveṣam,
Etān gṛhe na prativāsayet॥

Mahābhā./Udyoga/37/35

Condemnable persons

आलसी, निकम्मे, बहुत खाने वाले, सबसे द्वेष रखने वाले, अधिक छल-कपट करने वाले, क्रूर स्वभाव वाले, देश-काल का ध्यान न रखने वाले और गन्दे एवं भद्दे वेष धारण करने वालों को घर में नहीं ठहराना चाहिए।

Such persons, who are idle, eat too much, have enmity for others, much deceitful, careless about the place or the time and wear dirty clothes should not be allowed to stay in own house.

(3)

अकर्मा दस्युरभि नो अमन्तुरन्यव्रतो अमानुषः।
त्वं तस्यामित्रहन्वधर्दासस्य दम्भय॥

निन्दनीय व्यक्ति ऋ. / 10 /22 /8

Akarmā dasyurabhi no amanturanyavrato amānuṣaḥ।
Tvaṁ tasyāmitrahan vadhardāsasya dambhaya।

Condemnable man Ṛg / 10 / 22 / 8

हे कामादि तथा दुष्ट शत्रुओं के नाश करने वाले भगवन् अथवा राजन्! जो कर्मशील नहीं हैं और उत्तम कर्म नहीं करते और वेदविहित कर्मों को नष्ट करते तथा डकैती डालते हैं, जो असुर प्रकृति के हैं और श्रेष्ठ जनों का अपमान करते हैं, उनका आप दमन और नाश कीजिए।

O God or the Ruler! You are able to kill all the enemies including having bad thoughts and mean fellows, who donot obey the path

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

of the Vedas, who destroy religious actions and are decoits and possess the nature of demons. Such persons insult noble persons. O God or Ruler! you must kill such mean fellows or motivate them to adopt ideal path of the Vedas.

(4)

अकामो धीरो अमृतः स्वयम्भू रसेन तृप्तो न कुतश्चिदूनः।
तमेव विद्वान् न बिभाय मृत्योरात्मानं धीरमजरं युवानम्॥

मृत्यु से मुक्ति अथर्व./10/8/44

Akāmo dhīro amṛtaḥ svayambhū
rasena tripto na kutaścidūnaḥ।
Tameva vidvān na bibhāya mṛtyo-
rātmānaṁ dhīramajaraṁ yuvānam॥

Protection from death Atharva./10/8/44

वह परमेश्वर कामनाओं से रहित, सब दशाओं में एक समान रहने वाला, मृत्यु से रहित, पूर्ण सामर्थ्य वाला, पूर्णतः आनन्दमय है और किसी भी प्रकार से उसमें कोई कमी नहीं है। उस सर्वत्र व्यापक, सदा एक रस रहने वाले, कभी बूढ़े न होने वाले और सदा जवान रहने वाले परमेश्वर को ही जानकर ज्ञानी मनुष्य मृत्यु के भय से बच सकता है।

God is desireless, unshakable, eternal, omnipotent and full of bliss and He is completely defectless. The person who knows that soul, who is unchangeable, always full of youth and devoid of old age, has no fear of death.

(5)

अकालेऽतिप्रसङ्गाच्च, न च निद्रा निषेविता।
सुखायुषा परा कुर्यात्कालरात्रिरिवापरा॥

निद्रा के लाभ चरक./सूत्रस्थान/36

Akāle'tiprasaṅgācca, na ca nidrā niṣevitā।
Sukhāyuṣā parā kuryāt kālarātririvāparā॥

Advantage of sleep Caraka./Sūtra./36

असामयिक या अत्यधिक निद्रा और सर्वथा न सेवन की गई भी निद्रा दूसरी कालरात्रि (मृत्युरात्रि) के समान मनुष्य को सुख और आयु से पृथक् कर देती है।

If a man sleeps at undue time or if sleeps at due time but sleeps too much or remains without sleep, in such circumstances he cannot enjoy happiness and dies very soon.

(6)

अकिञ्चनाश्च दृश्यन्ते, पुरुषाश्चिरजीविनः।
समृद्धे च कुले जाता विनश्यन्ति पतङ्गवत्॥

आयु की सीमा महाभा./शान्तिष./28/22

Akiñcanāśca dṛśyante, puruṣāścirajīvinaḥ।
Samṛddhe ca kule jātā vinaśyanti pataṅgavat॥

Limit of age Mahābhā./Śāntip./28/22

ऐसा देखा जाता है कि प्रायः दीन-हीन लोग ही दीर्घायु होते हैं। इसके विपरीत धनी कुल में उत्पन्न होने वाले लोग कीट-पतंगों के समान शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं।

It is seen that poor persons live long

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

life, while those who are born with silver spoons in their mouths, die soon like moths.

(7)

अकृत्यं नैव कर्त्तव्यं प्राणत्यागेऽपि संस्थिते।
न च कृत्यं परित्याज्यम्, एष धर्मः सनातनः॥

धर्म- आचरण पञ्चत. / लब्धप्र. / 36

Akṛtyaṁ naiva karttavyaṁ prāṇatyāge'pi saṁsthite।
Na ca kṛtyaṁ parityājyam, eṣa dharmaḥ sanātanaḥ॥

Morality Pañca. / Labdhapr. / 36

पवित्र और सनातन धर्म यही है कि प्राणों पर संकट आने पर भी बुरा कार्य नहीं करना चाहिए और करणीय श्रेष्ठ कार्य को कभी भी नहीं छोड़ना चाहिए।

It is a sacred and old ideal that one should not do bad deeds and not reject noble ones inspite of the risk of his death.

(8)

अकृत्वा परसन्तापमगत्वा खलनम्रताम्।
अनुत्सृज्य सतां मार्गं, यत्स्वल्पमपि तद् बहु॥

सदाचार वल्लभ. सुभा. / 2660

Akṛtvā parasantāpamagatvā khalanamratām।
Anutsṛjya satāṁ mārgaṁ, yatsvalpamapi tad bahu॥

Morality Vall. Subha. / 2660

दूसरों को कष्ट न पहुँचा कर और दुष्टों के सम्मुख बिना गिड़गिड़ाये यदि सज्जनों के मार्ग पर हम चल सकें, तो जीवन में इतना किया कार्य भी बहुत लाभप्रद होगा।

If a man follows the path of noble persons without harming others and also without yielding towards the bad persons, then even this little work done by him is the great one.

(9)

अक्रन् कर्म कर्मकृतः, सह वाचा मयोभुवा।
देवेभ्यः कर्म कृत्वाऽस्तं प्रेत सचाभुवः॥

शुभकर्म यजु. / 3 / 47

Akran karma karmakṛtaḥ, saha vācā mayobhuvā।
Devebhyaḥ karma kṛtvā'staṁ preta sacābhuvaḥ॥

Good works Yaju. / 3 / 47

कर्म करने वाले जन सुखदायिनी वेद वाणी के अनुसार कर्म करते हैं। हे मनुष्यो! तुम विद्वानों और प्राकृतिक देवों के लिए कर्म करके अपने मुख्य लक्ष्य को प्राप्त करो।

Active persons act according to the ideals of the Vedas. O men, you should do good works for animate and inanimate gods and reach to your goal.

(10)

अक्रोधना धर्मपराः, सत्यनित्या दमे रताः।
तादृशाः साधवो विप्रास्तेभ्यो दत्तं महाफलम्॥

दान के पात्र महाभा. / अनु. / 22 / 33

Akrodhanā dharmaparāḥ, satyanityā dame ratāḥ।
Tādṛśāḥ sādhavo viprāstebhyo dattaṁ mahāphalam॥

Mahābhā. / Anu. / 22 / 23

Desirving donation

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो क्रोध पर विजय पाने वाले, धर्मपरायण, सदा सत्य का ही आश्रय लेने वाले और मन को वश में रखने वाले श्रेष्ठ जन हैं, उनको दिया हुआ दान ही महान् लाभप्रद होता है।

The persons, who have control over their rage, are religious, are dedicated to the truth and have their minds under control are really good persons and scholars. The donation given to such persons bears great and good result.

(11)

अक्षण्वन्तः कर्णवन्तः सखायो मनोजवेष्वसमा बभूवुः।
आदघ्नास उपकक्षास उ त्वे, ह्रदा इव स्नात्वा उ त्वे ददृशिरे॥

ज्ञान के स्तर ऋग्. / 10 / 71 / 7

Akṣaṇvantaḥ karṇavantaḥ sakhāyo
manojaveṣvasamā babhūvuḥ।
Ādaghnāsa upakakṣāsa u tve,
hradā iva snātvā u tve dadṛśire॥

Standards of knowledge Ṛg. / 10 / 71 / 7

एक सदृश आँखों और कानों वालों तथा देखने और सुनने वालों की मानसिक गति भिन्न-भिन्न होती है। मन की विभिन्न दशाओं के अनुसार ही उनकी स्थिति इस प्रकार होती है, जैसे कुछ लोग पानी में पाँव की गहराई तक और कुछ बगल तक ही डूबते हैं, परन्तु कुछ तो पानी की गहराई में जाकर तैरते हुए स्नान करते हैं। भावार्थ यह है कि मन की स्थिति के अनुसार ही कुछ बहुत थोड़ा और कुछ उनसे थोड़ा अधिक ज्ञान प्राप्त करते हैं; परन्तु जिन्होंने मन को पूर्णतः वश में कर लिया है, वे ज्ञान के सरोवर में तैरते और आनन्द लेते हैं।

Generally, all persons look and hear equally but due to the condition of their minds, some get very little knowledge, while some others obtain a little more, but the persons who have full control over their minds get full knowledge and enjoy in it. This truth is illustrated by those persons, some of which go into a tank upto their feet, others upto their armpits, while others go into the deep water, swim and enjoy very much.

(12)

अक्षरस्यापि चैकस्य पदार्धस्य पदस्य वा।
दातारं विस्मरन् पापी, किं पुनर्धर्मदेशिनम्॥

माननीय गुरु हरिवंशपु. / 21 / 15 / 6

Akṣarasyāpi caikasya padārdhasya padasya vā।
Dātāraṁ vismaran pāpī, kiṁ punardharmadeśinam॥

Harivaṁsapu. / 21 / 15 / 6

Respectable teacher

जो व्यक्ति एक अक्षर, आधे पद अथवा पूरे पद (सार्थक शब्द) का भी ज्ञान कराता है, यदि ज्ञान प्राप्त करने वाला व्यक्ति उसे भूल जाता है, तो वह पापी कहलाता है। ऐसी दशा में जो धर्म के तत्त्व को बताने वाले गुरु हैं, उनको भूलने वाला तो निश्चित रूप से महान् पापी है।

The person who gives the knowledge of a letter, or half or full

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

of a word should not be forgotten. Who forgets even such a person is called sinful, but what to say about the person who forgets the preacher of spiritual facts. It means that he is really sinful. So one should not be ungrateful to any kind of a preacher.

(13)

अक्षास इदङ्कुशिनो नितोदिनो
निकृत्वानस्तपनास्तापयिष्णवः ।
कुमारदेष्णा जयतः पुनर्हणो
मध्वः संपृक्ताः कितवस्य बर्हणाः ॥

जुए से हानि ऋ/10/34/7

Akṣāsa idaṅkuśino nitodino
nikṛtvānastapanāstāpayiṣṇavaḥ ।
Kumāradeṣṇā jayataḥ punarhaṇo
madhvaḥ saṁpṛktāḥ kitavasya barhaṇāḥ ॥

Loss by gambling Ṛg./10/34/7

ये पासे नोकदार अंकुश वाले, चुभने और पीड़ा देने वाले, काटने वाले, तपाने वाले और सन्ताप पैदा करने वाले हैं। जीतने वाले जुआरी के लिए धनादि देने वाले और मधु जैसे मीठे लगने वाले भी होकर ये सर्वस्व हरण करके सर्वथा नष्ट कर देते हैं।

These dices are piercing goads and draw into troubles. These knaw and cause pain and anxiety. They give wealth and good things to the gambler who wins and are felt like honey, but at the end they deprive him of all the riches and destroy him badly.

(14)

अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित्कृषस्व, वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः।
तत्र गावः कितव तत्र जाया, तन्मे विचष्टे सवितायमर्यः॥

जुआ मत खेलो ऋ./10/34/13

Akṣairmā dīvyaḥ kṛṣimitkṛṣasva, vitte ramasva bahu manyamānaḥ।
Tatra gāvaḥ kitava tatra jāyā, tanme vicaṣṭe Savitāyamaryaḥ॥

Never gamble Ṛg./10/34/13

"अरे जुआरी! पासों से मत खेलो। खेती-बाड़ी जैसे परिश्रम के कार्यों को करो और उस परिश्रम से प्राप्त धन को ही बहुत समझते हुए उसी में आनन्द लो। परिश्रम से प्राप्त धन में तुम्हारी पत्नी तुम्हारी संगिनी बनी रहेगी।" यह उपदेश सबका प्रेरक और सकल जगत् का स्वामी प्रभु हम सबको दे रहा है।

The master of the whole world and the Omnipreacher God advises all of us in such a way, "O gambler, never play with dices. Be hardworker like a agriculturist. The money you earn by hard-work will give you happiness, because in such a work you have your wife, the true companion with you. Remain contented in the earning by hardwork".

(15)

अगाधे विमले शुद्धे, सत्यतोये श्रुतिह्रदे।
स्नातव्यं मानसे तीर्थे, सत्यमालम्ब्य शाश्वतम्॥

सच्चा तीर्थ महाभा./अनुशा./2/9

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Agādhe vimale śuddhe, satyatoye śrutihrade।
Snātavyaṁ mānase tīrthe, satyamālambya śāśvatam॥

Real pilgrimage Mahābhā / Anu. / 2 / 9

गहरे, निर्मल और शुद्ध सत्यरूपी जल वाले और धैर्य रूपी सरोवर वाले मानसतीर्थ (अन्तःकरणरूपी तीर्थ) में सदा स्थिर रहने वाले सत्य का सहारा लेकर स्नान करना चाहिए।

One should take bath in the deep, pure and sacred water of the truth which is obtained in the tank of the holy place of mind adopting the support of the everlasting truth.

(16)

अग्निहोत्रफला वेदाः, शीलवृत्त-फलं श्रुतम्।
रति-पुत्रफला दाराः, दत्तभुक्तफलं धनम्॥

लाभदायक वस्तुएँ महाभा. / सभापर्व / 5 / 39

Agnihotraphalā Vedāḥ, śīlavṛttaphalaṁ śrutam।
Ratiputraphalā dārāḥ dattabhuktaphalaṁ dhanam॥

Mahābhā. / Sabhā / 5 / 39

Advantageous things

वेदों का फल है हवन-यज्ञ करना, शास्त्रों से प्राप्त ज्ञान का फल है सदाचारी बनना, स्त्रियों से कामसुख और पुत्रों की प्राप्ति का फल होता है और धन तभी सफल है, जब उसे दान तथा भोग में प्रयुक्त किया जाए।

Havana-yajña is the fruit of the Vedas, being a noble person is the result of the study of good books, women are the sources of lust and offsprings and money is useful only then when it helps poor and is spent to fulfil one's own desires.

(17)

अग्निहोत्रं च जुहुयादाद्यन्ते द्युनिशोः सदा।
दर्शेन चार्धमासान्ते, पौर्णमासेन चैव हि॥

अग्निहोत्र — एक कर्त्तव्य मनु. / 4 / 25

Agnihotraṁ ca juhuyādādyante dyuniśoḥ sadā।
Darśena cārdhamāsānte, paurṇamāsena caiva hi॥

A duty–Fire sacrifice Manu. / 4 / 25

मनुष्य को प्रतिदिन प्रातः तथा सायंकाल अग्निहोत्र करना चाहिए। इसके अतिरिक्त वह कृष्णपक्ष के अन्तिम दिन दर्श नामक यज्ञ करे और मास के अन्त में पूर्णमासी पर पौर्णमास यज्ञ करे।

A man should perform **Agnihotra,** twice in a day, in the morning and in the evening. He should also perform **Darśa sacrifice** at the final day of decreasing moon and perform **Paurṇamāsa sacrifice** at the day when moon is absolutely complete.

(18)

अग्ने तपस्तप्यामहे, उपतप्यामहे तपः।
श्रुतानि शृण्वन्तो, वयमायुष्मन्तः सुमेधसः॥

शुभ कामना अथर्व / 7 / 61 / 2

Agne tapastapyāmahe, upatapyāmahe tapaḥ।
Śrutāni śṛṇvanto, vayamāyuṣmantaḥ sumedhasaḥ॥

Auspicious desire Atharva. / 7 / 61 / 2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हे सुमार्गदर्शक अग्रनायक परमेश्वर! हम तप करते हैं, और निरन्तर वेद-शास्त्रों का श्रवण करते हुए हम दीर्घायु प्राप्त कर, मेधा बुद्धि से सम्पन्न होकर पुनरपि (हम) तप करते हैं; अर्थात् हमारा जीवन तपस्वी बने, ऐसी प्रार्थना है।

O God! You lead us for good. We perform penance, listen the Vedas and ideal books continuously and enjoy long life and obtain intelligence. O God! doing so again and again, we must perform penance and never keep it off.

(19)

अग्ने त्वं सुजागृहि वयं सु मन्दिषीमहि।
रक्षा णो अप्रयुच्छन् प्रबुधे नः पुनस्कृधि॥

प्रार्थना यजु./4/14

Agne tvaṁ sujāgṛhi vayaṁ su mandiṣīmahi।
Rakṣā ṇo aprayucchan prabudhe naḥ punaskṛdhi॥

Prayer Yaju./4/14

हे हमारे प्रेरक अग्रनायक प्रभु! आप सदा जाग कर हमारा ध्यान रखते हैं और हम आपके रक्षण में आनन्दपूर्वक जीवन बिताते हैं। प्रभु! हमारे आलस्य और प्रमाद को दूर करके हमें ज्ञानवान् बनाइए और हमारी चेतना-शक्ति को जागृत कीजिए।

O God, you induce good actions in us. You are always alert for our happiness and we happily enjoy our life under your protection. O God, remove laziness and idleness from our life and be kind to give us knowledge and wake our spirits.

(20)

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि,
तच्छकेयम्, तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि॥

प्रतिज्ञा यजु./1/5

Agne vratapate vrataṁ cariṣyāmi,
tacchakeyam, tanme rādhyatām।
Idamahamanṛtāt satyamupaimi॥

Promise Yaju./1/5

हे ज्ञान-स्वरूप, हृदय को प्रकाशित करने वाले परमेश्वर, मैं उत्तम कर्म करूँगा, ऐसा संकल्प करता हूँ। मुझे इस व्रत के पालन करने में समर्थ बनाइए और सफलता प्रदान कीजिए। मैं असत्य मार्ग को त्याग कर सत्य को प्राप्त कर रहा हूँ।

O Embodiment of knowledge, enlighten my mind. I assure you that I must carry out good deeds. God, make me able to carry on my promise and help me to get success. Now I am adopting the path of the truth and rejecting the falsehood.

(21)

अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते।
आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः॥

होम का लाभ मनु./3/76

Agnau prāstāhutiḥ samyagādityamupatiṣṭhate।
Ādityājjāyate vṛṣṭirvṛṣṭerannaṁ tataḥ prajāḥ॥

Profit of fire-sacrifice Manu./3/76

उत्तम रीति से विधिपूर्वक अग्नि में डाली हुई

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आहुति सूर्यकिरणों को प्राप्त हो जाती है। ऐसी सूर्य-किरणों द्वारा फिर उत्तम वृष्टि होती है और फिर वृष्टि से अन्न उत्पन्न होता है और अन्न द्वारा उत्तम सन्तानें प्राप्त होती हैं।

An oblation presented into the fire properly reaches to the sunrays. Then these rays become the source of useful rain and then edibles grow sufficiently. These edibles then help us to make good descendants.

(22)

अङ्गं गलितं पलितं मुण्डम्, दशनविहीनं जातं तुण्डम्।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डम्, तदपि न मुञ्चत्याशा पिण्डम्॥

आशा की शक्ति चर्पटपञ्जरिका / 6

Aṅgaṁ galitaṁ palitaṁ muṇḍam, daśanavihīnaṁ jātam tuṇḍam।
Vṛddho yāti gṛhītvā daṇḍam, tadapi na muñcatyāśā piṇḍam॥

Power of desire Carpaṭapañjarikā / 6

शरीर के अंग गल गये हैं, सिर के बाल सफेद हो गए हैं, और मुँह में से दाँत भी निकल चुके हैं। इस प्रकार मानव बूढ़ा हो जाने पर डण्डे के सहारे चलने लगता है, तो भी लोभ-लालच तथा जीने की लालसा उसका पीछा नहीं छोड़ते।

The organs of the body are decaying, the hair of head is whitened and mouth has become teethless. In this way being old, a man moves with the help of a stick. Even in such adverse condition greediness and desire of living don't leave his mind.

(23)

अङ्गारसदृशी नारी, घृतकुम्भसमः पुमान्।
तस्मान्नारीषु संसर्गं दूरतः परिवर्जयेत्॥

कामवासना से बचो लिङ्गपु. / 8 / 23

Aṅgārasadṛśī nārī, ghṛtakumbhasamaḥ pumān।
Tasmānnārīṣu saṁsargaṁ dūrataḥ parivarjayet॥

Keep off sexuability Liṅgapu. / 8 / 23

नारी दहकते अङ्गारे के समान होती है, जब कि पुरुष घी से भरे पात्र के सदृश होता है। अतः पुरुष को चाहिए कि वह नारियों के सम्पर्क से सदा दूर रहे; अन्यथा वह अपना नाश कर लेगा।

A woman is like a burning coal and the man is like a pitcher of ghee. So, the man should absolutely keep off the company of women.

(24)

अचोद्यमानानि यथा, पुष्पाणि फलानि च।
स्वं कालं नातिवर्त्तन्ते, तथा कर्म पुरा कृतम्॥

कर्मफल का निश्चय महाभा. / शान्ति. / 181 / 12

Acodyamānāni yathā, puṣpāṇi phalāni ca।
Svaṁ kālaṁ nātivarttante, tathā karma purā kṛtam॥

Results of works Mahābhā. / Śānti / 181 / 12

जैसे फूल और फल बिना किसी की प्रेरणा से स्वतः समय पर प्रकट हो जाते हैं और समय का अतिक्रमण नहीं करते, उसी प्रकार पहले किए कर्म भी यथासमय ही अपने फल (अच्छे या बुरे) देते हैं। अर्थात् कर्मों का फल अनिवार्य रूप से प्राप्त होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

As flowers and fruits are seen at due time and they never violate their time, in the same way the works already done show their good or bad results or fruits. It means, that everyone must reaps the fruit of his deeds.

(25)

अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः॥

आत्मा का स्वरूप महाभा. / भीष्म. / 26 / 24

Acchedyo'yamadāhyo'yamakledyo'śoṣya eva ca।
Nityaḥ sarvagataḥ sthāṇuracalo'yaṁ sanātanaḥ॥

Form of soul Mahābhā. / Bhiṣma / 26 / 24

इस आत्मा को कोई काट, जला, गला अथवा सुखा भी नहीं सकता। यह नित्य, सभी प्राणियों के शरीर में रहने वाला, स्थिर, नियमित और अनादि काल से विद्यमान है।

This soul cannot be cut, burnt, melted or dried by anybody. It is everlasting, existing in every body, unchangeable and regular and existing eternally.

(26)

अजरामरवत्प्राज्ञो विद्यामर्थं च चिन्तयेत्।
गृहीत इव केशेषु, मृत्युना धर्ममाचरेत्॥

बुद्धिमान् का कर्त्तव्य हितोपदेश / मित्रलाभ / 3

Ajarāmaravat prājño vidyāmarthaṁ ca cintayet।
Gṛhīta iva keśeṣu, mṛtyunā dharmamācaret॥

Hitopadeśa / Mitralābha / 3

Duty of the wise

बुद्धिमान् व्यक्ति को चाहिए कि विद्या और धन का सञ्चय करते समय अपने को अजर तथा अमर समझे परन्तु यह सोचकर कि मृत्यु ने मुझे सिर के बालों से पकड़ रखा है, सदा धर्म का ही आचरण करे। भावार्थ यह है कि धर्म का मार्ग कभी नहीं छोड़ना चाहिए; न जाने कब मृत्यु आकर दबोच ले।

A wise man should think himself like a young and everlasting personality in respect of education and money, but after thinking that his hair of head is in the hands of death, he should perform religious deeds continually.

(27)

अजातमृतमूर्खेभ्यो मृताजातौ सुतौ वरम्।
यतस्तौ स्वल्पदुःखाय, यावज्जीवं जडो दहेत्॥

अनचाही सन्तान पञ्चत. / कथामुख / 4

Ajātamṛta-mūrkhebhyo mṛtājātau sutau varam।
Yatastau svalpa-duḥkhāya, yāvajjīvaṁ jaḍo dahet॥

Useless children Pañc / Kathāmukha / 4

न पैदा होने वाले और मर जाने वाले पुत्र उस पुत्र से अच्छे हैं, जो अनपढ़ और जड़मति हैं, क्योंकि न पैदा होने वाला या मर जाने वाला पुत्र तो कुछ समय के लिए ही दुःख देता है, परन्तु मूर्ख और जड़मति जीवन-भर दुःखी करता रहता है।

The sons, one of which has not born and other who has died, are better than an illiterate son, because those two cause temporary sorrow or pain

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

while the illiterate one torments during the whole life.

(28)

अजानन् माहात्म्यं पततु शलभो दीपदहने,
स मीनोऽप्यज्ञानाद् बडिशयुतमश्नातु पिशितम्।
विजानन्तोऽप्येते वयमिह विपज्जालजटिलान्,
न मुञ्चामः कामानहह! गहनो मोहमहिमा॥

मोह का प्रभाव वैराग्यशतक / 19

Ajānan māhātmyaṁ patatu śalabho dīpādahane,
Sa mīno'pyajñānād badiśayutamaśnātu piśitam।
Vijānanto'pyete vayamiha vipajjālajaṭilān,
Na muñcāmaḥ kāmānahaha! gahano mohamahimā॥

Effect of attachment Varagyaśataka / 19

अग्नि की वास्तविकता को न समझता हुआ पतंगा अग्नि में गिरे तो गिरे, वह मछली भी ज्ञान के अभाव में काँटे से चिपटे माँस को खाने का यत्न करे तो करे, परन्तु इस संसार में हम यह जानते हुए भी कि वासनाएँ संकटों के समूह से परिपूर्ण हैं, हम उन्हें छोड़ नहीं पाते। बड़े दुःख की बात है कि मोह की महिमा बड़ी गहरी है। अर्थात् समझदार मनुष्य भी मोह के जाल में पड़कर कष्टों को सह रहा है।

Let the moth fall into the fire, as it does not know the reality of fire and let the fish try to eat the piece of meat attached to the hook as it is also ignorant from the reality, but we, who know that passions are full of grievances, don't keep them off. It is a matter of serious pain that the power of passions is very strong. It means that inspite of having knowledge we incline to passions.

(29)

अजीर्णे भेषजं वारि, जीर्णे वारि बलप्रदम्।
भोजने चामृतं वारि, भोजनान्ते विषप्रदम्॥

पानी पीना चाणक्य राजनीतिशास्त्र / 14

Ajīrṇe bheṣajaṁ vāri, jīrṇe vāri balapradam।
Bhojane cāmṛtaṁ vāri, bhojanānte viṣapradam॥

Caṇakya Rājanītisāstra / 14

Drinking of water

अपच के समय पानी पीना दवाई का कार्य करता है। भोजन पचने के बाद पिया हुआ जल शक्ति देता है और भोजन के मध्य में पानी अमृत का कार्य करता है, परन्तु भोजन के अन्त में जलपान विष के समान हानिकारक होता है।

During indigestion drinking of water works like a medicine, the water taken after the digestion of food gives strength and the water taken during food works like nectar, but the water taken just after eating the food is harmful like a poison.

(30)

अज्ञः सुखमाराध्यः, सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।
ज्ञान-लवदुर्विदग्धं, ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति॥

अल्पज्ञानी का गुण नीतिशतक / 2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Ajñaḥ sukhamārādhyaḥ, sukhataramārādhyate viśeṣajñaḥ।
Jñānalava-durvidagdhaṁ Brahmāpi naraṁ na rañjayati॥

Demerit of less knowledgeable Nītiśatāka / 2

अज्ञानी को सरलता से समझाया जा सकता है और जो बहुत ज्ञानी है उसे और भी आसानी से समझाया जा सकता है। परन्तु जो व्यक्ति थोड़ा-सा ही ज्ञान प्राप्त करके अभिमानी बन चुका है, उसे ब्रह्मा भी नहीं समझा सकता।

A foolish person may be inculcated easily, and a well educated person may be advised more easily, but the man who is haughty due to the possession of little learning can not be inculcated by even Creator (Brahma).

(31)

अञ्जनस्य क्षयं दृष्ट्वा, वल्मीकस्य च सञ्चयम्।
अवन्ध्यं दिवसं कुर्यात्, दानाध्ययन-कर्मभिः॥

शुभ कर्म करो चाणक्यनीति दर्पण / 15

Añjanasya kṣayaṁ dṛṣṭvā,
valmīkasya ca sañcayam।
Avandhyaṁ divasaṁ kuryāt,
dānādhyayana-karmabhiḥ॥

Do good Cāṇakyanītidarpaṇa / 15

आँख में लगाया अंजन धीरे-धीरे नष्ट हो जाता है और दीमक का घर धीरे-धीरे बढ़ जाता है; इन दृष्टान्तों से समझना चाहिए कि थोड़ा-थोड़ा भी कार्य निरन्तर करने से मनुष्य को सफलता मिल जाती है। यह सोचकर मनुष्य को निरन्तर दान और स्वाध्याय करके अपना जीवन सफल बनाना चाहिए।

Collyrium declines slowly and the ant-hill also increases slowly. After observing such facts, a man should spend his day time in charity and study of good books so that he may earn good deeds and sufficient of knowledge day by day.

(32)

अतिकुपिता अपि सुजना
योगेन मृदूभवन्ति न तु नीचाः।
हेम्नः कठिनस्यापि
द्रवणोपायोऽस्ति न तृणानाम्॥

सज्जन और दुर्जन सुभाषितरत्न-भाण्डागारम् / 47 / 111

Ati kupitā api sujanā
yogena mṛdūbhavanti na tu nīcāḥ।
Hemnaḥ kaṭhinasyāpi
dravaṇopāyo'sti na tṛṇānām॥

Good and bad men Subhāṣita Bhā. / 47 / 111

श्रेष्ठ व्यक्ति यदि बहुत नाराज भी हो जायें तो उन्हें किसी प्रकार नरम किया जा सकता है, परन्तु नीचों को नहीं। जैसे कठोर सोने को पिघलाने का तो ढंग है, परन्तु तिनकों को किसी भी प्रकार से पिघलाया नहीं जा सकता।

If noble persons are very angry, they may be soften with some means, but mean fellows cannot be cooled. Though

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

gold is hard, yet it can be melted, but straw cannot be melted.

(33)

अतिथिर्यस्य भग्नाशो, गृहात्प्रतिनिवर्त्तते।
स दत्त्वा दुष्कृतं तस्मै, पुण्यमादाय गच्छति॥

अतिथि उपेक्षणीय नहीं महाभा. / शा. / 191 / 12

Atithiryasya bhagnāśo, gṛhāt pratinivarttate।
Sa dattvā duṣkṛtaṁ tasmai, puṇyamādāya gacchati॥

Mahābhā / Śā / 191 / 12

Never ignore a guest

जिसके घर से अतिथि निराश होकर लौट जाता है, उसे वह अपना पाप दे जाता है और उसका पुण्य लेकर चला जाता है।

When a guest goes away disappointed from one's house, he gives his sins to the householder and takes away his good deeds.

(34)

अतिथीनन्नपानेन, भृत्यानत्यशनेन च।
सम्भोज्य शेषमश्नीमस्तस्मान्मृत्युभयं न नः॥

उत्तम भोजन महाभा. वनपर्व / 184 / 20

Atithīnannapānena, bhṛtyānatyaśanena ca।
Sambhojya śeṣamaśnīmastasmānmṛtyubhayaṁ na naḥ॥

Admirable food Mahābhā. / Vana. / 184 / 20

क्योंकि हम अतिथियों को खाद्य और पेय पदार्थ देकर तथा नौकरों को बहुत भोजन खिलाकर शेष बचा हुआ खाते हैं, अतः हमें मृत्यु से डर नहीं लगता। अर्थात् हम पुण्य के कार्य करते हैं; अतः मृत्यु से हम नहीं डरते।

As we eat after satisfying the guests with edibles and drinks and feeding the servants with complete food, so we have no fear from death.

(35)

अतिदानाद् बलिर्बद्धो, नष्टो मानात् सुयोधनः।
विनष्टो रावणो लौल्याद्, अति सर्वत्र वर्जयेत्॥

अति से बचो चाणक्यनीतिदर्पण / 23

Atidānād Balirbaddho, naṣṭo mānāt Suyodhanaḥ।
Vinaṣṭo Rāvaṇo laulyād, ati sarvatra varjayet॥

Leave extremity Cāṇakranītidarpaṇ. / 23

बहुत दान देने के कारण बलि–राजा विष्णु के फँदे में फँस गया, बहुत अभिमान करने से दुर्योधन नष्ट हो गया और रावण अति चंचलता करने के कारण तबाह हो गया। इसलिए 'अति' नहीं करनी चाहिए; सीमा में ही रहना चहिए।

King 'Bali' was trapped by Vishnu due to too much donation, Duryodhana was destroyed on account of his too much pride and Ravaṇa was killed due to his boundless desire; so one should keep off extremity.

(36)

अतिद्रव सारमेयौ श्वानौ
चतुरक्षौ शबलौ साधुना पथा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथा पितृन्त्सुविदत्राँ उपेहि
यमेन ये सधमादं मदन्ति॥

समय का सदुपयोग ऋ./10/14/10

Atidrava sārameyau śvānau
caturakṣau śabalau sādhunā pathā।
Athā pitṛntsuvidatrāṁ upehi
Yamena ye sadhamādaṁ madanti॥

Time's best use Ṛg./10/14/10

हे मनुष्य! तू उषा के पुत्र, सर्वत्र दृष्टि रखने वाले गतिमान् काले और श्वेत रात्रि और दिन के जोड़े का अतिक्रमण कर; अर्थात् तू दिन-रात उन्नति करता चल। और उत्तम ज्ञान वाले उन माता, पिता और विद्वानों के पास जा, जो जगत् के नियन्ता भगवान् की उपासना में मस्त होकर आनन्द लेते हैं।

O man! You should make progress day and night which are like the sons of the dawn, and are of white and black colours pass swiftly. Besides, you should go to your parents and scholars which have the best of experience and knowledge and sit in the meditation of God and enjoy his bliss attentively.

(37)

अतिपरिचयादवज्ञा भवति विशिष्टेऽपि वस्तुनि प्रायः।
लोकः प्रयागवासी कूपस्नानं सदाचरति॥

अति परिचय चाणक्यराजनीति शास्त्र/575

Atiparicayādavajñā bhavati viśiṣte'pi vastuni prāyaḥ।
Lokaḥ Prayāgavāsī kūpasnānaṁ sadācarati॥

Cāṇakya. Rāj. Śāstra./575

Extreme familiarty

बहुत परिचय या मेलजोल होने से विशेष वस्तु के प्रति भी अनादरभाव (उपेक्षा) पैदा हो जाता है। जैसे प्रयाग के रहने वाले लोग त्रिवेणी में स्नान नहीं करते, प्रत्युत कुएँ पर ही नहाते हैं।

Too much familiarity generates disrespect even for a special thing. The people who live in Prayāga, take bath with their well-water and overlook Triveni.

(38)

अतिमानोऽतिवादश्च, तथाऽत्यागो नराधिप।
क्रोधश्चात्मविधित्सा च मित्रद्रोहश्च तानि षट्॥
एत एवासयस्तीक्ष्णाः, कृन्तन्त्यायूंषि देहिनाम्।
एतानि मानवान् घ्नन्ति, न मृत्युर्भद्रमस्तु ते॥

अवगुण महाभा./उद्योगपर्व/37/10-11

Atimāno'tivādaśca, tathā'tyāgo narādhipa।
Krodhaścātmavidhitsā ca mitradrohaśca tāni ṣaṭ॥
Eta evāsayastīkṣṇāḥ kṛntantyāyūṁṣi dehinām।
Etāni mānavān ghnanti, na mṛtyurbhadramastu te॥

Demerts Mahābhā./Udyoga/37/10-11

हे राजन् (धृतराष्ट्र), बहुत अभिमान, बहुत वाद-विवाद, तथा त्याग न करना, गुस्सा, अपनी बात पर ही अड़े रहना तथा मित्रद्रोह — ये छह तेज तलवारें हैं, जो प्राणियों के शरीरों को काटती हैं। ये ही छह अवगुण मनुष्यों को मार देते हैं; मृत्यु नहीं मारती। राजन्! तुम्हारा भला हो।

O king, too much arrogance, too much discussion and too much selfishness, anger, sticking on one's own opinion and malice against the

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

friend — these are six sharp swords, which cut the ages of the people into pieces. Only these kill the men and not the death. May God do your welfare!

(39)

अतिवाहितमतिगहनं, विनापवादेन यौवनं येन।
दोषनिधाने जन्मनि किं न प्राप्तं फलं तेन॥

प्रशंसनीय जीवन वल्लभदेव सुभाषितावली / 3373

Ativāhitamatigahanaṁ, vināpavādena yauvanaṁ yena।
Doṣanidhāne janmani kiṁ na prāptaṁ phalaṁ tena॥

Admirable life Vallabhadeva Su. / 3373

जिसने अनेक समस्याओं से पूर्ण जवानी को बिना-अपयश के बिता दिया है, भला उसने त्रुटियों से भरपूर इस जन्म में कौन-सा फल प्राप्त नहीं किया? अर्थात् उसी का जीवन सफल है, जिसे जवानी में कोई कलंक नहीं लगा।

He, who spent his youth, which was full of many problems without any ill-fame, what profit has not been gained by him in this life, which is full of many deficiencies?

(40)

अतृणे पतितो वह्निः स्वयमेवोपशाम्यति।
अक्षमावान् परं दोषैरात्मानं चैव योजयेत्॥

क्षमा का लाभ महाभा. / उद्योग / 5 / 33

Atṛṇe patito vahniḥ svayamevopaśāmyati।
Akṣamāvān paraṁ doṣairātmānaṁ caiva yojayet॥

Mahābhā / Udgoga / 5 / 33

Advantage of toleration

जैसे तिनकों से रहित भूमि पर पड़ी आग स्वयं बुझ जाती है, वैसे ही क्षमाशील व्यक्ति पर क्रोध करने वाले का क्रोध स्वयं शान्त हो जाता है। इसके विपरीत जो क्षमाशील नहीं है, वह अनेक त्रुटियों से अपने आप को भरपूर कर लेता है।

Fire is quenched automatically when there is no straw to burn. In the same way anger of an angry man diminishes against a tolerant person itself. But the man who has no tolerance becomes the prey of many difficulties.

(41)

अत्यम्बुपानान्न विपच्यतेऽन्नम्,
निरम्बुपानाच्च स एव दोषः।
तस्मान्नरो वह्निविवर्धनाय,
मुहुर्मुहुर्वारि पिबेद् भूरि॥

पानी पीना समायोचित-पद्यरत्नमालिका / अ 2 / 54

Atyambupānānna vipacyate'nnam,
Nirambupānācca sa eva doṣaḥ।
Tasmānnaro vahnivivardhanāya,
Muhurmuhurvāri pibed bhūri॥

Drinking of water Samayocita. / 2 / 54

बहुत अधिक पानी पीने से अन्न नहीं पचता और पानी न पीने से भी वह नहीं पचता। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह पाचन-शक्ति को बढ़ाने के लिए बारम्बार थोड़ा-थोड़ा करके बहुत पानी पिये।

Too much drinking of water leads

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

to indigestion and taking no water results in the same way. So the man should take sufficient water in a little quantity again and again to increase his digestive system.

(42)

अत्यम्बुपानाद्विषमाशनाच्च,
सन्धारणात् स्वप्नविपर्ययाच्च।
कालेऽपि सात्म्यं लघु चापि भुक्तम्,
अन्नं न पाकं भजते नरस्य॥

हानिकर भोजन सुभाषितरत्न-भाण्डागारम् / 389-87

Atyambupānādviṣamāśanācca,
Sandhāraṇāt svapnaviparyayācca।
Kāle'pi sātmyaṁ laghu cāpi bhuktam,
Annaṁ na pākaṁ bhajate narasya॥

Harmful food Subhaṣitara / 389-87

मनुष्य द्वारा बहुत जल पीने से, अनमेल भोजन करने से, शौचादि के वेगों को रोकने से और नींद ठीक न आने से ठीक समय पर तथा उचित मात्रा में भी खाया हुआ भोजन नहीं पच पाता।

Too much drinking of water, adverse eating, retaining of evacuations of urine and excrements etc. and disturbed sleep lead to indigestion, inspite of taking balanced and light food.

(43)

अत्यन्तवैराग्यवतः समाधिः,
समाहितस्यैव दृढः प्रबोधः।
प्रबुद्धतत्त्वस्य हि बन्धमुक्तिः,
मुक्तात्मनो नित्यसुखानुभूतिः॥

आनन्द का मार्ग विवेकचूडामणि - 376

Atyantavairāgyavataḥ samādhiḥ,
Samāhitasyaiva dṛḍhaḥ prabodhaḥ।
Prabuddhatattvasya hi bandhamuktiḥ,
Muktātmano nityasukhānubhūtiḥ॥

Path of bliss Viveka Cūḍāmaṇi / 376

जिसमें पूर्ण वैराग्य जागृत हो गया है, उसी का मन स्थिर हो सकता है और जिसका मन स्थिर है, उसी को स्थायी आत्मज्ञान प्राप्त होता है। जब ऐसा व्यक्ति पूर्ण रूप से तत्त्वज्ञ हो जाता है, तो उसको मोक्ष प्राप्त हो जाता है और मुक्त होने पर उसे नित्य परमानन्द की अनुभूति होती है।

He who has detached himself fully from all the worldly desires, can control his mind. When mind is controlled, the man knows reality of spiritual life. When he knows such reality, then he gets salvation and the liberated person can also enjoy eternal happiness.

(44)

अदान्तः पुरुषः क्लेशमभीक्ष्णं प्रतिपद्यते।
अनर्थांश्च बहूनन्यान्, प्रसृजत्यात्मदोषजान्॥

असंयम से हानि महाभा. / शा. / 160 / 13

Adāntaḥ puruṣaḥ kleśamabhīkṣṇaṁ pratipadyate।
Anarthāṁśca bahūnanyān, prasṛjatyātmadoṣajān॥

Mahābhā / 160 / 13

Disavantage of sensuality

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो मनुष्य मन को वश में नहीं रखता, वह बार-बार अनेक कष्टों को प्राप्त होता है और आत्मा के दोष से उत्पन्न हुए बहुत से अन्य भी अनर्थों को अपने लिए तैयार कर लेता है।

The man, who doesn't control his mind, suffers many difficulties again and again and due to his soul full of sins, he creats many other undesired things.

(45)

अदान्तो ब्राह्मणोऽसाधुर्निस्तेजाः क्षत्रियो मृतः।
अदक्षो निन्द्यते वैश्यः शूद्रश्च प्रतिकूलवान्॥

निन्दनीय व्यक्ति महाभा. / सौप्तिकपर्व / 320

Adānto brāhmaṇo'sadhurnistejāḥ kṣatriyo mṛtaḥ।
Adakṣo nindyate vaiśyaḥ śūdraśca pratikūlavān॥

Condemnable men Mahābhā. / Sauptika / 320

वह ब्राह्मण श्रेष्ठ नहीं माना जाता, जिसका मन वश में नहीं है। प्रभावहीन क्षत्रिय मरा हुआ माना जाता है। जो वैश्य निपुण नहीं है, उसकी निन्दा होती है और जो शूद्र स्वामी की आज्ञा पर नहीं चलता, वह भी अच्छा नहीं माना जाता।

The Brāhmaṇa who has no control on his mind is not considered good. The kṣatriya, without power is like a dead man. The Vaisya, who is not clever is criticized and the Śudra who opposes his master is blamed.

(46)

अदेशकाले यद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते।
असत्कृतमवज्ञातं, तत्तामसमुदाहृतम्॥

निन्दनीय दान महाभारत/ भीष्मप. / 22

Adeśakāle yaddānamapātrebhyaśca dīyate।
Asatkṛtamavajñātaṁ tattāmasamudāhṛtam॥

Condmnable charity Mahābhā / Bhīsma. / 22

जो दान समय और स्थान को समझे बिना अपात्रों को तिरस्कार और उपेक्षापूर्वक दिया जाता है, वह दान तामसिक दान कहलाता है।

The charity which is given at undue place and time to the underserved persons without respect and in an insulting manner is called malignant.

(47)

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति, मनः सत्येन शुध्यति।
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा, बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति॥

शुद्धि के साधन मनु. / 5 / 109

Adbhirgātrāṇi śudhyanti, manaḥ satyena śudhyati।
Vidyātapobhyāṁ bhūtātmā, buddhirjñānena śudhyati॥

Means of purity Manu. / 5 / 109

जल से शरीर के अंग शुद्ध होते हैं, सत्य अपनाने से मन शुद्ध होता है, विद्या और तप से आत्मा शुद्ध होती है और ज्ञान से बुद्धि शुद्ध होती है।

Water cleans the body, the truth cleans the mind, soul is purified with education and penance while intellect is purified with knowledge.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(48)

अद्भिः शुध्यन्ति गात्राणि, बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति।
अहिंसया च भूतात्मा, मनः सत्येन शुध्यति॥

शुद्धि के साधन बौधायन/धर्मसूत्र/1/5/1

Adbhiḥ śudhyanti gātrāṇi, buddirjñānena śudhyati।
Ahiṁsayā ca būtātmā, manaḥ satyena śudhyati॥

Baudhāyana / Dharma. / 1 / 5 / 1

Means of purity

जल से शरीर के अंग शुद्ध होते हैं, बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है, अहिंसा द्वारा आत्मा शुद्ध होती है और सत्य से मन शुद्ध होता है।

Bodies are cleaned with water, intellect is purified with knowledge, the soul is purified with non-violence and the mind is purified with the truth.

(49)

अद्यापि नोज्झति हरः किल कालकूटम्,
कूर्मो बिभर्ति धरणीं खलु चात्मपृष्ठे।
अम्भोनिधिर्वहति दुःसहवाडवाग्निम्,
अङ्गीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति॥

महान् पुरुष चौर-पञ्चाशिका / 50

Adyāpi nojjhati haraḥ kila kālakūṭam,
Kūrmo bibharti dharaṇīṁ khalu cātmapṛṣṭhe।
Ambhonidhirvahati duḥsahavāḍavāgnim,
Aṅgīkṛtaṁ sukṛtinaḥ paripālayanti॥

Great men Caurapañcāśikā / 50

महादेव जी अभी तक कालकूट विष को नहीं छोड़ रहे, कछुआ भी अपनी पीठ पर पृथ्वी को उठाए हुए है और सागर भी अपने अन्दर भयंकर वाडवाग्नि को सम्भाले हुए है। इससे सिद्ध होता है कि श्रेष्ठ व्यक्ति अपनाए हुए कार्य को पूर्ण रूप से निभाते हैं।

God Śiva doesn't keep off the deadly poison, Kālakūta. The tortoise has been carrying the earth on his back. The ocean has been adopting the intolerable sub-marine fire. So we can say that good persons subsist their determination.

(50)

अद्यैव कुरु तच्छ्रेयो, मा त्वां कालोऽतिगान्महान्।
को हि जानाति कस्याद्य, मृत्युकालो भविष्यति॥

शुभ कर्म महाभा./शान्तिप./277/14

Adyaiva kuru tacchreyo, mā tvāṁ kālo'tigānmahān।
Ko hi jānāti kasyādya, mṛtyukālo bhaviṣyati॥

Good works Mahābhā / Śā. / 277 / 14

जो श्रेष्ठ कार्य तुम्हें करना है, उसे आज ही कर लो। कहीं तुम्हारा शुभ अवसर निकल न जाये। कौन जानता है कि आज किसकी मृत्यु का समय है। भावार्थ यह है कि मनुष्य को श्रेष्ठ कर्म शीघ्र ही कर लेना चाहिए। पता नहीं कल यह शरीर रहे या न रहे।

The good work which is to be done, do it just today. It may be that you lose your favourable opportunity. Who knows that who will die today? So the man should perform his duties as earlier as possible.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(51)

अद्रोहः सर्वभूतेषु कर्मणा मनसा गिरा।
अनुग्रहश्च दानं च, शीलमेतद् विदुर्बुधाः॥

शील का स्वरूप वल्लभदेव–सुभाशितवलि / 3047

Adrohaḥ sarvabhūteṣu karmaṇā manasā girā।
Anugrahaśca dānaṁ ca, śīlametad vidurbudhāḥ॥

Real morality Vallabhadeva. Su. / 3047

मन, वाणी और कर्म से सभी प्राणियों के प्रति प्रीति रखना, कृपा करना और दान देना, विद्वान् लोग इन सभी को शील अथवा सदाचार मानते हैं।

To have affection for every animate with mind, speech and action, to be kind to them and to give donation for deserved is called good conduct in the opinion of scholars.

(52)

अधः पश्यस्व मोपरि सन्तरां पादकौ हर।
मा ते कशप्लकौ दृशन्, स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ॥

पति के कर्त्तव्य ऋ./8/33/19

Adhaḥ pasyasva mopari santarāṁ pādakau hara।
Mā te kaśāplakau dṛśan, strī hi Brahmā babhūvitha॥

Hasband's duty Ṛg. / 8 / 33 / 19

इस गृहस्थ रूप यज्ञ में पुरुष की संगिनी स्त्री ही ब्रह्मा नामक ऋत्विक् बन जाती है और वह पुरुष को निर्देश देती है कि नीचे देख, ऊपर नहीं। दोनों पैरों को ठीक प्रकार से उठाकर चल और तेरे गुप्तांग नंगे नहीं होने चाहिएँ। भाव यह है कि पुरुष को विनम्र होना चाहिए और वस्त्रों द्वारा शरीर के आवश्यक अंग ढके होने चाहिए।

In the sacrifice of home-life the companion of a man is his wife and plays the part of Brahmā, the head of the sacrifice. She advises her husband, "you should look down, i.e., remain polite. Put your feet properly and keep your sex organs duly covered."

(53)

अधर्मं धर्ममिति या, मन्यते तमसावृता।
सर्वार्थान् विपरीतांश्च, बुद्धिः सा पार्थ तामसी॥

निन्दनीय बुद्धि महाभा. / भीष्मप. / 42 / 32

Adharmaṁ dharmamiti yā, manyate tamasāvṛtā।
Sarvārthān viparītaṁśca, buddhiḥ sā Pārtha tāmasī॥

Mahābhā / Bhīṣma / 42 / 32

Condemnable intellect

हे पृथापुत्र, जो बुद्धि तमोगुण से घिरी हुई अधर्म को धर्म मानती है तथा सभी विषयों को उल्टे ढंग से ग्रहण करती है, वह तामसी बुद्धि कहलाती है।

O Pārtha, the wisdom who takes bad actions as good ones being full of darkness, and which takes every things reversely is called vindictive wisdom.

(54)

अधर्मं नात्र पश्यन्ति, धर्मतत्त्वार्थदर्शिनः।
यः स्तेनैः सह सम्बन्धान्मुच्यते शपथैरपि॥

धर्म और अधर्म महाभा. / कर्णपर्व / 31 / 63

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Adharmaṁ nātra paśyanti, dharmatattvārthadarśinaḥ।
yaḥ stenaiḥ saha sambandhānmucyate śapathairapi॥

Mahābhā. / Karṇa. / 31 / 63

Morality or immorality

यदि मनुष्य चोरों से घिर जाये और वह झूठी कसमें खाकर उनसे छूट जाता है, तो धर्म के सार को समझने वाले लोग ऐसे कार्य को अधर्म नहीं मानते। अर्थात् चोर आदि दुष्टों से बचने के लिए बोला गया असत्य अधर्म नहीं होता।

The persons who know the sense of morality don't see immorality in the circumstances when any person gets rid of the thieves with false or true oaths.

(55)

अधर्मस्तु महांस्तात, भवेत्तस्य महीपतेः।
यो हरेद् बलिषड्भागं, न च रक्षति पुत्रवत्॥

नीच शासक वा.रामा./3/6/11

Adharmastu mahāṁstāta, bhavettasya mahīpateḥ।
Yo hared baliṣaḍbhāgaṁ, na ca rakṣati putravat॥

Condemnable ruler Vā. Rāmā. / 3 / 6 / 11

हे प्रिय! वह राजा महान् अधार्मिक है, जो प्रजाओं से आय का छठा भाग कर के रूप में तो ले लेता है, परन्तु पुत्रों के समान उनकी रक्षा नहीं करता।

O my dear, it is high immorality of the king, who receives sixth part of one's income as tax and doesn't protect that person like his son.

(56)

अधर्मेणैधते तावत्, ततो भद्राणि पश्यति।
ततः सपत्नाञ्जयति, समूलस्तु विनश्यति॥

अधर्म से हानि मनु / 4 / 174

Adharmeṇaidhate tāvat, tato bhadrāṇi paśyati।
Tataḥ sapatnāñjayati, samūlastu vinaśyati॥

Harm from Immorality Manu. / 4 / 174

अधार्मिक मनुष्य अधर्म द्वारा पहले बढ़ता है और अपनी अनेक प्रकार की भलाई करता है। फिर शत्रुओं को भी जीत लेता है। परन्तु बाद में घर-बार समेत पूर्णतः नष्ट हो जाता है।

A bad man makes progress with the help of immorality, looks desired things and also wins his enemies, but at last he is up-rooted and destroyed.

(57)

अध्यापिता ये गुरून्नाद्रियन्ते,
विप्रा वाचा मनसा कर्मणा वा।
यथैव ते न गुरोर्भोजनीया-
स्तथैव तान्न भुनक्ति श्रुतं तत्॥

निन्दनीय शिष्य निरुक्त/2/4

Adhyāpitā ye gurunnādriyante,
Viprā vācā manasā karmaṇā vā।
Yathaiva te na gurorbhojanīyā-
stathaiva tānna bhunakti śrutaṁ tat॥

Condemnable pupils Nirukta / 2 / 4

जो पढ़ाए गए शिष्य वाणी, मन और व्यवहार से अपने गुरु का आदर नहीं करते, वे गुरु की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृपा के पात्र नहीं हो पाते और उसी प्रकार उनका प्राप्त किया हुआ ज्ञान भी सफल नहीं होता।

The pupils who don't respect their teacher with tongue, mind and practice, don't deserve the favour of their teacher and also, the knowledge they have gained gives no success to them in the life.

(58)

अनन्तपारं किल शब्दशास्त्रम्,
स्वल्पं तथायुर्बहवश्च विघ्नाः।
सारं ततो ग्राह्यमपास्य फल्गु,
हंसैर्यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात्॥

ग्राह्य पञ्चतं./कथामुख/7

Anantapāraṁ kila śabdaśāstram,
Svalpaṁ tathāyurbahavaśca vighnāḥ।
Sāraṁ tato grāhyamapāsya phalgu,
Haṁsairyathā kṣīramivāmbumadhyāt॥

Adoptable Pañcata. / Kathāmukha / 7

आयु थोड़ी है और पठनीय साहित्य असीम है तथा विघ्न भी अनेक प्रकार से आ जाते हैं। इसलिए व्यर्थ का साहित्य छोड़कर साररूप को ग्रहण करना चाहिए; जिस प्रकार हंस पानी में से दूध का अंश ग्रहण कर लेता है।

The literature is very voluminous and boundless, but our age is very short and also full of many obstacles in it. So we should adopt only extracts and over-look trifle things, like the swan who drinks milk out of the mixture of water and milk.

(59)

अनन्तशास्त्रं बहु वेदितव्यम्,
अल्पश्च कालो बहवश्च विघ्नाः।
यत्सारभूतं तदुपासितव्यम्,
हंसो यथा क्षीरमिवाम्बुमिश्रम्॥

ग्राह्य नराभरण/994

Anantaśāstraṁ bahu veditavyam,
Alpaśca kālo bahavaśca vighnāḥ।
Yat sārabhūtaṁ tadupāsitavyam,
Haṁso yathā kṣīramivāmbumiśram॥

Adoptable Narābharaṇa / 994

जानने योग्य वाङ्मय बहुत अधिक है और समय बहुत अल्प है तथा विघ्न अनेक हैं। इसलिए जो अपने लिए महत्त्वपूर्ण हो, उसी साहित्य का अध्ययन करना चाहिए, जैसे पानी में मिले दूध में से हंस दूध को ग्रहण कर लेता है।

The knowable literature is very vast and the time, we have, is very short in which there are many obstacles. So the literature which is most important for a person, only that should be studied, as the swan takes out the milk which is mixed in the water.

(60)

अनभ्यासाच्च वेदानाम्, आचारस्य च वर्जनात्।
आलस्यादन्नदोषाच्च, मृत्युर्विप्रान् जिघांसति॥

मृत्यु के कारण मनु. / 5 / 4

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Anabhyāsācca Vedānām, ācārasya ca varjanāt।
Ālasyādannadoṣācca, mṛturviprān jighāṁsati॥

Causes of death Manu. / 5 / 4

वेदों के पठन-पाठन न करने, सदाचार के त्याग देने, आलस्य के कारण और दूषित अन्न खाने से मृत्यु विद्वानों को नष्ट कर देती है।

Due to lack of study of the Vedas, and relinquishing of morality, adopting laziness and defects of food, death kills the scholars.

(61)

अनभ्यासेन विद्यानामसंसर्गेण धीमताम्।
अनिग्रहेण चाक्षाणां, जायते व्यसनं नृणाम्॥

संकटों के कारण काव्यादर्श / 2 / 247

Anabhyāsena vidyānāmasaṁsargeṇa dhīmatām।
Anigraheṇa cākṣāṇāṁ, jāyate vyasanaṁ nṛṇām॥

Causes of tortures Kavyādarśa / 2 / 247

विद्याओं का अभ्यास न करने, बुद्धिमानों की संगति त्यागने और इन्द्रियों को वश में न रखने से मनुष्य संकट में पड़ जाते हैं।

Rejecting the practice of sciences, relinquishing the company of wise men and having no control on the senses, people suffer with many difficulties.

(62)

अनभ्यासे विषं विद्या, अजीर्णे भोजनं विषम्।
विषं सभा दरिद्रस्य, वृद्धस्य तरुणी विषम्॥

हानि के कारण हितोपदेश/प्र./22

Anabhyāse viṣaṁ vidyā, ajīrṇe bhojanaṁ viṣam।
Viṣaṁ sabhā daridrasya, vṛddhasya taruṇī viṣam॥

Causes of losses Hitopadeśa / Pr. / 22

अभ्यास न करने से विद्या नष्ट हो जाती है, बदहजमी के समय खाया-पिया विष बन जाता है, गरीब का सभा में सम्मान नहीं होता और बूढ़े व्यक्ति के लिए जवान स्त्री विष के समान घातक हो जाती है।

Knowledge becomes useless if it is not practised. The food becomes poison in the condition of indigestion. A poor person doesn't get respect in a society. And a young lady is like a poison for an old man.

(63)

अनर्थकं विप्रवासं गृहेभ्यः,
पापैः सन्धिं परदाराभिमर्शम्।
दम्भं स्तैन्यं पैशुनं मद्यपानम्,
न सेवते यः स सुखी सदैव॥

सुख की विधि महाभा./उद्योगपर्व/33/113

Anarthakaṁ vipravāsaṁ gṛhebhyaḥ,
Pāpaiḥ sandhiṁ paradārābhimarśam।
Dambhaṁ stainyaṁ paiśunaṁ madyapānam,
na sevate yaḥ sa sukhī sadaiva॥

Mahābhā. / Udyoga. / 33 / 113

Method to happiness

जो व्यक्ति घर छोड़कर व्यर्थ ही विदेश नहीं जाता, पापी लोगों से मेल-मिलाप नहीं रखता, दूसरे की स्त्री के प्रति आकृष्ट नहीं होता तथा पाखण्ड,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चोरी, चुगलखोरी और मद्यपान नहीं करता, वह हमेशा ही सुखी रहता है।

The person who remains remote from these things lives happily — uselessly going away from home, joining the sinners, contacting other's wife, hypocrisy, stealing, backbiting and drinking of wine.

(64)

अनागतविधाता प्रत्युत्पन्नमतिश्च यः।
द्वावेव सुखमेधेते, दीर्घसूत्री विनश्यति॥

विलम्ब से हानि महाभा./शान्तिप./936/9

Anāgatavidhātā pratyutpannamatiśca yaḥ।
Dvāveva sukhamedhete, dīrghasūtrī vinaśyati॥

Loss due to delay Mahābhā. / Śānti. / 936 / 9

जो भविष्य के लिए पहले ही प्रबन्ध कर लेता है और जो सूझ-बूझ वाला है, इस प्रकार के दोनों व्यक्ति सुखपूर्वक जीवन बिताते हैं और जो प्रत्येक काम देर से करता है, वह नष्ट हो जाता है।

One who manages for future earlier and other who is quick-thinker, these two make progress happily, but who is late in doing his work, is ruined,

(65)

अनादेयं नाददीत, परिक्षीणोऽपि पार्थिवः।
आदेयं न समृद्धोऽपि सूक्ष्ममप्यर्थमुत्सृजेत्॥

शासक का कर्त्तव्य मनु. 8 / 170

Anādeyaṁ nādadīta, parikṣīṇo'pi pārthivaḥ।
Ādeyaṁ na samṛddho'pi sūkṣmamapyarthamutsṛjet॥

Duty of ruler Manu. / 8 / 170

चाहे राजा कितना ही निर्धन क्यों न हो जाये, तो भी जो ग्रहण-योग्य वस्तु नहीं है, उसे ग्रहण न करे। और, जो वस्तु ग्रहण करने योग्य हो, चाहे वह तुच्छ भी हो और राजा सम्पन्न भी हो, तब भी उसका त्याग न करे, अर्थात् उसे अवश्य ग्रहण कर ले।

In spite of deadly disaster the king should not accept the thing which is not acceptable. He also should not reject the thing which is acceptable, though he is prosperous and the thing is of less value.

(66)

अन्नाद् भवन्ति भूतानि, पर्जन्यादन्नसम्भवः।
यज्ञाद् भवति पर्जन्यो, यज्ञः कर्मसमुद्भवः॥

कर्म का महत्त्व महाभा./भीष्मप./27/14

Annād bhavanti bhūtāni, parjanyādannasambhavaḥ।
Yajñād bhavati parjanyo, yajñaḥ karmasamudbhavaḥ॥

Mahābhā. / Bhīṣma / 27 / 14

Importance of efforts

अन्न द्वारा ही प्राणियों का अस्तित्व होता है, अन्न मेघ द्वारा उत्पन्न होता है, मेघ की उत्पत्ति यज्ञ से होती है और यज्ञ कर्म द्वारा उत्पन्न होता है।

Creatures get life from edibles, edibles grow from the cloud, the cloud comes into existence from the sacrifice

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(Yajña) and the sacrifice is generated by works.

(67)

अनारोग्यमनायुष्यमस्वर्ग्यं चातिभोजनम्।
अपुण्यं लोकविद्विष्टं, तस्मात्तत् परिवर्जयेत्॥

अतिभोजन से हानि महाभा./भीष्म / 41/8

Anārogyamanāyuṣyamasvargyaṁ cātibhojanam।
Apuṇyaṁ lokavidviṣṭaṁ, tasmāttat parivarjayet॥

Mahābhā. / Bhīṣma / 41 / 8

Disadvantage of over eating

सीमा से अधिक खाने से स्वास्थ्य बिगड़ जाता है और आयु घट जाती है। यह कष्टदायक, पापकर्म तथा संसार से द्वेषकारी है। अतः अधिक भोजन नहीं करना चाहिए।

Eating too much causes diseases, lessens age, brings difficulties, is contrary to morality and is hated by public. So, one should not eat too much.

(68)

अनार्यवृत्तमप्राज्ञमसूयकमधार्मिकम् ।
अनर्थाः क्षिप्रमायान्ति, वाग्दुष्टं क्रोधनं तथा॥

अनर्थों के कारण महाभा./उद्योग/38/35

Anāryavṛttamaprājñamasūyakamadhārmikam।
Anarthāḥ kṣipramāyānti, vāgduṣṭaṁ krodhanaṁ tathā॥

Mahābhā. / Udyoga. / 38 / 35

Causes of adversities

जिस व्यक्ति का चरित्र निम्न होता है, जो निर्बुद्धि होता है, जो दूसरों से डाह करता है और धर्मविरुद्ध चलता है, जो कटु भाषण करता है और चिड़चिड़े स्वभाव का होता है, ऐसा व्यक्ति अनेक प्रकार के कष्टों से शीघ्र घिर जाता है।

Misfortunes come to such person very soon, who possesses bad character, has no understanding, is jealous and irreligious, speaks bitter and becomes irritated.

(69)

अनाहूतः प्रविशति, ह्यपृष्टो बहु भाषते।
अविश्वस्ते विश्वसिति, मूढचेता नराधमः॥

मूढ़ का लक्षण महाभा./उद्यो./33/36

Anāhūtaḥ praviśati, hyapṛṣṭo bahu bhāṣate।
Aviśvaste viśvasiti, mūḍhacetā narādhamaḥ॥

Definition of a fool Mahābhā. / Udyoga. / 33 / 36

जो बिना बुलाये घुस आता है, बिना पूछे ही बहुत बोलने लगता है और धोखेबाजों पर विश्वास करता है, ऐसा व्यक्ति महामूर्ख और नीच कहलाता है।

That is a foolishminded person who enters without any call, speaks too much without asking and believes in such person who is not trust-worthy.

(70)

अनित्यानि शरीराणि, विभवो नैव शाश्वतः।
नित्यं सन्निहितो मृत्युः, कर्त्तव्यो धर्मसञ्चयः॥

जीवन में कर्त्तव्य पञ्च. / काको./92

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Anityāni śarīrāṇi, vibhavo naiva śāśvataḥ।
Nityaṁ sannihito mṛtyuḥ, karttavyo dharmasañcayaḥ॥

Duties in life Pañcata. / Kako. / 92

हमारे शरीर सदा रहने वाले नहीं हैं, धन भी हमेशा टिका नहीं रहता और मृत्यु सदा साथ रहती है, अतः मनुष्य को चाहिए कि वह धर्म के कार्यों को करता रहे। न जाने जीवन कब समाप्त हो जाए!

Our bodies are perishable, wealth does not remain for ever and death remains close with all of us; so we should perform the works of morality and religion.

(71)

अनिर्वेदः श्रियो मूलं, लाभस्य च शुभस्य च।
महान् भवत्यनिर्विण्णः, सुखं चानन्त्यमश्नुते॥

उत्साह के लाभ महाभा. / उद्योग / 39 / 57

Anirvedaḥ śṛyo mūlaṁ, lābhasya ca śubhasya ca।
Mahān bhavatyanirviṇṇaḥ, sukhaṁ cānantyamaśnute॥

Mahābhā. / Udyoga. / 39 / 57

Advantages of zeal

निरन्तर श्रम या लगन ही लक्ष्मी के लाभ और कल्याण का आधार है। निरन्तर श्रम करने वाला ही महान् बन जाता है और निरन्तर सुख को भोगता है।

Devotion to work is the root cause of prosperity, profit and welfare. One, who is devoted to his work becomes great and enjoys unlimited happiness.

(72)

अनिर्वेदं च दाक्ष्यं च, मनसश्चापराजयम्।
कार्यसिद्धिकराण्याहुस्तस्मादेतद् ब्रवीम्यहम्॥

सफलता के साधन महाभा. / वन. / 313 / 116

Anirvedaṁ ca dākṣyaṁ ca, manasaścāparājayam।
Kāryasiddhikarāṇyāhustasmādetad bravīmyaham॥

Mahābhā. / Vana. / 313 / 116

Means to success

निरन्तर श्रम, कार्यकुशलता तथा मन में निराशा न आने देना — ये सब बातें कार्यसिद्धि के साधन हैं। इसीलिए मैं तुम्हें इन्हें बता रहा हूँ।

Devotion, dexterity and lack of disappointment of the mind bring success in any work. So I indicate these three things to you.

(73)

अनुमन्ता विशसिता, निहन्ता क्रयविक्रयी।
संस्कर्त्ता चोपहर्त्ता च, खादकश्चेति घातकाः॥

हत्या के भागी मनु. / 5 / 5

Anumantā viśasitā, nihantā krayavikrayī।
Saṁskarttā copahartta ca, khādakaśceti ghātakāḥ॥

Partners in death Manu. / 5 / 5

हत्या करवाने वाला, मारने वाला, टुकड़े-टुकड़े करने वाला, खरीदने वाला, बेचने वाला, पकाने वाला, परोसने वाला और खाने वाला ये घातक कहलाते हैं। अर्थात् ये सभी किसी भी पशु-पक्षी के वध के पापी होते हैं।

These eight persons are called

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

murderers :- (1) who advises, (2) who kills, (3) who cuts into pieces, (4) who buys, (5) who sells, (6) who cooks, (7) who distributes and (8) who eats the meat.

(74)

अनुगन्तुं सतां वर्त्म, कृत्स्नं यदि न शक्यते।
स्वल्पमप्यनुगन्तव्यं, मार्गस्थो नावसीदति॥

सन्मार्ग अपनाओ शार्ङ्गधर-पद्धति / 1420

Anugantuṁ satāṁ vartma, kṛtsnaṁ yadi na śakyate।
Svalpamapyanugantavyaṁ, mārgastho nāvasīdati॥

Adopt good path Śarṅga. / 1420

यदि श्रेष्ठ पुरुषों के मार्ग पर पूर्णरूप से न चला जा सके, तो थोड़ा ही चल लेना चाहिए। इस प्रकार मार्ग के मध्य में भी पहुँचा हुआ व्यक्ति दुःखी नहीं होता।

If the path of noble persons can not be accepted completely, then at least some part of that must be accepted, as going on this path, the person never feels sadness, inspite of reaching up to the midway.

(75)

अनुव्रतः पितुः पुत्रो, मात्रा भवतु सम्मनाः।
जाया पत्ये मधुमतीं, वाचं वदतु शन्तिवाम्॥

गृहस्थ में कर्त्तव्य अथर्व./3/30/2

Anuvrataḥ pituḥ putro, mātrā bhavatu sammanāḥ।
Jāyā patye madhumatīṁ, vācaṁ vadatu śantivām॥

Atharva. / 3 / 30 / 2

House holder's duties

पुत्र को चाहिए कि वह पिता के श्रेष्ठ कर्मों का पालन करे और माता से मन मिलाये रखे, अर्थात् उसके विरुद्ध आचरण न करे। पत्नी को चाहिए कि वह पति से शान्ति देने वाली मधुर वाणी ही बोले।

A son should carry on good works of his father. His mind should work according to his mother's mind without going against her. The wife should speak sweet tongue to her husband, which may bring peace in his mind.

(76)

अनृणा अस्मिन्ननृणाः परस्मिन्
तृतीये लोके अनृणाः स्याम।
ये देवयानाः पितृयाणाश्च लोकाः,
सर्वान् पथो अनृणा आ क्षियेम॥

ऋणहीन रहें अथर्व./6/117/3

Anṛṇā asminnanṛṇāḥ paraṣmin,
tṛtīye loke anṛṇāḥ syāma।
Ye devayānāḥ pitṛyāṇaśca lokāḥ,
Sarvān patho anṛṇā ā kṣiyema॥

Let us be debtless Atharva. / 6 / 117 / 3

हम बचपन, जवानी तथा बुढ़ापे में अथवा जन्म-जन्मान्तर में भी ऋणी (कर्जदार) न रहें। चाहे हम मुक्ति के मार्ग पर चलें अथवा गृहस्थ जीवन बितायें, इन सभी दशाओं में हमें ऋणमुक्त ही रहना चाहिए।

We should be debtless in our child-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

hood, in youth and in old age. We should not be indebted in other lives also. We should be indebted in all the conditions, whether we go on the spritual path or remain in the family life.

(77)

अनेकदोषदुष्टोऽपि, कायः कस्य न वल्लभः।
कुर्वन्नपि व्यलीकानि, यः प्रियः प्रिय एव सः॥

प्यारा व्यक्ति पञ्च/मित्रभेद/186

Aneka-doṣaduṣto'pi, kāyaḥ kasya na vallabhaḥ।
Kurvannapi vyalīkāni, yaḥ priyaḥ priya eva saḥ॥

Dear one Pancata. / Mitrabhe. / 186

शरीर चाहे लूला, लँगड़ा, अन्धा या किसी भी दोष से सम्पन्न हो, तो भी अपना शरीर सभी को प्रिय लगता है। इसी प्रकार यदि कोई प्रिय व्यक्ति बुरे कार्य भी करता है, तो भी वह प्यारा ही लगता है।

One loves his own body, though it is full of defects. In the same way the person, whom one loves, is loved always, inspite of his bad deeds.

(78)

अनेकसंशयोच्छेदि, परोक्षार्थस्य दर्शकम्।
सर्वस्य लोचनं शास्त्रं, यस्य नास्त्यन्ध एव सः॥

शास्त्रज्ञान हितो./प्र./10

Aneka-saṁśayocchedi, parokṣārthasya darśakam।
Sarvasya locanaṁ śāstraṁ, yasya nāstyandha eva saḥ॥

Knowledge of scriptures Hito. / Pra. / 10

जिस व्यक्ति ने अनेक संदेहों को नष्ट करने वाले, अज्ञात विषयों को समझाने वाले और प्रत्येक व्यक्ति के लिए विषय को स्पष्ट करने वाले शास्त्र को नहीं जाना, वह तो अंधा ही है।

The person is blind in true sense of word who has not studied such a scripture which removes all doubts, shows unknown things and explains the problems for every person.

(79)

अनेन किं न पर्याप्तं मांसस्य परिवर्जनम्।
यत्पाटितं तृणेनापि स्वमङ्गं परिदूयते॥

मांस-भक्षण-निषेध वल्लभ. सुभा. / 2983

Anena kiṁ na paryāptaṁ māṁsasya parivarjanam।
Yatpāṭitaṁ tṛṇenāpi svamaṅgaṁ paridūyate॥

Eating of meat condemnable Vallabha. Subhā. / 2983

क्या केवल यही युक्ति मांसभक्षण का त्याग करने के लिए पर्याप्त नहीं है कि यदि हमारा अंग केवल तिनके से भी छिल जाए, तो कितना कष्ट प्रतीत होता है।

Is this reason not sufficient for rejection of meat-eating, that a man feels much pain when he is pierced even with a straw.

(80)

अन्ति सन्तं न जहात्यन्ति सन्तं न पश्यति।
देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति॥

ईश्वर की रचना अथर्व/10/8/32

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Anti santaṁ na jahātyanti santaṁ na paśyati।
Devasya paśya kāvyaṁ na mamāra na jīryati॥

Creation of God Atharva. / 10 / 8 / 32

जो दिव्यशक्तियों का भण्डार परमेश्वर सदा मनुष्य के निकट है और साथ नहीं छोड़ता, जिसे पास होने पर भी मानव देख नहीं पाता, उसके सृष्टि रूपी काव्य को देखो, जो स्थायी है; जो न मरता है और नाहीं बूढ़ा होता है। भाव यह है कि परमात्मा की रचना निरन्तर अपनी स्थिति बनाए हुए है। उसे देखकर उस स्रष्टा को जानने का प्रयास करो।

God, who is the store of all divine powers, always remains with us and never leaves us, we cannot see Him. So look at the poetry of His creation, which is everlasting, never dies and never be-comes old. It means that though we cannot see God with our eyes, yet we can look His creation and feel His existence everywhere.

(81)

अन्तवन्त इमे देहाः, नित्यस्योक्ताः शरीरिणः।
अनाशिनोऽप्रमेयस्य, तस्माद् युध्यस्व भारत॥

आत्मा की नित्यता महाभा. / भीष्म / 26 / 18

Antavanta ime dehāḥ, nityasyoktāḥ śarīriṇaḥ।
Anāśino'prameyasya, tasmād yudhyasva Bhārata॥

Mahābhā. / Bhīṣm / 26 / 18

Everlasting of soul

हे भरतवंश में उत्पन्न अर्जुन! यह समझ लो कि सदा रहने वाले, नष्ट न होने वाले और न मापे जाने योग्य इस जीवात्मा के शरीर नष्ट हो जाते हैं, वे सदा टिके नहीं रहते। इसलिए तू अपना कर्त्तव्य पालन करने के लिए युद्ध कर।

O offspring of Bharata (Arjun), you must understand that this soul is ever-lasting. It never dies and it cannot be measured. The bodies in which the soul remains are destructible and are not everlasting. So, you should act accor-ding to your duty and fight against your enemies.

(82)

अन्धीकरोमि भुवनं बधिरीकरोमि,
धीरं सचेतनमचेतनतां नयामि।
कृत्यं न पश्यति न येन हितं शृणोति,
धीमानधीतमपि न प्रतिसन्दधाति॥

क्रोध का प्रभाव प्रबन्चन्द्रोदय. / 2 / 29

Andhīkaromi bhuvanaṁ badhirīkaromi,
Dhīraṁ sachetanamacetanatāṁ nayāmi।
Kṛtyaṁ na paśyati na yena hitaṁ śṛṇoti,
Dhīmānadhītamapi na pratisandadhāti॥

Anger's effect Prabandhaca. / 2 / 29

क्रोध आने पर मनुष्य अन्धा हो जाता है, वह अपने-पराये की पहचान नहीं कर पाता। इसी प्रकार वह बहरा होकर किसी की भी हितकारी बात सुनने को तैयार नहीं होता। क्रोध समझदार और धैर्यशाली मनुष्य को नासमझ बना देता है,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिससे वह न कर्त्तव्य को देखता है और नाहीं लाभप्रद बात को सुनता है। क्रोध से भरा बुद्धिमान् व्यक्ति भी अपने अध्ययन द्वारा उपार्जित ज्ञान पर ध्यान नहीं देता।

Anger makes a man blind, as he cannot recognize his well-wisher or others. In the same way angry man becomes deaf, as he does not hear the thing which is useful for him. Anger makes even a wise and grave person foolish as he neither looks his duty nor listens his useful thing. Even an angry wise man doesnot care his knowledge gained by study.

(83)

अन्नेन धार्यते देहः, कुलं शीलेन धार्यते।
प्राणा मित्रेण धार्यन्ते, क्रोधः सत्येन धार्यते॥

धारक वस्तुएँ पद्मपुराण

Annena dhāryate dehaḥ, kulaṁ śīlena dhāryate।
Prāṇā mitreṇa dhāryante, krodhaḥ satyena dhāryate॥

Helper things Padmapurāna

शरीर को बनाए रखने के लिए अन्न की आवश्यकता होती है, खानदान की शोभा उत्तम आचरण से होती है, संकट के समय मित्र ही प्राणों के रक्षक बनते हैं और सच्चाई के सामने क्रोध शान्त हो जाता है।

The body is maintained with food, the family is maintained with morality, life is maintained by a friend and anger is controlled by the truth.

(84)

अन्यदीये तृणे रत्ने काञ्चने मौक्तिकेऽपि च।
मनसो विनिवृत्तिर्या, तदस्तेयं विदुर्बुधाः॥

अस्तेय का स्वरूप जाबालयोग / 1 / 11

Anyadīye tṛṇe ratne kāñcane mauktike'pi ca।
Manaso vinivṛttiryā, tadasteyaṁ vidurbudhāḥ॥

Absence of theft Jābālayoga. / 1 / 11

किसी दूसरे की किसी वस्तु से चाहे वह तिनका, रत्न, सोना या मोती भी क्यों न हो, मन को दूर रखने अर्थात् उसकी कामना न करने को ही बुद्धिमान् लोग अस्तेय (चोरी न करना) कहते हैं।

Absence of theft means to keep one's mind off from the straw, the gem, gold and the pearl which are possession of any other. In brief, having no desire for a thing which is possessed by others, is really called absence of theft (Asteya).

(85)

अन्यान् परिवदन् साधुर्यथा हि परितप्यते।
तथा परिवदन्नन्यान्, तुष्टो भवति दुर्जनः॥

सज्जन और दुर्जन कवितामृतकूप / 80

Anyān parivadan sādhuryathā hi paritapyate।
Tathā parivadannanyān, tuṣṭo bhavati durjanaḥ॥

Good and bad ones Kavitāmṛtakūpa / 80

भला व्यक्ति तो दूसरों की निन्दा करते समय दुःखी होता है, परन्तु दुष्ट व्यक्ति दूसरों की निन्दा करते हुए प्रसन्न होता है।

A noble person feels sadness while insulting any one but the bad per-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

son feels happiness while disgracing others.

(86)

अन्ये जायां परिमृशन्त्यस्य
यस्यागृधद्वेदने वाज्यक्षः।
पिता माता भ्रातर एनमाहु-
र्न जानीमो नयता बद्धमेतम्॥

जुआरी की दुर्दशा ऋ./10/34/4

Anye jāyāṁ parimṛṣantyasya,
Yasyāgṛdhadvedane vājyakṣaḥ।
Pitā mātā bhrātara enamāhur-
na jānīmo nayatā baddhametam॥

Gambler's bad condition Ṛg./10/34/4

जिसके घर में शक्तिशाली पासा (जुआ) लोभ के साथ रहता है, उस व्यक्ति की पत्नी का संसर्ग अन्य लोगों से होने लगता है। उसके विषय में पिता, माता और भाई यहाँ तक कह देते हैं कि "हम इसको नहीं जानते; इसे बाँधकर ले जाओ।"

The man in whose house the powerful gamble remains, loses his wife because she begins to make contact with other persons. Even his father, mother and brothers say, "We don't know him, arrest and take him off".

(87)

अपकुर्वन्नपि प्रायः प्राप्नोति महतः शुभम्।
दहन्तमप्यौर्वमग्निं सन्तर्पयति वारिधिः॥

महापुरुषों के गुण वल्लभ-सुभाषिता / 227

Apakurvannapi prāyaḥ prāpnoti mahataḥ śubham।
Dahantamapyaurvamagniṁ santarpayati vāridhiḥ॥

Vallabha. Subhā. / 227

Qualities of great men

बुराई करने वाला भी व्यक्ति बड़ों से सुख ही प्राप्त करता है। जैसे वाडवाग्नि समुद्र को जलाती है, परन्तु समुद्र उसे तृप्त ही करता रहता है।

Even harmful person gets welfare from a greatman, as though the submarine fire burns the ocean, yet the ocean makes the fire contented with its water.

(88)

अपत्यं धर्मकार्याणि, शुश्रूषा रतिरुत्तमा।
दाराधीनस्तथा स्वर्गः, पितॄणामात्मनश्च ह॥

पत्नी का महत्त्व मनु./9/28

Apatyaṁ dharmakāryāṇi, śuśrūṣā ratiruttamā।
Dārādhīnastathā svargaḥ, pitṛṇāmātmanaśca ha॥

Importance of a wife Manu./9/28

सन्तान की प्राप्ति का, धर्म के कार्यों का, सेवा और श्रेष्ठ प्रेम का तथा पितरों और अपने सुखों का साधन पत्नी ही है।

Offsprings, good works, service, extraordinary love, happiness of the parents and one's own happiness all depend on the wife.

(89)

अपरे बन्धुवर्गे वा मित्रे द्वेष्टरि वा सदा।
आत्मवत् वर्तनं यत् स्यात्, सा दया परिकीर्तिता॥

दया का स्वरूप भविष्यपुराण/1/2/158

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Apare bandhuvarge vā, mitre dveṣṭari vā sadā।
Ātmavat vartanaṁ yat syāt, sā dayā parikīrtitā॥

Bhaviṣya. purāna / 1 / 2 / 158

Real kindness

पराये लोगों के साथ, बन्धुओं के साथ, मित्र के साथ अथवा शत्रु के साथ भी अपने जैसा व्यवहार करना ही वस्तुतः दया कहलाती है।

The behaviour which is liked by oneself if practised with others, relatives, friends and even with enemies, then it is called 'kindness' in real sense.

(90)

अपहृत्यार्त्तिमार्त्तानां, सुखं यदुपजायते।
तस्य स्वर्गोऽपवर्गो वा, कलां नार्हति षोडशीम्॥

दुःखियों का भला महाभा./अनुशासन/50/20

Apahṛtyārttimārttānāṁ, sukhaṁ yadupajāyate।
Tasya svargo'pavargo vā, kalāṁ nārhati ṣoḍaśīm॥

Help the poor Mahābhā. / Anu. / 50 / 20

दुःखियों की पीड़ा को दूर करके जो आनन्द प्राप्त होता है, उसकी तुलना में स्वर्ग या मोक्ष का आनन्द सोलहवाँ हिस्सा भी नहीं है।

The happiness which one gets in heaven or in salvation, cannot compare the sixteenth part of the happiness which is gained by removing the troubles of the distressed persons.

(91)

अपां मध्ये तस्थिवांसं तृष्णाविदज्जरितारम्।
मृडा सुक्षत्र मृडय॥

सुख की कामना ऋ./7/89/4

Apāṁ madhye tasthivaṁsaṁ, tṛṣṇāvidajjaritāram।
Mṛḍā sukṣatra mṛḍaya॥

Desire of happiness Ṛg. / 7 / 89 / 4

प्रभो, मैं आनन्दस्वरूप आप के आनन्दरूपी जल में ही रहता हूँ, क्योंकि आप तो सर्वव्यापक हैं। परन्तु फिर भी मुझ उपासक को प्यास लगी रहती है; अर्थात् मैं उस आनन्द का उपभोग नहीं कर सकता। हे परम रक्षक! मुझे सुखी करो और अपने आनन्द से तृप्त करो।

अथवा

कर्मों के मध्य विचरण करता हुआ मैं वृद्धावस्था को प्राप्त हो गया हूँ, परन्तु अभी मेरी मोहमाया की तृष्णा शान्त नहीं हुई। हे परमरक्षक प्रभो! ऐसी कृपा करो कि मैं वासनाओं से दूर होकर आपका चिन्तन कर सकूँ। मुझे अपने आनन्द का पान करा कर सुखी कीजिए।

O God! I live in you as you are omnipresent and embodiment of bliss. In spite of this, I feel thirsty and cann't enjoy your bliss. O saviour, make me happy and bestow your bliss upon me.

OR

I have become old doing different works. Still my desires have not appeased. O Supreme Protector, be kind and abolish my worldly desires, so that I may enjoy your bliss.

(92)

अपां समीपे नियतो, नैत्यकं विधिमास्थितः।
सावित्रीमप्यधीयीत, गत्वारण्यं समाहितः॥

गायत्री का जाप मनु./2/104

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Apāṁ samīpe niyato, naityakaṁ vidhimāsthitaḥ।
Sāvitrīmapyadhīyīta, gatvāraṇyaṁ samāhitaḥ॥

Muttering of Gāyatrī Manu. / 2 / 104

मनुष्य को चाहिए कि वह दैनिक नियमों का पालन करता हुआ जंगल में जाकर नदी आदि के तट पर समाधिस्थ होकर गायत्री मन्त्र का भी जाप करे।

A man carrying on his daily principles, should go into the forest and sit on the bank of a river or tank or lake and then should meditate, muttering the 'Gayatri Mantra'.

(93)

अपूजिताश्च यत्रैताः, सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।
तदा चैतत् कुलं नास्ति, यदा शोचन्ति जामयः॥

पीड़ित नारियाँ महाभा. / अनुशासन / 46 / 6

Apūjitāśca yatraitāḥ, sarvāstatrāphalāḥ kṛiyāḥ।
Tadā caitat kulaṁ nāṣti, yadā śocanti jāmayaḥ॥

Tortured ladies Mahābhā. / Anu. / 46 / 6

जहाँ स्त्रियों का मान नहीं होता, वहाँ सभी कार्य निष्फल हो जाते हैं। जब स्त्रियाँ शोक से पीड़ित रहती हैं, तब खानदान नष्ट हो जाता है।

The house where ladies are not respected, all good works end in smoke and become useless. The family is destroyed in which ladies feel pain.

(94)

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते, पूज्यानामवमानना।
त्रीणि तत्र प्रवर्तन्ते, दुर्भिक्षं मरणं भयम्॥

पूज्यों का अपमान पञ्चतन्त्र / काकोलूकीय / 183

Apūjyā yatra pūjyante, pūjyānāmavamānanā।
Triṇi tatra pravartante, durbhikṣaṁ maranaṁ bhayam॥

Pancata. / Kāko / 183

Dishonour of honorables

जहाँ अपूज्य लोगों की पूजा होती है और पूज्यों का अपमान होता है, वहाँ अकाल, मृत्यु और डर ये तीन बुरी बातें प्रकट हो जाती हैं।

The place where undesereving persons are respected and deserved persons are insulted, there these three things – famine, death and terror come into existence.

(95)

अपूर्वः कोऽपि कोशोऽयं विद्यते तव भारति।
व्ययतो वृद्धिमायाति, क्षयमायाति सञ्चयात्॥

विद्या का कोश अज्ञात

Apūrvaḥ ko'pi kośo'yaṁ vidyate tava Bhārati।
Vyayato vṛddhimāyāti, kṣayamāyāti sañcayāt॥

Treasury of knowledge Unknown

हे विद्या देवी! तुम्हारा यह खजाना बड़ा विचित्र है, जो खर्च करने से तो बढ़ता है और जमा रखने से नष्ट हो जाता है।

O godess of knowledge, this treasury

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

of yours is very strange, because when it is consumed, it increases and when it is stored, it decreases.

(96)

अपेक्षन्ते न च स्नेहम्, न पात्रं न दशान्तरम्।
सदा लोकहिते युक्ता, रत्नदीपा इवोत्तमाः॥

श्रेष्ठ पुरुषों के गुण सुभाषितावली / 224

Apekṣante na ca sneham, na pātram na daśāṇtaram।
Sadā lokahite yuktā. ratnadīpā ivottamāḥ॥

Qualities of the good Subhāṣitavalī / 224

जैसे रत्नरूपी दीपक बिना तेल, पात्र और बत्ती के ही प्रकाश देते रहते हैं, इसी प्रकार श्रेष्ठ व्यक्ति किसी से प्यार की अपेक्षा नहीं करते, किसी विशेष व्यक्ति को नहीं देखते, और नाही किसी भी दशा में किसी से कुछ चाहते हैं; फिर भी वे निरन्तर लोक-कल्याण में लगे रहते हैं।

(विशेष — यहाँ 'स्नेह – तेल और प्रेम' तथा 'दशा – हालत और बत्ती' ये शब्द इन दो-दो अर्थों में प्रयुक्त हुए हैं।)

As the shining jewels give light without oil, a pot and a wick, similarly the good persons, who have devotion to help others, never desire love, don't care for a deserving or underserving person and do not wait for any other condition.

(97)

अप्रणोद्योऽतिथिः सायं, सूर्योढो गृहमेधिना।
काले प्राप्तस्त्वकाले वा, नास्यानश्नन् गृहे वसेत्॥

अतिथि-सेवा मनु./3/105

Apraṇodyo'tithiḥ sāyaṁ, sūryoḍho gṛhamedhinā।
Kāle prāptastvakāle vā, nāsyānaśnan gṛhe vaset॥

Service of guests Manu. / 3 / 105

सायंकाल सूर्यास्त के समय पर आए अतिथि को गृहस्थी अपना ले। चाहे अतिथि समय पर और चाहे समय बीत जाने पर भी पहुँचे, सभी दशाओं में अतिथि को बिना भोजन कराये न रहने दे; अर्थात् भोजन करा कर ही घर में ठहराए।

The house-master should accept the guest who has come at the time of the sunset. Whether the guest reaches in time or not, he should be given food. In the house he should not be stayed without eating the food.

(98)

अप्राप्तकालं वचनं बृहस्पतिरपि ब्रुवन्।
लभते बुद्ध्यवज्ञानमवमानं च भारत॥

निन्दनीय वचन महाभा./उद्योग/39/2

Aprāptakālaṁ vacanaṁ Bṛhaspatirapi bruvan।
Labhate buddhyavajñānamavamānaṁ ca Bhārat॥

Mahābhā / Udyoga / 39 / 2

Condemnable talk

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हे भरतवंशीय (धृतराष्ट्र), यदि बृहस्पति भी समय को समझ कर बात नहीं करता और बेमौके ही बोलता है, तो वह मूर्ख माना जाता है और अपमानित होता है। अतः समय को देखकर ही बात करनी चाहिए।

O offspring of Bharata (Dhṛtarāṣṭra), if even Bṛhaspati, the preacher of gods, does not speak according to the time, he is considered a fool and is insulted. So, everybody should speak according to the time and the place.

(99)

अप्रियवचनदरिद्रैः प्रियवचना-
ढ्यैः स्वदारपरितुष्टैः।
परपरिवादनिवृत्तैः क्वचित्
क्वचिन्मण्डिता वसुधा॥

श्रेष्ठ व्यक्ति नीतिशतक/106

Apriyavacanadaridraiḥ, priyavacanā-
ḍhyaiḥ svadāraparituṣṭaiḥ।
Paraparivādanivṛttaiḥ kvacit
kvacinmaṇḍitā vasudhā॥

Good persons Nītiśataka / 106

जो लोग कठोर नहीं बोलते, सदा मधुर भाषण ही करते हैं, अपनी पत्नियों से ही सन्तुष्ट हैं तथा दूसरों की निन्दा नहीं करते, ऐसे लोगों से यह भूमि कहीं-कहीं ही शोभित हो रही है।

Such persons, who never tell bitter words and always use sweet ones, who are satisfied only with their own wives and who never defame others are rare on this earth.

(100)

अप्रियैः सह संवासः प्रियैश्चापि विनाभवः।
असद्भिः सम्प्रयोगश्च, तद्दुःखं चिरजीविनाम्॥

दीर्घ आयु के दुःख महाभा./वनपर्व/193/18

Apriyaiḥ saha saṁvāsaḥ, priyaiścāpi vinābhavaḥ।
Asadbhiḥ samprayogaśca, tadduḥkhaṁ cirajīvināṁ॥

Mahābhā / Vanaparva / 193 / 18

Woes of the long age

लम्बी आयु जीने वालों को इन बातों से दुःख प्राप्त होता है— प्रथम तो अनचाहे लोगों के साथ रहना, दूसरे प्रिय लोगों का वियोग तथा तीसरे दुष्ट लोगों की संगति।

The persons who live long have to face these bitter things – (1) living with undesired persons, (2) separation of dear persons and (3) the company of bad persons.

(101)

अभयं नः करत्यन्तरिक्ष-
मभयं द्यावापृथिवी उभे इमे।
अभयं पश्चादभयं पुरस्ता-
दुत्तरादधरादभयं नो अस्तु॥

अभय की कामना अथर्व./19/15/5

Abhayaṁ naḥ karatyantarikṣa-
mabhayaṁ dyāvāpṛthivī ubhe ime।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Abhayaṁ paścādabhayaṁ purastā-
duttarādadharādabhayaṁ no astu ll

Atharva / 19 / 15 / 5

Desire of fearlessness

अन्तरिक्ष, द्युलोक और पृथ्वी सभी स्थान हमारे लिए निडरता के साधन हों। हमें न पीछे से, न आगे से, नाहीं ऊपर से और नाहीं नीचे से डर हो। अर्थात् हम सभी ओर से निर्भय होकर जीवन-यापन करें।

The atmospheric and the light region and the earth, all places should remove our fear. We should not have fear from backside, from frontside, from the above and from the downwards. In brief, we may be fearless from all sides.

(102)

अभयं मित्रादभयममित्रा-
दभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः
सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु॥

अभय की कामना अथर्व./19/15/6

Abhayaṁ mitrādabhayamamitrā-
dabhayaṁ jñātādabhayaṁ parokṣāt l
Abhayaṁ naktamabhayaṁ divā naḥ
sarvā āśā mama mitraṁ bhavantu ll

Atharva / 19 / 15 / 6

Desire of fearlessness

हमारा मित्र हम से धोखा न करे, हम उससे भी निडर रहें, शत्रु से भी हम निडर रहें, जाना-पहचाना भी व्यक्ति हमारे डर का कारण न बने और अनजाना भी भयकारी न हो। हम दिन में भी और रात में भी निडर रहें। हमारा ऐसा व्यवहार हो कि सभी दिशाएँ हमारे लिए मित्रवत् हो जाएँ।

We may not have fear from our friend (of deception), from our enemy, from known and unknown persons. The night and the day both should be sources of our fearlessness. All the directions should be our friends. In brief, our behaviour should be in such a way that all sides may become our friends.

(103)

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्द्धन्ते, आयुर्विद्या यशो बलम्॥

बड़ों के मान का लाभ मनु. 2/122

Abhivādanaśīlasya nityaṁ vṛddhopasevinaḥ l
Catvāri tasya varddhante, āyurvidyā yaśo balam ll

Advantage of respecting elders Manu. / 2 / 122

जो व्यक्ति ज्ञान, अनुभव तथा आयु में बड़े लोगों को प्रणाम करते रहते हैं तथा उनकी संगति करते हैं, उनकी आयु, विद्या, कीर्ति और शक्ति ये चार वस्तुएँ बढ़ती हैं; अर्थात् उन्हें इससे बहुत लाभ होता है।

The person who respectfully salutes the elders and remains in their company gets his age, education, fame and power increased.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(104)

अभ्यासः कर्मणां सम्यगुत्पादयति कौशलम्।
विधिना तावदभ्यस्तं यावत्सृष्टा मृगेक्षणा॥

अभ्यास का महत्त्व सुभाषितावलि – 1454

Abhyāsaḥ karmaṇāṁ samyagutpādayati kauśalam।
Vidhinā tāvadabhyastaṁ yāvatsṛṣṭā mṛgekṣaṇā॥

Subhāṣitavali-1454

Advantage of practice

कर्मों का अच्छी प्रकार अभ्यास करने से मनुष्य को उन कर्मों में कुशलता प्राप्त हो जाती है। ऐसा प्रतीत होता है कि ब्रह्मा ने भी रचनाओं का निरन्तर अभ्यास करके ही मृग की आँखों के समान आँखों वाली सुन्दर नारी की रचना की थी।

Practice makes a man perfect in all works. So it seems that the Creator, Brahma, had practised so long till he became successful to create the charming beauty of the woman, whose eyes are compared with those of a deer.

(105)

अभ्रच्छाया खलप्रीतिः सिद्धमन्नं च योषितः।
किञ्चित्कालोपभोग्यानि यौवनानि धनानि च॥

परिवर्तनशीलता हितोपदेश

Abhracchāyā khalaprītiḥ siddhamannaṁ ca yoṣitaḥ।
Kiñcitkālopabhogyāni yauvanāni dhanāni ca॥

Changeability Hitopadeśa

बादलों की छाया, दुष्ट व्यक्ति का प्रेम, बढ़िया भोजन तथा, स्त्रियों, जवानी और धनों का उपभोग मनुष्य केवल थोड़े समय तक ही कर सकता है।

The shadow of a cloud, the love of a mean fellow, delicious food, women, youth and money give happiness only for a short time. So these are temporary things.

(106)

अभ्यूर्णौति यन्नग्नं भिषक्ति विश्वं यत्तुरम्।
प्रेमन्धः ख्यन् निःश्रोणो भूत्॥

ईश्वर के कार्य ऋ./8/79/2

Abhyūrṇauti yannagnaṁ bhiṣakti viśvaṁ yatturam।
Premandhaḥ khyan niḥśroṇo bhūt॥

God's work Ṛg/8/79/2

जो सर्वोत्पादक सर्वप्रेरक ईश्वर नग्न को ढकता है और सम्पूर्ण रोगियों को शीघ्र स्वस्थ करता है, उसकी कृपा से अन्धा भी देखने लगता है और लँगड़ा भी चलने लगता है।

The Creator of this world, God, covers the naked person and gives health to the diseased immediately. A blind person can see and a lame of both legs can walk when He shows kindness to them.

(107)

अमित्रं कुरुते मित्रम्, मित्रं द्वेष्टि हिनस्ति च।
शुभं वेत्त्यशुभं पापं भद्रं दैवहतो नरः॥

भाग्यहीन पञ्च/काको/196

Amitraṁ kurute mitram, mitraṁ dveṣṭi hinasti ca।
Śubhaṁ vettyaśubhaṁ pāpaṁ bhadraṁ daivahato naraḥ॥

Unlucky Pañcata./Kako/196

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दुर्भाग्य से मारा हुआ व्यक्ति शत्रु को मित्र बना लेता है और मित्र से शत्रुता करता है तथा उसे मार देता है। वह बुराई को भलाई और पुण्य को पाप समझने लगता है।

When fortune becomes adverse, the man makes friendship with an enemy, hates his friend and also kills him, takes the good as a bad one and a sin as a good work.

(108)

अमीषां प्राणानां तुलितबिसनीपत्रपयसाम्,
कृते किं नास्माभिर्विगलितविवेकैर्व्यवसितम्।
यदाढ्यानामग्रे द्रविणमदनिःशङ्कमनसाम्,
कृतं वीतव्रीडैर्निजगुणकथापातकमपि॥

लोभ वैराग्य. शतक/32

Amīṣāṁ prāṇānāṁ tulita-bisanīpatrapayasām,
Kṛte kiṁ nāsmābhirvigalitavivekairvyavasitaml
Yadāḍhyānāmagre draviṇamadaniḥśaṅkamanasām,
Kṛtaṁ vītavrīḍairnijaguṇakathāpātakamapi ll

Greed Vairā. Śataka / 32

कमलपत्र पर पड़े जल के समान अस्थिर इन प्राणों के लिए अपनी विवेक-बुद्धि का परित्याग करके हमने क्या-क्या नहीं किया? हमने तो इसके लिए लज्जा को भी एक ओर रखकर धन के मद से उद्धत मन वाले धनी लोगों के आगे अपने गुणों की प्रशंसा करने का पाप भी कर लिया है।

What has not been done by us for our life which is unstable like a drop of water lying on the leaf of a lotus? We have kept even our shame aside and became sinful by praising our qualities in front of such persons, who have haughty minds due to their wealth.

(109)

अमृतं शिशिरे वह्निरमृतं प्रियदर्शनम्।
अमृतं राजसम्मानममृतं क्षीरभोजनम्॥

प्रिय वस्तुएँ पञ्चतन्त्र/मित्रभेद/135

Amṛtaṁ śiśire vahniramṛtaṁ priyadarśanaml
Amṛtaṁ rājasammānamamṛtaṁ kṣīrabhojanam ll

Pancata. / Mitrabhe. /135

Loving things

सर्दियों में अग्नि प्रिय लगती है, अपने प्रिय व्यक्ति से मिलना भी बहुत अच्छा लगता है, शासन द्वारा मिला सम्मान भी प्रिय लगता है और खीर आदि दूध से बने पदार्थ भी बहुत आनन्द देते हैं।

Fire gives us happiness in winter. Sight of a loving person makes us happy. Honour gained from the goverment causes happiness. And the food prepared with milk, as a khīra, makes the eater happy.

(110)

अमृतस्येव सन्तृप्येदवमानस्य तत्त्ववित्।
विषस्येवोद्विजेन्नित्यं, सम्मानस्य विचक्षणः॥

ज्ञानी का कर्त्तव्य महाभा./शान्ति./229/2

Amṛtasyeva santṛpyedavamānasya tattvavit l
Viṣasyevodvijennityaṁ, sammānasya vicakṣaṇaḥ ll

Mahābhā / Śānti. / 229 / 2

Duty of a knowledgeable

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चतुर ज्ञानी व्यक्ति को चाहिए कि वह अपमान को अमृत के तुल्य मानकर प्रसन्न हो और सम्मान को विष के समान समझकर उससे उद्विग्न हो जाये। भावार्थः- अपमान मनुष्य को गुणी बनाता है और सम्मान अभिमान पैदा करता है, इसीलिए अपमान होने पर प्रसन्न और सम्मान होने पर असन्तुष्ट होना चाहिए।

The man who knows the truth should be happy with his insult taking it as the nectar. The expert man should hate his respect taking it as a poison. Insult helps for goodness and honour or respect causes haughtiness, which is an enemy of goodness.

(111)

अम्भसा भिद्यते सेतुस्तथा मन्त्रोऽप्यरक्षितः।
पैशुन्याद् भिद्यते स्नेहो, भिद्यते वाग्भिरातुरः॥

नाश के कारण पञ्चतन्त्र/मित्रभेद/107

Ambhasā bhidyate setustathā mantro'pyarakṣitaḥ।
Paiśunyād bhidyate sncho, bhidyate vāgbhirāturaḥ॥

Pañcata. / Mitrabhe. / 107

Causes of destruction

पानी के वेग से बाँध या पुल टूट जाता है, गुप्त सलाह यदि सबमें प्रकट हो जाए तो योजना सफल नहीं होती, चुगलखोरी से प्यार समाप्त हो जाता है और बातें करने से रोगी व्यक्ति व्याकुल हो जाता है।

The velocity of water breaks a bridge. If a secret plan is known by others, it fails. Backbiting ends love and talking too much makes the patient grieved.

(112)

अम्भोजिनी - वनविहार - विलासमेव,
हंसस्य हन्ति नितरां कुपितो विधाता।
न त्वस्य दुग्धजलभेदविधौ प्रसिद्धाम्,
वैदग्ध्यकीर्तिमपहर्तुमसौ समर्थः॥

सद्गुण नीतिशतक/17

Ambhojinī - vanavihāra - vilāsameva,
Haṁsasya hanti nitarāṁ kupito vidhātā।
Na tvasya dugdha-jala-bhedavidhau prasiddhām,
Vaidagdhya-kīrtimapahartumasau samarthaḥ॥

Good quality Nītiśataka / 17

यदि विधाता हंस से रुष्ट हो जाए तो वह उसके कमलों के मध्य घूम-फिरकर आनन्द लेने के कार्य को तो समाप्त कर सकता है, परन्तु नीर-क्षीर विवेक रूपी उसकी प्रसिद्ध कार्यकुशलता की कीर्ति को वह नहीं छीन सकता।

If the Creator gets annoyed with a swan, he may hinder his enjoyment of walking in the groves of lotuses, but the fame he has gained of separating milk from water can not be removed by Him.

(113)

अयं च सुरतज्वालः कामाग्निः प्रणयेन्धनः।
नराणां यत्र हूयन्ते यौवनानि धनानि च॥

कामवासना मृच्छकटिक

Ayaṁ ca suratajvālaḥ kāmāgniḥ praṇayendhanaḥ।
Narāṇāṁ yatra hūyante yauvanāni dhanāni ca॥

Sexuality Mṛcchakaṭika

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यह काम की अग्नि प्रेम-रूपी इन्धन से दीप्त होती है और सम्भोग की ज्वालाओं से वह वृद्धि को प्राप्त होती है। इस कामाग्नि में पुरुषों की जवानियाँ और धन सब आहुति बन जाते हैं। तात्पर्य यह है कि कामाग्नि को तृप्त करने में लगे मानव अपनी जवानी और धन को बरबाद करके नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं।

This fire of sex is ignited with the fuel of love and increases with the flames of sexual attachment. The youth of the men and their money is burnt as oblations in this love-fire. It means that lustful persons destroy their youth and wealth in this way.

(114)

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

महापुरुषों का चरित्र पञ्चतन्त्र/अपरीक्षितकारकम्/35

Ayaṁ nijaḥ paro veti gaṇanā laghucetasām।
Udāracaritānāntu vasudhaiva kuṭumbakam॥

Pancatan. / Aparīkṣita / 35

Character of great

यह अपना है और वह पराया है, यह भेद-बुद्धि छोटे दिल वालों के अन्दर होती है। विशाल हृदय वाले तो सारी पृथ्वी को ही अपना परिवार समझते हैं।

"This is our own and that is of others," this kind of thinking remains in the minds of low persons, but for the generous people the whole world is their family; they love everyone.

(115)

अयं मे हस्तो भगवान् अयं मे भगवत्तरः।
अयं मे विश्वभेषजोऽयं शिवाभिमर्शनः॥

कर्मशीलता ऋ./10/60/12

Ayaṁ me hasto bhagavān, ayaṁ me bhagavattaraḥ।
Ayaṁ me viśvabheśajo'yaṁ śivābhimarśanaḥ॥

Working spirit Ṛg. / 10 / 60 / 12

मेरा एक हाथ ऐश्वर्य देने वाला है तो दूसरा उससे भी अधिक ऐश्वर्य का दाता है। यदि एक हाथ सब बीमारियों को दूर करने का साधन है, तो दूसरा हाथ सभी मंगलकारी कार्य करने में कुशल है। तात्पर्य यह है कि हाथों से ही हम सभी सुख के साधन जुटा सकते हैं।

My one hand is the source of prosperity and the other one is more active in this work. This one removes all diseases, while the other hand is expert to perform auspicious deeds. It means, our hands are the sources of all happiness, as they are able to work.

(116)

अया पवस्व धारया, यया सूर्यमरोचयः।
हिन्वानो मानुषीरपः॥

प्रार्थना ऋ./9/63/7

Ayā pavasva dhārayā, yayā suryamarocayaḥ।
Hinvāno mānuṣīrapaḥ॥

Prayer Ṛg. / 9/ 63 / 7

हे परमेश्वर! आपने तेज की एक धारा सूर्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को देकर उसे प्रकाशमय बना दिया है। उसी प्रकार हम मनुष्यों को सत्कर्मों में प्रवृत्त करने की प्रेरणा देकर हमें भी ज्ञानरूपी प्रकाश से पवित्र कर दीजिए।

O God! you have given a current to the sun and enlightened that. In the same way, you should motivate us for good works and make us enlightened, so that we may be sinless and pure-minded.

(117)

अयि मलयज! महिमाऽयं कस्य गिरामस्तु विषयस्ते।
उद्गिरतो यद्गरलं फणिनः पुष्णासि परिमलोद्गारैः॥

श्रेष्ठ पुरुष भामिनीविलास/1/10

Ayi malayaja! Mahimā'yaṁ kasya girāmastu viṣayaste।
Udgirato yadgaralaṁ phaṇinaḥ puṣṇāsi parimalodgāraiḥ॥

The great Bhāminīvilāsa / 1 / 10

हे चन्दन के वृक्ष! तेरी यह महिमा किसकी वाणी ने प्रकट की है कि तू विष उगलने वाले साँपों को भी अपनी सुगन्ध की धाराओं से पुष्ट करता है।

भावार्थ यह है कि सज्जन लोग अपना बुरा करने वालों का भी उपकार ही करते हैं।

O sandle tree! who has expressed your this greatness that with your sweet smell, you make happy to those snakes, who throw their poison upon you?

It means that good persons are kind towards even their enemies.

(118)

अरक्षितं तिष्ठति दैवरक्षितम्,
सुरक्षितं दैवहतं विनश्यति।
जीवत्यनाथोऽपि वने विसर्जितः,
कृतप्रयत्नोऽपि गृहे विनश्यति॥

परमात्मा का संरक्षण पञ्चतन्त्र/मित्रभेद/273

Arakṣitaṁ tiṣṭhati daivarakṣitam,
Surakṣitaṁ daivahataṁ vinaśyati।
Jīvatyanātho'pi vane visarjitaḥ,
Kṛtaprayatno'pi gṛhe vinaśyati॥

Pancata. / Mitrabheda / 273

Protection of God

जिसकी रक्षा करने वाला कोई नहीं है, विधाता उसकी रक्षा करके उसे बचा लेता है। इसके विपरीत, लोगों द्वारा सुरक्षित भी वस्तु या प्राणी विधाता के विपरीत होने पर नष्ट हो जाता है। वन में छोड़ा हुआ अनाथ भी भाग्य के कारण जीता रहता है परन्तु घर में बहुत प्रयत्न करने पर भी भाग्य से मारा हुआ नष्ट हो जाता है।

God gives protection to those who are deserted by others. Contrary to this, if God is unhappy He destroys that thing which is protected by the people. An orphan deserted in a forest survives if the luck is favourable, but the person protected carefully in a house is killed by the destiny, if it is unfavourable.

(119)

अरक्षितारं नृपतिं ब्राह्मणं चातपस्विनम्।
धनिकं चाप्रदातारं देवा घ्नन्ति त्यजन्त्यधः॥

निन्दनीय लोग शुक्रनीति/1/120

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Arakṣitāraṁ nṛpatiṁ Brāhmaṇaṁ cātapasvinam।
Dhanikaṁ cāpradātāraṁ devā ghnanti tyajantyadhaḥ॥

Śukranīti. / 1 / 120

Condemnable persons

जो राजा प्रजा की रक्षा नहीं करता, जो ब्राह्मण तपस्वी नहीं होता और जो धनी दान नहीं देता, देवता ऐसों को मार देते और नीचे गिरा देते हैं।

The king who doesn't protect his people, the Brahmaṇa who does not practise penance and the richman who doesn't give alms, are killed by gods and thrown down-ward.

(120)

अरणीमन्थने जातु यो विरन्तुं न चेष्टते।
स एव लभते वह्निमेवं सिद्धेरपि प्रथा॥

निरन्तर श्रम बुद्धचरितम्/26/64

Araṇīmanthane jātu yo virantuṁ na ceṣṭate।
Sa eva labhate vahnimevaṁ siddherapi prathā॥

Continuous efforts Buddhacarita / 26 / 64

जो व्यक्ति अरणियों को मथते हुए बीच में रुकने की चेष्टा नहीं करता, वही अग्नि को प्राप्त करता है। यही नियम किसी भी कार्य की सफलता के लिए है। अर्थात् निरन्तर परिश्रम करने से ही सफलता प्राप्त होती है।

The man who doesn't stop while churning the two pieces of wood, gets fire. In the same way one can get success in everywork. It means continuous effort surely leads to success.

(121)

अरण्योर्निहितो जातवेदा
गर्भ इव सुधितो गर्भिणीषु।
दिवेदिव ईड्यो जागृवद्भि-
र्हविष्मद्भिर्मनुष्येभिरग्निः॥

ईश्वर की सर्वव्यापकता ऋ./1/29/2

Araṇyormihito jātavedā
garbha iva sudhito garbhiṇīṣu।
Dive diva īḍyo jāgṛvadbhi-
rhaviṣmadbhirmanuṣyebhiragniḥ॥

Omnipresece of God Ṛg. / 1 / 29 / 2

जैसे अग्नि दो अरणियों के मध्य स्थित होती है और जैसे गर्भ धारण करने वाली स्त्रियों में गर्भ अंदर स्थित होता है, ठीक उसी प्रकार परमात्मा हम सबके अंदर विद्यमान है। उसे प्राप्त करने के लिए मनुष्यों को जागकर (ज्ञानपूर्वक), समर्पण भाव से उसकी प्रतिदिन स्तुति करनी चाहिए।

As fire remains inside two pieces of wood, and as an embryo is also adopted inside the body of the pregnant lady, in the same way God has his existence in all of us. To know Him the men should be awaken and praise Him with dedication.

(122)

अरविन्दमशोकं च चूतं च नवमल्लिका।
नीलोत्पलं च पञ्चैते पञ्चबाणस्य सायकाः॥

कामोत्तेजक साहित्यदर्पण / 3

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Aravindamaśokaṁ ca cūtaṁ ca navamallikāl
Nīlotpalaṁ ca pañcaite pañcabāṇasya sāyakāḥ ll

Sāhityadarpaṇa / 3

Promoters of sexaulity

कामदेव के ये पाँच बाण हैं :- कमल, अशोक, आम, नवमल्लिका और नील कमल

The lotus, the ashoka, the mango, a kind of the jasamine and blue-lotus these are five arrows of god Cupid.

(123)

अर्थनाशं मनस्तापं गृहे दुश्चरितानि च।
वञ्चनं चापमानं च मतिमान् न प्रकाशयेत्॥

गोपनीय वस्तुएँ चाणक्यशतक/34

Arthanāśaṁ manstāpaṁ gṛhe duścaritāni ca।
Vañcanaṁ cāpamānaṁ ca matimān na prakāśayet ll

To be concealed Cānakyasataka / 34

बुद्धिमान् व्यक्ति को चाहिए कि वह निम्न पाँच बातों को दूसरों के सामने प्रकट न करे :- धन का नाश, मन की पीड़ा, घर की बुराइयाँ, ठगा जाना और अपमान।

One should not tell the following five thigs to others :- (1) loss of one's money, (2) anxiety of the mind, (3) bad incident of homely character, (4) cheating by some one and (5) own insult.

(124)

अर्थसिद्धिं परामिच्छन्, धर्ममेवादितश्चरेत्।
न हि धर्मादपेत्यर्थः, स्वर्गलोकादिवामृतम्॥

धर्म का महत्त्व महाभा./उद्योग/37/48

Arthasiddhiṁ parāmicchan, dharmamevāditaścaret।
Na hi dharmādapetyarthaḥ, Svargalokādivāmṛtam ll

Mahābhā. / Udyoga / 37 / 48

Importance of morality

यदि मनुष्य श्रेष्ठ धन की प्राप्ति करना चाहता है, तो उसे आरम्भ से ही धर्म का पालन करना चाहिए। धन धर्म से पृथक् नहीं किया जा सकता; जैसे स्वर्ग लोक से अमृत पृथक् नहीं हो सकता। भावार्थ यह है कि धर्मपूर्वक कमाया हुआ धन ही स्थायी और सुख का साधन होता है।

If a man desires to get ideal riches, he should act according to morality from the beginning. Riches can never be gained without morality, as the nector comes from the heaven only.

(125)

अर्थहीनोऽपि मधुरः, शब्दो लोकप्रियङ्करः।
वीणावेणुमृदङ्गादीन्यत्रोदाहरणानि नः ॥

मधुर शब्द सभारञ्जनशतक/24

Arthahīno'pi madhuraḥ, śabdo lokapriyaṅkaraḥ।
Viṇāveṇumṛdaṅgādīnyatrodāharaṇāni naḥ ll

Sweet word Sabhārañjana../ 24

चाहे शब्द सार्थक हो या न हो, परन्तु मधुर होना चाहिए, क्योंकि वही संसार को प्रिय लगता है। इस विषय में वीणा, बांसुरी, मृदङ्ग आदि के उदाहरण दिये जा सकते हैं।

In spite of being meaningless, the sweet word is liked by the people. The lute, the flute and the timbrel are its examples.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(126)

अर्थागमो नित्यमरोगिता च,
प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च।
वश्यश्च पुत्रोऽर्थकरी च विद्या,
षड् जीवलोकस्य सुखानि राजन्॥

संसार के सुख महाभा./उद्योग./33/82

Arthāgamo nityamarogitā ca,
Priyā ca bhāryā priyavādinī ca।
Vaśyaśca putro'rthakarī ca vidyā,
Ṣaḍ jīvalokasya sukhāni rājan॥

Mahābhā. / Udyoga / 33 / 82

Worldly happiness

हे राजन् (धृतराष्ट्र), इस संसार में छह सुख हैं :- पहला धन का निरन्तर आना, दूसरा सदा नीरोग रहना, तीसरा प्यारी पत्नी का होना, चौथा मीठा बोलने वाली पत्नी का होना, पाँचवाँ पुत्र का आज्ञाकारी होना और छठा धन देने वाली विद्या का होना।

O king, there are the following six sources of happiness in this world; (1) coming of money daily, (2) good health, (3) loving wife, (4) sweet-speaking wife, (5) an obedient son, and (6) money-oriented education.

(127)

अर्थातुराणां न गुरुर्न बन्धुः,
कामातुराणां न भयं न लज्जा।
चिन्तातुराणां न सुखं न निद्रा,
क्षुधातुराणां न बलं न तेजः॥

गुणों के अभाव चाणक्यराजनीतिशास्त्र

Arthāturāṇāṁ na gururna bandhuḥ,
Kāmāturāṇāṁ na bhayaṁ na lajjā।
Cintāturāṇāṁ na sukhaṁ na nidrā,
Kṣudhāturāṇāṁ na balaṁ na tejaḥ॥

Cāṇakyarājanītiśāstra

Absence of some merits

धन के लोभियों के लिए न कोई बड़ा होता है और न कोई सम्बन्धी। काम से पीड़ित लोग न डरते हैं और न शरमाते हैं। चिन्ता से ग्रस्त लोगों को न सुख मिलता है और न नींद आती है। भूख से व्याकुल लोगों में न बल रहता है और न प्रभाव।

For getting money the greedy persons neither consider any elder person nor any relative. The persons under sexual desire don't feel fear or shame. The people who are disturbed by worries cannot enjoy happiness and sleep. And those who are suffering from hunger have neither power nor influence.

(128)

अर्थानामर्जने दुःखमर्जितानां च रक्षणे।
नाशे दुःखं व्यये दुःखं धिगर्थान् कष्टसंश्रयान्॥

धनार्जन से हानि पञ्चतन्त्र/मित्रसम्प्राप्ति/15

Arthānāmarjane duḥkhamarjitānāṁ ca rakṣaṇe।
Nāśe duḥkhaṁ vyaye duḥkhaṁ, dhigarthān kaṣṭasaṁśrayān॥

Pañca / Mitrasama. / 15

Painful—hoarding

धन के कमाते समय दुःख उठाना पड़ता है, कमाए हुए धन की रक्षा करने में भी कष्ट का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सामना करना पड़ता है। यदि धन नष्ट हो जाये या खर्च हो जाए, तो भी दुःख होता है। इस प्रकार जो कष्ट का ही घर है, ऐसे धन को धिक्कार हो।

To earn money and to protect it are very troublesome. If money is destroyed or consumed, in these both conditions man feels pain. So, money is the only source of troubles. Hence fie to such money!

(129)

अर्थाः पादरजोनिभा, गिरिनदी-वेगोपमं यौवनम्।
आयुष्यं जलबिन्दुलोलचपलं, फेनोपमं जीवनम्॥
धर्मं यो न करोति निन्दितमतिः, स्वर्गार्गलोद्घाटनम्।
पश्चात्तापयुतो जरापरिगतः शोकाग्निना दह्यते॥

धर्माचरण आवश्यक हितोपदेश/मित्रलाभ/153

Arthāḥ pādarajonibhā girinadī-vegopamaṁ yauvanam।
Āyuṣyaṁ jalabindulolacapalaṁ, phenopamaṁ jīvanam॥
Dharmaṁ yo na karoti ninditamatiḥ, svargārgalodghāṭanam।
Paścāttāpayuto jarāparigataḥ śokāgninā dahyate॥

Importance of good works Hitopa. / Mitralābha / 153

धन तो पैर की धूलि के समान है और जवानी पहाड़ी नदी के वेग-सी है। उम्र पानी की बून्द के समान ढुलकने वाली है और जीवन झाग-सा निस्सार है। जो मलिन बुद्धि वाला व्यक्ति स्वर्ग के दरवाजे को खोलने वाले धर्म का आचरण नहीं करता, वह बाद में पश्चात्ताप करता हुआ बुढ़ापे से पीड़ित होकर शोक की अग्नि में ही जलता रहता है।

Riches are like the dust of feet and the youth is like the velocity of a hilly stream. Age is unstable like the drop of water and the life is only like foam. The foolish person who doesn't act according to morality, which opens the gate of the heaven, repents at the end and suffering from the old age is burnt in the fire of sadness.

(130)

अर्थार्थी जीवलोकोऽयं श्मशानमपि सेवते।
त्यक्त्वा जनयितारं स्वं निःस्वं गच्छति दूरतः॥

लोभ का प्रभाव पञ्चतन्त्र/मित्रभेद/9

Arthārthī jīvaloko'yaṁ śmaśānamapi sevate।
tyaktvā janayitāraṁ svaṁ niḥsvaṁ gacchati dūrataḥ॥

Pañcata. / Mitrabheda / 9

Effect of greed

धन की कामना वाला यह संसार मरघट में भी सेवा करता है। यहाँ तक कि धन की कामना वाला पुत्र अपने जन्मदाता निर्धन पिता को पीछे छोड़ कर दूर चला जाता है।

The people who are desirous of money serve even in the cemetery. In the same way leaving behind his poor and helpless father, a son also goes away to earn the money.

(131)

अर्थार्थी यानि कष्टानि मूढोऽयं सहते जनः।
शतांशेनापि मोक्षार्थी तानि चेन्मोक्षमाप्नुयात्॥

मोक्ष की प्राप्ति पञ्चतन्त्र/मित्रसम्प्राप्ति/116

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Arthārthī yāni kaṣṭāni mūḍho'yaṁ sahate janaḥ।
Śatāṁśenāpi mokṣārthī tāni cenmokṣamāpnuyāt॥

Pañca / Mitrasama. / 116

Achievement of salvation

यह मूढ़ मनुष्य धन की कामना करता हुआ जिन कष्टों को सहन करता है, यदि मोक्षार्थी उसका शतांश भी कष्ट सहन कर ले, तो उसे मोक्ष मिल सकता है।

A foolish man bears many difficulties while earning the money. If he tries only 1/100 of this effort for his salvation, he must have obtained it.

(132)

अर्थेन किं कृपणहस्तगतेन तेन,
रूपेण किं गुणपराक्रमवर्जितेन।
ज्ञानेन किं बहुजनैः कृतमत्सरेण,
मित्रेण किं व्यसनकालपराङ्मुखेन॥

निन्दनीय धनादि नराभरण/14

Arthena kiṁ kṛpaṇahaṣtagatena tena,
Rūpeṇa kiṁ guṇaparākramavarjitena।
Jñānena kiṁ bahujanaiḥ kṛtamatsareṇa,
Mitreṇa kiṁ vyasanakālaparāṅmukhena॥

Narābharaṇa / 14

Condemnable money etc.

कञ्जूस के हाथ गए हुए धन का क्या लाभ है? जो सौन्दर्य श्रेष्ठ गुणों और वीरता से रहित है, उसका भी क्या लाभ? उस ज्ञान का क्या लाभ जिसे देखकर अनेक लोग डाह करते हों? और उस मित्र का भी क्या लाभ, जो संकट के समय में छोड़कर अलग हो जाता है?

The money under the control of a miserly person, is useless. The beauty which is adorned without merits and bravery is not a beauty in true sense. That knowledge is invain which creats jealousy in others. The friend who deserts his friend in adversity, is quite useless.

(133)

अर्थेन हि वियुक्तस्य पुरुषस्याल्पतेजसः।
व्युच्छिद्यन्ते क्रियाः सर्वाः ग्रीष्मे कुसरितो यथा॥

निर्धनता वा. रामायण/6/83/33

Arthena hi viyuktasya puruṣasyālpatejasaḥ।
Vyucchidyante kriyāḥ sarvāḥ grīṣme kusarito yathā॥

Poverty Vā. Rāmā. / 6 / 83 / 33

जिसके पास धन नहीं रहता ऐसे मनुष्य का प्रभाव क्षीण हो जाता है और सभी श्रेष्ठ नियम और कार्य इस प्रकार समाप्त हो जाते हैं, जैसे गर्मी की ऋतु में छोटी नदियाँ सूख जाती हैं।

The poor man becomes powerless and therefore all good works begun by him are disturbed as streamlets dry in the summer season.

(134)

अर्थेभ्यो हि निष्ठेभ्यः संवृत्तेभ्यस्ततस्ततः।
क्रियाः सर्वाः प्रवर्त्तन्ते, पर्वतेभ्यः इवापगाः॥

धन के लाभ वा. रामायण/6/83/32

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Arthebhyo hi niṣṭhebhyaḥ saṁvṛttebhyastatastataḥ।
Kriyāḥ sarvāḥ pravarttante, parvatebhyaḥ ivāpagāḥ॥

Vā. Rāmā / 6 / 83 / 32

Advantage of riches

जमा किए हुए धन को इधर–उधर लगा देने से सब श्रेष्ठ कार्य इस प्रकार चलने लगते हैं, जैसे पहाड़ों से नदियाँ बहती हैं।

If a man uses his earned money in different good-works, then those continue to prosper in the same way as rivers flow from the mountains.

(135)

अर्थेभ्यो हि वृद्धेभ्यः संवृत्तेभ्यस्ततस्ततः।
प्रवर्त्तन्ते क्रियाः सर्वाः, पर्वतेभ्य इवापगाः॥

धन के लाभ पञ्चतन्त्र/मित्रभेद/6

Arthebhyo hi vṛddhebhyaḥ, saṁvṛttebhyastatastataḥ।
Pravarttante kriyāḥ sarvāḥ, parvatebhyaḥ ivāpagāḥ॥

Pañcata. / Mitrabhe / 6

Advantage of riches

यदि धन की वृद्धि हो जाये, तो उसे अच्छे कामों में लगा देना चाहिए। इससे शुभ कार्य ठीक उसी प्रकार से होने लगते हैं, जिस प्रकार पर्वतों से नदियाँ बहने लगती हैं।

If wealth increases, then it should be used in good works, so that those works may remain continued like the rivers which flow from the mountains.

(136)

अर्थो न सम्भृतः कश्चिन्न विद्या काचिदर्जिता।
न तपः सञ्चितं किञ्चिद्गतं च सकलं वयः॥

निन्दनीय जीवन काव्यादर्श/2/161

Artho na sambhṛtaḥ kaścinna vidyā kācidarjitā।
Na tapaḥ sañcitaṁ kiñcidgataṁ ca sakalaṁ vayaḥ॥

Condemnable life Kāvyādarśa. / 2 / 161

यदि जीवन में न धन कमाया, ना ही कोई विद्या सीखी और ना ही तप किया, तो समझो कि सारी आयु यों ही नष्ट हो गई।

If money is not earned, or some art is not learnt or penance is not performed in one's life, then the whole life has become futile.

(137)

अलब्धं चैव लिप्सेत, लब्धं रक्षेदवेक्षया।
रक्षितं वर्धयेत् सम्यक्, वृद्धं तीर्थेषु निक्षिपेत्॥

धन की प्राप्ति हितोपदेश/2/8

Alabdhaṁ caiva lipseta, labdhaṁ rakṣedavekṣayā।
Rakṣitaṁ vardhayet samyak, vṛddhaṁ tīrtheṣu nikṣipet॥

Earning of money Hitopadeśa / 2 / 8

जो प्राप्त नहीं किया गया, उसे प्राप्त करने की कामना करनी चाहिए और जो प्राप्त हो चुका है, उसकी ध्यानपूर्वक रक्षा करनी चाहिए। पुनः जो बच गया है, उसे बढ़ाना चाहिए और जिसकी खूब वृद्धि हो चुकी हो, उसका श्रेष्ठ पात्रों में वितरण करना चाहिए।

One should desire to get the

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

thing which he has not obtained still, protect the thing carefully which is obtained, increase the thing properly which is protected and give the increased thing to deserving places or persons.

(138)

अलभ्यं लब्धुकामस्य जनस्य गतिरीदृशी।
अलभ्येषु मनस्तापः, सञ्चितार्थो विनश्यति॥

निन्दनीय व्यक्ति कवितामृतकूप/60

Alabhyaṁ labdhukāmasya, janasya gatirīdṛśī।
Alabhyeṣu manastāpaḥ, sañcitārtho vinaśyati॥

Kavitāmṛtakūpa / 60

Condeminable person

न प्राप्त होने योग्य वस्तु की जो कामना करता है, उस व्यक्ति की ऐसी हालत होती है कि जो वस्तुएँ उसे मिली नहीं, उसके लिए वह दुखी होता है और जो कुछ उसके पास था, वह भी नष्ट हो जाता है।

The person desiring such a thing which cannot be obtained, feels pain in his mind for the thing that he has not obtained and the thing which he had under his possession goes away from him.

(139)

अलुब्धाः शुचयो वैद्या, ह्रीमन्तः सत्यवादिनः।
स्वकर्मनिरता ये च, तेभ्यो दत्तं महाफलम्॥

दान के पात्र महाभा./अनुशासन/22/35

Alubdhāḥ śucayo vaidyā, hrīmantaḥ satyāvādinaḥ।
Svakarmaniratā ye ca, tebhyo dattaṁ mahāphalam॥

Mahābhā. / Anu. / 22 / 35

Deserving charity

जो चिकित्सक लोभी नहीं हैं और पवित्रात्मा हैं, जो सत्यवादी और संकोचशील हैं और जो लोग अपने कार्यों में मग्न हैं, उन्हें दिया हुआ धन बहुत लाभप्रद होता है।

The doctors who are not greedy but have pure mind, the truth-speaking persons who feel shame and those who are given to their duties deserve alms. Such alms if given, bears good and great results.

(140)

अल्पं वा बहु वा यस्य, श्रुतस्योपकरोति यः।
तमपीह गुरुं विद्यात् श्रुतोपक्रियया तया॥

गुरु होने योग्य मनु./2/149

Alpaṁ vā bahu vā yasya, śrutasyopakaroti yaḥ।
Tamapīha guruṁ vidyāt, śrutopakriyayā tayā॥

Fit to be a teacher Manu. / 2 / 149

जो अपने ज्ञान से थोड़ा या बहुत भी भला करता है, उसके ज्ञान देने के उपकार को ध्यान में रखकर उसे भी गुरु मानना चाहिए।

He who favours anybody by giving a little or sufficient knowledge, should be taken as his preacher and should be grateful to him for giving such knowledge.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(141)

अल्पानामपि वस्तूनां संहतिः कार्यसाधिका।
तृणैर्गुणत्वमापन्नैर्बध्यन्ते मत्तदन्तिनः॥

संगठन का महत्त्व हितोपदेश/1/36

Alpānāmapi vastūnāṁ saṁhatiḥ kāryasādhikā।
Tṛṇairguṇatvamāpannairbadhyante mattadantinaḥ॥

Advantage of unity Hitopedeśa / 1 / 136

छोटी–छोटी वस्तुओं का भी संगठन कार्य सिद्ध कर देता है। जैसे जब तिनके मिलकर रस्सा बन जाते हैं तो उन्मत्त हाथी भी उनसे बाँध लिए जाते हैं।

The union of even little things, becomes very useful. When straws are united as a rope, even mad elephants can be tied with it.

(142)

अवन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदो
भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः।
अमर्षशून्यस्य जनस्य जन्तुना
न जातहार्देन न विद्विषादरः॥

तेजस्विता किरातार्जुनीय/1/33

Avandhyakopasya vihanturāpado
bhavanti vaśyāḥ svayameva dehinaḥ।
Amarṣaśūnyasya janasya jantunā
na jātahārdena, na vidviṣādaraḥ॥

Glory Kirātā. / 1 / 33

जिस व्यक्ति का क्रोध व्यर्थ नहीं जाता ऐसे व्यक्ति की आपदाएँ स्वयं वश में हो जाती हैं। क्रोधरहित व्यक्ति की मित्रता या द्वेष का किसी भी प्राणी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता; न कोई प्रेम दिखाता है और न कोई डरता है।

The man whose anger is never futile, can control his difficulties very easily. The person having no anger cannot show his influence of friendship or enmity on any person. So neither anybody shows love to him nor feels fear from him.

(143)

अवलिप्तेषु मूर्खेषु, रौद्रसाहसिकेषु च।
तथैवापेतधर्मेषु, न मैत्रीमाचरेद् बुधः॥

मैत्री के अयोग्य महाभा./उद्योग/39/49

Avaliptesu mūrkheṣu, raudrasāhasikeṣu ca।
Tathaivāpeta-dharmeṣu, na maitrīmācared budhaḥ॥

Mehābhā. / Udyoga / 39 / 49

Unfit for friendship

अभिमानी मूर्खों, भयंकर हिम्मत दिखाने वालों तथा धर्महीनों से बुद्धिमान् मनुष्य को मित्रता नहीं करनी चाहिए।

A wise man should not make friendship with the following persons :- (1) proud fools, (2) dreadful adventurous and (3) irreligious persons.

(144)

अवशेन्द्रियचित्तानां हस्तिस्नानमिव क्रिया।
दुर्भगाभरणप्रायो ज्ञानं भारः क्रियां विना॥

ज्ञान की व्यर्थता हितोप./मित्र./18

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Avaśendriyacittānāṁ hastisnānamiva kriyāl
Durbhagābharaṇaprāyo jñānaṁ bhāraḥ kriyāṁ vinā॥

Hito. / Mitra. / 18

Uselessness of knowledge

जिनकी इन्द्रियाँ और मन वश में नहीं हैं, उनके सभी धार्मिक कृत्य हाथी के स्नान के समान व्यर्थ हैं। जैसे हाथी नहा कर फिर अपने ऊपर मिट्टी डाल लेता है, ऐसी ही उनकी दशा होती है। इसी प्रकार व्यवहार में न लाया हुआ ज्ञान विधवा नारी के आभूषणों के समान शोभा नहीं देता, वह तो केवल भार रूप है।

The persons who have not control on their senses and minds, perform the religious deeds like an elephant which takes bath and then covers its body with dust. If knowledge is not properly practised, then it is mere a burden like the ornaments worn by a widow.

(145)

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।
नाऽभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि॥

कर्म का भोग अत्रिस्मृतिः

Avaśyameva bhoktavyaṁ kṛtaṁ karma śubhāśubham।
Nā'bhuktaṁ kṣīyate karma kalpakoṭiśatairapi॥

Result of works Atrismṛti

अच्छा या बुरा कर्म अवश्य ही भोगना पड़ता है। अरबों कल्प बीतने पर भी बिना भोगे कर्म की समाप्ति नहीं होती।

The deeds which are done by a person are to be suffered by him undoubtedly. A work never ends without being suffered even after a long-long time.

(146)

अवश्यमेव लभते, फलं पापस्य कर्मणः।
भर्त्तः! पर्यागते काले, कर्त्ता नास्त्यत्र संशयः॥

कर्म का भोग वाल्मीकिरा. / युद्धकाण्ड / 25

Avaśyameva labhate, phalaṁ pāpasya karmaṇaḥ।
Bharttaḥ! Paryāgate kāle, karttā nāstyatra saṁśayaḥ॥

Results of works Vā. Rā. / Yuddha. / 25

मन्दोदरी रावण से कह रही है कि "हे पतिदेव! बुरे कर्म का फल समय बीतने पर कर्त्ता को अवश्य प्राप्त होता है। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं।"

Mandodarī says to Rāvaṇa, "O my dear, the doer must reaps the fruit of the bad works done undoubtedly, by himself even after a long time."

(147)

अवश्यं यातारश्चिरतरमुषित्वाऽपि विषयाः।
वियोगे को भेदस्त्यजति न जनो यत्स्वयममून्॥
व्रजन्तः स्वातन्त्र्यादतुलपरितापाय मनसः।
स्वयं त्यक्तास्त्वेते शमसुखमनन्तं विदधति॥

त्याज्य—विषय वैराग्यशतक / 16

Avaśyaṁ yātāraścirataramuṣitvā'pi viṣayāḥ।
Viyoge ko bhedastyajati na jano yatsvayamamūn॥
Vrajantaḥ svātantryādatulaparitāpāya manasaḥ।
Svayaṁ tyaktāstvete śamasukhamanantaṁ vidadhati॥

Avoid sensualities Vairāgyaśa / 16

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चाहे कोई कितने समय तक रह कर विषयों का भोग कर ले, तो भी एक दिन वे अवश्य छूट जायेंगे। मनुष्य स्वयं यदि इन विषयों का परित्याग नहीं करता और ये स्वयं उसे छोड़ देते हैं, तो इससे मन में बहुत दुःख होता है, परन्तु यदि कोई स्वयं इन विषयों को छोड़ देता है, तो छोड़ने वाले को अनन्त शान्ति का सुख प्राप्त हो जाता है। विषयों के स्वतः छूटने और उन्हें छोड़ने में यही अन्तर है।

A man may enjoy the worldly things for a long time, still they leave him one day. If the man himself does not keep them off and they leave him, then he feels sadness in his mind, but if he leaves them himself then he gets eternal peace and happiness. This is the difference in these two cases.

(148)

अवसरपठितं सर्वं सुभाषितत्वं प्रयात्यसूक्तमपि।
क्षुधि कदशनमपि नितरां भोक्तुः सम्पद्यते स्वादु॥

उचित समय सुभाषितावलि / 150

Avasarapaṭhitaṁ sarvaṁ subhāṣitatvaṁ prayātyasūktamapi।
Kṣudhi kadaśanamapi nitarāṁ bhoktuḥ sampadyate svādu॥

Due time Subhāsitā. / 150

चाहे कोई रचना सुन्दर न भी हो, तो भी समय पर कही गई वह रचना ही सुभाषित बन जाती है; जैसे भूख लगने पर घटिया भोजन भी खाने वाले को स्वादु लगता है।

Though a literary creation is not so attractive, yet if it is used at due time, it is said a good creation, as a tasteless food becomes tasty for a person who feels hunger badly.

(149)

अविज्ञाय फलं यो हि कर्मण्येवानुधावति।
स शोचेत्फलवेलायां यथा किंशुकसेवकः॥

अविचारशीलता वा. रामायण/63/9

Avijñāya phalaṁ yo hi karmaṇyevānudhāvati।
Sa śocet phalavelāyāṁ yathā kiṁśukasevakaḥ॥

Thoughtlessness Vā. Rā. / 63 / 9

परिणाम पर ध्यान दिए बिना जो व्यक्ति अन्धा-धुन्ध कर्म में जुट जाता है, वह उसी प्रकार पछताता है, जिस प्रकार केसू के पेड़ की सेवा करने वाला। भाव यह है कि केसू पर सुन्दर फूल तो लगते हैं पर उससे कोई फल प्राप्त नहीं होता, इसी प्रकार फल पर ध्यान रखे बिना कर्म करना व्यर्थ है।

The person who goes on working without thinking its result, he feels sad at the time of the result, as the man who serves kiṁśuka, a tree which gives only some beautiful flowers but no fruit.

(150)

अविद्यानाशिनी विद्या, भावना भावनाशिनी।
दारिद्र्यनाशनं दानम्, शीलं दुर्गतिनाशनम्॥

बुराई के नाशक वल्लभ / सुभाषितावलि / 2644

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Avidyānāśinī vidyā, bhāvanā bhāvanāśinī।
Dāridryanāśanaṁ dānaṁ, śīlaṁ durgatināśanam॥

Vallabh / Subhāśita / 2644

Destroyers of demerits

विद्या अर्थात् आध्यात्मिक ज्ञान से अविद्या अर्थात् माया–मोह का नाश होता है। सद्भावना से संसार का प्रपञ्च छूटता है। दान देते रहने से दरिद्रता (गरीबी) दूर होती है और सदाचार के पालन से दुर्दशा नष्ट हो जाती है।

Spiritual knowledge removes attachment. Good thinking removes worldly illusion. Giving alms removes poverty and the practice of morality removes bad condition.

(151)

अविदित्वात्मनः शक्तिं परस्य च समुत्सुकः।
गच्छन्नभिमुखो नाशं याति वह्नौ पतङ्गवत्॥

स्वशक्ति समझो पञ्चतन्त्र/मित्रभेद/18

Aviditvātmanaḥ śaktiṁ parasya ca samutsukaḥ।
Gacchannabhimukho nāśaṁ yāti vahnau patańgavat॥

See own capability Pañcata. / Mitrabhe. / 18

अपनी और दूसरे की शक्ति को जाने बिना जो उत्सुकतापूर्वक दूसरे से टक्कर लेता है, उसका नाश उसी प्रकार होता है, जैसे पतंगे की मृत्यु आग से होती है।

The person who is ignorant from his own and of other's power, if faces the enemy zealously, he is destroyed as a moth going towards the fire.

(152)

अवृत्तिभयमन्त्यानां मध्यानां मरणाद् भयम्।
उत्तमानां तु सत्त्वानामवमानात् परं भयम्॥

भय के कारण सुभाषितावलि / 204

Avṛttibhayamantyānāṁ madhyānāṁ maraṇād bhayam।
Uttamānāṁ tu sattvānāmavamānāt paraṁ bhayam॥

Causes of fear Subhāsitā / 204

छोटे लोगों को आजीविका छिनने का भय रहता है, मध्यम श्रेणी के लोगों को मृत्यु का डर लगा रहता है, उत्तम श्रेणी के लोगों को अपमान का ही भय रहता है, अर्थात् वे ऐसे ही कार्य करते हैं, जिन से वे अपमान से बचे रहें।

The lowest persons are afraid of dismissing of their service, the persons of medium category are afraid of death but the people of high nature are afraid of their insult.

(153)

अव्यसश्च व्यचसश्च बिलं विष्यामि मायया।
ताभ्यामुद्धृत्य वेदमथ कर्माणि कृण्महे॥

वेद के अनुसार कर्म अथर्व/19/68/1

Avyasaśca vyacasaśca bilaṁ viṣyāmi māyayā।
Tābhyāmuddhṛtya Vedamatha karmāṇi kṛṇmahe॥

Do as Vedas say Atharva / 19 / 68 / 1

अव्यापक जीवात्मा और व्यापक परमात्मा के रहस्य को मैं बुद्धि द्वारा प्राप्त कर लेता हूँ। जीवात्मा और परमात्मा इन दोनों के विवेचन के साथ वेद को धारण करके उसके अनुसार हम शुभ कर्मों को करते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

I know the reality of the soul which is not pervading and of God which is Omnipresent with my intellect. After knowing the reality of the soul and God, we adopt the Vedas and perform good deeds according to them.

(154)

अव्रतानाममन्त्राणां, जातिमात्रोपजीविनाम्।
सहस्त्रशः समेतानां, परिषत्त्वं न विद्यते॥

मन्त्रणा के अयोग्य मनु./12/114

Avratānāmamantrāṇāṁ, jātimātropajīvinām।
Sahasraśaḥ sametānāṁ, pariṣattvaṁ na vidyate॥

Manu./12/114

Underserving for consulation

जिन्होंने श्रेष्ठ नियमों का पालन नहीं किया और मन्त्रों का ज्ञान भी नहीं पाया परन्तु केवल बाप-दादा की जाति के नाम से ही अपना निर्वाह चलाते हैं, ऐसे लोग यदि हजारों की संख्या में भी इकट्ठे हो जायें तो भी उनके समुदाय को सभा या परिषद् नहीं कहा जा सकता। भाव यह है कि विचार देने और सुनने का उन्हीं लोगों का अधिकार है, जो नियमपूर्वक शिक्षित हो चुके हों।

Those, who have not practised good principles and have not known the hymns (Mantras) but carry on their livlihood through the caste of their parents, cannot make an assembly or council, inspite of their assemblage in thousands at any place. In brief, we can say that only those persons have right to discuss the problems who have gained education regularly.

(155)

अशक्तैः बलिनः शत्रोः कर्त्तव्यं प्रपलायनम्।
श्रयितव्योऽथवा दुर्गो नान्या तेषां गतिर्भवेत्॥

बलवान् शत्रु बचो पञ्चतन्त्र/मित्रभेद/269

Aśaktaiḥ balinaḥ śatroḥ karttavyaṁ prapalāyanam।
Śrayitavyo'thavā durgo nānyā teṣāṁ gatirbhavet॥

Pañcata./Mitrabhe./269

Keep off from powerful enemy

बलवान् शत्रु के सामने से निर्बल व्यक्तियों को दूर भाग जाना चाहिए अथवा किसी दुर्ग (अगन्तव्य स्थान) का आश्रय ले लेना चाहिए। इसके अतिरिक्त उनके पास कोई दूसरा चारा नहीं हो सकता।

The weak should be off if a powerful enemy comes to attack them or they should take refuge into a fort or such a place which cannot be attacked by the enemy. There is no other way to protect themselves.

(156)

अशठमलोलमजिह्मं त्यागिनमनुरागिणं विशेषज्ञम्।
यदि नाश्रयति नरं श्रीः, श्रीरेव वञ्चिता तत्र॥

लक्ष्मी के योग्य श्री हर्षदेव

Aśaṭhamalolamajihmaṁ tyāginamanurāgiṇaṁ viśeṣajñam।
Yadi nāśrayati naraṁ śrīḥ, śrīreva vañcitā tatra॥

Deserving of wealth Śrī Harsadeva

जो दुष्ट, कपटी और कुटिल नहीं है परन्तु समयानुसार त्याग करने वाला, दूसरों के प्रति प्रेम दिखाने वाला और विशेष रूप से ज्ञानी है, यदि ऐसे मनुष्य के पास लक्ष्मी नहीं आती, तो समझना

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चाहिए कि यह लक्ष्मी का ही दुर्भाग्य है; वही ठगी गई है।

If the goddess of wealth does not come to such person, who is neither cruel nor cheat and crooked, but is punctual, generous and affectionate to others and also a scholar, then it is she who is deprived unfortunately.

(157)

अश्नीयात्तन्मना भूत्वा, पूर्वन्तु मधुरं रसम्।
मध्येऽम्ललवणौ, पश्चात् कटुतिक्तकषायकम्॥

भोजन का क्रम चरक/विमान-स्थान/1/31

Aśnīyāttanmanā bhutvā, pūrvantu madhuraṁ rasam।
Madhye'mlalavaṇau, paścāt kaṭutikta-kaṣāyakam॥

Caraka / Vimāna. / 1 / 31

System of eating

मनुष्य को चाहिए कि भोजन के समय खाने में ही ध्यान रखते हुए पहले मीठी वस्तु खाये, मध्य में खट्टी और नमकीन और बाद में कड़वी तथा कसैली।

A man should eat attentively first of all sweet things, then sour and saltish ones and after that at the end, bitter and astrigent things.

(158)

अश्वः शस्त्रं शास्त्रं वीणा वाणी नरश्च नारी च।
पुरुषविशेषं प्राप्ता भवन्त्ययोग्याश्च योग्याश्च॥

साधनों का प्रयोग पञ्चतन्त्र/मित्रभेद/115

Asvaḥ śastraṁ śāstraṁ vīṇā vāṇī naraśca nārī ca।
Puruṣaviśeṣaṁ prāptā bhavantyayogyāśca yogyāśca॥

Pañcāta. / Mitrabhe. / 115

Working by means

घोड़ा, हथियार, शास्त्र, वीणा, भाषा, पुरुष और स्त्री जैसे-जैसे पुरुष से सम्बन्ध रखते हैं, तदनुसार ही वे अयोग्य (बुरे) या योग्य (अच्छे) बन जाते हैं। तात्पर्य यह है कि साधनों का महत्त्व तभी है, जब उसका प्रयोक्ता अच्छा हो।

The following things become good or bad according to the persons who possess them :- (1) A horse, (2) a weapon, (3) a scripture, (4) a lute, (5) a language, (6) a man and (7) a woman.

(159)

अश्वमेधसहस्रं च सत्यं च तुलया धृतम्।
अश्वमेधसहस्राद्धि सत्यमेव विशिष्यते॥

सत्य का महत्त्व महाभा. / आदिपर्व / 74 / 103

Aśvamedhasahasraṁ ca satyaṁ ca tulayā dhṛtam।
Aśvamedhasahasrāddhi satyameva viśiṣyate॥

Mahābhā. / Ādiparva / 74 / 103

Superiority of the Truth

यदि एक हजार अश्वमेधों की तुलना में तराजू पर दूसरी ओर सत्य को रखा जाए, तो हजार अश्वमेधों की तुलना में सत्य का पलड़ा ही भारी रहेगा अर्थात् सत्य की ही महत्ता अधिक होगी। अतः सत्य हजार अश्वमेध-यज्ञों से भी श्रेष्ठ है।

If on the one side of balances is put thousands of Aśvamedh sacri-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

fices and on the other side only one truth, then the weight of the truth will be heavier. It means that speaking of the truth is more important than any sacrifice.

(160)

अश्रद्धा परमं पापं, श्रद्धा पापप्रमोचनी।
जहाति पापं श्रद्धावान्, सर्पो जीर्णामिव त्वचाम्॥

श्रद्धा का महत्त्व महाभा./शान्ति./264/15

Aśraddhā paramaṁ pāpaṁ, śraddhā pāpapramocanī।
Jahāti pāpaṁ śraddhāvān, sarpo jīrṇāmiva tvacām॥

Mahābhā./Śānti/264/15

Importance of devotion

श्रद्धा से रहित होना बहुत बड़ा पाप है और श्रद्धा पापों को नष्ट करती है। श्रद्धालु व्यक्ति पापों से इस प्रकार छूट जाता है, जिस प्रकार साँप पुरानी केंचुली को उतार फेंकता है। भावार्थ यह है कि हम जो भी श्रेष्ठ कार्य करें उसे श्रद्धापूर्वक करें, तभी लाभ हो सकता है।

Lack of devotion is a great sin but devotion removes sins. A devotee gets rid of the sins in this manner as a snake removes away its old slough. It means, that one should do every sacred work with devotion.

(161)

अष्टौ गुणाः पुरुषं दीपयन्ति,
प्रज्ञा कौल्यं च दमः श्रुतं च।
पराक्रमश्चाबहुभाषिता च,
दानं यथाशक्ति कृतज्ञता च॥

शोभाप्रद गुण महाभा./उद्योग/35/52

Aṣṭau guṇāḥ puruṣaṁ dīpayanti,
Prajñā kaulyaṁ ca damaḥ śrutaṁ ca।
Parākramaścābahubhāṣitā ca,
Dānaṁ yathāśakti kṛtajñatā ca॥

Mahābhā./Udyoga/35/52

Murits for decoration

निम्नलिखित आठ गुणों से मनुष्य की बहुत प्रशंसा होती है :- (1) बुद्धि, (2) कुलीनता, (3) मन का संयम, (4) ज्ञान, (5) बहादुरी, (6) कम बोलना, (7) यथाशक्ति दान देना और (8) दूसरे के उपकार को याद रखना।

The following eight qualities make a man popular :- (1) wisdom, (2) good breeding (3) control of mind, (4) knowledge, (5) bravery, (6) less speaking, (7) giving alms according to his power and (8) gratefulness.

(162)

असतां सङ्गदोषेण साधवो यान्ति विक्रियाम्।
दुर्योधनप्रसङ्गेन भीष्मो गोहरणे गतः॥

कुसंगति से हानि पञ्चतन्त्र/मित्रभेद/195

Asatāṁ saṅgadoṣeṇa sādhavo yānti vikriyām।
Duryodhanaprasaṅgena Bhīṣmo goharaṇe gataḥ॥

Pañcata./Mitrabhe./195

Disadvantage of bad company

दुष्टों की संगति से श्रेष्ठ मनुष्य भी दुष्ट बन जाते

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हैं। दुर्योधन के संग से ही भीष्म भी विराट् की गौएँ चुराने के लिए चले गये।

A company of bad persons makes bad even to good ones. Bhīṣma went to snatch away the cows of Virāt due to the bad company of Duryodhana.

(163)

असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्माऽमृतं गमय॥

प्रार्थना बृहदारण्यकोपनिषद् / 1/ब्राह्मण 3

Asato mā sadgamaya, tamaso mā jyotirgamaya |
Mṛtyormā'mṛtaṁ gamaya ||

Prayer Bṛhadāraṇyako / 1 / Brāhmaṇa 3

हे परमात्मन्! मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो और मृत्यु से बचाकर मुक्ति की ओर ले चलो।

O God! Lead me to the truth from the falsehood, lead me to the light from the darkness and lead me to the salvation from the death.

(164)

असत्यवचनं प्राज्ञः प्रमादेनापि नो वदेत्।
श्रेयांसि येन भज्यन्ते वात्ययेव महाद्रुमाः॥

असत्य से हानि योगशास्त्र/2/57

Asatyavacanaṁ prājñaḥ pramādenāpi no vadet |
Śreyāṁsi yena bhajyante, vātyayeva mahādrumāḥ ||

Yogaśāstra / 2 / 57

Disadvantage of telling a lie

बुद्धिमान् व्यक्ति को चाहिए कि वह लापरवाही में भी झूठ न बोले, क्योंकि झूठ बोलने से कल्याण समाप्त हो जाते हैं, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार तूफान से बड़े-बड़े पेड़ गिर जाते हैं।

A wise man should not speak a lie, even in negligence, because all auspicious things get their end while telling a lie like the big trees which are felled by a strong storm.

(165)

असत्यवचनाद् वैरविषादाप्रत्ययादयः।
प्रदुष्यन्ति न के दोषाः कुपथ्याद् व्याधयो यथा॥

असत्य से हानियाँ अज्ञात

Asatyavacanād vairaviṣādāpratyayādayaḥ |
Praduṣyanti na ke doṣāḥ, kupathyād vyādhayo yathā ||

Losses due to falsehood Unknown

झूठ बोलने से दुश्मनी, खेद और अविश्वास आदि अनेक दोष इस प्रकार से उत्पन्न हो जाते हैं जैसे कुपथ्य से बीमारियाँ उत्पन्न हो जाती हैं।

Telling a lie causes enmity, sadness and distrust etc. many defects, as an unwholesome diet becomes the source of many diseases.

(166)

असम्भवं हेम-मृगस्य जन्म
तथापि रामो लुलुभे मृगाय।
प्रायः समापन्न-विपत्तिकाले
धियोऽपि पुंसां मलिनाः भवन्ति॥

विपत्ति का प्रभाव हितोपदेश/1/28

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Asambhavaṁ hemamṛgasya janma,
Tathāpi Rāmo lulubhe mṛgāya।
Prāyaḥ samāpannavipattikāle,
Dhiyo'pi puṁsāṁ malināḥ bhavanti॥

Effect of adversity Hitopadeśa / 1 / 28

यद्यपि सोने का मृग नहीं हुआ करता, तो भी राम ने ऐसे मृग की कामना की। प्राय: जब संकट आने लगता है, तब बड़े-बड़े लोगों की भी बुद्धियाँ विकृत हो जाती हैं।

Though a golden deer never comes into existence, yet Rama desired such a deer. Generally, when adversity comes, the intellect of even great men becomes disturbed.

(167)

असहाय: समर्थोऽपि, तेजस्वी किं करिष्यति।
निवाते ज्वलितोऽप्यग्नि:, स्वयमेव प्रशाम्यति॥

सहायकों का महत्त्व पञ्चतन्त्र/काकोलूकीयम्/55

Asahāyaḥ samartho'pi, tejasvī kiṁ kariṣyati?
Nivāte jvalito'pyagniḥ, svayameva praśāmyati॥

Pañcata. / Kako. / 55

Importance of helpers

तेजस्वी पुरुष भी यदि अकेला हो तो वह कुछ नहीं कर सकता। जैसे वायुरहित स्थान पर जलती हुई अग्नि भी बुझ जाती है। तात्पर्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को सहायकों की आवश्यकता होती ही है।

If even a strong person is alone, he can do nothing. Burning fire becomes off in a airless place. It means everybody requires his helpers.

(168)

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे।
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी॥
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालम्।
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति॥

ईश-महिमा शिवमहिम्न: स्तोत्र/32

Asitagirisamaṁ syāt kajjalaṁ sindhupātre,
Surataruvaraśākhā lekhanī patramurvī।
Likhati yadi gṛhītvā śāradā sarvakālam,
Tadapi tava guṇānāmīśa pāraṁ na yāti॥

Greatness of God Śivamnaḥ Stotra / 32

हे परमेश्वर! यदि समुद्र रूपी पात्र में पहाड़ जितनी स्याही डाल दी जाए, कल्पवृक्ष की शाखा को कलम और पृथ्वी को कागज बना लिया जाए और उस पर सरस्वती देवी जीवन-भर तुम्हारे गुण लिखती रहे, तो भी उन्हें पूर्णरूप से नहीं लिखा जा सकता।

O God, if the ink as much as a mountain is put into the pot of the ocean, the branch of the divine tree (kalpa druma) becomes a pen, and the goddess of knowledge (Sarasvatī) writes continuously on the paper of the vast earth, even in that case, she cannot write your all qualities.

(169)

असुर्या नाम ते लोका, अन्धेन तमसाऽऽवृता:।
तांस्ते प्रेत्यापिगच्छन्ति, ये के चात्महनो जना:॥

आत्महत्या से हानि यजु./40/3

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Asuryā nāma te lokā, andhena tamasā'vṛtāḥ।
Tāṁste pretyāpigacchanti, ye ke cātmahano janāḥ॥

Disadvantage of sacrifice Yaju. / 40 / 3

जो लोग आत्मा को नीचे की ओर ले जाते हैं, वे जीते-जी तो दुःख पाते ही हैं, साथ ही, मरने के बाद भी केवल पशुओं आदि की ऐसी भोग-योनियों मे जाते हैं, जहाँ अज्ञानरूपी अन्धकार छाया रहता है।

The people who retrogress their souls, they suffer many difficulties in their life and besides it, after death they take their birth in such species of animals and insects where darkness of ignorance remains always.

(170)

असूयैकपदं मृत्युरतिवादः श्रियो वधः।
अशुश्रूषा त्वरा श्लाघा, विद्यायाः शत्रवस्त्रयः॥

विद्या के शत्रु महाभा. / उद्योग / 40 / 4

Asūyaikapadaṁ mṛtyurativādaḥ śriyo vadhaḥ।
Aśuśrūṣā tvarā ślāghā, vidyāyāḥ śatravastrayaḥ॥

Mahābhā / Udyoga / 40 / 4

Enemies of knowledge

डाह करना तत्काल मृत्युरूप है, बहुत बोलने से मनुष्य की शोभा नष्ट होती रहती है और गुरु-सेवा न करना, जल्दी मचाना और अपनी प्रशंसा पाने की इच्छा करना ये तीन विद्या के शत्रु हैं।

Jealousy is like a death, too much speaking decreases one's respect and lack of service, haste and desire of own praise are the three enemies of education.

(171)

अस्तीत्येव कृषिं कुर्यात्, अस्ति नास्तीति वाणिज्यम्।
नास्तीत्येव ऋणं दद्यान्नाहमस्मीति साहसम्॥

कार्यों के अवसर नराभरण / 80

Astītyeva kṛṣiṁ kuryāt, asti nāstīti vāṇijyam।
Nāstītyeva ṛṇaṁ dadyānnāhamasmīti sāhasam॥

Times of works Narābharaṇa / 80

मेरा धन मेरे पास ही है, यह विचार कर खेती करे। लाभ होगा या नहीं होगा, यह विचार कर व्यापार करे। कर्ज दिया हुआ वापस नहीं मिलेगा, यह समझ कर ऋण दे और मैं शायद समाप्त ही हो जाऊँ, यही विचार कर साहसिक कार्य में हाथ डाले।

'My money is with me', thinking this one should be an agriculturist. 'There will be profit or not', thinking this one should begin a business. 'A loan given will not come back' thinking this one should give his money as a loan. 'I will not survive,' thinking this one should take an adventurous work in hand.

(172)

अस्मिन् महामोहमये कटाहे,
सूर्याग्निना रात्रि-दिवेन्धनेन।
मासर्त्तुदर्वीपरिघट्टनेन,
भूतानि कालः पचतीति वार्त्ता॥

काल के कार्य महाभा. / वनपर्व / 313 / 88

Asmin mahāmohamaye kaṭāhe,
Sūryāgninā rātridivendhanena।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Māsarttudarvī-parighaṭṭanena,
Bhūtāni kālaḥ pacatīti vārttā ll

Mahābhā / Vanap. / 313 / 88

Works of time

'समाचार क्या है, खबर क्या है' इस प्रश्न के उत्तर में युधिष्ठिर कह रहे हैं कि महान् मोह से बने इस कड़ाहे में सूर्य की आग के द्वारा रात तथा दिन रूपी इन्धन से, महीनों तथा ऋतुओं रूपी कलछी को चला-चला कर काल सभी प्राणियों को पकाये जा रहा है, यही वार्ता है, यही समाचार या खबर है।

"What is the news?" answering this question Yudhiṣṭhira says, "There is a big cauldrin made of spiritual ignorance. In this cauldrin with the fire of the sun and with the fuel of days and nights stirring with the ladles of months and seasons the time (Kala) is cooking all the creatures, is the existing news."

(173)

अहन्यहनि भूतानि, गच्छन्तीह यमालयम्।
शेषाः स्थावरमिच्छन्ति, किमाश्चर्यमतः परम्॥

संसार का आश्चर्य महाभा. / वनपर्व / 313 / 116

Ahanyahani bhūtāni, gacchantīha yamālayam।
Śeṣāḥ sthāvaramicchanti, kimāścaryamataḥ param ll

Mahābhā / Vana. / 313 / 116

Wonder of world

युधिष्ठिर से जब यह पूछा गया कि संसार में आश्चर्य क्या है तो युधिष्ठिर ने इस प्रकार उत्तर दिया — "संसार में प्रतिदिन प्राणी मर रहे हैं, यह देखकर भी शेष सदा जीने की इच्छा करते हैं, इससे बढ़कर आश्चर्य और क्या हो सकता है!"

When Yudhiṣṭhira was asked to tell the wonder of the world, then he answered, "Creatures die day by day. Seeing all this the remaining persons think to live forever. This is great wonder. No other wonder can compare this."

(174)

अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रभ। अहं सूर्य इवाजनि॥

ईश्वर — भक्ति का लाभ ऋ. / 8 / 6 / 10

Ahamiddhi pituṣpari medhāmṛtasya jagrabha. Ahaṁ surya ivājani ll

Ṛg. / 8 / 6 / 10

Advantage of God's devotion

"मैंने संसार के पालक सत्यस्वरूप परमेश्वर की उपासना से मेधा-बुद्धि को प्राप्त कर लिया है। मैं सूर्य के समान हो गया हूँ। अर्थात् जैसे सूर्य अन्धकार को नष्ट करता है, उसी प्रकार मैं भी मेधा-बुद्धि को प्राप्त करके संसार से अज्ञानान्धकार को नष्ट करने में समर्थ हो गया हूँ।" यह कथन प्रभु के सच्चे उपासक का है।

A true devotee of God says, "I have got true intelligence through the devotion of God, the nourisher of the world and embodiment of truth. So

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

I have become like the sun." It means, "I have got such an ability by which I can remove the ignorance of the world, like the sun, which is able to remove darkness."

(175)

अहिंसा निर्मलं धर्मं सेवन्ते ये विपश्चितः।
तेषामेवोर्ध्वगमनं, यान्ति तिर्यगधोऽन्यथा॥

उन्नति का मार्ग पद्मपुराण/4/41

Ahiṁsā nirmalaṁ dharmaṁ sevante ye vipaścitaḥ।
Teṣāmevordhvagamanaṁ, yānti tiryagadho'nyathā॥

Path of progress Padmapu. / 4 / 41

जो ज्ञानी लोग अहिंसारूपी पवित्र धर्म का सेवन करते हैं, वे ही ऊँची स्थिति पर पहुँचते हैं, अन्यथा दूसरे कुटिल लोग नीचे ही गिरते हैं।

The intelligent persons who carry on pious deed of non-violence, get high position, but those who are violent and crooked fall down badly.

(176)

अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
एतं सामासिकं धर्मं चातुर्वर्ण्येऽब्रवीन्मनुः॥

सभी का धर्म मनु./10/63

Ahiṁsā satyamasteyaṁ śaucamindriyanigrahḥ।
Etaṁ sāmāsikaṁ dharmaṁ cāturvarṇye'bravīnmanuḥ॥

MOrality for all Manu. / 10 / 63

किसी को दुःख न देना, सच बोलना, चोरी न करना, पवित्रता और इन्द्रियों को वश में रखना — यही धर्म मनु ने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के लिए सामान्य रूप से बताया है।

Manu states the following moral duties for the four castes :- (1) non-violence, (2) truth, (3) absence of theft, (4) purity or cleanliness and (5) control of senses.

(177)

अहिंसा सूनृता वाणी सत्यं शौचं दया क्षमा।
वर्णिनां लिङ्गिनां चैव सामान्यो धर्म उच्यते॥

अग्निपुराण/237/10

ब्रह्मचारियों और संन्यासियों का सामान्य धर्म

Ahiṁsā sūnṛtā vāṇī, satyaṁ śaucaṁ dayā kṣamā।
Varṇināṁ liṅginām caiva sāmānyo dharma ucyate॥

Common dulies for men of first and last stages Agnipu. / 237 / 10

ब्रह्मचारियों और संन्यासियों के सामान्य धर्म में निम्न बातें आती हैं : (1) अहिंसा, (2) मीठी वाणी, (3) सच्चाई, (4) पवित्रता, (5) दया और (6) क्षमा।

The following are the constituents of morality for a Brahmacāri and a Saṁnyāsī :-

(1) non-violence, (2) sweet talk, (3) truth, (4) piousness, (5) kindness and (6) tolerance.

(178)

अहिंसा सत्यमस्तेयमकामक्रोधलोभता।
भूतप्रियहितेहा च धर्मोऽयं सार्ववार्णिकः॥

सामान्य धर्म श्रीमद्भागवत/11/17/21

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Ahiṁsā satyamasteyamakāmakrodhalobhatā।
Bhūtapriyahitehā ca, dharmo'yaṁ sārvavārṇikaḥ॥

Śrimadbhagavata / 11 / 17 / 21

Common duties

सभी वर्णों के लिए धर्म के ये अंग सामान्य रूप से हैं :- (1) अहिंसा, (2) सत्य, (3) चोरी न करना, (4) कुत्सित कामवासना का परित्याग, (5) क्रोध का परित्याग, (6) लोभ का परित्याग, और (7) सभी प्राणियों के हित की कामना।

The following are the principles of morality for every caste generally :- (1) Non-violence, (2) truth, (3) absence of theft, (4) absence of lust, (5) absence of anger, (6) absence of greediness and (7) well wishing for all creatures.

(179)

अहो खलभुजङ्गस्य विपरीतो वधक्रमः।
कर्णे लगति चैकस्य प्राणैरन्यो वियुज्यते॥

दुष्ट का स्वभाव पञ्चतन्त्र/ मित्रभेद/250

Aho khala-bhujaṅgasya viparīto vadhakramaḥ।
Karṇe lagati caikasya prāṇairanyo viyujyate॥

Pañcata / Mitrabhe. / 250

Nature of the bad person

अरे! दुष्ट व्यक्ति रूपी साँप के काटने का ढंग बड़ा विचित्र है। वह एक के कान का स्पर्श करता है और दूसरा प्राणों से हाथ धो बैठता है। भावार्थ यह है कि दुष्ट व्यक्ति चुगलखोरी द्वारा कान भर कर दूसरे व्यक्ति को नष्ट करवा देता है।

The killing method of the bad person who is like a snake differs from the real snake. He touches the one's ear and kills the other one. It means that a bad person through back-biting provokes one to kill somebody else.

(180)

अहो सुसदृशी वृत्तिर्मर्दलस्य खलस्य च।
यावन्मुखगतं पिण्डं तावन्मधुरभाषणम्॥

दुष्ट का स्वभाव नीतिशास्त्र/ 152

Aho susadṛśī vṛttirmardalasya khalasya ca।
Yāvanmukhagataṁ piṇḍaṁ tāvanmadhurabhāṣaṇam॥

Nature of a bad person Nitiśāstra / 152

तबले और दुष्ट व्यक्ति की कार्यपद्धति एक जैसी ही है। जब तक मुख में खाद्य पदार्थ दिया जाता है, तभी तक वे मीठा बोलते हैं। भावार्थ यह है कि तबले पर आटा लगाने से उस की ध्वनि मीठी हो जाती है और दुष्ट व्यक्ति को जब तक खिलाते-पिलाते रहो, तभी तक वह मीठा बोलता है, अन्यथा उसकी वाणी में कटुता आ जाती है।

The working system of a bad person and a small tambourine is the same. When they are given to eat something only then they speak sweet. A tambourine gives sweet sound after the flour paste is pasted on its mouth and the bad man speeks sweet as long as he is given to eat and to drink.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(181)

अहौ वा हारे वा कुसुमशयने वा दृषदि वा,
मणौ वा लोष्ठे वा बलवति रिपौ वा सुहृदि वा।
तृणे वा स्त्रैणे वा मम समदृशो यान्ति दिवसाः,
कदा पुण्येऽरण्ये शिव शिव शिवेति प्रलपतः॥

सच्ची प्रभुभक्ति सुभाषितावलि / 34 / 3

Ahau vā hāre vā kusumaśayane vā dṛṣadi vā,
Maṇau vā loṣṭhe vā balavati ripau vā suhṛdi vā।
Tṛṇe vā straiṇe vā mama samadṛṣo yānti divasāḥ,
Kadā puṇye'raṇye Śiva Śiva śiveti pralapataḥ॥

True devotion Subhā. / 34 / 3

मेरे शुभकर्मों के जंगल में 'शिव, शिव, शिव' इस प्रकार भगवान् का नाम रटते हुए कब साँप अथवा हार में, फूल के बिछौने अथवा पत्थर में, मणि में या ढेले में, बलवान् शत्रु में या मित्र में समभाव से देखते हुए मेरे दिन बीतेंगे? अर्थात् सब में समान दृष्टि रखते हुए कब मैं प्रभु का नाम लेते हुए दिन बिताऊँगा?

In the forest of my good deeds when shall I feel equality in a snake or a garland, in a bed of flowers or stone, in a gem or a lump of earth, in a strong enemy or a friend and chanting the name of God, I shall spend my days?

आ = Ā

(182)

आकारैरिङ्गितैर्गत्या चेष्टया भाषणेन च।
नेत्रवक्त्रविकारैश्च लक्ष्यतेऽन्तर्गतं मनः॥

मनोभाव जानना पञ्चतन्त्र/मित्रभेद/42

Ākārairiṅgitairgatyā ceṣṭayā bhāṣaṇena ca।
Netra-vaktra-vikāraiśca lakṣyate'ntargataṁ manaḥ॥

Pañcata. / Mitrabhe. / 42

Knowing of mental attitude

शक्लसूरत से, इशारों से, चालढाल से, चेष्टा या हरकत से, बोलने-चालने से और आँख तथा मुख के ढंग से मन के छिपे हुए विचारों का बोध हो जाता है।

Through appearance, hints, gait, gestures, talk and impressions of the face and eyes, the thoughts of a person lying in his mind are known.

(183)

आक्रान्तं मरणेन जन्म, जरसा विद्युच्चलं यौवनम्,
सन्तोषो धनलिप्सया, शमसुखं प्रौढाङ्गनाविभ्रमैः।
लोके मत्सरिभिर्गुणा वनभुवो व्यालैर्नृपा दुर्जनैः,
अस्थैर्येण विभूतयोऽप्युपहता ग्रस्तं न किं केन वा॥

नाशकारी साधन वैराग्यशतक/91

Akrāntaṁ maraṇena janma, jarasā vidyuccalaṁ yauvanam,
Santoṣo dhanalipsayā, śamasukhaṁ prauḍhāṅganāvibhramaiḥ।
Loke matsaribhirguṇā vanabhuvo vyālairnṛpā durjanaiḥ,
Asthairyeṇa vibhūtayo'pyupahatā grastaṁ na kiṁ kena vā॥

Vairāgyaśataka / 91

Means of destruction

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन्म मृत्यु से घिरा हुआ है, बुढ़ापे ने बिजली के समान चंचल जवानी को घेर रखा है, संसार में धन की कामना ने सन्तोष को घेरा हुआ है, समझदार नारियों की चेष्टाओं ने वैराग्य की शान्ति को लपेट रखा है, ईर्ष्या करने वाले लोगों से व्यक्ति के गुण घबरा रहे हैं, जंगली जानवरों से वनों में रहने वाले लोग घिरे हुए हैं, दुष्टों ने राजाओं को बेचैन कर रखा है और अस्थिरता ने सम्पत्तियों को घेरा हुआ है; बताओ तो सही किससे कौन घिरा हुआ नहीं है? अर्थात् सभी किसी न किसी से आक्रान्त हैं।

In this world birth is occupied by death, old age is causing fear to youth which is unsteady like the lightning, the desire of riches is attacking contentment, spiritual happiness is disturbed by the actions of ladies, merits are attacked by the jealous persons, the living in forests has fear from the wild animals, kings are attacked by bad persons and prosperities also have fear from unsteadiness. So what is the thing that has no fear from anyone? It means everything is being troubled by this or that.

(184)

आक्रुश्यमानो नाक्रोशेन्मन्युरेव तितिक्षतः।
आक्रोष्टारं निर्दहति, सुकृतं चास्य विन्दति॥

सहनशीलता का लाभ महाभारत/उद्योग/36/5

Ākruśyamāno nākrośenmanyureva titikṣataḥ।
Ākroṣṭāraṁ nirdahati, sukṛtaṁ cāsya vindati॥

Mahābhā. / Udyoga / 36 / 5

Advantage of tolerance

दूसरे के द्वारा बुरा-भला कहने पर भी बुरा-भला नहीं कहना चाहिए। सहन करने वाले का अप्रयुक्त क्रोध ही उस बुरा-भला कहने वाले को जला डालता है, और बुरा-भला कहने वाले के पुण्य को भी हर लेता है।

If one curses, the man should not curse in the answer. The rage of the tolerant person itself burns the cursing person and gets his all virtue.

(185)

आक्रोशपरिवादाभ्यां विहिंसन्त्यबुधा बुधान्।
वक्ता पापमुपादत्ते क्षममाणो विमुच्यते॥

सहनशीलता का लाभ महाभा./उद्योग/34/70

Ākrośaparivādābhyāṁ vihiṁsantyabudhā budhān।
Vaktā pāpamupādatte kṣamamāṇo vimucyate॥

Mahābhā. / Udyoga / 34 / 70

Advantage of tolerance

मूर्ख लोग समझदार लोगों को गालियाँ देकर और निन्दा करके उनको हानि पहुँचाने की चेष्टा करते हैं, परन्तु बुरा बोलने वाला ही पापी कहलाता है और जो उन्हें क्षमा कर देता है, वही श्रेष्ठ माना जाता है।

The fools tell bad names and disgrace the wisemen to harm them, but the person who speaks undesired things is called sinful, while the person who excuses him is accepted as a noble person.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(186)

आखेटकं वृथाक्लेशं, मूर्खं व्यसनसंस्थितम्।
आलापयति यो मूढः, स गच्छति पराभवम्॥

बात करने के अयोग्य पञ्चतन्त्र/मित्रभेद/339

Ākheṭakaṁ vṛthākleśaṁ, murkhaṁ vyasanasaṁsthitam।
Ālāpayati yo mūḍhaḥ, sa gacchati parābhavam॥

Unfit to talk Pañcata. / Mitrabhe. / 339

जो नासमझ असफल परिश्रम वाले शिकारी से या संकट में पड़े हुए मूर्ख से बात करता है, वह तिरस्कृत होता है।

The fool who talks with an unsuccessful hunter or with a foolish person who is in any adversity, is insulted.

(187)

आगमोत्थं विवेकाच्च द्विधा ज्ञानं तदुच्यते।
शब्दब्रह्मागममयं परं ब्रह्म विवेकजम्॥

ज्ञान के भेद विष्णुपुराण/6/5/6

Āgamotthaṁ vivekācca dvidhā jñānaṁ taducyate।
Śabda-brahmāgamamayaṁ paraṁ Bṛahma vivekajam॥

Viṣṇupurāṇa / 6 / 5 / 6

Kinds of knowledge

ज्ञान दो प्रकार का है – शास्त्र-जन्य तथा विवेक-जन्य। शब्दब्रह्म का ज्ञान शास्त्रजन्य है और परब्रह्म का बोध विवेकजन्य है।

Knowledge is of two kinds - obtained from scriptures and known with discrimination. Sabdabrahma is known by scriptures and supreme God is known by discrimination.

(188)

आगारदाही मित्रघ्नः, शाकुनिर्ग्रामयाजकः।
रुधिरान्धे पतन्त्येते, सोमं विक्रीणते च यः॥

पापों का परिणाम विष्णुपुराण/2/6/23

Āgāradāhī mitraghnaḥ, śākunirgrāmayājakaḥ।
Rudhirāndhe patantyete, somaṁ vikrīṇate ca yaḥ॥

Result of sins Viṣṇupurāṇa / 2 / 6 / 23

घर में आग लगाने वाला, मित्रघातक, शकुन बताने वाला और ग्रामीण पुरोहित (जो जानता कुछ नहीं) और जो शराब बेचने वाला है, ये सब रुधिरान्ध नरक में गिरते हैं। अर्थात् ये महान् पापी होते हैं।

One who burns one's home, the second who kills his friend, the third who says about omens, the fourth the village priest who has little knowledge and the fifth who sells wine, all these fall into a bad hell, called 'Rudhirandha'. It means that the actions done by these people are grave sins.

(189)

आचारः कुलमाख्याति, वपुराख्याति भोजनम्।
वचनं श्रुतमाख्याति, स्नेहमाख्याति लोचनम्॥

गुणों का ज्ञान शिवपुराण

Ācāraḥ kulamākhyāti, vapurākhāti bhojanam।
Vacanaṁ śrutamākhyāti, snehamākhyāti locanam॥

Knowledge of qualities Śivapurāṇa

आचरण द्वारा किसी के कुल (खानदान) का पता चल जाता है, किसी के शरीर द्वारा उसके खानपान का ज्ञान हो जाता है, किसी की बातचीत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से उसकी विद्वत्ता का बोध हो जाता है और आँखों के द्वारा किसी के प्यार का संकेत मिल जाता है।

The character tells one's family, the body tells the food of a person, the talk of a person indicates one's knowledge and the eyes tell one's affection.

(190)

आचारः परमो धर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त्त एव च।
तस्मादस्मिन् सदा युक्तो नित्यं स्यादात्मवान् द्विजः॥

सदाचारी बनो मनु. / 1 / 108

Ācāraḥ paramo dharmaḥ śrutyuktaḥ smārtta eva ca।
Tasmādasmin sadā yukto nityaṁ syādātmavān dvijaḥ॥

Adopt good behaviour Manu. / 1 / 108

वेद तथा स्मृतियों द्वारा बताया गया आचार ही परमधर्म कहलाता है। इसलिए जो द्विज (ब्राह्मण आदि) आत्मा की उन्नति चाहता है, उसे सदा इसका आचरण करना चाहिए।

The character said by the Vedas and smṛties is supreme religion. So any dvija (Brahmaṇa etc.) who wants the progress of his soul, must act always according to the principles of this character.

(191)

आचाराद्विच्युतो विप्रो न वेदफलमश्नुते।
आचारेण तु संयुक्तः सम्पूर्णफलभाग्भवेत्॥

आचार का महत्त्व मनु. / 1 / 109

Ācārādvicyuto vipro na vedaphalamaśnute।
Ācāreṇa tu saṁyuktaḥ sampūrṇaphalabhāgbhavet॥

Manu. / 1 / 109

Importance of good behaviour

जो ब्राह्मण आचार का त्याग कर देता है, वह वेदों का फल प्राप्त नहीं कर सकता परन्तु जो अपना जीवन वेदानुसार सदाचारी बना लेता है, वही सम्पूर्ण फलों को प्राप्त करता है।

The Brāhmaṇa who becomes characterless cannot obtain the fruit of the Vedas, but who acts according to the Vaidika character, gets all its fruits.

(192)

आचाराल्लभते ह्यायुराचारादीप्सिताः प्रजाः।
आचाराद्धनमक्षय्यमाचारो हन्त्यलक्षणम्॥

आचार के लाभ मनु. / 4 / 156

Ācārāllabhate hyāyurācārādīpsitāḥ prajāḥ।
Ācārāddhanamakṣayyamācāro hantyalakṣaṇam॥

Manu. / 4 / 156

Advantages of good behaviour

सदाचार द्वारा आयु बढ़ती है, आचार द्वारा इच्छानुसार सन्तानें प्राप्त होती हैं, आचार द्वारा ही स्थायी धन प्राप्त होता है और आचार सभी त्रुटियों को भी नष्ट कर देता है।

Character increases the age. It gives desired offsprings and stable money. Besides, character removes all the defects.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(193)

आचारो भूतिजनन आचारः कीर्तिवर्धनः।
आचाराद्वर्धते ह्यायुराचारो हन्त्यलक्षणम्॥

आचार के लाभ अज्ञात

Ācāro bhūtijanana ācāraḥ kīrtivardhanaḥ।
Ācārādvardhate hyāyurācāro hantyalakṣaṇam॥

Unknown

Advantages of good behaviour

आचार सम्पत्ति देने वाला है, आचार यश को बढ़ाता है, आचार से आयु बढ़ती है और आचार सभी त्रुटियों को समाप्त कर देता है।

Character gives wealth, it increases fame and age and it also removes all kinds of defects.

(194)

आज्ञाभङ्गो नरेन्द्राणां वृत्तिच्छेदोऽनुजीविनाम्।
पृथक् शय्या च नारीणामशस्त्रो वध उच्यते॥

दुःखद बातें प्रबन्ध-चिन्तामणि/14

Ājñābhaṅgo narendrāṇāṁ vṛtticchedo'nujīvinām।
Pṛthak śayyā ca nārīṇāmaśastro vadha ucyate॥

Prabandha cintāmaṇi / 14

Torturing things

राजाओं की आज्ञा के उल्लंघन का अर्थ है नौकरों की आजीविका की समाप्ति और स्त्रियों का अलग बिछौना बिना हथियार के मृत्यु कही जाती है।

Disobeying the orders of a king causes the dismissing of the servants from their services. In the same way separate beds for the ladies are equal to a death without any weapon.

(195)

आढ्यानां मांसपरमं मध्यानां गोरसोत्तमम्।
तैलोत्तरं दरिद्राणां भोजनं भरतर्षभ॥

भोजनों के भेद महाभा./उद्योग/34/49

Āḍhyānāṁ māṁsaparamaṁ, madhyānāṁ gorasottamam।
Tailottaraṁ daridrāṇāṁ bhojanaṁ Bharatarṣabha॥

Mahābhā. / Udyoga / 34 / 49

Kinds of foods

हे भरतवंश में श्रेष्ठ धृतराष्ट्र, धन से पागल हुए लोगों का भोजन सामिष होता है, मध्य श्रेणी के लोग तो दूध-घी आदि का सेवन करते हैं, परन्तु दीन-हीन लोग तेलों द्वारा ही भोजन बनाते हैं।

O king Dhṛtarāṣṭra, those who are haughty due to their riches become nonvegitarians, while the persons of medium class enjoy milk and butter, but the poor people use oil in their food.

(196)

आढ्यो वापि दरिद्रो वा, दुःखितः सुखितोऽपि वा।
निर्दोषश्च सदोषश्च, वयस्यः परमा गतिः॥

मित्र का महत्त्व वा. रा./किष्किन्धा/8/8

Āḍyho vāpi daridro vā, duḥkhitaḥ sukhito'pi vā।
Nirdoṣaśca sadoṣaśca, vayasyaḥ paramā gatiḥ॥

Vā. Rā / Kiṣkindhā / 8 / 8

Importance of a friend

मित्र चाहे धनी हो या निर्धन, दुःखी हो या

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुखी, बिना त्रुटियों के हो या त्रुटियों वाला, फिर भी वही सहारा है।

If a friend is rich or poor, troubled or happy and without defects or having defects, is only supreme support.

(197)

आत्मज्ञानं समारम्भस्तितिक्षा धर्मनित्यता।
यमर्था नापकर्षन्ति स वै पण्डित उच्यते॥

बुद्धिमान् व्यक्ति महा./उद्योग/33/17

Ātmajñānaṁ samārambhastitikṣā dharmanityatā।
Yamarthā nāpakarṣanti sa vai paṇḍita ucyate॥

Mahā./Udyoga/33/17

A wise man

जो आत्मज्ञानी है, सोच समझकर किसी कार्य को शुरू करता है, सहनशील है, सदा धर्माचरण करता है और इन्द्रियों के विषय जिसे खींच नहीं सकते, वही बुद्धिमान् कहलाता है।

One who knows himself, begins a work after thinking, has endurance and practice of morality always and who is not attracted by sensual things is called a wiseman.

(198)

आत्मनाऽऽत्मानमन्विच्छेन्मनोबुद्धीन्द्रियैर्यतः ।
आत्मा ह्येवात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः॥

अपना साथी अपने आप महाभा./उद्योग/34/65

Ātmanā'tmānamanvicchenmano-buddhīndriyairyataḥ।
Ātmā hyevātmano bandhurātmaiva ripurātmanaḥ॥

Mahābhā./Udyoga/34/65

Own friend

मनुष्य को चाहिए कि वह यत्नपूर्वक मन तथा ज्ञानेन्द्रियों को संयम में रखकर स्वयं अपनी उन्नति करे, क्योंकि मानव स्वयं अपना बन्धु है और स्वयं ही अपना शत्रु है। अर्थात् मन और इन्द्रियों को वश में रखकर ही मनुष्य अपना कल्याण कर सकता है, अन्यथा उस का पतन हो जाता है।

A man should have control on his mind and senses to gain spiritual progress, as he himself is his only friend or only enemy. It means, when the senses and mind are under his control, his self is his own friend and otherwise his enemy.

(199)

आत्मनो मुखदोषेण, बध्यन्ते शुकसारिकाः।
बकास्तत्र न बध्यन्ते, मौनं सर्वार्थसाधनम्॥

मौन का महत्त्व पञ्चतन्त्र/लब्धप्रणाश/37

Atmano mukhadoṣeṇa, badhyante śukasārikāḥ।
Bakāstatra na badhyante, maunaṁ sarvārthasādhanam॥

Pañcata./Labdh./37

Advantage of silence

तोते और मैनाएँ बहुत बोलने के कारण पकड़कर पिंजरों में डाल दिए जाते हैं, परन्तु बगुलों को कोई भी बन्द नहीं करता, क्योंकि वे शोर नहीं मचाते। इससे सिद्ध होता है कि 'एक चुप, सौ सुख'।

Parrots and starlings are trapped due to their talkative quality, but herons are not trapped as they don't make noise too much. So silence is the means of all purposes.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(200)

आत्मनो बलमविज्ञाय धर्मार्थपरिवर्जितम्।
अलभ्यमिच्छन् नैष्कर्म्यान्मूढबुद्धिरिहोच्यते॥

मूढ़ का लक्षण महाभा/उद्योग/33/38

Ātmano balamavijñāya dharmārtha-parivarjitam।
Alabhyamicchan naiṣkarmyānmūḍhabuddhirihocyate॥

Mahābhā / Udyoga / 33 / 38

Definition of a fool

जो व्यक्ति धर्म और अर्थ के विरुद्ध, न पाने योग्य अर्थात् अपनी पहुँच से बाहर की वस्तु को अपनी शक्ति को समझे बिना और बिना परिश्रम के ही पाना चाहता है, उसे मूढ़बुद्धि कहा जाता है।

The person, who without knowing his own strength desires such a thing to which he is unable to get and leaves the path of morality and does no efforts for it, is called a fool.

(201)

आत्मन्यनात्मभावेन, व्यवहारविवर्जितम्।
यत्तदस्तेयमित्युक्तमात्मविद्भिर्महामते॥

अस्तेय जाबालोपनिषद्/1/12

Ātmanyanātmabhāvena, vyavahāravivarjitam।
Yattadasteyamityuktamātmavidbhirmahāmate॥

Absence of theft Jābālopaniṣad / 1 / 12

हे श्रेष्ठ बुद्धि वाले, अपनी वस्तुओं में भी त्याग के भाव से, जो स्वार्थ की वृत्ति को त्यागना है, उसे ही आत्मज्ञानी लोग अस्तेय कहते हैं।

O man of good wisdom, keeping off selfishness even in one's own things with relinquishment, is called 'Absence of theft' by the spiritual persons.

(202)

आत्माधीनशरीराणां स्वपतां निद्रया स्वया।
कदन्नमपि मर्त्यानाममृतत्वाय कल्पते॥

निद्रा का लाभ अज्ञात

Ātmādhīnaśarīrāṇāṁ svapatāṁ nidrayā svayā।
Kadannamapi martyānāmamṛtatvāya kalpate॥

Advantage of sleep Unknown

जो लोग स्वतन्त्रतापूर्वक अपनी नींद पूरी करते हैं, ऐसे लोग यदि ऐसा-वैसा भी अन्न खाते हैं, तो वह भी अमृत के समान शरीर का पोषक होता है।

The persons, who complete their sleep freely, if eat even bad food, that also is useful to them like the nectar, the food of gods.

(203)

आत्मा नदी संयमपुण्यतीर्था,
सत्योदका शीलतटा दयोर्मिः।
तत्राभिषेकं कुरु पाण्डुपुत्र!
न वारिणा शुध्यति चान्तरात्मा॥

आत्मा की शुद्धि वामनपुराण / 43 / 25

Ātmā nadī saṁyamapuṇyatīrthā,
Satyodakā śīlataṭā dayormiḥ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Tatrābhiṣekaṁ kuru Paṇḍuputra!
Na vāriṇā śudhyati cāntarātmā ॥

Vāmanpurā. / 43 / 25

Cleaning of conscious

हे पाण्डुपुत्र युधिष्ठिर! संयम रूपी पुण्यतीर्थ वाली, सत्य रूपी जल वाली, शील रूपी तटों वाली और दया की लहरों वाली आत्मारूपी जो नदी है, तुम उसमें स्नान किया करो। तीर्थों वाले पानी से अन्तरात्मा शुद्ध नहीं हुआ करती।

O son of Pandu, take bath in the river of soul, which has a sacred place of mental control, the water of the truth, shores of modesty and waves of kindness. The water which you get at the general sacred places cannot clean the internal concious.

(204)

आत्मानमेव प्रथमं द्वेष्यरूपेण यो जयेत्।
ततोऽमात्यानमित्रांश्च न मोघं विजिगीषते॥

संयम का महत्त्व महाभा. / उद्योग / 33 / 57

Ātmānameva prathamaṁ dveṣyarūpeṇa yo jayet।
Tato'mātyānamitrāṁśca na moghaṁ vijigīṣate॥

Mahābhā. / Udyoga / 33 / 57

Importance of self-control

जो राजा अपने को ही शत्रु मानकर आत्मसंयम द्वारा विजय प्राप्त कर लेता है, वही मन्त्रियों और शत्रुओं को जीतने की इच्छा को सफल कर सकता है।

The king who first controls himself as his enemy, his desire to win his ministers and enemies never fails.

(205)

आत्मैव ह्यात्मनः साक्षी, गतिरात्मा तथात्मनः।
मावमंस्थाः स्वमात्मानं नृणां साक्षिणमुत्तमम्॥

अपना साक्षी मनु. / 8 / 84

Ātmaiva hyātmanaḥ sākṣī, gatirātmā tathātmanaḥ।
Māvamaṁsthāḥ svamātmānaṁ nṛṇāṁ sākṣiṇamuttamam॥

Own witness Manu. / 8 / 84

आत्मा ही अपना गवाह होता है, आत्मा का सहारा स्वयं अपने आप है। इसलिए मानव के सबसे श्रेष्ठ साक्षी अपने आप का (आत्मा का) तिरस्कार मत करो, अर्थात् अपने को कभी हीन मत समझो।

The self is the witness of the self, and the self is only one's support. You should not feel inferiority for yourself, which is the best witness of the people.

(206)

आ त्वाहार्षमन्तरेधि ध्रुवस्तिष्ठाविचाचलिः।
विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु मा त्वद्राष्ट्रमधिभ्रशत्॥

राष्ट्राध्यक्ष का कर्त्तव्य ऋ. / 10 / 173 / 1

Ā tvāhārṣamantaredhi dhruvastiṣṭhāvicācalih।
Viśastvā sarvā vañchantu mā tvadrāṣṭramadhibhraśat॥

Duty of the Head of nation Ṛg. / 10 / 173 / 1

हे मानव! मैं, पुरोहित, तुम्हें राष्ट्र में शासक के रूप में प्रतिष्ठित करता हूँ। हमारे मध्य में स्थायी रूप से रहकर बिना विचलित हुए शासन-व्यवस्था को ठीक रखो। ऐसा प्रयत्न करना

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कि सारी प्रजा तुम्हें चाहे और तुम्हारा प्रशासन क्षीण न होने पाये।

O good person! I, the priest, is establishing you as a king. You should remain within us and rule correctly without any hesitation permanently. You should try to make yourself popular among the people and your administration never should deteriorate.

(207)

आदरात् संगृहीतेन शत्रुणा शत्रुमुद्धरेत्।
पादलग्नं करस्थेन कण्टकेनेव कण्टकम्॥

शत्रु से शत्रु का नाश सुभाषितावलि / 2763

Ādarāt saṁgṛhītena śatruṇā śtrumuddharet।
Pādalagnaṁ karasthena kaṇṭkeneva kaṇṭakam॥

Subhāsitavali / 2763

Kill enemy by enemy

आदर देकर वश में किए हुए शत्रु से शत्रु को नष्ट करना चाहिए। जैसे यदि पाँव में काँटा चुभ जाए, तो उसे हाथ में पकड़े काँटे से ही निकाला जाता है।

An enemy may be killed with the help of such enemy, who has been controlled by giving due respect, as a thorn lying in the foot can be removed with another thorn held in one's hand.

(208)

आदरेण यथा स्तौति, धनवन्तं धनेच्छया।
तथा चेद् विश्वकर्त्तारं, को न मुच्येत् बन्धनात्॥

मुक्ति का उपाय सुभाषितरत्नभा. / 375

Ādareṇa yathā stauti, dhanavantaṁ dhanecchayā।
Tathā ced viśvakarttāraṁ, ko na mucyet bandhanāt॥

Means of salvation Subhāṣitaratn. / 375

जिस प्रकार कोई व्यक्ति धन की कामना से किसी धनिक की प्रशंसा करता है, यदि उसी प्रकार संसार की रचना करने वाले परमात्मा की स्तुति करे, तो बन्धन से किसे छुटकारा नहीं मिल सकता? अर्थात् प्रभु की वैसी स्तुति से अवश्य ही मुक्ति मिल सकती है।

If a man praises God, the Creator of the world, in the same way as he praises a rich person to obtain money from him, he can get salvation certainly from the worldly ties.

(209)

आदित्यस्य गतागतैरहरहः संक्षीयते जीवितम्,
व्यापारैर्बहुकार्यभारगुरुभिः कालो न विज्ञायते।
दृष्ट्वा जन्म-जरा-विपत्तिमरणं त्रासश्च नोत्पद्यते,
पीत्वा मोहमयीं प्रमादमदिरामुन्मत्तभूतं जगत्॥

ज्ञानाभाव वैराग्यशतक. / 7

Ādityasya gatāgatairaharahaḥ saṁkṣīyate jīvitam,
Vyāpārairbahukāryabhāragurubhiḥ kālo na vijñāyate।
Dṛṣṭvā janmajarā-vipattimaraṇaṁ trāsaśca notpadyate,
Pītvā mohamayīṁ pramādamadirāmunmattabhūtaṁ jagat॥

Ignorance Vairāgyaśataka / 7

सूर्य के उदय होने और अस्त होने के साथ-साथ प्रतिदिन आयु घट रही है। अनेक प्रकार के कार्यों के भार वाले व्यवहार के कारण जाता हुआ समय प्रतीत नहीं होता। जन्म, बुढ़ापा, रोग, संकट

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और मृत्यु की घटनाएँ देखकर भी मन में डर उत्पन्न नहीं होता। ऐसा प्रतीत होता है कि मोहरूपी मादक शराब का पान करके यह सारा संसार पागल होकर सुध-बुध खो बैठा है।

The age is decreasing as the sun rises and sets day by day. As the man is too busy in the load of the works, he doesn't note the passing time. To see the incidents of births, old age, diseases, woes and deaths, the mind does not feel fear. It seems as if the whole world has been mad by drinking the wine of attachment.

(210)

आदिमध्यनिधनेषु सौहार्दं सज्जने भवति नेतरे जने।
छेद-ताडन-निघर्ष-तापनैर्नान्यभावमुपयाति काञ्चनम्॥

सज्जन की मित्रता सुभाषितावलि / 257

Ādimadhyanidhaneṣu sauhārdaṁ sajjane bhavati netare jane।
Cheda-tāḍana-nigharṣa-tāpanair nānyabhāvamupayāti kāñcanam॥

Subhāṣitāvali / 257

Friendship of the good

शुरू में, बीच में और अन्त समय में भी सज्जन ही मित्रता निभाते हैं, अन्य नहीं। जैसे सोना काटने, पीटने, घिसने और गर्म करने पर भी अपना स्वरूप नहीं बदलता।

The good persons continue their friendship in all the circumstances from beginning to the end, as only gold can tolerate the states of cutting, striking, rubbing, and heating and still remains in its original form.

(211)

आदौ तु मोक्षो ज्ञानेन, द्वितीयो रागसंक्षयात्।
कृच्छ्रत्रयात् तृतीयस्तु, व्याख्यातं मोक्षलक्षणम्॥

मोक्ष का स्वरूप अज्ञात

Ādau tu mokṣo jñānena, dvitīyo rāgasaṁkṣayāt।
Kṛcchra-trayāt tṛtīyastu, vyākyātaṁ mokṣalakṣaṇam॥

Form of salvation Unknown

प्रारम्भ में मोक्ष ज्ञान से होता है, फिर द्वितीय मोक्ष राग के क्षय से होता है, अन्त में तृतीय मोक्ष तीनों प्रकार के दुःखों से छूटने से होता है। यही मोक्ष का लक्षण कहा गया है।

At the beginning, liberation is obtained by knowledge, secondly it is gained by the removing off attachment and thirdly the last salvation is obtained after getting rid of the three kinds of pains. This is the real definition of 'Salvation'.

(212)

आदौ न वा प्रणयिनां प्रणयो विधेयो,
दत्तोऽथवा प्रतिदिनं परिपोषणीयः।
उत्क्षिप्य यत्क्षिपति तत्प्रकरोति लज्जां,
भूमौ स्थितस्य पतनाद्भयमेव नास्ति॥

स्थायी प्रेम पञ्चतन्त्र/ मित्रभेद/190

Ādau na vā praṇayināṁ praṇayo vidheyo,
Datto'thavā pratidinaṁ paripoṣaṇīyaḥ।
Utkṣipya yatkṣipati tatprakaroti lajjāṁ,
Bhūmau sthitasya patanādbhayameva nāsti॥

Pañcata. / Mitrabhe. / 190

Permanent love

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

या तो प्रेमियों के साथ आरम्भ में ही प्रेम नहीं दिखाना चाहिए, परन्तु यदि प्रेम दिखाया गया है तो उसे बढ़ाते रहना चाहिए। किसी को उठाकर नीचे पटकना लज्जा की बात है; क्योंकि भूमि पर जो स्थित है उसे तो गिरने का भय नहीं होता।

Either one should not show love to the loving persons, or if it is shown then that must be increased. To throw down after uplifting a person causes shame, as he, who is lying on the ground, has no fear of falling.

(213)

आदौ साम प्रयोक्तव्यं पुरुषेण विजानता।
सामसाध्यानि कार्याणि, विक्रियां यान्ति न क्वचित्॥

नीति-प्रयोग विधि पञ्चतन्त्र/ मित्रभेद/ 330

Ādau sāma prayoktavyaṁ puruṣeṇa vijānatā।
Sāma-sadhyāni kāryāṇi, vikriyāṁ yānti na kvacit॥

Pañcata. / Mitrabhe. / 330

Method to use policies

समझदार मनुष्य को साम की नीति (शान्ति) द्वारा ही आरम्भ में कार्य चलाना चाहिए, क्योंकि साम की नीति से जो कार्य सिद्ध किए जाते हैं, वे चिरस्थायी होते हैं; उनमें त्रुटि नहीं आती।

A wiseman should use the policy of conciliation at begining, because the poblems solved with this policy never deteriorate and remain permanent.

(214)

आधत्त पितरो गर्भं कुमारं पुष्करस्त्रजम्।
यथेह पुरुषोऽसत्॥

शिक्षा के लिए प्रवेश यजु. / 2/ 33

Ādhatta pitaro garbhaṁ kumāraṁ puśkarasrajam।
Yatheha puruṣo'sat॥

Admission for education Yaju. / 2 / 33

हे ज्ञानी लोगो! माला से सजे हुए इस कुमार को शिक्षा प्रदान करने के लिए अपनी शरण में ले लीजिए, ताकि यह उत्तम शिक्षा प्राप्त कर श्रेष्ठ पुरुष बन सके।

O learned and experienced people, adopt this garlanded child in your refuge to educate him, so that he gets such education with which he may become an ideal man.

(215)

आधि-व्याधिपरीताय, ह्यद्य श्वो वा विनाशिने।
को हि नाम शरीराय, धर्मापेतं समाचरेत्॥

अधर्म से बचो कामन्दकनीतिसार/ 3/ 9

Ādhi-vyādhiparītāya, hyadya śvo vā vināśine।
Ko hi nāma śarīrāya, dharmāpetaṁ samācaret॥

Avoid immorality Kāmandaka. / 3 / 9

चिन्ताओं और रोगों से घिरे हुए, आज अथवा कल नष्ट होने वाले इस शरीर के लिए भला कौन श्रेष्ठ पुरुष धर्मविरुद्ध व्यवहार करेगा? अर्थात् ऐसे शरीर के लिए धर्मविरोधी कार्य नहीं करने चाहिए।

Who is such a person, that practises

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

corrupted things for the body, which is full of anxieties and diseases, and which will die today or tomorrow? It means that the man should not adopt bad practices for this temporary body.

(216)

आनन्दबाष्परोमाञ्चौ यस्य स्वेच्छावशंवदौ।
किं तस्य साधनैरन्यैः किङ्कराः सर्वपार्थिवाः॥

संयम का महत्त्व वाल्मीकिरामा./6/111/66

Ānanda-baṣparomañcau yasya svecchāvaśaṁvadau |
Kiṁ tasya sādhanairanyaiḥ, kiṅkarāḥ sarvapārthivāḥ ||

Vā. Rā./6/111/6

Importance of self control

आनन्द को प्रकट करने वाले आँसू और रोमांच जिसकी इच्छानुसार पैदा हो जाते हैं, उसे दूसरों को प्रसन्न करने के लिए अन्य साधनों की आवश्यकता नहीं है। ऐसे व्यक्ति के तो सब राजा भी आज्ञाकारी बन सकते हैं।

The man who can show tears and horripilation independently when he desires, can make even the kings his servants. He requires no other means to please others.

(217)

आ देवानामुपवेतु शंसो विश्वेभिस्तुरैरवसे यजत्राः।
तेभिर्वयं सुषखायो भवेम तरन्तो विश्वा दुरिता स्याम॥

मित्रता की कामना ऋ./10/31/1

Ā devānāmupavetu śaṁso viśvebhisturairavase yajatrāḥ |
Tebhirvayaṁ suṣakhāyo bhavema taranto viśvā duritā syāma ||

Desire of friendship Ṛg./10/31/1

सम्पूर्ण उत्तम गति और क्रियाओं के साथ विद्वानों और सूर्य आदि जड़ देवताओं के उपकार करने की प्रशंसा हमें प्राप्त हो। अर्थात् हम उपकार में लगे रहें। इस प्रकार हम परस्पर एक-दूसरे की रक्षा करते हुए सम्पूर्ण बुराइयों और संकटों को पार करने वाले सच्चे मित्र बनें।

May we earn praise of scholars and natural gods by helping each other as soon as possible. In this way, we should protect each other, remove all difficulties and demerits and prove ourselves good friends of each other.

(218)

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु
विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः।
देवा नो यथा सदमिद्वृधे
असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥

श्रेष्ठ संगति की कामना ऋ./1/89/1

Ā no bhadrāḥ kratavo yantu
viśvato'dabdhāso aparītāsa udbhidaḥ |
Devā no yathā sadmidvṛdhe
asannaprāyuvo rakṣitāro dive dive ||

Desire of good company Ṛg./1/89/1

हमारे चारों ओर नष्ट न होने वाले और त्याग न करने योग्य कल्याणकारी तथा दुःखविदारक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुभ कर्म करने वाले लोग इकट्ठे होते रहें; जिससे दिव्यगुणों एवं सफल जीवन वाले ये श्रेष्ठजन हमारे सुख को बढ़ाने के लिए हमारे रक्षक बने रहें।

May such good persons come arround us, who always do good works for welfare of others and remove the troubles with their permanent and appropriate actions.

(219)

आ नो यज्ञं भारती तूयमेत्विडा मनुष्वदिह चेतयन्ती।
तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं स्योनं सरस्वती स्वपसः सदन्तु॥

तीन देवियों की कामना ऋ./10/110/8

Ā no yajñaṁ bhāratī tūyametviḍā manuṣvadiha cetayantī |
Tisro devīrbarhiredaṁ syonaṁ sarasvatī svapasaḥ sadantu ||

Ṛg./10/110/8

Desire of three goddesses

भारती (सूर्य की दीप्ति) शीघ्र ही हमारे यज्ञ में प्राप्त हो। मनुष्य की भाँति अन्न की उत्पादिका पृथ्वी हमें सावधान करती हुई इस यज्ञ में प्राप्त हो। वाग्देवी भी हमें प्राप्त हों। इस प्रकार उत्तम कर्मों वाली तीनों देवियाँ (भारती, इडा, सरस्वती) इस सुखमय यज्ञ को भूषित करें। तात्पर्य यह है कि सूर्य की दीप्ति, भूमि और वाणी द्वारा हम सम्पन्न हों और दूसरों का भी भला करें।

The light of the sun should come to our sacrifice. The earth, which produces edibles should come in our sacrifice like a man making us care-ful. The goddess of language should also come here. In this way all the three good working goddesses should adorn our auspicious sacrifice. It means, that we should get full use of all these goddesses. Bharatī, Iḍā and Sarasvati for our progress.

(220)

आपत्काले तु सम्प्राप्ते, यन्मित्रं मित्रमेव तत्।
वृद्धिकाले तु सम्प्राप्ते, दुर्जनोऽपि सुहृद्भवेत्॥

सच्चा मित्र पञ्चतन्त्र/मित्रभेद/110

Āpatkāle tu samprāpte, yanmitraṁ mitrameva tat |
Vṛddhikāle tu samprāpte, durjano'pi suhṛdbhavet ||

True friend Pancata./Mitrabhe./110

संकट के समय में जो मित्रता निभाता है, वही वास्तव में मित्र है। उन्नति के समय में तो बुरे व्यक्ति भी मित्र बन जाया करते हैं।

A friend in adversity is a friend indeed. Otherwise a bad man also becomes a friend in the time of prosperity.

(221)

आपदर्थे धनं रक्षेद्, दारान् रक्षेद्धनैरपि।
आत्मानं सततं रक्षेद्, दारैरपि धनैरपि॥

रक्षणीय पदार्थ पञ्चतन्त्र/मित्रभेद/308

Āpadarthe dhanaṁ rakṣed, dārān rakṣeddhanairapi |
Ātmānaṁ satataṁ rakṣed dārairapi dhanairapi ||

Pañcata/Mitrabhe./308

To be protected

संकट के लिए धन बचाए रखना चाहिए और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धन व्यय कर के भी स्त्रियों की रक्षा करनी चाहिए परन्तु धन और स्त्रियों द्वारा आत्मरक्षा करनी आवश्यक है।

A man should save money for adversity. Ladies should be saved with the money but one should save himself with money and ladies.

(222)

आपदामापतन्तीनां हितोऽप्यायाति हेतुताम्।
मातृजङ्घा हि वत्सस्य स्तम्भीभवति बन्धने॥

संकट के समय हितोपदेश/1/13

Āpadāmāpatantīnāṁ hito'pyāyāti hetutām।
Matṛjaṅghā hi vatsasya stambhībhavati bandhane॥

In adversity Hitopa./1/13

संकटों के आने पर हितकारी वस्तु भी संकट का कारण बन जाती है। (दूध दुहते समय) उसकी माता गौ की टाँग ही बछड़े के बाँधने का खम्भा बन जाती है।

When woes come, the favouring thing also becomes unfavourable, as (at the time of milking) the leg of mother-cow is used to tie the calf.

(223)

आपदां कथितः पन्था इन्द्रियाणामसंयमः।
तज्जयः सम्पदां मार्गो, येनेष्टं तेन गम्यताम्॥

इन्द्रिय संयम सूक्तिनिधि / पृ. 57

Āpadāṁ kathitaḥ panthā indriyāṇāmasaṁyamaḥ।
Tajjayaḥ sampadāṁ mārgo, yeneṣṭaṁ tena gamyatām॥

Controle on senses Sūktinidhi / P. 57

इन्द्रियों को नियंत्रण में न रखने से मनुष्य अनेक संकटों से घिर जाता है। इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने से मनुष्य का सब प्रकार से कल्याण होता है। यह सम्पदाओं का मार्ग है। अब आप जिस मार्ग से चलना चाहते हैं, उस पर चलें, यह आपकी इच्छा पर निर्भर करता है।

Lack of control on senses is said to be the path of miseries. If they are controlled, then this path is of good luck. One may select any one path out of these two which he likes.

(224)

आपदि येनापकृतं येन च हसितं विषमासु दशासु।
अपकृत्य तयोरुभयोः पुनरपि जातं नरं मन्ये॥

अपकारी के प्रति पञ्चतन्त्र/ मित्रभेद/ 280

Āpadi yenāpakṛtaṁ, yena ca hasitaṁ viṣamāsu daśāsu।
Apakṛtya tayorubhayoḥ, punarapi jātaṁ naraṁ manye॥

Pañcata / Mitrabhe. / 280

Against an enemy

जिस किसी ने संकट की स्थिति में अपकार किया हो और जिसने हँसी उड़ाई हो, इस प्रकार के दोनों व्यक्तियों से बदला लेने वाले मनुष्य को मैं पुनर्जन्म लेने वाला मानता हूँ।

I think that such a man gets rebirth who has done harms of those persons, one of which harmed him in difficulty and the other who laughed at him in bad circumstances.

(225)

आपद्युन्मार्गगमने कार्यकालात्ययेषु च।
कल्याणवचनं ब्रूयादपृष्टोऽपि हितो नरः॥

हितचिन्तक का कर्त्तव्य हितोपदेश/II/31

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Āpadyunmārgagamane kāryakālātyayeṣu ca।
Kalyāṇavacanaṁ brūyādapṛṣṭo'pi hito naraḥ॥

Duty of a well-wisher Hitopa. / II / 31

हितचिन्तक मनुष्य को चाहिए कि किसी के संकट के समय, गलत रास्ते पर चलते समय और कार्य का समय बीत जाने पर भी बिना पूछे ही कल्याणकारी वचन कहे।

A well-wisher should advise good things even without asking in times of adversity, in evil course and also at the end of the working time.

(226)

आपन्नाशाय विबुधैः कर्त्तव्याः सुहृदोऽमलाः।
न तरत्यापदं कश्चिद् योऽत्र मित्रविवर्जितः॥

मित्रों के लाभ पञ्चतन्त्र/मित्रसम्प्राप्ति/169

Āpannāśāya vibudhaiḥ karttavyāḥ suhṛdo'malāḥ।
Na taratyāpadaṁ kaścid yo'tra mitravivarjitaḥ॥

Pañcata. / Mitrasam. / 169

Advantage of friends

बुद्धिमानों को चाहिए कि वे संकटों को दूर करने के लिए स्वच्छ हृदय वाले मित्र बनाएँ, क्योंकि इस संसार में कोई भी व्यक्ति मित्रों के बिना संकटों से छुटकारा नहीं पा सकता।

Wise men should make clean-minded friends to remove difficulties, as nobody can cross the woes without his friends.

(227)

आपो अस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु।
विश्वं हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरापूत एमि॥

शुद्धि का साधन-जल ऋ./10/17/10

Āpo asmānmātaraḥ śundhayantu ghṛtena no ghṛtapvaḥ punantu।
Viśvaṁ hi ripraṁ pravahanti devīrudidābhyaḥ śucirāpūta emi॥

Ṛg. / 10 / 17 / 10

Cleaning source — water

माता के समान आप्त विद्वान् जैसे हमें पवित्र करते हैं, वैसे ही जल भी हमें पवित्र करें। आप्त जन हमारे आन्तरिक तथा जल हमारे शारीरिक दोषों को दूर करें। आप्त लोगों तथा जल से सङ्गत होकर मैं निष्पाप और शारीरिक मलिनता से रहित होकर पवित्र हो रहा हूँ।

As the ideal men make us sinless like a mother, in the same way water should clean us. The ideal persons should clean our souls, while water our bodies. I have been cleaning myself being sinless in the company of the ideal persons, while removing my physical pollution with water.

(228)

आयत्यां प्रतिकारज्ञस्तदात्वे दृढनिश्चयः।
अतीते कार्यशेषज्ञो नरोऽर्थैर्न प्रहीयते॥

प्रशंसनीय व्यक्ति महाभा./उद्योग/39/54

Āyatyāṁ pratikārajñastadātve dṛḍhaniścayaḥ।
Atīte kāryaśeṣajño naro'rthairna prahīyate॥

Mahābhā. / Udyoga / 39 / 54

Admirable person

जो मनुष्य भविष्य में आने वाली समस्याओं का पहले से ही उपाय सोच लेता है और उस उपाय को दृढ निश्चय के साथ करता है तथा बीते हुए समय के शेष कार्यों पर भी दृष्टि रखता है, वह कभी भी धन-सम्पत्ति से क्षीण नहीं होता।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

The person who already considers the problems coming in future and their solutions, and carries out the solutions with strong determination, and thinks over the works remaining of past, never is deprived of riches.

(229)

आयुः कल्लोललोलं, कतिपयदिवस-स्थायिनी यौवनश्रीः,
अर्थाः सङ्कल्पकल्पाः घनसमयतडिद्विभ्रमा भोगपूगाः ।
कण्ठाश्लेषोपगूढं तदपि च न चिरं, यत्प्रियाभिः प्रणीतम्,
ब्रह्मण्यासक्तचित्ता भवत भवभयाम्भोधिपारं तरीतुम् ॥

प्रभुभक्ति का महत्त्व वैराग्यशतक./74

Āyuḥ kallolalolaṁ, katipayadivasa-sthāyinī yauvanaśrīḥ,
Arthāḥ saṅkalpakalpāḥ ghanasamayataḍidvibhramā bhogapūgāḥ।
Kaṇṭhāśleṣopagūḍhaṁ tadapi ca na ciraṁ, yatpriyābhiḥ praṇītam,
Brahmaṇyāsaktacittā bhavata bhavabhayāmbhodhipāraṁ tarītum॥

Vairā. śata. / 74

Advantage of God's devotion

उम्र लहरों के समान चञ्चल है, जवानी की शोभा भी कुछ दिनों तक रहने वाली है, धन संकल्पों के साथ ही उड़ जाने वाले हैं, भोगों का आनन्द वर्षा ऋतु की बिजली के समान अस्थिर है और प्रिय स्त्रियों से आलिंगन का आनन्द भी अस्थायी है। अतः हे मनुष्यो! जन्म-मरण के भय रूपी सागर को पार करने के लिए परमेश्वर की भक्ति में अपना मन लगाओ।

This age is unsteady like waves, the beauty of youth remains for a little time, riches fly away like determination, the enjoyment of luxury is as agile as the lightning of rainy season and the enjoyment received from the embrace of the necks of ladies is also temporary. Therefore, O men, to cross the ocean of the fear of birth and death, use your time in the devotion of God.

(230)

आयुर्वर्षशतं नृणां परिमितं रात्रौ तदर्धं गतम्,
तस्यार्द्धस्य परस्य चार्द्धमपरं बालत्ववृद्धत्वयोः।
शेषं व्याधिवियोगदुःखसहितं सेवादिभिर्नीयते,
जीवे वारितरङ्गचञ्चलतरे सौख्यं कुतः प्राणिनाम्॥

सुख का अभाव वैराग्यशतक/94

Āyurvarṣaśataṁ nṛnāṁ parimitaṁ ratrau tadardhaṁ gatam,
Tasyārddhasya parasya cārddhamaparaṁ bālatvavṛddhatvayoḥ ।
Śeṣaṁ vyādhi-viyoga-duḥkhasahitaṁ sevādibhirnīyate,
Jīve vāritaraṅgacañcalatare saukhyaṁ kutaḥ prāṇinām ॥

Want of happiness Varā. śata. / 94

मनुष्यों की आयु लगभग सौ वर्ष मानी गई है, जिस में से आधी रातों में बीत जाती है, शेष एक चौथाई बचपन और बुढ़ापे में चली जाती है। बाकी एक चौथाई आयु का समय रोग, शोक, दुःख और सेवा के कार्यों में निकल जाता है। ऐसी दशा में जल की लहर के समान चंचल इस जीवन में प्राणियों को सुख कहाँ है? अर्थात् सारा जीवन कष्टमय ही है।

Human age is considered to be about of hundred years. Out of which half goes away in nights, one fourth of it is spent in childhood and old age and the last one fourth is used

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

in diseases, sorrows, pains and in the service of others. In such condition, there is no chance of peace and happiness during the whole life. It means the whole life is full of woes.

(231)

आयुर्वित्तं गृहच्छिद्रं मन्त्रमौषधसमागमाः।
दानमानापमानाश्च सदा गोप्या मनीषिभिः॥

गोपनीय वस्तुएँ नीतिशास्त्र. / 14

Āyurvittaṁ gṛhacchidraṁ mantramauṣadhasamāgamāḥ।
Dānamānāpamānāśca sadā gopyā manīṣibhiḥ॥

To be hidden Nītiśāstra. / 14

विचारशील व्यक्तियों को अपनी आयु, धन, घर की त्रुटि, गुप्त सलाह, दवाइयों का मिश्रण, दान, मान और अपमान की बात किसी को नहीं बतानी चाहिए।

Wisemen should keep the following things always hidden :- Age, money, discrepency of the house, a secret, mixture of medicines, charity, honour and insult.

(232)

आयुषः क्षणमेकोऽपि न लभ्यः स्वर्णकोटिभिः।
स वृथा नीयते येन, तस्मै नृपशवे नमः॥

समय अमूल्य है सुभाषितावलि / 3307

Āyuṣaḥ kṣaṇameko'pi, na labhyaḥ svarṇakoṭibhiḥ।
Sa vṛthā nīyate yena, tasmai nṛpaśave namaḥ॥

Time is priceles Subhāsitāvali / 3307

आयु का एक क्षण करोड़ों स्वर्णमुद्राओं से भी प्राप्त नहीं हो सकता। ऐसा अमूल्य समय जो व्यर्थ नष्ट करता है, ऐसे मनुष्य रूपी पशु को धिक्कार है।

A moment of age cannot be purchased with millions of golden coins. The person who spends uselessly such precious time is like an animal. Fie for him!

(233)

आयुष्प्रदान्यामयनाशनानि, बलाग्निवर्णस्वरवर्धकानि।
मेध्यानि चैतानि रसायनानि, मेध्या विशेषेण च शंखपुष्पी॥

रसायनों के लाभ चरक/ चिकित्सा-स्थान/1(3)/3/1

Āyuṣpradānyāmayanāśanāni, balāgnivarṇasvaravardhakāni।
Medhāni caitāni rasāyanāni, medhyā viśeṣeṇa ca śaṁkhapuṣpī॥

Caraka / ci / 1 (3) / 3 / 1

Advantage of alchemies

ये रसायन आयु बढ़ाने वाले, रोगों को नष्ट करने वाले, शक्ति, जठराग्नि, सौन्दर्य और आवाज को बढ़ाने वाले हैं। ये सभी रसायन बुद्धि भी बढ़ाते हैं और शंखपुष्पी तो विशेष रूप से बुद्धिवर्धक है।

These alchemies increase age, remove diseases, add goodness into power, digestive system, beauty and voice. All these alchemies specially 'Saṅkhapuṣpi' increases intellect.

(234)

आरभन्तेऽल्पमेवाज्ञाः कामं व्यग्राः भवन्ति च।
महारम्भाः कृतधियस्तिष्ठन्ति च निराकुलाः॥

मूर्ख और बुद्धिमान् हितोपदेश/ विग्रह/122

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Ārabhante'lpamevājñāḥ, kāmaṁ vyagrāḥ bhavanti ca |
Mahārambhāḥ kṛtadhiyastiṣṭhanti ca nirākulāḥ ||

Hitopa. / Vigraha / 122

The wise and the foolis

मूर्ख लोग छोटा सा ही काम आरम्भ कर के व्याकुल हो जाते हैं, परन्तु समझदार लोग बड़े-बड़े काम आरम्भ कर के भी शान्त बने रहते हैं, व्याकुल नहीं होते।

Fools begin a small work and become perplexed, but the wisemen begin big works, still they remain undisturbed.

(235)

आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण,
लध्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।
दिनस्य पूर्वार्द्धपरार्द्धभिन्ना,
छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्॥

मित्रता के भेद पञ्चतन्त्र/मित्रसम्प्राप्ति/40

Ārambhagurvī kṣayiṇī krameṇa,
Laghvī purā vṛddhimatī ca paścāt |
Dinasya pūrvārddhaparārddhabhinnā,
Chāyeva maitrī khala-sajjanānām ||

Pañcata. / Mitrasam. / 40

Kinds of friendship

जैसे छाया दिन होते ही लम्बी होती है और फिर घटती चली जाती है, इसी प्रकार दुष्टों की मित्रता पहले गहरी होती है और फिर घटती चली जाती है। सज्जनों की मित्रता इससे विपरीत दोपहर की छाया के समान निरन्तर बढ़ने वाली होती है। जैसे दोपहर के समय छाया पहले छोटी होती है और फिर बढ़ती चली जाती है, इसी प्रकार सज्जनों की मित्रता पहले हल्की और फिर घनिष्ठ होती चली जाती है।

As at the beginning of the day the shadow is large but decreases slowly, so is the friendship of bad persons, who show too much love at the beginning but it decreases day by day. But the friendship of good persons is like the shadow which begins from mid of the day being very little and increases slowly. Good persons begin their friendship from a nominal love and it increases day by day.

(236)

आरोग्यं विद्वत्ता सज्जनमैत्री महाकुले जन्म।
स्वाधीनता च पुंसां महदैश्वर्यं विनाप्यर्थैः॥

महान् ऐश्वर्य दामोदरगुप्त सुभाषितवलि / 234

Ārogyaṁ vidvattā sajjanamaitrī mahākule janma |
Svādhīnatā ca puṁsāṁ mahadaiśvaryaṁ vināpyarthaiḥ ||

Dāmo. Subhāṣṭāvali / 234

Great prosperities

धन के न होने पर भी ये वस्तुएँ मनुष्यों की बहुत बड़ी सम्पत्तियाँ हैं :- (1) स्वास्थ्य, (2) विद्वत्ता, (3) सज्जनों से मित्रता, (4) ऊँचे कुल में जन्म और (5) स्वाधीनता।

Even in absence of money the following things are one's great wealth :- (1) Health, (2) knowledge, (3) friendship

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

with good persons, (4) birth in a high family and (5) independence.

(237)

आरोग्यमानृण्यमविप्रवासः,
सद्भिर्मनुष्यैः सह सम्प्रयोगः।
स्वप्रत्यया वृत्तिरभीतवासः,
षड्जीवलोकस्य सुखानि राजन्॥

संसार के 6 सुख महाभारत/उद्योग/33/89

Ārogyamānṛṇyamavipravāsaḥ,
Ṣaḍbhirmanuṣyaiḥ saha samprayogaḥ।
Svapratyayā vṛttirabhītavāsaḥ,
Ṣaḍjivalokasya sukhāni rājan॥

Mahābhā. / Udyoga / 33 / 89

Six sources of happiness

हे राजन् धृतराष्ट्र! संसार के छह सुख हैं :- (1) शरीर का स्वास्थ्य, (2) ऋणी न होना, (3) विदेश न जाना, (4) श्रेष्ठ मनुष्यों की संगति, (5) अपने अनुकूल व्यवसाय (रोजगार) और (6) निडरतापूर्वक निवास।

O king (Dhṛtarāṣṭra)! There are six sources of happiness in this world:- (1) Healthy body, (2) absence of debt, (3) not going into foreign, (4) company of good persons, (5) a due occupation and (6) living without fear.

(238)

आरोप्यते शिला शैले यत्नेन महता यथा।
निपात्यते क्षणेनाधस्तथात्मा गुणदोषयोः॥

गुण-दोषों का प्रभाव हितोपदेश/II/16

Āropyate śilā śaile yatnena mahatā yathā।
Nipātyate kṣaṇenādhastathātmā guṇadoṣayoḥ॥

Hitopa. / II / 16

Effect of merits and demerits

जैसे पहाड़ के ऊपर चट्टान बड़ी कठिनता से चढ़ाई जाती है परन्तु क्षणभर में गिराई जा सकती है, उसी प्रकार आत्मा द्वारा गुण तो कठिनाई से ग्रहण किये जाते हैं, परन्तु दोषों में पतन शीघ्र हो जाता है।

As a rock is brought upon the peak of a hill with great difficulty, but is thrown easily in a second, so is the case with our soul. The soul earns merits with great difficulty, but this may fall into demerits easily.

(239)

आर्यकर्मणि रज्यन्ते भूतिकर्माणि कुर्वते।
हितं च नाभ्यसूयन्ति पण्डिता भरतर्षभ॥

बुद्धिमानों की विशेषताएँ महाभा./उद्योग/33/25

Āryakarmaṇi rajyante bhutikarmāṇi kurvate।
Hitaṁ ca nābhyasūyanti paṇḍitā Bharatarṣabha॥

Mahābhā. / Udyoga / 33 / 25

Merits of the wise

हे धृतराष्ट्र! समझदार लोग श्रेष्ठ कर्मों में ही लगे रहते हैं और कल्याण के ही सब कार्य करते हैं। किसी का भला देखकर ईर्ष्या भी नहीं करते।

Dhṛtarāṣṭra! The wise men remain always busy in noble works and act all works of welfare of others also. They never envy to see the welfare of others.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(240)

आर्षं धर्मोपदेशं च, वेदशास्त्राविरोधिना।
यस्तर्केणानुसन्धत्ते, स धर्मं वेद नेतरः॥

धर्म का ज्ञाता मनु./12/106

Arṣaṁ dharmopadeśaṁ ca, Vedaśāstrāvirodhinā |
Yastarkeṇānusandhatte, sa dharmaṁ veda netaraḥ ||

Manu. / 12 / 106

Acquainted with Dharma

जो मनुष्य ऋषियों से कहे धर्मोपदेश अर्थात् धर्म-शास्त्र का वेदशास्त्र के अनुकूल तर्क से अनुसन्धान करता है, वही धर्म के तत्त्व को समझ पाता है, अन्य नहीं।

The man who discusses the lessons given by the sages logically according to the Vedas, only he knows the real sense of religion.

(241)

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुर्यं कृत्वा नावसीदति॥

आलस्य और उद्यम नीतिशतक/86

Ālasyaṁ hi manuṣyāṇāṁ śarīrastho mahān ripuḥ |
Nāstyudyamasamo bandhuryaṁ kṛtvā nāvasīdati ||

Laziness and efforts Nītiśataka / 86

मनुष्यों के शरीर में रहने वाला आलस्य उनका बड़ा शत्रु है। परिश्रम के समान उनका कोई साथी नहीं है, जिसे करके वे कष्टों से बच जाते हैं।

Laziness is a bad enemy of the human beings which resides in their bodies. But hardwork is their such good friend which can remove all difficulties.

(242)

आविर्भूतानुरागाः क्षणमुदयगिरेरुज्जिहानस्य भानोः,
पत्रच्छायैः पुरस्तादुपवनतरवो दूरमाश्वेव गत्वा।
एते तस्मिन्निवृत्ताः पुनरितरककुप्-प्रान्त-पर्यस्तबिम्बे,
प्रायो भृत्यास्त्यजन्ति प्रचलितविभवं स्वामिनं सेवमानाः॥

धनाभाव से हानि मुद्राराक्षस./4/21

Āvirbhūtānurāgāḥ kṣaṇamudayagirerujjihānasya bhānoḥ,
Patracchāyaiḥ purastādupavanataravo dūramāśveva gatvā |
Ate tasminnivṛttāḥ punaritarakakup prāntaparyastabimbe,
Prāyo bhṛtyāstyajanti pracalitavibhavaṁ svāminaṁ sevamānāḥ ||

Loss due to poverty Mudrā Rā. / 4 / 21

सूर्योदय होते ही बगीचे के पेड़, अपना प्रेम प्रकट-सा करते हुए पत्तों द्वारा छाया करते हुए उस छाया को दूर तक ले जाते हैं। परन्तु ज्यों ही सूर्य अस्ताचल की ओर बढ़ता है, त्यों ही ये पेड़ अपनी छाया पीछे की ओर मोड़ लेते हैं और सूर्य का सम्मान करना छोड़ देते हैं। इससे स्पष्ट हो जाता है कि जिसका धन नष्ट हो जाता है, उसके नौकर-चाकर भी उसका त्याग कर देते हैं।

As the sun rises, the garden trees stretch their shadow with the help of their leaves in front of the sun as they are welcoming it and carry the shadow on. But when the sun declines, the trees remove their shadow to the back side and do not respect the sun. So it can be said that the servants

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

generally reject such a master who becomes bankrupt.

(243)

आवेपते भ्रमति रोदिति मोहमेति,
कान्तं विलोकयति कूजति दीनदीनम्।
अस्ते हि भानुमति गच्छति चक्रवाकी,
हा! जीवितेऽपि मरणं प्रिय-विप्रयोगः॥

प्रिय-वियोग सुभाषितावलि / 1914

Āvepate bhramati roditi mohameti,
Kāntaṁ vilokayati kūjati dīnadīnam।
Aste hi bhānumati gacchati cakravāki,
Hā! jīvite'pi maraṇaṁ priya-viprayogaḥ॥

Separation of lover Subhāśitāvali / 1914

सूर्य के अस्त होते ही चकवी चकवे से पृथक् होकर बुरी तरह काँपती है, चक्कर लगाती है, रोती है, पागल हो जाती है, पति को ढूँढती है और बहुत दुखी होकर चिल्लाती है। अफसोस! जीते हुए भी प्रिय का वियोग मृत्यु के समान दुःखदायी होता है।

As the sun sets, the female ruddy goose departs from her husband and begins to tremble, to go hither and thither, to weep and to become senseless. Also she looks for her beloved and cries pathetically. Oh! The separation of the beloved is truly a kind of death even in life-time.

(244)

आशा नाम नदी मनोरथजला तृष्णातरङ्गाकुला,
रागग्राहवती वितर्क-विहगा धैर्यद्रुमध्वंसिनी।
मोहावर्तसुदुस्तराऽतिगहना प्रोत्तुङ्गचिन्तातटी,
तस्याः पारगता विशुद्धमनसो नन्दन्ति योगीश्वराः॥

योग का आनन्द वैराग्यशतक. / 40

Āśā nāma nadī manorathajalā tṛṣṇātaraṅgākulā,
Rāgagrāhavati vitarkavihagā dhairyadrumadhvaṁsinī।
Mohāvartasudustarā'tigahanā prottunga-cintātaṭī,
Tasyāḥ pāragatā viśuddhamanaso nandanti yogīśvarāḥ॥

Bliss from Yoga Vairāgyasa. / 40

मनोरथ रूपी जल वाली, तृष्णा की तरंगों से परिपूर्ण, रागरूपी मगरमच्छों से युक्त, संशय रूपी पक्षियों वाली, धैर्यरूपी पेड़ को नष्ट करने वाली, मोह रूपी भंवरों के कारण पार करने में कठिन, बहुत गहरी और सीधे खड़े ऊँचे किनारों वाली आशारूपी नदी बह रही है। जो स्वच्छ मन वाले योगिराज इस नदी के पार चले जाते हैं, वे ही सच्चे आनन्द को भोगते हैं।

There is a river of hopes, in which desires are its water, greediness is its waves, worldly loves are its crocodiles living in it, and birds of doubts live near it. It is a destructor of the trees of patience. Attachments are its whirlpools due to which it is very difficult to cross. It is very deep and has its shores high and erect. The great yogīs who have pure minds cross it and enjoy real bliss.

(245)

आशा हि परमं दुःखं, नैराश्यं परमं सुखम्।
यथा सञ्छिद्य कान्ताशां सुखं सुष्वाप पिङ्गला॥

दुःख का कारण सांख्य/विज्ञानभिक्षु-भाष्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Āśā hi paramaṁ duḥkhaṁ, nairāśyaṁ paramaṁ sukham ।
Yathā sañchidya kāntāśāṁ sukhaṁ suṣvāpa Piṅgalā ॥

Saṅkhya / Vijñānabhiksu-bhaṣya

Source of woes

पति की कामना करने वाली पिंगला नामक नारी ने जब पति की कामना त्याग दी तो वह शान्त होकर आनन्द की नींद लेने लगी। इसलिए कामना ही दुःख को पैदा करती है और निष्कामभाव परम सुख को देने वाला है।

Piṅgalā, a lady desired a husband for her, so she remained perplexed, but when she left this desire, she felt quite peace and enjoyed happiness. So, it is said that desires generate grievances, while keeping off them is the source of happiness.

(246)

आश्रमांस्तुलया सर्वान् धृतानाहुर्मनीषिणः।
एकतश्च त्रयो राजन्! गृहस्थाश्रम एकतः॥

गृहस्थाश्रम का महत्त्व महाभारत/शान्ति/121/12

Aśramāṁstulayā sarvān dhṛtānāhurmanīṣiṇaḥ ।
Ekataśca trayo rājan! Gṛhasthāśrama ekataḥ ॥

Mahābhā / Śānti / 121 / 12

Greatness of family life

हे राजा युधिष्ठिर! विचारशील लोग कहते हैं कि जब सब आश्रमों को तराजू पर रखकर तोला गया, तो तीन आश्रम एक पलड़े में और दूसरे पलड़े में केवल गृहस्थाश्रम बराबर ही सिद्ध हुए। इससे सिद्ध होता है कि गृहस्थाश्रम ही सबसे बड़ा है।

O king Yudhiṣṭhira, it is said by the thoughful persons that all the 'Āśramas' were put on balances. On one pan, three 'Āśramas' and on the other pan only 'gṛhasthāśram' to equalize the weight. It means that gṛhasthāśrama is the greatest of all.

(247)

आसनाच्छयनाच्चैव संजल्पात् सहभोजनात्।
पुंसां संक्रमते पापं, घटाद् घटमिवोदकम्॥

पाप के कारण चाणक्यराजनीति

Āsanācchayanāccaiva, saṁjalpāt sahabhojanāt ।
Puṁsāṁ saṁkramate pāpaṁ, ghaṭād ghaṭamivodakam ॥

Sources of sins Cānakyarājanīti.

साथ बैठने, साथ सोने, साथ बातचीत करने और साथ ही भोजन करने से एक-दूसरे की बुराइयाँ एक-दूसरे को प्राप्त हो जाती हैं; जैसे एक घड़े से दूसरे घड़े में जल उँड़ेला जाता है।

Due to sitting together, sleeping on one bed, talking together and eating together sins transit to each other as from one pitcher water is poured into the other one.

(248)

आस्तां तावदिदं प्रसूतिसमये दुर्वारशूलव्यथा,
नैरुच्ये तनुशोषणं मलमयी शय्या च सांवत्सरी।
एकस्यापि न कष्टभार-भरण-क्लेशस्य यस्याः क्षमो
दातुं निष्कृतिमुन्नतोऽपि तनयस्तस्यै जनन्यै नमः॥

माता के उपकार अज्ञात

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Āstāṁ tāvadidaṁ prasūtisamaye durvāraśūlavyathā,
Nairucye tanuśoṣaṇaṁ malamayī śayyā ca sāṁvatsarī ।
Ekasyāpi na kaṣṭabhāra-bharaṇa-kleśasya yasyāḥ kṣhamo,
Dātuṁ niṣkṛtimunnato'pi tanayastasyai jananyai namaḥ ॥

Favours of the mother Unknown

बालक को उत्पन्न करने के समय माता को जो असहनीय पीड़ा हुई, उसकी बात तो एक तरफ रही, गर्भावस्था में जो शरीर का शोषण हुआ और बच्चे के जन्म के बाद वर्षभर जो मलमूत्र-पूर्ण बिछौने पर माँ को सोना पड़ा, इस प्रकार के कष्टों से परिपूर्ण जिस माता के एक भी क्लेश का बदला जो पुत्र बड़ा होकर भी नहीं चुका सकता, उस माँ को नमस्कार हो।

Leave the deadly pains of the mother born in the time of delivery, but weakening of her body during the time of pregnancy and after the birth of the child she had to sleep on bed full of urine and excretion bearing many other troubles. Her favours cannot be repaid by even a grown up son. So we salute such a mother.

(249)

आहारनिद्राः भयमैथुनानि सामान्यमेतद् पशुभिर्नराणाम्।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषो, धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः॥

मानव और पशु हितोपदेश/कथामुख / 25

Āhāranidrā-bhaya-maithunāni,
Sāmānyametad paśubhirnarāṇāml
Dharmo hi teṣāmadhiko viśeṣo,
Dharmeṇa hīnāḥ paśubhiḥ samānāḥ ॥

Hitopa. / Kathā. / 25

A man and an animal

भोजन, नींद, डर और सन्तानोत्पत्ति का मनुष्यों का कार्य पशुओं के समान ही है। यदि उनमें (मनुष्यों में) कोई विशेषता है तो वह धर्म है। इसलिए धर्म से रहित मनुष्य पशुओं के समान ही है।

Men and animals are equal in eating, sleeping, fearfeeling and producing their young ones, but men are superior to the animals in morality. So a man without morality is like an animal.

(250)

आहारस्य परं धाम, शुक्रं तद्रक्ष्यमात्मनः।
क्षयो ह्यस्य बहून् रोगान्, मरणं वा नियच्छति॥

वीर्यरक्षा चरक/निदानस्थान/6/10

Āhārasya paraṁ dhāma, śukraṁ tadrakṣyamātmanaḥ ।
Kṣayo hyasya bahūn rogān, maraṇaṁ vā niyacchati ॥

Caraka / Nidāna. / 6 / 10

Protection of sperm

भोजन का सार वीर्य है। इसलिए मनुष्य को अपने वीर्य की रक्षा करनी चाहिए। वीर्य का नाश अनेक रोगों को जन्म देता है, अथवा मृत्यु का भी कारण बन जाता है।

Sperm is the essence of the food. One should save it. Diminution of it causes many diseases and sometime it invites death also.

(251)

आ हैव स नखाग्रेभ्यः परमं तप्यते तपः।
यः स्रग्व्यपि द्विजोऽधीते, स्वाध्यायं शक्तितोऽन्वहम्॥

वेद-स्वाध्याय — एक तप मनु./2/16

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Ā haiva sa nakhāgrebhyaḥ paramaṁ tapyate tapaḥ |
Yaḥ sragvyapi dvijo'dhīte, svādhyāyaṁ śaktito'nvaham ||

Vedā's study — a penance Manu. / 2 / 16

जो द्विज (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) माला पहनकर भी प्रतिदिन यथाशक्ति स्वाध्याय करता है, वह नाखूनों के सिरों तक परम तप करता है, इसमें कोई सन्देह नहीं। अर्थात् स्वाध्याय एक महान् तप है।

A dvija (anyone of three castes), who wearing a garland studies Vedas daily as much as he can, is performing penance upto the tips of his nails. It means that study of scriptures is a great penance.

इ = ।

(252)

इक्षोरग्रात् क्रमशः पर्वणि पर्वणि यथा रसविशेषः।
तद्वत्सज्जनमैत्री, विपरीतानां तु विपरीता॥

मित्रता के भेद पञ्च./मित्रसम्प्रा.

Ikṣoragrāt kramaśaḥ parvaṇi parvaṇi yathā rasaviśeṣaḥ|
Tadvatsajjanamaitrī, viparītānāṁ tu viparītā||

Kinds of friendship Pañcata. / Mitrasam.

गन्ने की आगे की पौरी से लेकर उत्तरोत्तर नीचे की पोरियों में जैसे मिठास अधिक से अधिक होती जाती है, उसी प्रकार सज्जनों की मित्रता उत्तरोत्तर प्रेम से भरपूर होती जाती है परन्तु दुर्जनों की मित्रता क्रमशः कम होती जाती है।

As every part of a knot of the sugarcane becomes deep to deeper from the top to the downwards one after the other, the same case is in the friendship of good persons, which becomes sweet to sweeter day by day, On the other hand, the friendship of the bad persons decreases day by day.

(253)

इच्छति शती सहस्रं, सहस्री लक्षमीहते।
लक्षाधिपस्तथा राज्यम्, राज्यस्थः स्वर्गमीहते॥

कामनाओं की लड़ी पञ्च./अपरीक्षितकारक/75

Icchati śatī sahasraṁ, sahasrī lakṣamīhate|
Lakṣādhipastathā rājyam, rājyasthaḥ svargamīhate||

A series of desires Pañcata. / Aparī. / 75

सौ वाला हजार चाहता है और हजारों वाला लाख चाहता है। लाखों वाला राज्य चाहता है और राज्य वाला स्वर्ग की कामना करता है। भाव यह है कि तृष्णा का कहीं अन्त नहीं है।

A man having hundreds desires thousands and the man having thousands wishes lacs. The possesser of lacs demands a kingdom and the king desires the heaven. It means that there is no end of greediness.

(254)

इच्छन्ति त्वा सोम्यासः सखायः
सुन्वन्ति सोमं दधति प्रयांसि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तितिक्षन्ते अभिशस्तिं जनानामिन्द्र त्वदा कश्चन हि प्रकेतः ॥

प्रभु के नेतृत्व की कामना यजु./34/18

Icchanti tvā somyāsaḥ sakhāyaḥ |
Sunvanti somaṁ dadhati prayāṁsi |
Titikṣante abhiśastim janānāmindra tvadā kaścana hi praketaḥ ||

Desire of God's guidance Yaju./34/18

हे परमैश्वर्य के दाता प्रभो! परस्पर स्नेह-रस के वर्धक मित्र आपको चाहते हैं, परमैश्वर्य की साधना करते हैं, कामना योग्य वस्तुओं को धारण करते हैं और मनुष्यों द्वारा चारों ओर से होने वाली हिंसा को सहते हैं अर्थात् उसका सामना करते हैं। प्रभो! आपसे बढ़कर उत्तम बुद्धि वाला कोई अन्य नहीं है, अतः आप हमारा नेतृत्व कीजिए, हमें सत्प्रेरणा दीजिए।

O giver of supreme prosperity, God, the friends who increase the happiness of love, have desire for you, try for supreme prosperity, protect the desirable things and try to remove the violence which effects the people all round. O God! there is nobody wiser than you, so please guide us and advise us for our welfare.

(255)

इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति।
यन्ति प्रमादमतन्द्राः ॥

पुरुषार्थ सफलता का मूल ऋ.8/2/18

Icchanti devāḥ sunvantaṁ na svapnāya spṛhayanti |
Yanti pramādamatandrāḥ ||

Ṛg./8/2/28

Efforts-the source of success

दिव्य गुणों वाले श्रेष्ठ मानव कर्मशील मनुष्यों को चाहते हैं, आलस्य या आलसियों को नहीं, क्योंकि जो निरालस और पुरुषार्थी हैं, वे ही परमानन्द को प्राप्त कर सकते हैं, अन्य नहीं।

The devine persons like active people and dislike idle and lazy persons, because only those can obtain the super happiness, who are not lazy but hard workers.

(256)

इच्छेच्चेद्विपुलां मैत्रीं, त्रीणि तत्र न कारयेत्।
वाग्वादमर्थसम्बन्धं, तत्पत्नीपरिभाषणम् ॥

मित्रता में त्याज्य अज्ञात

Iccheccedvipulāṁ maitrīṁ, trīṇi tatra na kārayet |
Vāgvādamarthasambandhaṁ, tatpatnīparibhāṣaṇam ||

Avoid in friendship Unknown

यदि किसी से पक्की और स्थायी मित्रता चाहते हो, तो तीन बातें नहीं करनी चाहिए। एक तो वाद-विवाद, दूसरा धन के कार्यों में साझापन और तीसरा मित्र की पत्नी से अधिक बातचीत।

If one is desirous to maintain permament friendship, he should relinquish the following three things: (1) Discussion, (2) financial relationship and, (3) too much talking with the friend's wife.

(257)

इज्याध्ययनदानानि तपः सत्यं क्षमा घृणा।
अलोभ इति मार्गोऽयं धर्मस्याष्टविधः स्मृतः ॥

धर्म के आठ मार्ग महाभारत/उद्योग/35/56

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Ijyādhyayana-dānāni tapaḥ satyaṁ kṣamā ghṛṇā।
Alobha iti mārgo'yaṁ dharmasyāṣṭavidhaḥ smṛtaḥ॥

Mehābhā. / Udygo / 35 / 56

Eight ways of morality

यज्ञ, धार्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय, दान, तप, सच्चाई, सहनशीलता अथवा क्षमा, बुरे कार्यों से घृणा तथा लोभ का त्याग- यह धर्म का आठ प्रकार का मार्ग कहा गया हैं।

The following eight things are the paths of morality :- (1) Sacrificial oblations into fire, (2) study of good books, (3) charity, (4) penance, (5) truthfulness, (6) tolerance or forgiveness, (7) hate against bad works and (8) avoiding greediness.

(258)

इड एह्यदित एहि काम्या एत।
मयि वः कामधरणं भूयात्॥

शुभकामनाएँ यजु./3/27

Iḍa ehyadita ehi kāmyā eta।
Mayi vaḥ kāmadharaṇaṁ bhūyāt॥

Good desirous Yaju. / 3 / 27

हे परमेश्वर, आपकी कृपा से हमें भूमि प्राप्त हो, सब सुख प्राप्त कराने वाली राजनीति प्राप्त हो, सभी कामना करने योग्य वस्तुएँ प्राप्त हों। हमें उन वस्तुओं को स्थायी बनाए रखने का सामर्थ्य भी प्राप्त हो।

O God, be kind to us, so that we may become the masters of land, learn the politics, the source of happiness and obtain all the things, which we desire. Lord, give us the ability to maintain also all these things.

(259)

इडे रन्ते हव्ये काम्ये चन्द्रे ज्योतेऽदिते सरस्वति महि विश्रुति।
एता ते अघ्न्ये नामानि देवेभ्यो मा सुकृतं ब्रूतात्॥

गृहपत्नी के गुण यजु./8/43

Iḍe rante havye kāmye candre, jyote'dite sarasvati mahi viśruti।
Etā te aghnye nāmāni devebhyo mā sukṛtaṁ brūtāt॥

Qualities of the wife Yaju. / 8 / 43

हे सर्वदा रक्षणीय गृहपत्नी! तू प्रशंसनीय, रमण करने योग्य, स्वीकार करने योग्य, कामना करने योग्य, आनन्ददायक, श्रेष्ठ शील और विद्या से प्रकाशमान, आत्मा के स्वरूप से अखंडनीय, प्रशंसित विज्ञान वाली, अत्यन्त प्रशंसनीय और वेदादि के सम्यक् ज्ञान से सम्पन्न है। हे ताडना न करने योग्य देवी! इतने गुणार्थक नामों से तू सम्पन्न है। देवों, अर्थात् उत्तम गुणों के लिए मुझे उत्तम निर्देश दिया कर।

O always protectable house-wife, you are admirable, giver of enjoyment, acceptable, desirable, giver of mirth, shining with morality and education, everlasting as a soul, having praiseworthy science, very much adorable and scholar of the Vedic knowledge. O goddess, you never deserve punishment and have different above said names due to your qualities. You should always advise me for devine qualities.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(260)

इदञ्च त्वां सर्वपरं ब्रवीमि,
पुण्यं पदं तात महाविशिष्टम्।
न जातु कामान्न भयान्न लोभाद्,
धर्मं जह्येज्जीवितस्यापि हेतोः॥

धर्म – अन्याज्य महाभा./उद्योग/40/12

Idañca tvāṁ sarvaparaṁ bravīmi,
Puṇyaṁ padaṁ tāta mahāviśiṣṭam।
Na jātu kāmānna bhayānna lobhād,
Dharmaṁ jahyejjīvitasyāpi hetoḥ॥

Mahābhā./Udyog/40/12

Dharma - Unabondable

हे प्रिय, तुम्हें मैं सर्वश्रेष्ठ, पवित्र और सबसे महत्त्वपूर्ण बात बता रहा हूँ कि मनुष्य को चाहिए कि वह अपने जीवन के लिए भी किसी कामना से, भय से या लोभ से धर्म का कभी भी परित्याग न करे।

O dear, I am going to tell you about the purest, the best and the most important thing that a man should not relinquish his religion even for life, on account of any desire, fear or greediness.

(261)

इदन्त एकं पर ऊ त एकं तृतीयेन ज्योतिषा संविशस्व।
संवेशने तन्वश्चारुरेधि प्रियो देवानां परमे जनित्रे॥

परम ज्योति से मिलो ऋ. 10/56/1

Idanta ekaṁ para ū ta ekaṁ tṛtīyena jyotiṣā saṁviśasva।
Saṁveśane tanvaścāruredhi priyo devānāṁ parame janitre॥

Join the Supreme light Ṛg./10/56/3

हे मानव! तेरे लिए एक यह जगत् है और दूसरा ज्योतिर्मय आत्मा है, तू तीसरी ज्योति परमात्मा के साथ मग्न हो जा। तब समस्त दिव्यशक्तियों के परम उत्पादक तथा शरीरों के आश्रयभूत परमात्मा में तू श्रेष्ठ बनकर विचरण करके उसके आनन्द का उपभोग कर सकता है।

O man! first of all, this world is for you and the second world is your lighted soul. You should connect yourself with the third light of God, who is the supreme source of all the heavenly powers and root of our all bodies.

(262)

इदं मे ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम्।
मयि देवा दधतु श्रियमुत्तमां तस्यै ते स्वाहा॥

ब्रह्म और क्षत्र का महत्त्व यजु./32/16

Idaṁ me brahma ca kṣatraṁ cobhe śriyamaśnutām।
Mayi devā dedhatu śriyamuttamāṁ tasyai te svāhā॥

Yaju./32/16

Importance of knowledge and bravery

हे परमेश्वर! आपकी कृपा से और मेरे सत्याचरण व्यवहार से मुझ में ज्ञानबल और क्षात्रबल दोनों शोभा प्राप्त करें। विद्वान् लोग मुझे उत्तम लक्ष्मी प्राप्त करने की विधि सिखलायें। उसी कल्याण-कारिणी लक्ष्मी को प्राप्त करने के लिए हम सभी प्रयत्नशील हों।

O God, with your grace and my true behaviour my power of knowledge and the power of protec-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

tion both should gain beauty. The scholars should teach me the methods to get best prosperity and wealth. Let all of us try to obtain such wealth which is the source of happiness.

(263)

इदं वचः पर्जन्याय स्वराजे हृदो अस्त्वन्तरं तज्जुजोषत।
मयोभुवः वृष्टयः सन्त्वस्मे सुपिप्पला ओषधीर्देवगोपाः॥

शुभ कामनाएँ ऋ./7/101/5

Idaṁ vacaḥ parjanyāya svarāje hṛdo astvantaraṁ tajjujoṣata।
Mayobhuvaḥ vṛṣṭayaḥ santvasme supippalā oṣadhīrdevagopāḥ॥

Auspicious desires Ṛg./7/10/5

हे परमेश्वर! हमारे लिए सुखद वर्षाएँ हों, सुन्दर फलों वाली ओषधियाँ हों और विद्वान् लोग उनका ठीक प्रकार से प्रयोग करें। यह वाणी पर्जन्य के समान आनन्द की वृष्टि करने वाले राजा के लिए भी है कि वह ही हृदयगत हमारी इस वाणी को व्यवहार में लाये, अर्थात् वह मेघ के समान ही सारी प्रजा को सम्पन्न बनाये और सुखी करे।

O God! May it rain for happiness, may herbs and plants bear fruits and our scholars use them justifically. Our this voice is for the king also, who showers the rain of happiness on the people, so that he may give the practical shape to our voice and make all his subjects happy like the cloud.

(264)

इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।
समूढमस्य पांसुरे ॥

त्रिलोक पति विष्णु ऋ./1/22/17

Idaṁ Viṣṇurvicakrame tredhā nidadhe padam।
Samūḍhamasya pāṁsure ॥

Ṛg./1/22/17

God the sustainer of the world

परमेश्वर ने तीन प्रकार का जगत् रचा है – एक पृथ्वीरूप, दूसरा अन्तरिक्ष में रहने वाला परमाणुरूप और तीसरा प्रकाशमय सूर्यादि के रूप वाला। इन तीनों लोकों को वही एक सर्वव्यापक विष्णु धारण कर रहा है।

God, the Creator of the three kinds of the worlds; the first is the earth, the second is the space which is the place of different kinds of atoms and the third is the shining world in which the sun and stars shine. It is only God, the Omnipresent, who is retaining all the three worlds.

(265)

इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागाच्चित्रः प्रकेतो अजनिष्ट विभ्वा।
यथा प्रसूता सवितुः सवाय एवा रात्र्युषसे योनिमारैक्॥

उषा का सौन्दर्य ऋ./1/113/1

Idaṁ śreṣṭhaṁ jyotiṣāṁ jyotirāgāccitraḥ praketo ajaniṣṭa vibhvā।
Yathā prasūtā savituḥ savāya evā rātryuṣase yonimāraik॥

Beauty of the dawn Ṛg/1/113/1

सब ज्योतियों में श्रेष्ठ ज्योति यह उषा अब प्रकट

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो रही है। इस समय विचित्र चेतना विस्तृतरूप से चारों ओर फैल रही है। जैसे रात्रि सूर्य के सम्बन्ध से पैदा हुई थीं, ऐसे ही ऐश्वर्य के हेतु उषा काल के लिए वह अब स्थान खाली कर रही है। वास्तव में, रात्रि और उषा–दोनों का स्रोत सूर्य ही है।

विशेष :– इस मन्त्र में जहाँ लौकिक उषा का वर्णन है, वहाँ प्रभु के सम्पर्क में आने से आत्म–ज्योति की उषा का भी वर्णन है, जो कि अज्ञान की रात्रि को मिटा रही है।

This dawn is the best light of all lights and is appearing now. In this time a kind of peculiar life is spreading around, as the night, on account of the sunrise, leaves now the place for the dawn. Really, the sun is the source of both, the night and the dawn.

(266)

इदं हिरण्यं बिभृहि यत् ते पिताऽबिभः पुरा।
स्वर्गं यतः पितुर्हस्तं निर्मृड्ढि दक्षिणम्॥

पिता के अनुकूल सदाचरण अथर्व./18/4/56

Idaṁ hiraṇyaṁ bibhṛhi yat te pitā'bibhaḥ purā।
Svargaṁ yataḥ piturhastaṁ nirmṛḍḍhi dakṣiṇam॥

Atharva / 18 / 4 / 56

Character like of father

हे मनुष्य! इस हिरण्य–रूप सम्पत्ति को तू उसी प्रकार धारण कर जैसे तेरे पिता ने इसे पहले धारण किया था। जैसे पिता उदारतापूर्वक और कुशलता–पूर्वक दान दिया करते थे, तू भी उसी प्रकार दक्षिणा देकर पिता की परम्परा को सुखमय बना।

O man! You should possess this golden wealth in the same way as your father had possessed it. As your father used to deliver alms generously and skilfully, in the same way, you should continue the tradition of giving alms.

(267)

इदमापः प्रवहत यत्किञ्च दुरितं मयि।
यद्वाहमभिदुद्रोह यद्वा शेप उतानृतम्॥

कर्मानुसार फल ऋ./1/23/22

Idamāpaḥ pravahata yatkiñca duritaṁ mayi।
Yadvāhamabhidudroha yadvā śepa utānṛtam॥

Result of works Ṛg. / 1 / 23 / 22

मुझमें जो कुछ भी बुराई या जो भी अच्छाई है, या मैंने किसी से शत्रुता की है अथवा किसी को गाली दी है या कृपा की है, अथवा झूठ या सच बोला है, यह सभी कुछ मेरे प्राण को मेरे साथ ही प्राप्त होते हैं और प्रभु तदनुसार ही फल की व्यवस्था करता है।

Any bad or good thing which lies in me or if I showed enmity towards anybody, or abuse anybody or showed kindness, or told a lie or truth—all these my actions are got by my 'prānas' and God arranges their consequences according to our deeds.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(268)

इदं मे ज्योतिरमृतं हिरण्यं,
पक्वं क्षेत्रात् कामदुघा म एषा।
इदं धनं निदधे ब्राह्मणेषु,
कृण्वे पन्थां पितृषु यः स्वर्गः॥

धन का सदुपयोग अथर्व./11/1/28

Idaṁ me jyotiramṛtaṁ hiraṇyaṁ,
pakvaṁ kṣetrāt kāmadughā ma eṣā।
Idaṁ dhanaṁ nidadhe Brāhmaṇeṣu,
kṛṇve panthāṁ pitṛṣu yaḥ svargaḥ॥

God use of wealth Atharva./11/1/28

यह मेरा चमकता हुआ, मृत्यु से बचाने वाला खेत से लाया हुआ सुवर्ण रूप अन्न है और यह मेरी कामनाओं को पूर्ण करने वाली गाय है। इस धन को मैं वेद-प्रचार के कार्यों में लगाकर पालन करने वाले विज्ञानियों के बीच सुख पहुँचाने वाले रास्ते को बना रहा हूँ।

This corn, which is shining, protector from the death, and brought from the fields has golden colour and this is my cow, which fulfils all desires. I am using this money in the publicity of the Vedas and making a path for happiness of the scientists who help the nation.

(269)

इन्दुं रिहन्ति महिषा अदब्धा पदे रेभन्ति कवयो न गृध्राः।
हिन्वन्ति धीरा दशभिः क्षिपाभिः समञ्जते रूपमपां रसेन॥

प्राणायाम के लाभ ऋ.9/97/57

Induṁ rihanti mahiṣā adabdhā pade rebhanti kavayo na gṛdhrāḥ।
Hinvanti dhīrā daśabhiḥ kṣipābhiḥ samañjate rūpamapāṁ rasena॥

Ṛg./9/97/57

Advantage of controling breaths

दृढ़ प्रतिज्ञा वाले महान् पुरुष आनन्दमय प्रभु को प्राप्त कर लेते हैं। वे क्रान्तप्रज्ञ यज्ञ रूपी वेदी पर ऐसे शब्दायमान होते हैं, जैसे लोभी व्यक्ति किसी इच्छित वस्तु पर आ टपकते हैं। धीर लोग दस प्राणों की गति से और सत्कर्मों के परिपाक से उस आनन्दमय परमात्मा का साक्षात्कार करते हैं। भावार्थ यह है कि प्राणों के संयम से हम परमात्मा तक पहुँच सकते हैं।

The great men of determination can obtain God, the embodiment of bliss. Those highly wise people speak in such a way on the alter of sacrifice as greed persons get together for some desired things. The sages feel God's bliss with the help of the gait of 'Prānas' and resuls of their good deeds. It means that the control on 'Prānas' leads obtaining of God.

(270)

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्।
एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः॥

परमात्मा के अनेक नाम ऋ.1/164/46

Indraṁ mitraṁ varuṇamagnimāhurātho divyaḥ sa suparṇo garutmān।
Ekaṁ sad viprā bahudhā vadantyagniṁ yamaṁ mātariśvānamāhuḥ॥

Many names of God Ṛg./1/164/46

उस एक अग्नि रूप प्रभु को ही ज्ञानी लोग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विविध नामों से पुकारते हैं। उसे ही इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि, दिव्य, सुपर्ण, गरुत्मान्, यम और मातरिश्वा भी कहते हैं।

The scholars call 'Agni' (God) by different names. He is called Indra, Mitra, Varuna, Agni, Divya, Suparna, Garutmān, Yama and Matariṣvā also.

(271)

इन्द्रं वर्धन्तु नो गिर इन्द्रं सुतास इन्दवः।
इन्द्रे हविष्मतीर्विशो अराणिषुः॥

परमेश्वर की स्तुतियाँ ऋ./8/13/16

Indraṁ vardhantu no gira Indraṁ sutāsa indavaḥ।
Indre haviṣmatīrviśo arāṇiṣuḥ ॥

Ṛg./8/13/16

Song of God's qualities

हमारी वाणियाँ ईश्वर के गुणगान में प्रवृत्त हों। हमारे उपार्जित उत्तम-उत्तम रसीले पदार्थ भगवान् के यश को ही बढ़ावें। सब उपासना करने वाली प्रजाएँ परमैश्वर्यशाली इन्द्र में रमण कर आनन्द प्राप्त करें।

Our tongues may be busy in the singing of the qualities of God. The earned best and delicious things may increase the fame of God. All the people who worship Him should enjoy the bliss of the glorious God with deep meditation of Him.

(272)

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।
अपघ्नन्तो अराव्णः॥

संसार को श्रेष्ठ बनाओ ऋ./9/63/5

Indraṁ vardhanto apturaḥ kṛṇvanto viśvamāryam।
Apaghnanto arāvṇaḥ ॥

हम लोग कर्मशील होकर ऐश्वर्य को बढ़ाते हुए, सम्पूर्ण विश्व को आर्य (श्रेष्ठ) बनाते हुए तथा सब दुष्ट शत्रुओं को नष्ट करते हुए परमात्मा को प्राप्त हों।

(**विशेष :-** अगले मन्त्र से 'अन्वभ्यर्षन्ति' शेष लिया है)

We must be active and then increasing our wealth, making all the world good and noble and killing all the unjust enemies obtain the supreme power, God.

(273)

इन्द्रस्यार्कस्य वायोश्च यमस्य वरुणस्य च।
चन्द्रस्याग्नेः पृथिव्याश्च तेजो वृत्तं नृपश्चरेत्॥

शासक के गुण मनु./9/303

Indrasyārkasya Vayośca Yamasya Varuṇasya ca।
Candrasyāgneḥ prithivyāśca tejo vṛttaṁ nṛpaścaret ॥

Qualities of a ruler Manu./9/303

राजा इन्द्र, सूर्य, वायु, यम, वरुण, चन्द्रमा, अग्नि और पृथ्वी के तेजस्वी स्वभाव के अनुसार ही आचरण तथा व्यवहार करे।

The king should act and behave according to the glory of gods – Indra, the Sun, Air, Yarna, Varuna, Candramā, Agni and the Earth.

(274)

इन्द्र आशाभ्यस्परि सर्वाभ्यो अभयं करत्।
जेता शत्रून् विचर्षणिः॥

निर्भयता की कामना ऋ./2/41/12

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Indra āśābhyaspari sarvābhyo abhayaṁ karatl
Jetā śatrūn vicarṣaṇiḥ ll

Desire of fearlessness Ṛg. / 2 / 41 / 12

शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला, सबका द्रष्टा, परमैश्वर्यशाली परमात्मा सभी दिशाओं से हमें निर्भय बना दे अर्थात् उसकी कृपा और अपने व्यवहार से हम सभी ओर निर्भय होकर विचर सकें।

The victorious and omniscient, supreme prosperous God may make us fearless from all the directions. We should try in such a way that by blessings of God we may remain fearless at any place.

(275)

इन्द्र क्रतुं न आभर पिता पुत्रेभ्यो यथा।
शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि॥

सुशिक्षा की कामना ऋ. / 7 / 32 / 26

Indra kratuṁ na ābhara pitā putrebhyo yathā l
Śikṣā ṇo asmin puruhūta yāmani jīvā jyotiraśīmahi ll

Desire of good education Ṛg. / 7 / 32 26

हे अनेक लोगों से पुकारे जाने वाले परमैश्वर्य-शाली परमात्मन्! जैसे पिता पुत्रों के लिए धर्मानुकूल बुद्धि (ज्ञान) देता है, वैसा ही ज्ञान (प्रेरणा) हमें दीजिए। इस वर्तमान काल में हमें ऐसी शिक्षा प्रदान कीजिए कि हम जीव-विज्ञान को और आप को प्राप्त कर सकें।

God, you are recalled by many people, so we also request you that as a father gives a good advice to his sons, so you should induce in us good knowledge and instruct us in such a way as we may obtain true spiritual light and your company also.

(276)

इन्द्र जहि पुमांसं यातुधानमुत स्त्रियं मायया शाशदानाम्।
विग्रीवासो मूरदेवा ऋदन्तु, मा ते दृशन्त्सूर्यमुच्चरन्तम्॥

शासक का कर्त्तव्य ऋ. / 7 / 104 / 24

Indra jahi pumaṁsaṁ yātudhānamuta striyaṁ māyayā śāśadānām l
Vigrīvāso mūradevā ṛdantu, mā te dṛśantsūryamuccarantam ll

Ruler's duty Ṛg. / 7 / 104 / 24

हे राजन्! अन्यायकारी दण्डनीय डाकू को और वंचना करके धर्म की हानि करने वाली अन्यायकारिणी स्त्री को भी नष्ट कर दीजिए। हिंसारूपी क्रिया से क्रीड़ा करने वालों की गर्दनें कटी हुई दिखाई दें। वे उदय होते हुए सूर्य को भी न देख पायें, अर्थात् उनका शीघ्र ही वध कर देना चाहिए।

O king, kill the unjust and punishable robber and the lady who deprives others, acts immorally and practises unjustice. The necks of those, who feel enjoyment in the murder of others, should be cut off. They must be killed immediately, so that they cannot see even the rising sun.

(277)

इन्द्र त्रिधातु शरणं त्रिवरूथम् स्वस्तिमत्।
छर्दिर्यच्छ मघवद्भ्यश्च मह्यं च यावया दिद्युमेभ्यः॥

उत्तम घरों की कामना अथर्व. / 20 / 83 / 1

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Indra tridhātu śaraṇaṁ trivarūtham svastimat।
Chardiryaccha maghavadbhyaśca mahyaṁ ca yāvayā didyumebhyaḥ॥

Atharva. / 20 / 83 / 1

Desire of good houses

हे इन्द्र (राजन् अथवा परमेश्वर)! सोना, चाँदी और लोहे की तीन धातुओं वाले, शीत, ताप और वर्षा— इन तीन ऋतुओं के कष्टों को सहन करने वाले उत्तम आश्रय के योग्य और बहुत सुखों वाले घर धनिकों को और मुझे भी दीजिए और सबके लिए प्रकाश का भी प्रबन्ध कीजिए।

O Indra (God or our king), give such houses to the wealthy persons and to me also, which contain the things of three metals of gold, silver and iron, which are useful in the winter, the summer and the rainy seasons and which are full of all conveniences and amenities and manage light also in all such houses.

(278)

इन्द्रमिद्गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः।
इन्द्रं वाणीरनूषत॥

देवों के गुण ऋ./1/7/1

Indramidgāthino bṛhadindramarkebhirarkiṇaḥ।
Indraṁ vāṇīranūṣata॥

Qualities of Gods Ṛg. / 1 / 7 / 1

गाने वाले और विचारशील विद्वान् अपने उत्तम कर्मों द्वारा इन्द्र (वायु, सूर्य और परमात्मा) की गुणानुसार स्तुति करें अर्थात् सबके गुणों का वर्णन करें।

The singers and thoughtful scholars should describe the qualities of Indras (air, the sun and God) and praise them according to their merits.

(279)

इन्द्र वाजेषु नोऽव सहस्रप्रधनेषु च।
उग्र उग्राभिरूतिभिः॥

इन्द्र हमारी रक्षा करे ऋ./1/7/4

Indra vājeṣu no'va sahasrapradhaneṣu ca।
Ugra ugrābhirūtibhiḥ॥

May Indra protect us Ṛg. / 1 / 7 / 4

हे पराक्रमी परमैश्वर्यशाली परमात्मन् अथवा शासक! महायुद्धों में तथा असंख्य दुःख देने वाले कर्मों में अत्यन्त दुःखनाशक और सुख देने वाले रक्षा-साधनों से हमारी रक्षा कीजिए अर्थात् हमें ऐसी प्रेरणा दीजिए कि युद्धों में विजय तथा धन के कार्यों में धन को प्राप्त करते हुए हम सुरक्षित रहें।

O the most valient and the most glorious God or the Ruler, in great wars and in the troublesome deeds, protect us with your means of protection by removing our woes and increasing sources of happiness.

(280)

इन्द्र शुद्धो न आ गहि शुद्धो शुद्धाभिरूतिभिः।
शुद्धो रयिं नि धारय शुद्धो ममद्धिः सोम्यः॥

पवित्र जीवन की कामना ऋ./8/95/8

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Indra śuddho na ā gahi śuddho śudhābhirūtibhiḥ |
Śuddho rayiṁ ni dhāraya śuddho mamaddhiḥ somyaḥ ||

Desire of pious life Ṛg. / 8 / 95 / 8

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आप परम पवित्र हैं, हमें भी अपनी निर्दोष सामग्री से पवित्र बनाइए। हम आप की प्रेरणा से पवित्र धन को ही प्राप्त करें। प्रभो! हमारी आत्माएँ सोम-गुण से सम्पन्न, शुद्ध और पवित्र होकर आनन्दमय बन जाएँ।

O most glorious God, you are the most holy. So make us also pure through your defectless means. May all of us obtain only holy wealth! O God, our souls may be full of the qualities of spiritual peace and purity and then enjoy your bliss by your grace!

(281)

इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे।
पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम्॥

शुभ वस्तुओं की कामना ऋ./2/21/6

Indra śreṣṭhāni draviṇāni dhehi cittiṁ dakṣasya subhagatvamasme |
Poṣaṁ rayīṇāmariṣṭiṁ tanūnāṁ svādmānaṁ vācaḥ sudinatvamahnām ||

Desire of good things Ṛg. / 2 / 21 / 6

हे परमैश्वर्यशाली प्रभो! आप हमें श्रेष्ठ धन दीजिए, बल के लिए चेतना शक्ति, अत्युत्तम ऐश्वर्य, पुष्टि देने वाला धन, शरीर का स्वास्थ्य, वाणी की मधुरता और दिनों को सुखपूर्वक बिताने वाला ज्ञान प्रदान कीजिए, अर्थात् हम लोग इन वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहें।

O most glorious God, please give us holy riches, consciousness for power, the best wealth, money for growth, the good health of body, sweetness in our tongues and knowledge to spend our days in good manner. It means, that we should also try to achieve the said things.

(282)

इन्द्रियाणां पृथग्भावमुदयास्तमयौ च यत्।
पृथगुत्पद्यमानानां मत्वा धीरो न शोचति॥

त्याज्य — शोक कठोपनिषद/6/6

Indriyāṇāṁ pṛthagbhāvamudayāstamayau ca yat |
Pṛthagutpadyamānānāṁ matvā dhīro na śocati ||

Avoid sadness Kaṭhopanisad / 6 / 6

आत्मा से पृथक् अपने कारणों से उत्पन्न होने वाली इन्द्रियों के होने को आत्मा से भिन्न और उत्पन्न होने वाली और नश्वर जानकर धीर पुरुष शोक नहीं करता।

When a thoughtful person knows that the senses and physical organs are separate from the soul which get birth from their sources and are destructible then he does not feel sadness.

(283)

इन्द्रियाणां प्रसङ्गेन दोषमृच्छत्यसंशयम्।
सन्नियम्य तु तान्येव, ततः सिद्धिं नियच्छति॥

इन्द्रिय-संयम मनु./2/93

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Indriyāṇāṁ prasaṅgena doṣamṛcchatyasaṁśayam।
Sanniyamya tu tānyeva, tataḥ siddhiṁ niyacchati॥

Control on senses Manu. / 2 / 93

इन्द्रियों के वश में न होने से मनुष्य में कई त्रुटियाँ आ जाती हैं। परन्तु जब वह उन्हें संयम में रखता है, तो उन्हीं द्वारा उसे प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त हो जाती है।

If a man follows his senses, he gains many deficiencies. But when he has control on them, he can get success in every field.

(284)

इन्द्रियाणां विचरतां विषयेष्वपहारिषु।
संयमे यत्नमातिष्ठेद्, विद्वान् यन्तेव वाजिनाम्॥

इन्द्रिय-संयम मनु. / 2/ 88

Indriyāṇāṁ vicaratāṁ viṣayeṣvapahāriṣu।
Saṁyame yatnamātiṣṭhed, vidvān yanteva vājinām॥

Control on senses Manu. / 2 / 88

जब इन्द्रियाँ आकर्षक विषयों की ओर मनुष्य को खींचें तो उनको संयम में इस प्रकार रखने का प्रयत्न करना चाहिए, जैसे रथ-चालक घोड़ों को वश में रखता है।

When the senses attract the man towards the attractive things, then he should try to have control on them like the driver of a chariot, who controls the horses.

(285)

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनु विधीयते।
तदस्य हरति प्रज्ञां, वायुर्नावमिवाम्भसि॥

असंयमित इन्द्रियाँ महाभा. / भीष्म. / 26 / 67

Indriyāṇāṁ hi caratāṁ yanmano'nu vidhīyate।
Tadasya harati prajñāṁ, vāyurnāvamivāmbhasi॥

Mahābhā. / Bhiṣma / 26 / 6

Uncontrolled senses

चञ्चल इन्द्रियों के पीछे जब मन चल पड़ता है, तो इससे मनुष्य की बुद्धि विचलित हो जाती है, जैसे जल में नौका वायु द्वारा डगमगा जाती है।

When the mind follows the unsteady senses, then the thinking power of a man wavers, like the boat which becomes unsteady in the water by the wind.

(286)

इन्द्रियाणामनुत्सर्गो मृत्युनापि विशिष्यते।
अत्यर्थं पुनरुत्सर्गः सादयेद् देवतामपि॥

उचित इन्द्रिय-संयम महाभा. / उद्योग / 39 / 5

Indriyāṇāmanutsargo mṛtyunāpi viśiṣyate।
Atyarthaṁ punarutsargaḥ sādayed devatāmapi॥

Mahābhā. / Udyoga / 39 / 5

Useful control on senses

इन्द्रियों को नियंत्रण में रखना मृत्यु से भी भयंकर कार्य है, परन्तु उनको स्वतन्त्र छोड़ने से देवता भी कष्टों में पड़ जाते हैं। (अतः धीरे-धीरे इन्हें वश में करने का अभ्यास डालना चाहिए।)

To control the senses abruptly is more dreadful than death. But to set them free throws even the deities in difficulty. (So one should try day by day gradually to control the senses.)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(287)

इन्द्रियाणि जयन्त्याशु निराहारा मनीषिणः।
वर्जयित्वा तु रसनं, तन्निरन्नस्य वर्धते॥

इन्द्रिय-विजय-विधि भागवतपु./11/8/20

Indriyāṇi jayantyāśu nirāhārā manīṣiṇaḥ।
Varjayitvā tu rasanaṁ, tannirannasya vardhate॥

Bhāgavata pu./11/8/20

Method to control senses

जो संयमी भोजन त्याग देते हैं, वे रसनेन्द्रिय को छोड़कर अन्य सब इन्द्रियों पर विजय पा लेते हैं, परन्तु भूखे रहने से रसनेन्द्रिय की रस की इच्छा बढ़ जाती है।

The sages who do not eat the food can control their all senses except the tongue which desires more to have tastes.

(288)

इन्द्रियाणि प्रसक्तानि प्रविश्य विषयोदधौ।
आहृत्य यो निगृह्णाति, प्रत्याहारः स उच्यते॥

प्रत्याहार का लक्षण अग्निपुराण/द्वि. भाग/184/20

Indriyāṇi prasaktāni praviśya viṣayodadhau।
Āhṛtya yo nigṛhṇāti, pratyāhāraḥ sa ucyate॥

Agnipra./II Part/184/20

Definition of Pratyāhāra

विषयों के सागर में प्रवेश कर उन विषयों में लगी हुई इन्द्रियों को खींचकर अपने वश में करना ही प्रत्याहार कहलाता है।

The senses when go into the sea of their tastes and enjoy them, then taking them back and controlling them is called abstraction of senses (pratyāhāra).

(289)

इन्द्रियाणि शतक्रतो या ते जनेषु पञ्चसु।
इन्द्र तानि त आ वृणे॥

पाँच मंत्रियों का चयन ऋ./3/37/9

Indriyāṇi śatakrato yā te janeṣu pañcasu।
Indra tāni ta ā vṛṇe॥

Selection of five ministers Ṛg./3/37/9

हे सैकड़ों कार्यों का ज्ञान रखने वाले राजन्! मैं, प्रधानमन्त्री, आप के सहायक इन पाँच महत्त्वपूर्ण अधिकारियों का आपके मंगलमय प्रशासन के लिए चयन करता हूँ :- (1) गृह-मन्त्री, (2) वित्त-मन्त्री, (3) विदेश-मन्त्री, (4) रक्षा-मन्त्री और (5) न्याय-मन्त्री।

O king, you have different kinds of wisdom to understand the hundred of works of your kingdom. I, your Prime Minister, select the following five important ministers to govern your kingdom smoothly :- (1) Home Minister, (2) Finance Minister, (3) Foreign Minister, (4) Defence Minister and (5) The Minister of Justice.

(290)

इन्द्रियाण्येव तत्सर्वं यत्स्वर्गनरकावुभौ।
निगृहीतविसृष्टानि स्वर्गाय नरकाय च॥

इन्द्रियों का महत्त्व अग्निपुराण/द्वि. खंड/184/16

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Indriyāṇyeva tatsarvaṁ yatsvarga-narakāvubhau |
Nigṛhītavisṛṣṭāni svargāya narakāya ca ||

Agnipu. / II / 184 / 16

Importance of senses

स्वर्ग (सुख) और नरक (दुःख) का कारण ये इन्द्रियाँ ही हैं। यदि ये वश में रहें तो सुखदायी होती हैं और यदि ये स्वतन्त्र हो कर विषयों में भटकें , तो ये ही दुःखों का कारण बन जाती हैं।

These senses are the sources of the both—heaven (happiness) and hell (woe). If they are controlled, they give us happiness and peace and if they are free to wander in their tastes, they become the source of disaster (hell).

(291)

इन्द्रियार्थेषु सर्वेषु न प्रसज्येत कामतः।
अतिप्रसक्तिं चैतेषां मनसा सन्निवर्तयेत्॥

इन्द्रियों को अति आसक्ति से बचाओ मनु./4/16

indriyārtheṣu sarveṣu na prasajyeta kāmataḥ|
Ati prasaktiṁ caiteṣāṁ manasā sannivartayet||

Manu. / 4 / 16

Avoid too much sensuality

इन्द्रियों के विषयों में रुचिपूर्वक व्यस्त नहीं होना चाहिए। विषयों में इनकी अधिक रुचि मन के संयम द्वारा दूर कर देनी चाहिए।

One should not take interest in the sensual subjects. He should try to remove his senses from their subjects by controlling own mind.

(292)

इन्द्रो जयाति न परा जयाता अधिराजो राजसु राजयातै।
चर्कृत्य ईड्यो वन्द्यश्चोपसद्यो नमस्यो भवेह॥

परमात्मा की शरण अथर्व./6/98/1

Indro jayāti na parā jayātā adhirājo rājasu rājayātai|
Carkṛtya īḍyo vandyaścopasadyo namasyo bhaveha||

God's shelter Atharva. / 6 / 98 / 1

वह इन्द्र, परमैश्वर्यशाली परमात्मा हमें विजयी बनाए। उसकी कृपा से हम कभी पराजित न हों। वह महाराजाधिराज परमेश्वर! यश से सम्पन्न लोगों में हमें शोभाशाली बनाए। हे प्रभो! आप ही चर्कृत्य अर्थात् सभी श्रेष्ठ कर्मों को करने में चतुर हैं, अतः आप स्तुत्य, वन्दनीय, उपासनीय और नमस्करणीय हैं; इसलिए हम आपकी शरण में आते हैं।

May God, the superglorious make us victorious by his kindness and we may not be defeated. The supreme king, God, may make us ornamented in the famous people! O God, it is you, who is able to do all good works beautifully. So, you deserve our praise, greetings, worship and solutations. Due to this, we are approaching to your kind refuge.

(293)

इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः।
जघान नवतीर्नव॥

सेनापति का कर्त्तव्य ऋ./1/84/13

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Indro dadhīco asthabhirvṛtrāṇyapratiṣkutaḥ ।
Jaghāna navatīrnava ॥

Duty of the commander Ṛg. / 1 / 84 / 13

जैसे सब ओर से नियमबद्ध सूर्यलोक अस्थिर किरणों से निन्यानवें प्रकार धारण करने वाले वायु के आधार पर टिके मेघों के अवयवों को तोड़ता-फोड़ता है, वैसे ही हे सेनापति! तू भी हमारे सभी दुष्ट शत्रुओं को नष्ट कर दे।

As the regular world of the sun breaks the clouds into countless pieces which are supported by the air, in the same way, O the cammander of our army, you should destroy all our enemies.

(294)

इन्धानास्त्वा शतं हिमा द्युमन्तं समिधीमहि,
वयस्वन्तो वयस्कृतं सहस्वन्तः सहस्कृतम्।
अग्ने सपत्नदम्भनमदब्धासोऽअदाभ्यम्,
चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय॥

उत्तम कामनाएँ यजु. / 3 / 18

Indhānāstvā śataṁ himā dyumantaṁ samidhīmahi,
Vayasvanto vayaskṛtaṁ sahasvantaḥ sahaskṛtam ।
Agne sapatnadambhanamadabdhāso'adābhyam,
Citrāvaso svasti te pāramaśīya ॥

Good desires Yaju. / 3 / 18

हे चित्रावसो, आश्चर्यमय धन वाले परमेश्वर! हम लोग दम्भ, अहङ्कार और हिंसा आदि दोषों से रहित होकर दीर्घ आयु और सहनशीलता को प्राप्त कर सौ वर्षों तक प्रकाश-स्वरूप आप की उपासना करते हुए तेजस्वी बनकर जियें। न दबने वाले और शत्रुओं को नष्ट करने वाले अस्त्र-शस्त्रों से हम सम्पन्न हों। तेरी कृपा से हम सब प्रकार के कल्याण का उपभोग कर सकें, यही कामना है।

O God, you have wonderful wealth. We pray and request you that may we live a long life in such a way, where fraud, pride and violence and such other sins should not take place! At least in the life of hundred years we should remain tolerant and glorious and worship you, the embodiment of light. Besides, we may remain always unyieded and should have due weapons to kill our enemies. This is also our desire that with your blessings, we may enjoy all kind of welfare.

(295)

इमं गोष्ठं पशवः संस्रवन्तु बृहस्पतिरानयतु प्रजानन्।
सिनीवाली नयत्वाग्रमेषामाजग्मुषो अनुमते नियच्छ॥

पशुओं के प्रति कर्त्तव्य अथर्व. / 2 / 26 / 2

Imaṁ goṣṭhaṁ paśavaḥ saṁsravantu bṛhaspatirānayatu prajānan।
Sinīvālī nayatvāgrameṣāmājagmuṣo anumate niyacha॥

Atharva. / 2 / 26 / 2

Duties towards animals

सभी पशु इस गोष्ठ (गोशाला) में आकर मिलें। इन पशुओं का स्वामी उन्हें पहचान कर उचित स्थान दे। खाद्य देने वाली गृहपत्नी इन को उचित आहार दे और नियम में बाँधकर रखे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

All the animals may join in this cowshed. The master of these animals arrange them, after recognizing them, at due places. The house-wife, who is incharge of their food, may give them wholesome food and tie them at respective sites.

(296)

इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि मैषां नु गादपरो अर्थमेतम्।
शतं जीवन्तु शरदः पुरूचीरन्तर्मृत्युं दधतां पर्वतेन॥

सौ वर्ष का जीवन यजु./35/15

Imaṁ jīvebhyaḥ paridhiṁ dadhāmi maiṣāṁ nu gādaparo arthametam।
Śataṁ jīvantu śaradaḥ purucīrantarmṛtyuṁ dadhatāṁ parvatena॥

Life of hundred years Yaju./35/15

हे मनुष्यो! जीवों के परिश्रम से प्राप्त किए धन को कोई अन्य प्राप्त न कर ले, यह मर्यादा मैं सब प्राणियों के लिए निश्चित करता हूँ। इस प्रकार दूसरे के धन का लोभ न करते हुए तुम मनुष्य सौ वर्षों की दीर्घ आयु को प्राप्त करो और मृत्यु को ब्रह्मचर्य तथा ज्ञानादि द्वारा दूर कर दो।

O human beings, I (God) set a ideal rule for all creatures that nobody should usurp the wealth earned by others with their hard work. In this way, keeping off the greediness for others' money all of the men may gain age of hundred years and remove away their death with the help of brahmacarya and good knowledge etc.

(297)

इमं मा हिंसीरेकशफं पशुं
कनिक्रदं वाजिनं वाजिनेषु।
गौरमारण्यमनु ते दिशामि
तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद॥

पशु-हिंसा का निषेध यजु./13/48

Imaṁ mā hiṁsīrekaśaphaṁ paśuṁ
kanikradaṁ vājinaṁ vājineṣu।
Gauramāraṇyamanu te diśāmi
tena cinvānastanvo niṣīda॥

Be off from killing animals Yaju./13/48

हे राजन्! संग्रामों में और तेजी के कार्यों में काम आने वाले इन एक खुर वाले, हिनहिनाने और वेग वाले घोड़े, गधे आदि पशुओं को मत मारो और जंगली गौर पशु की ओर भी मैं, ईश्वर, तुम्हें संकेत करता हूँ कि उसे भी मत मारो और उपयोग में लाकर अपनी वृद्धि करो।

O king, don't kill the one-hoofed animals like the horses and donkeys which are useful in the battlefield and other quick-works and which neigh. I, God also advise you that you should also not kill the wild gaura animal and take some use from it also to make your progress.

(298)

इमं मा हिंसीर्द्विपादं पशुं सहस्राक्षो मेधाय चीयमानः।
मयुं पशुं मेधमग्ने जुषस्व तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद॥

पशु-हिंसा का निषेध यजु./13/47

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Imaṁ mā hiṁsīrdvipādaṁ paśuṁ sahasrākṣo medhāya cīyamānaḥ।
Mayuṁ paśuṁ medhamagne juṣasva tena cinvānastanvo niṣīdaII

Be off violence of animals Yaju. / 13 / 47

हे तेजस्वी राजन्! आप कई प्रकार की दृष्टि रखने वाले हैं, अतः सुख की प्राप्ति के लिए एवम् अपनी वृद्धि हेतु द्विपद प्राणी—मनुष्य तथा पवित्रकारक जंगली गवादि पशुओं को मत मारो। उस पशु की सेवा करके उस से लाभ उठाते हुए शरीर को निरन्तर स्थिर बनाओ।

O glorious king! you have many kinds of views. So, to get happiness and for your advancement you should not kill the biped animals like a man and sacred wild animals like a cow. Serving such animals, get advantages and make your life happy and established.

(299)

इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं सचता परुष्ण्या।
असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयार्जीकीये शृणुह्या सुषोमया॥

नदियों के भेद ऋ. / 10/75/5

Imaṁ me gaṅge yamune sarasvati śutudri stomaṁ sacatā paruṣṇyā।
Asiknyā marudvṛdhe vitastayārjīkīye śṛṇuhyā suṣomayā II

Kinds of rivers Ṛg. / 10 / 75 / 5

मेरे इस प्रशंसा-वचन को ये नदियाँ सब प्रकार से सिद्ध करती हैं और सुनवाती हैं। इनमें से 'गङ्गा' अर्थात् अति गमनशील, 'यमुना' अर्थात् मिलकर तथा पृथक् चलने वाली भी नदी, 'सरस्वती' अधिक जल वाली नदी, 'शुतुद्री' शीघ्र बहने वाली नदी, 'परुष्णी' कुटिल बहने वाली नदी, 'असिक्नी' नीले पानी की नदी, 'मरुद्वृधा' मानसून में चलने वाली नदी, 'वितस्ता' विस्तार वाली नदी, 'आर्जीकीया' सीधी बहने वाली नदी और 'सुषोमा' सुन्दर औषधियों के किनारों वाली नदियाँ हैं।

विशेष :- ये सभी नाम गुणवाचक हैं। इन्हीं से बाद में नदियों के व्यक्तिवाचक नाम रखे गए हैं। ये नाम विभिन्न रक्तवाहिनियों के भी हैं।

These rivers prove and make others hear my following words of praise. All these names are meaningful showing the properties of different kinds of rivers. These names are qualitative only and not personal, as-Gangā which goes swiftly, Yamunā which flows with others and separately, Sarsvatī which has sufficient water, śutudrī which flows very fast, Parusṇī which flows in curves, Asiknī which has blue water, Marudvṛdhā which flows in rainy season, Vitastā which is very large, Arjikīyā which flows in right line and Suṣomā which has beautiful herbs on its shores. These names are also of different kinds of blood vessels.

(300)

इमं हि सर्व-वर्णानां पश्यन्तो धर्ममुत्तमम्।
यतन्ते रक्षितुं भार्यां भर्तारो दुर्बला अपि॥

पतियों कर्त्तव्य मनु. / 9/6

Imaṁ hi sarva-varṇānāṁ paśyanto dharmamuttamam।
Yatante rakṣituṁ bhāryāṁ bhartāro durbalā apII

Duties of husbands Manu. / 9 / 6

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्त्रियों की रक्षा करना सब वर्णों का परम धर्म है, ऐसा मानकर दुर्बल पति भी अपनी पत्नियों की रक्षा करने में तत्पर रहते हैं।

It is the duty of all castes to protect their wives. According to this, even weak husbands also try to save their wives always.

(301)

इममूर्णायुं वरुणस्य नाभिं
त्वचं पशूनां द्विपदां चतुष्पदाम्।
त्वष्टुः प्रजानां प्रथमं जनित्र-
मग्ने मा हिंसीः परमे व्योमन्॥

पशु-हिंसा का निषेध यजु./13/50

Imamūrṇāyuṁ varuṇasya nābhiṁ
tvacaṁ paśūnāṁ dvipadāṁ catuṣpadām।
Tvaṣṭuḥ prajānāṁ prathamaṁ janitram
agne mā hiṁsīḥ parame vyoman॥

Not to kill animals Yaju./13/50

हे अग्नि के समान ज्ञान और प्रभाव से सम्पन्न राजन्! श्रेष्ठ सुख के केन्द्र तथा द्विपद और चतुष्पद प्राणियों को अपनी ऊन से ढकने वाले, संसार के निर्माता प्रभु की प्रजाओं में प्रथम स्थान रखने वाले तथा सबको जीवन देने वाले भेड़ आदि ऊन वाले पशुओं की हत्या न करो और न होने दो।

O king, you are equal to fire in light (knowledge) and glory, so it is requested that you should not kill or allow to kill the woolly animals like the sheep, which are the centre of good happiness and which cover the biped and quadruped animals like man and others with their wool. These animals take first place in the creation of that Creator God and give life to all of us.

(302)

इमां धियं शिक्षमाणस्य देव, क्रतुं दक्षं वरुण सं शिशाधि।
ययाति विश्वा दुरिता तरेम, सुतर्माणमधिनावं रुहेम॥

कुशलता-पूर्वक कार्य ऋ./8/42/3

Imāṁ dhiyaṁ śikṣamāṇasya deva, kratuṁ dakṣaṁ Varuṇa saṁ śiśādhi।
Yayāti viśvā duritā tarema, sutarmāṇamadhināvaṁ ruhema॥

Work in good way Ṛg./84/42/3

हे पापनिवारक वरुणदेव! शिक्षा प्राप्त करने वाले हम लोगों की बुद्धि में सुक्रिया और शक्ति में तीव्रता लाइए, जिससे हम लोग सब पापों और कष्टों को पार कर सकें और ठीक प्रकार से पार लगाने वाली श्रेष्ठ क्रिया-रूपी नौका पर सवार होकर आपके पास पहुँच सकें।

O remover of sins God Varuna, we are being taught by you. So you should sharpen our intellect, good actions and energy so that we may cross all sins and difficulties and be able to sit into the boat of good actions which may carry us to you.

(303)

इमा गिर आदित्येभ्यो घृतस्नूः सनाद् राजभ्यो जुह्वा जुहोमि।
शृणोतु मित्रो अर्यमा भगो नस्तुविजातो वरुणो दक्षो अंशः॥

शासक का कर्त्तव्य ऋ./2/27/1

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Imā gira ādityebhyo ghṛtasnūḥ sanād rājabhyo juhvā juhomi I
Śṛṇotu mitro aryamā bhago nastuvijāto varuṇo dakṣo aṁśaḥ II

Duty of the Ruler Ṛg. / 2 / 27 / 1

जैसे मैं बारह महीनों के लिए घृत से तृप्त करने वाली वाणियों द्वारा यज्ञ करता हूँ, वैसे ही राजपुरुषों को भी कर आदि देकर उन्हें पूर्ण करता हूँ। हमारी वाणियों को हे राजन्! आप सुनिए क्योंकि आप ही हमारे मित्र, नियामक, ऐश्वर्य और बलादि गुणों से प्रसिद्ध, श्रेष्ठ, चतुर और दुष्टों के विनाशक हैं। आप अपने साधनों से हमारी रक्षा कीजिए।

As I perform sacrifice with the sentences which accompany with ghee during twelve months, in the same way I satisfy the ruling persons by offering taxes to them. O king, listen to our request, because it is you, who is our friend, controller and famous due to your prosperity, power and other qualities, noble, clever and destroyer of bad persons. Kindly, protect us with your means of protection.

(304)

इमा नारीरविधवाः सुपत्नीराञ्जनेन सर्पिषा संविशन्तु।
अनश्रवोऽनमीवाः सुरत्ना आरोहन्तु जनयो योनिमग्रे॥

सुहागिन के कर्त्तव्य ऋ. / 10/18/7

Imā narīravidhavāḥ supatnīrāñjanena sarpiṣā saṁviśantu I
Anaśravo'namīvāḥ suratnā ārohantu janayo yonimagre II

Duties of lucky wives Ṛg. / 10 / 18 / 7

सौभाग्यशालिनी उत्तम पत्नियाँ अंजन और घृत आदि सुगन्धित पदार्थों से युक्त होकर अपने घरों में जायें तथा बिना आँसू बहाये, रोगरहित रहकर उत्तम रत्नों से सुसज्जित होकर सन्तानोत्पन्न करने वाली बनें तथा अपने घरों में सुखपूर्वक स्थित रहें। (किसी की मृत्यु के पश्चात् के लिए यह निर्देश है।)

The good wives, whose husbands are alive should enter into their houses decorating themselves with collyrium and fragrant things like ghee. They should not shed tears and being healthy and decorated with ornaments be fit to bear their offsprings and stay in their houses happily.

(This is an instruction given to ladies after performing the ceremoney for a dead person.)

(305)

इमे ये नार्वाङ् न परश्चरन्ति न ब्राह्मणासो न सुते करासः।
त एते वाचमभिपद्य पापया सिरीस्तन्त्रं तन्वते अप्रजज्ञयः॥

शिक्षाहीनों के कर्त्तव्य ऋ. / 10/71/9

Ime ye nārvāṅ na paraścaranti na brāhmaṇāso na sute karāsaḥ I
Ta ete vācamabhipadya pāpayā sirīstantraṁ tanvate aprajajñayaḥ II

Occupations of illiterates Ṛg. / 10 / 71 / 9

जो न अपरा विद्या में निपुण हैं और जो न परा विद्या को जानते हैं, न वेदविद्या में पारंगत हैं और नाहीं कर्मकाण्ड को जानते हैं, वे अविद्वान् लोग पापमय वाणी से युक्त होकर केवल सांसारिक व्यवहार करते हुए हल चलाकर कृषि आदि का ही कार्य करते हैं, वे आध्यात्मिक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उन्नति नहीं कर सकते।

Those who are neither expert in the worldly knowledge nor in the spiritual one and who have neither the Vedic education nor know the performance of ritual sacrifices, such illiterate persons use only sinful language and only with worldly practice use to plough the fields and make both ends meet. Such persons cannot make progress in spiritual life.

(306)

इयं विसृष्टिर्यत आ बभूव यदि वा दधे यदि वा न।
यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन्त्सो अङ्ग वेद यदि वा न वेद॥

सृष्टिकर्ता को जानो ऋ./10/129/7

Iyaṁ visṛṣṭiryata ā babhūva yadi vā dadhe yadi vā na।
Yo asyādhyakṣaḥ parame vyomantso aṅga veda yadi vā na veda॥

Know the Creator Ṛg./10/129/7

यह विविध सृष्टि जिससे उत्पन्न होती और जिसमें टिकी हुई है अथवा किसी के विचार में नहीं टिकी हुई है, वही इस का अधिष्ठाता एवं आधार है। वह परमोत्कृष्ट प्रकाशरूप में स्थित है। केवल वही इसके रहस्य को जानता है और दूसरा कोई नहीं जानता।

He, who creates this different kinds of creation and holds also it. It is He, who is the master of it and supports it. He is the domain of supreme light. It is He who knows its secret and nobody else.

(307)

इष्टाधिगमनिमित्तं प्रयोगमेकान्तसाधुमपि मत्वा।
सन्दिग्धमेव सिद्धौ कातरमाशङ्कते चेतः॥

कायर का अवगुण मालविकाग्निमित्रम्/4/5

Iṣṭādhigamanimittaṁ prayogamekāntasādhumapi matvā।
Sandigdhameva siddhau kātaramāśaṅkate cetaḥ॥

Mālavikāgni./4/5

A defect of a coward

इच्छित वस्तु की प्राप्ति के लिए किए जाने वाले उपाय को पूर्णरूप से अनुकूल जानकर भी कायर हृदय उसकी सफलता पर सन्देह ही करता है और अधीर होकर डरता ही रहता है।

To gain desired result though one adopts completely suitable method, yet the coward mind remains doubtful in its success and feels impatience.

(308)

इह क्षेत्रे क्रियते पार्थ कार्यम्,
न वै किञ्चित् क्रियते प्रेत्य कर्म।
कृतं त्वया पारलौक्यं च कर्म,
पुण्यं महत् सद्भिरतिप्रशस्तम्॥

संसार—एक कर्मक्षेत्र महाभा./उद्योग/27/12

Iha kṣetre kriyate Pārtha kāryam,
Na vai kiñcit kriyate pretya karma।
Kṛtaṁ tvayā pāralaukyaṁ ca karma,
Puṇyaṁ mahat sadbhiratipraśastam॥

Mahābhā./Udyoga/27/12

The world — place of work

हे पृथापुत्र युधिष्ठिर! इसी शरीर के द्वारा कार्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किया जा सकता है। मरने के पश्चात् कुछ भी नहीं किया जा सकता। तुमने इसी शरीर द्वारा परलोक सुधारने का और इस लोक में सज्जनों द्वारा पवित्र और प्रशंसनीय माना हुआ कार्य किया है।

O Yuddhiṣṭhira! "A man can do works only through this present body. Nobody can do anywork after death. You have done good works for this and next world, which are sacred and appreciated by the noble persons."

(309)

इह गावः प्रजायेध्वमिहाश्वा इह पूरुषाः।
इहो सहस्रदक्षिणोऽपि पूषा निषीदति॥

श्रेष्ठ घर अथर्व./20/127/12

Iha gāvaḥ prajāyedhvamihāśvā iha pūruṣāḥ।
Iho sahasradakṣiṇo'pi pūṣā niṣīdati॥

A good house Atharva/20/127/12

इसी घर में गौएँ, घोड़े और पुरुष अपनी सन्तानों द्वारा वृद्धि को प्राप्त हों और हजारों को दक्षिणा देने वाला पोषक गृहपति भी इसी घर में रहे। भाव यह है कि घर ऐसा होना चाहिए जिसमें पशुओं और मनुष्यों दोनों के रहने की व्यवस्था हो।

In this very house cows, horses and men live and get their growth. The house master, who donates thousands should also reside in the same house. As a substance, it is said that the house should be built in such a way in which the human beings and animals also have sufficient place.

(310)

इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति
न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः।
भूतेषु भूतेषु विचित्य धीराः
प्रेत्यास्माल्लोकादमृताः भवन्ति॥

जीवन का लक्ष्य केनोपनिषत्/3/5

Iha cedavedīdatha satyamasti,
Na cedihāvedīnmahatī vinaṣṭiḥ।
Bhūteṣu bhuteṣu vicitya dhīrāḥ,
Pretyāsmāllokādamṛtāḥ bhavanti॥

The aim of life Kenopani./3/5

यदि इसी जीवन में तुम प्रभु को जान जाओ तो बहुत अच्छी बात है। यदि नहीं जानोगे तो समझो तुमने अपना मानव-जीवन नष्ट कर बड़ी हानि उठाई है। ज्ञानी लोग प्राणियों की जन्म-मृत्यु की दशा को देखकर और तत्त्वज्ञान प्राप्त करके प्राणों को छोड़कर इस लोक से जाकर अमर-पद प्राप्त कर लेते हैं।

If you know God in this human life, it is very profitable and if you don't know Him then you have spoiled human birth and it is a great loss. The wisemen seeing the birth and death of the creatures know the reality of the world and so they after leaving this world attain everlasting stage, that is salvation.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(311)

इह पुष्टिरिह रस इह सहस्रसातमा भव।
पशून् यमिनि पोषय॥

उपयोगी वस्तुएँ अथर्व./3/28/4

Iha puṣṭiriha rasa iha sahasrasātamā bhava |
Paśūṇ yamini poṣaya ||

Useful things Atharva. / 3 / 28 / 4

हे उत्तम नियमों के पालन कराने वाली बुद्धि के स्वामी! तुम्हारे घर में पोषण और आनन्द देने वाले सब पदार्थ होने चाहिएँ। बहुतों को तुम सुख देने वाले बनो और पशुओं को भी पालो-पोसो।

O the master of such wisdom, which induces you to carry on best principles, there should be all nourishing and mirthful things in your house. May you be able to make others happy and rear also domestic animals!

(312)

इह रतिरिह रमध्वमिह धृतिरिह स्वधृतिः स्वाहा।
उपसृजन् धरुणं मात्रे धरुणो मातरं धयन्।
रायस्पोषमस्मासु दीधरत् स्वाहा॥

आवश्यक वस्तुएँ यजु./8/51

Iha ratiriha ramadhvamiha dhṛtiriha svadhṛtiḥ svāhā |
Upasṛjan dharuṇaṁ mātre dharuṇo mātaraṁ dhayan |
Rāyaspoṣamasmāsu dīdharat svāhā ||

Necessary things Yaju. / 8 / 51

हे गृहस्थो! तुम्हारे इस गृहस्थाश्रम में प्रीति हो, यहाँ धैर्य हो, सब पदार्थों को धारण करने की क्षमता हो और तुम्हारी वाणी और क्रिया सत्य हो। इस घर में शुभ क्रियाओं द्वारा माता में गर्भ धारण की क्षमता हो और पुत्र माता का दूध पीकर बढ़े। इसके अतिरिक्त राज्य को चलाने के लिए भी धन को बढ़ाओ।

O family men! May you live in your houses with love, patience and ability to hold all the things desired for the house! you should always speak the truth and your actions should be truthful. In this house, ladies should be able to get pregnancy with good performances and the babies should grow up sucking mother's milk. Besides, you should earn more money to help your nation.

(313)

इह लोके धनिनां, परोऽपि स्वजनायते।
स्वजनोऽपि दरिद्राणां सर्वदा दुर्जनायते॥

धन का लाभ पञ्च./मित्रभेद./5

Iha loke dhanināṁ paro'pi svajanāyate |
Svajano'pi daridrāṇāṁ sarvadā durjanāyate ||

Pañcata. / Mitrabhe. / 5

Advantage of money

इस संसार में धनिकों के लिए दूसरे भी अपने बन जाया करते हैं, परन्तु निर्धनों के अपने भी सदा उनसे दुष्ट व्यवहार करने लगते हैं।

The persons who have no relations become relatives of the wealthy per-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

sons and the relatives of poor persons become aliens.

(314)

इह विरचयन्साध्वीं शिष्यः क्रियां न निवार्यते,
त्यजति तु यदा मार्गं मोहात्तदा गुरुरङ्कुशः।
विनयरुचयस्तस्मात्सन्तः सदैव निरङ्कुशाः,
परतरमतः स्वातन्त्र्येभ्यो वयं हि पराङ्मुखाः॥

गुरु और शिष्य के कर्त्तव्य मुद्राराक्षस/3/6

Iha viracayansādhvīṁ śiṣyaḥ kriyāṁ na nivāryate,
Tyajati tu yadā mārgaṁ mohāttadā gururaṅkuśaḥ।
Vinayarucayastasmāt santaḥ sadaiva niraṅkuśāḥ,
Parataramataḥ svātantrebhyo vayaṁ hi parāṅmukhāḥ॥

Mudrārā./3/6

Duties of the teacher and the pupil

जब शिष्य अच्छे कार्य करता है, तो उसे कोई रोकता नहीं है, परन्तु जब अज्ञानवश ठीक मार्ग छोड़ देता है, तब गुरु अंकुश के समान तीक्ष्ण हो जाता है। इसलिए विनम्र रहने वाले अच्छे शिष्यों को कभी भी दण्ड का भय नहीं रहता। इसीलिए हम अत्यन्त स्वतन्त्रता नहीं चाहते, नियमों में ही बंधे रहना चाहते हैं।

When a pupil does good work, he is not checked, but if he leaves good path due to his ignorance, then the preacher becomes harsh like a goad. So, all humble and good students don't have fear of checking. So, we are also against too much freedom and wish to be tied by principles.

(315)

इह वैकस्य नामुत्र अमुत्रैकस्य नो इह।
इह वाऽमुत्र चैकस्य नामुत्रैकस्य नो इह॥

प्राणियों के भेद महाभा./वनपर्व/183/88

Iha vaikasya nāmutra amutraikasya no iha।
Iha vā'mutra caikasya, nāmutraikasya no iha॥

Mahābhā./Vanap./183/88

Kinds of creatures

कोई तो पिछले शुभ कर्मों के कारण इस संसार में सुख पाता है परन्तु परलोक में नहीं, दूसरा शुभ कर्मों द्वारा परलोक में सुख पाता है, परन्तु यहाँ नहीं, तीसरे प्रकार का व्यक्ति इस लोक में भी और परलोक में भी सुख पाता है, परन्तु कुछ दुर्भाग्यशाली ऐसे होते हैं कि वे पिछले कुकर्मों के कारण यहाँ भी सुख नहीं पाते और नये कुकर्मों के कारण परलोक में भी दुखी रहते हैं।

Some people are happy in this world due to their noble deeds of previous birth but in the next world they are deprived of happiness due to their bad works. The second type of people enjoy happiness in the next world due to their good works now, but they are not happy here. The third kind of persons enjoy happiness here and in the next world also, but the fourth kind of persons neither in this world nor in the next world enjoy happiness due to their bad works.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(316)

इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम्।
क्रीडन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वगृहे॥

गृहस्थ के लिए आशीर्वाद ऋ./10/85/42

Ihaiva staṁ mā vi yauṣṭaṁ viśvamāyurvyaśnutam।
Krīḍantau putrairnaptṛbhirmodamānau svagṛhe॥

Ṛg./10/85/42

Blessings for family life

हे वर और वधू! तुम दोनों इस गृहस्थ आश्रम में स्थिर रहकर और वियुक्त न होकर पूर्ण आयु का भोग करो तथा अपने घर में रहकर पुत्रों और पौत्रों के साथ खेलते हुए प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवन बिताओ।

O bridegroom and bride! Both of you remain in this house-life steadily. Being united enjoy your full life and playing with your sons and grandsons get pleasure in your house.

ई = ī

(317)

ईर्ष्या मादोऽतिवादश्च संज्ञानाशोऽभ्यसूयता।
तस्मात् प्राज्ञो न माद्येत, सदा ह्येतत् विगर्हितम्॥

अभिमान पापों की जड़ महाभा./उद्योग/45/11

Īrṣyā mādo'tivādaśca sañjñānāśo'bhyasūyatā।
Tasmāt prajño na mādyeta, sadā hyetat vigarhitam॥

Mahābhā./Udyoga/45/11

Pride — the source of sins

अभिमान के कारण ही ईर्ष्या, प्रमाद, बहुत बकवास, अविवेक और गुणों में दोष देखने का स्वभाव बन जाता है। अतः अभिमान नहीं करना चाहिए। यह निंदनीय कार्य है।

Arrogance is the source of jealousy, carelessness, too much talking, absence of discrimination and the nature of finding fault in merits. So one should not be arrogant.

(318)

ईर्ष्याया ध्राजिं प्रथमां प्रथमस्या उतापराम्।
अग्निं हृदय्यं शोकं तं ते निर्वापयामसि॥

ईर्ष्या से बचो अथर्व./6/18/1

Īrṣyāyā dhrājiṁ prāthamāṁ prathamasyā utāparām।
Agniṁ hṛdayyaṁ śokaṁ taṁ te nirvāpayāmasi॥

Keep off jealousy Atharva./6/18/1

हे मनुष्य! तेरी डाह की पहली तथा दूसरी अवस्था को और उससे उत्पन्न हृदयस्थ शोकाग्नि को हम सर्वथा नष्ट करते हैं। भाव यह है कि ईर्ष्या करने से हृदय जलने लगता है, अतः इससे दूर रहना चाहिए।

O man! we, the preachers, destroy fully the first and the second stage of jealousy and the heat of distress generated due to this in your mind. It means that one should not be jealous as it is the source of distress and harm.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(319)

ईर्ष्यी घृणी न सन्तुष्टः क्रोधनो नित्यशङ्कितः।
परभाग्योपजीवी च षडेते नित्यदुःखिताः॥

दुखी व्यक्ति महाभारत/ उद्योग/ प्रजागर / 33 / 90

Īrṣyī ghṛṇī na santuṣṭaḥ krodhano nityaśaṅkitaḥ।
Parabhāgyopajīvī ca ṣaḍete nityaduḥkhitāḥ॥

Mahābhā. / Udyoga / Prajāgara. / 33 / 90

Sad persons

छह प्रकार के ये लोग सदा दुखी रहते हैं – (1) डाह करने वाला, (2) नफरत करने वाला (3) तृप्त न होने वाला, (4) क्रोधी स्वभाव वाला, (5) सदा सन्देह करने वाला, और (6) दूसरों के भाग्य से जीने वाला, अर्थात् दूसरों पर आश्रित रहने वाला।

Six kinds of people always remain in trouble :- (1) jealous, (2) full of hatred, (3) unsatisfied, (4) irritated, (5) incredulous, and (6) depending on the fortune of others or a dependant.

(320)

ईशाना वार्याणां क्षयन्तीश्चर्षणीनाम्।
अपो याचामि भेषजम्॥

जल – एक दवाई ऋ. / 10/9/5

Iśānā vāryāṇāṁ kṣayantīścarṣaṇīnām।
Apo yācāmi bheṣajam॥

Water — a medicine Ṛg. / 10 / 9 / 5

अन्न आदि श्रेष्ठ वस्तुओं के उत्पादक तथा मनुष्यों को जीवन देने वाले जलों द्वारा हम औषध का भी कार्य लें अर्थात् जलों द्वारा चिकित्सा करें।

Water is useful in production of edibles and many other things and all the creatures depend on water for living. Let water be used in medical treatment also.

(321)

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्॥

लोभ का त्याग यजु. / 40 / 1

Īśāvāsyamidaṁ sarvaṁ yatkiñca jagatyāṁ jagat।
Tena tyaktena bhuñjīthāḥ, mā gṛdhaḥ kasya sviddhanam॥

Avoid greed Yaju. / 40 / 1

हे मानव! सृष्टि में जो भी जड़ या चेतन हैं, वे सब उस ऐश्वर्यमय प्रभु से आच्छादित हैं। उस प्रभु द्वारा प्रदत्त पदार्थों से ही तू जीवन में भोग कर। किसी अन्य के धन का लोभ मत कर। (अथवा धन किसका है, वह तो ईश्वर का है। अतः त्यागपूर्वक भोग कर।)

O man, all the things, animate or inanimate are covered by omnipresent God. You should enjoy the things which are given by God to you. Never covet greedily for other's things. (Or Who is the master of this wealth? God is only the master of the wealth. So enjoy it without attachment.)

(322)

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढानीव मायया॥

ईश्वर का स्थान महाभा. / भीष्मपर्व / 42 / 61

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Iśvaraḥ sarvabhūtānāṁ hṛddeśe'rjuna tiṣṭhati।
Bhrāmayan sarvabhūtani yantrārūḍhānīva māyayā॥

Mahābhā. / Bhīṣma / 42 / 61

God's place

हे अर्जुन! वह परमेश्वर सभी उत्पन्न पदार्थों में बैठकर सभी को अपनी माया से इस प्रकार घुमा रहा है, जैसे कोई चालक रथ में बैठी सवारियों को ले जाता है।

O Arjuna! God, is turning all His creation sitting in their heart with His art in such a way as a driver takes away the passengers in a vehicle.

(323)

ईश्वरा भूरिदानेन यल्लभन्ते फलं किल।
दरिद्रस्तच्च काकिण्या प्राप्नुयादिति नः श्रुतिः॥

दान का फल पञ्च. / मित्रसम्प्राप्तिः / 73

Iśvarā bhūridānena yallabhante phalaṁ kila।
Daridrastacca kākiṇyā prāpnuyāditi naḥ śrutiḥ॥

Pañcata. / Mitrasam. / 73

Fruit of donation

कोई धनवान् व्यक्ति बहुत दान देकर पुण्य का जो फल प्राप्त करता है, निर्धन व्यक्ति उतना ही फल एक कौड़ी भी दान करके प्राप्त कर लेता है, ऐसा श्रेष्ठ लोग कहते हैं।

Good persons say that a poor person may gain as much profit by donating even one cowrie as a wealthy person by donating a huge amount.

उ = U

(324)

उक्तो भवति यः पूर्वम्, गुणवानिति संसदि।
न तस्य दोषो वक्तव्यः, प्रतिज्ञाभङ्गभीरुणा॥

प्रशंसित अनिन्द्य है पञ्च. / मित्रभेद / 374

Ukto bhavati yaḥ pūrvaṁ, guṇavāniti saṁsadi।
Na tasya doṣo vaktavyaḥ, pratijñābhaṅgabhīruṇā॥

Pañcata. / Mitrabhe. / 374

Praised doesn't deserve slander

जो अपनी कही हुई बात को झुठलाना नहीं चाहता, उसे ऐसे व्यक्ति के दोष प्रकट नहीं करने चाहिए, जिसे वह किसी सभा में गुणवान् बता चुका है।

One who does not want to be called liar should not tell his fault whom he had praised for his merit in a meeting.

(325)

उचितमनुचितं वा कुर्वता कार्यमादौ,
परिणतिरवधार्या यत्नतः पण्डितेन।
अतिरभसकृतानां कर्मणामाविपत्ते-
र्भवति हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः॥

सोचकर करो भोजप्रबन्ध / 24

Ucitamanucitaṁ vā kurvata kāryamādau,
Pariṇatiravadhāryā yatnataḥ paṇḍitena।
Atirabhasakṛtānāṁ karmaṇāmāvipatte-
rbhavati hṛdayadāhī śalyatulyo vipākaḥ॥

Think before action Bhojaprabandha / 24

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बुद्धिमान् व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि उचित या अनुचित कार्य करने से पूर्व उसके परिणाम को अच्छी प्रकार समझ ले, क्योंकि जो कार्य अविवेकपूर्वक अतिशीघ्रता में किए जाते हैं, उनका परिणाम जीवन की समाप्ति तक काँटे के समान हृदय में चुभता रहता है।

A wise man should consider seriously the result of good or bad work before beginning it, because the results of the works which are begun in haste, their result goes on piercing the heart till the death of the person.

(326)

उत त्वं सख्ये स्थिरपीतमाहुर्नैनं हिन्वन्त्यपि वाजिनेषु।
अधेन्वा चरति माययैष वाचं शुश्रुवाँ अफलामपुष्पाम्॥

सार्थक शिक्षा ऋ. / 10 / 71 / 5

Uta tvaṁ sakhye sthirapītamāhurnainaṁ hinvantyapi vājineṣu।
Adhenvā carati māyayaiṣa vācaṁ śuśruvāṁ aphalāmapuspām॥

Meaningful education Ṛg. / 10 / 71 / 5

विद्वानों की गोष्ठी में एक को तो ज्ञान से पूर्ण कहा जाता है, जिसे वाणी के व्यवहार में कोई हरा नहीं सकता। वाणी और उसके अर्थ को न जानने वाला केवल शब्दाडम्बर द्वारा ही व्यवहार करता है, क्योंकि उसने बिना फलों और फूलों वाली वाणी को ही सुना है; उसकी गहराई तक नहीं पहुँचा।

A person is called learned in the company of scholars because no body can defeat him in the use of language. But those who neither know the language nor its meaning, behave by using bombastic words because he has heard such a language which has neither flowers nor fruits and has not been learnt it seriously.

(327)

उत त्वः पश्यन्न ददर्श वाचमुत त्वः शृण्वन्न शृणोत्येनाम्।
उतो त्वस्मै तन्वं विसस्रे जायेव पत्ये उशती सुवासाः॥

लाभप्रद वाणी ऋ. / 10 / 71 / 4

Uta tvaḥ paśyanna dadarśa vācamuta tvaḥ śṛṇvanna śṛṇotyenāṁ।
Uto tvasmai tanvaṁ visasre jāyeva patye uśatī suvāsāḥ॥

Useful tongue Ṛg. / 10 / 71 / 4

एक मनुष्य तो वाणी को देखता हुआ भी (पढ़ता हुआ भी) अर्थ न समझने के कारण नहीं देख पाता और एक सुनता हुआ भी उसका अर्थ न समझने के कारण नहीं सुन पाता, परन्तु एक प्रकार के मानव के लिए वाणी अपने शरीर को इस प्रकार खोल देती है, जैसे कामना करने वाली पत्नी पति के सामने अपना शरीर निर्वस्त्र कर देती है। अर्थात् जो व्यक्ति वाणी के अर्थों को समझता है, वही उसका पूर्ण लाभ और आनन्द ले सकता है।

Some persons seeing the language cannot see it, because they don't know its meanings. Others hearing it, don't hear, as they cannot know its meanings. But the third kind of persons can enjoy the beauty of the

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

language, as it discovers its complete meanings towards them, like well-dressed wife who removes all clothes towards her husband desiring his full love.

(328)

उत देवा अवहितं, देवा उन्नयथा पुनः।
उतागः चक्रुशं देवा देवा जीवयथा पुनः॥

विद्वानों के कर्त्तव्य ऋ. / 10 / 137 / 1

Uta devā avahitaṁ, devā unnayathā punaḥ।
Utāgaḥ cakruśaṁ devā devā jīvayathā punaḥ॥

Duties of scholars Ṛg. / 10 / 137 / 1

हे विद्वानो! नीचे गिरे हुए को ऊपर उठाओ। और विद्वानो! अपराध करने वाले को भी फिर अपराध करने से बचाकर उसे नया जीवन प्रदान करो।

O learned persons! Pick up the person who has fallen and give a new life to a criminal, and save him from doing crimes.

(329)

उत बालाय पाण्डित्यं पण्डितायोत बालताम्।
ददाति सर्वमीशानः पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरन्॥

कर्मानुसार फल —महाभा. / उद्योग / 31 / 2

Uta bālāya pāṇḍityaṁ paṇḍitāyota bālatām।
Dadāti sarvamīśānaḥ purastācchukramuccaran॥

Mahābhā. / Udyoga / 31 / 2

As fruits as works

वह शुद्ध स्वरूप परमात्मा कर्मानुसार सभी को फल देता हुआ विद्वान् को मूर्ख और मूर्ख को विद्वान् बना देता है।

God, the most pure one, gives the fruits of deeds to every one. So, it is He who makes a fool in to a learned man, while a learned man into a fool.

(330)

उत सन्तमसन्तं वा, बालं वृद्धं च संजय।
उताबलं बलीयांसम्, धाता प्रकुरुते वशे॥

सबका नियंत्रक परमेश्वर महाभा. / उद्योग / 31 / 1

Uta santamasantaṁ vā, bālaṁ vṛdhaṁ ca sañjaya।
Utābalaṁ balīyāṁsaṁ, Dhātā prakurute vaśe॥

Mahābhā. / Udyoga / 31 / 1

Controller of all — God

हे संजय, अच्छे अथवा बुरे व्यक्ति को, बच्चे अथवा बूढ़े को और दुर्बल अथवा बलवान् को वह परमात्मा ही अपने वश में रखता है।

O Sanjay, a good or a bad person, a child or an old one, a weak or a strong person, all are in the control of God.

(331)

उत्क्राम महते सौभगायास्मादास्थानात् द्रविणोदा वाजिन्।
वयं स्याम सुमतौ पृथिव्या अग्निं खनन्त उपस्थे अस्याः॥

ऐश्वर्य-प्राप्ति की शिक्षा यजु. / 11 / 21

Utkrāma mahate saubhagāyāsmādāsthānāt draviṇodā vājin।
Vayaṁ syāma sumatau pṛthivyā agniṁ khananta upasthe asyāḥ॥

Education for wealth Yaju. / 11 / 21

हे धन को उत्पन्न करने की विद्या के विद्वान्,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हमारे महान सौभाग्य को जगाने के लिए आप गुरु बनकर हमें ऐसा ज्ञान दीजिए कि हम अग्निविद्या को अच्छी प्रकार जानकर इस पृथ्वी की गोदी में से रत्नादि को प्राप्त कर ऐश्वर्य सम्पन्न बन सकें।

O learned person, you know the art of earning money. To make us lucky, please with your grace, give us the knowledge of fire-science, so that we may get gems from the lap of the earth and be prosperous.

(332)

उत्खातं निधिशङ्कया क्षितितलं ध्माता गिरेर्धातवो।
निस्तीर्णः सरितां पतिर्नृपतयो यत्नेन सन्तोषिताः॥
मन्त्राराधन-तत्परेण मनसा नीताः श्मशाने निशाः।
प्राप्तः काणवराटकोऽपि न मया, तृष्णेऽधुना मुञ्च माम्॥

तृष्णा कष्टदायक है वैराग्यशतक / 4

Utkhātaṁ nidhi-śaṅkayā kṣititalaṁ dhmātā girerdhātavo,
Nistīrṇaḥ saritāṁ patirnṛpatayo yatnena santoṣitāḥ ll
Mantrārādhana-tatpareṇa manasā nitāḥ śmaśāne niśāḥ,
Prāptaḥ kāṇavarāṭako'pi na mayā, tṛṣṇe'dhunā muñca mām ll

Vairagyaśata. / 4

Desire — the source of tortures

शायद कोई खजाना हाथ लग जाए, इस आशा से भूमि खोद डाली, पहाड़ की धातुओं को भट्टियों में फूँका, समुद्र को पार किया, राजाओं को बड़े यत्न से प्रसन्न किया और मन्त्र की सिद्धि के लिए स्थिर मन से मरघट में रातें भी बिता दीं, परन्तु एक कौड़ी भी तो हाथ न लग पाई। इसलिए हे तृष्णा! अब तू मेरा पीछा छोड़ दे।

Expecting some treasury, I dug the earth, blew the minerals of the mountain, crossed the ocean, pleased the kings after great efforts and spent my nights in the cemetery to get success in a spell, but I did not get even a cowrie. O greed, now please, stop to follow me.

(333)

उत्तमस्यापि वर्णस्य नीचोऽपि गृहमागतः।
पूजनीयो यथायोग्यं, सर्वदेवमयोऽतिथिः॥

अतिथि-सत्कार हितोपदेश/ मित्रलाभ / 64

Uttamasyāpi varṇasya nīco'pi gṛhamāgataḥ l
Pūjanīyo yathāyogyaṁ, sarvadevamayo'tithiḥ ll

Hitopa. / Mitralābha. / 64

Respect a guest

यदि ऊँची जाति के भी घर में कोई नीच जाति का व्यक्ति पहुँच जाए, तो उसे भी यथायोग्य सम्मान देना चाहिए, क्योंकि अतिथि सब देवों का स्वरूप होता है।

If even a low-caste person comes to an upper-caste persons's house, he should be given due respect, as any kind of the guest is the embodiment of all gods.

(334)

उत्तमा तत्त्वचिन्तैव, मध्यमा शास्त्रचिन्तनम्।
अधमा मन्त्रचिन्ता च, तीर्थभ्रान्त्यधमाधमा॥

मानवों के भेद मैत्रेय्युपनिषद् / अ. 2 / 2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Uttamā tattvacintaiva, madhyamā śāstracintanam।
Adhamā mantracintā ca, tīrtha-bhrāntyadhamādhamā ॥

Matreyyupanisad / 2 / 2

Kinds of persons

आध्यात्मिक बातों का चिन्तन सबसे श्रेष्ठ कार्य है, शास्त्रों पर विचार करना मध्यम श्रेणी का कार्य है, किसी एक ही मन्त्र को लेकर उसे ही रटते रहना निम्न कोटि का कार्य है, परन्तु तीर्थभ्रमण नीच से भी नीच कोटि का कार्य है।

Spiritual meditation is the best of all works, study of ethics is the second type of work, repeating only one hymn is the lowest work but visiting places of pilgrimage is more low than even the lowest work.

(335)

उत्तमानेव सेवेत प्राप्तकाले तु मध्यमान्।
अधमांस्तु न सेवेत, य इच्छेद् भूतिमात्मनः ॥

सेवा के योग्य महाभा. / उद्योग / 36 / 20

Uttamāneva seveta prāptakāle tu madhyamān।
Adhamāṁstu na seveta, ya icched bhutimātmanaḥ ॥

Fit to serve Mahābhā. / Udyoga / 36 / 20

अपना कल्याण चाहने वाले को श्रेष्ठ व्यक्तियों की ही सेवा करनी चाहिए। यदि कभी संकट आ पड़े तो मध्यम श्रेणी वालों की भी सेवा कर लेनी चाहिए। परन्तु नीचों की सेवा कभी नहीं करनी चाहिए।

One, who wishes his welfare should serve only great persons and in some times of difficulty he should also serve the middle persons, but in any circumstances he should not serve the low persons.

(336)

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्षं तद्भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः ॥

भारत की भूमि विष्णुपुराण. / 2 / 3 / 1

Uttaraṁ yatsamudrasya, Himādreścaiva dakṣiṇam।
Varṣaṁ tadBhāratam nāma Bhārati yatra santatiḥ ॥

Land of Bhārata Viṣṇupu. / 2 / 3 / 1

समुद्र से उत्तर के भाग और हिमालय से दक्षिण के भाग वाला जो देश है, वही भारत है और उसकी सन्तान भारती कहलाती है।

The northern place from the ocean and southern place from the Himalayas is called Bharata and Bharati is its generation.

(337)

उत्तरादुत्तरं वाक्यं वदतां सम्प्रजायते।
सुवृष्टिगुणसम्पन्नाद्बीजाद्बीजमिवापरम् ॥

अच्छे वक्ता का गुण पञ्चत. / मित्रभेद / 60

Uttarāduttaraṁ vākyaṁ vadatāṁ samprajāyate।
Suvṛṣṭiguṇasampannād bījādbījamivāparam ॥

Pañcata. / Mitrabhe. / 60

Quality of a speaker

बोलने में कुशल लोगों के वाक्य एक के बाद एक बनते जाते हैं, जैसे अच्छी वर्षा होने पर बीज से अन्य बीज उत्पन्न होते चले जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

New sentences are formed one after the other by persons who are expert in speech, as due to good rain new seeds grow from one seed.

(338)

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया, दुर्गं पथस्तत् कवयो वदन्ति॥

अध्यात्म का कठिन मार्ग कठोप. / चौथी वल्ली / 14

Uttiṣṭhata jāgrata prāpya varānnibodhata।
Kṣurasya dhārā niśitā duratyayā, durgaṁ pathastat kavayo vadanti॥

Difficult path of spirituaity Kathopa. / 14

ज्ञानी लोग कहते हैं कि आत्मोन्नति का मार्ग छुरे की धार के समान तीखा है, इसलिए उस पर चलना बहुत कठिन है। हे मनुष्यो! उस पर चलने के लिए उठो, जागो और श्रेष्ठ साधनों को प्राप्त कर और समझ कर उस पथ पर बढ़ने का प्रयास करो।

Spiritually learned people say that the path of spiritual progress is as sharp as a blade and so it is very difficult to walk on this. Therefore you should stand up, keep yourself alert and adopting and understanding some good means try to pass that path.

(339)

उत्तिष्ठत सं नह्यध्वं मित्रा देवजना यूयम्।
संदृष्टा गुप्ता वः सन्तु या नो मित्राण्यर्बुदे॥

सैनिकों के कर्त्तव्य अथर्व. / 11 / 9 / 2

Uttiṣṭhata saṁ nahyadhvaṁ mitrā devajanā yūyam।
Saṁdṛṣṭā guptā vaḥ santu yā no mitrāṇyarbude॥

Warriors' duty Atharva. / 11 / 9 / 2

हे प्रेरक विजयी जनो! तुम उठ खड़े हो जाओ, कवचों को पहनो। हे शूर सेनापति! जो हमारे मित्र हैं, उनका तुम ध्यान रखना और उनकी रक्षा करना।

O, our ideal victorious persons, get up and wear armours. O brave commander-in-chief, protect and take care of our friends.

(340)

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे।
उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशुर्भवा सचा॥

अध्यापकों का कर्त्तव्य ऋ. / 1 / 40 / 1

Uttiṣṭha Brahmaṇaspate devayantastvemahe।
Upa prayantu marutaḥ sudānava Indra prāśurbhavā sacā॥

Duty of teachers Ṛg. / 1 / 40 / 1

हे वेद की रक्षा करने वाले, सम्पूर्ण विद्याओं के ऐश्वर्य से सम्पन्न विद्वान्! विज्ञान द्वारा सब विद्याओं की कामना करने वाले और विद्यादान के इच्छुक हम मानव आपके पास आए हैं। इसी प्रकार अन्य धार्मिक लोग भी आपके पास आते हैं। कृपया, आप शीघ्र ही हमें उत्तम विद्याएँ प्रदान कीजिए।

O, the saviour of the Vedas and prosperous with all kinds of sciences fully learned person, all of us have approached to you, as we are desirous to gain all kinds of sciences

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

and wish to educate others also. In the same way, many other religious people come to you. Please, teach us all kinds of sciences as soon as possible.

(341)

उत्तिष्ठमानस्तु परो नोपेक्ष्यः पथ्यमिच्छता।
समौ हि शिष्टैराम्नातौ वर्त्स्यन्तावामयः स च॥

बढ़ते शत्रु और रोग शिशुपालवध / 2 / 10

Uttiṣṭhamānastu paro nopekṣyaḥ pathyamicchatā।
Samau hi śiṣṭairāmnātau vartsyantāvāmayaḥ sa ca॥

Śisupālavadha. / 2 / 10

Growing enemy and disease

अपने कल्याण की कामना करने वाले का कर्त्तव्य है कि वह बढ़ते हुए शत्रु की उपेक्षा न करे, क्योंकि सभ्य लोग बढ़ते हुए रोग और शत्रु को समान ही मानते हैं।

He, who desires his welfare, should not neglect his advancing enemy, as the increasing disease and the advancing enemy are considered equal by the noble men.

(342)

उत्थानं संयमो दाक्ष्यमप्रमादो धृतिः स्मृतिः।
समीक्ष्य च समारम्भो विद्धि मूलं भवस्य तु॥

उन्नति के मूल कारण महाभा. / उद्योग / 39 / 68

Utthānaṁ saṁyamo dākṣyamapramādo dhṛtiḥ smṛtiḥ।
Samīkṣya ca samārambho viddhi mūlaṁ bhavasya tu॥

Mahābhā. / Udyoga / 39 / 68

Main sources of progress

निम्नलिखित वस्तुएँ उन्नति के मूल कारण हैं :- सावधान रहना, मन पर नियन्त्रण, कार्यकुशलता, उपेक्षा का अभाव, धैर्य, स्मरण रखना और सोच-समझ कर कार्य आरम्भ करना।

Following things are the basic ones for one's progress :- carefulness, control on mind, dexterity, absence of negligence, patience, rememberance and to begin work after seeing all its aspects.

(343)

उत्पादक-ब्रह्मदात्रोः गरीयान् ब्रह्मदः पिता।
ब्रह्म-जन्म हि विप्रस्य प्रेत्य चेह च शाश्वतम्॥

ज्ञानदाता और जन्मदाता मनु. / 2 / 146

Utpādaka-brahmadātroḥ garīyān brahmadaḥ pitā।
Brahma-janma hi viprasya pretya ceha ca śāśvatam॥

Manu. / 2 / 146

The teacher and the birth giver father

जन्म देने वाले और ज्ञान देने वाले इन दो प्रकार के पिताओं में से ज्ञानदाता पिता ही श्रेष्ठ होता है, क्योंकि ज्ञान द्वारा प्राप्त ब्राह्मण का जन्म इस लोक और परलोक में भी चिरस्थायी होता है।

There are two fathers of a Brāhmaṇa, one who gives him physical birth while the other who gives him knowledgebirth. The second one is superior to the first one, as the second birth remains always, even after the physical death in this world and in the other world.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(344)

उत्पाद्य पुत्राननृणांश्च कृत्वा,
वृत्तिं च तेभ्योऽनुविधाय काञ्चित्।
स्थाने कुमारीः प्रतिपाद्य सर्वाः,
अरण्यसंस्थोऽथ मुनिर्बुभूषेत्॥

वानप्रस्थ का समय महाभा. / उद्योग / 37 / 39

Utpādya putrānanṛṇāṁśca kṛtvā,
Vṛttiṁ ca tebhyo'nuvidhāya kāñcit।
Sthāne kumārīḥ pratipādhya sarvāḥ,
Araṇyasaṁstho'tha munirbubhūṣet॥

Mahābhā. / Udyoga / 37 / 39

Time of devotion in a forest

पुत्रों को उत्पन्न कर, उन्हें ऋणरहित कर और उनके व्यवसाय का कोई प्रबन्ध करके तथा सभी कन्याओं का विवाह करके ही मनुष्य जंगल में जाकर मुनियों के समान जीवन बिताए

After giving birth to the sons, and managing their livelihood and getting married all the girls, only then, one should go into the forest for penance like sages.

(345)

उत्सवे व्यसने प्राप्ते दुर्भिक्षे शत्रुसंकटे।
राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः॥

प्रेम के स्थान पञ्च. / अपरीक्षितकारक / 37

Utsave vyasane prāpte durbhikṣe śatrusaṁkaṭe।
Rājadvāre śmaśāne ca yastiṣṭhati sa bāndhavaḥ॥

Places of love Pañcata. / Aparikṣita / 37

किसी प्रसन्नता के अवसर पर, संकट का समय आने पर, अकाल के समय, शत्रु द्वारा आक्रमण होने पर, राजसभा में या श्मशान भूमि में भी जो साथ हो, उसे अपना सम्बन्धी ही समझना चाहिए; अन्य नहीं।

On a happy occasion, in a difficulty, in the time of famine, in the time of attack by an enemy, in the royal court or in the cemetery who remains along with, only he should be considered as a relative and not an outsider.

(346)

उत्साहवन्तः पुरुषा नावसीदन्ति कर्मसु।
उत्साहमात्रमाश्रित्य, प्रतिलप्स्याम जानकीम्॥

उत्साह का महत्त्व वा.रामा. / किष्किन्धा / 1/22

Utsāhavantaḥ puruṣā nāvasīdanti karmasu।
Utsāhamātramāśritya, pratilapsyāma jānākīm॥

Vā. Rā. / Kiṣkindhā / 1 / 122

Importance of zeal

उत्साही पुरुष कर्म करते हुए निराश नहीं हुआ करते। हम भी उत्साह के सहारे सीता जी को प्राप्त कर ही लेंगे।

The zealous people never feel disappointment during their work. We will also get Sita on account of our zeal.

(347)

उत्साहसम्पन्नमदीर्घसूत्रम्,
क्रियाविधिज्ञं विषयेष्वसक्तम्।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शूरं कृतज्ञं दृढसौहृदं च,
लक्ष्मीः स्वयं याति निवासन्हेतोः ॥

लक्ष्मी के आश्रय पञ्च. / मित्रसम्प्राप्ति / 119

Utsāhasampannamadīrg hasūtram,
Kriyāvidhijñaṁ viṣayeṣvasaktam।
Śūraṁ kṛtajñaṁ dṛḍhasauhṛdaṁ ca,
Lakṣmīḥ svayaṁ yāti nivāsanhetoḥ ॥

Pañca. / Mitrasam. / 119

Gainers of prosperity

जो व्यक्ति उत्साही, देरी से काम न करने वाला काम करने का ढंग जानने वाला, विषयों में न फँसने वाला, बहादुर, कृतज्ञ और मित्रता निभाने वाला होता है, लक्ष्मी उसके पास अपना निवास बनाने के लिए स्वयं जाती है।

Lakshmi herself goes and resides in a place with a person who is enthusiastic, does the work without any delay, knows how to do the work, does not get involving any unwanted matters, is brave, grateful and values friendship.

(348)

उत्साहो बलवानार्य! नास्त्युत्साहात् परं बलम्।
सोत्साहस्य हि लोकेषु, न किञ्चिदपि दुर्लभम् ॥

उत्साह का महत्त्व वाल्मीकिरामा. / किष्किन्धा / 1 / 121

Utsāho balavānārya! Nastyutsāhāt paraṁ balam।
Sotsāhasya hi lokeṣu, na kiñcidapi durlabham॥

Vā. Rā. / Kiṣkindhā / 1 / 121

Advantage of zeal

हे पूजनीय राम जी! उत्साह ही बलशाली होता है। उत्साह से बढ़कर कोई दूसरा बल नहीं होता। उत्साह के द्वारा संसार में कोई भी वस्तु अप्राप्य नहीं रह जाती।

O respected Ram! It is zeal, which is powerful. There is nothing more powerful than zeal. It is zeal, due to which nothing is unobtainable in this world.

(349)

उदयति यदि भानुः पश्चिमे दिग्विभागे,
प्रचलति यदि मेरुः शीततां याति वह्निः।
विकसति यदि पद्मं पर्वताग्रे शिलायाम्,
न भवति पुनरुक्तं भाषितं सज्जनानाम् ॥

सज्जनों का वचन शिवपुराण / पार्वतीखंड / 25 / 69

Udayati yadi bhānuḥ paścime digvibhāge,
Pracalati yadi meruḥ, śītatāṁ yāti vahniḥ।
Vikasati yadi padmaṁ parvatāgre śilāyām,
Na bhavati punaruktaṁ bhāṣitaṁ sajjanānām॥

Śivapu. / Pārvatī / 25 / 69

Word of good persons

हो सकता है कि सूर्य पश्चिम दिशा से निकलने लगे, मेरु पर्वत अपना स्थान छोड़ दे, आग ठण्डी लगने लगे और कमल पहाड़ की चोटी पर चट्टान में से खिलने लगे, परन्तु फिर भी सज्जनों का वचन झूठा नहीं हो सकता; अर्थात् वे सभी दशाओं में अपनी प्रतिज्ञा का पालन करते हैं।

The sun may rise from the west direction, the Meru mountain may leave its place, fire may be cold and a

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

lotus may grow on top of a mountain from a rock, but the words spoken by good persons do not change. In all the conditions, they keep up their promise.

(350)

उदीरितोऽर्थः पशुनाऽपि गृह्यते,
हयाश्च नागाश्च वहन्ति चोदिताः।
अनुक्तमप्यूहति पण्डितो जनः,
परेङ्गितज्ञानफला हि बुद्धयः॥

इशारों को समझना पञ्चतन्त्र. / मित्रभेद / 41

Udīrito'rthaḥ paśunā'pi gṛhyate,
Hayāśca nāgāśca vahanti coditāḥ।
Anuktamapyūhati paṇḍito janaḥ,
Pareṅgitajñānaphalā hi buddhayaḥ॥

Pañca. / Mitrabhe. / 41

Understanding of hints

पशु भी इशारे को समझ लेते हैं। घोड़े और हाथी संकेत के अनुसार ही भार ढोते हैं। बुद्धिमान् मनुष्य न कही हुई बात को भी कल्पना द्वारा समझ जाता है। दूसरों के इशारों को समझ लेने में ही तो बुद्धि की सफलता है।

Even animals understand the given hints. Horses and elephants carry their loads according to the indications given to them. A wise man understands even the unsaid thing. The success of the intellect is in the understanding of the hints given by others.

(351)

उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः।
दृशे विश्वाय सूर्यम्॥

परमात्मा के बोधक ऋ. / 1/ 50/1

Udu tyaṁ jātavedasaṁ Devaṁ vahanti ketavaḥ।
Dṛśe visvāya sūryam॥

Signs to know God Ṛg. / 1 / 50 / 1

सर्वव्यापक सर्वज्ञ और सृष्टिकर्ता उस परमात्मा का बोध कराने के लिए संसार में अनेक संकेतक चिह्न हैं।

To feel the existence of God, this world has many signs which help to recognize the existence of the Omnipresent, Omniscient and Creater of the universe, that God.

(352)

उद्धरेदात्मनात्मानं मज्जमानं यथाऽम्भसि।
भोगनद्यतिवेगेन ज्ञानवृक्षं समाश्रयेत्॥

सत्यज्ञान का लाभ अग्निपु. / द्वि. खण्ड/ 184 / 21

Uddharedātmanātmānaṁ majjamānaṁ yathā'mbhasi।
Bhoganadyativegena jñānavṛkṣaṁ samāśrayet॥

Agnipu. / II / 184 / 21

Advantage of true knowledge

जैसे जल में डूबता हुआ व्यक्ति अपने आप को बचाने का स्वयं प्रयास करता है, उसी प्रकार भोगों की नदी के तेज बहाव के कारण भोगरूप जल में डूबने वाले को सत्यज्ञान रूपी वृक्ष का आश्रय लेकर अपना उद्धार करना चाहिए।

As a drowning man tries to save

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

himself, in the same way the man who is drowning in the fast flowing water of passion-river, should take the support of the tree of spiritual knowledge to save himself.

(353)

उद्यमेन हि सिध्यन्ति, कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य, प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥

परिश्रम का महत्त्व पञ्च. / मित्रसम्प्राप्ति / 129

Udyamena hi sidhyanti, kāryāṇi na manorathaiḥ।
Na hi suptasya siṁhasya, praviśanti mukhe mṛgāḥ॥

Panca. / Mitrasam. / 129

Advantage of efforts

सभी कार्य परिश्रम से ही सिद्ध होते हैं, केवल इच्छा करने से नहीं। सोए हुए शेर के मुख में मृग स्वयं आकर प्रवेश नहीं करते।

All works need hardwork for their success. If a lion remains sleeping, no deer will himself enter into his mouth.

(354)

उद्यानं ते पुरुष नावयानं जीवातुं ते दक्षतातिं करोमि।
आ हि रोहेममृतं सुखं रथमथ जिर्विर्विदथमा वदासि॥

मानव, तेरी उन्नति ही हो अथर्व. / 8 / 1 / 6

Udyānaṁ te puruṣa nāvayānaṁ jīvātuṁ te dakṣatātiṁ karomi।
Ā hi rohemamṛtaṁ sukhaṁ rathamatha jirvirvidathamā vadāsi॥

May you progress Atharva. / 8 / 1 / 6

हे मानव! तेरी उन्नति ही हो, पतन न हो। मैं तेरी जीविका और शक्ति का प्रबन्ध करता हूँ। तू इस अमर सुखदायक रमणीय आध्यात्मिकता के रथ पर सवार हो जा। फिर स्तुति-योग्य होकर तू अपना ज्ञान दूसरों को देता रह।

O man! May you prosper and never fall down! I shall manage your livelihood and power. You must ride on the spiritual chariot which is everlasting and mirthful. After that, being a praiseworthy and ideal man, you should impart your knowledge to others also.

(355)

उद्योगिनं सततमत्र समेति लक्ष्मी-
दैवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या,
यत्ने कृते यदि न सिध्यति, कोऽत्र दोषः॥

भाग्य से बड़ा पुरुषार्थ पञ्च. / मित्रभेद / 149

Udyoginaṁ satatamatra smeti lakṣmī-
rdaivena deyamiti kāpuruṣā vadanti।
Daivaṁ nihatya kuru pauruṣamātmaśaktyā,
yatne kṛte yadi na sidhyati ko'tra doṣaḥ॥

Pañca. / Mitrabhe. / 149

Hardwork is saperior to the luck

परिश्रमी व्यक्ति के पास ही धन-दौलत लगातार आती है। हमारे भाग्य में जो होगा, वह मिल जाएगा, ऐसी बातें तो कायर लोग ही कहते हैं। इसलिए भाग्य की परवाह न करके यथाशक्ति पुरुषार्थ करो। यदि यत्न करने पर भी सफलता न मिले, तब तुम्हारा कोई दोष नहीं (अथवा त्रुटि क्या रह गई है, इस पर विचार करना चाहिए)।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

The person, who is a hardworker, gains wealth regularly. 'Our luck will give us' is said only by coward people. So, ignoring your luck you should try your best. Inspite of your hard work, if you not succeed, then that is not your fault (or you must find out the defects in the method work done).

(356)

उद्वयं तमसस्परि ज्योतिष्पश्यन्त उत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्॥

सूर्य के उत्पादक को जानो ऋ. / 1 / 50 / 10

Udvayaṁ tamasaspari jyotiṣpaśyanta uttaram |
Devaṁ devatrā sūryamaganma jyotiruttamam ||

Ṛg. / 1 / 50 / 10

Know God seeing the sun

हम लोग अन्धकार को नष्ट करने वाले सूर्य रूप उत्तर ज्योति को देखकर, सभी ज्योति-पिण्डों में वर्तमान सबसे श्रेष्ठ ज्योतिःस्वरूप परमात्मा को सब प्रकार से प्राप्त हों।

All of us after seeing the better light of the sun, should reach to the best light of God, who is the embodiment of light and remains in all luminous bodies.

(357)

उपकर्त्राऽरिणा सन्धिर्न मित्रेणापकारिणा।
उपकारापकारौ हि लक्ष्यं लक्षणमेतयोः॥

सन्धि के योग्य शिशुपालवध/2/37

Upakartrā'riṇā sandhirna mitreṇāpakāriṇā |
Upakārāpakarau hi lakṣyaṁ lakṣaṇametayoḥ ||

Fit for treaty Śiśupālavadh. / 2 / 37

यदि शत्रु उपकारी हो तो उससे सन्धि कर लेनी चाहिए और यदि मित्र हानि करने वाला हो, तो उससे सन्धि करना उचित नहीं। वस्तुतः, उपकार करने वाला ही मित्र होता है और अपकार (हानि) करने वाला ही शत्रु होता है; यही इन दोनों की पहचान है।

If an enemy is favourable, he is fit for compromising, but if a friend is harmful, he is not fit for compromising. Favouring and harming are the definitions of a friend and an enemy respectively in the true sense of the word.

(358)

उपकाराच्च लोकानां निमित्तान्मृगपक्षिणाम्।
भयाल्लोभाच्च मूर्खाणां, मैत्री स्याद्दर्शनात् सताम्॥

मित्रता के कारण पञ्च./मित्रसम्प्राप्ति/37

Upakārācca lokānāṁ nimittānmṛgapakṣiṇām |
Bhayāllobhācca mūrkhāṇāṁ, maitrī syaddarśanāt satām ||

Pañca. / Mitrasam. / 37

Sources of friendship

सामान्य लोगों की मित्रता एक-दूसरे का भला करने से होती है। पशुओं और पक्षियों की मित्रता किसी कारण विशेष से होती है। मूर्खों की मित्रता डर या लोभ से होती है और सज्जनों की मित्रता एक-दूसरे को देखने से ही हो जाती है।

The friendship of general people

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

takes place due to mutual interest. The friendship of animals and birds is due to some reason. The friendship of fools takes place on account of fear or greed. But the friendship of good persons takes place just by looking at each other.

(359)

उपकारिषु यः साधुः साधुत्वे तस्य को गुणः।
अपकारिषु यः साधुः स साधुः सद्भिरुच्यते॥

उदार व्यक्ति का लक्षण पञ्च./मित्रभेद/191

Upakāriṣu yaḥ sādhuḥ, sādhutve tasya ko guṇaḥ।
Apakāriṣu yaḥ sadhuḥ, sa sādhuḥ sadbhirucyate॥

Pañca. / Mitrabhe. / 191

Definition of the generous

भला करने वाले की यदि किसी ने भलाई कर दी, तो उसकी भलाई को महत्त्व कैसे दें, वह तो केवल लेन-देन है। भला उदार व्यक्ति तो वह है, जो बुरा करने वाले का भी भला ही करता है।

If a man favours a man for the favour done to him then this favour has no importance, because this is the exchange of the favour. Only that man can be called generous, who favours even the man who has harmed him.

(360)

उपतिष्ठन्ति वै सन्ध्यां ये न पूर्वां न पश्चिमाम्।
व्रजन्ति ते दुरात्मानस्तामिस्रं नरकं नृप॥

सन्ध्या न करने से हानि विष्णुपुराण/3/11/104

Upatiṣṭhanti vai sandhyāṁ ye na pūrvāṁ na paścimām।
Vrajanti te durātmānastāmisraṁ narakaṁ nṛpa॥

Disadventage due to absence of meditation Viṣṇupu. / 3 / 11 / 104

जो लोग न प्रातःकाल और न ही सायंकाल के समय भगवान् की उपासना करते हैं, वे दुष्टात्मा अन्धकारपूर्ण नरक में चले जाते हैं।

Those, who neither sit in meditation of God in the morning, nor in the evening also, such bad souls go into the hell, which is full of darkness.

(361)

उप त्वाग्ने दिवे दिवे दोषावस्तर्धिया वयम्।
नमो भरन्त एमसि॥

उपासना के समय ऋ/1/1/7

Upa tvāgne dive dive doṣāvastardhiyā vayam।
Namo bharanta emasi॥

Times of meditation Ṛg. / 1 / 1 / 7

हे प्रकाश-स्वरूप प्रभु! हम लोग प्रतिदिन प्रातः और सायं अपने मन को आप में स्थिर करके आपको नमस्कार करते हुए आपके पास पहुँचें।

O the embodiment of light, dear God! May all of us approach you in the morning and in the evening every day concentrating our minds in you and saluting to you.

(362)

उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये।
पयःपानं भुजङ्गानां केवलं विषवर्धनम्॥

उपदेश के अयोग्य पञ्च./मित्रभेद/340

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Upadeśo hi mūrkhāṇāṁ prakopāya na śāntaye |
Payaḥpānaṁ bhujaṅgānāṁ kevalaṁ viṣavardhanam ||

Unfit to preach Pañca. / Mitrabhe. / 340

जैसे साँपों को दूध पिलाने से उनका विष ही बढ़ता है, ठीक उसी प्रकार मूर्खों को उपदेश देने से उनका क्रोध बढ़ जाता है; उपदेश से वे शान्त नहीं होते।

If snakes are given milk to drink, it will increase only their poison, So is the case with fools, whose rage increases if they are advised and that advice will not make them calm.

(363)

उपनीय गुरुः शिष्यं, शिक्षयेच्छौचमादितः।
आचारमग्निकार्यं च, सन्ध्योपासनमेव च॥

प्रथम शिक्षणीय कर्त्तव्य मनु./2/69

Upanīya guruḥ śiṣyaṁ, śikṣayecchaucamāditaḥ |
Ācāramagnikāryaṁ ca, sandhyopāsanameva ca ||

Manu. / 2 / 69

To teach first to the pupil

यज्ञोपवीत देने के पश्चात् गुरु को चाहिए कि वह सर्वप्रथम शिष्य को स्वच्छ रहना सिखाए। उसके बाद यज्ञ-हवन और सन्ध्या-उपासना आदि सिखाए।

After giving the sacred thread to the pupil, the preacher must first of all teach him to clean himself. After that, he should give the training of the fire-sacrifice, worshipping and meditation etc.

(364)

उपविष्टः सभामध्ये यो न वक्ति स्फुटं वचः।
तस्माद् दूरेण स त्याज्यो, न्यायं वा कीर्तियेदृतम्॥

सभा से निकालने योग्य पञ्च./काको/106

Upaviṣṭaḥ sabhāmadhye yo na vakti sphuṭaṁ vacaḥ |
Tusmād dūreṇa sa tyājyo, nyāyaṁ vā kirtiyedṛtam ||

Deserving removal from the meeting Pañca. / Kāko. / 106

जो व्यक्ति सभा में बैठ कर स्पष्ट बात नहीं कहता, उसे सभा से निकाल देना चाहिए, अथवा उसे सत्य कहना चाहिए।

If a man sitting in a meeting does not tell clear and exact thing, he should be removed from there, or he should say the truth.

(365)

उपस्थितस्य कामस्य प्रतिवादो न विद्यते।
अपि निर्मुक्तदेहस्य, कामरक्तस्य किं पुनः॥

कामवासना की शक्ति महाभा./उद्योग/39/44

Upasthitasya kāmasya prativādo na vidyate |
Api nirmukta-dehasya, kāmaraktasya kiṁ punaḥ ||

Mahābhā. / Udyoga / 39 / 44

Power of sexuality

जब जीवन-मुक्त के मन में कामवासना जागृत होती है, तो उससे बचने का उपाय उसे भी नहीं सूझता। ऐसी दशा में जो लोग कामवासना में लिप्त हैं, उनकी बात का तो कहना ही क्या!

When saxual passion provokes the man, free from physical things,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

he becomes unable to find any means to control himself. In such circumstances, the persons who are generally passionate, how can they control their passion?

(366)

उपह्वरे गिरीणां सङ्गमे च नदीनाम्।
धिया विप्रो अजायत॥

शिक्षा का परिवेश ऋ./8/6/28

Upahvare giriṇāṁ saṅgame ca nadīnām |
Dhiyā vipro ajāyata ||

Environment for education Ṛg. / 8 / 6 / 28

पर्वतों की उपत्यकाओं और नदियों के सङ्गम पर ही बुद्धिमान् विद्वान् पैदा हुआ करते हैं। अर्थात् शिक्षा के लिए ऐसे ही प्राकृतिक स्थल उपयुक्त होते हैं।

In the valleys of the mountains and at the junction of rivers, wise scholars come into existence. It means such natural places are helpful for good education.

(367)

उपायेन जयो यादृग्रिपोस्तादृङ् न हेतिभिः।
उपायज्ञोऽल्पकायोऽपि न शूरैः परिभूयते॥

उपायों का महत्त्व पञ्च./मित्रभेद/152

Upāyena jayo yādṛgripostādṛṅna hetibhiḥ |
Upāyajño'lpakāyo'pi na śūraiḥ paribhūyate ||

Pañca. / Mitrabhe. / 152

Importance of methods

युक्तिपूर्वक शत्रु को जिस प्रकार जीता जा सकता है, वैसे अस्त्र-शस्त्रों से नहीं। युक्तियाँ जानने वाला छोटे शरीर वाला भी शूरवीरों से हार नहीं खाता।

As an enemy can be conquered through a plan, so he cannot be with weapons. The person who knows plans, cannot be defeated even by a brave person, inspite of his small body.

(368)

उपार्जितानामर्थानां त्याग एव हि रक्षणम्।
तडागोदर-संस्थानां परीवाह इवाम्भसाम्॥

धन का सदुपयोग पञ्च./मित्रसम्प्राप्ति/144

Upārjitānāmarthānāṁ tyāga eva hi rakṣaṇam |
Taḍāgodarsaṁsthānāṁ parīvāha ivāmbhasām ||

Pañca. / Mitrabhe. / 144

Proper use of earned money

जमा किए हुए अधिक धन को किसी उपयोगी कार्य में लगा देने से ही उसका बचाव हो सकता है। जैसे तालाब में बढ़े हुए जल को निकाल देने से ही तालाब बँधा रहता है, अन्यथा बाँध टूट जाने से सारा तालाब जलहीन हो सकता है।

If one has earned superfluous money, then that should be used in a good work for its safety. When a tank has superfluous water, then it is flown out and then the tank is not harmed.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(369)

उपेक्षितः क्षीणबलोऽपि शत्रुः,
प्रमाददोषात् पुरुषैर्मदान्धैः।
साध्योऽपि भूत्वा प्रथमं ततोऽसा-
वसाध्यतां व्याधिरिव प्रयाति॥

शत्रु उपेक्षणीय नहीं पञ्च./मित्रभेद/179

Upekṣitaḥ kṣīṇabalo'pi śatruḥ,
Pramādadoṣāt puruṣairmadāndhaiḥ।
Sādhyo'pi bhūtvā prathamaṁ tato'sa-
vasādhyatāṁ vyādhiriva prayāti॥

Pañca. / Mitrabhe / 179

Not to neglect an enemy

जब अभिमान से अन्धे हुए पुरुषों की लापरवाही के कारण दुर्बल शत्रु की परवाह नहीं की जाती, तो जो शत्रु पहले सरलता से जीता जा सकता था, वही बाद में इस प्रकार अजेय हो जाता है, जैसे बढ़ा हुआ रोग असाध्य हो जाता है।

When due to the negligence of the persons who are blind on account of their arrogance, a conquerable weak enemy is over-looked, he becomes inconquerable after some time like the disease which has increased and has become incurable.

(370)

उभे सत्ये क्षत्रियैतस्य विद्धि,
मोहान्मृत्युः सम्मतोऽयं कवीनाम्।
प्रमादं वै मृत्युमहं ब्रवीमि,
तथाऽप्रमादममृतत्वमेव॥

लापरवाही और सावधानी महाभा./उद्योग/42/4

Ubhe satye kṣatriyaitasya viddhi,
Mohānmṛtyuḥ sammato'yaṁ kavīnām।
Pramādaṁ vai mṛtyumahaṁ bravīmi,
Tathā'pramādamamṛtatvameva॥

Mahābhā. / Udyoga / 42 / 4

Carelessness and carefulness

हे क्षत्रिय! इन दो सचाइयों को समझ लो। समझदार लोग कहते हैं कि मोह के द्वारा मृत्यु होती है, परन्तु मैं तो लापरवाही को ही मृत्यु मानता हूँ और सावधानी को ही जीवन समझता हूँ।

O warrior, understand these two truths. The wisemen say that death is caused by loss of consciousness, but in my opinion, negligence is death and alertness is life.

(371)

उलूकयातुं शुशलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम्।
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र॥

दण्डनीय व्यक्ति ऋ./7/104/22

Ulūkayātuṁ śuśalūkayātuṁ jahi śvayātumuta kokayātum।
Supaṇayātumuta gṛdhrayātuṁ dṛṣadeva pra mṛṇa rakṣa Indra॥

Punishable persons Ṛg. / 7 / 104 / 22

हे ऐश्वर्यशाली, दुष्टों को दण्ड देने वाले परमेश्वर अथवा राजन्! बड़ा समुदाय बनाकर, छोटा समुदाय बनाकर तथा शीघ्रतापूर्वक झपट कर जो आक्रमण करते हैं, अथवा विभक्त होकर जो हमला करते हैं, जो निरपराधों को सताते हैं एवं लोभी होकर जो दूसरों के धन की कामना से झपटते हैं, उन सबको शस्त्रों से ऐसे नष्ट कर दीजिए, जैसे किसी को पत्थरों से कूट-कूट कर मसल दिया जाता है, और हम सबकी रक्षा कीजिए।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

O the most prosperous and controller of bad persons God or king! The persons who attack in big group or small group, or swiftly or separately and who torture innocent people or being greedy who plunder the money of others, all such persons should be killed with weapons, in such a way as something is crushed with a stone.

ऊ = Ū

(372)

ऊर्ध्वं प्राणा ह्युत्क्रामन्ति, यूनः स्थविर आयति।
प्रत्युत्थानाभिवादाभ्याम्, पुनस्तान् प्रतिपद्यते॥

बड़ों के प्रति कर्त्तव्य मनु./2/120

Ūrdhvaṁ pṛāṇā hyutkrāmanti, yūnaḥ sthavira āyati।
Pratyutthānābhivādābhyāṁ, punastān pratipadyate॥

Duty towards elders Manu. / 2 / 120

किसी बड़े व्यक्ति के आने पर छोटे व्यक्ति के प्राण ऊपर उठने लगते हैं। इसलिए बड़ों के आने पर खड़े होकर उन्हें प्रणाम करना चाहिए। इससे प्राण स्वस्थ हो जाते हैं।

When an elder one comes, the breathing of a young one goes up at once. So, he should stand up on seeing the elders and greet them. This action will set his breathing as desired.

(373)

ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतयेऽस्मिन् वाजे शतक्रतो।
समन्येषु ब्रवावहै॥

शासक का कर्त्तव्य ऋ./1/30/6

Ūrdhvastiṣṭhā na ūtaye'smin vāje Śatakrato।
Samanyeṣu bravāvahai॥

The duty of the rule Ṛg. / 1 / 30 / 6

अनेक प्रकार के कर्मों को अनेक प्रकार की बुद्धियों द्वारा करने वाले शासक! हमारी रक्षा के लिए इस युद्ध में सर्वोपरि विराजमान रहिये। हम आप को युद्ध से भिन्न कार्यों में भी स्मरण करते हैं, ताकि आप हमारी सब प्रकार से सहायता करें।

O king! you are able to do different kinds of works with your different kinds of plannings. Kindly, be superior-most to save us in this war. We remember you in other works also, which are different from the war, so that you can help us in all kinds of conditions.

(374)

ऊर्ध्वो नः पाह्यंहसो नि केतुना विश्वं समत्रिणं दह।
कृधी न ऊर्ध्वान् चरथाय जीवसे विदा देवेषु नो दुवः॥

शासक का कर्त्तव्य ऋ./1/36/14

Urdhvo naḥ pāhyaṁhaso ni ketunā viśvaṁ samatriṇaṁ daha।
Kṛdhī na ūrdhvān carathāya jīvase vidā deveṣu no duvaḥ॥

Duty of the ruler Ṛg. / 1 / 36 / 14

हे हमारे उच्चतम शासक! हमें चोरी आदि के पापों से बचाइए और अपने प्रकृष्ट ज्ञान द्वारा सम्पूर्ण नाशक दुष्ट लोगों को भस्मसात् कर दीजिए। हमें उच्च जीवन बिताने और शुद्ध आचरण के लिए समर्थ बनाइए। धार्मिक विद्वानों की सेवा के लिए भी हमें प्रेरित कीजिए।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

O our superior-most ruler! Save us from the sins like theft and kill all destructive bad persons with your best policy. Help us to be able to spend our life nobly and with pure character. Besides, inspire us to serve the religious scholars.

ऋ

(375)

ऋग्यजुस्साम-संज्ञेयं त्रयी वर्णावृतिर्द्विज।
एतामुज्झति यो मोहात् स नग्नः पातकी द्विजः ॥

पापी द्विज विष्णुपुराण / 3 / 17 / 5

Ṛgyajussāma-sañjñeyaṁ trayī varṇāvṛtirdvija |
Etāmujjhati yo mohāt sa nagnaḥ pātakī dvijaḥ ||

Viṣṇupu. / 3 / 17 / 5

Sinful Dvija

ऋक्, यजुः और साम यह तीन प्रकार की विद्या त्रयी कहलाती है, जो ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वर्णों के लिए आच्छादनरूप है। इस त्रयी को जो अज्ञान से छोड़ देता है, वह द्विज नंगा और पापी कहलाता है।

Ṛg, yajuḥ, and sama are the three kinds of knowledge and called 'Trayī', which covers up three castes brahmaṇas, kṣatriyas and vaiśyas. The person who leaves this group of three is called naked and sinful.

(376)

ऋचं वाचं प्रपद्ये मनो यजुः प्रपद्ये साम प्राणं प्रपद्ये।
चक्षुः श्रोत्रं प्रपद्ये वागौजः सहौजो मयि प्राणापानौ ॥

वेदों से प्राप्य सामर्थ्य यजु. / 36 / 1

Ṛcaṁ vācaṁ prapadye, mano yajuḥ prapadye sāma prāṇaṁ prapadye |
Cakṣuḥ śrotraṁ prapadye, vāgaujaḥ sahaujo mayi prāṇāpānau ||

Abilities from the Vedas Yaju. / 36 / 1

मुझमें प्राण और अपान दृढ़ हों, वाणी प्रभावशाली हो, साथ ही मैं शारीरिक बल से भी सम्पन्न बनूँ। इसके लिए ऋग्वेद द्वारा वाक्-शक्ति, यजुर्वेद द्वारा मननशक्ति और सामवेद द्वारा प्राणशक्ति को प्राप्त करूँ।

May my Prāna and Apāna be strong, my tongue effective and may I have proper physical strength. For this, I may obtain power of tongue from the Ṛigveda, considering power from the Yajurveda and power of Prāṇa from the Sāmaveda.

(377)

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदुः ।
यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति, य इत्तद् विदुस्त इमे समासते ॥

ईश्वर ज्ञान - परमलक्ष्य ऋ. / 1 / 164 / 39

Ṛco akṣare parame vyoman, yasmin devā adhi viśve niṣeduḥ |
Yastanna veda kimṛcā kariṣyati, ya ittad vidusta ime samāsate ||

Ṛg. / 1 / 164 / 39

Supreme aim to know God

जिस अनश्वर, सबसे उत्कृष्ट, आकाश के समान

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्यापक परमेश्वर में सम्पूर्ण सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, वायु आदि देवता स्थित हैं, उस परमेश्वर को यदि मनुष्य न जान पाया, तो वह वेदों को पढ़कर क्या लाभ उठा सकता है? अर्थात् उसका वेदपाठ व्यर्थ है। जो उस ब्रह्म को जान लेते हैं, वे ही उसमें स्थिर हो कर परम आनन्द को प्राप्त करते हैं।

The sun, the earth, air and all other gods remain in superior God, who is everlasting, best of all, and omnipresent like the sky. If a man does not know that God, then his study of the Vedas is useless. Those who know that supreme God, only they enjoy full bliss remaining in Him.

(378)

ऋणशेषं चाग्निशेषं शत्रुशेषं तथैव च।
व्याधिशेषं च निःशेषं कृत्वा प्राज्ञो न सीदति॥

समापनीय पञ्च. / काको. / 218

Ṛṇaśeṣaṁ cāgniśeṣaṁ śatruśeṣaṁ tathaiva ca |
Vyādhiśeṣaṁ ca niḥśeṣaṁ kṛtvā prājño na sīdati ||

Pañca. / Kāko. / 218

Things to be rooted off

जो बुद्धिमान् व्यक्ति कर्ज, आग, शत्रु और रोग के बचे हुए अंशों को भी नष्ट कर देता है, वह कभी दुःखी नहीं होता।

A wise person who ends fully debt, fire, enemies and diseases, enjoys happy life always and removes all his sadness.

(379)

ऋतस्य दातारमनुत्तमस्य,
विधिं निधीनामपि लब्धविद्याः।
ये नाद्रियन्ते गुरुमर्चनीयम्,
पापान् लोकांस्ते व्रजन्त्यप्रतिष्ठाः॥

पापी शिष्य महाभारत / आश्रमवासी / 76 / 64

Ṛtasya dātāramanuttamasya,
Vidhiṁ nidhīnāmapi labdhavidyāḥ |
Ye nādriyante gurumarcanīyam,
Pāpān lokaṁste vrajantyapratiṣṭhāḥ ||

Sinful pupils Mahābhā. / Āśram. / 76 / 64

सब वस्तुओं से श्रेष्ठ और कोषों का भी जो बनाने वाला है, ऐसे ज्ञान को देने वाले पूजनीय गुरु का जो लोग विद्या प्राप्त करने के बाद आदर नहीं करते, वे इधर-उधर भटकते हुए, उन स्थानों को पहुँचते हैं, जहाँ पापी निवास करते हैं; अर्थात् उन्हें बहुत कष्ट भोगने पड़ते हैं।

The persons who after gaining knowledge which is incomparable and is the source of all treasuries, do not give respect to their honourable teacher, they are never respected and go to such a hell, where sinful people reside. It means that they have to bear lot of trouble.

(380)

ऋतस्य हि शुरुधः सन्ति पूर्वीर्ऋतस्य धीतिर्वृजनानि हन्ति। ऋतस्य श्लोको बधिराततर्द कर्णा बुधानः शुचमान आयोः॥

सत्य की शक्ति ऋ. / 4 / 23 / 8

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Ṛtasya hi śurudhaḥ santi pūrvīṛtasya dhītiḥ vṛjanāni hanti l
Ṛtasya śloko badhirātatarda karṇā budhānaḥ śucamāna āyoḥ ll

Power of the truth Ṛg. / 4 / 23 / 8

प्राचीन काल से ही शीघ्र ही पापों को रोकने वाली सत्य की शक्तियाँ प्रसिद्ध हैं। सत्य-व्यवहार से पाप नष्ट हो जाते हैं। सच्चाई का उच्चारण बहरों के भी कान खोल देता है और मनुष्य में ज्ञान उत्पन्न कर उसे पवित्र बना देता है।

The powers of the truth are famous, which hinder sins immediately. The practice of the truth destroys sins. The speech full of the truth opens the ears even of the deaf person and it generates knowledge in him and makes him pious.

(381)

ऋषयस्तपसा वेदानध्यैषन्त दिवानिशम्।
अनादिनिधना नित्या, वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा॥

वेदाध्ययन महाभा. / शान्ति / 232 / 24

Ṛṣayastapasā Vedānadhyaiṣanta divāniśam l
Anādinidhnā nityā vāgutsṛṣṭā svayambhuvā ll

Mahābhā. / Śānti / 232 / 24

Study of Vedas

जिस अनादि और न नष्ट होने वाली नित्य वाणी को परमेश्वर ने संसार के लिए दिया था, उस वेद-वाणी को ऋषि लोग तप द्वारा दिन-रात पढ़ा करते हैं।

The language which has neither beginning nor end, was given by God for the world. The sages study this language of the Vedas, day and night performing their penance.

(382)

ऋषीणां च नदीनां च कुलानां च महात्मनाम्।
प्रभवो नातिगन्तव्यः स्त्रीणां दुश्चरितस्य च॥

कठिनाई से ज्ञातव्य महाभा. /उद्योग / 35 / 72

Ṛṣīṇāṁ ca nadīnāṁ ca kulānāṁ ca mahātmanām l
Prabhavo nātigantavyaḥ strīṇāṁ duścaritasya ca ll

Mahābhā. / Udyoga. / 35 / 72

Difficult to know

ऋषियों, नदियों, खानदानों, महात्माओं और स्त्रियों के दुश्चरित्र की उत्पत्ति के कारणों को पूर्णतः नहीं समझा जा सकता।

The sources of the births of sages, rivers, families, spiritual persons and the bad character of ladies cannot be known fully.

ए

(383)

एकं प्रसूयते माता, द्वितीयं वाक्प्रसूयते।
वाग्जातमधिकं प्रोचुः, सौदर्यादपि बन्धुवत्॥

शिक्षा का महत्त्व पञ्च. / लब्धप्रणाश / 6

Ekaṁ prasūyate mātā, dvitīyam vāk prasūyate l
Vāgjātamadhikaṁ procuḥ, saudaryādapi bandhuvat ll

Pañca. / Labdhapr. / 6

Superiority of Education

एक जन्म तो माता देती है और दूसरा जन्म

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देती है वाणी अर्थात् शिक्षा। शिक्षा से उत्पन्न व्यक्ति अधिक महत्त्वपूर्ण होता है; जैसे सगे भाई से भी उत्तम सच्चा मित्र होता है, जो सदा साथ निभाता है।

The first birth is given by the mother, while the second one by education. The person born from education is better than the first one, as a good friend who is helpful in difficulties, is better than a real brother.

(384)

एकं विषरसो हन्ति शास्त्रेणैकश्च वध्यते।
सराष्ट्रं सप्रजं हन्ति, राजानं मन्त्रविप्लवः॥

रहस्योद्घाटन से हानि महाभा. /उद्योग. / 33 / 45

Ekaṁ viṣaraso hanti, śāstreṇaikaśca vadhyate |
Sarāṣṭraṁ saprajaṁ hanti, rājānaṁ mantraviplavaḥ ||

Mahābhā. / Udyoga. / 33 / 45

Loss due to disclosing of secret

किसी को तो विष अथवा साँप मार देता है और कोई हथियार द्वारा मारा जाता है परन्तु योजनाओं का भेद खुल जाना राष्ट्र और प्रजा-सहित राजा को ही मार डालता है।

Some one is killed by poison or a snake, while the other is killed with a weapon, but the disclosure of a secret kills the king including his nation and his people.

(385)

एकं हन्यान्न वा हन्यादिषुर्मुक्तो धनुष्मता।
बुद्धिर्बुद्धिमतोत्सृष्टा हन्याद् राष्ट्रं सराजकम्॥

बुद्धि की शक्ति महाभा. /उद्योग. / 33 / 43

Ekaṁ hanyānna vā hanyādiṣurmukto dhanuṣmatā |
Buddhirbuddhimatotsṛṣṭā hanyād rāṣṭraṁ sarājakam ||

Mahābhā. / Udyoga. / 33 / 43

Power of Intellect

धनुर्धारी द्वारा छोड़ा गया बाण किसी एक को भी मारे या न मारे, कहा नहीं जा सकता। परन्तु बुद्धिमान् द्वारा प्रयुक्त की गई बुद्धि राष्ट्र-सहित राजा को भी नष्ट कर सकती है।

It is not certain that an arrow shot by an archer, kills a man or not, but wisdom used by a wise man can destroy a full nation including its king.

(386)

एकः पापानि कुरुते, फलं भुङ्क्ते महाजनः।
भोक्तारो विप्रमुच्यन्ते, कर्ता दोषेण लिप्यते॥

पाप का फल महाभा. / उद्योग. / 33 / 42

Ekaḥ pāpāni kurute, phalaṁ bhuṅkte mahājanaḥ |
Bhoktāro vipramucyante, kartā doṣeṇa lipyate ||

Mahābhā. / Udyoga. / 33 / 42

The fruit of one's sin

पाप तो एक आदमी करता है, परन्तु उससे लाभ अनेक लोग उठाते हैं। लाभ उठाने वाले लोग पापी नहीं कहलाते, पर केवल पाप करने वाला ही पापी कहलाता है।

Only one man commits a sin, but advantages are enjoyed by many people. Those, who enjoy the advantages are not called sinful, but only the doer is called a sinner.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(387)

एकः सम्पन्नमश्नाति, वस्ते वासश्च शोभनम्।
योऽसंविभज्य भृत्येभ्यः, को नृशंसतरस्ततः॥

पापी शासक महाभा. / उद्योग / 33 / 41

Ekaḥ sampannamaśnāti, vaste vāsaśca śobhanam |
Yo'saṁvibhajya bhṛtyebhyaḥ, ko nṛśaṁsatarastataḥ ||

Mahābhā. / Udyoga. / 33 / 41

Condemnabe ruler

जो व्यक्ति नौकरों में बिना बाँटे बढ़िया भोजन करता है और सुन्दर कपड़े पहनता है, उससे अधिक क्रूर भला कौन हो सकता है? अर्थात् उसका ऐसा व्यवहार अनुचित है।

The person who eats rich food and wears a beautiful dress, without distributing in his servants, is really very cruel. Nobody is more cruel than he. Thus, his behaviour is wrong.

(388)

एकः स्वादु न भुञ्जीत, एकश्चार्थान्न चिन्तयेत्।
एको न गच्छेदध्वानम्, नैकः सुप्तेषु जागृयात्॥

अकेले न करने योग्य महाभा. / उद्योग / 33 / 46

Ekaḥ svādu na bhuñjīta, ekaścārthānna cintayet |
Eko na gacchedadhvānam, naikaḥ supteṣu jāgṛyāt ||

Mahābhā. / Udyoga. / 33 / 46

Things not to be done alone

मनुष्य को अकेले स्वादु भोजन नहीं करना चाहिए, किसी विषय पर अकेले ही विचार भी नहीं करना चाहिए, अकेले ही किसी मार्ग पर नहीं चलना चाहिए और जब सब सोए हुए हों, तब अकेले जागना भी नहीं चाहिए।

One should not take delicious food only himself, should not consider any problem only himself, should not travel alone and should not keep only himself awakn while others are sleeping.

(389)

एक एव चरेन्नित्यं सिद्ध्यर्थमसहायकः।
सिद्धिमेकस्यापश्यन्हि न जहाति न हीयते॥

आत्मोन्नति का अभ्यास नारदपरिव्राजकोपनिषद् / 53

Eka eva carennityaṁ siddhyarthamasahāyakaḥ |
Siddhimekasyāpaśyanhi na jahāti na hīyate ||

Practice of spirituality Nāradapari. / 53

आत्मिक जीवन की सिद्धि के लिए परिव्राजक को नित्य अकेले ही परिश्रम करना चाहिए। यदि उसे सफलता नहीं भी मिलती, तो भी न वह किसी को छोड़ता है और न वह किसी से छोड़ा जाता है।

For the success of spiritual life a sage should try himself alone. In case he gets no success, even then neither he relinquishes any body, nor he is relinquished.

(390)

एक एव सुहृद्धर्मो निधनेऽप्यनुयाति यः।
शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यत्तु गच्छति॥

धर्म की मित्रता हितोपदेश. / 1 / 66

Eka eva suhṛddharmo nidhane'pyanuyāti yaḥ |
Śarīreṇa samaṁ nāśaṁ sarvamanyattu gacchati ||

Friendship of morality Hitopa. / 1 / 66

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धर्म ही अकेला ऐसा मित्र है, जो मरने पर भी मनुष्य के साथ जाता है। शेष सभी वस्तुएँ शरीर के साथ ही नष्ट हो जाती हैं।

It is only the good deeds, which are real friends, which accompany a man even after his death. All other things are destroyed with his lifeless body.

(391)

एक एव हितार्थाय तेजस्वी पार्थिवो भुवः।
युगान्त इव भास्वन्तो बहवोऽत्र विपत्तये॥

अनेक शासकों से हानि पञ्च. / काकोलूकीय / 76

Eka eva hitārthāya tejasvī pārthivo bhuvaḥ।
Yugānta iva bhāsvanto bahavo'tra vipattaye॥

Pañca / Kāko. / 76

Disadventage from many rulers

एक ही तेजस्वी राजा देश का कल्याण कर सकता है, परन्तु यदि बहुत से राजा बन जायें, तो संकट के कारण बनते हैं; जैसे प्रलयकाल में उदय हुए अनेक सूर्य सृष्टि का विध्वंस कर देते हैं।

Only one glorious king is advantageous for the country, but if there are many kings, they become the source of adversity; as many suns rising during doom's time, destroy the whole world.

(392)

एकमेव व्रतं श्लाघ्यं ब्रह्मचर्यं जगत्त्रये।
यद्विशुद्धिं समापन्नाः पूज्यन्ते पूजितैरपि॥

ब्रह्मचर्य - सर्वश्रेष्ठ व्रत ज्ञानार्णव

Ekameva vrataṁ ślāghyaṁ brahmacaryaṁ jagattraye।
yadviśuddhiṁ samāpannāḥ pūjyante pujitairapi॥

Brahmacarya — Jñarana
The best principle

तीनों लोकों में अकेला ब्रह्मचर्य का व्रत ही प्रशंसनीय माना गया है, जिसके द्वारा पूर्णतः शुद्ध होने वाले लोग, पूजे जाने वालों से भी पूजे जाते हैं।

It is only austerity of Brahmacharya, which is considered praisworthy in the three worlds. Due to this, the persons who have become quite pious through it, are respected even by the respectable persons.

(393)

एकस्मिन्नेव जायेते कुले क्लीबमहाबलौ।
फलाफलवती शाखे यथैकस्मिन् वनस्पतौ॥

कायर और वीर महाभा. / उद्योग / 4 / 3

Ekasminneva jāyete kule klībamahābalau।
Phalāphalavatī śākhe yathaikasmin vanaspatau॥

Mahābhā. / Udyoga / 4 / 3

The coward and the brave

जैसे एक ही वृक्ष पर फलों वाली तथा बिना फलों वाली दोनों प्रकार की शाखाएँ होती है, उसी प्रकार एक ही कुल में कायर और महाबलशाली दोनों प्रकार के लोग पाये जाते हैं।

As on one tree, we see a branch full of fruits while other is fruitless, so in one's family, coward

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

and powerful, both kinds of men are found.

(394)

एकस्मिन् यत्र निधनं प्रापिते दुष्टकारिणि।
बहूनां भवति क्षेमं, तस्य पुण्यप्रदो वधः॥

प्रशंसनीय वध विष्णुपुराण / 1 / 13 / 74

Ekasmin yatra nidhanaṁ prāpite duṣṭakāriṇi |
Bahūnāṁ bhavati kṣemaṁ, tasya puṇyaprado vadhaḥ ||

Admirable killing Viṣnupu. / 1 / 13 / 74

यदि किसी एक पापी व्यक्ति के मारे जाने से बहुत लोगों का कल्याण होता है, तो उसको मारना एक पवित्र कार्य है।

If killing of a sinful person is good for the people, then killing him is a holy work.

(395)

एकस्य कर्म संवीक्ष्य करोत्यन्योऽपि गर्हितम्।
गतानुगतिको लोकः, न लोकः पारमार्थिकः॥

भेड़ा-चाल पञ्च. / मित्रभेद / 294

Ekasya karma saṁvīkṣya karotyanyo'pi garhitam |
Gatānugatiko lokaḥ, na lokaḥ pāramārthikaḥ ||

Pañca. / Mitrabhe. / 294

Blinds after blind

किसी एक के बुरे काम को देखकर दूसरा भी उसी प्रकार बुरा काम करने लगता है। सच तो यह है कि यह संसार एक-दूसरे के पीछे-पीछे चलता है; वास्तविकता को समझने वाला यह नहीं है।

After seeing a man doing a bad work, an other also copies him. This world imitates one after the other and nobody tries to know the reality.

(396)

एकस्याप्यतिथेरन्नं यः प्रदातुं न शक्तिमान्।
तस्यानेकपरिक्लेशे गृहे किं वसतः फलम्॥

निन्दनीय गृहस्थ पञ्च. / काको / 160

Ekasyāpyatitherannaṁ yaḥ pradātuṁ na śaktimān |
Tasyānekaparikleśe gṛhe kiṁ vasataḥ phalam ||

Pañca. / Kāko. / 160

Condemnable householder

जो एक अतिथि को भी भोजन खिलाने में असमर्थ है, उसका अनेक कष्टों से पूर्ण घर में रहने का क्या लाभ है?

What is the use of living in a house full of many troubles for such a person, who is unable to give food even to one guest?

(397)

एकाकी गृहसंत्यक्तः पाणिपात्रो दिगम्बरः।
सोऽपि संवाह्यते लोके तृष्णायाः पश्य कौतुकम्॥

तृष्णा की शक्ति पञ्च. / अपरीक्षितकारक / 13

Ekākī gṛhasaṁtyaktaḥ pāṇipātro digambaraḥ |
So'pi saṁvāhyate loke tṛṣṇāyāḥ paśya kautukam ||

Pañca. / Aparikṣita. / 13

Power of greediness

अकेले रहने वाले, घर छोड़ देने वाले, हाथ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रूपी पात्र पर ही भोजन करने वाले और वस्त्रहीन व्यक्ति को भी तृष्णा खींच कर संसार में घसीट लाती है; इस आश्चर्य को देखो।

Look at this strange thing that a man who lives alone, has relinquished his house, eats only on the palm of his hands and is quite clotheless, is attracted by greed into the world.

(398)

एकेनापि हि शूरेण पादाक्रान्तं महीतलम्।
क्रियते भास्करेणेव परिस्फुरिततेजसा॥

सच्चे शूर का महत्त्व नीतिशतक / 99

Ekenāpi hi śūreṇa pādākrāntaṁ mahītalam |
Kriyate bhāskareṇeva parisphuritatejasā ||

Strength of a true brave Nītiśataka / 99

जैसे एक ही सूर्य अपने तेज द्वारा सम्पूर्ण भूमण्डल को किरणों से पूर्ण कर देता है, उसी प्रकार एक भी वीर व्यक्ति अपने तेज से सारी पृथ्वी को अपने अधीन कर लेता है।

As only one sun throws its rays upon the full earth, so a brave person can repress the full earth with his glory.

(399)

एकेषां वाचि शुकवदन्येषां हृदि मूकवत्।
हृदि वाचि तथाऽन्येषां वल्गु वल्गन्ति सूक्तयः॥

श्रेष्ठ वक्ता पञ्च. / मित्रभेद / 62

Ekeṣāṁ vāci śukavadanyeṣāṁ hṛdi mūkavat |
Hṛdi vāci tathā'nyeṣāṁ valgu valganti śūktayaḥ ||

Best speaker Pañca. / Mitrabhe. / 62

कुछ लोग तोतों के समान रटी–रटाई बातें बोल देते हैं। कुछ के हृदयों में विचार होते हैं, परन्तु वे गूंगों के समान उन्हें प्रकट नहीं कर सकते। परन्तु कुछ ऐसे भी होते हैं जिनके हृदयों में विचार भी उठते हैं और वाणी द्वारा वे निरन्तर सुन्दर वाक्य कहते चले जाते हैं।

Some people speak the sentences which they have learnt by heart like a parrot. Some have many ideas in their minds, but are unable to express them like a dumb fellow. While some people have ideas in their minds and can also express them fluently in attractive sentences.

(400)

एको देवः केशवो वा शिवो वा,
एकं मित्रं भूपतिर्वा यतिर्वा।
एको वासः पत्तने वा वने वा,
एका नारी सुन्दरी वा दरी वा॥

एक ही वस्तु अपनाओ नीतिशतक / 65

Eko devaḥ keśavo vā śivo vā,
Ekaṁ mitraṁ bhūpatirvā yatirvā |
Eko vāsaḥ pattane vā vane vā,
Ekā nārī sundarī vā darī vā ||

Adopt only one Nītiśataka / 65

मनुष्य को तुलनात्मक किसी एक वस्तु को ही अपनाना चाहिए; दो तरफ टाँगें अड़ाने से कुछ भी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लाभ नहीं होता। जैसे केशव या शिव में से एक को मानो, राजा या संन्यासी में से एक को ही साथी बना लो, नगर में ही रहो अथवा वन में ही, एक ही नारी का संग करो या तो गृह-पत्नी का या तपस्या के लिए गुफा का।

One should decide to adopt one thing out of the two contrasted, because one who depends on two, falls down. For example - one should be a devotee of Keśava or Śiva, should make one friend either a king or a saint, live either in a town or in the forest, adopt a beautiful wife or go into a cave for penance.

(401)

एको धर्मः परं श्रेयः, क्षमैका शान्तिरुत्तमा।
विद्यैका परमा तृप्तिरहिंसैका सुखावहा॥

सुखद वस्तुएँ महाभा. / उद्योग / 33 / 52

Eko dharmaḥ paraṁ śreyaḥ, kṣamaikā śāntiruttamā |
Vidyaikā paramā tṛptirahiṁsaikā sukhāvahā ||

Mahābhā. / Udyoga / 33 / 52

Things for happiness

केवल धर्म ही कल्याण-साधक है, सहनशीलता ही शान्ति का उत्तम मार्ग है, एक विद्या ही परम तृप्ति का स्रोत है और केवल अहिंसा ही सुख-प्राप्ति का साधन है।

It is only religion which bears welfare, toleration is the best path which leads to peace, it is knowledge which is the source of complete contentment and it is non-violence which is the only means to attain happiness.

(402)

एकोऽप्यमात्यो मेधावी शूरो दक्षो विचक्षणः।
राजानं राजपुत्रं वा प्रापयेन्महतीं श्रियम्॥

गुणी अमात्य वा.रामायण / अयोध्या. / 100 / 24

Eko'pyamātyo medhāvī śuro dakṣo vicakṣaṇaḥ |
Rājānaṁ rājaputraṁ vā prāpayenmahatīṁ śriyam ||

Vā. Rā. / Ayodhā / 100 / 24

Meritorious minister

यदि एक भी मन्त्री बुद्धिमान्, बहादुर, कार्यकुशल और सिद्धहस्त होता है, तो वह राजा या राजा के पुत्र को बड़ी सम्पदा से सम्पन्न कर सकता है।

Even if one minister is wise, brave, expert and experienced, he is able to make a king or his son very prosperous and wealthy.

(403)

एको वशी सर्वभूतान्तरात्मा एकं रूपं बहुधा यः करोति।
तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरास्तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम्॥

कठ उप. / पाँचवीं वल्ली / 12

शाश्वत सुख का दाता

Eko vaśī sarvabhūtāntarātmā ekaṁ rūpaṁ bahudhā yaḥ karoti |
Tamātmasthaṁ ye'nupaśyanti dhīrāsteṣāṁ sukhaṁ śāśvataṁ netareṣām ||

Giver of eternal bliss Kaṭhop. / 5 / 12

संसार पर नियन्त्रण रखने वाला सब सृष्टि में समाया हुआ एक परमात्मा ही है। वही एक जड़ प्रकृति को अनेक रूपों में बाँटता है या विविध रचना करता है। जो धीर लोग उसके दर्शन अपनी आत्मा में कर लेते हैं, उन्हीं को नित्य आनन्द की प्राप्ति होती है, अन्य को नहीं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

It is only God who controls all the universe being present in every thing. It is only He who creates this inanimate nature into different forms. Those, who with patience see Him in their souls, can obtain everlasting happiness, while others cannot get it.

(404)

एतज्ज्ञेयं नित्यमेवात्मसंस्थं, नातःपरं वेदितव्यं हि किञ्चित्।
भोक्ता भोग्यं प्रेरितारं च मत्वा, सर्वं प्रोक्तं त्रिविधं ब्रह्म ह्येतत्॥

श्वेताश्वतर उप. / अध्याय–1 / 12

ब्रह्म के तीन स्वरूप

Etajjñeyaṁ nityamevātmasaṁsthaṁ,
Nātaḥ paraṁ veditavyaṁ hi kiñcit।
Bhoktā bhogyaṁ preritāraṁ ca matvā,
Sarvaṁ proktaṁ trividhaṁ Brahma hyetat॥

Śvetāśva. 1/ 12

Three kinds of Brhma

इस ब्रह्म को सदा आत्मा में ही विद्यमान समझकर जान लेना चाहिए। इससे बढ़कर कोई अन्य बात जानने योग्य नहीं है। भोक्ता, भोग्य और प्रेरक के रूप में इसे ही जानना चाहिए। इस प्रकार ब्रह्म ही तीन प्रकार के स्वरूप वाला है।

Brahma remains always in our souls and we should know Him in the same place. There is nothing more to know than Him. He may be known in the three forms :- Enjoyer, worth of being enjoyed and inspirer.

(405)

एतदेवायुषः सारं निसर्गक्षणभङ्गिनः।
स्निग्धैर्मुग्धैर्विदग्धैश्च यदयन्त्रितमास्यते॥

जीवन का लाभ सुभाषितावलि / 2698

Etadevāyuṣaḥ sāraṁ nisargakṣaṇabaṅginaḥ।
Snigdhairmugdhairvidagdhaiśca yadayantritamāsyate॥

Advantage of life Subhāṣitāvali / 2698

स्वभावतः क्षणभङ्गुर जीवन का केवल यही सार है कि हम लोग बिना संकोच के प्रियजनों, भोले-भाले लोगों और कार्यकुशल लोगों में बैठें। तात्पर्य यह है कि इन सभी प्रकार के लोगों से बिना संकोच के मिलना-जुलना चाहिए।

It is the only substance of this naturally temporary life, that we should sit without any hesitation among the people who have love for us, who are innocent and who are dexterous. It means that we should sit in the company of all these type of persons without any hesitation.

(406)

एतेन ब्रह्मचर्येण देवा देवत्वमाप्नुवन्।
ऋषयश्च महाभागा ब्रह्मलोकं मनीषिणः॥

ब्रह्मचर्य के लाभ महाभा. / उद्योग / 44 / 20

Etena Brahmacaryeṇa devā devatvamāpnuvan।
Ṛśayaśca mahābhāgā Brahmalokaṁ manīṣiṇaḥ॥

Mahābhā. / Udyoga / 44 / 20

Advantages of Brahmacarya

इसी ब्रह्मचर्य के द्वारा देवताओं ने देवत्व को

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राप्त किया और इसी के द्वारा सौभाग्यशाली और संयमी ऋषियों ने मुक्ति को प्राप्त किया।

Gods have attained godliness only through this 'brahmacarya' and the lucky sages who had control over their minds also attained salvation only through this.

(407)

एते सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थान् परित्यज्य ये,
सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृताः स्वार्थाविरोधेन ये।
तेऽमी मानुषराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये,
ये निघ्नन्ति निरर्थकं परहितं, ते के न जानीमहे॥

चार प्रकार के मनुष्य नीतिशतक / 7

Ete satpuruṣāḥ parārthaghaṭakāḥ svārthān parityajya ye,
Sāmānyāstu parārthamudyamabhṛtāḥ svārthāvirodhena ye।
Te'mī mānuṣarākṣasāḥ parahitaṁ svārthāya nighnanti ye,
Ye nighnanti nirarthakaṁ parahitaṁ te ke na jānīmahe॥

Four kinds of men Nītiśataka / 7

सज्जन पुरुष वे होते हैं, जो स्वार्थ को छोड़कर भी दूसरों का भला करते हैं। सामान्य श्रेणी के मनुष्य वे होते हैं, जो स्वार्थ-सिद्धि करने के साथ-साथ दूसरों के लिए भी परिश्रम करते हैं। परन्तु वे लोग मानव-शरीर में राक्षस कहलाते हैं, जो स्वार्थ के लिए दूसरों की हानि कर बैठते हैं। परन्तु इनसे भी एक निचली श्रेणी के लोग हैं, जो व्यर्थ ही दूसरों को हानि पहुँचाते रहते हैं। उनका तो नाम भी हम नहीं जानते। वे तो बहुत ही नीच होते हैं।

Those people are called generous persons, who help others ignoring their selfishness. The common people are those who work for others and also for themselves. The third kind of people are called Rakshasas, who harming others sustain their selfishness. There are another kind of people who harm others without any purpose. We don't know their names. They are very mean fellows.

(408)

एवं जरा हन्ति च निर्विशेषं,
स्मृतिं च रूपं च पराक्रमं च।
न चैव संवेगमुपैति लोकः,
प्रत्यक्षतोऽपीदृशमीक्षमाणः॥

बुढ़ापे से दुर्दशा बुद्धचरित / 3 / 36

Evaṁ jarā hanti ca nirviśeṣaṁ,
smṛtiṁ ca rūpaṁ ca parākramaṁ ca।
Na caiva saṁvegamupaiti lokaḥ,
pratyakṣato'pīdṛśamīkṣamāṇaḥ॥

Buddhacarita / 3 / 36

Bad condition by old age

बुढ़ापा इस प्रकार स्मरणशक्ति, सौन्दर्य और पराक्रम को समान रूप से नष्ट कर देता है, इस बात को स्पष्ट रूप से देखते हुए भी लोग व्याकुल नहीं होते। कितने आश्चर्य की बात है!

Old age destroys equally all the following things – memory, beauty and valour. All of us look clearly this truth, still we are not disturbed. Isn't it a very strange thing?

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(409)

एवं पुनर्ब्रह्मचर्याप्रसक्तो,
हित्वा धर्मं यः करोत्यधर्मम्।
अश्रद्दधत् परलोकाय मूढो,
हित्वा देहं तप्यते प्रेत्य मन्दः॥

दुःख का कारण महाभा. / उद्योग / 27 / 9

Evaṁ punarbrahmacaryāprasakto,
Hitvā dharmaṁ yaḥ karotyadharmam।
Aśraddadhat paralokāya mūḍho,
Hitvā dehaṁ tapyate pretya mandaḥ॥

Mahābhā. / Udyoga / 27 / 9

Cause of suffering

इस प्रकार ब्रह्मचर्य से पृथक् होकर जो धर्म का परित्याग और अधर्म को स्वीकार करता है, वह मन्दबुद्धि मूर्ख परलोक में श्रद्धा न रखने के कारण इस शरीर को छोड़कर नये जन्म को प्राप्त कर दुःख का पात्र बनता है।

In this way the person who leaves Brahmacarya and practises bad deeds rejecting his morality, is a fool. Such a foolish person has no devotion in rebirth. So after his death, he takes such a new birth which is full of troubles and agonies.

(410)

एष सर्वेषु भूतेषु गूढोऽऽत्मा न प्रकाशते।
दृश्यते त्वग्र्यया बुद्ध्या सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः॥

ईश्वर के दर्शक कठोपनिषद् / चतुर्थवल्ली / 12

Eṣa sarveṣu bhūteṣu gūḍho'tmā na prakāśate।
Dṛśyate tvagryayā buddhyā sūkṣmayā sūkṣmadarśibhiḥ॥

Seer of God Katho. / 4 / 12

यह परमात्मा सब प्राणियों में छिपा हुआ है, किन्तु दिखाई नहीं देता। परन्तु जिनकी दृष्टि सूक्ष्म है, वे अपनी उत्कृष्ट सूक्ष्म बुद्धि द्वारा इसके दर्शन कर लेते हैं।

This God is hidden in all living beings and cannot be seen. But those who have their keen sight, see Him with their prominent and keen intellect.

(411)

एष स्वभावो नारीणामनुभूय पुरा सुखम्।
अल्पामप्यापदां प्राप्य दुष्यन्ति प्रजहत्यपि॥

वा. रामायण / अयोध्या / 34 / 39

नारियों का स्वभाव

Eṣa svabhāvo nārīṇāmanubhūya purā sukham।
Alpāmapyāpadāṁ prāpya duṣyanti prajahatyapi॥

Vā. Rā. / Ayodhyā / 34 / 39

Nature of Ladies

नीच स्त्रियों का यह स्वभाव होता है कि पहले सुख के दिन काटती हैं और थोड़ा संकट आने पर चरित्रभ्रष्ट हो जाती हैं और अपने पति को छोड़ भी देती हैं।

This is the nature of mean ladies that they enjoy happy life first, but after this in time of some difficulty, they become characterless and leave their husbands.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(412)

एहि गच्छ पतोत्तिष्ठ वद मौनं समाचर।
इत्थमाशा-ग्रहग्रस्तैः क्रीडन्ति धनिनोऽर्थिभिः॥

लोभियों की दुर्दशा सुभाषितवलि / 3168

Ehi gaccha patottiṣṭha vada maunaṁ samācara |
Itthamāśā-grahagrastaiḥ krīḍanti dhanino'rthibhiḥ ||

Subhāṣitāvali / 3168

Bad conditions of the greedy

आशारूपी ग्रह से पीड़ित हुए कामनाओं से युक्त व्यक्तियों से धनी लोग इस प्रकार कह-कह कर अपना मन बहलाते हैं - इधर आ, उधर जा, नीचे बैठ, खड़ा हो जा, बोल, चुप्पी साध ले - इत्यादि।

Those who are suffering from the planet of desires become the source of amusement for the rich people who order in this way :- come here, go there, sit down, stand up, speak, keep silent etc.

ऐ

(413)

ऐन्द्रं स्थानमभिप्रेप्सुर्यशश्चाक्षयमव्ययम्।
नोपेक्षेत क्षणमपि राजा साहसिकं नरम्॥

राजा का कर्त्तव्य मनु. / 8 / 344

Aindraṁ sthānamabhiprepsuryaśaścākṣayamavyayam |
Nopekṣeta kṣaṇamapi rājā sāhasikaṁ naram ||

Duty of a ruler Manu. / 8 / 344

जो राजा इन्द्र की पदवी और स्थायी यश पाना चाहता है, उसे एक क्षण के लिए भी उपद्रव मचाने वाले व्यक्ति की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

The king who intends to get the rank of Indra and wants permanent fame, should not ignore even for a moment such a person, who disturbs the rule and order of the kingdom.

(414)

ऐश्वर्यशालिनमहो महताऽऽश्रयेण,
सर्वे जनाः सरभसं स्वयमाश्रयन्ते।
रत्नप्रसूतिरिति खल्वखिलाः स्रवन्त्यः,
पाथोनिधिं समुपयान्ति बहोश्च दूरात्॥

सम्पन्न को सभी चाहते हैं सूक्तिमुक्तावली / 5

Aiśvaryaśālinamaho mahatā'śrayeṇa,
Sarve janāḥ sarabhasaṁ svayamāśrayante |
Ratnaprasūtiriti khalvakhilāḥ sravantyaḥ,
Pāthonidhiṁ samupayānti bahośca dūrāt ||

Suktimuktāvalī / 5

All go to a wealthy person

महान् आश्रय समझकर सभी लोग तेजी से आकर सम्पन्न व्यक्ति का आश्रय ले लेते हैं। जैसे सभी नदियाँ सागर को रत्नों का जन्म-स्थान मानकर बहुत दूर से चल कर भी उसमें आ मिलती हैं।

All people approach the rich person for his support, thinking him a good shelter. The rivers approach the sea from a remote place thinking it the birth place of gems.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(415)

ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता, शौर्यस्य वाक्संयमो,
ज्ञानस्योपशमः, श्रुतस्य विनयो, वित्तस्य पात्रे व्ययः।
अक्रोधस्तपसः, क्षमा प्रभवितुर्धर्मस्य निर्व्याजता,
सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं शीलं परं भूषणम्॥

शोभा के साधन नीतिशतक / 78

Aiśvaryasya vibhūṣaṇaṁ sujanatā, śauryasya vāksaṁyamo,
Jñānasyopaśamaḥ, śrutasya vinayo, vittasya pātre vyayaḥ।
Akrodhastapasaḥ, kṣamā prabhaviturdharmasya nirvyājatā,
sarveṣāmapi sarvakāraṇamidaṁ śīlaṁ paraṁ bhūṣaṇam॥

Sources of beauty Nītiśataka. / 78

धनदौलत की शोभा सज्जनता होती है, वाणी पर संयम रखने से ही बहादुरी शोभा पाती है। ज्ञान की शोभा शान्ति है, स्वाध्याय का लाभ नम्रता है। धन की शोभा तभी है, जब सुपात्र को वह दिया जाए। क्रोध पर संयम करना तपस्या का फल है। समर्थ व्यक्ति की शोभा क्षमा करने में है। छल-कपट न करने से ही धर्म शोभित होता है। इन सबका मूल कारण उत्तम स्वभाव है; वह ही सबसे बड़ा भूषण है।

Generosity is the beauty of the prosperity. Control on one's tongue beautifies his bravery. The beauty of knowledge is internal peace. The advantage of study of good books is politeness. The beauty of the money is its spending for deserving persons. The beauty of penance is keeping off rage. Pardoning is the beauty of a powerful person. Honesty is the beauty of morality. But a good nature is the supreme ornament which beautifies all the above qualities.

(416)

ऐश्वर्यादनपेतमीश्वरमयं लोकोऽर्थतः सेवते,
ये गच्छन्त्यनु तं विपत्तिषु पुनः ते तत्प्रतिष्ठाशयाः।
भर्तुर्ये प्रलयेऽपि पूर्वसुकृतासङ्गेन निःसङ्गया,
भक्त्या कार्यधुरां वहन्ति कृतिनस्ते दुर्लभास्त्वादृशाः॥

प्रशंसनीय सेवक मुद्राराक्षस / 1 / 14

Aiśvaryādanapetamīśvaramayaṁ loko'rthataḥ sevate,
Ye gacchantyanu taṁ vipattiṣu punaḥ te tatpratiṣṭhāśayāḥ।
Bharturye pralaye'pi pūrvasukṛtāsaṅgena niḥsaṅgayā,
Bhaktyā kāryadhurāṁ vahanti kṛtinaste durlabhāstvādṛśāḥ॥

Admirable servants Mudrārā. / 1 / 14

हे राक्षस-मन्त्री! ऐश्वर्य से सम्पन्न राजा की तो सेवा लोग स्वार्थवश करते ही हैं। विपत्ति में भी जो उसका साथ निभाते हैं, वे उसके द्वारा सम्मान के पात्र बनते हैं, परन्तु स्वामी की मृत्यु हो जाने पर भी जो पहले किये हुए शुभ कर्मों से प्रभावित होकर बिना किसी स्वार्थ के स्वामी के कार्यभार को संभाले रखते हैं, ऐसे, तुम जैसे भक्त - सेवक दुर्लभ हैं।

O Rākshasa Minister! Generally people serve a wealthy king on account of their selfish motive. Those who follow him even in adversity deserve honour from him, but those who carry on the responsibility given to them even after his death due to his good deeds, such persons, like you, are very rare.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(417)

ऐश्वर्ये वा सुविस्तीर्णे व्यसने वा सुदारुणे।
रज्ज्वेव पुरुषं बद्ध्वा कृतान्तः परिकर्षति॥

मृत्यु की शक्ति वा. रामायण / सुन्दरका. / 37 / 3

Aiśvarye vā suvistīrṇe vyasane vā sudāruṇe |
Rajjveve puruṣaṁ baddhvā kṛtāntaḥ parikarṣati ||

Vā. Rā. / Sundarakā. / 37 / 3

Power of death

यमराज मनुष्य को मानो रस्सी से बाँधकर या तो विस्तृत ऐश्वर्य की ओर, या बड़े भारी संकट की ओर खींचकर ले जाता है।

The fortune of a man draws him like a person tied with a rope towards large wealth or towards a dreadful adversity.

ओ

(418)

ओजश्च मे सहश्च म आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे
वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थीनि च मे परूँषि च मे शरीराणि
च म आयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥

सामर्थ्य की कामना यजु. / 18 / 3

Ojaśca me sahaśca ma ātmā ca me tanūśca me śarma ca me
varma ca me'ṅgāni ca me'sthīni ca me parūṁṣi ca me śarīrāṇi
ca ma āyuśca me jarā ca me yajñena kalpantām ||

Desire to maintain virtues Yaju. / 18 / 3

मेरे शरीर का तेज और मेरी शोभा, मेरे शरीर और मेरे मन की शक्ति, मेरा स्वरूप और मेरा सामर्थ्य, मेरा शरीर और सम्बन्धी-जन, मेरा घर और घर के पदार्थ, मेरा कवच और मेरे शस्त्र, मेरी हड्डियाँ और माँस तथा नसें आदि, मेरे मर्मस्थल और जीवन के साधन, मेरे सम्बन्धियों के शरीर और उनके शरीराङ्ग, मेरी आयु तथा जीवन के साधन, मेरा बुढ़ापा और जवानी के सब पदार्थ सत्कार के योग्य परमेश्वर की कृपा से समर्थ हों।

The glory of my body and my beauty, the power of my body and my mind, my physique and my ability, my body and my relatives, my house and all households, my armour and my weapons, my organs and sub-organs, my bones, flesh and veins etc., my vital organs and means of life, the bodies of my relatives and their organs, my age and means of life, my old age and all things of my youth, may be safe and sound by the blessings of honourable God.

(419)

ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा।
यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तं राजन् पारयामसि॥

ओषधियों का महत्त्व यजु. / 12 / 96

Oṣadhayaḥ samavadanta somena saha rajñā |
yasmai kṛṇoti brāhmaṇastaṁ rājan pārayāmasi ||

Advantage of herbs Yaju. / 12 / 96

हे मनुष्यो! सर्वोत्तम सोमलता के साथ वर्तमान ओषधियों पर तुम विचार-विमर्श करो। हे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वैद्यराज! वेदों के और उपवेदों के वेत्ता पुरुष जिस रोगी के लिए इन ओषधियों को ग्रहण करते हैं, उस रोगी को इन ओषधियों द्वारा स्वस्थ कर देते हैं।

O men! Discuss about Somalatā and other herbs. O king of physicians, the men who know the Vedas and the Upavedas, if use these herbs in treatment of a patient, he gains complete health certainly.

(420)

ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः॥

ओषधियों की कामना यजु. / 12 / 77

Oṣadhīḥ pratimodadhvaṁ puṣpavatīḥ prasūvarīḥ।
Aśvā iva sajitvarīrvīrudhaḥ pārayiṣṇavaḥ॥

Desire of herbs Yaju. / 12 / 77

हे मनुष्यो! तुम लोग घोड़ों के समान तीव्रता से रोगों को जीतने वाली, रोगों से बचाने वाली, प्रशंसित फूलों से युक्त और सुख देने वाली सोमलता आदि औषधियों को प्राप्त कर नित्य आनन्दित रहो।

O men! You may enjoy happiness daily by using the herbs like Somalatā, which win all the diseases as fast as a horse runs, which keep off the diseases and which are full of flowers and give full relief.

(421)

ओषधीरितिमातरस्तद्वो देवीरुपब्रुवे।
सनेयमश्वं गां वास आत्मानं तव पूरुष॥

माता और पुत्र के कर्त्तव्य यजु. / 12 / 18

Oṣadhīritimātarastadvo devīrupabruve।
Saneyamaśvaṁ gāṁ vāsa ātmānaṁ tava pūruṣa॥

Duties of mother and son Yaju. / 12 / 18

ओषधियों के समान सुखदायक दिव्य गुणों वाली माताओ! मैं, तुम्हारा पुत्र तुम्हारी शिक्षाओं को अच्छी प्रकार ग्रहण कर उनका प्रचार करूँ। "हे पुरुषार्थी श्रेष्ठ सन्तान! मैं तुम्हारे लिए पशुओं, वस्त्रों और घर आदि की ठीक प्रकार से व्यवस्था करूँगी।"

"O mothers, you possess divine qualities and are pleasant like herbs. May, I, your son, learn good instructions from you and propagate them."

"O energetic good boy! I shall manage animals, clothes and residence etc. for your purpose systematically."

(422)

और्वं भृगुवच्छुचिमप्नवानवदा हुवे।
अग्निं समुद्रवाससम्॥

परमात्मा की उपासना साम. / 18

Aurvaṁ bhṛguvacchucimapnavānavadā huve।
Agniṁ samudra-vāsasam॥

Meditation of God Sāma. / 18

पृथ्वी के उपदेष्टाओं के समान और कर्मशील व्यक्तियों के समान आकाश में सर्वव्यापक परमेश्वर का मैं अपने हृदय में आह्वान करता हूँ, अर्थात् उसकी उपासना करता हूँ।

I call omnipresent God in my heart like those persons who preach us on this earth and who are active for us. It means I shall worship God for good instigation and instructions from Him.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क

(423)

कः कं शक्तो रक्षितुं मृत्युकाले,
रज्जुच्छेदे के घटं धारयन्ति।
एवं लोकस्तुल्यधर्मो वनानाम्,
काले काले छिद्यते रुह्यते च॥

सभी की नश्वरता स्वप्नवासषदत्तम्. / 5 / 10

Kaḥ kaṁ śakto rakṣituṁ mṛtyukāle,
Rajjucchede ke ghaṭaṁ dhārayanti।
Evaṁ lokastulyadharmo vanānām,
Kāle kāle chidyate ruhyate ca॥

Mortality of all Svapnavāravas / 5 / 10

मृत्यु के समय कौन किसे बचा सकता है ? अर्थात् कोई भी नहीं। रस्सी के टूटने पर कुएँ में जाते हुए घड़े को कोई नहीं रोक सकता। संसार की वनों जैसी ही दशा है। जैसे वन काटे जाते हैं और उगाए जाते हैं, वैसें ही लोग मरते और पैदा होते रहते हैं।

Who can save a man at the time of death? Nobody can do it. When a rope is broken, nobody can stop the pitcher from falling down into the well. As forests are cut down and grown again, the same case is with the creatures; some die while some take birth.

(424)

कः कस्य पुरुषो बन्धुः, किमाप्यं कस्य केनचित्।
यदेको जायते जन्तुरेक एव विनश्यति॥

वाल्मीकि रा./अयोध्याका./108/3

कोई भी साथी नहीं

Kaḥ kasya puruṣo bandhuḥ, kimāpyaṁ kasya kenacit।
Yadeko jāyate jantureka eva vinaśyati॥

Vā. Rā. / Ayodhyā / 108 / 3

No body is companion

संसार में कौन किसका स्थायी साथी है? किसके द्वारा किसे क्या प्राप्त करना है? प्राणी अकेला ही पैदा होता है और अकेला ही नष्ट हो जाता है।

Who is a permanent companion of anybody? What is to be gained by anybody? A creature takes birth alone and dies also alone.

(425)

कः कालः कानि मित्राणि को देशः कौ व्ययागमौ।
को वाऽहं का च मे शक्तिरिति चिन्त्यं मुहुर्मुहुः॥

विचारणीय बातें चाणक्यनीति / 4 / 18

Kaḥ kālaḥ kāni mitrāṇi, ko deśaḥ kau vyayāgamau।
Ko vā'haṁ kā ca me śaktiriti cintyaṁ muhurmuhuḥ॥

Cāṇakyanīti / 4 / 18

Things to be thought

बार-बार यह सोचना चाहिए कि समय कैसा है, कौन मेरे मित्र हैं, कैसा स्थान है, खर्च और आमदनी का क्या स्वरूप है, मैं कौन हूँ और मेरी शक्ति क्या है?

A man should consider following things again and again :-

(1) How is the time passing now,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(2) who are my friends, (3) what kind of place is this, (4) what is my expenditure and income, (5) who am I and (6) what is my power?

(426)

कः केन हन्यते जन्तुर्जन्तुः कः केन रक्ष्यते।
हन्ति रक्षति चैवात्मा ह्यसत्साधु समाचरन्॥

विष्णुपुराण/1/18/3

जन्म और मृत्यु के उत्तरदायी

Kaḥ kena hanyate janturjantuḥ kaḥ kena rakṣyate |
Hanti rakṣati caivātmā hyasatsādhu samācaran ||

Viṣṇupu. / 1 / 18 / 3

Responsible for life and death

कौन प्राणी किससे मारा जाता है अथवा कौन किसकी रक्षा करता है? प्राणी केवल अपने आप ही बुरा या अच्छा कार्य करता हुआ अपने को मारता या बचाता है।

Who is killed by any body or who is saved by anybody? Only it is self who is doing bad or good deeds and thus kills or protects himself.

(427)

कः प्रसूते पुरोवातं, कः प्रेरयति वारिदम्,
प्राप्ते तु श्रावणे मासि भवत्येकार्णवं जगत्।
कालः करोति कार्याणि, काल एव विहन्ति च,
करोमीति विहन्मीति मूर्खो मुह्यति केवलम्॥

सभारञ्जनशतक/63-64

काल के कार्य

Kaḥ prasūte purovātaṁ, kaḥ prerayati vāridam,
Prāpte tu śrāvaṇe māsi bhavatyekārṇavaṁ jagat |
Kālaḥ karoti kāryāṇi, kāla eva vihanti ca,
Karomīti vihanmīti mūrkho muhyati kevalam ||

Sabhārañjanaśataka / 63-64

Works of time

पूर्व की वायु को कौन पैदा करता है? मेघ को कौन प्रेरणा देता है? सावन का महीना आने पर सारा संसार सागर का रूप कैसे धारण कर लेता है?

काल ही सब कार्य करता है और काल ही नष्ट कर देता है। मूर्ख मनुष्य नासमझी में कह बैठता है कि मैं बना रहा हूँ, मैं नष्ट कर रहा हूँ।

Who makes the eastern wind blow? who inspires the cloud? When the month of Sāvana comes, how does the whole world changes into an ocean?

It is only time, which makes and which destroys, but a fool says due to his ignorance that he makes and destroys also.

(428)

कटु क्वणन्तो मलदायकाः खलाः,
तुदन्त्यलं बन्धनशृङ्खला इव।
मनस्तु साधुध्वनिभिः पदे-पदे,
हरन्ति सन्तो मणिनूपुरा इव॥

दुष्टों और सज्जनों की वाणियाँ कादम्बरी मु./6

Kaṭu kvaṇanto maladāyakāḥ khalāḥ,
Tudantyalaṁ bandhana-śṛṅkhalā iva |

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Manastu sādhu-dhvanibhiḥ pade pade,
Haranti santo maṇinūpurā iva ||

Kādambari / Mu. / 6

Speechs of the good and the bad

श्रेष्ठ लोगों पर आक्षेप करने वाले दुष्ट लोग कड़वे शब्दों को बोलते हुए इस प्रकार उन्हें दुःखी करते हैं, जिस प्रकार पाँव की बेड़ियाँ किसी को कष्ट देती हैं; परन्तु सज्जन लोग अपने प्रत्येक शब्द की मीठी ध्वनि से मन को ऐसे हर लेते हैं, जैसे मणियों से जड़े पायजेब।

The wicked persons speaking bitterly against good people always try to find faults with them. They are troublesome for good people as iron fetters tied with legs. But on the otherhand, good persons with their sound of sweet words attract one's mind as jewelled anklets attract through its sweet sound.

(429)

कण्ठस्था या भवेद्विद्या सा प्रकाश्या सदा बुधैः।
या गुरौ पुस्तके विद्या तया मूढः प्रतार्यते॥

उपयोगी विद्या भोजप्रबन्ध / 4

Kaṇṭhasthā yā bhavedvidyā sā prakāśyā sadā budhaiḥ |
Yā Gurau pustake vidyā tayā mūḍhaḥ pratāryate ||

Useful knowledge Bhojaprab. / 4

जो विद्या कण्ठस्थ है, बुद्धिमानों को उसे ही सदा प्रकट करना चाहिए। जो विद्या गुरु के पास या पुस्तक में बन्द है और कण्ठस्थ नहीं है, उससे मनुष्य मूढ-सा होकर धोखा खा जाता है।

The knowledge which is known orally should be used by the wise men. The knowledge which lies with the teacher or in the book cannot be used at proper time and therefore this type of education becomes the cause of foolishness.

(430)

कतिपयदिवसस्थायिनी मदकारिणि यौवने दुरात्मानः।
विदधति तथापराधं जन्मैव यथा वृथा भवति॥

दुरात्माओं की जवानी भोज-प्रबन्ध. / 39

Katipaya-divasa-sthāyinī madakāriṇi yauvane durātmānaḥ |
Vidadhati tathāparādhaṁ janmaiva yathā vṛthā bhavati ||

Youth of the bad Bhojapra. / 39

दुष्ट लोग कुछ दिन तक रहने वाली पागल बना देने वाली यौवनावस्था में ऐसा अपराध कर बैठते हैं, जिससे उनका सम्पूर्ण मानव-जीवन ही बरबाद हो जाता है।

Wicked persons commit such a crime in their short durable youth, which maddens them, due to which their complete human birth becomes useless.

(431)

कदा क्षत्रश्रियं नरमा वरुणं करामहे।
मृडीकायोरुचक्षसम्॥

उपासना का अवसर ऋ. / 1 / 25 / 5

Kadā kṣatraśriyaṁ naramā Varunaṁ karāmahe |
Mṛḍīkāyorucakṣasam ||

Time of meditation Ṛg. / 1 / 25 / 5

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वह दिन कब आएगा जब हम अपने पूर्ण सुख के लिए सर्वद्रष्टा और वेदों द्वारा अनेक प्रकार से स्तुति किए गए सम्पूर्ण विश्व पर शासन करने वाले सर्वरक्षक, सबको सन्मार्ग दिखाने वाले श्रेष्ठ नेता, सबके द्वारा वरण करने योग्य प्रभु को अपना बनायेंगे? अर्थात् हमें समय व्यर्थ में न खोकर उस वरुण की उपासना नियमपूर्वक प्रतिदिन करनी चाहिए।

When will that day come, when we, for our own complete bliss, will adopt God as our relative, who is omniscient, praised by the Vedas in different ways, rules upon the whole universe, saviour of all, good guide, our best leader and adoptable by everybody? It means that we should not spend our time uselessly but should begin to worship and meditate God everyday regularly.

(432)

कनकभूषणसंग्रहणोचितो,
यदि मणिस्त्रपुणि प्रतिबध्यते।
न स विरौति न चापि च शोभते,
भवति योजयितुर्वचनीयता॥

उचित स्थान की महिमा पञ्च. / मित्रभेद / 77

Kanaka-bhūṣaṇa-saṁgrahanocito,
Yadi maṇistrapuni pratibadhyate।
Na sa virauti na cāpi ca śobhate,
Bhavati yojayiturvacanīyatā॥

Pañca. / MItrabhe. / 77

Advantage of due place

जो रत्न सोने के आभूषण में जड़ने के योग्य है, यदि उसे राँगे में जड़ दिया जाए, तो न तो उससे कोई ध्वनि निकलेगी और न ही सजावट होगी, बल्कि जड़ने वाला ही बदनाम होगा।

The jewel which deserves fitting into gold ornament, if that is fitted in tin, then it will neither make sound nor decorate, but the fitter will be blamed for his undue fitting.

(433)

कनकमपि रहस्यवेक्ष्य बुद्ध्या,
तृणमिव यस्समवैति परस्वम्।
भवति च भगवत्यनन्तचेताः,
पुरुषवरं तमवेहि विष्णुभक्तम्॥

सच्चा विष्णुभक्त श्रीविष्णुपुराण / 3 / 7 / 22

Kanakamapi rahasyavekṣya buddhyā,
Tṛṇamiva yassamavaiti parasvam।
Bhavati ca bhagavatyanantacetāḥ,
Puruṣavaraṁ tamavehi Viṣṇubhaktam॥

Viṣnupu. / 3 / 7 / 22

True devotee of God

एकान्त स्थान पर सोने को भी पड़ा हुआ देखकर जो अपनी बुद्धि से उसे पराया धन मानकर तिनके के समान समझता है और भगवान् का ही जो निरन्तर चिन्तन करता रहता है, उस श्रेष्ठ पुरुष को ही विष्णु का भक्त समझना चाहिए।

The person who after seeing, even gold at a lonely place, takes it in mind like a straw, thinking it the property of some other one's, and

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

who always meditates God, is the best man and really a devotee of Viṣṇu.

(434)

कर्म चैव हि सर्वेषां करणानां प्रयोजनम्।
श्रेयःपापीयसां चात्र फलं भवति कर्मणाम्॥

अंगों का उपभोग वा.रा. / युद्धका. / 64 / 7

Karma caiva hi sarveṣāṁ kāraṇānāṁ prayojanam |
Śreyaḥ-pāpīyasāṁ cātra phalaṁ bhavati karmaṇām ||

Vā. Rā. / Yuddhakā. / 4 / 7

Use of organs

सभी इन्द्रियों का प्रयोजन कर्म ही है। अच्छे अथवा बुरे कर्मों का इस संसार में ही अच्छा या बुरा फल देखा जाता है।

All sense-organs are made to work. Every good or bad work bears its good or bad result in this world itself.

(435)

कर्मणा जायते सर्वं कर्मैव गतिसाधनम्।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन, साधु कर्म समाचरेत्॥

कर्म का महत्त्व विष्णुपुराण / 1 / 18 / 32

Karmaṇā jāyate sarvaṁ karmaiva gatisādhanam |
Tasmāt sarvaprayatnena, sādhu karma samācaret ||

Viṣnupu. / 1 / 18 / 32

Advantage of efforts

कर्म द्वारा ही सब कुछ उत्पन्न होता है और कर्म ही आगे बढ़ने का साधन है। अतः मनुष्य को चाहिए कि वह यथाशक्ति अच्छा कर्म ही करे।

Every thing is produced by action and it is action that makes one's progress. Therefore man should do only good work with his best ability.

(436)

कर्मायत्तम् फलं पुंसाम्, बुद्धिः कर्मानुसारिणी।
तथापि सुधियाऽऽचार्याः सुविचार्यैव कुर्वते॥

सोचकर करो चाणक्यनीति / 13 / 18

Karmāyattam phalaṁ puṁsāṁ, buddhiḥ karmānusāriṇī |
Tathāpi sudhiyā''cāryāḥ suvicāryaiva kurvate ||

Think before doing Cāṇakyanīti / 13 / 18

मनुष्यों को कर्मानुसार ही फल प्राप्त होता है और बुद्धि भी कर्मानुसार ही बनती है, तो भी बुद्धिमान लोग श्रेष्ठ बुद्धि द्वारा सोचकर ही सभी कार्य करते हैं।

People get result according to their deeds and their wisdom is also the result of their deeds. Still, wisemen do every work after thinking with their good intellect.

(437)

कवयः किं न पश्यन्ति, किं न कुर्वन्ति योषितः।
मद्यपाः किं न जल्पन्ति, किं न खादन्ति वायसाः॥

कर्ता और कार्य चाणक्यनीति / 10 / 14

Kavayaḥ kiṁ na paśyanti, kiṁ na kurvanti yoṣitaḥ |
Madyapāḥ kiṁ na jalpanti, kiṁ na khādanti vāyasāḥ ||

Doers and deeds Cānakyanīti / 10 / 14

कवि क्या नहीं देखते, अर्थात् उनकी दृष्टि दूर तक जाती है। स्त्रियाँ क्या नहीं करतीं, अर्थात् वे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सभी प्रकार के अच्छे–बुरे कार्य कर लेती हैं। शराबी क्या नहीं बकते, अर्थात् सब प्रकार का बकवास कर बैठते हैं। कौए क्या नहीं खाते, अर्थात् अच्छा–बुरा सब खा जाते हैं।

What do the poets not look? They have a far sight. What do the women not do? They do every kind of work, good or bad. What do the drunkards not babble? In fact they babble all nonsense. What do the crows not eat? They eat every thing, good or bad.

(438)

कवित्वं न शृणोत्येव, कृपणः कीर्तिवर्जितः।
नपुंसकः किं कुरुते, पुरःस्थित–मृगीदृशा॥

कंजूस और कविता भोजप्रबन्ध / 130

Kavitvaṁ na śṛṇotyeva, kṛpaṇaḥ kīrtivarjitaḥ।
Napuṁsakaḥ kiṁ kurute, puraḥ-sthita-mṛgīdṛśā॥

Bhojapra. / 130

Greedy person and a poem

अप्रसिद्ध कंजूस व्यक्ति, कविता को सुनना ही नहीं चाहता (कि कहीं कुछ देना न पड़ जाए), जैसे सामने बैठी सुन्दर नारी से नपुंसक किसी प्रकार का मनोरंजन नहीं कर सकता।

An ill famous hard-fisted person does not want to hear a poem (as he may have to give some money), as an impotent person who cannot enjoy with a beautiful women sitting in front of him.

(439)

कवीनां महतां सूक्तैर्गूढार्थान्तरसूचिभिः।
विध्यमानश्रुतेर्मा भूद्दुर्जनस्य कथं व्यथा॥

दुर्जन और सुभाषित सुभाषितवलि / 158

Kavīnāṁ mahatāṁ sūktairgūḍhārthāntarasūcibhiḥ।
Vidhyamānaśrutermā bhūddurjanasya kathaṁ vyathā॥

Subhāṣitāvali / 158

Bad person and good sentences

भिन्न–भिन्न गूढ अर्थों को बताने वाले बड़े कवियों के सूई के समान उत्तम वाक्यों से जिसके कान बींधे जा रहे हों, ऐसे दुर्जन को पीड़ा भला क्यों न होगी? भाव यह है कि नादान व्यक्ति कवियों के गूढ भाव को न समझ सकने के कारण दुखी होता है।

यहाँ 'सूचिभिः' श्लिष्ट पद है, जिसके 'बताने वाले' तथा 'सुइयों से' ये दो अर्थ हैं।

The foolish person who cannot understand the hidden meaning of the sentences of the great poets, feels pain, as if his ears are being pierced with needles. Why will such a bad person not feel the pain? This means that an incapable person is unhappy for his lack of understanding the true meanings of the poems of the poets.

(Here 'Sūcibhi' word gives two meanings - 'indicating' and 'needles')

(440)

कश्चित्तरति काष्ठेन सुगभीरां महानदीम्।
स तारयति तत्काष्ठं स च काष्ठेन तार्यते॥

सहयोग का लाभ महाभा. / शान्तिपर्व / 138 / 62

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kaścittarati kāṣṭhena sugabhīrāṁ mahānadīm |
Sa tārayati tatkāṣṭhaṁ sa ca kāṣṭhena tāryate ||

Mahābhā. / Śāntip. / 138 / 62

Advantage of cooperation

कोई व्यक्ति बहुत गहरी और बड़ी नदी को लकड़ी द्वारा पार कर जाता है। वह व्यक्ति उस लकड़ी को पार लगा देता है और उस लकड़ी द्वारा वह पार लगा दिया जाता है। (परस्पर सहयोग से दोनों के कार्य हो जाया करते हैं।)

A man goes across a very deep vast river with the help of a wooden block. That man makes the wood cross the river and he goes across the river with the help of that wood, (Cooperation makes successful to each other).

(441)

कष्टं च खलु मूर्खत्वं कष्टं च खलु यौवनम्।
कष्टात् कष्टतरञ्चैव परगेह-निवासनम्॥

परगृह निवास चाणक्यनीति / 2 / 8

Kaṣṭaṁ ca khalu mūrkhatvaṁ, kaṣṭaṁ ca khalu yauvanam |
Kaṣṭāt kaṣṭatarañcaiva paragehanivāsanam ||

Cāṇakyanīti / 2 / 8

Living in others house

मूर्खता कष्टदायक है, जवानी भी कष्टदायक है, परन्तु सबसे अधिक कष्टदायक बात है दूसरे के घर में रहना।

Foolishness is troublesome and youth is also like that, but to reside in other's house is most troublesome.

(442)

कस्य दोषः कुले नास्ति, व्याधिना को न पीडितः।
व्यसनं केन न प्राप्तम्, कस्य सौख्यं निरन्तरम्॥

त्रुटियाँ सर्वत्र हैं चाणक्यनीति / 3 / 1

Kasya doṣah kule nāṣti, vyādhinā ko na pīḍitaḥ |
Vyasanaṁ kena na prāptam, kasya saukhyaṁ nirantaram ||

Cāṇkanīti / 3 / 1

Every where is some defect

किसके कुल में कमी नहीं है? रोग से पीड़ित कौन नहीं है? कष्ट किस पर नहीं आता? और सुख सदा किसको मिलता है? (भाव यह है कि सभी कुलों में कमियाँ होती है, सबको कोई न कोई रोग लगा रहता है, कष्ट सभी पर आते हैं। और कोई भी सदा सुखी नहीं रहता।)

Whose family is without any scarcity? Who is not suffering from any disease? Who does not face any difficulty? And who is happy for ever? (It means that every family has some scarcity, every one suffers some disease, every one has to face trouble and nobody is happy forever).

(443)

कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा।
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण॥

सुख-दुख की अस्थिरता मेघदूत / उत्तरमेघ / 46

Kasyātyantaṁ sukhamupanataṁ duḥkhamekāntato vā |
Nicairgacchatyupari ca daśā cakranemikrameṇa ||

Meghaduta / Uttara. / 46

Changeability of weals and woes

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किसे केवल सुख अथवा दुःख प्राप्त हुआ है? जिस प्रकार पहिये के अरे (स्पोक्स) क्रमशः नीचे और ऊपर जाते हैं, उसी प्रकार जीवन में कभी सुख होता है, तो कभी दुःख।

Who has gained only happiness or pain? As the spokes of a wheel sometimes go up and sometimes go down, the same case is with weal and woe. Sometimes the man enjoys happiness while at the other time he suffers with troubles.

(444)

काकः कृष्णः पिकः कृष्णः को भेदः पिककाकयोः।
वसन्तसमये तात! काकः काकः पिकः पिकः॥

पहचान का समय सूक्तिनिधि / पृ. 94

Kākaḥ kṛṣṇaḥ pikaḥ kṛṣṇaḥ ko bhedaḥ pikakākayoḥ |
Vasantasamaye tāta kākāḥ kākaḥ pikaḥ pikaḥ ||

Time of recognition Sūktiṁnidhi / P. 94

कौआ भी काला होता है और कोयल भी काली होती है। इनमें क्या अन्तर है? हे प्रिय! वसन्त ऋतु में आवाज से कोयल और कौए की पहचान हो जाती है। (कोयल मीठी और कौआ कर्कश आवाज करता है)।

The crow and the cuckoo both are black. What is the difference between them? O dear, when the spring season comes, the crow and the cuckoo both are recognized differently, as the sound of the cuckoo is sweet while that of the crow is harsh.

(445)

काकः पद्मवने रतिं न कुरुते, हंसो न कूपोदके,
मूर्खः पण्डितसङ्गमे न रमते, दासो न सिंहासने।
कुस्त्री सज्जनसङ्गमे न रमते, नीचं जनं सेवते,
या यस्य प्रकृतिः स्वभावजनिता, केनापि न त्यज्यते॥

स्वभाव त्याज्य नहीं अज्ञात

Kākaḥ padmavane ratiṁ na kurute, haṁso na kūpodake,
Mūrkhaḥ paṇḍitasaṅgame na ramate, dāso na siṁhāsane |
Kustrī sajjanasaṅgame na ramate, nīcaṁ janaṁ sevate,
Yā yasya prakṛtiḥ svabhāvajanitā, kenāpi na tyajyate ||

Nature cannot be kept off Unknown

कौए को कमल-वन अच्छा नहीं लगता, हंस को कुएँ का जल नहीं भाता, मूर्ख विद्वानों के साथ रहना पसन्द नहीं करता और दास राजसिंहासन नहीं चाहता। बुरी नारी अच्छे व्यक्ति के साथ रहना पसन्द नहीं करती; वह तो नीच की सेवा करना चाहती है। इस प्रकार जिसकी आदत स्वभाव से जैसी बन गई है, उसे कोई भी छोड़ नहीं सकता।

The crow doesn't like the lotus-garden and the swan dislikes the water of a well. A fool dislikes the company of a scholar and a slave doesn't like a throne. A corrupt woman dislikes a good person, but likes a mean fellow. In this way the nature which has developed from one's habits, cannot be given up by anybody.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(446)

काकाः किं किं न कुर्वन्ति, कोङ्कारं यत्र तत्र वा।
शुक एव परं वक्ति, नृपहस्तोपलालितः॥

सज्जन और दुर्जन भोजप्रबन्ध / 192

Kākāḥ kiṁ kiṁ na kurvanti, koṅkāraṁ yatra tatra vā |
Śuka eva paraṁ vakti, nṛpahastopalālitaḥ ||

The good and the bad Bhojapra. / 192

कौए यत्र-तत्र काँव-काँव करते फिरते हैं परन्तु क्या वे राजा के हाथों से पले हुए बोलने वाले तोते की तुलना कर सकते हैं? (कदापि नहीं)

Crows caw here and there, but can they compete the trained parrot which has been nourished by a king? (never)

(447)

का खलेन सह स्पर्धा सज्जनस्याभिमानिनः।
भाषणं भीषणं साधोर्दूषणं यस्य भूषणम्॥

दुष्ट और सज्जन में अंतर सुभाषितावलि / 134

Kā khalena saha spardhā sajjanasyābhimāninaḥ |
Bhāṣaṇaṁ bhīṣaṇaṁ sādhordūṣaṇaṁ yasya bhūṣaṇam ||

Difference between the bad and the good Subhāṣitāvali / 134

स्वाभिमानी सज्जन उस दुष्ट का अनुकरण कैसे कर सकता है, जिसका कठोर बोलना और भले लोगों की निन्दा करना ही भूषण है?

How can a good man imitate or follow a bad person, whose ornaments are bitter talking and defaming good persons?

(448)

काचः काञ्चनसंसर्गाद्धत्ते मारकतीं द्युतिम्।
तथा सत्सन्निधानेन मूर्खो याति प्रवीणताम्॥

सत्संगति का लाभ हितोपदेश / प्रस्तावना / 41

Kācaḥ kāñcanasaṁsargāddhatte mārakatīṁ dyutim |
Tathā satsannidhānena mūrkho yāti pravīṇatām ||

Hitopa. / Prastā. /41

Advantage of good company

काँच सोने के साथ रहने से मरकतमणि की शोभा प्राप्त कर लेता है। उसी प्रकार मूर्ख भी श्रेष्ठ लोगों के संगति से निपुण बन जाया करता है।

A piece of glass obtains the beauty of the emerald, when it is set with gold. In the same way an illiterate person becomes dexterous in the company of good persons.

(449)

काचे मणिर्मणौ काचो येषां बुद्धिर्विकल्पते।
न तेषां सन्निधौ भृत्यो नाममात्रोऽपि तिष्ठति॥

अयोग्य परीक्षक पञ्च. / मित्रभेद / 79

Kāce maṇirmaṇau kāco yeṣāṁ buddhirvikalpate |
Na teṣāṁ sannidhau bhṛtyo nāmamātro'pi tiṣṭhati ||

Pañca. / Mitrabhe. / 79

Condemnable examiner

जिन्हें काँच में मणि का और मणि में काँच का भ्रम हो जाता है, ऐसे लोगों के पास कोई नौकर तनिक भी रहना पसन्द नहीं करता।

Those who take a piece of glass as a jewel and a jewel as a piece

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

of glass due to illusion in their minds, no servant likes to stay with them even for a moment.

(450)

कान्ताकटाक्षविशिखा न दहन्ति यस्य,
चित्तं न निर्दहति कोपकृशानुतापः।
कर्षन्ति भूरि विषयाश्च न लोभपाशै-
र्लोकत्रयं जयति कृत्स्नमिदं स धीरः॥

संयम के लाभ नीतिशतक / 108

Kāntākatākṣaviśikhā na dahanti yasya,
Cittaṁ na nirdahati kopakṛśānutāpaḥ।
Karṣanti bhūri viṣayāśca na lobhapāśaiḥ,
Lokatrayaṁ jayati kṛtsnamidaṁ sa dhīraḥ॥

Nītiśataka / 108

Advantages of self-control

जिसे स्त्रियों की आँखों की चेष्टाएँ रूपी बाण जलाते नहीं हैं, क्रोध की अग्नि के ताप से जिसका हृदय जलता नहीं है और जिसे अनेक प्रकार के विषय अपने आकर्षण के जालों में घसीट नहीं पाते, वही धीर पुरुष तीनों लोकों को एक साथ जीतने में समर्थ होता है।

The person who is not burnt with the arrows of ladies' glances, whose heart never feels the heat of the fire of rage and who cannot be pulled by the different kinds of sensual passions in their net, only he is firm and can win all the three worlds. (lokas)

(451)

कान्तावियोगः स्वजनापमानः,
ऋणस्य शेषः कुजनस्य सेवा।
दरिद्रभावो विषमा सभा च,
विनाग्निमेते प्रदहन्ति कायम्॥

कष्टप्रद वस्तुएँ चाणक्नीति / 2 / 14

Kāntā-viyogaḥ svajanāpamānaḥ,
Ṛṇasya śeṣaḥ kujanasya sevā।
Daridrabhāvo viṣamā sabhā ca,
Vināgnimete pradahanti kāyam॥

Torturer things Cāṇakyanīti / 2 / 14

पत्नी का वियोग, सम्बन्धियों द्वारा किया गया अपमान, कर्ज का बकाया रहना, दुष्ट व्यक्ति की नौकरी, गरीबी और अपने विचारों के प्रतिकूल सभा– ये सब वस्तुएँ बिना आग के भी शरीर को जलाती रहती हैं?

The following six things continuously burn one's body even without fire :- (1) Separation of the wife, (2) insult done by own relatives, (3) remainder of debt, (4) bad person's service, (5) poverty and (6) such a meeting in which one's ideas are opposed.

(452)

कान्तोऽसि नित्यमधुरोऽसि रसाकुलोऽसि,
किं चासि पञ्चशरकार्मुकमद्वितीयम्।
इक्षो तवास्ति सकलं परमेकमूनम्,
यत्सेवितो भजसि नीरसतां क्रमेण॥

नीरसता – एक दोष भोजप्रबन्ध / 234

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kānto'si nityamadhuro'si rasākulo'si,
Kiṁ cāsi pañcaśarakārmukamadvitīyam l
Ikṣo tavāsti sakalaṁ paramekamūnam,
yatsevito bhajasi nīrasatāṁ krameṇa ll

Lack of sweetness — a defect Bhojapra. / 234

हे ईख! तू सुन्दर है, सदा मीठा है, रस से परिपूर्ण है, और कामदेव का अनोखा धनुष भी है, परन्तु इतने गुण होने पर भी तुझमें एक कमी है कि ज्यों-ज्यों तुझसे रस लिया जाता है, त्यों-त्यों तू रसहीन होता जाता है।

O sugarcane! You are beautiful, always sweet, full of juice and also are the special bow of the god cupid. In spite of all these qualities, there is one defect in you, that when you are sucked you become juceless gradually.

(453)

कामः क्रोधस्तथा दर्पमोहलोभादयश्च ये।
तांस्तु सर्वान् परित्यज्य परिव्राट् निर्ममो भवेत्॥

संन्यासी का कर्त्तव्य श्रीविष्णुपुराण / 3 / 9 / 30

Kāmaḥ krodhastathā darpamohalobhādayaśca ye l
Tāṁstu sarvān parityajya parivrāṭ nirmamo bhavet ll

Duty of an ascetic Viṣṇupu. / 3 / 9 / 30

संन्यासी को चाहिए कि वह काम, क्रोध, अभिमान, लोभ, मोह, आदि को छोड़कर वीतराग बन जाए।

A religious sage should reject passion, rage, arrogance, attachment and greed etc. and rejecting all these things he should become disinterested.

(454)

काम-क्रोधग्राहवतीं पञ्चेन्द्रियजलां नदीम्।
नावं धृतिमयीं कृत्वा जन्मदुर्गाणि सन्तर॥

महाभा. / उद्योग. / 4 / 23

वासना को जीतने का उपाय

Kāma-krodha-grāhavatīṁ pañcendriyajalāṁ nadīml
Nāvaṁ dhṛtimayīṁ kṛtvā janma-durgāṇi santara ll

Mahābhā. / Udyoga / 4 / 23

Method to win passions

हे मानव! काम और क्रोध रूपी मगरमच्छों से युक्त पाँच ज्ञानेन्द्रिय-रूपी जल वाली नदी को धैर्य रूपी नौका के द्वारा पार करके बार-बार होने वाले जन्म के कष्टों से दूर हो जा।

O man! The river full of the water of five senses has the crocodiles of passion and rage. Cross such a river with the boat of patience and get rid off the troubles of taking birth again and again.

(455)

कामधेनुगुणा विद्या ह्यकाले फलदायिनी।
प्रवासे मातृसदृशी विद्या गुप्तं धनं स्मृतम्॥

विद्या का महत्त्व चाणक्यनीति / 4 / 5

Kāma-dhenuguṇā vidyā hyakāle phaladāyinī l
Pravāse matṛsadṛśī, vidyā guptaṁ dhanaṁ smṛtam ll

Cāṇakyanīti / 4 / 5

Importance of knowledge

विद्या कामधेनु के गुणों वाली है, जो कठिनाई के समय लाभ पहुँचाती है। विदेश में यह माता के समान सहारा देती है। विद्या को छिपा हुआ धन कहा गया है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Knowledge has the qualities of Kāma-dhenu, which is useful in adversity. It gives support like a mother in foreign countries. Knowledge is said to be the hidden wealth.

(456)

कामाभिभूता हि न यान्ति शर्म,
त्रिविष्टपे किं बत मर्त्यलोके।
कामैः सतृष्णस्य हि नास्ति तृप्ति-
र्यथेन्धनैर्वातसखस्य वह्नेः ॥

कामवासना से हानि बुद्धचरितम् / पृ. 116 / 10

Kāmābhibhūtā hi na yānti śarma,
Triviṣṭape kiṁ bata martyalokel
Kāmaiḥ satṛṣṇasya hi nāsti tṛptir-
yathendhanairvātasakhasya vahneḥ ll

Buddhaca. / P. 116 / 10

Loss due to sexuality

कामनाओं से व्याकुल लोग, चाहे स्वर्ग में हों और चाहे भूलोक में, शान्ति प्राप्त नहीं कर सकते। कामनाओं की प्यास से व्याकुल मनुष्य उसी प्रकार शान्त नहीं हो सकता, जिस प्रकार वायु और ईंधनों से युक्त अग्नि भड़कती ही है; शान्त नहीं होती।

The persons disturbed by desires cannot get peace neither in the heaven, nor on the earth. The thirst of desires perplexes a man and never quenches like the fire which is supported by air and fuel.

(457)

कामार्थौ लिप्समानस्तु, धर्ममेवादितश्चरेत्।
न हि धर्माद् भवेत् किञ्चिद् दुष्प्राप्यमिति मे मतिः ॥

धर्म – सर्वोत्तम साधन सुभाषितावलि / 2951

Kāmārthau lipsamānastu, dharmamevāditaścaret l
Na hi dharmād bhavet kiñcid duṣprāpyamiti me matiḥ ll

Subhāsitāvali / 2951

Best means is morality

काम और अर्थ की सिद्धि चाहने वाले को पहले धर्म का ही आचरण करना चाहिए। मेरे विचार में धर्माचरण के पश्चात् कुछ भी पाना कठिन नहीं रह जाता।

One, who wants success in love and wealth, should practise only morality from the beginning. In my opinion, after practice of morality nothing remains impossible to be obtained.

(458)

कायः सन्निहितापायः सम्पदः क्षणभङ्गुराः।
समागमाः सापगमाः सर्वेषामेव देहिनाम् ॥

क्षणङ्गुरता पञ्चतन्त्र / मित्रसम्प्राप्ति / 179

Kāyaḥ sannihitāpāyaḥ sampadaḥ kṣaṇabhaṅgurāḥ l
Samāgamāḥ sāpagamāḥ sarveṣāmeva dehinām ll

Moratatity Pañca. / Mitrasam. / 179

सभी प्राणियों के शरीर नश्वर हैं, सम्पत्तियाँ क्षण-भङ्गुर हैं और सम्बन्ध भी नष्ट हो जाने वाले हैं।

The bodies of all creatures are

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

destructible, properties are momentary and relations also are temporary.

(459)

कारणात्प्रियतामेति द्वेष्यो भवति कारणात्।
अर्थार्थी जीवलोकोऽयं न कश्चित् कस्यचित् प्रियः॥

स्वार्थमय संसार सुभाषितावलि / 2658

Kāraṇātpriyatāmeti, dveṣyo bhavati kāraṇāt |
Arthārthī jīvaloko'yaṁ na kaścit kasyacit priyaḥ ||

Selfish world Subhāṣitāvali / 2658

कोई किसी से प्रेम करता है या द्वेष करता है, तो उसमें कोई कारण अवश्य होता है। यह सम्पूर्ण प्राणिजगत् स्वार्थ से पूर्ण है; वस्तुतः कोई भी किसी का प्यारा नहीं है।

If somebody loves or hates some one, there is some reason behind it. All creatures of the world are selfish. Nobody is loved by anyone without any reason.

(460)

कार्त्स्न्येन निर्वर्णयितुं च रूपम्,
इच्छन्ति तत्पूर्वसमागमानाम्।
न च प्रियेष्वायतलोचनानाम्,
समग्रपातीनि विलोचनानि॥

दृष्टिदोष मालविकाग्निमित्रम् / 4 / 8

Kārtsnyena nirvarṇayituṁ ca rūpam,
Icchanti tatpūrvasamāgamānām |
Na ca priyeṣvāyatalocanānām,
Samagrapātīni vilocanāni ||

Defect of sight Mālvikagni / 4 / 8

सुन्दरियाँ प्रथम मिलन पर अपने प्रियतमों का रूप अच्छी प्रकार से देखना तो चाहती हैं, परन्तु उनकी आँखें प्रियतमों पर पूरी तरह से पड़ ही नहीं पातीं।

All ladies desire to observe the complete complexions of their lovers at the first sight, but their eyes cannot be concentrated on their faces completely.

(461)

कार्ये कर्माणि निर्वृत्ते यो बहून्यपि साधयेत्।
पूर्वकार्याविरोधेन स कार्यं कर्त्तुमर्हति॥

उत्तम सेवक वा. रामायण / सुन्दर का. / 41 / 5

Kārye karmāni nirvṛtte yo bahūnyapi sādhayet |
Pūrvakāryāvirodhena sa kāryaṁ karttumarhati ||

Vā. Rā. / Sandara Kā. / 41 / 5

Admirable servant

जो पुरुष मुख्य कार्य के कर लेने पर अनेक अन्य कार्यों को भी कर लेता है और पहले के कार्यों में बाधा नहीं आने देता, वही सभी कार्य को सुचारु रूप में कर सकता है।

The man who completes the prime work first, and later on also completes the other works and doesn't allow any problem in done works, can do every work in good manner.

(462)

कालः पचति भूतानि, कालः संहरते प्रजाः।
कालः सुप्तेषु जागर्ति, कालो हि दुरतिक्रमः॥

काल के कार्य चाणक्यनीति / 6 / 7

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kālaḥ pacati bhūtāni, kālaḥ saṁharate prajāḥ |
Kālaḥ supteṣu jāgarti, kālo hi duratikramaḥ ||

Works of time Caṇakyanīti / 6 / 7

समय ही सब उत्पन्न हुए पदार्थों को पकाता है, समय ही सभी लोगों का संहार करता है, जब सभी सो रहे होते हैं, तो भी समय जाग रहा होता है; समय का उल्लंघन करना कठिन है (असम्भव है)।

It is time which does the creation, time kills all the creatures and it remains awake when others sleep. Time cannot be surpassed.

(463)

कालक्रमेण जगतः परिवर्तमाना।
चक्रारपङ्क्तिरिव गच्छति भाग्य-पङ्क्तिः ॥

भाग्य की अस्थिरता स्वप्नवासवदत्तम् / 1 / 4

Kālakrameṇa jagataḥ parivartamānā |
Cakrārapaṅktiriva gacchati bhāgyapaṅktiḥ ||

Svapnavā. / 1 / 4

Unsteadiness of the fate

जैसे पहिए के अरों की श्रेणी क्रमशः घूमती चली जाती है, उसी प्रकार समय के अनुसार संसार की बदलती हुई भाग्यों की कतार भी चलती चली जाती है।

As the range of the spokes of a wheel rotates, similarly the range of luck also moves changing the world according to its time.

(464)

कालाकालौ सम्प्रधार्य बलाबलमथात्मनः।
परस्परं बलं ज्ञात्वा तत्रात्मानं नियोजयेत् ॥

कार्य और सामर्थ्य महाभा. / शा. पर्व. / 140/29

Kālākālau sampradhārya balābalamathātmanaḥ |
Parasparaṁ balaṁ Jñātvā tatrātmānaṁ niyojayet ||

Mahābhā. / Śā. Par. / 140 / 29

Work and capability

अनुकूल या प्रतिकूल समय तथा अपनी शक्ति और दुर्बलता का निश्चय करके और एक-दूसरे की शक्ति को जानकर ही किसी कार्य में प्रवृत्त होना चाहिए।

Calculating the good or bad time and one's own strength and weakness and after knowing the power of each other, one should begin any work.

(465)

काले तपः काले ज्येष्ठं काले ब्रह्म समाहितम्।
कालो ह सर्वस्येश्वरो, यः पिताऽऽसीत् प्रजापतेः ॥

काल की महिमा अथर्व. / 19/53/8

Kāle tapaḥ kāle jyeṣṭhaṁ kāle Brahma samāhitam |
Kālo ha sarvasyeśvaro, yaḥ pitā'sīt prajāpateḥ ||

Greatness of time Atharva. / 19 / 53 / 8

उचित काल में ही तप होता है, उचित काल में ही बड़प्पन प्राप्त हो सकता है, ज्ञान भी उचित काल में ही पाया जाता है। निश्चय ही काल सब का ईश्वर है; स्वामी है। काल ही प्रजापति का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भी उत्पादक है, अर्थात् काल के आने पर ही सृष्टि की रचना परमेश्वर करता है।

Penance is performed at due time, greatness can be achieved at due time and knowledge is acquired at due time. It is time which is the master of all and certainly is the most powerful. Even time is the creator of world's Creator. It means that even God creates the world only when its time comes.

(466)

काले प्राप्तं महारत्नं यो न गृह्णात्यबुद्धिमान्।
अन्यहस्तगतं दृष्ट्वा पश्चात् स परितप्यते॥

समय की चूक — अमरुकशतकम्

Kāle prāptaṁ mahāratnaṁ yo na gṛhṇātyabuddhimān |
Anyahastagataṁ dṛṣṭvā paścāt sa paritapyate ||

Ignoring the time — Amaruka

जो मूढ़ पास आए महारत्न को समय पर नहीं ले लेता, वह बाद में उसे दूसरे के पास गया हुआ देख कर दुखी हो जाता है।

A fool, who does not acquire a gem in time which he can obtain, feels sadness when he sees it acquired by other.

(467)

कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः सहसाक्षो अजरो भूरिरेताः।
तमारोहन्ति कवयो विपश्चितस्तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा॥

काल के विजेता अथर्ववेद/19/53/1

Kālo aśvo vahati saptaraśmiḥ sahasrākṣo ajaro bhūriretāḥ |
Tamārohanti kavayo vipaścitastasya cakrā bhuvanāni viśvā ||

Atharva / 19 / 53 / 1

Victorious persons on time

पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, मन और बुद्धि इन सात से नियन्त्रित करने योग्य, हजारों धुरों को (संसार के पदार्थों को) चलाने वाला, कभी भी बूढ़ा न होने वाला बहुत ही शक्तिशाली कालरूपी घोड़ा संसार को ढो रहा है अथवा चला रहा है, इस पर क्रान्तप्रज्ञ ही सवारी करते हैं। सम्पूर्ण लोक-लोकान्तर उसके रथ के पहियों के समान हैं।

The horse of time which can be controlled by seven reigns (five senses, mind and intellect), and mover of thousands of excels (Wordly things) never becomes old and being very powerful carries the whole world. Only witted learned people can enjoy its ride. The whole world and the people are like of its chariot wheels.

(468)

कालो भवाय भूतानामभवाय च पाण्डव।
कालमूलमिदं ज्ञात्वा, भव स्थैर्यपरोऽर्जुन॥

काल की शक्ति विष्णुपुराण/5/38/55

Kālo bhavāya bhūtānāmabhavāya ca Pāṇḍava |
Kālamūlamidaṁ jñātvā, bhava sthairyaparo'rjuna ||

Power of the time Viṣnupu. / 5 / 38 / 55

हे पाण्डुपुत्र अर्जुन! काल प्राणियों को जन्म देता है और काल ही उनको नष्ट करता है। यह सब कुछ काल के कारण ही हो रहा है, यह समझकर धैर्य धारण करो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

O the son of Paṇḍu, Arjuna! It is time which gives birth to the creatures and also distroys them. So, understanding this truth have patience.

(469)

किं करोत्येव पाण्डित्यमस्थाने विनियोजितम्।
अन्धकारप्रतिच्छन्ने घटे दीप इवाहितः॥

पाण्डित्य का दुरुपयोग पञ्च. / मित्रभेद / 344

Kiṁ karotyeva pāṇḍityamasthāne viniyojitam |
Andhakārapraticchanne ghaṭe dīpa ivāhitaḥ ||

Pañca. / Mitrabhe. / 344

Bad use of knowledge

अनुचित स्थान पर यदि अपनी विद्वत्ता का प्रयोग किया जाये, तो उसका कोई लाभ नहीं होता, जैसे अन्धकार से परिपूर्ण घड़े में दीप रखने से इधर-उधर प्रकाश नहीं हो सकता।

If a person uses his intellect at improper place, it does not give good result, as a lamp is kept into a dark pitcher, can not remove the darkness of the surroundings.

(470)

किं कवेस्तस्य काव्येन किं काण्डेन धनुष्मतः।
परस्य हृदये लग्नं नाघूर्णयति यच्छिरः॥

प्रशंसनीय कवि भट्टत्रिक्रमः

Kiṁ kavestasya kāvyena kim kāṇḍena dhanuṣmataḥ|
parasya hṛdaye lagnaṁ nāghūrṇayati yacchiraḥ ||

Admirable poet Bhaṭṭatrivikramaḥ

उस कवि के काव्य का और उस धनुर्धारी के बाण का क्या महत्त्व है, जो दूसरे के हृदय पर लगकर सिर को न घुमा दे?

भाव यह है कि सुन्दर कविता का प्रभाव हृदय पर पड़ने से स्वतः ही सिर झूम जाता है और हृदय पर तीर लगने से घायल व्यक्ति का सिर चक्कर खा जाता है।

What is the greatness of the poem of a poet which has no effect on ones mind and which does not move one's head to accept its beauty. In the same way the arrow of an archer is not successful, unless it does not pierce one's heart and the pierced one may not feel its pain.

(471)

किं कुलेन विशालेन विद्याहीने च देहिनाम्।
दुष्कुलं चापि विदुषो देवैरपि हि पूज्यते॥

विद्या का महत्त्व चाणक्यनीति / 8 / 19

Kiṁ kulena viśālena vidyāhīne ca dehinām |
Duṣkulaṁ cāpi viduṣo devairapi hi pūjyate ||

Cāṇakyanīti / 8 / 19

Advantage of knowledge

यदि मानव विद्याहीन है, तो उसके ऊँचे खानदान में जन्म लेने का कोई लाभ नहीं। विद्वान् व्यक्ति के नीच कुल की भी देवता लोग पूजा किया करते हैं।

If a man is uneducated inspite of taking birth in a high family, that is useless. We see that even the lower family of an educated person gets respect from even gods.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(472)

किं कुलेनोपदिष्टेन शीलमेवात्र कारणम्।
भवन्ति नितरां स्फीताः सुक्षेत्रे कण्टकिद्रुमाः॥

शील की प्रधानता मृच्छकटिक / 8 / 29

Kiṁ kulenopadiṣṭena śīlamevātra kāraṇaṁ।
Bhavanti nitarāṁ sphītāḥ sukṣetre kaṅṭakidrumāḥ॥

Mercchakaṭika / 8 / 29

Superiority of morality

किसी के खानदान का कोई महत्त्व नहीं होता बल्कि उसका उत्तम स्वभाव ही श्रेष्ठ माना जाता है। क्या हम देखते नहीं हैं कि अच्छे खेतों में काँटेदार झाड़ियाँ भी उग आती हैं। अतः वंश का महत्त्व नहीं है, प्रत्युत उत्तम स्वभाव ही महत्त्व-शाली है।

Borning in a high family is not a place of credit but it is the good nature which counts. We see that thorny plants grow even in good fields. So the family has no value but it is good nature which gets respect.

(473)

किञ्चित् परस्वं न हरेन्नाल्पमप्रियं वदेत्।
प्रियं च नानृतं ब्रूयान्नान्यदोषान्नुदीरयेत्॥

मनुष्य के कर्त्तव्य विष्णुपुराण / 3 / 12 / 4

Kiñcit parasvaṁ na harennālpamapriyaṁ vadet।
Priyaṁ ca nānṛtaṁ brūyānnānyadoṣānnudīrayet॥

Duties of a man Viṣṇupu. / 3 / 12 / 4

मनुष्य को चाहिए कि वह दूसरे का धन न छीने या चोरी करे, तनिक भी कठोर न बोले, प्रिय बोले परन्तु झूठ न बोले और दूसरों की त्रुटियों को मत कहे।

One should neither forcefully take nor steal other's things, nor speak bitter. He should speak sweet but not a lie and should not say the drawbacks of others.

(474)

किं चन्दनैः सकर्पूरैस्तुहिनैः किं च शीतलैः।
सर्वे ते मित्रगात्रस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्॥

मित्र का महत्त्व पञ्च. / मित्रसम्प्राप्ति / 60

Kiṁ candanaiḥ sakarpūraistuhinaiḥ kiṁ ca śītalaiḥ।
Sarve te mitragātrasya kalāṁ nārhanti ṣoḍaśīm॥

Pañca. / Mitrasam. / 60

Importance of a friend

कपूर सहित चन्दन और ठण्डी-ठण्डी बरफ भी मित्र के शरीर की शीतलता की तुलना में सोलहवाँ अंश भी नहीं हैं, अर्थात् मित्र का प्रेम सबसे अद्भुत और पूर्ण शान्तिदायक होता है।

Sandal wood with camphor and cold ice cannot be compared with the cool body of a friend, as they are not equal even to its sixteenth part. It means that the love shown by a friend is superior to all things in appeasing one's mind.

(475)

किं जातैः बहुभिः पुत्रैः शोकसन्तापकारकैः।
वरमेकः कुलालम्बी, यत्र विश्राम्यते कुलम्॥

प्रशंसनीय पुत्र चाणक्यनीति / 3 / 17

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kiṁ jātaiḥ bahubhiḥ putraiḥ śokasantāpakārakaiḥ |
Varamekaḥ kulālambī, yatra viśrāmyate kulam ||

Admirable son Cāṇkyanīti / 3 / 17

दुःख देने वाले अनेक पुत्रों के जन्म का क्या लाभ है? अर्थात् कुछ नहीं। खानदान का आश्रय-भूत एक ही ऐसा पुत्र अच्छा है, जिसके सहारे कुल सुख और शान्ति प्राप्त कर सके।

There is no use of so many sons, who are source of sadness and trouble. Only one such son is suficient, due to whom the family feels peace and happiness.

(476)

किं तया क्रियते धेन्वा, या न सूते न दुग्धदा।
कोऽर्थः पुत्रेण जातेन, यो न विद्वान्न भक्तिमान्॥

निन्दनीय पुत्र पञ्चतन्त्र / कथामुख / 5

Kim tayā kriyate dhenvā, yā na sūte na dugdhadā|
Ko'rthaḥ putreṇa jātena, yo na vidvānna bhaktimān ||

Pancata. / Kathāmukha / 5

Condemnable son

उस गाय का कोई लाभ नहीं, जो न तो दूध देती है और न ही बच्चे। ऐसे ही उस पुत्र का कुछ भी लाभ नहीं, जो न तो विद्वान् है और न भक्ति वाला ही है।

The cow which neither gives milk nor produces calves, is useless. In the same way, the son who is neither learned nor devotee of parents, is useless.

(477)

किं तु कालपरीणामो द्रष्टव्यः साधु पश्यता।
धर्मश्चार्थश्च कामश्च कालक्रमसमाहिताः॥

समय की महिमा वा. रामायण / किष्किन्धा / 25 / 8

Kiṁ tu kālaparīṇāmo draṣṭavyaḥ sādhu paśyatā |
Dharmaścārthaśca kāmaśca kālakramasamāhitāḥ ||

Vā. Rā. / Kiṣkindhā / 25 / 8

Superiority of time

सोच-समझ वाले मनुष्य को तो समय का परिणाम (प्रभाव) समझना चाहिए; क्योंकि धर्म, अर्थ और काम कालक्रम में ही समाये हुए हैं।

A wise man should understand the result or effect of the time, as it is time only on which morality, wealth and completion of desires depend.

(478)

किं तेन हेमगिरिणा रजताद्रिणा वा,
यत्राश्रिताश्च तरवस्तरवस्त एव।
मन्यामहे मलयमेव यदाश्रयेण,
कङ्कोलनिम्बकुटजा अपि चन्दनाः स्युः॥

सत्सङ्गति का लाभ नीतिशतक / 75

Kiṁ tena Hemagiriṇā Rajatādriṇā vā,
Yatrāśritāśca taravastaravasta eva |
Manyāmahe Malayameva yadāśrayeṇa,
Kaṅkola-nimba-kuṭajā api candanāḥ syuḥ ||

Nītiśataka / 75

Advantages of good company

उस सुवर्ण-पर्वत (सुमेरु) अथवा चाँदी-पर्वत (कैलास) का क्या महत्त्व है, जहाँ उगे हुए

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पेड़, वैसे ही पहले जैसे ही हैं। हम तो मलय-पर्वत को ही महत्त्व देंगे, जहाँ उगने वाले लालचीनी, नीम तथा पत्थर-फूल भी चन्दनों के साथ रहने से उनके समान ही सुगन्धित हो जाते हैं।

What is the importance of the golden mountain (Sumeru) or the silver mountain (Kailāsa), where the full grown trees remain as they had been. We shall give the importance to the Malaya mountain, where sandal trees grow and living in their company Kaṅkola, Margosa and Kutaja trees become sweet scented like the sandal trees.

(479)

किं दुःसहं साधूनां, विदुषां किमपेक्षितम्।
किमकार्यं कदर्याणाम्, दुस्त्यजं किं धृतात्मनाम्॥

कर्ता और कार्य श्रीमद्भागवत / 10 / 1 / 58

Kiṁ duḥsahaṁ sādhūnāṁ, viduṣāṁ kimapekṣitam।
Kimakāryaṁ kadaryāṇām, dustyajaṁ kiṁ dhṛtātmanām॥

Doers and deeds Bhāgavata / 10 / 1 / 58

उत्तम स्वभाव वाले सब कुछ सह लेते हैं, विद्वानों को किसी की सहायता की चाह नहीं होती, बुरे व्यापारी सब प्रकार के बुरे कार्य कर लेते हैं और उन्नत आत्मा वाले व्यक्ति किसी भी वस्तु का परित्याग कर सकते हैं।

Men having good habits can tolerate everything, learned people don't depend on others, bad businessmen can do any bad work, and spiritual people can detach themselves from any thing.

(480)

किं मधुना किं विधुना किं सुधया किं च वसुधयाऽखिलया।
यदि हृदयहारिचरितः पुरुषः पुनरेति नयनयोरयनम्॥

सदाचार का महत्त्व अज्ञात

Kiṁ madhunā kiṁ vidhunā kiṁ sudhayā kiṁ ca vasudhayā'khilayā।
yadi hṛdayahāricaritaḥ puruṣaḥ punareti nayanayorayanam॥

Importance of morality Unknown

यद्यपि शहद, चन्द्रमा, अमृत और सम्पूर्ण पृथ्वी सभी आकर्षक वस्तुएँ हैं, तो भी यदि कोई ऐसा महापुरुष दृष्टिगोचर हो जाता है, जिसका चरित्र हृदयहारी है तो सभी आकर्षक वस्तुएँ उसकी तुलना में तुच्छ प्रतीत होने लगती हैं।

Though honey, the moon, nectar and the whole earth are very attractive, yet if a greatman, whose character attracts at once our minds, is seen, then all other attractive things seen are useless.

(481)

किं यज्ञैस्तपसा तस्य प्रजा यस्य न रक्षिताः।
सुरक्षिताः प्रजा यस्य स्वर्गस्तस्य गृहोपमः॥

अग्निपुराण / 87 (1) / 9

निन्दनीय या प्रशंसनीय शासक

Kiṁ yajñaistapasā tasya prajā yasya na rakṣitāḥ।
Surakṣitāḥ prajā yasya svargastasya gṛhopamaḥ॥

Agnipu. / 87 (1) / 9

Condemnable or admirable ruler

उस राजा के यज्ञ और तप करने का क्या लाभ है, जिसकी प्रजाएँ सुरक्षित नहीं हैं। जिस

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजा की प्रजाएँ सुरक्षित हैं, उसके लिए घर ही स्वर्ग है।

There is no use of sacrifices and penance for a king whose subjects are not protected. The king whose subjects are well-protected, his house is like the heaven for him.

(482)

किंशुके किं शुकः कुर्यात् फलितेऽपि बुभुक्षितः।
अदातरि समृद्धेऽपि किं कुर्युरुपजीविनः॥

अदानी धनी सुभाषितावलि / 402

Kiṁśuke kiṁ śukaḥ kuryāt, phalite'pi bubhukṣitaḥ।
Adātari samṛddhe'pi kiṁ kuryurupajīvinaḥ॥

Subhāṣitāvali / 402

The rich without charity

केसू (ढाक) के फलने पर भी तोता क्या करे, क्योंकि वहाँ उसके खाने योग्य कुछ भी नहीं है। इसी प्रकार यदि स्वामी धनी भी हो मगर कञ्जूस हो तो नौकर-चाकरों को उससे क्या लाभ?

For a parrot what is the use of the beautiful flowers of the 'Dhāka' tree where there is nothing to eat for him? In the same way if the master is very wealthy but not generous, the servants cannot enjoy in his service.

(483)

किं शेषस्य भरव्यथा न वपुषि क्ष्मां न क्षिपत्येष यत्,
किं वा नास्ति परिश्रमो दिनपतेरास्ते न यन्निश्चलः।
किन्त्वङ्गीकृतमुत्सृजन् कृपणवत् श्लाघ्यो जनो लज्जते,
निर्वाहः प्रतिपन्नवस्तुषु सतामेतद्धि गोत्रव्रतम्॥

श्रेष्ठों का चरित्र मुद्राराक्षस / 2 / 18

Kiṁ śeṣasya bharavyathā na vapuṣi kṣmāṁ na kṣipatyeṣa yat,
Kiṁ vā nāsti pariśramo dinapaterāste na yanniścalaḥ।
Kintvaṅgīkṛtamutsṛjan kṛpaṇavat ślāghyo jano lajjate,
Nirvāhaḥ pratipannavastuṣu satāmetaddhi gotravratam॥

Mudrārākṣasa / 2 / 18

Character of the great

क्या शेषनाग के शरीर में पीड़ा नहीं होती, जो कि वह पृथ्वी को फेंक नहीं देता? क्या सूर्य थकता नहीं है जो कि वह प्रकाश देना छोड़कर निष्क्रिय होकर बैठ नहीं जाता? किन्तु महान् व्यक्ति जिस कार्य का उत्तरदायित्व ले लेते हैं, वे उसे छोड़ते हुए लज्जा अनुभव करते हैं। श्रेष्ठ लोगों के कुल का यही उत्तम नियम है कि उन्होंने जो जिम्मेदारी ले ली हैं उसे प्राणपण से ही निभाते हैं।

Does Śeṣanāga not feel pain as he does not throw the weight of the earth? Does the sun not feel tiresome, as it does not stop to rest. But great persons feel ashamed to give up the duty, they have accepted. It is the noble family principle of the great persons to carry on the responsibility, which they have accepted.

(484)

कीटोऽपि सुमनःसङ्गादारोहति सतां शिरः।
अश्मापि याति देवत्वं महद्भिः सुप्रतिष्ठितः॥

सत्संगति का महत्त्व हितोपदेश / प्र. / 2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kiṭo'pi sumanaḥsaṅgādārohati satāṁ śiraḥ |
Aśmāpi yāti devatvaṁ mahadbhiḥ supratiṣṭhitaḥ ||

Hitopadeśa / Pra / 2

Advantage of a good company

जब बड़े लोगों को मालाएँ पहनाई जाती हैं या उन पर फूल बरसाये जाते हैं तो फूलों के साथ उनमें रहने वाला कीड़ा भी श्रेष्ठ मनुष्यों के सिर पर जा पहुँचता है। महान् लोगों द्वारा अच्छी प्रकार स्थापित किया गया पत्थर भी देवता बन जाता है। सत्संग का यही महत्त्व है।

When greatmen are garlanded or flowers are thrown upon their heads, insects staying in the flowers automatically ride on the heads of great men. In the sameway, a stone when set in a ceremonial way by the great men becomes God. This is the result of good company.

(485)

कुग्रामवासः कुलहीनसेवा,
कुभोजनं क्रोधमुखी च भार्या।
पुत्रश्च मूर्खो विधवा च कन्या,
विनाग्निना ते प्रदहन्ति कायम्॥

कष्टप्रद वस्तुएँ चाणक्यनीति / 3 / 8

Kugrāmavāsaḥ kulahīnasevā,
Kubhojanaṁ krodhamukhī ca bhāryā |
Putraśca mūrkho vidhavā ca kanyā,
Vināgninā te naḥ pradahanti kāyam ||

Torturing things Cāṇakyaniti / 3 / 8

किसी बुरे गाँव में रहना, नीच घराने की नौकरी, कुत्सित भोजन, क्रोधी चेहरे वाली पत्नी, मूर्ख पुत्र और विधवा लड़की – ये सभी बिना आग के भी शरीर को जलाते रहते हैं; अर्थात् ये गम्भीर दुःख के कारण होते हैं।

To reside in a bad village, service in a low family, bad food, an irritating wife, a foolish son and a widowed daughter - all these burn without fire. It means that these are the sources of keen sadness.

(486)

कुचैलिनं दन्तमलोपधारिणम्,
बह्वाशिनं निष्ठुरभाषिणं च।
सूर्योदये चास्तमिते शयानम्,
विमुञ्चति श्रीर्यदि चक्रपाणिः॥

लक्ष्मी द्वारा त्याज्य चाणक्यनीति / 15 / 4

Kucailinaṁ dantamalopadhāriṇam,
Bahvāśinaṁ niṣṭhurabhāṣiṇaṁ ca |
Sūryodaye cāstamite śayānam,
Vimuñcati śrīryadi cakrapāṇiḥ ||

Cāṇakyaniti / 15 / 4

Discarded by wealth

यदि विष्णु भगवान् भी गन्दे वस्त्र पहने हों, दाँतों पर मैल जमी हो, अधिक खाते हों, कठोर बोलते हों, सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सोते हों, तो लक्ष्मी उन्हें भी छोड़ देती है, अन्य की तो बात ही क्या?

If even God Viṣṇu wears dirty clothes, has dirty teeth, eats too much, speaks harsh, and sleeps at the time

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

of the sunrise and the sun-set, then the goddess of wealth rejects him; what to say about other people?

(487)

कुटुम्बचिन्ताकुलितस्य पुंसः,
श्रुतञ्च शीलञ्च गुणाश्च सर्वे।
अपक्वकुम्भे निहिता इवापः,
प्रयान्ति देहेन समं विनाशम्॥

पारिवारिक चिन्ताएँ पद्मपुराण / 2 / 26 / 158

Kuṭumbacintākulitasya puṁsaḥ,
Śrutañca, śīlañca guṇāśca sarve।
Apakvakumbhe nihitā ivāpaḥ,
Prayānti dehena samaṁ vināśam॥

Family worries Padmapu. / 2 / 26 / 158

जो मनुष्य परिवार की चिन्ताओं में डूबा रहता है, उसका ज्ञान, उत्तम स्वभाव और सारे गुण शरीर के साथ ही इस प्रकार नष्ट हो जाते हैं, जैसे कच्चे घड़े में रखा हुआ पानी घड़े सहित ही नष्ट हो जाता है।

Knowledge, morality and all merits of the person who is always perplexed with the anxieties of his family, comes to an end with his own body like the water kept in a unbaked pitcher which gets destroyed along with the pot.

(488)

कुतो निद्रा दरिद्रस्य, परप्रेष्यकस्य च।
परनारी-प्रसक्तस्य, परद्रव्यहरस्य च॥

नींद से वञ्चित चाणक्यनीतिशास्त्र / 8 / 66

Kuto nidrā daridrasya, parapreṣyakasya ca।
Paranārīprasaktasya, paradravyaharasya ca॥

Cāṇkyanītiśāstra / 8 / 66

Deprived of sleep

कंगाल मनुष्य को, समाचार ले जाने वाले दूत को, पराई स्त्री में अनुरक्त को और दूसरों के धन लूटने वालों को सुखद नींद नहीं आ सकती।

A poor man, a messenger, the man who is fallen in love with other's wife and the plunderer of others money cannot enjoy a good and sound sleep.

(489)

कुपितोऽपि गुणायैव गुणवान् भवति ध्रुवम्।
स्वभावमधुरं क्षीरं मथितं तु रसोत्तरम्॥

गुणवालों से लाभ नराभरण / 30

Kupito'pi guṇāyaiva, guṇavān bhavati dhruvam।
Svabhāvamadhuraṁ kṣīraṁ mathitaṁ tu rasottaram॥

Narābharaṇa / 30

Advantage from meritorious

गुणवान् व्यक्ति यदि नाराज भी हो जाए, तो भी उससे लाभ ही होता है। दूध स्वभावतः ही मीठा होता है, परन्तु मथने पर उससे निकला मक्खन और भी मधुर होता है।

If a meritorious person becomes angry, even then he is more useful, as milk is sweet naturally, but when it is churned its product butter is gained and that is more sweet.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(490)

कुभोज्येन दिनं नष्टं, कुकलत्रेण शर्वरी।
कुपुत्रेण कुलं नष्टं, तन्नष्टं यन्न दीयते॥

नाश के कारण शार्ङ्गधरपद्धति

Kubhojyena dinaṁ naṣṭaṁ, kukalatreṇa śarvarī।
Kuputreṇa kulaṁ naṣṭaṁ, tannaṣṭaṁ yanna dīyate॥

Reasons for destruction Śārṅgadhar.

खराब भोजन करने से दिन-भर कष्ट रहता है, बुरी पत्नी से रात बरबाद हो जाती है, बुरे पुत्र से खानदान नष्ट हो जाता है, और भोग तथा दान में काम न आने वाला धन भी नष्ट हो जाता है।

Bad food causes trouble during the whole day, a bad wife disturbs the whole night, a bad son destroys the family and the money which is neither enjoyed nor given as alms, is spoiled.

(491)

कुमुदवनमपश्रि श्रीमदम्भोजषण्डम्,
त्यजति मुदमुलूकः प्रीतिमांश्चक्रवाकः।
उदयमहिमरश्मिर्याति शीतांशुरस्तम्,
हतविधिनिहतानां ही विचित्रो विपाकः॥

दुर्भाग्य का परिणाम भोजप्रबन्ध / 279

Kumudavanamapaśri śrīmadambhojaṣaṇḍam,
Tyajati mudamulūkaḥ prītimāṁścakravākaḥ।
Udayamahimaraśmiryāti śītāṁśurastam,
Hatavidhinihatānāṁ hī vicitro vipākaḥ॥

Result of bad luck Bhojapra. / 279

प्रातःकाल होते ही कुमुदों का समूह शोभाहीन हो रहा है, कमलों का झुण्ड सौन्दर्य से भरपूर हो रहा है, उल्लू की खुशी समाप्त हो रही है, चकवा प्रसन्न हो रहा है (क्योंकि वह चकवी से अब मिल रहा है), सूर्यदेव उदय हो रहे हैं, परन्तु चन्द्रमा अब डूब रहा है। दुःख से कहना पड़ता है कि दुर्भाग्य से मारे हुओं का बहुत ही विचित्र और दुःखद परिणाम होता है, जैसे उल्लू और चाँद का हो रहा है।

At morning the grove of lilies is withering but the grove of the lotuses is enjoing its beauty, the owl is being unhappy while the ruddy goose is enjoying love, the sun is rising now but the moon is setting. It is sad to say that the things which are troubled by bad luck get sorrowful results as owls and the moon.

(492)

कुरङ्ग-मातङ्ग-पतङ्ग-भृङ्ग-,
मीना हताः पञ्चभिरेव पञ्च।
एकः प्रमादी स कथं न हन्यते,
यः सेवते पञ्चभिरेव पञ्च॥

विषयासक्ति से हानि गरुडपुराण

Kuraṅga-mātaṅga-pataṅga-bhṛṅga-,
mīnā hatāḥ pañcabhireva pañca।
Ekaḥ pramādī sa kathaṁ na hanyate,
Yaḥ sevate pañcabhireva pañca॥

Harm due to passions Garuḍpu.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हिरण, हाथी, पतंगा, भौंरा और मछली क्रमशः कान के विषय ध्वनि, त्वचा के विषय स्पर्श, आँख के विषय रूप, नाक के विषय गंध और जिह्वा के विषय स्वाद के कारण मारे जाते हैं। ये तो एक-एक विषय के सम्बन्ध से मारे जाते हैं, परन्तु जो लापरवाह मनुष्य पाँचों इन्द्रियों से पाँचों विषयों का सेवन करता है, उसकी दुर्दशा क्या होगी? वह तो निश्चय ही मारा जाएगा।

A deer, an elephant, a moth, a black bee and a fish etc. are killed due to their attachment with one subject only; such, as sound, touch, beauty, smell and taste, but what to say about the careless man who enjoys five things with his five senses? Certainly, such a man is destroyed completely.

(493)

कुराजराज्येन कुतः प्रजासुखम्,
कुमित्रमित्रेण कुतोऽभिनिर्वृतिः।
कुदारदारैश्च कुतो गृहे रतिः,
कुशिष्यमध्यापयतः कुतो यशः॥

दुःख के कारण चाणक्यनीति / 6 / 14

Kurājarājyena kutaḥ prajāsukham,
Kumitramitreṇa kuto'bhinirvṛtiḥ।
Kudāradāraiśca kuto gṛhe ratiḥ,
Kuśiṣyamadhyāpayataḥ kuto yaśaḥ॥

Causes of pain Caṇakyanīti / 6 / 14

बुरे राजा के राज्य से प्रजा सुखी नहीं हो सकती, बुरे मित्र के कारण मन में शान्ति नहीं आ सकती, बुरी स्त्री से घर में प्यार नहीं हो सकता और बुरे शिष्य को पढ़ाने वाले को यश प्राप्त नहीं हो सकता।

The people cannot be happy in the rule of a bad king, a bad friend cannot bring peace in mind, a bad wife cannot generate love in the house and the teacher who teaches a bad pupil cannot be famous.

(494)

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति, न कर्म लिप्यते नरे॥

कर्म का महत्त्व यजु. / 40 / 2

Kurvanneveha karmāṇi jijīviṣecchataṁ samāḥ।
Evaṁ tvayi nānyatheto'sti, na karma lipyate nare॥

Importance of works Yaju. / 40 / 2

हे मानव! तू इस संसार में शुभ कर्म करता हुआ ही सौ वर्ष तक जीने की इच्छा कर। इस प्रकार कर्मशील रहने पर दूसरों का मार्ग-प्रदर्शन करने वाले तुझमें कर्मों के प्रति आसक्ति उत्पन्न नहीं होगी।

O man! You should desire to live upto hundred of years, doing good works. If you remain active in this manner, you will guide others and there will be no your attachment with the work.

(495)

कुलं च शीलं च सनाथता च,
विद्या च वित्तं च वपुर्वयश्च।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एतान् गुणान् सप्त विचिन्त्य देया,
कन्या बुधैः शेषमचिन्तनीयम् ॥

कन्यादान पञ्चतन्त्र / काकोलूकीय / 188

Kulaṁ ca śīlaṁ ca sanāthatā ca,
Vidyā ca vittaṁ ca vapurvayaśca |
Etān guṇān sapta vicintya deyā,
Kanyā budhaiḥ śeṣamacintanīyam ||

Pañcata. / Kāko. / 188

Giving of a daughter

निम्नलिखित सात गुणों को विचार कर ही किसी को कन्या देनी चाहिए, शेष पर विचार करने की आवश्यकता नहीं है :-

(1) खानदान, (2) स्वभाव, (3) सहायक-जन, (4) विद्या, (5) धन, (6) शरीर की रचना, (7) आयु।

The following seven things should be considered while giving one's daughter :-

(1) Family, (2) Nature, (3) Helpers, (4) Education, (5) Wealth, (6) Physique and (7) Age.

Other things may be ignored.

(496)

कुलं वृत्तं श्रुतं शौर्यं सर्वमेतन्न गण्यते।
दुर्वृत्ते वा सुवृत्ते वा, जनो दातरि रज्यते॥

दाता की महत्ता कामनन्दकीयनीतिसार / 5 / 61

Kulaṁ vṛttaṁ śrutaṁ śauryaṁ sarvametanna gaṇyate |
Durvṛtte vā suvṛtte vā, jano dātari rajyate ||

Kāmandakīya. / 5 / 61

Superirity of charity

जो उदार और मुक्त हस्त से दान देने वाला व्यक्ति है, चाहे वह चरित्रवान् हो या दुश्चरित्र, उसका परिवार, चरित्र, ज्ञान या वीरता इत्यादि कुछ भी नहीं देखा जाता; लोग उसकी दानशीलता पर ही आकर्षित हो जाते हैं।

If a man is generous and gives alms frankly, people praise him inspite of his bad or good character. No body cares for his family, character, knowledge, or bravery.

(497)

कुलीनः शीलसम्पन्नो वाग्मी दक्षः प्रियंवदः।
यथोक्तवादी स्मृतिमान् दूतः स्यात् सप्तभिर्गुणैः॥

प्रशंसनीय दूत सुभाषितावलि / 2821

Kulīnaḥ śīlasampanno vāgmī dakṣaḥ priyaṁvadaḥ |
Yathoktavādī smṛtimān dūtaḥ syāt saptabhirguṇaiḥ ||

Admirable messenger Subhāsitā. / 2821

दूत निम्नलिखित सात गुणों वाला होना चाहिए :-

(1) खानदानी, (2) उत्तम स्वभाव वाला, (3) बोलने में निपुण, (4) कार्य में दक्ष, (5) मधुरभाषी, (6) यथार्थवक्ता और (7) स्मरण रखने वाला।

The messenger should have the following seven qualities :-

(1) Belonging to a good family, (2) of good nature, (3) eloquent, (4) expert, (5) sweet speaking, (6) practical talker and (7) having good memory.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(498)

कुले जातो बलवान् यो यशस्वी,
बहुश्रुतः सुखजीवी यतात्मा।
धर्माधर्मौ ग्रथितौ यो बिभर्त्ति,
स ह्यस्य दिष्टस्य वशादुपैति॥

भाग्यशाली के गुण महाभा. / उद्योग / 32 / 19

Kule jāto balavān yo yaśasvī,
Bahuśrutaḥ sukhajīvī yatātmā।
Dharmādharmau grathitau yo bibhartti,
Sa hyasya diṣṭasya vaśādupaiti॥

Mahābhā / Udyoga / 32 / 19

Merits of a lucky person

जो कुलीन, बलवान्, यशस्वी, बहुत ज्ञानी, सुख से जीने और मन को वश में रखने वाला तथा जो परस्पर गुँथे हुए धर्म या अधर्म को धारण करता है, वही भाग्यवश अभीष्ट गुण-सम्पत्ति प्राप्त करता है।

The person who belongs to a good family, and has power, fame, vast knowledge and happy life and who controls his mind and adopts morality and immorality according to the occasion, only luckily he can get desired results and wealth.

(499)

कुसुमस्तबकस्येव द्वयीवृत्तिर्मनस्विनः।
मूर्ध्नि वा सर्वलोकानां शीर्यते वन एव वा॥

श्रेष्ठ व्यक्ति का जीवन नीतिशतक / 15

Kusumastabakasyeva dvayīvṛttirmanasvinaḥ।
Mūrdhni vā sarvalokānāṁ, śīryate vana eva vā॥

Life of the great Nītiśataka. / 15

फूलों के गुच्छे के समान मनस्वी व्यक्ति की दो ही स्थितियाँ हुआ करती है, या तो वह सबके सिर पर रहता है, अर्थात् नेतृत्व करता है, या वन में ही समाप्त हो जाता है, अर्थात् तपस्या में ही अपना जीवन लगा देता है।

Like a banquet of flowers, there are two states of the man of determination. Either he remains as the head of people being a leader of them or spends his life in a forest performing penance.

(500)

कुसुमान्यपि गात्रसंगमात् प्रभवन्त्यायुरपोहितुं यदि।
न भविष्यति हन्त साधनं किमिवान्यत् प्रहरिष्यतो विधेः॥

दुर्भाग्य का परिणाम रघुवंश / 8 / 44

Kusumānyapi gātrasaṅgamāt prabhavantyāyurapohituṁ yadi।
Na bhaviṣyati hanta sādhanaṁ kimivānyat praharisyato vidheḥ॥

Result of bad luck Raghuvaṁ. / 8 / 44

यदि फूल भी शरीर के साथ लगकर जीवन को नष्ट कर सकते हैं, तो फिर विधाता को प्रहार करने के लिए अन्य साधनों को ग्रहण करने की आवश्यकता ही क्या है?

If the flowers attached with a body of a person can kill him, then all other means of killing have no value for the Creator.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(501)

कूपोदकं वटच्छाया, श्यामा स्त्री चेष्टकालयः।
शीतकाले भवेदुष्णमुष्णकाले च शीतलम्॥

ऋतु के अनुकूल वस्तुएँ चाणक्यशतक

Kūpodakaṁ vaṭacchāyā, śyāmā strī ceṣṭakālayaḥ।
Śitakāle bhavedusṇamusṇakāle ca śītalam॥

Cāṇkyaśataka

Things favourable in seasons

कुएँ का पानी, बरगद की छाया, नवयौवना स्त्री, और ईंटों से बना घर सर्दियों में गर्म होते हैं और गर्मियों में ठंडे।

The water of a well, shadow of the banyan tree, young beautiful lady and a house made of bricks are warm in winters and cool in summers.

(502)

कृतं मे दक्षिणे हस्ते, जयो मे सव्य आहितः।
गोजिद्भूयासमश्वजिद्, धनञ्जयो, हिरण्यजित्॥

परिश्रम सफलता की कुंजी अथर्व. / 7 / 50 / 8

Kṛtaṁ me dakṣiṇe haste, jayo me savya āhitaḥ।
Gojid-bhūyāsamaśvajid, dhanañjayo, hiraṇyajit॥

Atharva. / 7 / 50 / 8

Hardwork leads to success

मेरे दायें हाथ में यदि मेरा कार्य है, तो विजय मेरे बायें हाथ का स्वतः चुम्बन करेगी। मैं परिश्रम द्वारा गौओं, घोड़ों, धन-सम्पत्तियों और सोने का भी स्वामी बन सकता हूँ। अर्थात् परिश्रम द्वारा ही मनुष्य सब प्रकार की सफलता प्राप्त कर सकता है।

If my work is in my right hand, then success will be obtained by my left hand. Due to my hard-work, I can get cows, horses, wealth and even gold. It means that hard-work is the source of all kinds of prosperity.

(503)

कृतवैरे न विश्वासः कार्यस्त्विह सुहृद्यपि।
छन्नं संतिष्ठते वैरं, गूढोऽग्निरिव दारुषु॥

अविश्वसनीय महाभा. / शान्ति. / 139 / 44

Kṛtavaire na viśvāsaḥ kāryastviha suhṛdyapi।
Channaṁ saṁtiṣṭhate vairaṁ, gūḍho'gniriva dāruṣu॥

Mahābhā. / Śānti / 139 / 44

Not to be trusted

जो पहले शत्रु रहा हो और फिर मित्र भी बन गया हो, उस पर विश्वास नहीं करना चाहिए। शत्रुता तो इस प्रकार से छिपी रहती है, जैसे लकड़ियों में आग गुप्त रूप से छिपी रहती है।

One, who had been an enemy and now has become a friend should not be trusted. Enmity re-mains hidden in such a manner as fire quietly remains hidden in wood.

(504)

कृतान्तपाशबद्धानां दैवोपहतचेतसाम्।
बुद्धयः कुब्जगामिन्यो भवन्ति महतामपि॥

दुर्भाग्य बुद्धिनाशक पञ्च. / मित्रसम्प्राप्ति / 5

Kṛtāntapāśabaddhānāṁ daivopahatacetasām।
Buddhayaḥ kubjagāminyo bhavanti mahatāmapi॥

Pañca. / Mitrasam. / 5

Bad luck destroys wit

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यमराज के जाल में फँसने वालों और दुर्भाग्य से जिनके मन सोचने में असमर्थ हो गये हैं, ऐसे महान् लोगों की भी बुद्धियाँ निकम्मी हो जाती हैं; वे अच्छे-बुरे का विवेक नहीं कर पातीं।

The persons, even great ones, who are trapped by the god of death and whose minds unluckily do not work, cannot think properly with their intellect, which has become quite unable. They cannot distinguish between right or wrong.

(505)

कृतार्था ह्यकृतार्थानां मित्राणां न भवन्ति ये।
तान् मृतानपि क्रव्यादाः कृतघ्नान् नोपभुञ्जते॥

वा.रामायण / किष्किन्धा / 31 / 73

कृतघ्नता का दुष्परिणाम

Kṛtārthā hyakṛtārthānāṁ mitrāṇāṁ na bhavanti ye।
Tān mṛtānapi kravyādāḥ kṛtaghnān nopabhuñjate॥

Vā. Rā. / Kiṣkindhā / 31 / 73

Bad result of ungratefulness

अपना कार्य सिद्ध करा लेने के पश्चात् जो मित्रों के कार्यों में सहायक नहीं बनते, ऐसे कृतघ्नों के मर जाने पर उनके शरीर को मांसाहारी पशु भी नहीं खाते। भाव यह है कि ऐसे लोग बहुत नीच होते हैं।

After getting success with the help of friends who don't help those friends in their work, such ungrateful persons when die, their bodies are not eaten even by the wild animals. It means that such kind of persons are very mean fellows.

(506)

कृते प्रतिकृतिं कुर्यात्, हिंसने प्रतिहिंसनम्।
तत्र दोषो न पतति, दुष्टे दौष्ट्यं समाचरेत्॥

जैसे को तैसा चाणक्यनीति / 17 / 2

Kṛte pratikṛtiṁ kuryāt, hiṁsane pratihiṁsanam।
Tatra doṣo na patati, duṣṭe dauṣṭyaṁ samācareṭ॥

Tit for tat Cāṇkyanīti / 17 / 2

भला करने वाले का भला करना चाहिए, परन्तु यदि कोई हानि पहुँचाता है, तो उससे वैसा ही व्यवहार करना चाहिए। दुष्ट के प्रति दुष्टता का व्यवहार करने में कोई बुराई नहीं है।

One who helps, help him but one who tries to kill, should be killed. There is no fault in treating badly against a bad person.

(507)

कृत्याकृत्यं न मन्येत क्षत्रियो युधि सङ्गतः।
प्रसुप्तो द्रोणपुत्रेण धृष्टद्युम्नः पुरा हतः॥

युद्ध में कर्तव्याकर्तव्य पञ्च. / मित्रभेद / 22

Kṛtyākṛtyaṁ na manyeta kṣatriyo yudhi saṅgataḥ।
Prasupto Droṇaputreṇa Dhṛṣṭadyumnaḥ purā hataḥ॥

Pañca. / Mitrabhe. / 22

No morality in war

युद्ध के समय करने योग्य या न करने योग्य बातों पर विचार नहीं करना चाहिए। पूर्वकाल में सोए हुए अपने पिता के हत्यारे धृष्टद्युम्न को द्रोण-पुत्र अश्वत्थामा ने मार डाला था।

One should not consider what is to be done or not to be done at the time

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

of war. In past, Aśvatthāmā killed his father's killer Dhṛṣṭadyumna when he was sleeping.

(508)

कृपणोऽप्यकुलीनोऽपि सज्जनैर्वर्जितः सदा।
सेव्यते स नरो लोके यस्य स्याद् वित्तसंचयः॥

धन का महत्त्व पञ्चतन्त्र / मित्रसम्प्राप्ति / 132

Kṛpaṇo'pyakulīno'pi sajjanairvarjitaḥ sadā।
Sevyate sa naro loke, yasya syād vittasaṁcayaḥ॥

Pañca. / Mitrasam. / 132

Advantage of riches

जिसके पास धन जमा है, ऐसा व्यक्ति चाहे कंजूस, नीच कुल वाला या सज्जनों से छोड़ा भी क्यों न गया हो, उसके यहाँ नौकरी करने को लोग तैयार रहते हैं।

People intend to serve such a person who has lot of money, though he may be hardfisted, born in a low family and rejected by good persons.

(509)

कृषितो नास्ति दुर्भिक्षं, जपतो नास्ति पातकम्।
मौनतः कलहो नास्ति, नास्ति जागरतो भयम्॥

संकटों से बचने के उपाय नीतिशास्त्र / 46

Kṛṣito nāsti durbhikṣaṁ, japato nāsti pātakam।
Maunataḥ kalaho nāsti, nāsti jāgarato bhayam॥

Methods to save oneself Nītiśāstra / 46

खेती करने से अकाल नष्ट हो जाता है, जप करने से पाप नष्ट हो जाता है, चुप्पी साध लेने पर झगड़ा समाप्त हो जाता है और सावधान रहने पर डर नहीं रहता।

Agriculture removes famine, muttering of prayers keeps off sins, silence ends quarrel and alertness removes fear.

(510)

कृषेर्वृष्टिसमायोगात्, काले स्युः फलसिद्धयः।
सधर्मं पौरुषं कुर्यात्, नालसो न च दैववान्॥

पुरुषार्थ का महत्त्व अग्निपुराण / 89 / 4

Kṛṣervṛṣṭisamāyogāt, kāle syuḥ phalasiddhayaḥ।
Śadharmaṁ pauruṣaṁ kuryāt, nālaso na ca daivavān॥

Agnipu. / 89 / 4

Importance of hard work

वर्षा ठीक समय पर हो जाने पर खेती-बाड़ी ठीक समय पर फसल देती है। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह धर्मपूर्वक परिश्रम करे और न आलस्य करे और न ही भाग्य पर आश्रित रहे।

If it rains timely, farming gives its fruit well in time. So, one should do hard-work with morality. He should neither remain idle, nor depend on his fortune.

(511)

केतकीकुसुमं भृङ्गः, पीड्यमानोऽपि सेवते।
दोषाः किं नाम कुर्वन्ति, गुणापहृतचेतसः॥

गुणों का आकर्षण सुभाषितावलि / 726

Ketakīkusumaṁ bhṛṅgaḥ, pīḍyamāno'pi sevate।
Doṣāḥ kiṁ nāma kurvanti, guṇāpahṛtacetasaḥ॥

Attraction of merits Subhāsitāvali / 726

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भौंरा काँटेदार केवड़े के फूल का कष्ट सहता हुआ भी सेवन करता है। जिसके गुणों ने दिल को जीत लिया है, उसकी त्रुटियों पर ध्यान नहीं दिया जाता।

A black-bee enjoys the nectar of the flower of 'Kevaḍā' a thorny plant, inspite of troubles. Defects are ignored of that thing which has attracted the minds of others.

(512)

केतुं कृण्वन्नकेतवे, पेशो मर्या अपेशसे।
समुषद्भिरजायथाः ॥

आत्मा का कार्य ऋ. / 1 / 6 / 3

Ketuṁ kṛṇvannaketave, peśo maryā apeśase |
Samuṣadbhirajāyathāḥ ||

Work of the soul Ṛg. / 1 / 6 / 3

हे जीवात्मा! ज्ञानरहित मरणशील इस देह में ज्ञान और चेतना उत्पन्न करता हुआ और सौन्दर्यहीन पार्थिव स्वरूप में सौन्दर्य पैदा करता हुआ तू जागरण-शक्तियों के साथ उत्तम प्रकार से जन्म लेता है, अर्थात् शरीर धारण करता है।

O soul! This body is senseless and destructive, but it is you who generates sense (feelings) in it. This earthly body has no beauty but on account of you it becomes beautiful. You take birth with wakeful forces in a body.

(513)

केनामृतमिदं सृष्टं मित्रमित्यक्षरद्वयम्।
आपदां च परित्राणं शोकसन्तापभेषजम् ॥

मित्र का गुण पञ्च. / मित्रसम्प्राप्ति / 61

Kenāmṛtāmidaṁ sṛṣṭaṁ, mitramityakṣaradvayam |
Āpadāṁ ca paritrāṇaṁ, śokasantāpabheṣajam ||

Pañca. / Mitrasam. / 61

Quality of a friend

भला 'मित्र' यह दो अक्षरों वाला अमृतरूप शब्द किसने रच डाला है, जो संकटों से बचाता है और शोक तथा व्याकुलता की दवाई है?

Who has constructed this 'mitra' word having only two syllables, which is as sweet as the nectar, and is also protector from woes and medicine of sadness and anxiety?

(514)

केयूरा न विभूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वलाः,
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालङ्कृता मूर्धजाः।
वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते,
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम् ॥

वाणी का भूषण नीतिशतक / 19

Keyūrā na vibhūṣayanti puruṣaṁ hārā na candrojjvalāḥ,
Na snānaṁ na vilepanaṁ na kusumaṁ nālaṅkṛtā mūrdhajāḥ |
Vāṇyekā samalaṅkaroti puruṣaṁ yā saṁskṛtā dhāryate,
Kṣīyante khalu bhūṣaṇāni satataṁ vāgbhūṣaṇaṁ bhūṣaṇam ||

Ornament of speech Nītiśataka / 19

बाजूबन्द, चन्द्रमा जैसे चमकते हार, स्नान, सुगन्धित वस्तुओं का लेप, फूल और सजाए हुए बाल मनुष्य को वह शोभा नहीं देते जो शुद्ध, स्पष्ट, और सुन्दर वाणी उसे देती है। अन्य भूषण तो धीरे-धीरे नष्ट हो जाते हैं, परन्तु वाणी का भूषण ही स्थायी रूप से उसे सजाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Armlets, garlands shining like the moon, bath, cosmetics, flowers and well dressed hair don't adorn a person in such a manner as refined language does. Other ornaments diminish gradually, but it is only the good tongue which is a permament beauty of a person.

(515)

केशः काशस्तबक-विकासः,
कायः प्रकटितकरभविलासः।
चक्षुर्दग्ध-वराटककल्पं,
त्यजति न चेतः काममनल्पम्॥

सा. दर्पण / 10 / कारिका 6 पर

कामनाओं की शक्ति

Keśaḥ kāśastabakavikāsaḥ,
Kāyaḥ prakaṭita-karabhavilāsaḥ।
Cakṣurdagdha-varāṭakakalpaṁ,
Tyajati na cetaḥ kāmamanalpam॥

Sā. Darpana / 10 / Kar. 6

Power of desires

वृद्धावस्था आने पर बाल कास के पुष्पगुच्छ के समान सफेद हो जाते हैं, शरीर हाथी के बच्चे के समान डगमगाने लगता है, आँखें जली हुई कौड़ी के समान हो जाती हैं परन्तु फिर भी वासनाएँ तनिक भी पीछा नहीं छोड़तीं।

In old age, hair becomes as white as a cluster of reed flowers, the body shows the actions like a baby elephant, eyes become like a burnt cowrie, but still the mind doesn't keep off desires.

(516)

कोकिलश्चूतशिखरे मञ्जरीरेणुपिञ्जरः।
गदितैर्व्यक्ततामेति कुलीनश्चेष्टितैरिव॥

गुणों से मान सुभाषितावलिः / 1673

Kokilaścūtaśikhare mañjarīreṇupiñjaraḥ।
gaditairvyaktatāmeti kulīnaśceṣṭitairiva॥

Subhāṣitāvali / 1673

Merits, the sources of respect

आम के वृक्ष की चोटी पर आम्र-बौर की धूल से भरी हुई कोयल उसी प्रकार अपनी बोली से पहचान ली जाती है, जैसे उत्तम कुल का व्यक्ति अपनी चेष्टाओं से पहचाना जाता है।

On the top of a mango tree, a cuckoo covered with the dust of clusters of mango flowers, is recognized by its sweet sound like a person of noble family who is recognized by his actions.

(517)

कोकिलानां स्वरो रूपम्, लज्जा रूपं कुलस्त्रियः।
विद्यायाः पटुता रूपं, रूपं मूर्खस्य मौनता॥

सुन्दरता के साधन चाणक्य-राजनीतिशास्त्र

Kokilānāṁ svaro rūpam, Lajjā rūpaṁ kulastriyaḥ।
Vidyāyāḥ paṭutā rūpaṁ, rūpaṁ mūrkhasya maunatā॥

Means of beauty Cāṇkya-Rājnītiśāstra

कोयलों का सौन्दर्य उनकी मीठी आवाज है,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुलीन नारी का सौन्दर्य लज्जा है, विद्या का सौन्दर्य कार्यकुशलता है और मूर्ख की शोभा चुप रहने में ही है।

The beauty of cuckoos is in their sweet sound, the beauty of the woman of noble family is shyness, dexterity is the beauty of learning and silence is the beauty of an ignorant or fool person.

(518)

कोऽतिभारः समर्थानां, किं दूरं व्यवसायिनाम्।
को विदेशः सविद्यानाम्, कः परः प्रियवादिनाम्॥

कठिनता में सरलता पञ्च. / मित्रसम्प्राप्ति / 57

Ko'tibhāraḥ samarthānāṁ, kiṁ dūraṁ vyavasāyinām |
Ko videśaḥ savidyānām, kaḥ paraḥ priyavādinām ||

Pañca. / Mitrasam. / 57

Lightness in difficulty

समर्थ व्यक्तियों के लिए भार क्या है? अर्थात् कुछ भी नहीं। व्यापार करने वालों के लिए दूर क्या है? अर्थात् कुछ भी नहीं। विद्वानों के लिए विदेश कौन-सा है? अर्थात् कोई भी नहीं। मीठा बोलने वालों के लिए पराया कौन है? अर्थात् कोई भी नहीं।

Able persons can carry on all kinds of burden. There is nothing far for the persons who want some business. There is no foreign country for the learned people. And there is not any alien person for the sweet speakers.

(519)

को धर्मो भूतदया, किं सौख्यमरोगिता जन्तोः।
कः स्नेहः सद्भावः, किं पाण्डित्यं परिच्छेदः॥

धर्मादि का स्वरूप हितोपदेश / 1 / 51

Ko dharmo bhutadayā, kiṁ saukhyamarogitā jantoḥ |
Kaḥ snehaḥ sadbhāvaḥ, kiṁ pāṇḍityaṁ paricchedaḥ ||

Hitopa. / 1 / 51

True definition of Dharma etc.

धर्म क्या है? प्राणियों पर दया करना। सुख क्या है? शरीर का नीरोग रहना। प्रेम क्या है? शुभचिन्तन। बुद्धिमत्ता क्या है? अच्छे-बुरे का विवेक (पहचान)।

What is morality? Kindness to all creatures. What is happiness? Health of the body. What is love? Well-wishing. What is wisdom? Discrimination of good and bad.

(520)

कोऽर्थान् प्राप्य न गर्वितो, विषयिणः, कस्यापदोऽस्तं गताः,
स्त्रीभिः कस्य न खण्डितं भुवि मनः, को नाम राज्यप्रियः।
कः कालस्य न गोचरत्वमगमत्, कोऽर्थी गतो गौरवम्,
को वा दुर्जन-दुर्गुणेषु पतितः क्षेमेण यातः पथि॥

दुःख के कारण चाणक्यनीति / 16 / 4

Ko'rthān prāpya na garvito viṣayiṇaḥ, kasyāpado'staṁ gatāḥ,
Strībhiḥ kasya na khaṇḍitaṁ bhuvi manaḥ, ko nāma rājya-priyaḥ |
Kaḥ kālasya na gocaratvamagamat, ko'rthī gato gauravam,
Ko vā durjanadurguṇeṣu patitaḥ kṣemeṇa yātaḥ pathi ||

Causes of woes Cāṇkyanīti / 16 / 4

धन प्राप्त करने के बाद कौन नहीं अभिमानी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुआ? किसकी मुसीबतें समाप्त हो गई हैं? किसके मन को स्त्रियों ने संसार में निराश नहीं किया? राज्य का प्रिय कौन बना? काल के वश में कौन नहीं हुआ? किस भिखारी ने मान प्राप्त किया है? अथवा कौन ऐसा व्यक्ति है, जो दुष्टों के दुर्गुणों में फँसने के कारण शान्ति से अपने मार्ग पर चल सका है?

Who didn't become proudy after being rich? Whose difficulties have finished? Whose mind has not been disappointed by women? Who gained love of the state? Who has not been controlled by the time? Which beggar gained honour? Or who is such a man who has not been troubled by the wicked actions of bad persons and could walk on his path peacefully?

(521)

को हि तुलामधिरोहति शुचिना दुग्धेन सहजमधुरेण।
तप्तं विकृतं मथितं तथापि यत्स्नेहमुद्गिरति॥

श्रेष्ठ व्यक्तित्व शार्ङ्गधरपद्धति

Ko hi tulāmadhirohati śucinā dugdhen sahajamadhureṇa।
Taptaṁ vikṛtaṁ mathitaṁ tathāpi yatsnehamudgirati॥

Admirable personality Śārṅgadharp.

शुद्ध और स्वाभाविक मिठास वाले दूध के साथ किसकी तुलना की जा सकती है, जो कि तपाने पर, खराब होने पर और मथ जाने पर भी प्रेमरूपी घी उगलता है। इसी प्रकार सज्जन लोग भी सभी अवस्थाओं में प्रेमपूर्ण व्यवहार ही करते हैं।

Who can be compared with pure milk which is naturally sweet and if it is boiled, deformed or churned, it always gives out lovely butter like the love given by good persons in every circumstance.

(522)

कौशेयं कृमिजं सुवर्णमुपलाद् दूर्वापि गोरोमतः,
पङ्कात्तामरसं शशाङ्क उदधेरिन्दीवरं गोमयात्।
काष्ठादग्निरहेः फणादपि मणिर्गोपित्ततो रोचना,
प्राकाश्यं स्वगुणोदयेन गुणिनो गच्छन्ति, किं जन्मना॥

गुण ही मान के कारण पञ्च./मित्रभेद/99

Kauśeyaṁ kṛmijaṁ suvarṇamupalād dūrvāpi goromataḥ,
Pañkāttāmarasaṁ śaśāṅka udadherindīvaraṁ gomayāt।
Kāṣṭhādagniraheḥ phanādapi maṇirgopittato rocanā,
Prākāśyaṁ svaguṇodayena guṇino gacchanti kiṁ janmanā॥

Pañcata./Mitrabhe./99

Merits give respect

रेशम कीड़े से, सोना पत्थर में से, दूब गाय के रोम से, कमल कीचड़ से, चाँद समुद्र से, नील-कमल गोबर से, आग लकड़ी से, मणि साँप के फण से और रोचना नाम की ओषधि गाय के पित्त से उत्पन्न हुई मानी जाती है। इस प्रकार सभी गुणी अपने गुणों के द्वारा ही प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं; किसी का जन्म किससे हुआ इस बात का कोई महत्त्व नहीं होता।

Silk from insects, gold from a stone, 'dūba', a kind of grass from the hair of cow, lotus from the mud, the moon from the sea, the blue lotus from the cowdung, fire

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

from the wood, a jewel from the hood of the snake and 'Rocanā', a herb from the gall of cow are produced. So all meritorious things become famous due to their merits. The source of birth has no importance.

(523)

क्रमेलकं निन्दति कोमलेच्छुः,
क्रमेलकः कण्टकलम्पटस्तम्।
प्रीतौ तयोरिष्टभुजोः सभायां,
मध्यस्थता नैकतरोपहासः॥

मध्यस्थ का कर्त्तव्य नैषधीय-चरित / 6 / 106

Kramelakaṁ nindati komalecchuḥ,
Kramelakaḥ kaṇṭakalampaṭastam।
Prītau tayoriṣṭabhujoḥ sabhāyāṁ,
Madhyasthatā naikataropahāsaḥ॥

Naiṣadhīyaca. / 6 / 106

Duty of a mediator

कोमल वस्तुएँ खाने वाला, काँटे आदि तीक्ष्ण वस्तुओं को खाने वाले ऊँट की निन्दा करता है और काँटों से प्यार करने वाला ऊँट उसकी (कोमल वस्तु खाने वाले की) निन्दा करता है। अपनी-अपनी इच्छित वस्तुओं के खाने वाले उन दोनों की रुचि के सम्बन्ध में सभा में मध्यस्थता करते समय किसी एक का उपहास करना ठीक नहीं है। अर्थात् सभी की रुचि भिन्न-भिन्न होती है, अतः कोई उपहासास्पद नहीं है।

The soft-eater insults the camel which eats sharp thorns, and the camel insults the soft-eater as he himself likes thorns. Both of them eat according to their likings. Therefore if somebody in a meeting wants to mediate, he should not pass jokes of any one's liking, as there are different types of likings in this world.

(524)

क्रुद्धः पापं न कुर्यात्, क्रुद्धो हन्याद् गुरूनपि।
क्रुद्धः परुषया वाचा, नरः साधूनधिक्षिपेत्॥

क्रोध से हानियाँ वा.रामा. / सुन्दरका. /55 / 4

Kruddhaḥ pāpaṁ na kuryāt, kruddho hanyād gurūnapi।
Kruddhaḥ paruṣayā vācā, naraḥ sādhūnadhikṣipet॥

Vā. Rā. / Sunder. / 55 / 4

Loss due to anger

गुस्सा आने पर कोई बुरा काम नहीं करना चाहिए; क्योंकि गुस्से से भरा मनुष्य बड़ों को भी मार डालता है और गुस्सैल कठोर वाणी से श्रेष्ठ लोगों का भी अपमान कर बैठता है।

One should not commit any bad work when he is in rage, as an angry man may kill even his elders and may insult good persons with his harsh voice.

(525)

क्रूरो लुब्धोऽलसोऽसत्यः प्रमादी भीरुरस्थिरः।
मूढो युद्धावमन्ता च सुखोच्छेद्यो भवेद् रिपुः॥

विजेतव्य शत्रु पञ्चतन्त्र / काकोलूकीय / 25

Krūro lubdho'laso'satyaḥ pramādī bhīrurasthiraḥ।
Muḍho yuddhāvamantā ca sakhocchedyo bhaved ripuḥ॥

To be won easily Pañcat. / Kāko. / 25

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो शत्रु क्रूर, लोभी, आलसी, झूठा, लापरवाह, डरपोक, अस्थिर प्रकृति का, बेवकूफ और युद्ध से घबराता है, उसे सरलता से नष्ट किया जा सकता है।

The enemy, who is cruel, greedy, idle, liar, negligent, coward, fickle-minded, foolish and shirker from the struggle can be killed easily.

(526)

क्रोधो वैवस्वतो राजा, तृष्णा वैतरणी नदी।
विद्या कामदुहा धेनुः, सन्तोषो नन्दनं वनम्॥

देव और असुर चाणक्यनीति / 8 / 14

Krodho vaivasvato rājā, tṛṣṇā vaitaraṇī nadī |
Vidyā kāmaduhā dhenuḥ, santoṣo nandanaṁ vanam ||

Gods and demons Cāṇkyanīti / 8 / 14

क्रोध ही यमराज है, लोभ वैतरणी नदी है, विद्या ही कामधेनु है और सन्तोष ही स्वर्ग का नन्दन-वन है।

Anger is the god of death, greed is the Vaitaraṇī river, education is the cow who fulfils all the desires and contentment is the Nandana forest of heaven.

(527)

क्रोधो मूलमनर्थानां, क्रोधः संसारबन्धनम्।
धर्मक्षयकरः क्रोधस्तस्मात् क्रोधं विवर्जयेत्॥

त्याज्य — क्रोध बृहन्नारदीयपुराण / 32 / 54

Krodho mūlamanarthānāṁ, krodhaḥ saṁsārabandhanam |
Dharmakṣayakaraḥ krodhastasmāt krodhaṁ vivarjayet ||

Bṛ / Naradapu. / 32 / 54

Abandonable — anger

क्रोध सब संकटों की जड़ है, क्रोध ही जन्म-मरण के चक्कर में फँसाने वाला है, क्रोध धर्म का विनाश कर देता है, अतः क्रोध कभी भी नहीं करना चाहिए।

Anger is the root cause of all troubles. It is anger which traps us in death and birth. Anger destroys morality. Therefore, one should always keep off anger.

(528)

क्रोधो हर्षश्च दर्पश्च, ह्रीः स्तम्भो मान्यमानिता।
यमर्थान्नापकर्षन्ति स वै पण्डित उच्यते॥

प्रशंसनीय व्यक्ति महाभा. / उद्योग / 33 / 17

Krodho harṣaśca darpaśca, hrīḥ stambho mānyamānitā |
Yamarthānnāpakarṣanti sa vai paṇḍita ucyate ||

Mahābhā. / Udyoga / 33 / 17

Admirable person

क्रोध, प्रसन्नता, लज्जा, उद्दण्डता तथा अपने को पूज्य समझना – ये भाव जिसको अपने लक्ष्य से विचलित नहीं करते, वही बुद्धिमान् व्यक्ति है।

The person to whom rage, pleasure, shame, obstinacy and self-respect cannot remove from his path, is called a wise-man or Paṇḍita.

(529)

क्वचिद्धर्मः क्वचिन्मैत्री क्वचिदर्थः क्वचिद्यशः।
कर्माभ्यासः क्वचिच्चेति चिकित्सा नास्ति निष्फला॥

चिकित्सा के लाभ योगरत्नाकर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kvaciddharmaḥ kvacinmaitrī, kvacidarthaḥ kvacidyaśaḥ |
Karmābhyāsaḥ kvacicceti cikitsā nāsti niṣphalā ||

Advantages of treatment Yogaratnākara

इलाज करना अथवा चिकित्सा कभी निष्फल नहीं होती, क्योंकि कहीं इससे धर्मलाभ होता है, कहीं किसी की मित्रता प्राप्त हो जाती है, कहीं से धन मिल जाता है, कहीं से यश प्राप्त हो जाता है और साथ-साथ चिकित्सा का अभ्यास भी होता जाता है।

Treatment of diseases is never useless as sometimes it is a work of religion, sometimes it makes friends, sometimes it pays in the form of money, sometimes it becomes the source of fame and besides all, man becomes expert at practi-sing it.

(530)

क्वचिद् भूमौ शय्या क्वचिदपि च पर्यङ्कशयनः,
क्वचिच्छाकाहारी क्वचिदपि च शाल्योदनरुचिः।
क्वचित्कन्थाधारी क्वचिदपि च दिव्याम्बरधरो,
मनस्वी कार्यार्थी गणयति न दुःखं न च सुखम्॥

कार्यार्थी की विशेषता नीतिशतक / 82

Kvacid bhūmau śayyā kvacidapi ca paryaṅkaśayanaḥ,
Kvacicchākāhārī kvacidapi ca śālyodanaṛuciḥ |
Kvacitkanthādhārī kvacidapi ca divyāmbaradharo,
Manasvī kāryārthī gaṇayati na duḥkhaṁ na ca sukham ||

Quality of determined Nītisataka / 82

अपने कार्य की सिद्धि में लगा हुआ संकल्पशील मनुष्य अपने दुःख और सुख की चिन्ता न करते हुए कभी भूमि पर सो जाता है और कभी पलंग पर, कभी साग-पात खाकर ही गुजारा कर लेता है, तो कभी उत्तम जाति के चावलों के भात का आनन्द ले लेता है, और कभी फटे-पुराने कपड़े पहनकर ही काम चला लेता है, तो कभी सुन्दर-सुन्दर वस्त्रों को पहन लेता है।

For getting success in his own work, a strong-minded man never cares for his troubles or conveniences. Sometimes he takes rest on the ground, while at another time on a bedstead, sometimes he eats any type of vegetables only, while at other time gets enjoyment by eating high quality boiled rice, and sometimes he wears patch-worked garments while at other times he wears a grand and beautiful dress.

(531)

क्व दोषोऽत्र मया लभ्य इति सञ्चिन्त्य चेतसा।
खलः काव्येषु साधूनां श्रवणाय प्रवर्त्तते॥

दोष-दर्शन सुभाषितावलि / 141

Kva doṣo'tra mayā labhya iti sañcintya cetasā |
Khalaḥ kāvyeṣu sādhūnāṁ śravaṇāya pravarttate ||

Finding fault Subhāṣitāvali / 141

दुष्ट व्यक्ति मन में यह सोचकर कि 'मैं अमुक् काव्य में कहाँ त्रुटि ढूँढूँ' श्रेष्ठ व्यक्तियों के काव्यों को सुनने लगता है।

With the thought in mind that where he can find fault in the poetry, a badman starts reading the poems of great persons.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(532)

क्षणक्षयिणि सापाये भोगे रज्यन्ति नोत्तमाः।
सन्त्यज्याम्भोजकिञ्जल्कं हंसाः प्राश्नन्ति शैवलम्॥

प्रशंसनीय व्यक्ति सुभाषितावलि / 299

Kṣaṇakṣayiṇi sāpāye bhoge rajyanti nottamāḥ।
Santyajyāmbhojakiñjalkaṁ haṁsāḥ prāśnanti śaivalam॥

Admirable persons Subhāsitāvali / 299

श्रेष्ठ व्यक्ति क्षणमात्र में नष्ट हो जाने वाले तथा संकटों से पूर्ण भोगों में लिप्त नहीं होते, जैसे हंस कमलों के पुष्पतन्तुओं को छोड़कर सेवाल खा लेते हैं।

Greatmen do not indulge in enjoyment from the enjoyable things which are momentary and full of troubles, as swans eat only mosses leaving the petals of lotus.

(533)

क्षणे रुष्टाः क्षणे तुष्टाः, रुष्टास्तुष्टाः क्षणे-क्षणे।
अव्यवस्थितचित्तानां, प्रसादोऽपि भयङ्करः॥

हानिकर कृपा अज्ञात

Kṣaṇe ruṣṭāḥ kṣaṇe tuṣṭāḥ, ruṣṭāstuṣṭāḥ kṣaṇe kṣaṇe।
Avyavasthitacittānāṁ, prasādo'pi bhayaṅkaraḥ॥

Harmful favour Unknown

अनिश्चित विचारों वाले लोग क्षणभर में रूठ जाते हैं और क्षणभर में मान जाते हैं। क्षण-क्षण में उनका रूठना और मनौती चलती रहती है। यदि ऐसे लोग कोई कृपा भी करते हैं, तो वह भी दुःखदायी हो सकती है।

The fickle-minded persons sometime become angry and after sometime are pleased. This happens again and again. So the favour shown by such people, may be dreadful at any time.

(534)

क्षतात् किल त्रायत इत्युदग्रः,
क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढः।
राज्येन किं तद्विपरीतवृत्तेः,
प्राणैरुपक्रोशमलीमसैर्वा॥

क्षत्रिय का कर्त्तव्य रघुवंश / 2 / 53

Kṣatāt kila trāyata ityudagraḥ,
kṣatrasya śabdo bhuvaneṣu rūḍhaḥ।
Rājyena kiṁ tadviparītavṛtteḥ,
Prāṇairupakrośamalīmasairvā॥

Duty of the warrior Raghvaṁśa / 2 / 53

संसार में 'क्षत्र' यह महत्त्वपूर्ण शब्द 'चोट से बचाने वाला' इस अर्थ में प्रसिद्ध है। जो राज्य किसी की रक्षा नहीं कर सकता, उसका क्या लाभ है अथवा उस जीवन का भी क्या लाभ है, जो कर्त्तव्य न निभा सकने के कारण निन्दित हो रहा है!

'Kṣatra' this important word is famous in the meaning of 'Protector from a wound'. If the king is unable to save its dependents, there is no use of it, or the life which is defamed due to not performing its duty, is also useless.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(535)

क्षते प्रहारा निपतन्त्यभीक्ष्णम्,
धनक्षये दीव्यति जाठराग्निः।
आपत्सु वैराणि समुल्लसन्ति,
छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवन्ति॥

संकट पर संकट पञ्चतन्त्र / मित्रसम्प्राप्ति / 180

Kṣate prahārā nipatantyabhīkṣṇam,
Dhanakṣaye dīvyati jāṭharāgniḥ।
Āpatsu vairāṇi samullasanti,
Chidreṣvanarthā bahulībhavanti॥

Pañcata. / Mitrasam. / 180

Adversity leads adversity

चोट पर बारम्बार चोट लगती है, धन के समाप्त हो जाने पर भूख तेज हो जाती है और संकटों के समय शत्रुताएँ बढ़ने लगती हैं। इस प्रकार जहाँ कमियाँ होती हैं, वहाँ अनेक संकट आकर उपस्थित हो जाते हैं।

A wound is hurt again and again. When a man becomes poor he feels hunger keenly. Enmities grow at the time of adversity. So, many troubles attack at the time of adversity.

(536)

क्षमा दानं, क्षमा सत्यं, क्षमा यज्ञाश्च पुत्रिकाः।
क्षमा यशः, क्षमा धर्मः, क्षमायां विष्ठितं जगत्॥

क्षमा का महत्त्व वाल्मीकिरामायण / बालकाण्ड / 33 / 8-9

Kṣamā dānaṁ, kṣamā satyaṁ, kṣamā yajñāsca putrikāḥ।
Kṣamā yaśaḥ, kṣamā dharmaḥ, kṣamāyāṁ viṣṭhitaṁ jagat॥

Vā. Rā. / Bālkā. / 33 / 8-9

Importance of tolerance

राजा कुशनाभ अपनी पुत्रियों को समझा रहे हैं — "हे पुत्रियो! क्षमा ही दान है, क्षमा ही सत्य है और क्षमा ही अनेक प्रकार का यज्ञ है, क्षमा ही यश है और क्षमा ही धर्म है। क्षमा से ही सारा संसार टिका हुआ है।" भावार्थ यह है कि क्षमा या सहनशीलता सर्वोत्तम गुण है।

The king Kuśhanābha is telling his daughters :- "O daughters! It is forbearance that is donation, truth, many kinds of sacrifices, fame and morality. The whole world is supported by forbearance." It means that forbearance is the best quality of all.

(537)

क्षमा शस्त्रं करे यस्य, दुर्जनः किं करिष्यति।
अतृणे पतितो वह्निः स्वयमेवोपशाम्यति॥

क्षमा का महत्त्व सुभाषितरत्नाकर / 89 / 5

Kṣamā śastraṁ kare yasya, durjanaḥ kiṁ kariṣyati।
Atṛṇe patito vahniḥ svayamevopaśāmyati॥

Subhāśitaratnā. / 89 / 5

Advantage of tolerance

क्षमा (सहनशीलता) रूपी हथियार जिसके हाथ में है, दुष्ट व्यक्ति उसका क्या बिगाड़ेगा? जब जलाने को तिनका तक भी नहीं रहता, तब आग स्वयं ही शान्त हो जाया करती है।

A man who has the weapon of toleration, a bad man can not harm him. When there is not even a straw to burn, fire will get appeased itself.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(538)

क्षमी दाता गुणग्राही स्वामी दुःखेन लभ्यते।
अनुकूलः शुचिर्दक्षो राजन् भृत्योऽपि दुर्लभः॥

दुर्लभ स्वामी और भृत्य भोजप्रबन्ध / 93

Kṣamī dātā guṇagrāhī svāmī duḥkhena labhyate |
Anukūlaḥ śucirdakṣo rājan bhṛtyo'pi durlabhaḥ ||

Rare — a master and a servent Bhojapra. / 93

हे राजन्! सहनशील, उदार और गुणों की पहचान करने वाला स्वामी बड़ी कठिनाई से प्राप्त होता है, परन्तु हितचिन्तक, पवित्र मन वाला और कार्यकुशल नौकर भी बड़ी कठिनाई से मिलता है।

O king! A master who is tolerant, generous and recognizer of qualities is difficult to be gained, but on the other hand a servant, who is a well-wisher, pure-minded and expert in his work is also very rare to find.

(539)

क्षान्तितुल्यं तपो नास्ति, सन्तोषान्न सुखं परम्।
नास्ति तृष्णासमो व्याधिर्न च धर्मो दयापरः॥

उत्तम गुण अज्ञात

Kṣāntitulyaṁ tapo nāsti, santoṣānna sukhaṁ param |
Nāsti tṛṣṇāsamo vyādhirna ca dharmo dayāparaḥ ||

Admirable qualities Unknown

क्षमा के समान तप नहीं है, सन्तोष से बढ़कर कोई सुख नहीं है, तृष्णा के समान कोई रोग नहीं है और दया से बढ़कर कोई धर्म नहीं है।

There is no penance better than forbearance, no happiness better than contentment, no disease worse than greed and no morality better than kindness.

(540)

क्षान्तिश्चेत् कवचेन किं, किमरिभिः क्रोधोऽस्ति चेद्देहिनाम्।
ज्ञातिश्चेदनलेन किं, यदि सुहृद् दिव्यौषधैः किं फलम्॥
किं सर्पैर्यदि दुर्जनाः, किमु धनैर्विद्यानवद्या यदि।
व्रीडा चेत् किमु भूषणैः, सुकविता यद्यस्ति राज्येन किम्॥

प्रशंसनीय गुण नीतिशास्त्र / 21

Kṣāntiścet kavacena kiṁ, kimaribhiḥ krodho'sti ceddehinām |
Jñātiścedanalena kiṁ, yadi suhṛd divyauṣadhaiḥ kiṁ phalam ||
Kiṁ sarpairyadi durjanāḥ, kimu dhanairvidyānavadyā yadi |
Vrīḍā cet kimu bhūṣaṇaiḥ, sukavitā yadyasti rājyena kim ||

Admirable qualities Nītiśāstra / 21

यदि सहनशीलता है, तो कवच की कोई आवश्यकता नहीं, यदि क्रोध है, तो अन्य शत्रुओं की आवश्यकता नहीं (क्योंकि क्रोध सबसे बड़ा शत्रु है), यदि बिरादरी के लोग हैं, तो आग की कोई आवश्यकता नहीं (वे ही हृदय जलाने के लिए काफी हैं), यदि मित्र हैं, तो दिव्य ओषधियों की आवश्यकता नहीं, यदि दुष्ट लोग हैं, तो सर्पों का कोई महत्व नहीं, यदि प्रशंसनीय विद्या पास है, तो धनों का कोई महत्त्व नहीं, यदि बुरे कार्यों से लज्जा है, तो गहनों की आवश्यकता नहीं, और यदि सुन्दर कविता रची जा सकती है, तो राज्य उसके सम्मुख तुच्छ है।

If there is forbearance, then there is no use of an armour. If one has anger, then there is no use of other enemies. If there are kinsmen,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

then no need of fire (as they are sufficient to burn heart). If there is a friend, then there is no use of divine medicines. If there are wicked persons, then no need of snakes. If one has praiseworthy learning, there is no need of wealth. If there is bashfulness, then no need of ornaments. If one has the ability of composing good poems, then there is no need of kingdom.

(541)

क्षिपसि शुकं वृषदंशकवदने,
मृगमर्पयसि मृगादनरदने।
वितरसि तुरगं महिष-विषाणे,
निदधच्चेतो भोगविताने ॥

साहित्यदर्पण / 10 / 51 कारिका में

भोगी जीवन का नाश

Kṣipasi śukaṁ vṛṣadaṁśakavadane,
Mṛgamarpayasi mṛgādanaradane |
Vitarasi turagaṁ mahiṣa-viṣāṇe,
Nidadhacceto bhogavitāne ||

Sāhityadarpan / 10 / 51 Kārika

Passions — sources of death

हे मानव, यदि तू भोगों के विस्तार में दिल लगाए बैठा है, तो तू तोते को बिलाव के मुँह में दे रहा है, हरिण को बाघ के दाँतों में भेंट कर रहा है और घोड़े को भैंसे के सींग पर डाल रहा है। अर्थात् तू अपना सर्वथा विनाश कर रहा है।

O man! If you are indulging your mind in the worldly enjoyments, then you are throwing a parrot into the mouth of a he-cat, presenting a deer in the teeth of a tiger, and keeping a horse upon the horns of a he-buffalo. It means that you are destroying your life.

(542)

क्षिप्रं विजानाति चिरं शृणोति,
विज्ञाय चार्थं भजते न कामात्।
नासम्पृष्टो ह्युपयुङ्क्ते परार्थे,
तत्प्रज्ञानं प्रथमं पण्डितस्य ॥

बुद्धिमान के चिह्न महाभा. / उद्योग / 33 / 22

Kṣipraṁ vijānāti ciraṁ śṛṇoti,
Vijñāya cārthaṁ bhajate na kāmāt |
Nāsampṛṣṭo hyupayuṅkte parārthe,
Tatprajñānaṁ prathamaṁ paṇḍitasya ||

Mahābhā. / Udyoga / 33 / 22

Signs of the wise

जो शीघ्र ही किसी तथ्य को जान लेता है, पर देर तक सुनता रहता है और अभिप्राय को समझने के बाद स्वेच्छानुसार उसका अर्थ नहीं लगाता है तथा जो बिना पूछे दूसरे की बात में टाँग नहीं अड़ाता, इस प्रकार का आचरण बुद्धिमान विद्वान् की प्रथम निशानी है।

This is the main quality of a wise learned man that he understands any fact very soon but continues to hear. After knowing its meaning he doesn't make its sense according to his own will, and he never pokes

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

his nose into others matters without being asked.

(543)

क्षीयन्ते सर्वदानानि, यज्ञहोमबलिक्रियाः।
न क्षीयेते पात्रदानमभयं यत्तु देहिनाम्॥

अभयदान की महत्ता चाणक्यनीति / 16 / 14

Kṣīyante sarvadānāni, yajña-homa-balikriyāḥ।
Na kṣiyete pātradānamabhayaṁ yattu dehinām॥

Cāṇkyanīti / 16 / 14

Superiority of making fearless

यज्ञ, हवन, बलि-वैश्वदेवयज्ञ आदि सभी दान नष्ट हो जाते हैं, परन्तु योग्य व्यक्ति को दिया दान और अभयदान नष्ट नहीं होते।

Sacrifices, oblations given into fire, and giving things to creatures, all such kinds of alms deteriorate by time, but alms given to a deserving person and protection given from any kind of fear exist forever.

(544)

क्षीरेणात्मगतोदकाय हि गुणा दत्ताः पुरा तेऽखिलाः।
क्षीरे तापमवेक्ष्य तेन पयसा ह्यात्मा कृशानौ हुतः॥
गन्तुं पावकमुन्मनस्तदभवद् दृष्ट्वा तु मित्रापदाम्।
युक्तं तेन जलेन शाम्यति, सतां मैत्री पुनस्त्वीदृशी॥

सज्जन-मित्रता नीतिशतक / 72

Kṣīreṇātmagatodakāya hi guṇā dattāḥ purā te'khilāḥ।
Kṣīre tāpamavekṣya tena payasā hyātmā kṛśānau hutaḥ॥
Gantuṁ pāvakamunmanastadabhavad dṛṣṭvā tu mitrāpadām।
Yuktaṁ tena jalena śāmyati, satāṁ maitrī punastvīdṛśī॥

Friendship of the great Nītiśataka / 72

जब पानी दूध में मिलाया गया तो दूध ने अपने सारे गुण पानी को दे दिए। जब दूध आग के ताप से जलने लगा, तो पानी ने दूध के स्थान पर स्वयं अपने को आग में जला डाला। पानी-रूप मित्र को आग से जलते देख व्याकुल होकर दूध आग में ही गिरने को तैयार हो गया, परन्तु जब उस उबलते दूध पर फिर पानी डाला गया तो दूध शान्त हो गया (क्योंकि उसका मित्र पुनः मिल गया)। वस्तुतः सज्जनों की मित्रता ऐसी ही होती है, जो मित्र के कष्टों से व्याकुल हो जाते हैं।

At first, milk gave all its qualities to water which was mixed into it. When this water saw that fire is heating milk, it gave itself to fire to be dried in place of the milk. After seeing sacrifice of the water, the milk became ready to go into fire, but at the same time a person offered some extra water to the boiling milk. Getting again its friend (water) back, the milk became appeased. So it is true about the friendship of good persons that they become disturbed by their friend's ordeals.

(545)

क्षुधासमा नास्ति शरीर-वेदना,
चिन्तासमा नास्ति शरीरशोषणा।
विद्यासमा नास्ति शरीरभूषणा,
वृत्त्या समा नास्ति शरीरपोषणा॥

अनुपम साधन सुभाषितावलि / 3422

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kṣudhāsamā nāsti śarīra-vedanā,
Cintāsamā nāsti śarīraśoṣaṇā।
Vidyāsamā nāsti śarīrabhūṣaṇā,
Vṛttyā samā nasti śarīrapoṣaṇā॥

Special means Subhāsitāvali / 3422

भूख से बढ़कर शरीर को पीड़ा देने वाली कोई अन्य वस्तु नहीं। चिन्ता से बढ़कर शरीर को सुखाने वाली कोई दूसरी वस्तु नहीं। विद्या के समान शरीर को सजाने वाली दूसरी कोई वस्तु नहीं। और आजीविका के समान शरीर को पुष्ट करने वाली भी कोई अन्य वस्तु नहीं।

It is hunger that creates most trouble in the body. Anxiety dries the body most of all things. It is learning which decorates the body the best of all things. And it is only occupation which nourishes the body the best of all things.

ख = Kha

(546)

खनन्नाखुबिलं सिंहः पाषाणशकलाकुलम्।
प्राप्नोति नखभङ्गं वा फलं वा मूषको भवेत्॥

व्यर्थ का परिश्रम पञ्चतन्त्र / काकोलूकीय / 16

Khanannākhubilaṁ siṁhaḥ pāṣāṇaśakalākulam।
Prāpnoti nakhabaṅgaṁ vā phalaṁ vā mūṣako bhavet॥

Useless work Pañca. / Kāko. / 16

शेर पत्थरों के टुकड़ों से युक्त चूहे के बिल को खोदता हुआ या तो अपने नाखून ही तुड़वा लेता है और यदि कुछ लाभ हो भी गया तो केवल छोटा सा चूहा ही हाथ लगता है। (इसलिए मनुष्य को थोड़े से लाभ के लिए बड़ा संकट नहीं उठाना चाहिए।)

A lion digging a rat's hole which is surrounded with stone pieces, may get his nails broken or if he gains something that is only a little mouse. (So one should not do such a risky work, where there is very little gain).

(547)

खलः करोति दुर्वृत्तं नूनं फलति साधुषु।
दशाननोऽहरत् सीतां, बन्धनं च महोदधेः॥

कुसंगति का प्रभाव अज्ञात

Khalaḥ karoti durvṛttaṁ nūnaṁ phalati sadhuṣu।
Daśānano'harat sītāṁ, bandhanaṁ ca mohodadheḥ॥

Bad effect of bad company Unknown

दुष्ट व्यक्ति जब कोई बुरा कार्य करता है, तो उससे सज्जनों को भी हानि होती है। सीता को तो रावण ने चुराया था, परन्तु पुल द्वारा बाँधा गया महासागर।

When a bad fellow commits any crime, it effects badly the good persons also. Rāvaṇa took off Sita, but the ocean had to suffer the trouble of bridge-construction.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(548)

खलः सर्षपमात्राणि परच्छिद्राणि पश्यति।
आत्मनो बिल्वमात्राणि पश्यन्नपि न पश्यति॥

दुष्ट का स्वभाव महाभा. / आदि / 34 / 82

Khalaḥ sarṣapamātrāṇi paracchidrāṇi paśyati |
Ātmano bilvamātrāṇi paśyannapi na paśyati ||

Mahābhā. / Ādi / 34 / 82

Nature of the bad

दुष्ट व्यक्ति दूसरों की सरसों के दाने जितनी भी त्रुटियों को बढ़ा-चढ़ा कर बताता है, परन्तु अपनी बिल्व जैसी बड़ी-बड़ी त्रुटियों को देखता हुआ भी नहीं देखता।

A bad person looks very keenly at the defects of others which are very minute like the seed of mustard, but he overlooks his own defects, though they are as big as a fruit of the wood-apple.

(549)

खलानां कण्टकानां च द्विविधैव प्रतिक्रिया।
उपानहमुखभङ्गो वा दूरादेव विसर्जनम्॥

दुष्टों से व्यवहार चाणक्यनीति / 15 / 3

Khalānāṁ kaṇṭakānāṁ ca dvividhaiva pratikriyā |
Upānahmukhabhaṅgo vā dūrādeva visarjanam||

Cāṇkyanīti / 15 / 3

Behaviour with the bad

दुष्टों और काँटों से दो प्रकार से ही निपटा जा सकता है; या तो जूते से उनका मुँह तोड़ दो या उनसे दूर ही रहो।

There are two ways to get rid of bad persons and thorns; either you should break their faces with your shoe or keep them off.

(550)

खलालापाः सोढाः कथमपि तदाराधनपरैः,
निगृह्यान्तर्बाष्पं हसितमपि शून्येन मनसा।
कृतो वित्तस्तम्भप्रतिहतधियामञ्जलिरपि,
त्वमाशे मोघाशे किमपरमतो नर्तयसि माम्॥

आशा - त्याग वैराग्यशतक / 6

Khalālāpāḥ soḍhāḥ kathamapi tadārādhanaparaiḥ |
Nigṛhyāntarbāṣpaṁ hasitamapi śūnyena manasā ||
Kṛto vittastambhapratihatadhiyāmañjalirapi |
Tvamāśe moghāśe kimaparamato nartayasi mām ||

Giving up desires Vairāgyaśataka / 6

हे असफल आशाओं वाली तृष्णा! तेरे कारण से हम लोगों ने दुष्ट लोगों की सेवा करते हुए उनकी दुष्टताभरी बातचीत सहन कर ली और साथ ही बहते हुए आँसुओं को अंदर ही रोककर दुखी हृदय से उनके साथ हम कुछ हँस भी लिए। इसके अतिरिक्त, धन के मद में चूर हुए लोगों के सम्मुख हाथ भी जोड़ लिए, अब तू ही बता कि इन सबके अतिरिक्त तू अब मुझे और कौन से नाच नचाएगी।

O greed, all my desires have failed and I have got nothing. On account of you, I served bad persons, heard their bad talks patiently and laughed with them with sad mind controlling my tears in myself. Besides, I folded

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

my hands in front of the richmen who are very proud due to their wealth. Now tell me in which other way do you want me to dance?

(551)

खल्वाटो दिवसेश्वरस्य किरणैः सन्तापितो मस्तके,
गच्छन् देशमनातपं विधिवशात्तालस्य मूलं गतः।
तत्राप्यस्य महाफलेन पतता भग्नं सशब्दं शिरः,
प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव यान्त्यापदः॥

दुर्भाग्य से विनाश नीतिशतक / 84

Khalvāṭo divaseśvarasya kiraṇaiḥ santāpito mastake,
Gacchan deśamanātapaṁ vidhivaśāttālasya mūlaṁ gataḥ।
Tatrāpyasya mahāphalena patatā bhagnaṁ saśabdaṁ śiraḥ,
Prāyo gacchati yatra bhāgyarahitastatraiva yāntyāpadaḥ॥

Bad luck — destroyer Nītiśataka / 84

किसी गंजे का सिर जब सूर्य की किरणों से खूब तपने लगा, तो वह धूप से रहित स्थान की ओर जाता हुआ भाग्यवश ताड़ के पेड़ के नीचे जा पहुँचा। वहाँ पर भी उस पेड़ से गिरते हुए भारी फल ने गिर कर उसके सिर पर भयंकर चोट दे मारी। भाग्यहीन व्यक्ति जहाँ भी जाता है, प्रायः मुसीबतें भी उसके साथ वहीं जा पहुँचती हैं।

The head of a bald man became heated with the rays of the sun. To save himself from the sun, unfortunately he went down of a palmyra tree. At that place a big fruit falling down from the tree struck on the bald head and he got a serious pain. It is generally true that wherever an unlucky man goes, troubles go there with him.

(552)

ख्याता नराधिपतयः कविसंश्रयेण,
राजाश्रयेण च गताः कवयः प्रसिद्धिम्।
राज्ञः समोऽस्ति न कवेः परमोपकारी,
राज्ञो न चास्ति कविना सदृशः सहायः॥

राजा और कवि सुभाषितावलि / 160

Khyātā narādhipatayaḥ kavisaṁśrayeṇa,
Rājāśrayeṇa ca gatāḥ kavayaḥ prasiddhim।
Rājñaḥ samo'sti na kaveḥ paramopakārī,
Rājño na cāsti kavinā sadṛśaḥ ṣahāyaḥ॥

Subhāṣitāvali / 160

The kings and the poets

कवियों द्वारा ही राजा प्रसिद्ध हुए हैं और राजाओं का आश्रय प्राप्त करके ही कवि भी प्रसिद्ध हुए। कवि का राजा के समान दूसरा सहायक नहीं होता और कवि के समान राजा का भी दूसरा सहायक नहीं।

Kings are famous due to the poets and the poets also get fame due to the support of the kings. There is no more favourite of a poet than a king and no better helper of a king than a poet.

(553)

ख्यातिं गमयति सुजनः,
सुकविर्विदधाति केवलं काव्यम्।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुष्णाति कमलमम्भो,
लक्ष्म्या तु रविर्नियोजयति ॥

सज्जन और कवि सुभाषितावलि / 154

Khyātiṁ gamayati sujanaḥ,
Sukavirvidadhāti kevalaṁ kāvyam |
Puṣṇāti kamalamambho,
Lakṣmyā tu ravirniyojayati ||

Subhāṣitāvali / 154

A good person and a poet

अच्छा कवि तो केवल काव्य की रचना करता है, परन्तु उसे प्रसिद्धि श्रेष्ठ व्यक्ति ही दिलवाता है। जल कमल को केवल बढ़ाता है, परन्तु उसमें सौन्दर्य सूर्य ही पैदा करता है।

A good poet composes only poetry, but a good man makes him famous. Water nourishes the lotus, but it is the sun which generates beauty in it.

(554)

ख्यापनेनानुतापेन तपसाऽध्ययनेन च।
पापकृन्मुच्यते पापात्तथा दानेन चापदि ॥

पापों से बचने के उपाय मनु. / 11 / 227

Khyāpanenānutāpena tapasā'dhyanena ca |
Pāpakṛnmucyate pāpāttathā dānena cāpadi ||

Manu. / 11 / 227

Methods to remain sinless

अपना अपराध स्वीकार कर लेने से, पश्चाताप करने से, तप से और स्वाध्याय से भी पापी पाप से छुटकारा पा जाता है तथा संकट में दान देने से संकट से छूट जाता है।

By admitting own sin by repentance, by penance and by study of religious books also, a sinner gets rid of the sin and at the time of adversity, by giving due alms.

ग = Ga

(555)

गङ्गातीरे हिमगिरिशिला-बद्धपद्मासनस्य,
ब्रह्मध्यानाभ्यसनविधिना योगनिद्रां गतस्य।
किं तैर्भाव्यं मम सुदिवसैर्यत्र ते निर्विशङ्काः,
कण्डूयन्ते जरठहरिणाः स्वाङ्गमङ्गे मदीये ॥

आध्यात्मिक आनन्द की कामना वैराग्यशतक / 37

Gaṅgātīre Himagirīśilā-baddhapadmāsanasya,
Brahmadhyānābhyasanavidhinā yoganidrāṁ gatasya |
Kiṁ tairbhāvyaṁ mama sudivasairyatra te nirviśaṅkāḥ,
Kaṇḍūyante jaraṭhaharināḥ svāṅgamaṅge madīye ||

Viarāgyaśataka / 37

Desire of spiritual bliss

क्या मेरे वे शुभ दिन कभी आयेंगे जब कि मैं गंगा के तट के समीप हिमालय की चट्टान पर पद्मासन लगाकर ईश्वर में ध्यान लगाने की विधि से योगनिद्रा में डूब जाऊँगा और बूढ़े हिरण निर्भय होकर मेरे शरीर पर अपने शरीर की खुजली मिटाएँगे।

Will my those good days come sometime when I, on the bank of the Gaṅgā, sitting on the Himálayan rock in the pose of lotus will enjoy the sleep of yoga and old deer will remove their body's itch by rubbing their bodies with my body.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(556)

गच्छन् पिपीलको याति योजनानां शतान्यपि।
अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति॥

गति में ही उन्नति अज्ञात

Gacchan pipīlako yāti yojanānāṁ śatānyapi |
Agacchan vainateyo'pi padamekaṁ na gacchati ||

Action leads to progress Unknown

चलता हुआ चींटा भी सौ योजन का सफर तय कर लेता है, परन्तु न चलता हुआ गरुड़ एक कदम भी आगे नहीं बढ़ पाता।

Even an ant moving forward goes upto hundred of Yojanas but motionless eagle cannot go even a step forward.

(557)

गण्डस्थलेषु मदवारिषु बद्धराग-
मत्तभ्रमद्भ्रमरपादतलाहतोऽपि ।
कोपं न गच्छति नितान्तबलोऽपि नागः,
तुल्ये बले तु बलवान् परिकोपमेति॥

तुलना के योग्य पञ्च./मित्रभेद/130

Gaṇḍasthaleṣu madavāriṣu baddharāga-
Mattabhramadbhramara-pādatalāhato'pi |
Kopaṁ na gacchati nitāntabalo'pi nāgaḥ,
Tulye bale tu balavān parikopameti ||

Pañca. / Mitrabhe. / 130

Deserving comperison

हाथी के कपोलों से बहते हुए मस्ती के जल में प्रेम करने से मस्त होकर घूमते हुए भौंरों के पाँवों की चोट खाकर भी अत्यन्त बलशाली हाथी भौंरों पर क्रोध नहीं करता, क्योंकि शक्तिशाली व्यक्ति समान शक्ति वाले पर ही क्रोध किया करता है।

Black bees, who like the rut of an elephant and due to their motion on that rut which flows from the cheeks of the powerful elephant, dash against its body, but the elephant does not become angry, because a strong person shows his anger only on the persons who are equal in strength.

(558)

गतवयसामपि पुंसां येषामर्था भवन्ति ते तरुणाः।
अर्थेन तु ये हीना वृद्धास्ते यौवनेऽपि स्युः॥

धन की महिमा पञ्च. / मित्रभेद / 10

Gatavayasāmapi puṁsāṁ yeṣāmarthā bhavanti te tarunāḥ |
Arthena tu ye hīnā vṛddhāste yauvane'pi syuḥ ||

Pañca. / Mitrabhe. / 10

Greatness of riches

जिन बूढ़े लोगों के पास धन होता है, वे बुढ़ापे में भी जवान लगते हैं, परन्तु धन से हीन व्यक्ति जवानी में भी बूढ़ा प्रतीत होता है।

Those who have wealth look young even in their old age, but those who are poor, look old even in their youth.

(559)

गतेऽपि वयसि ग्राह्या विद्या सर्वात्मना बुधैः।
इह चेत्स्यान्न फलदा, फलदा साऽन्यजन्मनि॥

विद्या का समय सुभाषितावलि / 2645

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Gate'pi vayasi grāhyā vidyā sarvātmanā budhaiḥ |
Iha cetsyānna phaladā, phaladā sa'nyajanmani ||

Time of education Subhāśitāvali / 2645

बड़ी उम्र हो जाने पर भी बुद्धिमानों को ध्यानपूर्वक विद्या प्राप्त करनी चाहिए। यदि वह इस जन्म में लाभ नहीं पहुँचाएगी, तो अगले जन्म में तो उससे लाभ होगा ही।

Wise persons should obtain knowledge even in old age. If this is fruitless in this life, it will be fruitful in the next one.

(560)

गते शोको न कर्त्तव्यो भविष्यं नैव चिन्तयेत्।
वर्त्तमानेन कालेन प्रवर्त्तन्ते विचक्षणाः ॥

वर्तमान का महत्त्व चाणक्यनीति./13/2

Gate śoko na karttavyo bhaviṣyaṁ naiva cintayet |
Varttamānena kālena pravarttante vicakṣanāḥ ||

Cāṇkyanīti / 13 / 2

Importance of the present

जो हो चुका, सो हो चुका, उस पर अफ़सोस नहीं करना चाहिए; आने वाले समय की भी इतनी चिन्ता नहीं करनी चाहिए। चतुर लोग वर्तमान काल में ही सुलभ साधनों से अपना काम निकाल लेते हैं।

Let the past be gone; don't be sad for that. Don't be too much anxious for the future. Wise persons make the best use of the means they have obtained at present.

(561)

गतोदके सेतुबन्धो न कल्याणि विधीयते।
उत्तिष्ठ कुरु कल्याणं राजानमनुदर्शय ॥

देरी से बचो वा. रामायण / अयोध्या / 9 / 5

Gatodake setubandho na kalyāṇi vidhīyate |
Uttiṣṭha kuru kalyāṇaṁ rājānamanudarśaya ||

Do at due time Vā. Rā. / Ayodhyā / 9 / 5

मन्थरा कह रही है कि हे कल्याणेच्छु कैकेयी! जब पानी चला जाता है, तो पुल नहीं बाँधा जाता। उचित समय पर ही कार्य करना चाहिए। इसलिए तू उठ कर राजा से अपने दो वर माँग और अपना कल्याण कर।

Mantharā says to Kaikeyi, "If you want your welfare, tell the king about promised two boons. A work done in time gets success. When there is no water, then construction of a bridge is useless."

(562)

गन्धः सुवर्णे फलमिक्षुदण्डे,
नाकारि पुष्पं खलु चन्दनस्य।
विद्वान् धनी भूपतिर्दीर्घजीवी,
धातः! पुरा कोऽपि न बुद्धिदोऽभूत् ॥

सब गुण दुर्लभ है चाणक्यनीति / 9 / 3

Gandhaḥ suvarṇe phalamikṣudaṇḍe,
Nākāri puṣpaṁ khalu candanasya |
Vidvān dhanī bhūpatirdīrghajīvī,
Dhātaḥ! Purā ko'pi na buddhido'bhūt ||

All qualities are rare Cāṇkyanīti / 9 / 3

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हे जगद्रचयिता! क्या तुम्हें पहले सलाह देने वाला कोई न था, जो तुमने सोने में सुगन्ध, गन्ने में फल, चन्दन के पेड़ में फूल प्रदान नहीं किये और विद्वान् को धनी तथा राजा को दीर्घायु नहीं बनाया? (भाव यह है कि विधाता की रचना बड़ी विचित्र है!)

O Creator of the world! Has not been there anybody in old times to advise you, as you did not give smell in gold, fruits on the sugar cane, flowers on the sandal tree, wealth to a learned man and long-life to a king? (It means the creation of God is very strange.)

(563)

गर्जति शरदि न वर्षति, वर्षति वर्षासु निःस्वनो मेघः।
नीचो वदति न कुरुते, न वदति सुजनः करोत्येव ॥

उत्तम और नीच — नीतिद्विषष्टिका / अनुवन्ध / 29

Garjati śaradi na varṣati, varṣati varṣāsu niḥsvano meghaḥ |
Nīco vadati na kurute, na vadati sujanaḥ karotyeva ||

Low and high persons Nītidvi. / Anu. / 29

शरद् ऋतु में बादल गरजता है, पर बरसता नहीं। वर्षा की ऋतु में बादल बिना शब्द किए ही बरसता है। नीच मनुष्य बोलता बहुत है परन्तु करता नहीं, जब कि उत्तम श्रेणी का व्यक्ति बोले बिना ही काम कर दिखाता है।

The cloud does not give water in the autumn season but it thunders, while in rainy season it rains, but without any sound. In the same way a mean fellow boasts too much but acts nothing, while great men act but they don't boast.

(564)

गर्जसि मेघ न यच्छसि तोयम्,
चातक-पक्षी व्याकुलितोऽहम्।
दैवादिहैव यदि दक्षिणवातः,
क्व त्वं क्वाहं क्व च जलपातः ॥

सहायता का अवसर अज्ञात

Garjasi megha na yacchasi toyam,
cātaka-pakṣī vyākulito'ham |
Daivādihaiva yadi dakṣiṇa-vātaḥ,
Kva tvaṁ kvāhaṁ kva ca jalapātaḥ ||

Time of help Unknown

हे बादल! तुम गरज तो रहे हो, पर पानी नहीं बरसा रहे हो। मैं पपीहा पानी के बिना व्याकुल हो रहा हूँ। यदि दुर्भाग्य से दक्षिण की हवा चल पड़ी तो तुम उड़ जाओगे, मैं भी न जाने किधर चला जाऊँगा और तब पानी कहाँ गिरेगा, कुछ नहीं कहा जा सकता। इसलिए अभी-अभी बरस लो। (मनुष्य को दानादि शुभ कर्म यथाशीघ्र कर लेने चाहिए, न जाने काल का बुलावा कब आ जाए।)

O cloud, you are thundering but not pouring your water. I, cātaka, am feeling thirsty. If by chance, the southern wind blows, neither you, nor I and nor pouring of water will remain

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

here. So give water soon. (A man should do charitable works as soon as possible. No body knows about one's future.)

(565)

गाङ्गमम्बु सितमम्बु यामुनं,
कज्जलाभमुभयत्र मज्जतः।
राजहंस तव सैव शुभ्रता,
चीयते न च नापचीयते॥

विवेकी का स्वभाव अज्ञात

Gāṅgamambu sitamambu yāmunaṁ,
kajjalābhamubhayatra majjataḥ।
Rājahaṁsa tava saiva śubhratā,
Cīyate na ca nāpacīyate॥

Nature of the discriminator Unknown

हे राजहंस! गङ्गा का पानी सफेद और यमुना का श्याम वर्ण का है। दोनों जलों में बारी-बारी से स्नान करके भी न तुम्हारी सफेदी बढ़ी और न कम हुई है। (विवेकशील पुरुषों पर अच्छे या बुरे लोगों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, वे तो अपने विवेक से ही सब कार्य करते हैं।)

O swan! The water of the Gangā is white and that of the Yamunā is blackish. You took bath in both waters one after the other, but your whiteness neither increased nor decreased, (Discriminative persons remain according to their discrimination and never change by a good or bad company.)

(566)

गात्रं संकुचितं गतिर्विगलिता भ्रष्टा च दन्तावलिः,
दृष्टिर्नश्यति वर्धते बधिरता, वक्त्रं च लालायते।
वाक्यं नाद्रियते च बान्धवजनो भार्या न शूश्रूषते,
हा कष्टं पुरुषस्य जीर्णवयसः पुत्रोऽप्यमित्रायते॥

वृद्धावस्था का स्वरूप — वैराग्यशतक / 97

Gātraṁ saṅkucitaṁ gatirvigalitā bhraṣṭā ca dantāvaliḥ,
Dṛṣṭirnaśyati vardhate badhiratā, vaktraṁ ca lālāyate।
Vākyaṁ nādriyate ca bāndhavajano bhāryā na śuśrūṣate,
Hā kaṣṭaṁ puruṣasya jīrṇavayasaḥ putro'pyamitrāyate॥

Condition in old age Vairāgyaśataka / 97

बुढ़ापा आने पर पुरुष का शरीर सिकुड़ जाता है, चाल बिगड़ जाती है, दाँतों की कतार टूट जाती है, दृष्टि क्षीण हो जाती है, बहरापन बढ़ जाता है, मुँह से लार टपकने लगती है, सम्बन्धी उसके बात की उपेक्षा कर देते हैं, पत्नी सेवा से मुँह मोड़ लेती है; और तो और, पुत्र भी शत्रु बन जाता है।

At the commencement of old age, the body becomes contracted, gait falters, the set of teeth destroys, sight is lost, deafness increases, the mouth begins to slobber, the relatives neglect his talk, the wife doesn't serve and over more, the son too becomes an enemy.

(567)

गात्रेषु वलयः प्राप्ताः, श्वेताश्चैव शिरोरुहः।
जरया पुरुषो जीर्णः, किं हि कृत्वा प्रभावयेत्॥

वृद्ध की दुर्दशा वा. रामायण / अयोध्या. / 105 / 23

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Gātreṣu valayaḥ prāptāḥ, śvetāścaiva śiroruhaḥ |
Jarayā puruṣo jīrṇaḥ, kiṁ hi kṛtvā prabhāvayet ||

Bad condition of the old Vā. Rā. / Ayodhy / 2 / 2

बुढ़ापे से जर्जर होने वाले मानव के शरीर पर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं और बाल सफेद हो जाते हैं। भला ऐसी करुण दशा में वह वृद्ध पुरुष क्या कुछ करके किसी को प्रभावित कर सकता है? अर्थात् वह कुछ नहीं कर सकता।

In the shabby old age, the body becomes wrinkled and the hair white. In such sorrowful condition, how can he influence others? In fact, he is unable to influence others.

(568)

गायन्ति देवाः किल गीतकानि,
धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते,
भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्॥

भारत की महिमा —विष्णुपुराण/2/3/24

Gāyanti devāḥ kila gītakāni,
Dhanyāstu te Bhāratabhūmibhāge |
Svargāpavargāspadamārgabhūte,
Bhavanti bhūyaḥ puruṣāḥ suratvāt ||

Superiority of India Viṣṇupu. / 2 / 3 / 24

देवता लोग प्रायः यह गीत गाया करते हैं कि वे धन्य हैं जो देवत्व से लौट कर स्वर्ग और मुक्ति के योग्य मार्ग वाली भारतभूमि के किसी भी हिस्से में पुनः मानव-जन्म धारण करते हैं।

Generally gods sing the following song that those are lucky who leave godness and take a new birth as a man in any region of Bhārata, where the path to heaven exists and people try to attain salvation.

(569)

गावो गन्धेन पश्यन्ति, वेदैः पश्यन्ति वै द्विजाः।
चारैः पश्यन्ति राजानः, चक्षुर्भ्यामितरे जनाः॥

देखने के साधन पञ्चतन्त्र / काकोलूकीय / 63

Gāvo gandhena paśyanti, Vedaiḥ paśyanti vai dvijāḥ |
Cāraiḥ paśyanti rājānaḥ, Cakṣurbhyāmitare janāḥ ||

Means to see Pañca. / Kāko. / 63

गाय आदि पशु गन्ध द्वारा जान लेते हैं, ब्राह्मण आदि वेदों द्वारा सच्चाई को पहचान लेते हैं, राजा लोग दूतों द्वारा देख लेते हैं, शेष सभी अपनी आँखों से देखते हैं।

Cows and such other animals know the things through smell, Brahmaṇas know the truth by their Vedic wisdom, the king knows with the help of spies and the rest look with their eyes.

(570)

गुणदोषकृतं जन्तुः, स्वकर्म-फलहेतुकम्।
अव्यग्रस्तदवाप्नोति, सर्वं प्रेत्य शुभाशुभम्॥

कर्मफल की प्राप्ति वा. रामा. / किष्किन्धा. / 21 / 2

Guṇa-doṣakṛtaṁ jantuḥ, svakarma-phalahetukam |
Avyagrastadavāpnoti, saraṁ pretya śubhāśubham ||

Result of works Vā. Rā. / Kiṣkindhā / 21 / 2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राणी अपने कर्मफल को देने वाले अच्छे या बुरे कार्य का अच्छा या बुरा फल दूसरे जन्म में निश्चित रूप से प्राप्त कर लेता है।

Any creature certainly gets the good or bad result for his good or bad actions in the next birth.

(571)

गुणदोष-समाहारे, दोषान् गृह्णन्त्यसाधवः।
मुक्ताफलानि सन्त्यज्य, काका मांसमिव द्विपात्॥

दुष्टों का स्वभाव — पद्मपुराण/1/36

Guṇa-doṣa-samāhāre, doṣān gṛhṇantyasādhavaḥ।
Muktāphalāni santyajya kākā māṁsamiva dvipāt॥

Nature of the bad Padmapu./1/36

अच्छाइयों तथा बुराइयों के ढेर में से नीच लोग बुराइयाँ ही ग्रहण करते हैं; जैसे मरे हुए हाथी के शरीर से कौए मोतियों को छोड़कर उसका माँस ही ग्रहण करते हैं। (ऐसा माना जाता है कि कुछ हाथियों के गण्डस्थल से मोती निकलते हैं।)

Mean persons choose demerits out of the heap of merits and demerits; as crows get the meat from the dead body of an elephant, but not pearls. (It is said that some elephants have pearls in their temples.)

(572)

गुणप्रवालं, विनयप्रशाखम्,
विश्रम्भमूलं महनीयपुष्पम्।
तं साधुवृक्षं स्वगुणैः फलाढ्यम्,
सुहृद्विहङ्गाः सुखमाश्रयन्ति॥

मित्रों का सहारा अज्ञात

Guṇapravālaṁ, vinayapraśākham,
Viśrambhamūlaṁ mahanīyapuṣpam।
Taṁ sādhu-vṛkṣaṁ svaguṇaiḥ phalāḍhyam,
Suhṛdvihaṅgāḥ sukhamāśrayanti॥

Shelter for friends Unknown

उस श्रेष्ठ पुरुष रूपी वृक्ष पर मित्ररूपी पक्षी सुखपूर्वक आश्रय प्राप्त कर लेते हैं, जिसके गुण उसकी नई कोंपलें हैं, नम्रता जिसकी बड़ी-बड़ी टहनियाँ हैं, विश्वास जिसकी जड़ें हैं, महिमा जिसके फूल हैं और अपने गुणरूपी फलों से जो भरा हुआ है।

A goodman is such a tree where friends like birds easily take refuge, whose qualities are his new sprouts, politeness is his long branches, trust is his roots, his greatness is his flowers and he has many fruits of his qualities.

(573)

गुणाः सर्वत्र पूज्यन्ते, न महत्योऽपि सम्पदः।
पूर्णेन्दुः किं तथा वन्द्यो, निष्कलङ्को यथा कृशः॥

गुण ही पूजनीय हैं चाणक्यनीति/16/6

Guṇāḥ sarvatra pūjyante, na mahatyo'pi sampadaḥ।
Pūrṇenduḥ kiṁ tathā vandyo, niṣkalaṅko yathā kṛśaḥ॥

Merits are to be respected Cāṇkyanīti/16/6

गुणों का ही सर्वत्र मान होता है, अधिक धन-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दौलत का भी वैसा मान नहीं होता। पूरे चाँद की वह प्रतिष्ठा नहीं होती, जो कलङ्कहीन प्रथमा के दुबले चाँद की होती है।

Merits are honoured, not the large wealth. A full moon is not given so much importance as the new lean but blotless moon.

(574)

गुणवत्तरपात्रेणच्छाद्यन्ते गुणिनां गुणाः।
रात्रौ दीपशिखाकान्तिर्न भानावुदिते सति॥

श्रेष्ठ गुणों का प्रभाव — पञ्च. / मित्रभेद / 33

Guṇavattarapātreṇacchādyante guṇināṁ guṇāh |
Rātrau dīpaśikhā-kāntirna bhānāvudite sati ||

Pañca. / Mitrabhe. / 33

Effect of superiority

अधिक गुणी व्यक्ति के गुणों से कम गुण वालों के गुण ढक जाते हैं। जैसे रात के समय तो दीपक की लौ की शोभा होती है, परन्तु सूर्य के निकलने पर वह फीकी पड़ जाती है।

The qualities of low things are covered by the qualities of big one; as the light of a lamp shines in the night but when the sun rises, it fades.

(575)

गुणवान् वा परजनः, स्वजनो निर्गुणोऽपि वा।
निर्गुणः स्वजनः श्रेयान्, यः परः पर एव सः॥

प्रियजन वा. रा. / युद्धकाण्ड /88 / 15

Guṇavān vā parajanaḥ, svajano nirguṇo'pi vā |
Nirguṇaḥ svajanaḥ śreyān, yaḥ paraḥ para eva saḥ ||

Vā. Rā. / Yuddha. / 88 / 15

Affectionate persons

यदि पराया व्यक्ति या वस्तु गुणवान् भी हो और अपना व्यक्ति या वस्तु गुणहीन भी हो, तो भी अपना गुणहीन व्यक्ति या वस्तु ही अच्छी है, क्योंकि जो पराया है, वह तो पराया ही है, वह अपना नहीं बन सकता।

If an alien person or a thing is full of merits, and own person or thing is meritless, even in that case one's own person or thing is better, because an alien thing is alien; it cannot be one's own.

(576)

गुणवान् सुचिरस्थायी, दैवेनापि न सह्यते।
तिष्ठत्येकां निशां चन्द्रः, श्रीमान् सम्पूर्णमण्डलः॥

गुणियों की आयु सुभाषितावलि / 301

Guṇavān sucirasthāyī, daivenāpi na sahyate |
Tiṣṭhatyekāṁ niśāṁ candraḥ, śrīmān sampūrṇamaṇḍalaḥ ||

Life of the virtuous Subhāṣitāvali / 301

विधाता भी गुणवान् वस्तु को देर तक नहीं रहने देता। जैसे पूर्णिमा का सुन्दर और पूरा चाँद केवल एक रात तक ही रह पाता है।

Even Creator does not allow a meritorious thing to remain for a long time; as the glorious full moon remains for one night only.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(577)

गुणाः गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति,
ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।
आस्वाद्यतोयाः प्रभवन्ति नद्यः,
समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः॥

गुणों के मानकर्ता हितोपदेश / पु. / 2

Guṇāḥ guṇajñeṣu guṇā bhavanti,
Te nirguṇaṁ prāpya bhavanti doṣāḥ।
Āsvādyatoyāḥ prabhavanti nadyaḥ,
Samudramāsādya bhavantyapeyāḥ॥

Hitopadeśa / Pra. / 2

Respectful for merits

गुणों की पहचान करने वालों के पास ही गुणों का मान होता है। जो निर्गुण होते हैं या गुणों की पहचान नहीं कर सकते, उनकी दृष्टि में गुण भी दोष बन जाया करते हैं। जैसे नदियों के चलते समय उनका पानी पीने योग्य होता है, परन्तु समुद्र में पहुँचकर वह पानी पीने योग्य नहीं रहता; खारा हो जाता है।

Those, who recognize the qualities, give due respect to the persons possessing them. But, those who do not recognize them, the qualities become defects in their opinion. For example, rivers flow from their sources with sweet water, but when they join into the sea they also become saltish and their water also becomes useless for drinking.

(578)

गुणानामन्तरं प्रायः, तज्ज्ञो जानाति नेतरः।
मालिकामल्लिकामोदं, घ्राणं वेत्ति न लोचनम्॥

गुणों का विवेक सुभाषितावलि / 293

Guṇānāmantaraṁ prāyaḥ, tajjño jānāti netaraḥ।
Mālikāmallikāmodaṁ, ghrāṇaṁ vetti na locanam॥

Discrimination of merits Subhaṣitāvali / 293

गुणों में भेद वही बता सकता है, जो गुणों को पहचानता है। मालिका और मोतिया के फूलों के गन्ध का विवेक नाक ही कर सकती है, आँख नहीं।

Only that person can discriminate the qualities, who has knowledge about them. It is only the nose, which can discriminate the smell of different flowers, but not the eyes.

(579)

गुणा यत्र न पूज्यन्ते, गुणिनां तत्र का कथा।
नग्नक्षपणके देशे, रजकः किं करिष्यति॥

गुणियों का स्थान — चाणक्यराजनीति-शास्त्र

Guṇā yatra na pūjyante, guṇināṁ tatra kā kathā।
Nagnakṣapaṇake deśe, rajakaḥ kiṁ kariṣyati॥

Place of meritorious Cāṇkyanitiśāstra

जहाँ गुणों का मान नहीं है, वहाँ गुणवानों के रहने का कोई लाभ ही नहीं। जहाँ दिगम्बर भिक्षुक रहते हों, वहाँ धोबी का क्या महत्त्व होगा? अर्थात् कुछ भी नहीं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

The presence of meritorious persons don't matter, where their merits are not recognized. There is no importance of a washerman, where fully-naked medicants live.

(580)

गुणिगणगणनारम्भे न पतति कठिनी ससम्भ्रमाद्यस्य।
तेनाम्बा यदि सुतिनी, वद वन्ध्या कीदृशी भवति॥

निन्दनीय पुत्र पञ्चतन्त्र / कथामुख / 6

Guṇigaṇa-gananārambhe na patati kaṭhinī sasambhramādyasya |
Tenāmbā yadi sutinī, vada vandhyā kidṛśī bhavati ||

Pañca. / Kathāmukha / 6

Condemnable son

गुणियों की गिनती आरम्भ करते ही, जिसके नाम पर सहसा उँगली या कलम नहीं उठती, यदि ऐसे पुत्र से माता पुत्रवती कहला सकती है, तो बताओ बाँझ किसे कहेंगे ? तात्पर्य यह है कि गुणहीन पुत्र से तो स्त्री का बाँझपन ही अच्छा है।

As the counting of meritorious people begins, then due to son, whose name is not indicated at once, if a mother is called the mother of a son, please tell, whom should we call a barren lady? It means that for a lady it is imperative to give birth to such a child who grows up as meritorious.

(581)

गुणेषु क्रियतां यत्नः, किमाटोपैः प्रयोजनम्।
विक्रीयन्ते न घण्टाभिर्गावः क्षीरविवर्जिताः॥

गुणों का ही मूल्य है अज्ञात

Guṇeṣu kriyatāṁ yatnaḥ, kimāṭopaiḥ prayojanam |
Vikrīyante na ghaṇṭābhirgāvaḥ kṣīravivarjitāḥ ||

Only merits are valued Unknown

गुणों के संग्रह में प्रयत्नशील रहना चाहिए, व्यर्थ के दिखावे से कोई लाभ नहीं होता। जैसे दूध न देने वाली गौएँ गले में घंटियाँ बाँधकर सजा देने से ही बिकने योग्य नहीं हो जातीं।

One should try to acquire good qualities. Vanities never pay. The cows which do not yield milk, cannot be sold only by decorating them with bells.

(582)

गुणैरुत्तमतां यान्ति, नोच्चैरासनसंस्थिताः।
प्रासादशिखरस्थोऽपि, किं काको गरुडायते॥

गुण ही महत्ता के साधन हैं — चाणक्यनीति / 16 / 6

Guṇairuttamatāṁ yānti, noccairāsanasaṁsthitāḥ |
Prāsādaśikharastho'pi, kiṁ kāko garuḍāyate ||

Merits make man great Cānkyanīti / 16 / 6

मनुष्य गुणों द्वारा ही उन्नति कर सकता है; किसी ऊँचे स्थान पर बैठने से नहीं। क्या महल की चोटी पर बैठा हुआ कौआ गरुड़ की तुलना कर सकता है ? अर्थात् नहीं।

A man can make good progress by his qualities; only sitting on a high seat cannot make him great. Can a crow sitting on the top of a palace become an eagle? No, not at all.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(583)

गुरुपत्नी राजपत्नी, ज्येष्ठपत्नी तथैव च।
पत्नी-माता स्वमाता च, पञ्चैता मातरः स्मृताः॥

पाँच माताएं — नराभरण / 2 / 8

Gurupatnī rajapatnī, jyeṣṭhapatnī tathaiva ca |
Patnī-mātā svamātā ca, pañcaitā mātaraḥ smṛtāḥ ||

Five mothers Narābharan / 2 / 8

गुरु की पत्नी, राजा की पत्नी, बड़े भाई की पत्नी, पत्नी की माता और अपनी माता – ये पाँचों माताएँ कहलाती हैं।

The following five ladies are called mothers :- (1) Wife of a teacher, (2) wife of a king, (3) wife of an elder brother, (4) wife's mother and, (5) own mother.

(584)

गुरुरग्निर्द्विजातीनां, वर्णानां ब्राह्मणो गुरुः।
पतिरेव गुरुः स्त्रीणां, सर्वस्याभ्यागतो गुरुः॥

कौन गुरु है? — चाणक्यनीति / 5 / 1 /

Gururagnirdvijātīnāṁ, varṇānāṁ brāhmaṇo guruḥ |
Patireva guruḥ strīṇāṁ, sarvasyābhyāgato guruḥ ||

Who is guru? Cāṇakyaniti / 5 / 1

ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य का गुरु अग्नि है, चारों वर्णों का गुरु ब्राह्मण है, स्त्री का गुरु उसका पति है और अतिथि सभी का गुरु माना जाता है।

Fire is the guru of the three dvijas, a Brāhamaṇa is the guru of all four castes, the husband is the guru of his wife and a guest is the guru of all.

(585)

गुरोरप्यवलिप्तस्य, कार्याकार्यमजानतः।
उत्पथप्रतिपन्नस्य, परित्यागो विधीयते॥

निन्दनीय गुरु — पञ्च./मित्रभेद/25

Gurorapyavaliptasya, kāryākāryamajānataḥ |
Utpathapratipannasya, parityágo vidhèyate||

Condemnable guide Pañca. / Mitrabhe. / 25

जो आध्यात्मिक गुरु अभिमानी हो, करने योग्य और न करने योग्य बातों को न जानता हो तथा उल्टे मार्ग पर चल रहा हो, उसे छोड़ देना चाहिए।

A spiritual guide, who is proud, can not discriminate good and bad and deviates from the good path, should be abandoned.

(586)

गुह्यं मन्त्रं श्रुतवतः, सुसहायस्य चानघ।
परीक्ष्यकारिणो ह्यर्थास्तिष्ठन्तीह युधिष्ठिर॥

सम्पत्तियों का आश्रय महाभा. / शान्ति. / 112 / 20

Guhyaṁ mantraṁ śrutavataḥ, susahāyasya cānagha |
Parikṣyakāriṇo hyarthāṣtiṣṭhantīha Yudhiṣṭhira ||

Mahābhā. / Śānti. /112 / 20

Place of riches

हे निष्पाप युधिष्ठिर, जो व्यक्ति गोपनीय सलाह को ध्यान से सुनता है, जिसके सहायक अच्छे हैं, और जो सोच-समझकर कर कार्य करता है, उसी के पास धन-सम्पत्तियाँ स्थायी रूप से रहती हैं।

O sinless Yudhiṣṭhira, the person who listens to the secret plans

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

attentively, has good helpers and one who acts wisely after understanding the matter, possesses wealth permanently.

(587)

गूढमैथुनकारित्वं काले काले च संग्रहम्।
अप्रमत्तनमविश्वासमिति शिक्षेच्च वायसात्॥

कौए से शिक्षाएँ चाणक्यनीति / 6 / 19

Gūḍhamaithunakāritvaṁ kāle kāle ca saṁgraham |
Apramattanamaviśvāsamiti śikṣecca vāyasāt ||

Lesson from a crow Cānkyaniti / 6 / 19

एकान्त में मैथुन करना, समय-समय पर जमा करना, चौकन्ना रहना और किसी पर विश्वास न करना – ये बातें कौए से सीखनी चाहिएँ।

The following things should be learnt from a crow :- (1) Sexual intercourse at a lonely place, (2) collecting now and then, (3) alertness and (4) distrust on others.

(588)

गृहानुत्सृज्य यो राजन्, मोक्षमेवाभिपद्यते।
लोकास्तेजोमयास्तस्य, कल्पन्ते शाश्वती समाः॥

मोक्ष का मार्ग — महाभा. / शान्ति. / 160 / 29

Gṛhānutsṛjya yo rājan, mokṣamevābhipadyate |
Lokāstejomayāstasya, kalpante śāśvatī samāḥ ||

Path of salvation Mahābhā. / Śānti / 160 / 29

जो व्यक्ति अपने सभी सम्बन्धियों का परित्याग कर मोक्ष के मार्ग पर चल पड़ता है, उसे अनन्तकाल तक तेज से भरपूर स्थान प्राप्त हो जाते हैं।

A man who leaves all his relatives and begins to start on the route of salvation, obtains brilliant places forever.

(589)

गृहासक्तस्य नो विद्या, न दया मांसभोजिनः।
द्रव्यलुब्धस्य नो सत्यम्, न स्त्रैणस्य पवित्रता॥

विद्यादि से वञ्चित चाणक्यनीति / 11 / 5

Gṛhāsaktasya no vidyā, na dayā māṁsabhojinaḥ |
Dravyalubdhasya no satyam, na straiṇasya pavitratā ||

Deprived of education etc. Cāṇkyaniti / 11 / 5

घर के मोह में फँसे रहने वाला विद्या प्राप्त नहीं कर सकता, मांस खाने वाले में दया नहीं होती, धन का लोभी सच नहीं बोलता और कामी व्यक्ति पवित्र नहीं हो सकता।

He, who has attachment with the home, can not get education, a meat-eater is merciless, a greedy person never speaks truth and a lustful man cannot be pious.

(590)

गृहीत्वा दक्षिणां विप्रास्त्यजन्ति यजमानकम्।
प्राप्तविद्या गुरुं शिष्याः, दग्धारण्यं मृगास्तथा॥

स्वार्थ-साधना — चाणक्यनीति / 2 / 18

Gṛhītvā dakṣiṇāṁ viprāstyajanti yajamānakam |
Prāptavidyā guruṁ śiṣyāḥ, dagdhāraṇyaṁ mṛgāstathā ||

Selfishness Cāṇkyaniti / 2 / 18

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब्राह्मण दक्षिणा लेकर यजमान को छोड़ देते हैं, शिष्य विद्या समाप्त करके गुरु को त्याग देते हैं और हरिण आदि प्राणी जले हुए जंगल को छोड़ देते हैं।

After accepting remuneration, the Brāhmaṇas leave their **yajamānas**, the pupils who complete their education leave their teacher and animals like deer leave the burnt forest.

(591)

गोघ्ने च सुरापे च, चौरे भग्नव्रते तथा।
निष्कृतिर्विहिता सद्भिः, कृतघ्ने नास्ति निष्कृतिः॥

कृतघ्नता — वा. रामायण / किष्किन्धा / 34 / 12

घोर अपराध

Goghne ca surāpe ca, caure bhagnavrate tathā।
Niṣkṛtirvihitā sadbhiḥ, kṛtaghne nāsti niṣkṛtiḥ॥

Vā. Rā. / Kiṣkindhā / 34 / 12

Ungratefulness worst sin

गाय की हत्या करने वाले, शराब पीने वाले, चोर और अपना व्रत भङ्ग करने वाले के लिए श्रेष्ठ लोगों ने पश्चात्ताप का विधान किया है, परन्तु कृतघ्न के लिए कोई पश्चात्ताप नहीं बताया गया है। (वह तो नरक में ही जायेगा।)

Penance is said by the noble people for a cow-killer, for a drunkard, for a thief and for a man who breaks his austerity, but there is no penance for an ungrateful person.

(592)

ग्रहाणां चरितं स्वप्नो निमित्तान्युपवाचिकम्।
फलन्ति काकतालीयं, तेभ्यः प्राज्ञा न बिभ्यति॥

ग्रहों का भय — वेणीसंहार / 2 / 15

Grahāṇāṁ caritaṁ svapno, nimittānyupavācikam।
Phalanti kākatālīyaṁ, tebhyaḥ prājñā na bibhyati॥

Fear of planets — Veṇīsaṁ / 2 / 15

ग्रहों की चाल, स्वप्न, शकुन, भविष्य-कथन— ये सभी काकतालीय न्याय से (अचानक) सफल होते हैं। इसलिए बुद्धिमान् इनसे नहीं डरते।

Movements of the planets, dreams, omens and prophecy become successful by chance. So the wisemen never feel fear from them.

(593)

ग्रासादपि तदर्धं च, कस्मान्न दीयतेऽर्थिषु।
इच्छानुरूपो विभवः, कदा कस्य भविष्यति॥

दान अवश्य दीजिए — पञ्च. / मित्रसम्प्राप्ति / 72

Grāsādapi tadardhaṁ ca, kasmānna dīyate'rthiṣu।
Icchānurūpo vibhavaḥ, kadā kasya bhaviṣyati॥

Donate must — Pañca. / Mitrasam. / 72

हे मानव! माँगने वाले दीन-हीन व्यक्तियों को ग्रास-भर या उससे भी आधा पदार्थ क्यों नहीं देते हो? बताओ तो सही कि इच्छानुसार धन कब किस का होगा? अर्थात् मन की इच्छा पूरी नहीं हो सकती; इसलिए असमर्थ लोगों को यथाशक्ति कुछ-न-कुछ देते रहना चाहिए।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

O man, why don't you give a mouthful or half of it to the poor persons? No-body can get as much money as his desires. So, help poor by giving as much as easily you can.

(594)

ग्रीष्मवर्ज्येषु कालेषु दिवास्वप्नात् प्रकुप्यतः,।
श्लेष्मपित्ते दिवास्वप्नस्तस्मात्तेषु न शस्यते॥

दिन में शयन चरक / सूत्रस्थान / 21 / 44

Grīṣmavarjyeṣu kāleṣu divāsvapnāt prakupyataḥ |
Śleṣmapitte divāsvapnastasmātteṣu na śasyate ||

Day sleep Caraka / Sūtra. / 21 / 44

ग्रीष्म-काल को छोड़ कर अन्य ऋतुओं में दिन के समय सोने से कफ और पित्त कुपित हो जाते हैं। इसलिए इन ऋतुओं में दिन में शयन उचित नहीं है।

Except in summer season, if one sleeps in the day time, then phlegm and gall are effected badly. So, one should not sleep during the day in these seasons.

(595)

ग्रीष्मे चादानरूक्षाणां, वर्धमाने च मारुते।
रात्रीणां चातिसंक्षेपाद्, दिवास्वप्नः प्रशस्यते॥

दिन में शयन चरक / सूत्रस्थान / 21 / 43

Grīṣme cādānarūkṣāṇāṁ, vardhamāne ca mārute |
Rātrīṇāṁ cātisaṁkṣepād, divāsvapnaḥ praśasyate ||

Day sleep Caraka / Śutra. / 21 / 43

ग्रीष्मकाल में सूर्य-किरणों द्वारा निरन्तर ग्रहण करने से शरीरों में रूखापन आने के कारण, वायु के बढ़ जाने से तथा रात्रियों के बहुत छोटा होने के कारण दिन में सोना स्वास्थ्य के लिए उचित माना जाता है।

In the summer season, the rays of the sun cause dryness in the body, air increases and nights are short, so it is good for health to sleep in day-time in this season.

घ = Gha

(596)

घातयितुमेव नीचः परकार्यं वेत्ति न प्रसाधयितुम्।
पातयितुमस्ति शक्तिर्वायोर्वृक्षं न चोन्नमितुम्॥

नीच की प्रवृत्ति — पञ्च. / मित्रभेद / 315

Ghātayitumeva nīcaḥ parakāryaṁ vetti na prasādhayitum |
Pātayitumasti śaktirvāyorvṛkṣaṁ na connamitum ||

Meanfellow's tendency Pañca. / Mirtrabhe. / 315

नीच व्यक्ति दूसरों का काम बिगाड़ना ही जानता है, सुधारना नहीं। वायु की शक्ति पेड़ को गिराने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के लिए ही होती है, परन्तु उसे उठाने के लिए नहीं।

A wicked person only knows how to spoil other's work but he does not know to mend it. The wind has the power to fell down a tree, but it cannot lift it up.

च = Ca

(597)

चक्रिणो दशमीस्थस्य रोगिणो भारिणः स्त्रियाः।
स्नातकस्य च राज्ञश्च पन्था देयो वरस्य च॥

मार्ग देने योग्य मनु. / 2 / 138

Cakriṇo daśamīsthasya rogiṇo bhāriṇaḥ striyāḥ।
Snātakasya ca rājñaśca panthā deyo varasya ca॥

Way to be left for Manu. / 2 / 138

निम्नलिखित के लिए मार्ग छोड़ देना चाहिए :- (1) वाहन, (2) वृद्ध पुरुष या स्त्री, (3) रोगी व्यक्ति, (4) भार उठाये हुए, (5) नारी, (6) स्नातक, (7) राजा और (8) दूल्हे के लिए।

One should leave the way for the following :- (1) A vehicle, (2) an old man or an old lady, (3) a diseased person, (4) a man carrying load, (5) a lady, (6) a graduate, (7) a king and (8) a bridegroom.

(598)

चक्षुःश्रोत्रे नासिका त्वक् च जिह्वा,
ज्ञानस्यैतान्यायतनानि जन्तोः।
तानि प्रीतान्येव तृष्णाक्षयान्ते,
तान्यव्यथो दुःखहीनः प्रणुद्यात्॥

इन्द्रिय-संयम महाभा. / उद्योग / 32 / 25

Cakṣuḥśrotre nāsikā tvak ca jihvā,
Jñānasyaitānyāyatanāni jantoḥ।
Tāni prītānyeva tṛṣṇākṣayānte,
Tānyavyatho duḥkhahīnaḥ praṇudyāt॥

Control on senses Mahābhā. / Udyoga / 32 / 25

आँख, कान, नाक, त्वचा, जिह्वा ये पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ प्राणिमात्र की होती हैं। तृष्णा के नष्ट होने पर ये प्रसन्न हो जाती हैं। अतः मनुष्य को चाहिए कि वह कष्ट उठाए बिना दुःख से हीन होकर उन्हें नियंत्रण में रखे।

Eyes, ears, nose, skin and tongue are the five sense organs of creatures. When greediness is removed, these senses become calm. So a man should have them under his control without much trouble and sorrow.

(599)

चतुर्थोपायसाध्ये तु रिपौ सान्त्वमपक्रिया।
स्वेद्यमामज्वरं प्राज्ञः कोऽम्भसा परिषिञ्चति॥

सामनीति अनुचित शिशुपालवध / 2 / 54

Caturthopāyasādhye tu ripau sāntvamapakriyā।
Svedyamāmajvaraṁ prājñaḥ ko'mbhasā pariṣiñcati॥

Conciliation policy—undesired Śiśupāla. / 2 / 54

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो शत्रु दण्डनीति से ही वश में आ सकता है, उसके साथ सामनीति बरतने से हानि होती है। जो ताजा बुखार पसीना देने के योग्य है, उसे कौन बुद्धिमान् पानी से सींचेगा? अर्थात् नहलाने से वह बुखार बिगड़ जाता है।

The enemy who deserves punishment, cannot be controlled by conciliation. No wiseman drenches the patient with water in the high fever which requires sweat.

(600)

चन्दनं शीतलं लोके चन्दनादपि चन्द्रमाः।
चन्द्रचन्दनयोर्मध्ये शीतला साधुसङ्गतिः॥

सत्सङ्गति अज्ञात

Candanaṁ śītalaṁ loke candanādapi candramāḥ |
Candra-candanayormadhye śītalā sādhusaṅgatiḥ ||

Good company Unknown

संसार में चन्दन को ठण्ढा माना जाता है और चाँद को चन्दन से भी शीतल कहते हैं। परन्तु श्रेष्ठ मनुष्यों की संगति इन दोनों से बढ़कर शीतल होती है, क्योंकि यह हृदय की अशान्ति मिटाकर मानव को शान्त कर देती है।

Sandal is considered cool in this world, and the moon is considered cooler than the sandal, but the company of good persons is the coolest of all as it appeases a disturbed mind and makes one calm.

(601)

चरन्वै मधु विन्दति, चरन् स्वादुमुदुम्बरम्।
सूर्यस्य पश्य श्रेमाणं, यो न तन्द्रयते चरन्॥

आलस्य और पुरुषार्थ — ऐतरेय ब्राह्मण

Caranvai madhu vindati, caran svādumudumbaram |
Sūryasya paśya śremāṇaṁ, yo na tandrayate caran ||

Idleness and action Aitareya Brāhman

गति करता हुआ ही शहद को पा लेता है, चलता हुआ ही स्वादु उदुम्बर का फल पा लेता है। सूर्य की शोभा को देखो, वह चलता ही रहता है और थकता नहीं।

One who goes in search, gets honey, and also gets the fruit of udumbara, a fig tree. See the beauty of the sun, which never sits idle and moves regularly.

(602)

चलचित्तस्य वै पुंसो, वृद्धाननुपसेवतः।
परिप्लवमतेर्नित्यमध्रुवो मित्रसङ्ग्रहः॥

मित्रों से वञ्चित — महाभा. / उद्योगपर्व / 36 / 39

Calacittasya vai puṁso, vṛddhānanupasevataḥ |
Pariplavamaternityamadhruvo mitrasaṅgrahaḥ ||

Mahābhā. / Udyogap. / 36 / 39

Deprived of friends

चञ्चलचित्त वाले, वृद्धों की सेवा तथा सत्सङ्ग न करने वाले तथा अस्थिर बुद्धि वाले मनुष्यों द्वारा किया गया मित्रों का संग्रह अस्थायी होता है।

The accumulation of friends by the persons who have fickle minds who do not serve old people who don't enjoy their good company and whose intellect cannot determine, is temporary.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(603)

चलानि हीमानि षडिन्द्रियाणि,
तेषां यद्यद् वर्धते यत्र यत्र।
ततस्ततः स्रवते बुद्धिरस्य,
छिद्रोदकुम्भादिव नित्यमम्भः॥

— महाभा. / उद्योगपर्व / 36 / 48

इन्द्रियों की चंचलता

Calāni hīmāni ṣaḍindriyāṇi,
Teṣāṁ yadyad vardhate yatra yatra।
Tatastataḥ sravate buddhirasya,
Chidrodakumbhādiva nityamambhaḥ॥

Mahābhā. / Udyoga / 36 / 48

Fickleness of senses

मन-सहित ये छहों ज्ञानेन्द्रियाँ बड़ी चञ्चल हैं। उनमें से जो भी इन्द्रिय जिस-जिस विषय में आगे बढ़कर भोग करती है, वहाँ-वहाँ से मनुष्य की बुद्धि ऐसे ही क्षीण होती चली जाती है, जैसे छेद वाले जल के घड़े में से लगातार जल बहता रहता है।

The six senses including the mind, are very inconstant. Anyone of the sense out of them when enjoys its subject attached with it, the man from that place loses his wit in the same way as water oozes from the pitcher having a hole.

(604)

चला लक्ष्मीश्चलाः प्राणाश्चले जीवनमन्दिरे।
चलाचले च संसारे धर्म एको हि निश्चलः॥

सच्चा साथी — चाणक्यनीति / 5 / 20

Calā lakṣmīścalāḥ prāṇāścale jīvanamandire।
Calācale ca saṁsāre dharma eko hi niścalaḥ॥

True companion Cāṇakyanīti / 5 / 20

धन-सम्पत्ति अस्थायी है, प्राण भी अस्थायी हैं, और जीवन तथा घर भी अस्थायी हैं। इस प्रकार यह सारा संसार ही अस्थायी है; केवलमात्र धर्म ही आत्मा के साथ रहने वाली स्थायी वस्तु है।

Wealth, 'prāṇa' (life), home and even the whole world is changeable and unsteady. It is only religion, which permanently remains with the soul.

(605)

चामीकरस्य सौरभ्यम्, अम्लानिर्मालतीस्रजाम्।
श्रोतुर्निर्मत्सरत्वं च निर्माणगोचरं विधेः॥

गुणों का विभाजन — श्री कण्ठचरित / 25 / 1

Cāmīkarasya saurabhyaṁ, amlānirmālatīsrajām।
Śroturnirmatsaratvaṁ ca nirmāṇagocaraṁ vidheḥ॥

Divided merits Śrī Kaṇṭhacarita / 25 / 1

अभी विधाता की रचनाओं में निम्नलिखित शेष बातें हैं, जो कि संसार में अब तक दिखाई नहीं दे रहीं :- (1) सोने में सुगन्ध, (2) मालती की माला का न मुरझाना और (3) सुनने वाले द्वारा वक्ता के कथन में त्रुटियाँ न ढूँढना।

The following things are existing still in the creation of Creator, as these are not seen in this world :- (1) smell in gold, (2) absence of withering in the garland of 'malati' flowers and (3) not finding the faults

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

by a hearer in the statement of a speaker.

(606)

चिता-चिन्ता द्वयोर्मध्ये, चिन्ता ह्येव गरीयसी।
चिता दहति निर्जीवं, चिन्ता चैव सजीवकम्॥

चिता और चिन्ता सुभाषितासंग्रह / 117

Citā-cintā dvayormadhye, cintā hyeva garīyasī।
Citā dahati nirjīvaṁ, cintā caiva sajīvakam॥

Pyre and auxiety Subhāsitasaṁgraha / 117

चिता और चिन्ता इन दोनों में से चिन्ता ही बड़ी है, क्योंकि चिता तो मुर्दे को जलाती है जबकि चिन्ता तो जीवित को ही जलाती रहती है।

Anxiety is more powerful than a pyre, as a pyre burns the dead body while anxiety keeps burning a living person.

(607)

चित्तं विशोधयेत् तस्मात् किमन्यैः बाह्यशोधनैः।
भावतः संविशुद्धात्मा स्वर्गं मोक्षं च विन्दति॥

स्वर्ग का साधन स्कन्दपुराण / म.कौ. / 42 / 63-64

Cittaṁ viśodhayet tasmāt kimanyaih bāhyaśodhanaiḥ।
Bhāvataḥ saṁviśuddhātmā svargaṁ mokṣaṁ ca vindati॥

Skandupu. / M. Kau. / 42 / 63-64

Means of heaven

मनुष्य को मन को पवित्र बनाना चाहिए। ऐसी दशा में बाहरी पवित्रता का कुछ भी महत्त्व नहीं रह जाता। जिसकी आत्मा पवित्र भावों से पूर्ण है, वही स्वर्ग और मुक्ति को प्राप्त करता है।

A man should purify his mind and therefore external cleanliness has no much importance. The soul which is full of pure ideas obtains the heaven and salvation also.

(608)

चिन्तनीया हि विपदामादावेव प्रतिक्रिया।
न कूपखननं युक्तं प्रदीप्ते वह्निना गृहे॥

संकट का उपाय — शार्ङ्गधर-पद्धति

Cintanīyā hi vipadāmādāveva pratikriyā।
Na kūpakhananaṁ yuktaṁ pradīpte vahninā gṛhe॥

Means for adversity Śārngadhar.

आने वाली मुसीबतों को दूर करने का उपाय पहले ही सोच लेना चाहिए। घर में आग लग जाने के बाद कुआँ खोदने का कोई भी लाभ नहीं होता।

One should think of avoiding the future problems earlier. It is useless to dig a well when the house catches fire.

(609)

चिन्ता-ज्वरो मनुष्याणां क्षुधां निद्रां बलं हरेत्।
रूपमुत्साहबुद्धी श्रीं जीवितं च न संशयः॥

चिन्ता के दुष्परिणाम — स्कन्दपुराण

Cintā-jvaro manuṣyāṇāṁ kṣudhāṁ nidrāṁ balaṁ haret।
Rūpamutsāhabuddhī śriṁ jīvitaṁ ca na saṁśayaḥ॥

Bad results of worry Skandapu.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चिन्ता रूपी बुखार मनुष्यों की भूख, नींद, शक्ति, सौन्दर्य, उत्साह, बुद्धि, लक्ष्मी और जीवन तक को नष्ट कर देता है, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है।

The fever of anxiety undoubtedly kills hunger, sleep, strength, beauty, courage, wisdom, wealth and even the life of the people.

(610)

चेतः-प्रसादजननं विबुधोत्तमानाम्,
आनन्दि सर्वरसयुक्तमतिप्रसन्नम्।
काव्यं खलस्य न करोति हृदि प्रतिष्ठाम्,
पीयूषपानमिव वक्त्रविवर्त्ति राहोः॥

सरसता की अनुभूति सुभाषितावलि / 161

Cetaḥ-prasādajananaṁ vibudhottamānām,
Ānandi sarvarasayuktamatiprasannam।
Kāvyaṁ khalasya na karoti hṛdi pratiṣṭhām,
Pīyūṣapānamiva vaktravivartti Rāhoḥ॥

Feeling of interest Subhāstāvali / 161

सभी प्रकार के रसों से सम्पन्न और प्रसाद गुण से भी पूर्णतः सम्पन्न काव्य श्रेष्ठ बुद्धिमान् पुरुषों के चित्त में प्रसन्नता उत्पन्न करके उन्हें आनन्दमग्न कर देता है, परन्तु वही काव्य दुष्ट लोगों के हृदय में ठहर नहीं पाता, जैसे राहु के मुख में गया हुआ अमृत भी बाहर ही निकल गया।

The poetry which is full of all tastes and has clear ideas gives happiness to the minds of the best wisemen and they feel bliss in it, while this poetry has no influence on the mind of wicked persons, as the drinking of nectar with mouth by Rāhu, fell out from his body.

(611)

चौराः प्रमत्ते जीवन्ति, व्याधितेषु चिकित्सकाः।
राजा विवदमानेषु, नित्यं मूर्खेषु पण्डिताः॥

जीविका के साधन अज्ञात

Caurāḥ pramatte jīvanti, vyādhiteṣu cikitsakāḥ।
Rājā vivadamāneṣu, nityaṁ mūrkheṣu paṇḍitāḥ॥

Sources of livelihood Unknown

चोर असावधान लोगों से, डाक्टर रोगियों से, राजा झगड़ने वालों से और विद्वान् प्रतिदिन मूर्खों से ही जीविका प्राप्त करते हैं अर्थात् इन्हीं द्वारा उक्त लोगों को धन प्राप्त होता है।

Thieves get livelihood from the careless persons, doctors from the patients, a king from the disputing persons and wisemen from the fools.

छ = Cha

(612)

छाया-सुप्तमृगः शकुन्तनिवहैर्विष्वग्विलुप्तच्छदः,
कीटैरावृतकोटरः कपिकुलैः स्कन्धे कृतप्रश्रयः।
विश्रब्धं मधुपैर्निपीतकुसुमः श्लाघ्यः स एव द्रुमः,
सर्वाङ्गैर्बहुसत्त्वसङ्गसुखदो भूभारभूतोऽपरः॥

परोपकारी जीवन — पञ्च. / मित्रसम्प्राप्ति / 79

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Chāyāsuptamṛgaḥ śakuntanivahairviṣvagviluptacchadaḥ,
Kīṭairāvṛtakoṭaraḥ kapikulaiḥ skandhe kṛtapraśrayaḥ।
Viśrabdhaṁ madhupairnipītakusumaḥ ślāghyaḥ sa eva drumaḥ,
Sarvāṅgairbahusattvasaṅgasukhado bhūbhārabhūto'paraḥ॥

The helpful life Pañca. / Mitrabhe. / 79

वही वृक्ष प्रशंसनीय है, जिसकी छाया में मृग सोते हैं, पक्षियों ने जिस पर आश्रय ले कर सभी पत्ते छिन्न-भिन्न कर दिये हैं, जिसके कोटरों में कीड़े रह रहे हैं, जिसकी शाखाओं पर बन्दरों के समूह निवास कर रहे हैं, जिसके फूलों से भौंरे निडर होकर रस पीते हैं और जो अपने सम्पूर्ण अंगों से सभी प्राणियों को सुख दे रहा है। उपकार न करने वाले शेष वृक्ष या प्राणी केवल भूमि पर भार बने हुए हैं।

Only such a tree is admirable, under whose shadow deers sleep, on which birds take shelter after removing its leaves, in whose hollows, worms are residing, on whose branches monkeys get refuge, whose nectar of flowers is sucked by the black bees and so which is giving happiness to all creatures with its all parts. The rest of the trees or animals who do not help others, are only a burden on this earth.

(613)

छित्त्वाऽधर्ममयं पाशं यदा धर्मेऽभिरज्यते।
दत्त्वाभयकृतं दानं तदा सिद्धिमवाप्नुते॥

सिद्धि का साधन महाभारत / शान्तिपर्व / 298 / 4

Chittvā'dharmamayaṁ pāśaṁ yadā dharme'bhirajyate।
Dattvābhayakṛtaṁ dānaṁ tadā siddhimavāpnute॥

Mahābhā. / Śānti / 298 / 4

Means to success

जब मानव अधर्म के जाल को तोड़-फोड़ कर धर्म में प्रवृत्त हो जाता है, तब सभी प्राणियों को अभयदान देकर सिद्धि को प्राप्त कर लेता है।

When a man cuts the net of immorality and adopts morality, then gets success by giving amnesty to all creatures.

(614)

छित्त्वा पाशमपास्य कूटरचनां भङ्क्त्वा बलाद्वागुराम्,
पर्यन्ताग्निशिखाकलापजटिलान्निर्गत्य दूरं वनात्।
व्याधानां शरगोचरादपि जवेनोत्पत्य धावन्मृगः,
कूपान्तः पतितः करोतु विधुरे किं वा विधौ पौरुषम्॥

विधाता की प्रबलता — पञ्च. / मित्रसम्प्राप्ति / 87

Chittvā pāśamapāsya kūṭaracanāṁ bhaṅktvā balādvāgurām,
Paryantāgniśikhākalāpajaṭilānnirgatya dūraṁ vanāt।
Vyādhānāṁ śaragocarādapi javenotpatya dhāvanmṛgaḥ,
Kūpāntaḥ patitaḥ karotu vidhure kiṁ va vidhau pauruṣam॥

Power of fate Pañca. / Mitrasam. / 87

जाल को तोड़कर, शिकारियों की पकड़ने की योजना से बचकर, शक्ति से रस्सियों को तोड़कर, जंगल में लगी आग की लपटों से बचकर, जंगल से दूर जाकर और शिकारियों के बाणों की पहुँच से उछल कर अदृश्य होकर भी दौड़ता हुआ मृग कुँए में जा गिरा। अफसोस! जब विधाता ही विपरीत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो जाता है तो मानव का पुरुषार्थ मिट्टी में मिल जाता है।

Breaking the net, escaping the trapping plan, breaking the rope with its strength, keeping off the forest-fire and going out of that forest, and disappearing from the sight of the hunters by jumping continuously, the running deer fell into a well. It is sad to say that if the luck is adverse, one's labour goes in vain.

(615)

छिन्दन्ति क्षमया क्रोधं, कामं संकल्पवर्जनात्।
सत्त्वसंसेवनान्निद्रामप्रमादाद् भयं तथा॥
छिन्दन्ति पञ्चमं श्वासमल्पाहारतया नृप॥

दोषनाशक उपाय महाभारत / शान्तिपर्व / 301 / 56-57

Chindanti kṣamayā krodhaṁ, kāmaṁ saṅkalpavarjanāt |
Sattvasaṁsevanānnidrāmapramādād bhayaṁ tathā ||
Chindanti pañcamaṁ śvāsamalpāhāratayā nṛpa ||

Mahābhā. / Śānti. / 301 / 56-57

Removals of defects

हे राजन्! श्रेष्ठ लोग क्षमा द्वारा क्रोध को नष्ट कर देते हैं तथा विषयों के संकल्प त्याग से काम को, सात्त्विक पदार्थों के सेवन से निद्रा को, सावधानी से भय को और थोड़ा भोजन करने से पाँचवें श्वास पर भी विजय प्राप्त कर लेते हैं।

O king! Good persons win anger by toleration, passions by keeping off their thinking, sleep by eating simple things, fear by alertness and the fifth breathing by eating less.

(616)

छिन्नोऽपि चन्दनतरुर्न जहाति गन्धम्,
वृद्धोऽपि वारणपतिर्न जहाति लीलाम्।
यन्त्रार्पितो मधुरतां न जहाति चेक्षुः,
क्षीणोऽपि न त्यजति शीलगुणान् कुलीनः॥

श्रेष्ठ गुण चाणक्यनीति / 15 / 18

Chinno'pi candanatarurna jahāti gandhaṁ,
Vṛddho'pi vāraṇapatirna jahāti līlām |
Yantrārpito madhuratāṁ na jahāti cekṣuḥ,
Kṣīṇo'pi na tyajati śīlaguṇāṇ kulīnaḥ ||

Admirable qualities Cāṇkyanīti / 15 / 18

चन्दन का वृक्ष कटने पर भी सुगन्ध का त्याग नहीं करता, बूढ़ा हाथी भी विनोद करना नहीं छोड़ता, कोल्हू में डाला हुआ भी ईख मिठास का त्याग नहीं करता, ऐसे ही ऊँचे कुल का व्यक्ति क्षीण होने पर अथवा बुरी परिस्थितियों में भी उत्तम स्वभाव को नहीं छोड़ता।

A sandal tree never quits its smell, even when it is cut into pieces. An elephant doesn't leave its amusements even in old age. Sugarcane doesn't relinquish its sweetness, even when it is put into a crushing machine. In the same way, a gentleman never neglects good habits of morality, even being in bad circumstances.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Chāyāsuptamṛgaḥ śakuntanivahairviṣvagviluptacchadaḥ,
Kīṭairāvṛtakoṭaraḥ kapikulaiḥ skandhe kṛtapraśrayaḥ।
Viśrabdhaṁ madhupairnipītakusumaḥ ślāghyaḥ sa eva drumaḥ,
Sarvāṅgairbahusattvasaṅgasukhado bhūbhārabhūto'paraḥ ॥

The helpful life Pañca. / Mitrabhe. / 79

वही वृक्ष प्रशंसनीय है, जिसकी छाया में मृग सोते हैं, पक्षियों ने जिस पर आश्रय ले कर सभी पत्ते छिन्न-भिन्न कर दिये हैं, जिसके कोटरों में कीड़े रह रहे हैं, जिसकी शाखाओं पर बन्दरों के समूह निवास कर रहे हैं, जिसके फूलों से भौंरे निडर होकर रस पीते हैं और जो अपने सम्पूर्ण अंगों से सभी प्राणियों को सुख दे रहा है। उपकार न करने वाले शेष वृक्ष या प्राणी केवल भूमि पर भार बने हुए हैं।

Only such a tree is admirable, under whose shadow deers sleep, on which birds take shelter after removing its leaves, in whose hollows, worms are residing, on whose branches monkeys get refuge, whose nectar of flowers is sucked by the black bees and so which is giving happiness to all creatures with its all parts. The rest of the trees or animals who do not help others, are only a burden on this earth.

(613)

छित्त्वाऽधर्ममयं पाशं यदा धर्मेऽभिरज्यते।
दत्त्वाभयकृतं दानं तदा सिद्धिमवाप्नुते॥

सिद्धि का साधन महाभारत / शान्तिपर्व / 298 / 4

Chittvā'dharmamayaṁ pāśaṁ yadā dharme'bhirajyate।
Dattvābhayakṛtaṁ dānaṁ tadā siddhimavāpnute॥

Mahābhā. / Śānti / 298 / 4

Means to success

जब मानव अधर्म के जाल को तोड़-फोड़ कर धर्म में प्रवृत्त हो जाता है, तब सभी प्राणियों को अभयदान देकर सिद्धि को प्राप्त कर लेता है।

When a man cuts the net of immorality and adopts morality, then gets success by giving amnesty to all creatures.

(614)

छित्त्वा पाशमपास्य कूटरचनां भङ्क्त्वा बलाद्वागुराम्,
पर्यन्ताग्निशिखाकलापजटिलान्निर्गत्य दूरं वनात्।
व्याधानां शरगोचरादपि जवेनोत्पत्य धावन्मृगः,
कूपान्तः पतितः करोतु विधुरे किं वा विधौ पौरुषम्॥

विधाता की प्रबलता — पञ्च. / मित्रसम्प्राप्ति / 87

Chittvā pāśamapāsya kūṭaracanāṁ bhaṅktvā balādvāgurām,
Paryantāgniśikhākalāpajaṭilānnirgatya dūraṁ vanāt।
Vyādhānāṁ śaragocarādapi javenotpatya dhāvanmṛgaḥ,
Kūpāntaḥ patitaḥ karotu vidhure kiṁ va vidhau pauruṣam॥

Power of fate Pañca. / Mitrasam. / 87

जाल को तोड़कर, शिकारियों की पकड़ने की योजना से बचकर, शक्ति से रस्सियों को तोड़कर, जंगल में लगी आग की लपटों से बचकर, जंगल से दूर जाकर और शिकारियों के बाणों की पहुँच से उछल कर अदृश्य होकर भी दौड़ता हुआ मृग कुँए में जा गिरा। अफसोस! जब विधाता ही विपरीत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो जाता है तो मानव का पुरुषार्थ मिट्टी में मिल जाता है।

Breaking the net, escaping the trapping plan, breaking the rope with its strength, keeping off the forest-fire and going out of that forest, and disappearing from the sight of the hunters by jumping continuously, the running deer fell into a well. It is sad to say that if the luck is adverse, one's labour goes in vain.

(615)

छिन्दन्ति क्षमया क्रोधं, कामं संकल्पवर्जनात्।
सत्त्वसंसेवनान्निद्रामप्रमादाद् भयं तथा॥
छिन्दन्ति पञ्चमं श्वासमल्पाहारतया नृप॥

दोषनाशक उपाय महाभारत / शान्तिपर्व / 301 / 56-57

Chindanti kṣamayā krodhaṁ, kāmaṁ saṅkalpavarjanāt |
Sattvasaṁsevanānnidrāmapramādād bhayaṁ tathā ||
Chindanti pañcamaṁ śvāsamalpāhāratayā nṛpa ||

Mahābhā. / Śānti. / 301 / 56-57

Removals of defects

हे राजन्! श्रेष्ठ लोग क्षमा द्वारा क्रोध को नष्ट कर देते हैं तथा विषयों के संकल्प त्याग से काम को, सात्त्विक पदार्थों के सेवन से निद्रा को, सावधानी से भय को और थोड़ा भोजन करने से पाँचवें श्वास पर भी विजय प्राप्त कर लेते हैं।

O king! Good persons win anger by toleration, passions by keeping off their thinking, sleep by eating simple things, fear by alertness and the fifth breathing by eating less.

(616)

छिन्नोऽपि चन्दनतरुर्न जहाति गन्धम्,
वृद्धोऽपि वारणपतिर्न जहाति लीलाम्।
यन्त्रार्पितो मधुरतां न जहाति चेक्षुः,
क्षीणोऽपि न त्यजति शीलगुणान् कुलीनः॥

श्रेष्ठ गुण चाणक्यनीति / 15 / 18

Chinno'pi candanatarurna jahāti gandhaṁ,
Vṛddho'pi vāraṇapatirna jahāti līlām |
Yantrārpito madhuratāṁ na jahāti cekṣuḥ,
Kṣīṇo'pi na tyajati śīlaguṇāṇ kulīnaḥ ||

Admirable qualities Cāṇkyanīti / 15 / 18

चन्दन का वृक्ष कटने पर भी सुगन्ध का त्याग नहीं करता, बूढ़ा हाथी भी विनोद करना नहीं छोड़ता, कोल्हू में डाला हुआ भी ईख मिठास का त्याग नहीं करता, ऐसे ही ऊँचे कुल का व्यक्ति क्षीण होने पर अथवा बुरी परिस्थितियों में भी उत्तम स्वभाव को नहीं छोड़ता।

A sandal tree never quits its smell, even when it is cut into pieces. An elephant doesn't leave its amusements even in old age. Sugarcane doesn't relinquish its sweetness, even when it is put into a crushing machine. In the same way, a gentleman never neglects good habits of morality, even being in bad circumstances.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(617)

छिन्नोऽपि रोहति तरुः क्षीणोऽप्युपचीयते पुनश्चन्द्रः।
इति विमृशन्तः सन्तः सन्तप्यन्ते न दुःखेषु॥

शान्ति का साधन नीतिशतक / 79

Chinno'pi rohati taruḥ, kṣīṇo'pyupacīyate punaścandraḥ।
Iti vimṛśantaḥ santaḥ santapyante na duḥkheṣu॥

Means of peace Nitiśataka / 79

भले लोग यह सोचकर कि कटा हुआ पेड़ फिर भी उग आता है और क्षीण चन्द्रमा भी फिर पूरा हो जाता है, विपत्तियों में अधिक दुखी नहीं होते।

"A tree which is cut, grows again. The decreased moon also increases again. Knowing this fact, the great-men are not distressed too much in troubles.

(618)

छेदो दंशस्य दाहो वा क्षतेर्वा रक्तमोक्षणम्।
एतानि दष्टमात्राणाम्, आयुषः प्रतिपत्तयः॥

दंश का उपचार मालविकाग्निमित्र / 4 / 4

Chedo daṁśasya dāho vā, kṣatervā raktamokṣaṇam।
Etāni daṣṭamātrāṇām, āyuṣaḥ pratipattayaḥ॥

Treatment of stung Malavikā 4 / 4

जिन्हें कोई प्राणी काट गया हो, उनका जीवन बचाने के लिए या तो डंक वाले स्थान को काटा जाए या उसे जलाया जाए अथवा वहाँ से रक्त बहाया जाए।

If one is stung by any creature, the place of sting is cut or burnt or blood is brought out to save his life. These are the main means to save a stung person.

ज = Ja

(619)

जनिता चोपनेता च, यस्तु विद्यां प्रयच्छति।
अन्नदाता भयत्राता, पञ्चैते पितरः स्मृताः॥

पाँच पिता चाणक्यनीति / 5 / 22

Janitā copanetā ca, yastu vidyāṁ prayacchati।
Annadātā bhayatrātā, pañcaite pitaraḥ smṛtāḥ॥

Five fathers Cāṇkyaniti / 5 / 22

निम्नलिखित पाँच व्यक्ति 'पिता' कहे जाते हैं :- (1) जन्म देने वाला, (2) उपनयन संस्कार करने वाला, (3) विद्या देने वाला, (4) अन्न देने वाला और (5) भय से बचाने वाला।

The following five people are called 'fathers' :- (1) One who gives birth, (2) one who gives sacred thread in the ceremony, (3) one who gives education, (4) one who gives food or livelihood and (5) one who protects from fear.

(620)

जन्म-जन्मनि चाभ्यस्तं, दानमध्ययनं तपः।
तेनैवाभ्यासयोगेन, देही चाभ्यस्यते पुनः॥

संस्कारों का फल चाणक्यनीति / 16 / 19

Janma-janmani cābhyastaṁ, dānamadhyayanaṁ tapaḥ।
Tenalvābhyāsayogena, dehī cābhyasyate punaḥ॥

Impressions Cāṇkyaniti / 16 / 19

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन्म-जन्मान्तरों में प्राणी ने दान, अध्ययन और तप का जो अभ्यास किया होता है, उसी अभ्यास के कारण वह फिर अभ्यास करने लगता है।

For ages, creature who had been practising of giving alms, study and penance during the life gone by, now again begins to practise the same due to that practice.

(621)

जन्ममृत्यु-जरा-व्याधिवेदनाभिरुपद्रुतम्।
संसारमिममुत्पन्नमसारं त्यजतः सुखम्॥

सुख का साधन हितोपदेश / सन्धि. / 88

Janma-mṛtyu-jarā-vyādhi-vedanābhirupadrutam |
Saṁsāramimamutpannamasāraṁ tyajataḥ sukham ||

Method of bliss Hitopa. / Sandhi / 88

यह संसार जन्म, मृत्यु, बुढ़ापा और रोगों की पीड़ाओं से परिपूर्ण है, यह सोचकर इस संसार को छोड़ने में ही सुख है।

This world is full of pains of birth, death, old age and diseases and it is worthless. So, who leaves it becomes happy.

(622)

जन्मेदं वन्ध्यतां नीतम्, भवभोगोपलिप्सया।
काचमूल्येन विक्रीतो, हन्त चिन्तामणिर्मया॥

निन्दनीय जन्म साहित्यदर्पण / 10

Janmedaṁ vandhyatāṁ nītam, bhavabhogopalipsayā |
Kācamūlyena vikrīto hanta cintāmaṇirmayā ||

Condemnable birth Sahityadarpan. / 10

सांसारिक वस्तुओं के भोग की लालसा से मैंने अपना यह जीवन निष्फल कर दिया है। खेद की बात है कि मैंने चिन्तामणि जैसे बहुमूल्य जीवन को काँच जैसे तुच्छ पदार्थ के बदले बेच दिया है।

On account of the desire of enjoyment in the worldly things, I have spent my life uselessly. It is sad to say that I have sold a valuable gem for a piece of glass.

(623)

जयन्ति ते सुकृतिनो, रससिद्धाः कवीश्वराः।
नास्ति येषां यशःकाये, जरामरणजं भयम्॥

कवीश्वरों की महिमा नीतिशतक / 23

Jayanti te sukṛtino, rasasiddhāḥ kavīśvarāḥ |
Nāsti yeṣāṁ yaśaḥ-kāye, jarā-maranajaṁ bhayam ||

Greatness of great poets Nītiśataka / 23

शुभ रचनाएँ करने वाले, रस-रचना में निपुण उन कविराजों की जय हो, जिनके यश-रूपी शरीर में बुढ़ापे और मृत्यु से उत्पन्न होने वाला डर नहीं है।

Grace to the great poets who compose good literature and are competent in creation of interest. So there is no fear from old age and death to their bodies of fame.

(624)

जरां कृच्छ्रेण लभते, चिरं जीवत्यनामयः।
तस्मात् संशोधनं काले, युक्तियुक्तं पिबेन्नरः॥

शरीर-शुद्धि चरक / सूत्रस्थान / 16 / 19

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Jarāṁ kṛcchreṇa labhate, ciraṁ jīvatyanāmayaḥ |
Tasmāt saṁśodhanaṁ kāle, yuktiyuktaṁ pibennaraḥ ||

Caraka / Sūtra. / 16 / 19

Cleanliness of body

मनुष्य को चाहिए कि पेट की शुद्धि के लिए समय-समय पर कोई क्वाथ या औषध ग्रहण करे। इससे बुढ़ापा दूर भागता है और मनुष्य स्वस्थ रहकर चिरकाल तक जी सकता है।

One should take such a medicine now and then which purifies his abdomen. As a result of this, old age goes away and the man enjoying health lives longer.

(625)

जरा रूपं हरति धैर्यमाशा,
मृत्युः प्राणान् धर्मचर्यामसूया।
कामो ह्रियं वृत्तमनार्यसेवा,
क्रोधः श्रियं सर्वमेवाभिमानः ॥

नाशक वस्तुएँ महाभा. / उद्योग / 35 / 50

Jarā rūpaṁ harati dhairyamāśā,
Mṛtyuḥ prāṇān dharmacaryāmasūyā |
Kāmo hriyaṁ vṛttamanāryasevā,
Krodhaḥ śriyaṁ sarvamevābhimānaḥ ||

Mahābhā. / Udyoga / 35 / 50

Destroyer things

बुढ़ापा सौन्दर्य को, आशा धैर्य को, मृत्यु जीवन को, गुणों में दोष खोजना नैतिकता को, काम लज्जा को, नीच व्यक्ति की सेवा चरित्र को, गुस्सा धन-दौलत को और अभिमान तो सर्वस्व नष्ट कर देता है।

The old age removes beauty, expectation removes patience, death removes life, fault-finding in merits removes morality, passion removes shame, the service of a bad person removes character, rage removes wealth and pride removes everything.

(626)

जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।
स हेतुः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च॥

संचय का लाभ चाणक्यनीति / 12 / 22

Jalabindunipātena kramaśaḥ pūryate ghaṭaḥ |
Sa hetuḥ sarvavidyānāṁ dharmasya ca dhanasya ca ||

Profit by collecting Cāṇkyanīti / 12 / 22

पानी की एक-एक बून्द टपकने से धीरे-धीरे घड़ा भर जाता है। इसी प्रकार थोड़ा-थोड़ा सीखते रहने से विद्याएँ, थोड़ा-थोड़ा करते रहने से धर्म और धन का भी संचय हो जाता है।

Drop by drop water falls into a pitcher and fills it gradually. So, 'slow and steady wins the race' is useful for every art, morality and money.

(627)

जले तैलं खले गुह्यं पात्रे दानं मनागपि।
प्राज्ञे शास्त्रं स्वयं याति विस्तारे वस्तुशक्तितः॥

वस्तुओं का विस्तार चाणक्यनीति / 14 / 4

Jale tailaṁ khale guhyaṁ, pātre dānaṁ manāgapi |
Prajñe śāstraṁ svayaṁ yāti vistāre vastuśaktitaḥ ||

Extension of things Cāṇkyanīti / 14 / 4

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रत्येक वस्तु की अपनी शक्ति के कारण पानी में तेल, दुष्ट व्यक्ति में गुप्त कथन, योग्य पात्र को दिया हुआ थोड़ा सा भी दान और समझदार व्यक्ति में शास्त्र स्वयं विस्तार को प्राप्त हो जाते हैं।

The following things expand themselves due to their strength :-

(1) Oil in water, (2) secret in a bad person, (3) even a little charity in a deserving person and (4) scriptures in a wiseman.

(628)

जहाति मृत्युं च जरां भयं च,
न क्षुत्पिपासे मनसोऽप्रियाणि।
न कर्त्तव्यं विद्यते तत्र किञ्चित्
अन्यत्र वै चेन्द्रियप्रीणनाद्धि॥

स्वर्गलोक में स्थिति महाभा. / उद्योग / 27 / 13

Jahāti mṛtyuṁ ca jarāṁ bhayaṁ ca,
Na kṣutpipāse manaso'priyāṇi |
Na karttavyaṁ vidyate tatra kiñcit,
Anyatra vai cendriyaprīṇanāddhi ||

Mahābhā. / Udyoga / 27 / 13

State in the heaven

(पुण्यात्मा) मनुष्य (स्वर्गलोक में जाकर) मृत्यु को, बुढ़ापे को तथा भय को त्याग देता है। वहाँ उसे मन के प्रतिकूल भूख और प्यास का भी कष्ट सहन नहीं करना पड़ता। स्वर्ग में इन्द्रियों को सुख पहुँचाने के अतिरिक्त कोई और कार्य शेष नहीं रह जाता।

A goodman after reaching heaven neither dies nor becomes old and becomes fearless. There he doesn't feel the trouble of hunger and thirst against his mind. No other work remains there except enjoyment of his senses.

(629)

जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यम्,
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिम्,
किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या॥

विद्या के लाभ नीतिशतक / 22

Jāḍyaṁ dhiyo harati siñcati vāci satyam,
Mānonnatiṁ diśati pāpamapākaroti |
Cetaḥ prasādayati dikṣu tanoti kīrtim,
Kiṁ kiṁ na sādhayati kalpalateva vidyā ||

Advantages of knowledge Nītiśataka / 22

विद्या बुद्धि की जड़ता को दूर कर देती है, वाणी में सच्चाई लाती है, मान बढ़ाने का ढंग बताती है, पाप को दूर भगाती है, चित्त को प्रसन्न रखती है, यश को फैलाती है। भला कल्प-लता के समान विद्या कौन सा कार्य सिद्ध नहीं करती? अर्थात् विद्या सभी कार्य सिद्ध कर देती है।

Knowledge removes the foolishness of the intellect, produces truth in speaking, indicates the means to get respect, removes sins, pleases the mind and spreads fame in every direction. It is education which is like 'kalpalata', gives success in every field.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(630)

जातमात्रं न यः शत्रुं रोगं च प्रशमं नयेत्।
महाबलोऽपि तेनैव वृद्धिं प्राप्य स हन्यते॥

उपेक्षा से हानि पञ्च. / मित्रभेद / 170

Jātamātraṁ na yaḥ śatruṁ rogaṁ ca praśamaṁ nayet।
Mahābalo'pi tenalva vṛddhiṁ prāpya sa hanyate॥

Pañca. / Mitrabhe. / 170

Loss due to ignorance

जो व्यक्ति नये-नये दुश्मन तथा रोग को शान्त नहीं करता, वह बलवान् होते हुए भी उस शत्रु के और रोग के बढ़ जाने से उसी के द्वारा मारा जाता है।

The person who does not appease his new enemy and disease at their beginning, though he is strong, yet when the enemy or disease grows powerful, he is killed by that only.

(631)

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः, ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे, न त्वं शोचितुमर्हसि॥

जन्म और मृत्यु महाभा. / भीष्मपर्व / 26 / 27

Jātasya hi dhruvo mṛtyuḥ, dhruvaṁ janma mṛtasya ca।
Tasmādaparihārye'rthe na tvaṁ śocitumarhasi॥

Mahābhā. / Bhiṣma. / 26 / 27

Birth and death

जो पैदा हुआ है, उसकी मृत्यु अवश्य होगी और जो मर चुका है, उसका जन्म भी अवश्य होगा। हे अर्जुन! क्योंकि यह नियम तुम्हारी शक्ति से बाहर है, अतः तुम्हें किसी के मरने-जीने पर शोक नहीं करना चाहिए।

He will die certainly who is born and he will take birth undoubtedly who has died. Arjuna! Death and birth are not under your control, so you should not be sad for this.

(632)

जानीयात् प्रेषणे भृत्यान् बान्धवान् व्यसनागमे।
मित्रं चापत्तिकाले तु भार्यां च विभवक्षये॥

परीक्षा का समय चाणक्यनीति / 1 / 11

Jānīyāt preṣaṇe bhṛtyān, bāndhavān vyasanāgame।
Mitraṁ cāpattikāle tu, bhāryāṁ ca vibhavakṣaye॥

Time of test Cānkya / 1 / 11

कहीं भेजते समय नौकरों की, संकट के समय रिश्तेदारों की, मुसीबत में मित्र की और धन के नाश हो जाने पर पत्नी की पहचान या परीक्षा होती है।

Servants are tested by sending them somewhere, relatives are tested in adversity, a friend is tested in troubles and a wife is tested at the loss of wealth.

(633)

जिह्वाया अग्रे मधु मे, जिह्वामूले मधूलकम्।
ममेदह क्रतावसो, मम चित्तमुपायसि॥

व्यवहार मधुर हो अथर्व. / 1 / 34 / 2

Jihvāyā agre madhu me, jihvāmūle madhūlakam।
Mamedaha kratāvaso, mama cittamupāyasi॥

Atharva / 1 / 34 / 2

May our behaviour be sweet

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेरी जिह्वा के अग्रभाग में माधुर्य हो और जिह्वा के मूल में उससे भी बढ़कर मिठास हो। हे माधुर्य रूप प्रभु! मेरी बुद्धि में, मेरे कर्म में और स्मृति में भी तुम विराजमान रहो।

May the front part of my tongue be full of sweetness and the end of my tongue be full of more sweetness. O sweet God! show your presence in my intellect, in my work and in my memory also.

(634)

जीवन्तं मृतवन्मन्ये, देहिनं धर्मवर्जितम्।
मृतो धर्मेण संयुक्तो, दीर्घजीवी न संशयः॥

धर्म का महत्त्व चाणक्यनीति / 13 / 10

Jīvantaṁ mṛtavanmanye, dehinaṁ dharmavarjitam।
Mṛto dharmeṇa saṁyukto, dīrghajīvī na saṁśayaḥ॥

Importance of Dharma Cānkyanīti / 13 / 10

धर्महीन जीते हुए व्यक्ति को भी मैं मरा हुआ-सा समझता हूँ और जो धार्मिक व्यक्ति शरीर का त्याग भी कर देता है, उसे मैं निःसन्देह दीर्घ आयु वाला मानता हूँ।

In my opinion the man who is irreligious is like a dead person and the religious man who is dead, is living a long life undoubtedly.

(635)

जीवन्तु मे शत्रुगणाः सदैव,
येषां प्रसादात् सुविचक्षणोऽहम्।
यदा यदाऽहं स्खलितो भवामि,
तदा तदा मां प्रतिबोधयन्ति॥

शत्रुओं से लाभ मुक्तिराम उपाध्याय

Jīvantu me śatruganāḥ sadaiva,
Yeṣāṁ prasādāt suvicakṣaṇo'ham।
Yadā yadā'haṁ skhalito bhavāmi,
Tadā tadā māṁ pratibodhayanti॥

Advantage of enemies Mukti. Upa.

मेरे शत्रु सदा जीते रहें, जिनकी कृपा से मैं सदा सावधान रहता हूँ। मैं जब-जब असावधान होने लगता हूँ, तब-तब ही वे मुझे पुनः चौकन्ना कर देते हैं।

May my enemies live forever, whose grace makes me alert always. Whenever I begin to neglect, they make me conscious at the same time.

(636)

जीवन्तोऽपि मृताः पञ्च, श्रूयन्ते किल भारत।
दरिद्रो व्याधितो मूर्खः, प्रवासी नित्यसेवकः॥

जीवन में भी मृत पञ्च. / मित्रभेद / 210

Jīvanto'pi mṛtāḥ pañca, śrūyante kila Bhārata।
Daridro vyādhito mūrkhaḥ, pravāsī nityasevakaḥ॥

Pañca. / Mitrabhe. / 210

Dead even in life

हे भरतवंशज! ये पाँच व्यक्ति जीते हुए भी मरे हुए के समान ही माने जाते हैं :- (1) दरिद्र, (2) रोगी, (3) मूर्ख, (4) विदेश में रहने वाला और (5) जीवन-भर का सेवक।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

O Bhārata! These five persons are said to be dead even in their life :- (1) Poverty-stricken, (2) diseased, (3) a fool (4) residing in foreign land and (5) life-long servant.

(637)

जीवितं च शरीरेण, जात्यैव सह जायते।
उभे सह विवर्तेते, उभे सह विनश्यतः॥

जीवन और जाति महाभा. / शान्ति / 174 / 22

Jīvitaṁ ca śarīreṇa, jātyaiva saha jāyate।
Ubhe saha vivartete, ubhe saha vinaśyataḥ॥

Mahābhā. / Śānti / 174 / 22

Life and species

मनुष्य और पशु आदि को जाति के साथ ही शरीर और जीवन प्राप्त होता है। शरीर और जाति दोनों ही एक साथ प्रकट होते हैं और दोनों साथ ही नष्ट हो जाते हैं।

Life comes with the body and the species. The body and species come into existence together and also die together.

(638)

ज्ञातीनां वक्तुकामानां, कटुकानि लघूनि च।
गिरा त्वं हृदयं वाचं, शमयस्व मनांसि च॥

शान्त करने की विधि महाभा. शान्तिपर्व / 81 / 22

Jñātīnāṁ vaktukāmānāṁ, kaṭukāni laghūni ca।
Girā tvaṁ hṛdayaṁ vācaṁ, śamayasva manāṁsi ca॥

Mahābhā. / Śātipa. / 81 / 22

Method to appease

हे मानव! जो सम्बन्धी तुम्हारे प्रति कड़वे और अपमानजनक शब्द बोलना चाहें, तो अपनी शान्त वाणी द्वारा उनके हृदय, वाणी और मनों को शान्त करो।

O man! The relatives who are going to tell you bitter and insulting words, appease their hearts, tongues and minds with your pacifying words.

(639)

ज्ञानं सतां मानमदादिनाशनम्,
केषाञ्चिदेतन्मदमानकारणम्।
स्थानं विमुक्तं यमिनां विमुक्तये,
कामातुराणामपि कामकारणम्॥

ज्ञान के फल वैराग्यशतक / 8

Jñānaṁ satāṁ mānamadādināśanam,
Keṣāñcidetanmadamānakāraṇam।
Sthānaṁ vimuktaṁ yamināṁ vimuktaye,
Kāmāturāṇāmapi kāma-kāraṇam॥

Vairāgyaśataka / 8

Different results of knowledge

ज्ञान सज्जनों के लिए तो अभिमान और अज्ञान का नाशक होता है, परन्तु वही कुछ (नीच) लोगों का अभिमान और अज्ञान बढ़ाता है। जो स्थान तपस्वी लोगों के मोक्ष-सिद्धि के लिए निश्चित होता है, वही स्थान कई लोगों की कामवासना को भड़काने का कारण बन जाता है। (अर्थात्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रत्येक व्यक्ति अपनी रुचि के अनुसार ही किसी वस्तु का उपयोग करता है।)

Knowledge is the means of removing arrogance and ignorance for noble people, while for others mean fellows, it becomes the means of producing arrogance and ignorance. The place which is left for practising spiritual progress and salvation for sages, excites the passion of the lustful persons. (It means every person uses anything according to his interest.)

(640)

ज्ञान-विज्ञान-तृप्तात्मा, कूटस्थो विजितेन्द्रियः।
युक्त इत्युच्यते योगी, समलोष्ठात्मकाञ्चनः॥

योगी के गुण महाभा. / भीष्मपर्व / 30 / 8

Jñāna-vijñāna-tṛptātmā, kūṭastho vijitendriyaḥ।
Yukta ityucyate yogī, samaloṣṭhātmakāñcanaḥ॥

Merits of an ascetic Mahābhā. / Bhiṣma. / 30 / 8

ज्ञान और विज्ञान से जिसकी आत्मा तृप्त हो चुकी है, जिसमें विषय-विकार उत्पन्न नहीं होते, जिसने इन्द्रियों को जीत लिया है और जो ढेले और सोने को एक समान समझता है, वही योगी 'युक्त' कहलाता है।

The spiritual person who is contented with knowledge and super-knowledge, who is not disturbed by sensual subjects, who has won all his senses and who considers lump of soil and gold equal, is called 'yukta' ascetic.

(641)

ज्ञानारामस्य बुद्धस्य, सर्वभूताविरोधिनः।
नावृत्तिभयमस्तीह, परलोकभयं कुतः॥

निर्भयता महाभा. / शान्ति. / 160 / 33

Jñānārāmasya buddhasya, sarvabhūtāvirodhinaḥ।
Nāvṛttibhayamastīha, paralokabhayaṁ kutaḥ॥

Fearlessness Mahābhā. / Śānti. / 160 / 33

ज्ञान में ही आनन्द लेने वाले, सब प्राणियों के हितैषी और पूर्णतः तत्त्वज्ञ व्यक्ति को तो पुनर्जन्म का ही भय नहीं रहता, तो परलोक का भय कैसे हो सकता है?

One who enjoys super-knowledge, who is well-wisher of all creatures and who fully knows the reality of the world does not have fear of even rebirth, what is to say about the fear of other world!

(642)

ज्ञानेन तु तदज्ञानं येषां नाशितमात्मनः।
तेषामादित्यवज्ज्ञानं, प्रकाशयति तत्परम्॥

प्रभुदर्शक ज्ञान महाभारत. / भीष्मप. / 29 / 6

Jñānena tu tadajñānaṁ, yeṣāṁ nāśitamātmanaḥ।
Teṣāmādityavajjñānaṁ, prakāśayati tatparam॥

God Mahābhā. / Bhiṣma. / 29 / 6

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिन्होंने अपनी आत्मा के ज्ञान से अज्ञान को नष्ट कर दिया है, उनका वह आत्मज्ञान सर्वोत्कृष्ट परमात्मा का बोध इसी प्रकार करा देता है, जैसे सूर्य के प्रकाश में सब स्पष्ट दीखने लगता है।

Those who have removed their ignorance with the help of the spiritual knowledge, their such knowledge helps them to know God in such a way as one can look everything in the sun's light.

(643)

ज्ञानेन विविधान् क्लेशानतिवृत्तस्य मोहजान्।
लोके बुद्धिप्रकाशेन लोकमार्गो न रिष्यते॥

बुद्धि का प्रकाश महाभारत / शान्तिपर्व / 329 / 52-53

Jñānena vividhān kleśānativṛttasya mohajān।
Loke buddhiprakāśena lokamārgo na riṣyate॥

Mahābhā. / Śāntip. / 329 / 52-53

Light of mind

जो ज्ञान के बल से मोह-जनित नाना प्रकार के क्लेशों से पार हो गया है, उसके लिए जगत् में कोई भी लोक-व्यवहार का कार्य बौद्धिक प्रकाश के कारण अवरुद्ध नहीं होता।

The sage, who has crossed the different kinds of troubles born from ignorance with the help of the spiritual knowledge, can do every worldly work easily, with the help of intellectual light without any disturbance.

(644)

ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वि यौष्ट,
सं राधयन्तः सधुराश्चरन्तः।
अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत,
सध्रीचीनान् वः समनस्कृणोमि॥

प्रेम से रहो अथर्व. / 3 / 30 / 5

Jyāyasvantaścittino mā vi yauṣṭa,
Saṁ rādhayantaḥ sadhurāścarantaḥ।
Anyo anyasmai valgu vadanta eta,
Sadhrīcīnān vaḥ samanaskṛṇomi॥

Live affectionately Atharva. / 3 / 30 / 5

हे पारिवारिक लोग, बड़ी आयु वाले तथा ज्ञान-सम्पन्न आप लोग उत्तम प्रयोजनों को सिद्ध करते हुए, परिवार का बोझ मिलकर संभालते हुए एक-दूसरे से कभी वियुक्त मत होओ। एक दूसरे के साथ मधुर और सत्य भाषण करते हुए एक दूसरे के पास आओ। मैं परमेश्वर (तुम सबका प्रेरक) तुम्हें परस्पर सहायक और सहमति वाला बनाता हूँ।

O the members of the family, some of you are old in age while some possess knowledge. All of you getting success in good purposes, carry the burden of the family unitedly and never be separated from each other due to some differences. All of you should speak sweetly and truthfully and remain near to each other. I, God, the inspirer of all, advise you to help each other and live without any differences being one-minded.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त = Ta

(645)

तं दुर्दर्शं गूढमनुप्रविष्टं,
गुहाहितं गह्वरेष्ठं पुराणम्।
अध्यात्मयोगाधिगमेन देवं,
मत्वा धीरो हर्षशोकौ जहाति॥

हर्षशोक का नाशक कठोपनिषद् / द्वितीयवल्ली / 12

Taṁ durdarśaṁ gūḍhamanūpraviṣṭaṁ,
Guhāhitaṁ gahvareṣṭhaṁ purāṇam।
Adhyātmayogādhigamena Devaṁ,
Matvā dhīro harṣaśokau jahāti॥

Removal of weals and woes Kaṭho. / 2 / 12

जो देव सनातन, दुर्लभ दर्शन वाला, सबमें छिपा हुआ, सर्वव्यापक, हृदयरूपी गुफा में रहने वाला और सबमें विराजमान है, उस ब्रह्मदेव को आध्यात्मिक योग द्वारा समझकर उपासक हर्ष और शोक आदि से मुक्त हो जाता है।

God, who is eternal, not to be seen easily, hidden in all, omnipresent, living in the caves of hearts and existing in everyone, can be known with the spiritual meditation by a devotee and after knowing Him, the contented devotee becomes rid of worldly weals and woes.

(646)

तक्षकस्य विषं दन्ते, मक्षिका-शिरसि विषम्।
वृश्चिकस्य विषं पुच्छे, सर्वांगे दुर्जनस्य च॥

विष के स्थान (वृद्धचाणक्य)

Takṣakasya viṣaṁ dante, makṣikā-śirasi viṣam।
Vṛścikasya viṣaṁ pucche, sarvāṅge durjanasya ca॥

Centres of poisons Vṛddha Cāṇkya

तक्षक आदि साँपों के दाँत में विष होता है, मक्खी के सिर में, बिच्छू की पूँछ में और दुष्ट व्यक्ति के सारे शरीर में विष होता है; अर्थात् दुष्ट व्यक्ति प्रत्येक अंग से ही दूसरों को हानि पहुँचाने में लगा रहता है।

The snake has poison in its teeth, the fly has it in its head, the scorpion has it in its tail, but a bad man's full body is poisonous, as he tries to harm others with his all organs.

(647)

तच्चिन्तनं तत्कथनमन्योन्यं तत्प्रबोधनम्।
एतदेकपरत्वं च तदभ्यासं विदुर्बुधाः॥

अभ्यास का स्वरूप (योगवासिष्ठ)

Taccintanaṁ tatkathanamanyonyaṁ tatprabodhanam।
Etadekaparatvaṁ ca tadabhyāsaṁ vidurbudhāḥ॥

Form of practice Yogavāsiṣṭha

किसी बात का निरन्तर चिन्तन करना, दूसरे को उसे कहना, एक दूसरे को उसके संबंध में जानकारी देना और तदाकार वृत्ति रखना — इसको विद्वान् अभ्यास कहते हैं।

Thinking of a single thing continuously, discussing that with others, giving knowledge of that to each other and

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

to have continuous thinking of that, is called practice by the wise men.

(648)

तत्कर्म यन्न बन्धाय, सा विद्या या विमुक्तये।
आयासायापरं कर्म, विद्यान्या शिल्पनैपुणम्॥

प्रशंसनीय कर्म और विद्या विष्णुपुराण/1/19/41

Tatkarma yanna bandhāya, sā vidyā yā vimuktaye |
Āyāsāyāparaṁ karma, vidyānyā śilpanaipuṇam ||

Viṣṇupu. / 1 / 19 / 41

Admirable work and knowledge

श्रेष्ठ कर्म वही है, जो बन्धन में नहीं डालता और विद्या भी वहीं है, जो मुक्ति की ओर ले जाए। शेष कर्म तो थकाने वाले और अन्य विद्या तो कला में निपुणता मात्र है।

An ideal work is that which is not the source of attachment and real education is that which leads to salvation. The other work causes only tiredness and other kind of education is only dexterity in arts.

(649)

तत्त्वज्ञः सर्वभूतानां, योगज्ञः सर्वकर्मणाम्।
उपायज्ञो मनुष्याणां, नरः पण्डित उच्यते॥

ज्ञानी के गुण महाभा. / उद्योग / 33 / 32

Tattvajñaḥ sarvabhūtānāṁ, yogajñaḥ sarvakarmaṇām |
Upāyajño manuṣyāṇāṁ, naraḥ paṇḍita ucyate ||

Mahābhā. / Udyoga / 35 / 2

Merits of the knowledgeable

जो सभी प्राणियों के तत्त्व को समझता हो, सभी कार्यों को करने की विधि जानता हो, मनुष्यों से सम्बन्धित सभी उपायों को समझता हो, ऐसा मनुष्य ही पण्डित अर्थात् ज्ञानी कहा जाता है।

One who knows the nature of all creatures, manner of doing all the works and all means related to human beings, is called 'Paṇḍita', a learned person.

(650)

तत्त्वज्ञस्य तृणं शास्त्रं, वीरस्य समरं तृणम्।
विरक्तस्य तृणं नारी, निःस्पृहस्य नृपस्तृणम्॥

तुच्छ वस्तुएँ नराभरण/12

Tattvajñasya tṛṇaṁ śāstraṁ, vīrasya samaraṁ tṛṇam |
Viraktasya tṛṇaṁ nārī, niḥspṛhasya nṛpastṛṇam ||

Trifle things Narābharana / 12

तत्त्वज्ञानी के लिए शास्त्र तुच्छ है, वीर के लिए युद्ध तुच्छ है, विरक्त के लिए नारी तुच्छ है और निःस्पृह के लिए राजा तुच्छ है।

One who has discriminated all things, scriptures are useless for him, a battle is a trifle thing for a brave person, a woman has no importance for the person who has no worldly attachment and a king is useless for a contented person.

(651)

तथाऽतिव्ययशीलैश्च, परिवादरतैश्शठैः।
बुधो मैत्रीं न कुर्वीत, नैकः पन्थानमाश्रयेत्॥

त्याज्य वस्तुएँ विष्णुपुराण/3/12/7

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Tathā'tivyayaśīlaiśca, parivādarataiśśaṭhaiḥ |
Budho maitrīṁ na kurvīta, naikaḥ panthānamāśrayet ||

Viṣṇupurāṇa / 3 / 12 / 7

To be discarded

जो बहुत अपव्ययी (फिजूलखर्च) हैं, और जो दुष्ट दूसरों की निन्दा करने में ही लगे रहते हैं, उनके साथ बुद्धिमान् को मित्रता नहीं करनी चाहिए और अकेले भी कहीं नहीं जाना चाहिए।

A wiseman should not make such people friends who are extravagant and who are wicked and remain busy in blaming others. Besides, he should not travel alone.

(652)

तथा हि वीराः पुरुषा न ते मताः,
जयन्ति ये साश्वरथद्विपानरीन्।
यथा मता वीरतरा मनीषिणो,
जयन्ति लोलानि षडिन्द्रियाणि ये ॥

सच्चे वीर अज्ञात

Tathā hi vīrāḥ puruṣā na te matāḥ,
Jayanti ye sāśvarathadvipānarīn |
Yathā matā vīratarā manīṣiṇo,
Jayanti lolāni ṣaḍindriyāṇi ye ||

The true brave Unknown

जो लोग घोड़ों, रथों और हाथियों से युक्त शत्रुओं को जीतते हैं, वे वैसे महान् वीर नहीं माने जाते, जैसे वीर वे मनीषी माने जाते हैं, जिन्होंने अपनी चंचल छः इन्द्रियों (मन-सहित) को जीत लिया है।

Those are not so brave persons who conquer the enemies with horses, chariots and elephants while those are considered braver and more wise persons who conquer the fickle six senses.

(653)

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः।
तदेव शुक्रं तद्ब्रह्म ता आपः स प्रजापतिः ॥

ईश्वर के अनेक नाम यजु. / 32 / 1

Tadevāgnistadādityastadvāyustadu candramāḥ |
Tadeva śukraṁ tadbrahma tā āpaḥ sa prajāpatiḥ ||

Different names of God Yaju. / 32 / 1

वह परमेश्वर ही अपने विविध गुणों और कार्यों के कारण अग्नि, आदित्य, वायु, चन्द्रमा, शुक्र, ब्रह्म, आपः तथा प्रजापति आदि अनेक नामों से पुकारा जाता है। (ईश्वरविषयक मन्त्रों में ये नाम ईश्वरवाची तथा वस्तुओं के प्रकरण में ये आग, सूर्य, हवा और चाँद आदि के भी वाचक हैं।)

It is God who is given different names due to His qualities and works; such as Agni, Āditya, Vāyu, Chandramā, Śukra, Brahma, Āpa and Prajāpati and in the same way many other names. (In the context of God, these names are related with Him, but at other places they are also used for fire, sun, air and moon etc.)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(654)

तद्गृहं यत्र वसतिस्तद्भोज्यं येन जीवति।
यन्मुक्तये तदेवोक्तं ज्ञानमज्ञानमन्यथा॥

उत्तम वस्तुएँ मार्कण्डेय पुराण

Tadgṛhaṁ yatra vasatistadbhojyaṁ yena jīvati।
Yanmuktaye tadevoktaṁ, jñānamajñānamanyathā॥

Best things Mārkaṇḍeya pu.

जहाँ निवास होता है, वह घर है, जिससे जीव जीवित रहता है, वह भोजन है, जिससे मोक्ष मिलता है, वही ज्ञान है और शेष अन्य अज्ञान है।

The place where one lives, is called house, with which a creature gets life is called food, with which salvation is attained is called knowledge and the rest is called ignorance.

(655)

तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते।
विष्णोर्यत् परमं पदम् ॥

जागरूकता ऋ./1/22/2

Tadviprāso vipanyavo jāgṛvāṁsaḥ samindhate।
Viṣṇoryat paramaṁ padam॥

Wakefulness Ṛg./1/22/2

उस सर्वव्यापक विष्णु का जो सर्वोत्कृष्ट प्राप्तव्य पद है, उसे उसकी अनेक प्रकार प्रशंसा करने वाले तथा सत्कर्म करने में जागरूक रहने वाले बुद्धिमान् ज्ञानी पुरुष अच्छी प्रकार प्रकाशित करते हैं और उससे अपने हृदय को प्रकाशमय बना लेते हैं।

Viṣṇu, the Omnipresent, is the best goal of devotees. Those who praise Him in different ways and are conscious and wise in doing noble deeds and are full of spiritual knowledge illustrate Him and in this way they enlighten their hearts also.

(656)

तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः।
दिवीव चक्षुराततम् ॥

परमात्मदर्शन ऋ./1/22/20

Tadviṣṇoḥ paramaṁ padaṁ sadā paśyanti sūrayaḥ।
Divīva cakṣurātatam॥

God's appearance Ṛg./1/22/20

सर्वव्यापक विष्णु के सर्वोत्कृष्ट ज्ञातव्य स्वरूप को धार्मिक और ज्ञानी लोग सदा ऐसे ही देखते हैं, जैसे सूर्य के प्रकाश में फैले हुए सब पदार्थों को नेत्र देखते हैं।

Religious and learned people see the best and worth knowing form of Omnipresent Viṣṇu in such a way as our eyes look every thing in the broad sunlight.

(657)

तनूपाऽअग्नेऽसि तन्वं मे पाह्यायुर्दाऽअग्नेऽसि
आयुर्मे देहि वर्च्चोदाऽअग्नेऽसि वर्च्चो मे देहि।
अग्ने यन्मे तन्वाऽऊनं तन्म आपृण॥

याचनाएँ यजु./3/17

Tanūpā'agne'si tanvaṁ me pāhyāyurdā'agne'si
āyurme dehi varccodā'agne'si varcco me dehi।
Agne yanme tanvā'ūnaṁ tanma āpṛṇa॥

Desires Yaju./3/17

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हे प्रकाशस्वरूप परमेश्वर! आप ही शरीरों की रक्षा करने वाले हैं, अतः मेरे शरीर की रक्षा कीजिए। आप सबको आयु देने वाले हैं, अतः मुझे भी सौ वर्ष की पूर्ण आयु दीजिए। आप सबको विज्ञान देने वाले हैं, मुझे भी विज्ञान-सम्पन्न बनाइए। हे सबके प्रेरक अग्नि-स्वरूप परमात्मन्! मेरे शरीर में जो बुद्धि, बल और शौर्य आदि या स्वास्थ्य की कमी हो, उसे पूर्ण कर दीजिए।

O embodiment of light, God, it is you who saves bodies. Kindly, protect my body. You give age to every one. Please give me full age of hundred years. You give super-knowledge to your devotees. Please, give me that also. O our guide, if there is any deficiency in my body, please, fulfil that.

(658)

तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहि,
ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान्।
अनुल्वणं वयत जोगुवामपो
मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्॥

सच्चे मानव बनो ऋ. / 10 /53 /6

Tantuṁ tanvan rajaso bhānumanvihi,
jyotiṣmataḥ patho rakṣa dhiyā kṛtān।
Anulvaṇaṁ vayata joguvāmapo,
manurbhava, janayā daivyaṁ janamll

Be trur man Ṛg. / 10 / 53 / 6

हे मानव! कर्म के ताने-बाने को बुनते हुए तुम सूर्य के अनुसार नियम पालन करो। ज्ञान तथा कर्म से किये हुए प्रकाशमय मार्गों की रक्षा करो। उपासकों के कर्मों को निरन्तर बुनते या करते चलो। मनुष्य बनो। लोगों को दिव्य प्रभु का उपासक बनाओ। (अथवा संसार में दिव्य गुणों वाले व्यक्तियों को पैदा करो।)

O man spreading the warp and weft of your works, you should follow good principles like the sun. Save the path of light, related to the knowledge and work done. Carry on the performances of the devotees continuously. Be a real man. Make others the devotees of God. (or, give birth to such persons who possess divine qualities.)

(659)

तपः स्वधर्मवर्त्तित्वं, मनसो दमनं दमः।
क्षमा द्वन्द्वसहिष्णुत्वं, ह्रीरकार्यनिवर्तनम्॥

गुणों के स्वरूप महाभा. / वनपर्व / 313 / 88

Tapaḥ svadharmavarttitvaṁ, manaso damanaṁ damaḥ।
Kṣamā dvandva-sahiṣṇutvaṁ, hrīrakāryanivartanam॥

Mahābhā. / Vana. / 313 / 88

Forms of qualities

अपने धर्म में स्थिर रहना ही तप है, मन का नियन्त्रण ही दम है, गर्मी-सर्दी आदि जोड़ों को सहना ही क्षमा है और बुरे कार्य से बचना ही लज्जा है।

To carry on one's own duties steadily is called Tapa, the penance, the control of mind is 'dama', tolerance of the

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

pairs, as cold and heat etc., is called 'kṣamā', the quality which saves us from the bad actions is called 'hrī', shyness.

(660)

तपसा प्राप्यते सत्त्वं, सत्त्वात् सम्प्राप्यते मनः।
मनसा प्राप्यते त्वात्मा, ह्यात्माऽऽपत्त्या निवर्त्तते॥

मुक्ति की प्राप्ति मैत्रायणी उपनिषद्/4/3

Tapasā prāpyate sattvaṁ, sattvāt samprāpyate manaḥ।
Manasā prāpyate tvātmā, hyātmā'pattyā nivarttate॥

Maitrāyanī Upa. / 4 / 3 / 2

Means to salvation

तप से बुद्धि प्राप्त होती है, बुद्धि से मनन-शक्ति बढ़ती है, मनन-शक्ति से आत्मा एवं परमात्मा का बोध हो जाता है और आत्मा का बोध हो जाने पर संसार से मुक्ति हो जाती है।

Wisdom is got by penance, wisdom produces thinking power, due to thinking power man knows his soul and God. After that he becomes relieved from the worldly troubles and attains salvation.

(661)

तपो निःश्रेयसं जन्तोस्तस्य मूलं शमो दमः।
तेन सर्वानवाप्नोति, यान् कामान् मनसेच्छति॥

तप का महत्त्व महाभा. / शान्तिपर्व / 232 / 22

Tapo niḥśreyasaṁ jantostasya mūlaṁ śamo damaḥ।
tena sarvānavāpnoti, yān kāmān manasecchati॥

Mahābhā. / Śāntip. / 232 / 22

Superiority of penance

प्राणी की मुक्ति तप से ही होती है और तप का मूल इन्द्रिय-संयम तथा मन का नियंत्रण है। उसी तप के द्वारा मानव मन से जो भी कामनाएँ करता है, उन सभी को वह प्राप्त कर लेता है।

Penance is the source of salvation and the roots of the penance in the control over the senses and the mind. It is the penance through which a man can get all the things which his mind desires.

(662)

तपोमूलमिदं सर्वं दैवमानुषकं सुखम्।
तपोमध्यं बुधैः प्रोक्तं, तपोऽन्तं वेददर्शिभिः॥

तप का महत्त्व मनु. / 11 / 234

Tapomūlamidaṁ sarvaṁ daivamānuṣakaṁ sukhaṁ।
Tapomadhyaṁ budhaiḥ proktaṁ, tapo'ntaṁ Vedadarśibhiḥ॥

Superiority of penance Manu. / 11 / 234

दिव्य सुख और मानवीय सुख सभी का मूल तप ही है। बुद्धिमानों ने तप को ही सुख को स्थायी रूप से रखने वाला और वेदज्ञ लोगों ने इसे ही मुक्तिधाम तक पहुँचाने का साधन बताया है।

It is penance that is the root of the divine and human — all kinds of happiness. The wisemen say that it helps to continue the happiness and the scholars of the Vedas state it the means to reach up to salvation.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(663)

तमीश्वराणां परमं महेश्वरं,
तं दैवतानां परमं च दैवतम्।
पतिं पतीनां परमं परस्ताद्,
विदाम देवं भुवनेशमीड्यम्॥

परमात्मा को जानो श्वेताश्वतर उपनि. / 8 / 7

Tamīśvarāṇāṁ paramaṁ maheśvaraṁ,
Taṁ daivatānāṁ paramaṁ ca daivatam।
Patiṁ patīnāṁ paramaṁ parastād,
Vidāma devaṁ buvaneśamīḍyam॥

Know God Śvetāśvataro / 8 / 7

वह प्रभु ऐश्वर्यशालियों में सबसे उत्कृष्ट है, देवों में सर्वोत्कृष्ट देवता है, पालने वालों में सबसे श्रेष्ठ पालक है। उस संसार के स्वामी, सबके स्तुति करने योग्य, सर्वोत्तम और दिव्य गुणों के स्वामी प्रभु को हमें अवश्य जानना चाहिए।

All of us should have the knowledge of God, who is the supermost of all in the prosperous persons, super-god out of the gods, the best nourisher of all the nourishers and is the master of the whole world and admired by all.

(664)

तरत्स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः।
तरत्स मन्दी धावति॥

परमात्मा आनन्द का स्रोत है ऋ. / 9 / 58 / 1

Taratsa mandī dhāvati dhārā sutasyāndhasaḥ।
Taratsa mandī dhāvati॥

God — The source of supreme bliss Ṛg. / 9 / 58 / 1

वह परमात्मा परम आनन्दमय है और वह पापियों को तारता हुआ उत्पन्न किए हुए ब्रह्मानन्द के रस सहित उपासकों के हृदयों में विराजमान होता है। और वह परमात्मा निःसन्देह पापियों को तारता हुआ परमानन्द से संसार में व्याप्त हो रहा है। भावार्थ यह है कि पापी भी प्रभु की उपासना द्वारा पवित्र होकर परमानन्द को प्राप्त कर सकते हैं।

God is super-blissful and He helps the sinners also to cross their sins. He makes his presence in the minds of devotees with extreme bliss which is produced by their true devotion. Certainly, God helps even the sinners, and shows his omnipresence in the whole world. It means that even sinners can make themselves purified with the devotion and can enjoy His bliss also.

(665)

तरसा ये न शक्यन्ते, शस्त्रैः सुनिशितैरपि।
साम्ना तेऽपि निगृह्यन्ते, गजा इव करेणुभिः॥

सामनीति का महत्त्व महाभा. / शान्ति / 139 / 39

Tarasā ye na sakyante, śastraiḥ suniśitairapi।
Sāmnā te'pi nigṛhyante, gajā iva kareṇubhiḥ॥

Mahābhā. / Śānti / 139 / 39

Superiority of conciliation

जो शत्रु बल द्वारा या बहुत तेज शस्त्रों से भी वश में नहीं किये जा सकते, वे साम नीति द्वारा ऐसे वश में किये जा सकते हैं, जैसे हाथी हथिनियों द्वारा किए जाते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

The enemies which cannot be won with power or very sharp weapons, can be over powered with the policy of conciliatory means, as elephants are caught with the help of the female elephants.

(666)

तर्कोऽप्रतिष्ठः श्रुतयो विभिन्नाः,
नासौर्मुनिर्यस्य मतं न भिन्नम्।
धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां,
महाजनो येन गतः स पन्थाः॥

उत्तम मार्ग महाभा. / वन. / 313 / 117

Tarko'pratiṣṭhaḥ, śrutayo vibhinnāḥ,
Nāsaurmuniryasya mataṁ na bhinnam |
Dharmasya tattvaṁ nihitaṁ guhāyāṁ,
Mahājano yena gataḥ sa panthāḥ ||

Best path Mahābhā. / Vana. / 313 / 117

तर्क द्वारा निर्णय नहीं हो सकता, श्रुतियों में भी भेद है। ऐसा कोई भी मुनि नहीं है, जिसका गत दूसरे से भिन्न न हो। धर्म का तत्त्व छिपा हुआ है; उसका स्वरूप स्पष्ट नहीं हो सकता। अतः श्रेष्ठ व्यक्ति जिस मार्ग पर चले हैं, उसे ही धर्म का मार्ग समझना चाहिए।

Reasoning does not settle a matter and scriptures differ. There is no seer whose opinion is not different. The reality of virtue or religion is hidden in a cave. The (True) path is the one that is trodden by great men.

(667)

तस्माद्यतेत पुण्येषु य इच्छेन्महतीं श्रियम्।
यतितव्यं समत्वे च निर्वाणमपि चेच्छता॥

श्रेष्ठ कर्म करो विष्णुपुराण. / 1 / 19 / 46

Tasmādyateta puṇyeṣu ya icchenmahatīṁ śriyam |
yatitavyaṁ samatve ca nirvāṇamapi cecchatā ||

Do good Viṣṇupurāṇa / 1 / 19 / 46

जो व्यक्ति बहुत ऐश्वर्य अथवा शोभा को चाहता है, उसे श्रेष्ठ कर्म करने का ही यत्न करना चाहिए। और यदि कोई व्यक्ति मुक्ति भी चाहता है, तो उसे सबमें समदृष्टि रखनी चाहिए।

One who desires much wealth or grace should practise good works. If man wishes to get salvation, he should also have the sight of equality for all things.

(668)

तस्मान्न गोऽश्ववत्कश्चिज्जातिभेदोऽस्ति देहिनाम्।
कार्यशक्तिनिमित्तस्तु सङ्केतः कृत्रिमो भवेत्॥

वर्णव्यवस्था का जन्म अज्ञात

Tasmānna go'śvavat kaścijjātibhedo'sti dehinām |
Kāryaśaktinimittastu saṅketaḥ kṛtrimo bhavet ||

Birth of castes Unknown

इसलिए मनुष्यों में गाय, घोड़े आदि के समान कोई जातिभेद नहीं है, सभी की 'मनुष्य' जाति ही है। उनमें वर्णभेद कार्य, शक्ति आदि के कारण केवलमात्र कृत्रिम है, जन्मजात नहीं।

Therefore there are no different spe-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

cies of men like that of cows and horses. They are (different castes etc.) so-named artificially due to their capacity and action.

(669)

तानीन्द्रियाण्यविकलानि तदेव कर्म,
सा बुद्धिरप्रतिहता वचनं तदेव।
अर्थोष्मणा विरहितः पुरुषः स एव,
त्वन्यः क्षणेन भवतीति विचित्रमेतत्॥

धनाभाव से हानि नीतिशतक / 36

Tānīndriyāṇyavikalāni tadeva karma,
Sā buddhirapratihatā vacanaṁ tadeva |
Arthoṣmaṇā virahitaḥ puruṣaḥ sa eva,
tvanyaḥ kṣaṇena bhavatīti vicitrametat ||

Loss due to poverty Nītiśataka / 36

धन न रहने पर भी मनुष्य की वे ही विकार-शून्य इन्द्रियाँ रहती हैं, काम भी वैसा ही करता है, सोचने में निपुण बुद्धि भी पहले जैसी ही होती है, बात भी वैसी ही करता है, परन्तु धन की गर्मी से रहित हो जाने के कारण वही पुरुष क्षणभर में अन्य प्रकार का हो जाता है; यही विचित्र बात है।

When a man becomes deprived of his wealth, in spite of his same safe sound, senses, works as before, same thinking power and talk in the same manner, the same person becomes strange and this is an astonishing thing.

(670)

तापं हन्ति सुखं सूते, जीवयत्युज्ज्वलं यशः।
अमृतस्य प्रकारोऽयं, दुर्लभः साधुसङ्गमः॥

साधु-संगति के लाभ सुभाषितावलि / 205

Tāpaṁ hanti sukhaṁ sūte, jīvayatyujjvalaṁ yaśaḥ |
Amṛtasya prakāro'yaṁ, durlabhaḥ sādhusaṅgamaḥ ||

Subhāṣitāvali / 205

Advantage of a good company

जो सन्ताप को दूर कर देता है और सुख को उत्पन्न करता है तथा उज्ज्वल कीर्ति प्रदान करता है, अमृत के समान ऐसा यह साधु-समागम कठिनाई से प्राप्त होता है।

Such company of the good persons is very rare, which removes heat, generates happiness, bears shining fame and is like the sweet nectar.

(671)

तावत्प्रीतिर्भवेल्लोके, यावद्दानं प्रदीयते।
वत्सः क्षीरक्षयं दृष्ट्वा, परित्यजति मातरम्॥

सभी स्वार्थी हैं पञ्च. / मित्रसम्प्राप्ति / 52

Tāvat prītirbhavelloke, yavaddānaṁ pradīyate |
Vatsaḥ kṣīrakṣayaṁ dṛṣṭvā, parityajati mātaram ||

All are selfish Pañca. / Mitrasam. / 52

जब तक कोई कुछ देता रहता है, तभी तक प्रेम भी बना रहता है। बछड़ा गौमाता को दूध से रहित समझकर उसे छोड़ देता है।

Love remains as long as something

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

is given. A calf quits its mother when she becomes milkless.

(672)

तावदस्खलितं यावत्, सुखं याति समे पथि।
स्खलिते च समुत्पन्ने, विषमं च पदे पदे॥

सुख का स्रोत — सरलपथ पंच. / मित्रसम्प्राप्ति / 175

Tāvadaskhalitaṁ yāvat, sukhaṁ yāti same pathi |
Skhalite ca samutpanne, viṣamaṁ ca pade pade ||

Pañca. / Mitrasam. / 175

Right path — source of bliss

जब तक मनुष्य अच्छे साफ–सुथरे रास्ते पर चलता है, तब तक फिसलता नहीं। परन्तु जब फिसलने वाला मार्ग आता है, तो वह कदम–कदम पर फिसलता ही चला जाता है, अर्थात् उसे निरन्तर संकटों का सामना करना पड़ता है।

As long as a man goes on an even path, he doesn't slip. But when on the slippery path he begins to slip, he slips again and again, which means he has to face many difficulties.

(673)

तावद्रथेन गन्तव्यं, यावद्रथपथि स्थितः।
स्थित्वा रथपथिस्थानं, रथमुत्सृज्य गच्छति॥

साधन की उपयोगिता अमृतनादोपनिषद् / 3

Tāvadrathena gantavyaṁ, yāvadrathapathi sthitaḥ |
Sthitvā rathapathisthānaṁ, rathamutsṛjya gacchati ||

Usefulness of means Amṛtanādo. / 3

रथ से वहीं तक जाया जाता है, जहाँ तक रथ का मार्ग होता है। रथ के मार्ग की समाप्ति पर पहुँच कर मानव रथ को छोड़ देता है और पैदल चल पड़ता है।

A man goes by a vehicle as far as there is the road for it. When the road ends, the man leaves it and walks on foot.

(674)

तावन्महत्त्वं पाण्डित्यं, कुलीनत्वं विवेकिता।
यावज्ज्वलति नाङ्गेषु, हतः पञ्चेषुपावकः॥

काम की प्रबलता शृङ्गारशतक / 6

Tāvanmahattvaṁ pāṇḍityaṁ, kulīnatvaṁ vivekitā |
Yāvajjvalati nāṅgeṣu, hataḥ pañceṣupāvakaḥ ||

Strength of sex Śṛngāraśataka / 6

किसी मनुष्य का बड़प्पन, विद्वता, कुलीनता और विवेक तभी तक रहते हैं, जब तक दुष्ट कामाग्नि अङ्गों को नहीं जलाने लगती। अर्थात् कामी व्यक्ति के ये सब गुण नष्ट हो जाते हैं।

One's greatness, learning, nobility and discrimination remain as long as the wicked fire of lust does not burn the parts of the body. It means that a lust-ful man's all such qualities come to an end.

(675)

तीक्ष्णादुद्विजते मृदौ परिभव-त्रासान्न सन्तिष्ठते,
मूर्खान् द्वेष्टि न गच्छति प्रणयितामत्यन्तविद्वत्स्वपि।
शूरेभ्योऽप्यधिकं बिभेत्युपहसत्येकान्तभीरूनहो,
श्रीर्लब्धप्रसरेव वेशवनिता दुःखोपचर्या भृशम्॥

लक्ष्मी का स्वभाव मुद्राराक्षस / 2 / 5

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Tikṣṇādudvijate mṛdau paribhava-trāsānna santiṣṭhate,
Mūrkhān dveṣṭi na gacchati praṇayitāmatyantavidvatsvapi |
Śūrebhyo'pyadhikaṁ bibhetyupahasatyekāntabhīrūnaho,
Śrīrlabdhaprasareva veśavanitā duḥkhopacaryā bhṛśam ||

Nature of wealth Mudrā. / 2 / 5

लक्ष्मी तेज स्वभाव वाले से घबरा जाती है, कोमल स्वभाव वाले के पास भी अपना तिरस्कार होने के डर से नहीं ठहर पाती, मूर्खों को पसन्द नहीं करती, बहुत विद्वानों में भी यह प्रेम प्राप्त नहीं करती, बहादुरों से डरती है और बहुत कायरों का तो उपहास कर देती है। इस प्रकार अच्छा अवसर पाने वाली वेश्या के समान यह लक्ष्मी बड़ी कठिनाई से वश में आती है।

Wealth gets irritated with an angry-natured person. It does not like a soft-hearted man fearing its own insult. It dislikes fools and has no love for great scholars. It fears from the brave persons and cuts jokes of coward persons. In this way wealth is controlled with great difficulty like a harlot which is ready to go away.

(676)

तीर्थानि तोयपूर्णानि, देवान् काष्ठादिनिर्मितान्।
योगिनो न प्रपूज्यन्ते, खलु स्वात्ययकारणात्॥

पूज्य या अपूज्य जाबालदर्शनोपनिषद् / 4 / 52

Tīrthāni toyapūrṇāni, devān kāṣṭhādinirmitān |
Yogino na prapūjyante, khalu svātyayakāraṇāt ||

Jābāladarśanopaniṣad / 4 / 52

Respectable or not respectable

योगिजन जलमय तीर्थों और काष्ठ-पाषाणादि से निर्मित देवमूर्तियों में भटकते नहीं फिरते, क्योंकि वे आत्मतीर्थ में श्रद्धा और विश्वास रखते हैं।

As the sages believe in the spiritual holy place of the soul, they don't wander in the holy places full of water and worship the statues of gods made of wood or stone etc.

(677)

तीर्थे दाने जपे यज्ञे, काष्ठे पाषाणके सदा।
शिवं पश्यति मूढात्मा, शिवे देहे प्रतिष्ठिते॥

मूढ़ों के पूजा-स्थल जाबालदर्शनोपनिषद् / 4 / 57

Tirthe dāne jape yajñe, kāṣṭhe pāṣāṇake sadā |
Śivaṁ paśyati mūḍhātmā, Śive dehe pratiṣṭhite ||

Jābāla. / 4 / 57

Respectable places for fools

शरीर में ही शिव (परमात्मा) के विद्यमान रहते हुए भी मूढ़ व्यक्ति तीर्थ में, दान में, जप में, यज्ञ में, लकड़ी और पत्थर की मूर्तियों में उसे ढूँढता फिरता है।

In spite of existence of God in one's own body, a foolish soul looks for Him in a holyplace, in donation, in muttering of prayers, in a sacrifice and in the idols made of wood or stone.

(678)

तुल्यार्थं तुल्यसामर्थ्यं, मर्मज्ञं व्यवसायिनम्।
अर्धराज्यहरं भृत्यं, यो न हन्यात्स हन्यते॥

मारने योग्य नौकर पञ्च. / मित्रभेद / 192

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Tulyārtham tulyasāmarthyam, marmajñam vyavasāyinam |
Ardharājyaharam bhṛtyam, yo na hanyātsa hanyate ||

Pañca. / Mitrabhe. / 192

Servant to be killed

जो राजा समान सम्पत्ति वाले, समान शक्ति वाले, रहस्यों को जानने वाले, परिश्रमी और आधे राज्य पर अधिकार रखने वाले नौकर की हत्या नहीं करता, वह उसी के द्वारा मारा जाता है।

The king who does not kill such a servant who has equal wealth, equal power, conversant of the secrets, hard worker and possessing half of the kingdom, is killed by him only.

(679)

तृणादपि लघुस्तूलः, तूलादपि च याचकः।
वायुना किं न नीतोऽसौ, मामयं याचयेदिति॥

निन्दनीय — भिखारी सुभाषितावलि / 3205

Tṛṇādapi laghustūlaḥ, tūlādapi ca yācakaḥ |
Vāyunā kiṁ na nīto'sau, māmayaṁ yācayediti ||

Subhāṣitāvali / 3205

Condemnable — a beggar

रुई तिनके से भी हल्की होती है और रुई से भी हल्का (तुच्छ) भिखारी होता है। तब भला उसे वायु क्यों उड़ाकर नहीं ले जाती? इसलिए कि कहीं भिखारी उससे भी कुछ माँग न ले।

A flock of cotton is lighter than a straw and a beggar is lighter than the flock of cotton. Then why does not wind take him away? It does not take him away as wind feels that the beggar may beg from it also.

(680)

तृणानि नोन्मूलयति प्रभञ्जनो-
मृदूनि तानि प्रणतानि सर्वतः।
स्वभाव एवोन्नतचेतसामयं,
महान् महत्स्वेव करोति विक्रमम्॥

प्रतियोगिता के योग्य पञ्चत. / मित्रभेद / 129

Tṛṇāni nonmūlayati prabhañjano-
Mṛdūni tāni praṇatāni sarvataḥ |
Svabhāva evonnatacetasāmayaṁ,
Mahān mahatsveva karoti vikramam ||

Pañca. / Mitrabhe. / 129

Worth for competition

आँधी-तूफान तिनकों को नहीं उखाड़ते, क्योंकि वे कोमल होने के कारण सभी ओर से झुक जाते हैं। महान् चित्त वालों का तो यह स्वभाव ही होता है कि वे बड़ों पर ही अपना पराक्रम दिखाते हैं, छोटों पर नहीं।

A storm does not uproot straws as they kneel from all sides against it due to their flexibility. It is the nature of the great persons that they show their bravery only on the great ones which are equal to them.

(681)

तृणानि भूमिरुदकं, वाक् चतुर्थी च सूनृता।
एतान्यपि सतां गेहे, नोच्छिद्यन्ते कदाचन॥

आतिथ्य के साधन महाभा. / उद्योग / 33 / 116

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Tṛṇāni bhūmirudakaṁ vāk, caturthī ca sūnṛtā |
Etānyapi satāṁ gehe, nocchidyante kadācana ||

Mahābhā. / Udyoga / 33 / 116

Means to respect a guest

सज्जनों के घर में कम से कम ये चार वस्तुएँ कभी भी समाप्त नहीं होने पातीं — (1) तिनके या आसन, (2) भूमि, (3) पानी तथा (4) मीठी और सच्ची वाणी।

The following four things never come to an end in the houses of good persons :- (1) straws, a seat (2) laṇd, (3) water and (4) sweet and truthful tongue.

(682)

तृष्णां छिन्धि भज क्षमां जहि मदं पापे रतिं मा कृथाः,
सत्यं ब्रूह्यनुयाहि साधु-पदवीं सेवस्व विद्वज्जनान्।
मान्यान् मानय विद्विषोऽप्यनुनय, प्रख्यापय स्वान् गुणान्,
कीर्तिं पालय दुःखिते कुरु दयामेतत् सतां लक्षणम्॥

सज्जनों के कार्य नीतिशतक / 73

Tṛṣṇāṁ chindhi bhaja kṣamāṁ, jahi madaṁ pāpe ratiṁ mā kṛthāḥ,
Satyaṁ brūhyanuyāhi sādhu-padavīṁ, sevasva vidvajjanān |
Mānyān mānaya vidviṣo'pyanunaya, prakhyāpaya svān guṇān,
Kīrtiṁ pālaya duḥkhite kuru dayāmetat satāṁ lakṣaṇam ||

Work of the good people Nītiśataka / 73

सज्जनों में निम्नलिखित गुण होते हैं :— (1) वे लोग लालच से दूर रहते हैं, (2) क्षमाशील होते हैं, (3) अभिमान नहीं करते, (4) पाप में उनकी रुचि नहीं होती, (5) वे सच बोलते हैं, (6) श्रेष्ठ लोगों के मार्ग पर चलते हैं, (7) विद्वानों की सेवा करते हैं, (8) माननीय लोगों का मान करते हैं, (9) शत्रुओं को भी अनुकूल बना लेते हैं, (10) अपने गुणों को सब ओर फैलाते हैं, (11) कीर्ति के कार्य करते हैं और (12) दुःखियों पर दया दिखलाते हैं।

The good persons have the following qualities :- (1) They are not greedy, (2) are tolerant, (3) remain away from arrogance, (4) have no inclination for sins, (5) speak truth, (6) act according to the great persons, (7) serve learned persons, (8) respect respectable persons, (9) befriend even their enemies, (10) expand their qualities everywhere, (11) work to gain fame and (12) show kindness towards troubled persons.

(683)

तृष्णे देवि! नमस्तुभ्यं, यया वित्तान्विता अपि।
अकृत्येषु नियोज्यन्ते भ्राम्यन्ते दुर्गमेष्वपि॥

तृष्णा की शक्ति पञ्चतंत्र / अपरीक्षितकारक / 74

Tṛṣṇe devi! Namastubhyaṁ, yayā vittānvitā api |
Akṛtyeṣu niyojyante bhrāmyante durgameṣvapi ||

Power of greed Pañca. / Aparīkṣita / 74

हे तृष्णा देवी! तुझे नमस्कार है, जो तू धनी लोगों को भी बुरे कामों में लगा देती है और दुर्गम स्थानों पर भी भटकाती रहती है।

O Goddess of greed! We salute you, as you are so powerful due to which even the rich persons indulge into bad works and wander in the places full of risks.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(684)

ते धन्यास्ते विवेकज्ञास्ते सभ्या इह भूतले।
आगच्छन्ति गृहे येषां, कार्यार्थं सुहृदो जनाः॥

श्रेष्ठ गृहस्थ पञ्च. / मित्रभेद / 206

Te dhanyāste vivekajñāste sabhyā iha bhūtale |
Āgacchanti gṛhe yeṣāṁ, kāryārthaṁ suhṛdo janāḥ ||

Best familymen Pañca. / Mitrabhe. / 206

वे धन्य हैं, वे विवेकशील हैं और वे ही इस भूमि पर सभ्य हैं, जिनके घर में मित्र लोग किसी प्रयोजन से आते हैं।

Those are blessed, discriminative and are also civilised persons in this world, to whose houses friends come with some purpose.

(685)

तेनाधीतं श्रुतं तेन, तेन सर्वमनुष्ठितम्।
येनाशाः पृष्ठतः कृत्वा, नैराश्यमवलम्बितम्॥

शिक्षा की सफलता हितोपदेश / 1 / 132

Tenādhītaṁ śrutaṁ tena, tena sarvamanuṣṭhitam |
Yenāśāḥ pṛṣṭhataḥ kṛtvā nairaśyamavalambitam ||

Success of education Hitopa. / 1 / 132

पढ़ा उसी ने, सुना उसी ने, उसी ने सब कुछ किया जिसने सब उम्मीदों को पीछे छोड़ कर आकांक्षाओं का त्याग कर दिया।

In real sense only that person has studied, heard and practised noble principles, who has thrown all desires aside and accepted contentment.

(686)

ते वन्द्यास्ते महात्मानस्तेषां लोके स्थिरं यशः।
यैर्निबद्धानि काव्यानि ये वा काव्येषु कीर्त्तिताः॥

काव्यों द्वारा प्रशंसनीय सुभाषितावलि / 146

Te vandyāste mahātmānasteṣāṁ loke sthiraṁ yaśaḥ |
Yairnibaddhāni kāvyāni, ye vā kāvyeṣu kīrttitāḥ ||

Admirable by literature Subhāṣitā. / 146

वे ही वन्दनीय हैं, वे ही महात्मा हैं, उन्हीं का यश इस लोक में स्थायी हैं, जिन्होंने काव्य-रचना की है अथवा जिनका काव्यों में वर्णन किया गया है।

Only those are adorable, those are great persons and only those have permanent fame in this world, who have composed poetry books or who are mentioned in these books.

(687)

त्यजति किल तं जयश्रीर्जहति च मित्राणि बन्धुवर्गश्च।
भवति च सदोपहास्यो यः खलु शरणागतं त्यजति॥

शरणागत त्याज्य नहीं सुभाषितसंग्रह / 6 / 18

Tyajati kila taṁ jayaśrīrjahati ca mitrāṇi bandhuvargaśca |
Bhavati ca sadopahāsyo yaḥ khalu śaraṇāgataṁ tyajati ||

Refugee — not abandonable Subhāṣitasaṁgraha / 6 / 18

जो व्यक्ति शरण में आए हुए को छोड़ देता है, उसे विजय-लक्ष्मी त्याग देती है, मित्र और सम्बन्धी छोड़ देते हैं और वह सदा उपहासास्पद बन जाता है।

One, who discards a person seeking

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

refuge, is rejected by goddess of victory, deserted by his friends and relatives and is ridiculed by all.

(688)

त्यजेत्क्षुधार्ता महिला स्वपुत्रं,
खादेत्क्षुधार्ता भुजगी स्वमण्डम्।
बुभुक्षितः किं न करोति पापं,
क्षीणा नरा निष्करुणा भवन्ति॥

क्षीण व्यक्ति हितोपदेश / 4 / 60

Tyajetkṣudhārtā mahilā svaputraṁ,
Khādet kṣudhārtā bhujagī svamaṇḍam |
Bubhukṣitaḥ kiṁ na karoti pāpaṁ,
Kṣīṇā narā niṣkaruṇā bhavanti ||

Miserable person Hitopadeśa / 4 / 60

भूख से तड़पती हुई महिला अपने पुत्र को छोड़ देती है और सर्पिणी भूख से व्याकुल होकर अपने अण्डे को भी खा जाती है। भूखा व्यक्ति ऐसा कौन सा पाप है जो नहीं करता? क्षीण मनुष्य निर्दय हो जाते हैं।

A woman oppressed with hunger abandons her son and a female snake distressed with hunger eats her egg. A hungry man can do every sinful work, as a miserable person generally becomes merciless.

(689)

त्यजेदेकं कुलस्यार्थे, ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्।
ग्रामं जनपदस्यार्थे, आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत्॥

त्याज्य वस्तुएँ पञ्च. / मित्रभेद / 307

Tyajedekaṁ kulasyārthe, grāmasyārthe kulaṁ tyajet |
Grāmaṁ janapadasyārthe, ātmārthe pṛthivīṁ tyajet ||

Abandonable things Pañca. / Mitrabhe. / 307

कुल की रक्षा के लिए एक व्यक्ति को, गाँव की रक्षा के लिए एक परिवार को, राज्य के लिए एक गाँव को और अपने बचाव के लिए उस स्थान को ही छोड़ देना चाहिए।

To save a family one man may be lost, to save a village one family may be relinquished, to save a kingdom a village may be destroyed and to save own self, one should leave the very place.

(690)

त्यागभोगविहीनेन, धनेन धनिनो यदि।
भवामः किं न तेनैव, धनेन धनिनो वयम्॥

धन की सदुपयोगिता सुभाषितावलि / 470

Tyāgabhogavihīnena, dhanena dhanino yadi |
Bhavāmaḥ kiṁ na tenaiva, dhanena dhanino vayam ||

Good use of riches Subhāṣitāvali / 470

यदि कोई व्यक्ति ऐसे धन से, जिसे न दान किया जाये और न भोग में लाया जाये, धनी कहला सकता है, तो क्या हम भी उसी धन से धनी नहीं कहला सकते? अर्थात् ऐसा धन व्यर्थ का है जो न दिया जाये और न जिस का उपभोग किया जा सके।

If people are rich on account of the wealth which is not used for self, for others or for pleasure, then

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

why are we not rich on account of the same wealth?

(691)

त्याज्यं न धैर्यं विधुरेऽपि काले,
धैर्यात् कदाचित् स्थितिमाप्नुयात् सः।
याते समुद्रेऽपि च पोतभङ्गे,
सांयात्रिको वाञ्छति तर्तुमेव॥

संकट का साथी धैर्य पञ्चतन्त्र / मित्रभेद / 216

Tyājyaṁ na dhairyaṁ vidhure'pi kāle,
Dhairyāt kadācit sthitimāpnuyāt saḥ।
yāte samudre'pi ca potabhaṅge,
Sāṁyātriko vañchati tartumeva॥

Pañca. / Mitrebhe. / 216

Patience—friend in adversity

विपरीत समय आने पर भी धैर्य कभी नहीं छोड़ना चाहिए, क्योंकि हो सकता है कि धैर्य से हम कभी लक्ष्य को प्राप्त कर ही लें। जैसे समुद्र में जहाज के टूट जाने पर भी उसके यात्री तैरने की ही कामना करते हैं।

In spite of the adverse time one should not relinquish patience. One may get success on account of his patience. At the time of even breach of the ship, the travellers try to swim.

(692)

त्रिविधं नरकस्येदं, द्वारं नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत् त्रयं त्यजेत्॥

नरक के द्वार महाभा. / उद्योग. / 33 / 70

Trividhaṁ narakasyedaṁ, dvāraṁ nāśanamātmanaḥ।
Kāmaḥ krodhastathā lobhastasmādetat trayaṁ tyajet॥

Mahābhā. / Udyoga / 33 / 70

Source of hell

आत्मा को नष्ट करने वाले नरक के ये तीन द्वार हैं : काम, क्रोध तथा लोभ। इसलिए इन तीनों को छोड़ देना चाहिए।

Lust, anger and greed are the three gates which lead to hell and so they are the destructor of the soul. Therefore keep off the group of these three.

(693)

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

मृत्यु का उचित काल ऋ. / 1 / 3 / 10

Tryambakaṁ yajāmahe sugandhiṁ puṣṭivardhanaṁ।
Urvārukamiva bandhanānmṛtyormukṣīya mā'mṛtāt॥

Due time for death Ṛg. / 1 / 3 / 10

तीनों तत्त्वों (ईश्वर, जीव, प्रकृति) और तीनों कालों के ज्ञाता, उत्तम कीर्ति वाले और सबकी पुष्टि बढ़ाने वाले परमेश्वर की हम उपासना करते हैं, उसका ध्यान करते हैं, जिससे जैसे पका हुआ खरबूजा अपनी टहनी से स्वयं पृथक् हो जाता है, वैसे ही हम भी पूर्णायु होने पर देहादि के बन्धन से मुक्त हो जाएँ, परन्तु जन्म और मृत्यु से रहित मोक्ष-अवस्था से हम अलग न हों।

God, who knows the three elements (God, soul and nature) and all three

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

times, whose fame is super-most and who nourishes all, is worshipped by all of us, and we meditate him with full devotion, so that we may be untied from the physical attachment like a musk-melon which after complete ripening becomes separated from its creeper but we should not be separated from salvation.

(694)

त्वमेव चातकाधारोऽसीति कस्य न गोचरः।
किमम्भोदवरास्माकं कार्पण्योक्तिं प्रतीक्षसे॥

भक्त की प्रार्थना नीतिशतक / 46

Tvameva cātakādhāro'sīti kasya na gocaraḥ |
Kimambhodavarāsmākaṁ kārpaṇyoktiṁ pratīkṣase ||

Prayer of a devotee Nītisataka / 46

हे श्रेष्ठ बादल! तुम्हीं चातक के (हमारे) प्राणों के आधार हो, यह बात किस से छिपी है? क्या बरसने के लिए तुम हमारी करुणापूर्ण वाणी की प्रतीक्षा कर रहे हो?

O noble cloud! It is only you on which our life depends upon and this fact is not hidden. Then do you wait for our painful sound to shed rain?

(695)

त्वं हि नः पिता वसो, त्वं माता शतक्रतो बभूविथ।
अधा ते सुम्नमीमहे॥

प्रभु से कामना ऋ. / 8 / 98 / 11

Tvaṁ hi naḥ pitā vaso, tvaṁ mātā śatakrato babhuvitha |
Adhā te sumnamīmahe ||

Ṛg. / 8 / 98 / 1

Auspicious desire from God

हे सबको बसाने वाले परमेश्वर! आप ही हम सबके पिता हैं तथा हे अनेक प्रकार की बुद्धि तथा कर्म वाले प्रभो! आप ही हमारी माता भी हैं अर्थात् निर्माणकर्ता भी हैं। इसी कारण हम आपसे सुख की कामना करते हैं।

O settler of all the creatures God! It is you, who is the father of all and it is you who is the mother of all, who possesses different kinds of wisdom and works. Therefore, we beg you for our happiness and auspicious life.

द = Da

(696)

दंष्ट्राविरहितः सर्पो, मदहीनो यथा गजः।
स्थानहीनस्तथा राजा, गम्यः स्यात् सर्वजन्तुषु॥

हीन शासक पञ्चत. / काकोलूकीय / 47

Daṁṣṭrā-virahitaḥ sarpo, madahīno yathā gajaḥ |
Sthānahīnastathā rājā, gamyaḥ syāt sarvajantuṣu ||

Discarded ruler Pañca. / Kāko. / 47

जैसे दाँत से रहित साँप और मद से रहित हाथी की कोई भी परवाह नहीं करता, वैसे ही

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपने पद से हटे हुए राजा की भी वही दशा होती है।

As a toothless snake and an elephant without rut are overlooked, same is the case with a king, who has lost his position.

(697)

दंष्ट्रिणश्शृङ्गिणश्चैव, प्राज्ञो दूरेण वर्जयेत्।
अवश्यायं च राजेन्द्र, पुरो वातातपौ तथा ॥

इनसे बचिये विष्णुपुराण/3/12/18

Damṣṭriṇaśśṛṅgiṇaścaiva, prājño dūreṇa varjayet |
Avaśyāyaṁ ca Rājendra, puro vātātapau tathā ||

Keep off these Viṣṇpu./3/12/18

हे महाराज! बुद्धिमान् व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह मांसाहारियों तथा सींगों वाले प्राणियों से बच कर दूर ही रहे। इसी प्रकार ओस से तथा सामने की हवा और धूप से भी बचे।

O king! A wise man should remain at long distance from the meat-eater animals and those who have horns. In the same way he should keep off from dew drops and the air and the sunlight which are coming from his front side.

(698)

दक्षः श्रियमधिगच्छति, पथ्याशीः कल्यतां सुखमरोगी।
उद्युक्तो विद्यान्तं, धर्मार्थयशांसि च विनीतः ॥

अधिकारी व्यक्ति हितोपदेश/विग्रह/113

Dhakṣaḥ śriyamadhigacchati, pathyāśīḥ kalyatāṁ sukhamarogī |
Udyukto vidyāntaṁ, dharmārthayaśāṁsi ca vinītaḥ ||

Deserving person Hitopa./Vigrah/113

निपुण व्यक्ति धन-सम्पत्ति को, अनुकूल भोजन करने वाला स्वास्थ्य को, स्वस्थ सुख को, लगनशील पूरी विद्या को तथा नम्र व्यक्ति धर्म, धन और यश सभी को प्राप्त कर लेता है।

A dexterous person gets wealth, the person eating a favourable diet gets health, a healthy man gets happiness, a devotee gets complete education and a humble person obtains religion, riches and fame also.

(699)

दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति।
दण्डः सुप्तेषु जागर्ति दण्डं धर्मं विदुर्बुधाः ॥

दण्ड का महत्त्व महाभारत/शान्तिपर्व/15/2

Daṇḍaḥ śāsti prajāḥ sarvā daṇḍa evābhirakṣati |
Daṇḍaḥ supteṣu jāgarti daṇḍaṁ dharmaṁ vidurbudhāḥ ||

Mahābhā./Śānti/15/2

Importance of the rod of punishment

दण्ड सारी प्रजा को वश में रखता है, दण्ड ही उसकी रक्षा करता है। जब लोग सोते हैं तो दण्ड जागता है। विद्वान् लोग दण्ड को धर्म मानते हैं।

The rod of the king rules over all subjects and protects them. Such rod remains awaken when all are asleep. The wise have designated the rod of the ruler as righteousness itself.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(700)

ददाति प्रतिगृह्णाति गुह्यमाख्याति पृच्छति।
भुङ्क्ते भोजयते चैव षड्विधं प्रीतिलक्षणम्॥

प्रीति के साधन पञ्च. / मित्रसम्प्राप्ति / 50

Dadāti pratigṛhṇāti guhyamākhyāti pṛcchati |
Bhuṅkte bhojayate caiva, ṣaḍvidhaṁ prītilakṣaṇam ||

Pañca. / Mirtrasam / 50

Means of love

प्यार की छह निशानियाँ ये हैं :- (1) देना, (2) लेना, (3) गुप्त बात बताना, (4) गुप्त बात पूछना, (5) खाना और (6) खिलाना।

The following six actions show the love of each other :- (1) to give, (2) to receive, (3) to tell a secret thing, (4) to ask also a secret thing, (5) to eat with and (6) to make the other eat.

(701)

दमेन सदृशं धर्मं नान्यं लोकेषु शुश्रुम।
दमो हि परमो लोके प्रशस्तः सर्वधर्मिणाम्॥

दम का महत्त्व महाभा. / शान्ति. /160 / 10

Damena sadṛśaṁ dharmaṁ nānyaṁ lokeṣu śuśruma |
Damo hi paramo loke praśastaḥ sarvadharmiṇām ||

Mahābhā. / Śānti / 160 / 10

Superiority of the control on mind

मन के वशीकरण के समान संसार में हम किसी अन्य कर्त्तव्य के विषय में नहीं सुनते। मन का वशीकरण ही सभी धार्मिक व्यक्तियों के लिए सबसे उत्तम कर्त्तव्य माना गया है।

There is no such performance which can be compared with the control of mind. This performance is most useful for all the relgious persons.

(702)

दमेन हि समायुक्तो महान्तं धर्ममश्नुते।
सुखं दान्तः प्रस्वपिति, सुखं च प्रतिबुध्यते॥

दम के लाभ महाभा. / शान्तिपर्व / 160 / 12

Damena hi samāyukto mahāntaṁ dharmamaśnute |
Sukhaṁ dāntaḥ prasvapiti, sukhaṁ ca pratibudhyate ||

Mahābhā. / Śānti. / 160 / 12

Anvantages of control on mind

मन पर नियन्त्रण रखने वाला व्यक्ति ही सबसे महान् कर्त्तव्य का पालन करता है। दमनशील व्यक्ति ही सुख की नींद सोता है और सुखपूर्वक ही जागता है।

He, who has control on his mind performs best duty. He enjoys happy sleep and gets up happily.

(703)

दया धर्मस्य मूलं हि, द्रोहः पापस्य कारणम्।
तावद्दया न त्यक्तव्या, यावत्प्राणाः शरीरके॥

दया का महत्त्व हितोपदेश / मित्रलाभ / 12

Dayā dharmasya mūlaṁ hi, drohaḥ pāpasya kāraṇam |
Tāvaddayā na tyaktavyā, yāvatprāṇāḥ śarīrake ||

Hitiopa. / Mitralabha / 12

Importance of kindness

धर्म का मूल दया है। किसी से शत्रुता करने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से मनुष्य पापी बनता है। जब तक शरीर में प्राण हैं, तब तक दया नहीं छोड़नी चाहिए।

Kindness is the root of any religion and enmity is the root of sin. As long as there is life in the body, a man should not abandon kindness.

(704)

दरिद्रता धीरतया विराजते,
कुरूपता शीलतया विराजते।
कुभोजनं चोष्णतया विराजते,
कुवस्त्रता शुभ्रतया विराजते॥

शोभा के साधन (वृद्धचाणक्य)

Daridratā dhīratayā virājate,
Kurūpatā śīlatayā virājate।
Kubhojanaṁ coṣṇatayā virājate,
Kuvastratā śubhratayā virājate॥

Means of beauty Vṛddha Cāṇakya

धैर्य होने से निर्धनता कष्टदायक नहीं होती, कुरूपता शीलादि गुणों के होने पर (लोगों की आँखों में) खटकती नहीं, कुभोजन गरम-गरम होने पर रुचिकर मालूम होता है और खराब वस्त्र भी स्वच्छ और निर्मल होने पर शोभा देते हैं।

Poverty is not troublesome for a man of patience, ugliness is covered with good nature, a low type of diet becomes tasteful if it is hot and low type of garments beautify a person when those are quite clean.

(705)

दर्शने स्पर्शने वाऽपि श्रवणे भाषणेऽपि वा।
यत्र द्रवत्यन्तरङ्गं स स्नेह इति कथ्यते॥

स्नेह का स्वरूप प्रसङ्गाभरण / 26

Darśane sparśane vā'pi śravaṇe bhāṣaṇe'pi vā।
Yatra dravatyantaraṅgaṁ sa sneha iti kathyate॥

Real affection Prasaṅgābharaṇa / 26

जहाँ देखने, छूने, सुनने और बोलने से ही मन द्रवित हो जाता है, उसे स्नेह कहते हैं।

When the mind melts at seeing, touching, listening and speaking of a person, then it is called affection.

(706)

दर्शितानि कलत्राणि गृहे भुक्तमशङ्कितम्।
कथितानि रहस्यानि सौहृदं किमतः परम्॥

आदर्श मित्रता सुभाषितावलि / 2699

Darśitāni kalatrāṇi gṛhe bhuktamaśaṅkitam।
Kathitāni rahasyāni, sauhṛdaṁ kimataḥ param॥

Ideal friendship Subhāsitāvali / 2699

घर में नारियों से मिल लेना, निर्भय होकर भोजन कर लेना और रहस्यों को कहना और सुनना—मित्रता की ऐसी बातों से बढ़कर और क्या हो सकता है? अर्थात् ये ही सच्चे प्यार की बातें हैं।

Having a meeting with the wife and other ladies in a house, fearlessly taking meals and saying and hearing of secrets show real friendship. Nothing is more than this one. This is true love.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(707)

दह्यन्ते ध्मायमानानां धातूनां हि यथा मलाः।
तथेन्द्रियाणां दह्यन्ते दोषाः प्राणस्य निग्रहात्॥

प्राणायाम के लाभ मनु. / 6 / 7

Dahyante dhmāyamānānāṁ dhātūnāṁ hi yathā malāḥ |
Tathendriyāṇāṁ dahyante doṣāḥ prāṇasya nigrahāt ||

Manu. / 6 / 7

Advantage of controlling of breaths

जैसे धौंकनी से धौंकी जाती हुई धातुओं की गन्दगी नष्ट हो जाती है, उसी प्रकार प्राणों के निग्रह (प्राणायाम) से इन्द्रियों के विकार दूर हो जाते हैं।

As the impurities are removed of the minerals by blows of bellows, in the same way the defects of organs are removed by controlling of Prāṇa (breathings).

(708)

दाक्षिण्यं स्वजने दया परिजने शाठ्यं सदा दुर्जने।
प्रीतिः साधुजने नयो नृपजने विद्वज्जने चार्जवम्॥
शौर्यं शत्रुजने क्षमा गुरुजने नारीजनेऽधृष्टता।
ये चैवं पुरुषाः कलासु कुशलास्तेष्वेव लोकस्थितिः॥

कलाकुशल व्यक्ति नीतिशतक / 21

Dākṣiṇyaṁ svajane dayā parijane śāṭhyaṁ sadā durjane |
Prītiḥ sādhujane nayo nṛpajane vidvajjane cārjavam ||
Śauryaṁ śatrujane kṣamā gurujane nārījane'dhṛṣṭatā |
Ye caivaṁ puruṣāḥ kalāsu kuśalāsteṣveva lokasthitiḥ ||

Artful persons Nītiśataka / 21

अपने लोगों के प्रति शालीनता, नौकर-चाकरों के प्रति दया, दुष्टों के प्रति दण्ड देने का भाव, श्रेष्ठ लोगों से प्रेम, राजाओं में नीति का आचरण, विद्वानों के प्रति सरल व्यवहार, शत्रुओं के सम्मुख वीरता, बड़े लोगों के प्रति सहनशीलता, स्त्रियों के प्रति सत्कार की भावना – इस प्रकार की व्यावहारिक कलाओं में जो लोग निपुण हैं, उन्हीं के कारण यह संसार टिका हुआ है।

This world is going on due to the arts of some persons, who practise their behaviour in the following manners :- (1) politeness towards own relatives, (2) kindness towards servants, (3) punishment to bad persons, (4) affection for good people (5) politics towards the rulers, (6) modesty towards the learned persons, (7) bravery towards enemies, (8) tolerance towards elders and (9) respect towards ladies.

(709)

दाक्ष्यं ह्यमर्षः शौर्यं च, शीघ्रत्वमिति तेजसः।
गुणाः क्रोधाभिभूतेन, न शक्याः प्राप्तुमञ्जसा॥

क्रोध से हानि महाभा. / वनपर्व / 29 / 20

Dākṣyaṁ hyamarṣaḥ śauryaṁ ca, śighratvamiti tejasaḥ |
Guṇāḥ krodhābhibhūtena, na śakyāḥ prāptumañjasā ||

Mahābhā. / Vana. / 29 / 20

Loss due to anger

दक्षता, अत्याचार को न सहना, पराक्रम और शीघ्रता ये जो तेज के गुण हैं, इनको क्रोध से भरा हुआ मनुष्य ठीक-ठाक प्राप्त नहीं कर सकता।

A man who is over powered with

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

his anger cannot obtain easily the following qualities of lustre :- (1) dexterity, (2) opposing oppression, (3) bravery and (4) quickness.

(710)

दातव्यं भोक्तव्यं धनविषये सञ्चयो न कर्त्तव्यः।
पश्येह मधुकरीणां सञ्चितमर्थं हरन्त्यन्ये॥

धन-सञ्चय पञ्चतन्त्र / मित्रसम्प्राप्ति / 153

Dātavyaṁ bhoktavyaṁ dhanaviṣaye sañcayo na karttavyaḥ।
Paśyeh madhukarīṇāṁ sañcitamarthaṁ harantyanye॥

Pañca. / Mitrasam. / 153

Hoarding of money

दान दे देना चाहिए या उपभोग कर लेना चाहिए परन्तु धन का संचय नहीं करना चाहिए। देखो तो सही कि इस संसार में मधुमक्खियों के द्वारा संचित मधु को दूसरे लोग ले जाते हैं।

As regarding wealth, it should be given away in charity and enjoyed, but should not be merely stored up. Please note, how others take away the wealth of the bees (honey) stored up by them.

(711)

दातव्यमिति यद्दानं, दीयतेऽनुपकारिणे।
देशे काले च पात्रे च, तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम्॥

सात्त्विक दान महाभा. / भीष्मपर्व / 41 / 20

Dātavyamiti yaddānaṁ, dīyate'nupakāriṇe।
Deśe kāle ca pātre ca, taddānaṁ sāttvikaṁ smṛtam॥

Pious charity Mahābhā. / Bhiṣma. / 41 / 20

'हमें दान करना चाहिए' यह सोचकर जो दान देश, काल और योग्य पात्र को समझकर ऐसे व्यक्ति को दिया जाता है, जिससे हम बदले की आशा नहीं रखते, वही दान सात्त्विक कहलाता है।

'We should give some charity. If we give charity to such a person from whom we expect nothing and give according to the place, time and deserving person, then this gift is called pious.

(712)

दाता लघुरपि सेव्यो भवति,
न कृपणो महानपि समृद्ध्या।
कूपोऽन्तः स्वादुजलः प्रीत्यै लोकस्य, न समुद्रः॥

सेवा-योग्य व्यक्ति पञ्च. / मित्रसम्प्राप्ति / 74

Dātā laghurapi sevyo bhavati,
Na kṛpaṇo mahānapi smṛddhyā।
Kūpo'ntaḥ svādujalaḥ prītyai lokasya, na samudraḥ॥

Pañca. / Mitrasam. / 74

Fit to be served

उदार हृदय वाला छोटा व्यक्ति भी सेवा करने के योग्य होता है, परन्तु धन-सम्पत्ति का स्वामी कंजूस सेवनीय नहीं होता। मीठे जल वाला कुआँ लोगों को अच्छा लगता है, परन्तु अथाह जल का स्वामी खारा सागर किसी को नहीं भाता।

A man having little money but generous is serviceable. On the other hand a richman possessing much wealth but miser is not worth of service. The well which has little but tasty water is appreciated by the people, but not the sea which is over-flowing with saltish water.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(713)

दातृत्वं प्रियवक्तृत्वं धीरत्वमुचितज्ञता।
अभ्यासेन न लभ्येरन् चत्वारः सहजा गुणाः॥

स्वाभाविक गुण (वृद्धचाणक्य)

Dātṛtvaṁ priyavaktṛtvaṁ, dhiratvamucitajñatā।
Abhyāsena na labhyeran catvāraḥ sahajā guṇāḥ॥

Natural merits Vṛddhacāṇakya

देने का गुण, मधुर बोलने का गुण, धैर्यशीलता और विवेकशीलता ये चार गुण जन्मतः प्राप्त होते हैं, अभ्यास से इन्हें प्राप्त नहीं किया जा सकता।

Generosity, sweet speaking, patience and discrimination, these four qualities come with birth and cannot be obtained by practice.

(714)

दानं दरिद्रस्य विभोः क्षमित्वं,
यूनस्तपो ज्ञानवतश्च मौनम्।
इच्छानिवृत्तिश्च सुखोचितानां,
दया च भूतेषु दिवं नयन्ति॥

स्वर्गप्रद गुण सुभाषितावलि / 2908

Dānaṁ daridrasya vibhoḥ kṣamitvaṁ,
Yūnastapo jñānavataśca maunam।
Icchānivṛttiśca sukhocitānāṁ,
Dayā ca bhūteṣu divaṁ nayanti॥

Subhāsitāvali / 2908

Qualities leading to heaven

दरिद्र का दान देना, दण्ड देने में समर्थ व्यक्ति का क्षमा-भाव, जवान मनुष्य का तप में लगना, ज्ञानी का मौन धारण करना, सब प्रकार के सुख भोगने में समर्थ मनुष्य में सुखों के भोग की इच्छा का न होना तथा जीवों पर दया का भाव होना ये बातें स्वर्ग देने वाली हैं।

Giving alms by the poor, pardoning by a powerful person, practising penance by a youngman, keeping silence by a conversant person, being desireless by the persons who has all kinds of facilities and kindness towards all creatures are helpful in attaining the heaven.

(715)

दानं धर्मश्च विद्या च, रूपं शीलं कुलं तथा।
सुखमायुर्यशश्चैव, नव गोप्यानि यत्नतः॥

गोपनीय वस्तुएँ चाणक्यनीतिशास्त्र

Dānaṁ dharmaśca vidyā ca, rūpaṁ śīlaṁ kulaṁ tatha।
Sukhamāyuryaśaścaiva, nava gopyāni yatnataḥ॥

Worth to keep secret Cāṇkyanitiśāstra

दिया हुआ दान, किया हुआ शुभ कर्म, अपनी विद्या, अपना सौन्दर्य, उत्तम स्वभाव, अपने खानदान की बातें, सुख के साधन, आयु और कीर्ति की बातें – ये नौ वस्तुएँ गोपनीय हैं; इनका ढिंढोरा नहीं पीटना चाहिए।

The following nine things should be kept secret :- (1) giving of alms, (2) any good work done, (3) own learning, (4) own beauty, (5) good qualities, (6) family matters, (7) means of happiness, (8) age (9) and matters of own fame. These should not be disclosed every where.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(716)

दानं प्रियवाक्सहितं ज्ञानमगर्वं क्षमान्वितं शौर्यम्।
द्रविणं त्यागनियुक्तं दुर्लभमेतच्चतुष्टयं लोके॥

चार दुर्लभ वस्तुएँ हितोपदेश/1/156

Dānaṁ priyavāksahitaṁ,
Jñānamagarvaṁ kṣamānvitaṁ śauryam।
Draviṇaṁ tyāganiyuktaṁ,
Durlabhametaccatuṣṭayaṁ loke॥

Hitopa. / 1 / 156

Difficult to gain four things

मीठे वचनों के साथ दान, अहंकार-रहित ज्ञान, क्षमायुक्त शौर्य, दान से युक्त धन-ये चार वस्तुएँ संसार में दुर्लभ हैं।

A gift accompanied with sweet words, knowledge without vanity, courage attained by forbearance and wealth spent in charity; these four things are rare in the world.

(717)

दानं भोगो नाशस्तिसो गतयो भवन्ति वित्तस्य।
यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति॥

धन की तीन अवस्थाएँ नीतिशतक/39

Dānaṁ bhogo nāśastisro gatayo bhavanti vittasya।
Yo na dadāti na bhuṅkte tasya tṛtīyā gatirbhavati॥

Three states of riches Nītiśataka / 39

धन की तीन गतियाँ होती हैं — (1) दान, (2) भोग और (3) नाश। जो न दान करता है और न धन को काम में लगाता है, उसका धन नष्ट हो जाता है।

These are the three states of riches :- (1) giving alms (2) enjoyment and (3) destruction. One who neither gives nor enjoys it, his money is destroyed.

(718)

दानपात्रमतिक्रम्य यदपात्रे प्रदीयते।
तद्दत्तं गामतिक्रम्य गर्दभस्य गवाह्निकम्॥

अपात्र को दान स्कन्दपुराण (मा० को 5/11)

Dānapātramatikramya yadapātre pradīyate।
Taddattaṁ gāmatikramya gardabhasya gavāhnikam॥

Skandapu. / Mā. Ko. 5 / 11

Charity given to undersving

दान के योग्य व्यक्ति को छोड़कर जो दान अयोग्य व्यक्ति को दिया जाता है, वह गवाह्निक दान गाय को छोड़कर गधे को देने के बराबर है।

What ever is given to an undeserving person ignoring the deserving one, would be like giving the share of a cow to an ass ignoring the cow.

(719)

दानमध्ययनं यज्ञस्तपो ह्रीरार्जवं दमः।
एतैर्वर्धयते तेजः पाप्मानं चापकर्षति॥

तेजस्विता के साधन महाभा./शान्तिपर्व/235/7

Dānamadhyayanaṁ yajñastapo hṛīrārjavaṁ damaḥ।
Etairvardhayate tejaḥ pāpmānaṁ cāpakarṣati॥

Mahābhā. / Śānti / 235 / 7

Means of glory

दान, स्वाध्याय, यज्ञ, तप, बुरे कार्यों से लज्जा,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सरलता और मन के वशीकरण द्वारा मनुष्य का तेज बढ़ता है और पापवृत्ति नष्ट हो जाती है।

Charity, study of good books, sacrifice, penance, hate for bad works, simplicity and controlling of mind increase the lustre and decrease the inclination of committing sins.

(720)

दानमिज्या तपो ध्यानं स्वाध्यायोपस्थनिग्रहौ।
व्रतौपवासौ मौनं च स्नानं च नियमा दश॥

दैनिक कर्त्तव्य सुभाषितावलि / 2996

Dānamijyā tapo dhyānaṁ svādhyāyopasthanigrahau |
Vrataupavāsau maunaṁ ca snānaṁ ca niyamā daśa ||

To be done daily Subhāṣitāvali / 2996

दान, यश, तप, ध्यान, स्वाध्याय, जननेन्द्रिय का निग्रह, संकल्पपूर्ण व्रत, उपवास, मौन रहना और स्नान – ये दस दैनिक नियम हैं।

The following are ten rules to be performed daily :- (1) charity, (2) sacrifice, (3) penance (4) meditation, (5) study of the Vedas etc., (6) control on the genital organs, (7) performing any determination, (8) fasting (9) silence and (10) bathing.

(721)

दानार्थिनो मधुकरा यदि कर्णतालै-
र्दूरीकृताः करिवरेण मदान्धबुद्ध्या।
तस्यैव गण्डयुगमण्डनहानिरेषा,
भृङ्गाः पुनर्विकचपद्मवने चरन्ति॥

दानार्थी त्याज्य नहीं अज्ञात

Dānārthino madhukarā yadi karṇatālai-
rdūrīkṛtāḥ karivareṇa madāndhabuddhyā |
Tasyaiva gaṇḍayugamaṇḍana-hānireṣā,
Bhṛṅgāḥ punarvikacapadmavane caranti ||

Don't disgrace a beggar Unknown

यदि मद से अन्धी हुई बुद्धि के कारण इस बड़े हाथी ने मद की चाह करने वाले भौरों को कानों के थपेड़ों से भगा दिया है, तो इससे उसी के गण्डस्थलों की शोभा की हानि हुई है। भौंरे तो फिर भी खिले हुए कमलवन में घूम रहे हैं।

If the black-bees which wanted rut were dispelled by the big elephant by flapping of ears, because of his sense, which becomes blind with intoxication, it is the loss of the decoration of his pair of temples. Black bees are, of course, moving in the forest of blooming lotuses.

(722)

दानेन तुल्यो निधिरस्ति नान्यो,
लोभाच्च नान्योऽस्ति रिपुः पृथिव्याम्।
विभूषणं शीलसमं न चान्यत्,
सन्तोषतुल्यं धनमस्ति नान्यत्॥

अतुलनीय वस्तुएँ पञ्चतन्त्र / मित्रसम्प्राप्ति / 155

Dānena tulyo nidhirasti nānyo,
Lobhācca nānyo'sti ripuḥ pṛthivyām |
Vibhūṣaṇaṁ śīlasamaṁ na cānyat,
Santoṣatulyaṁ dhanamasti nānyat ||

Matchless things Pañca. / Mitrasam. / 155

दान के समान दूसरा कोई खजाना नहीं है और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लोभ से बढ़कर पृथ्वी पर कोई दूसरा शत्रु नहीं है। उत्तम स्वभाव के समान कोई दूसरा अलंकार नहीं है और सन्तोष की तुलना में कोई दूसरा धन भी नहीं है।

There is no other better treasury than giving of alms, and no worse enemy than greediness. There is no better ornament than nobility and no other wealth better than contentment.

(723)

दानेन पाणिर्न तु कङ्कणेन,
स्नानेन शुद्धिर्न तु चन्दनेन।
मानेन तृप्तिर्न तु भोजनेन,
ज्ञानेन मुक्तिर्न तु मण्डनेन॥

दान आदि का महत्त्व चाणक्यनीति / 17 / 12

Dānena pāṇirna tu kaṅkaṇena,
Snānena śuddhirna tu candanena |
Mānena tṛptirna tu bhojanena,
Jñānena muktirna tu maṇḍanena ||

Cāṇakyanīti / 17 / 12

Importance of charity etc.

हाथ की शोभा दान से होती है, कंगन से नहीं, नहाने से शरीर की शुद्धि होती है, चन्दन के लेप से नहीं, मान प्राप्ति से तृप्ति होती है, भोजन से नहीं और ज्ञान से ही मोक्ष मिलता है शरीर की सजावट से नहीं।

The beauty of the hand is in giving of alms, not by a bangle. The body is cleaned with taking bath but not with sandle. Man becomes satisfied with honour, but not with meals. It is spiritual knowledge, which leads to salvation and not the decoration of the body.

(724)

दानेन प्राप्यते स्वर्गः, श्रीर्दानेनैव लभ्यते।
दानेन शत्रूञ्जयति, व्याधिर्दानेन नश्यति॥

दान के लाभ सूक्तिनिधिः / पृ. 22

Dānena prāpyate svargaḥ, śrīrdānenaiva labhyate |
Dānena śatrūñjayati, vyādhirdānena naśyati ||

Advantages of charity Sūktinidhi / P. 22

दान से स्वर्ग की प्राप्ति होती है, दान से ही लक्ष्मी मिलती है, दान से ही मनुष्य शत्रुओं को जीतता है और दान से ही रोग नष्ट होता है।

Charity leads to heaven and wealth is gained by charity. A man wins his enemies with charity and it is charity that removes any disease.

(725)

दानेन लभ्यते विद्या, पत्नी दानेन प्राप्यते।
धर्मार्थकाममोक्षाणां, दानं हि साधनं परम्॥

दान के लाभ सूक्तिनिधि / पृ. / 122

Dānena labhyate vidyā, patnī dānena prāpyate |
Dharmārthakāmamokṣāṇāṁ dānaṁ hi sādhanaṁ param ||

Advantages of charity Sūktinidhi / P. 122

दान से विद्या प्राप्त होती है, पत्नी दान द्वारा ही मिलती है और धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष का सबसे उत्कृष्ट साधन दान ही है।

Charity is the source of learning. A wife is obtained by charity and

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

the best means for salvation is only charity.

(726)

दारिद्र्यं यौवने यस्य शैशवे मातृहीनता।
वार्धक्यं पुत्रहीनत्वं जीवितं तस्य निष्फलम्॥

निष्फल जीवन कवितामृतकूप / 6

Dāridryaṁ yauvane yasya, śaiśave mātṛhīnatā |
Vārdhakyaṁ putrahīnatvaṁ, jīvitaṁ tasya niṣphalam ||

Useless life Kavitāmṛtakūpa / 6

जो जवानी में दरिद्र हो, बचपन में मातृहीन हो और बुढ़ापे में पुत्रहीन, उसका जीवन निष्फल है।

One who has poverty in youth, is mother-less in childhood and son-less in old age, his life is useless.

(727)

दारिद्र्यरोग-दुःखानि बन्धनव्यसनानि च।
आत्मापराधवृक्षस्य फलान्येतानि देहिनाम्॥

दुष्कर्मों के फल पञ्च. / काकोलूकीय / 152

Dāridrya-roga-duḥkhāni bandhana-vyasanāni ca |
Ātmāparādha-vṛkṣasya phalānyetāni dehinām ||

Results ofbad deeds Pañca. / Kako. / 152

गरीबी, बीमारियाँ, अन्य प्रकार के दुःख, कैद और संकट – ये सब प्राणियों के निजी किए गए अपराधरूपी वृक्ष के फल हैं।

Poverty, diseases, troubles, prison and adversity—all these are the fruits of sin-tree planted by the creatures themselves.

(728)

दारिद्र्यात् पुरुषस्य बान्धवजनो वाक्ये न संतिष्ठते,
सुस्निग्धाः विमुखीभवन्ति सुहृदः स्फारीभवन्त्यापदः।
सत्त्वं ह्रासमुपैति शीलशशिनः कान्तिः परिम्लायते,
पापं कर्म च यत्परैरपि कृतं तत्तस्य सम्भाव्यते॥

दरिद्रता से हानियाँ मृच्छकटिक / 1 / 36

Dāridryāt puruṣasya bāndhavajano vākye na saṅtiṣṭhate,
Susnigdhāḥ vimukhībhavanti suhṛdaḥ sphārībhavantyāpadaḥ |
Sattvaṁ hrāsamupaiti śīlaśaśinaḥ kāntiḥ parimlāyate,
Pāpaṁ karma ca yatparairapi kṛtaṁ tattasya sambhāvyate ||

Mṛcchakatika / 1 / 36

Harms due to poverty

निर्धनता के कारण पुरुष के सम्बन्धी उसकी बात नहीं मानते, प्यारे मित्र मुँह फेर लेते हैं, मुसीबतें बढ़ जाती हैं, बुद्धि काम नहीं करती, शील-रूपी चन्द्रमा की शोभा मुरझा जाती है और किसी दूसरे द्वारा किया गया अपराध भी उसी के माथे मढ़ दिया जाता है।

Due to poverty relatives of a man do not abide by his wishes, affectionate friends turn away from him, difficulties are extended, intellect weakens, brilliance of the moon of virtue gets dim and sinful act committed even by others is attributed to him.

(729)

दारिद्र्यान्मरणाद्वा मरणं मम रोचते न दारिद्र्यम्।
अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम्॥

दरिद्रता मृत्यु से भी हानिकर मृच्छकटिकम्/1/11

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Dāridryānmaraṇādvā maraṇaṁ mama rocate na dāridryam |
Alpakleśaṁ maraṇaṁ dāridryamanantakaṁ duḥkham ||

Mṛcchakutika / 1 / 11

Poverty more dreadful even than death

दरिद्रता और मृत्यु इन दोनों में से मृत्यु मुझे पसन्द है, दरिद्रता नहीं। मृत्यु से अल्पकाल तक दुःख होता है, दरिद्रता तो अनन्तकाल तक दुःख देती है।

Out of poverty and death, I would prefer death; not poverty. Death causes little trouble while poverty is misery for ever.

(730)

दारेषु किञ्चित्स्वजनेषु किञ्चिद्,
गोप्यं वयस्येषु सुतेषु किञ्चिद्।
युक्तं न वा युक्तमिति विचिन्त्य,
वदेद्विपश्चिन्महतोऽनुरोधात् ॥

गोपनीय वस्तुएँ पञ्च./मित्रभेद/15

Dāreṣu kiñcitsvajaneṣu kiñcid,
Gopyaṁ vayasyeṣu suteṣu kiñcid |
Yuktaṁ na vā yuktamiti vicintya,
Vadedvipaścinmahato'nurodhāt ||

Pañca. / Mitrabhe. / 15

Things to be concealed

कुछ बातें स्त्रियों से, कुछ सम्बन्धियों से, कुछ मित्रों से और कुछ पुत्रों से छिपाने योग्य होती हैं। समझदार व्यक्ति को चाहिए कि वह बताना उचित है या अनुचित है, यह सोचकर बहुत आग्रह करने पर ही बात बताए।

Some matters are worth concealing from ladies, some from relatives, some from friends and some from sons. A wise man while disclosing any matter should think whether it is just or unjust and after that he may disclose after much insistence.

(731)

दिनचर्यां निशाचर्यामृतुचर्यां यथोदिताम्।
आचरन् पुरुषः स्वस्थः सदा तिष्ठति नान्यथा ॥

स्वस्थ रहने के ढंग भावप्रकाश / पूर्वखण्ड / 13

Dinacaryāṁ niśācaryāmṛtucaryāṁ yathoditām |
Ācaran puruśaḥ svasthaḥ sadā tiṣṭhati nānyathā ||

Bhavapra. / I / 13

Method to remain healthy

जिस प्रकार यहाँ दिन, रात और ऋतुओं में कार्य करने की विधियाँ बताई गई हैं, उसी प्रकार अर्थात् उसी के अनुसार आचरण करता हुआ मनुष्य स्वस्थ रह सकता है; अन्यथा नहीं।

As the routines of day, night and seasons are given here, if a man acts according to them, he remains healthy, otherwise not.

(732)

दिवा पश्यति नोलूकः, काको नक्तं न पश्यति।
अपूर्वः कोऽपि कामान्धो, दिवानक्तं न पश्यति ॥

कामान्ध महापापी अज्ञात

Divā paśyati nolūkaḥ, kāko naktaṁ na paśyati |
Apurvaḥ ko'pi kāmāndho, divānaktaṁ na paśyati ||

Unknown

A sexual person is great sinner

उल्लू दिन में नहीं देखता, कौवा रात में नहीं देखता है, परन्तु कामान्ध ऐसा विचित्र जीव है कि वह न दिन में देखता है; और न रात में।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

An owl cannot see in day time and a crow is unable to see during the night, but it is strange that a man blind due to lust neither looks in the day nor in the night.

(733)

दिवा स्वापं न कुर्वीत, यतोऽसौ स्यात्कफावहः।
ग्रीष्मवर्ज्येषु कालेषु, दिवास्वप्नो निषिध्यते॥

दिन में शयन भावप्रकाश/पूर्वखण्ड/215

Divā svāpaṁ na kurvīta, yato'sau syātkaphāvahaḥ।
Grīṣmavarjyeṣu kāleṣu, divāsvapno niṣidhyate॥

Day sleeping Bhāvapra. / I / 2 / 5

क्योंकि दिन में सोने से कफ बढ़ जाता है, अतः दिन में नहीं सोना चाहिए, परन्तु गर्मियों में दिन में भी सो सकते हैं; अन्य ऋतुओं में दिन में सोना निषिद्ध है।

As sleeping in the day time increases phlegm, so except summer season day-sleeping should be rejected. In the summer season a man can enjoy sleep in day time also.

(734)

दिव्यं चूतफलं प्राप्य, गर्वं नायाति कोकिलः।
पीत्वा कर्दमपानीयं, भेको बकबकायते॥

महापुरुषों का गुण नराभरण/68

Divyaṁ cūtaphalaṁ prāpya, garvaṁ nāyāti kokilaḥ।
Pītvā kardamapānīyaṁ, bheko bakabakāyate॥

Quality of the great Narābharana / 68

सुन्दर आम के फल को भी प्राप्त करके कोयल गर्वित नहीं होती, परन्तु मेंढक कीचड़ से युक्त गंदे पानी को भी पीकर टर्राता फिरता है।

By getting even a charming mango-fruit a cuckoo does not get puffed up while a frog drinking muddy water croaks.

(735)

दीपाः स्थितं वस्तु विभावयन्ति,
कुलप्रदीपास्तु भवन्ति केचित्।
चिरव्यतीतानपि पूर्वजान् ये,
प्रकाशयन्ति स्वगुणप्रकर्षात्॥

आदर्श सन्तानें सुभाषितावलि / 258

Dīpāḥ sthitaṁ vastu vibhāvayanti,
Kulapradīpāstu bhavanti kecit।
Ciravyatītānapi pūrvajān ye,
Prakāśayanti svaguṇaprakarśāt॥

Ideal descendants Subhāsitāvali / 258

दीपकों से वर्तमान वस्तु प्रकाश में आती है किन्तु कुछ व्यक्ति कुल-दीपक होते हैं जो चिरकाल पूर्व नष्ट हुए पूर्वजों को भी प्रकाश में ले आते हैं।

Lamps show the present things, but there are some such family-lamps who with their own profound qualities bring their ancestors to light who had died in the remote past.

(736)

दीपो भक्षयते ध्वान्तं कज्जलं च प्रसूयते।
यदन्नं भक्षयेन्नित्यं जायते तादृशी प्रजा॥

जैसा अन्न, वैसा मन वृद्धचाणक्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Dīpo bhakṣayate dhvāntaṁ kajjalaṁ ca prasūyate |
Yadannaṁ bhakṣayennityaṁ jāyate tādṛśī prajā ||

As one eats, so he thinks Vṛddhacāṇa

दीपक अन्धकार का भक्षण करता है और कज्जल को उत्पन्न करता है। ठीक ही है कि जैसा अन्न सदैव सेवन किया जाता है, वैसी ही प्रजा (सन्तान) होती है।

A lantern removes darkness and bears soot. So it is true that as one eats daily, like that his offsprings are born.

(737)

दीर्घं वैरमसूया च असत्यं ब्रह्मदूषणम्।
पैशुन्यं निर्दयत्वं च जानीयाच्छूद्रलक्षणम्॥

शूद्र के अवगुण वसिष्ठस्मृति/6/23

Dīrghaṁ vairamasūyā ca, asatyaṁ brahmadūṣaṇam |
Paiśunyaṁ nirdayatvaṁ ca jānīyācchūdra-lakṣaṇam ||

Definition of Śudra Vasiṣṭhasmṛti / 6 / 23

दीर्घ काल तक वैर, रखना, असूया, असत्यभाषण, ज्ञानियों को बुरा कहना, व्यभिचार, चुगली और निर्दयता — ये शूद्र के लक्षण हैं।

Long enmity, jealousy, untruthfulness, uncharity, backbiting and cruelty - are the differenciating qualities of a Śudra.

(738)

दीर्घ-प्रयासेन कृतं हि वस्तु,
निमेषमात्रेण भजेद् विनाशम्।
कर्तुं कुलालस्य तु वर्षमेकं,
भेत्तुं हि दण्डस्य मूहूर्तमात्रम्॥

निर्माण और विनाश में कालभेद सूक्तिमुक्तावली/पृ. 84

Dirgha-prayāsena kṛtaṁ hi vastu,
Nimeṣamātreṇa bhajed vināśam |
Kartuṁ kulālasya tu varṣamekaṁ,
Bhettuṁ hi daṇḍasya muhūrtamātram ||

Time difference in creation and destroying Suktimuktāvali / P. 84

लम्बे समय तक किये गये प्रयास से बनी हुई वस्तु पलक झपकते ही नष्ट हो सकती है। कुम्हार को बर्तन बनाने में तो एक वर्ष लगता है, पर दण्ड को उन्हें तोड़ने में एक क्षण-मात्र लगता है।

A thing brought into existence with long effort can be destroyed within the twinkling of an eye. A potter may take a year to make pots but a rod may take only a moment to break them.

(739)

दुःखितानीह भूतानि, दृष्ट्वा स्याद् यो न दुःखितः।
केवलात्महितेच्छोस्तु, को नृशंसतरस्ततः॥

क्रूरहृदय महाभा./अनुशासन पर्व/50/13

Duḥkhitānīha bhūtāni, dṛṣṭvā syād yo na duḥkhitaḥ |
Kevalātmahitecchostu, ko nṛśaṁsatarastataḥ ||

Cruel mind Mahābhā. / Anu. / 50 / 13

इस संसार में दुःखी प्राणियों को देखकर जो दुःखी नहीं होता, वह व्यक्ति पूर्ण स्वार्थी है। उससे बढ़ कर क्रूर दूसरा कौन हो सकता है?

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

In this world, the man who does not feel the pain of others, is full of selfishness. Who is more cruel than such a person?

(740)

दुःखितोऽपि चरेद्धर्मं यत्र कुत्राश्रमे रतः।
समः सर्वेषु भूतेषु न लिङ्गं धर्मकारणम्॥

धर्माचरण आवश्यक हितोपदेश/1/81

Duḥkhito'pi careddharmaṁ yatra kutrāśrame rataḥ |
Samaḥ sarveṣu bhūteṣu, na liṅgaṁ dharmakāraṇam ||

Hitopadeśa / 1 / 81

Practice of morality necessary

दुःख में पड़े होने पर भी, जिस किसी आश्रम में रहते हुए भी व्यक्ति को सब प्राणियों को समान समझकर धर्म का आचरण करना चाहिए। धर्माचरण के लिए किसी विशेष चिह्न की आवश्यकता नहीं होती।

A man should perform his religious duties even in troubles and staying in any āśrama, behaving equally with all creatures. Any kind of sign is not necessary for performance of religious duties.

(741)

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतरागभयक्रोधः, स्थितधीर्मुनिरुच्यते॥

स्थिरबुद्धि का लक्षण महाभा./भीष्मप./26/56

Duḥkheṣvanudvignamanāḥ sukheṣu vigataspṛhaḥ |
Vītarāgabhayakrodhaḥ, sthitadhīrmunirucyate ||

Mahābhā. / Bhīṣmap. / 26 / 56

Definition of stable mind

जो दुःखों से व्याकुल नहीं होता, सुख-साधनों की कामना नहीं करता और जो राग, भय और क्रोध से प्रभावित नहीं होता, वही स्थिर बुद्धि वाला मुनि कहा जाता है।

A man who does not become perplexed, does not desire means of happiness and who is not influenced by attachment, fear and anger is called well-determind sage.

(742)

दुःशीलः कामवृत्तो वा धनैर्वा परिवर्जितः।
स्त्रीणामार्यस्वभावानां परमं दैवतं पतिः॥

श्रेष्ठ नारियों का देवता — पति वा. रा. /अयोध्या./116/22

Duḥśīlaḥ kāmavṛtto vā dhanairvā parivarjītaḥ |
Strīṇāmāryasvabhāvānāṁ paramaṁ daivataṁ patiḥ ||

Vā. Rā. / Ayodhyā / 116 / 22

Husband as a god for good wives

भले ही पति दुष्ट प्रकृत्ति का, कामवृत्ति का या मनमानी करने वाला अथवा धनहीन हो, तो भी श्रेष्ठ स्वभाव वाली स्त्रियों के लिए पति ही परम देवता है।

In spite of the bad temperament, having tendency of lust or being poor, the husband is the supreme god for the women of noble nature.

(743)

दुराचारो हि पुरुषो, लोके भवति निन्दितः।
दुःखभागी च सततं, व्याधितोऽल्पायुरेव च॥

दुराचार से हानियाँ मनु./4/157

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Durācāro hi puruṣo, loke bhavati ninditaḥ ।
Duḥkhabhāgī ca satataṁ, vyādhito'lpāyureva ca ॥

Loss due to bad character Manu. / 4 / 157

बुरे चाल-चलन वाला पुरुष संसार में बदनाम हो जाता है तथा लगातार दुःखी रहता है। उसे रोग घेरे रखते हैं और उसकी आयु कम हो जाती है।

A man of bad character becomes defamed in the world and alway remains sad. Diseases attack him and his age decreases.

(744)

दुरधीता विषं विद्या, अजीर्णे भोजनं विषम्।
विषं गोष्ठी दरिद्रस्य वृद्धस्य तरुणी विषम्॥

विष सदृश वस्तुएँ चाणक्यशतक

Duradhitā viṣaṁ vidyā, ajīrṇe bhojanaṁ viṣam ।
Viṣaṁ goṣṭhī daridrasya, vṛddhasya taruṇī viṣam ॥

Things like poison Cāṇakyaśataka

ठीक न पढ़ी हुई विद्या, अजीर्ण होने पर सेवन किया हुआ भोजन, दरिद्र के लिए गपशप द्वारा समय नष्ट करना और वृद्ध के लिए तरुण पत्नी का होना विषसम (हानिकर) होते हैं।

Learning without understanding, eating food in the condition of indigestion, wasting time in useless talks by the poor and a young wife for an old person are poisonous, i.e. very harmful.

(745)

दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययाऽलङ्कृतोऽपि सन्।
मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयङ्करः॥

दुष्टों से दूर रहो नीतिशतक/53

Durjanaḥ parihartavyoḥ, vidyayā'laṅkṛto'pi san ।
Maṇinā bhūṣitaḥ sarpaḥ kimasau na bhayaṅkaraḥ ॥

Keep off bad persons Nītiśataka / 53

दुष्ट व्यक्ति का, भले ही वह विद्या से सुशोभित भी क्यों न हो, परित्याग ही करना चाहिए। क्या मणि से भूषित साँप भयंकर नहीं होता? अर्थात् निश्चय ही होता है और इसी प्रकार पढ़ा हुआ दुष्ट व्यक्ति भी हानिकर होने के कारण त्याज्य है।

In spite of decorated with learning, an evil person is to be avoided. Is the snake which is decorated with it's gem, not dreadful? Certainly, it is dreadful. In the same manner a learned bad man is also dreadful and so he should be avoided.

(746)

दुर्जनः प्रियवादी च नैतद् विश्वासकारणम्।
मधु तिष्ठति जिह्वाग्रे हृदि हालाहलं विषम्॥

दुष्ट विश्वसनीय नहीं हितोपदेश / I / 32

Durjanaḥ priyavādī ca naitad viśvāsakāraṇam ।
Madhu tiṣṭhati jihvāgre hṛdi hālāhalaṁ viṣam ॥

Bad man not to be trusted Hitopa / I / 32

यदि दुष्ट व्यक्ति मीठा बोले तो भी वह विश्वास के योग्य नहीं है। उसकी जिह्वा पर तो शहद है, परन्तु उसका हृदय घातक विष से भरा होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

If a wicked person speaks sweetly, he is not trustworthy. Though the front part of his tongue contains honey, yet his mind is full of fatal poison.

(747)

दुर्जनदूषितमनसः सुजनेष्वपि नास्ति विश्वासः।
बालः पायसदग्धो दध्यपि फूत्कृत्य भक्षयति॥

धोखा खाया व्यक्ति हितोपदेश/4/12

Durjanadūṣitamanasaḥ, sujaneṣvapi nāsti viśvāsaḥ |
Bālaḥ pāyasadagdho dadhyapi phūtkṛtya bhakṣayati ||

A deceived person Hitopa. / 4 / 12

दुर्जनों से धोखा खाने वाला व्यक्ति सज्जनों पर भी विश्वास नहीं करता। खीर से जला हुआ बालक दही भी फूँक-फूँक कर खाता है।

A person deceived by a wicked person loses faith even in good people. A child burnt by milk-food eats even curd by blowing to make it cool.

(748)

दुर्जनहुताशतप्तं काव्यसुवर्णं विशुद्धिमुपयाति।
दर्शयितव्यं तस्मान्मत्सरिमनसः प्रयत्नेन॥

ईर्ष्यालु का लाभ सुभाषितावलि / 151

Durjanahutāśataptaṁ kāvyasuvarṇaṁ viśuddhimupayāti |
Darśayitavyaṁ tasmānmatsarimanasaḥ prayatnena ||

Subhāśitāvali / 151

Advantage of the jealous

दुर्जन-रूपी अग्नि में तपाया गया काव्य-रूपी सुवर्ण शुद्ध हो जाता है, अतः कवि को ईर्ष्यालु चित्त वालों को अपना काव्य प्रयत्न-पूर्वक सुनाना चाहिए।

As gold is purified with the heat of fire, in the same way a poetry book becomes like gold purified by placing in the fire of a jealous person. Therefore a poet must recite his poetry to a jealous one.

(749)

दुर्जनेषु च सर्पेषु वरं सर्पो न दुर्जनः।
सर्पो दशति कालेन दुर्जनस्तु पदे पदे॥

दुर्जन और साँप चाणक्यनीति/3/4

Durjaneṣu ca sarpeṣu varaṁ sarpo na durjanaḥ |
Sarpo daśati kālena, durjanastu pade pade ||

Cāṇakyanīti / 3 / 4

Bad person and a snake

दुर्जनों और साँपों की यदि तुलना करें तो साँप अच्छा है, न कि दुर्जन, क्योंकि साँप तो किसी एक समय पर ही काटेगा, परन्तु दुष्ट व्यक्ति तो कदम-कदम पर हानि पहुँचाएगा।

If bad men and snakes are compared, the snake is better than a bad man, because the snake will sting only once, but the bad man will cause trouble at every step.

(750)

दुर्जनैरुच्यमानानि सस्मितानि प्रियाण्यपि।
अकालकुसुमानीव भयं संजनयन्ति हि॥

दुर्जनों के वचन हितोपदेश / विग्रह / 23

Durjanairucyamānāni sasmitāni priyāṇyapi |
Akālakusumānīva bhayaṁ saṁjanayanti hi ||

Words of bad men Hitopa. / Vigraha / 23

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि दुष्ट व्यक्ति हँसते हुए मीठी-मीठी बातें भी करे, तो उनसे इसी प्रकार डर लगता है, जैसे बिना मौसम के खिले फूलों को अपशकुन मानकर डर लगता है।

Even the sweet things, accompanied with smiles, said by a wicked person, causes fear, like the flowers which grow out of season.

(751)

दुष्टानां शासनाद्राजा शिष्टानां परिपालनात्।
प्राप्नोत्यमिताँल्लोकान् वर्णसंस्थां करोति यः॥

कर्त्तव्यनिष्ठ शासक को लाभ विष्णुपुराण/3/8/29

Duṣṭānāṁ śāsanādrājā śiṣṭānāṁ paripālanāt।
Prāpnotyamitaṁllokān varṇaṣaṁsthāṁ karoti yaḥ॥

Viṣṇupu. / 3 / 8 / 29

Advantages to the dutiful ruler

राजा दुष्टों को दण्ड देकर तथा श्रेष्ठ लोगों की रक्षा करके अनन्त सुख को प्राप्त होता है और क्षत्रिय वर्ण के कर्त्तव्य को निभाता है।

By punishing bad fellows and protecting good ones the king gets a position of everlasting happiness and carries on duty of his Kṣatṛiya caste;.

(752)

दुष्टा भार्या शठं मित्रं, भृत्यश्चोत्तरदायकः।
ससर्पे च गृहे वासो, मृत्युरेव न संशयः॥

मृत्यु के कारण चाणक्यनीति/1/5

Duṣṭā bhāryā śaṭhaṁ mitraṁ, bhṛtyaścottaradāyakaḥ।
śasarpe ca gṛhe vāso, mṛtyureva na saṁśayaḥ॥

Sources of death Cāṇkyaniti / 1 / 5

यदि पत्नी दुष्ट हो, मित्र धोखेबाज हो, नौकर आगे बोलने वाला हो और साँप वाले घर में निवास हो, तो समझ लेना चाहिए कि मृत्यु आने ही वाली है; इसमें कोई सन्देह नहीं।

If the wife is cunning, the friend is wicked, the servant is obstinate and one lives in such a house where a snake resides, then death is certain; there is no doubt.

(753)

दूरस्थोऽपि न दूरस्थो, यो यस्य मनसि स्थितः।
यो यस्य हृदये नास्ति, समीपस्थोऽपि दूरतः॥

समीपता तथा दूरी चाणक्यनीति/14/8

Dūrastho'pi na dūrastho, yo yasya manasi sthitaḥ।
Yo yasya hṛdaye nāsti, samīpastho'pi duratah॥

Nearness and far place Cāṇkyaniti / 14 / 8

यदि कोई व्यक्ति मन में स्थान बना चुका है, तो वह दूर रहते हुए भी दूर नहीं है, परन्तु जिसने मन में स्थान नहीं बनाया, वह पास रहते हुए भी दूर ही है।

If a person has some position in one's mind, being at distant place, he is near, but if one has no place in other's mind, he is at distance, in spite of staying near.

(754)

दुर्लभं भारते वर्षे, जन्म तस्मान्मनुष्यता।
मानुषे दुर्लभं चापि, स्व-स्वधर्मे प्रवर्तिता॥

दुर्लभ वस्तुएँ पद्मपुराण/80/3

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Durlabhaṁ Bhārate varṣe, janma tasmānmanuṣyatā |
Mānuṣe durlabhaṁ cāpi, sva-sva-dharme pravartitā ||

Rare things Padmapu. / 80 / 3

भारतवर्ष में जन्म लेना ही कठिन है, उससे भी कठिन है मानव-रूप पाना और उससे भी कठिन है अपने धर्म में प्रवृत्ति।

To get birth in Bhāratavarṣa is difficult and attaining human life is more difficult and then performing of one's duty is the most difficult thing.

(755)

दुष्कराण्यपि कार्याणि, सिध्यन्ति प्रोद्यमेन वै।
शिलापि तनुतां याति, प्रपातेनार्णसो मुहुः॥

निरन्तर श्रम का सुफल बुद्धचरित/26/63

Duṣkarāṇyapi kāryāṇi, sidhyanti prodyamena vai |
Śilāpi tanutāṁ yāti, prapātenārṇaso muhuḥ ||

Buddhaca. / 26 / 63

Good result of doing continuously

उद्यम से कठिन से कठिन कार्य भी सिद्ध हो जाते हैं। बार-बार पानी के गिरने से शिला भी पतली हो जाती है।

Continuous effort completes even very difficult works. Falling of water repeatedly makes even a rock thin.

(756)

दृढं विमृश्य कर्तृणां, सदा वदनमुज्ज्वलम्।
निन्दापङ्कावृतं चापि, कार्ये साहसकारिणाम्॥

विचारपूर्वक कार्य करने के लाभ नीतिकल्पतरु/6/45

Dṛḍhaṁ vimṛśya kartṛnāṁ, sadā vadanamujjvalam |
Nindā-pankāvṛtaṁ cāpi, kārye sāhasakāriṇām ||

Nītikalpataru / 6 / 45

Good result of doing after thinking

अच्छी तरह विचार-विमर्श करके कार्य करने वालों का मुख सदा उज्ज्वल रहता है, पर उनके कार्य में जो विघ्न डालते हैं, उनका मुख निन्दारूपी कीचड़ से ढक जाता है।

The face of those shines always who work after proper thinking but those who disturb their work without thinking their faces become covered with the mud of defame.

(757)

दृढं सतां संगतं चापि नित्यम्,
ब्रूह्याच्चार्थं ह्यर्थकृच्छ्रेषु धीरः।
महार्थवत् सत्पुरुषेण संगतम्,
तस्मात् सन्तं न जिघांसेत धीरः॥

सत्संगति का लाभ महाभा./उद्योग/10/24

Dṛḍhaṁ satāṁ saṁgataṁ cāpi nityam,
Brūhyāccārthaṁ hyarthakṛcchreṣu dhīraḥ |
Mahārthavat satpuruṣeṇa saṅgatam,
Tasmāt santaṁ na jighāṁset dhīraḥ ||

Mahābhā. / Udyoga / 10 / 24

Advantage of good company

श्रेष्ठ पुरुषों की संगति सदा दृढ़ता से करनी चाहिए और धन का या अन्य संकट आने पर उन जैसे विचारशील व्यक्ति को अपना कष्ट बता देना चाहिए। श्रेष्ठ पुरुषों की संगति महान् प्रयोजन सिद्ध कर देती है; अतः विचारशील व्यक्ति को चाहिए कि वह

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कभी भी श्रेष्ठ पुरुष को हानि पहुँचाने की कामना नहीं करे।

The company of good people should be adopted with determination regularly. If there is some crisis of finance or something else that should be stated to them. The company of good people solves many problems; so a thoughtful person should never try to harm a good person.

(758)

दृते दृंह मा। ज्योक् ते संदृशि जीव्यासम्। ज्योक् ते संदृशि जीव्यासम्॥

हम प्रभु की दृष्टि में श्रेष्ठ रहें यजु./32 /19

Dṛte dṛṁha mā | Jyok te saṁdṛśi jīvyāsam | Jyok te saṁdṛśi jīvyāsam ||

Yaju. / 32 / 19

May we remain good in eyes of God

हे दुष्टों को दण्ड देने वाले परमात्मन्! मुझे अच्छे कार्यों को करने में दृढ़ बना दो। मैं आप की शुभ दृष्टि में जीना चाहता हूँ, मैं आपकी दृष्टि में गिरना नहीं चाहता।

O punitive of sinners God, give me such determination, by which I remain strict on good actions. I desire to live in your good impression and do not wish to fall from your favouring sight.

(759)

दृते दृंह मा, मित्रस्य मा।
चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥

हम मित्र की दृष्टि से देखें यजु./36/18

Dṛte dṛṁha mā |
Mitrasya mā cakṣuṣā sarvāṇi bhūtāni samīkṣantām |
Mitrasyāhaṁ cakṣuṣā sarvāni bhūtani samikṣe |
Mitrasya cakṣuṣā samīkṣāmahe ||

Let us see as friends Yaju. / 36 / 18

अपने नियमों में दृढ़ रहने वाले परमेश्वर, हमें भी नियम-पालन में दृढ़ बनाओ। मेरा ऐसा सद्-व्यवहार हो कि सब प्राणी मुझे मित्र की दृष्टि से देखें, मै सबको मित्र की दृष्टि से देखूँ और हम सभी एक-दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें।

O God, you maintain your principles strictly, so make us strict to carry on our good principles. May I behave in such a good manner, that all creatures take me as their friend. Also, I should see them as my friend. All of us should see each other as our friends.

(760)

दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं, वस्त्रपूतं जलं पिबेत्।
सत्यपूतां वदेद्वाचं, मनःपूतं समाचरेत्॥

हम पवित्रता-पूर्वक कार्य करें मनुस्मृति/6/46

Dṛṣṭipūtaṁ nyasetpādaṁ, vastrapūtaṁ jalaṁ pibet |
Satyapūtāṁ vadedvācaṁ, manaḥ-pūtaṁ samācaret ||

Cleanliness in works Manu. / 6 / 46

मनुष्य को चाहिए कि वह सामने देखकर ही पाँव रखे, पानी को कपड़े से छानकर पिये, सत्यपूर्ण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाणी बोले और मन से सोच-समझ कर ही कार्य करे।

One should put his foot after seeing in front, drink water filtered with a piece of cloth, speak the truth and act after thinking with intellect.

(761)

दृष्ट्वापि दृश्यते दृश्यं, श्रुत्वापि श्रूयते पुनः।
सत्यं न साधुवृत्तस्य, दृश्यते पुनरुक्तता॥

महापुरुष दोहराते नहीं है सुभाषितावलि / 228

Dṛṣṭvāpi dṛśyate dṛśyaṁ, śrutvā'pi śrūyate punaḥ।
Satyaṁ na sādhuvṛttasya, dṛśyate punaruktatā॥

Subhāśitāvali / 228

Great persons never repeat

संसार में सामान्य रूप से बहुत से देखे हुए दृश्य पुनः देखने को मिलते हैं, सुने हुए विषय पुनः सुनने को मिलते हैं, किन्तु सदाचारी पुरुषों के वचन "पुनरुक्त" नहीं होते — यह सत्य है। जो एक बार कह दिया उसका अनुसरण वे अवश्य करते हैं; वे कहकर बदल नहीं जाते। जैसे – "रामो द्विर्नाभिभाषते।"

In the world many scenes are seen again and again, many things heard are heard again, but the greatmen when they say one thing, they remain strict on that and do not repeat it, as Rāma used to stick on his own words.

(762)

दृष्ट्वा विमिश्रां सुखदुःखतां मे,
राज्यं च दास्यं च मतं समानम्।
नित्यं हसत्येव हि नैव राजा,
न चापि संतप्यत एव दासः॥

राज्य और दास्य की समता अज्ञात

Dṛṣṭvā vimiśrāṁ sukhaduḥkhatāṁ me,
Rajyaṁ ca dāsyaṁ ca mataṁ samānam।
Nityaṁ hasatyeva hi naiva rājā,
na cāpi saṁtapyata eva dāsaḥ॥

Equality of slavery and kingdom Unknown

सुख और दुःख को मिला हुआ जानकर मेरे लिए राज्य और दासता समान ही हैं। न तो राजा प्रतिदिन हँसता ही रहता है और नाहीं दास सदा दुखी होता रहता है।

Noticing pleasure and pain mixed, I hold kingdom and slavery equal. Neither a king laughs always nor a slave is unhappy forever.

(763)

देव-गो-ब्राह्मणान् सिद्धान् वृद्धाचार्यांस्तथाऽर्चयेत्।
द्विकालं च नयेत् सन्ध्यामग्नीनुपचरेत्तथा॥

दैनिककृत्य विष्णुपुराण/3/12

Deva-go-brāhmaṇān siddhān vṛddhācāryāṁstathā'rcayet।
Dvikālaṁ ca nayet sandhyāmagnīnupacarettathā॥

Daily works Viṣṇupurāṇa / 3 / 12

देवों, गौओं, ब्राह्मणों, योगियों, बूढ़ों तथा आचार्यों की पूजा तथा दोनों समय सन्ध्या एवं हवन करना चाहिए।

One should honour gods, cows, brāhmans, yogīs, elders and preachers.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Besides, he should worship and sacrifice into fire in the morning and in the evening.

(764)

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां, देवानां रातिरभि नो निवर्तताम्। देवानां सख्यमुपसेदिमा वयम्। देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥

विद्वानों से लाभ उठायें ऋ./1 /89/1

Devānāṁ bhadrā sumatirṛjūyatāṁ, Devānāṁ rātirabhi no nivartatāṁ. Devānāṁ sakhyamupasedimā vayam. Devā na āyuḥ pratirantu jīvase ll

Let us avail Ṛg. / 1 / 89 / 1

advantages from the learned

विद्वानों का सत्परामर्श हमारे जीवन में सरलता लाये। विद्वानों द्वारा हमें विद्या आदि सद्गुण प्राप्त हों। हम विद्वानों से मित्रता करें और विद्वान् हमें दीर्घ आयु प्राप्त करने की विधियाँ बताकर हमें दीर्घायु बनायें।

May the good advice of the learned persons bring righteousness in our life! May we receive education and other qualities from the learned persons! May we have friendship of learned persons! Let the learned persons teach us the manners of living a long life and make our life longer.

(765)

देवीं वाचमजनयन्त देवा-
स्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति।
सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना
धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु ॥

हम वाणी का ठीक प्रयोग करें ऋ./8/100/11

Devīṁ vācamajanayanta devā-
stāṁ viśvarūpāḥ paśavo vadanti l
Sā no mandreṣamūrjaṁ duhānā
dhenurvāgasmānupa suṣṭutaitu ll

Ṛg. / 8 / 100 / 11

Let us use tongue in good manner

विद्वान् ज्ञान देने वाली और पदार्थों को स्पष्ट बताने वाली वाणी को प्रकट करते हैं। अनेक प्रकार के लोग उसी वाणी को बोलते हैं। वह वाणी हमें हर्ष प्रदान करती हुई इष्ट वस्तुएँ – अन्न, दूध, पराक्रम, बल आदि देती हुई, दूध देने वाली गाय के समान प्रशंसित होकर हमें प्राप्त हो। अर्थात् हम वाणी को समझें और उसका प्रयोग करना सीखें, तभी हम भावों को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त कर सकते हैं।

The learned people discover such a language which explains the ideas clearly. Different kinds of people speak the same. May this kind of language give us happiness and as a milking cow gives milk, this language may be helpful in giving us desired things like edibles, milk, valour, strength etc. So all of us should understand the language and know how to use it, so that we may be able to express our ideas and understand others.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(766)

देवे तीर्थे द्विजे मन्त्रे, दैवज्ञे भैषज्ये गुरौ।
यादृशी भावना यस्य, सिद्धिर्भवति तादृशी॥

भावनानुसार सफलता पंचतन्त्र / अपरीक्षितकारक / 60

Deve tirthe dvije mantre daivajñe bhaiṣajye gurau |
Yādṛśī bhāvanā yasya, siddhirbhavati tādṛśī ||

Pañca. / Apa. / 60

Success according to one's belief

देवता, तीर्थ, ब्राह्मण, मन्त्र, ज्योतिषी, औषध और गुरु - इनके संबंध में जिसकी जैसी श्रद्धा होती है, वैसी ही उसको फल-प्राप्ति हुआ करती है।

A man gets success from the following things according to his belief and devotion :- God, holy place, a Brahmaṇa, a hymn, an astronomer, medicine and a preacher.

(767)

देवो देवानामसि मित्रो अद्भुतो,
वसुर्वसूनामसि चारुरध्वरे।
शर्मन्त्स्याम तव सप्रथस्तमेऽग्ने,
सख्ये मा रिषामा वयं तव॥

हम प्रभु की शरण में दुखी न हों ऋ./1/94/13

Devo devānāmasi mitro adbhuto,
vasurvasūnāmasi cāruradhvare |
Śarmantsyāma tava saprathastame'gne,
sakhye mā riṣāmā vayaṁ tava ||

Let we not feel woes in the sheter of God Ṛg. / 1 / 94 / 13

हे ईश्वर! आप देवों में परम देव हैं, अद्भुत स्नेह से सम्पन्न मित्र हैं, ऐश्वर्यवानों में सबसे श्रेष्ठ ऐश्वर्य वाले हैं और यज्ञादि शुभ कर्मों में सर्वोत्तम वरणीय हैं। हे प्रकाशस्वरूप! आप द्वारा दिए गए विस्तृत सुख में ही हम सदा वर्तमान रहें और आप की मित्रता में रहते हुए कभी दुःखी न हों।

O God, you are Super-god out of all gods and you are a good friend full of strange affection. You are the master of super most wealth among the wealthy ones. It is you who is to be adopted best in all the sacrifices. O, the embodiment of light! May all of us enjoy the extended happiness granted by you and never fall into adversity while enjoying your friendship.

(768)

देशकालौ समासाद्य, विक्रमेत विचक्षणः।
देशकाल-व्यतीतो हि, विक्रमो निष्फलो भवेत्॥

उचित स्थान और समय महाभा./शान्तिपर्व./140/28

Deśakālau samāsādya, vikrameta vicakṣaṇaḥ |
Deśakāla-vyatīto hi, vikramo niṣphalo bhavet ||

Mahābhā. / Śāntip. / 140 / 28

Due place and time

बुद्धिमान व्यक्ति को चाहिए कि देशकाल के सुअवसर को प्राप्त कर प्रयत्न करे। देश-काल के प्रतिकूल किया गया प्रयत्न विफल हो जाता है।

A wise man should display his power considering time and place. If those are not favourable, power becomes useless.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(769)

देशान्तरेषु बहुविधभाषा-वेशादि येन न ज्ञातम्।
भ्रमता धरणीपीठे तस्य फलं जन्मनो व्यर्थम्॥

विदेश-भ्रमण का लाभ पञ्च./मित्रभेद/349

Deśāntareṣu bahuvidha-bhāsā-veśādi yena na jñātam |
Bhramatā dharaṇīpīṭhe tasya phalaṁ janmano vyartham ||

Advantage of journey in foreign countries Pañca. / Mitrabhe. / 349

पृथ्वी पर घूमते-फिरते अन्य देशों की विविध भाषाएँ और वेश आदि को जिसने नहीं जाना, उसके जन्म का कोई फल नहीं, अर्थात् उसका जीवन व्यर्थ ही बीत गया।

While touring on this earth, if a man does not know the different languages and dresses of other countries, he has spent his life uselessly.

(770)

देहप्रवृत्तिर्या काचिद्, वर्त्तते परपीडया।
स्त्रीभोग-स्तेय-हिंसाद्या, तस्या वेगान् विधारयेत्॥

त्याज्य वस्तुएँ चरक/सूत्रस्थान/7/29

Dehapravṛttiryā kācid, varttate parapīḍayā |
Strībhoga-steya-hiṁsādyā, tasyā vegān vidhārayet ||

To be avoided Caraka / Sūtra. / 7 / 29

किसी को पीड़ा देकर स्त्री-सम्भोग, चोरी या हिंसा आदि जो भी शरीर की ऐसी प्रवृत्ति हो, उसके वेग को विशेष रूप से रोकना चाहिए।

A man should have control on the excitment of such tendencies which are fulfilled by troubling others as sexual enjoyment, theft and violence etc.

(771)

देहि मे ददामि ते, नि मे धेहि, नि ते दधे।
निहारं च हरासि मे, निहारं नि हराणि ते स्वाहा॥

परस्पर आदान-प्रदान यजु./3 /50

Dehi me dadāmi te, ni me dhehi, ni te dadhe |
Nihāraṁ ca harāsi me, nihāraṁ ni harāṇi te svāhā ||

Mutually exchange Yaju. / 3 / 50

मित्र! तुम मुझे दो, मैं तुम्हे दूँ। तुम मेरी वस्तु धारण करो, मैं तुम्हारी धारण करूँ। तुम मेरे लिए खरीदने योग्य वस्तु खरीद कर ले आओ और मैं तुम्हें उसका मूल्य दे दूँ। इस प्रकार हमारा व्यवहार मित्रतापूर्ण और सत्य होना चाहिए।

O friend! You should give me and I shall give you. You should take my thing and I shall take yours. You should buy a thing for me which suits me and I shall pay you for it. In this way our behaviour should be friendly and truthful.

(772)

देहे पातिनि का रक्षा, यशो रक्ष्यमपातवत्।
नरः पतितकायोऽपि, यशःकायेन जीवति॥

यश द्वारा अमरता भोजप्रबन्ध/53

Dehe pātini kā rakṣā, yaśo rakṣyamapātavat |
Naraḥ patitakāyo'pi, yaśaḥ-kāyena jīvati ||

Immortality by good name Bhojupra. / 53

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शरीर तो नष्ट होगा ही, इसे बचाया नहीं जा सकता। इसलिए न नष्ट होने वाले यश की रक्षा करनी चाहिए। शरीर के नष्ट हो जाने पर भी मनुष्य यश-रूपी शरीर से सदा जीता रहता है।

This body is perishable and one cannot save it for ever, so he should save his good name which is not perishable. After the destruction of the body, man lives only with the body of good name.

(773)

दैवीर्गिरः केऽपि कृतार्थयन्ति,
ताः कुण्ठयन्त्येव पुनर्विमूढाः।
या विप्रुषः शुक्तिमुखेषु दैव्या-
स्ता एव मुक्ता न तु चातकेषु॥

दान का लाभ सुभाषितावलि / 194

Devairgiraḥ ke'pi kṛtārthayanti,
Tāḥ kuṇṭhayantyeva punarvimūḍhāḥ।
Yā vipruṣaḥ śuktīmukheṣu daivyā-
stā eva muktā na to cātakeṣu॥

Advantage of charity Subhāṣitāvali / 194

प्रतिभा-सम्पन्न कुछ लोग तो देव-प्रदत्त वाणी को अपनी रचना से कृतार्थ कर देते हैं। किन्तु मूर्ख उसे कुण्ठित ही कर देते हैं। आकाश से गिरी हुई जल की जो बूँदें सीपी में पड़ती हैं, वही मोती बनती हैं, न कि चातक के मुख में पड़ी हुई।

Some genious persons make the best use of their tongue in composing good literature but some fools make it unexpressive. The drops of water fallen from the sky into the mouth of an oyster become pearls but not into the mouth of cātaka.

(774)

दोषभीतेरनारम्भस्तत्कापुरुषलक्षणम्।
कैरजीर्णभयाद् भ्रातर्भोजनं परिहीयते॥

कायर पुरुष का अवगुण हितोपदेश/सुहृद्भेद/57

Doṣabhīteranārambhastatkāpuruṣalakṣaṇam।
Kairajīrṇabhayād bhrātarbhojanaṁ parihīyate॥

Hitopa. / Suhṛdbhe. / 57

A defect of a coward

कोई त्रुटि न हो जाये, यह सोचकर कार्य को शुरू न करना कायरता की निशानी है। भैया, क्या कभी कोई 'अपच न हो जाए,' इस भय से खाना छोड़ देता है?

'There may be some defect,' thinking this who don't begin any work are called cowards. O brother, who is such a person which doesn't eat fearing from indigestion?

(775)

दोषानपि गुणीकर्तुं, दोषीकर्तुं गुणानपि।
शक्तो वादी न तत्तथ्यं, दोषा दोषा गुणा गुणाः॥

गुण या दोष बदलते नहीं सुभाषितावलि / 215

Doṣānapi guṇīkartuṁ, doṣīkartuṁ guṇānapi।
śakto vādī na tattathyaṁ, doṣā doṣā gūṇā guṇāḥ॥

Merits and demerits remain as they are Subhāṣitāvali / 215

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाद-विवाद करने में कुशल व्यक्ति दोषों को भी गुण और गुणों को भी दोष सिद्ध करने में समर्थ हो सकता है किन्तु वह सत्य नहीं होता। दोष दोष ही हैं और गुणं गुण ही हैं।

A logician can prove defects as merits and merits as defects with his reasoning-power, but that is not true. Defects are defects and merits are merits.

(776)

दौर्गत्यं देहिनां दुःखमपमानकरं परम्।
येन स्वैरपि मन्यन्ते, जीवन्तोऽपि मृता इव॥

दरिद्रता से हानि पञ्च./मित्रसम्प्राप्ति/100

Daurgatyaṁ dehināṁ duḥkhamapamānakaraṁ param |
yena svairapi manyante, jivanto'pi mṛtā iva ||

Pañca. / Mitrasam. / 100

Loss due to poverty

दरिद्रता प्राणियों के लिए दुःखदायी और अपमान-जनक होती है, जिसके कारण अपने सम्बन्धियों द्वारा भी दरिद्र व्यक्ति जीते हुए भी मरे हुओं के समान माने जाते हैं।

Misery is very troublesome and insulting, due to which even relatives take the living poor persons as dead ones.

(777)

दौर्मन्त्र्यान्नृपतिर्विनश्यति यतिः सङ्गात् सुतो लालनात्,
विप्रोऽनध्ययनात् कुलं कुतनयाच्छीलं खलोपासनात्।
ह्रीर्मद्यादनवेक्षणादपि कृषिः स्नेहः प्रवासाश्रयात्,
मैत्री चाप्रणयात् समृद्धिरनयात् त्यागात्प्रमादाद्धनम्॥

नाश के कारण नीतिशतक/38

Daurmantryānnṛpatirvinaśyati yatiḥ saṅgāt suto lālanāt,
Vipro'nadhyayanāt kulaṁ kutanayācchīlaṁ khalopāsanāt |
Hrīrmadyādanavekṣaṇādapi kṛṣiḥ snehaḥ pravāsāśrayāt,
Maitrī cāpraṇayāt samṛddhiranayāt tyāgātpramādāddhanam ||

Causes of destruction Nītiśataka / 38

बुरी सलाह से राजा का नाश हो जाता है। यति सङ्ग करने से, पुत्र लाड़-प्यार से, ब्राह्मण स्वाध्याय न करने से, परिवार दुष्ट पुत्र के कारण, उत्तम स्वभाव दुष्टों के संग से, लज्जा शराब से, खेती लापरवाही से, प्यार विदेश में बस जाने से, मित्रता प्रेम न दिखाने से, ऐश्वर्य दुर्नीति से तथा खर्च करने और लापरवाही से धन नष्ट हो जाता है।

The following things are destroyed due to the following reasons :-

A king by bad advice, an ascetic by company, a son by pampering, a Brahmaṇa by leaving his study, a family by a bad son, nobility by company of bad persons, shame by wine, farming by carelessness, love by settling in a foreign country, friend-ship by absence of love, wealth by bad policy and money by expenses and carelessness.

(778)

द्रव्यनाशे तथोत्पत्तौ, पालने च सदा नृणाम्।
भवन्त्यनेकदुःखानि, तथैवेष्टविपत्तिषु॥

दुःखों के कारण विष्णुपुराण/6/5/54

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Dravyanāśe tathotpattau, pālane ca sadā nṛṇām ।
Bhavantyanekaduḥkhāni, tathaiveṣṭavipattiṣu ॥

Causes of woes Viṣṇupu. / 6 / 5 / 54

धन के नष्ट होने पर, कमाते समय और इसकी रक्षा करते समय तथा सम्बन्धियों व इष्ट मित्रों के विपत्ति-ग्रस्त होने पर मनुष्य को अनेक कष्टों का सामना करना पड़ता है।

When money is destroyed or earned or protected and when relatives and friends are in trouble, a man has to face many difficulties.

(779)

द्रव्ययज्ञैर्यक्ष्यमाणं, दृष्ट्वा भूतानि बिभ्यति।
एष माऽकरुणो हन्यादतज्ज्ञोऽसुतृप् ध्रुवम् ॥

दुष्टों से भय श्रीमद्भागवत/7/5/10

Dravya-yajñairyakṣyamāṇaṁ, dṛṣṭvā bhūtāni bibhyati ।
Eṣa mā'karuṇo hanyādatajjño'sutṛp dhruvaṃ ॥

Fear from the cruel Bhāgavata / 7 / 5 / 10

वस्तुओं के हवनों से यज्ञ करते हुए को देखकर प्राणी डरने लगते हैं कि यह क्रूर राक्षस जो यज्ञ के तत्त्व को नहीं समझता, कहीं मुझे भी न मार डाले।

The creatures become afraid of the man who is sacrificing with common things to think that this cruel demon who doesn't know the real meaning of 'Yajña' may kill me also.

(780)

द्राक्षा म्लानमुखी जाता, शर्करा चाश्मतां गता।
सुभाषित-रसस्याग्रे, सुधा भीता दिवं गता ॥

सुभाषितों का रस अज्ञात

Drākṣā mlānamukhī jātā, śarkarā cāśmatāṁ gatā ।
Subhāṣita-rasasyāgre, sudhā bhītā divaṁ gatā ॥

Taste of good sayings Unknown

सुभाषितों के रस का महत्त्व देखकर अंगूर का मुँह काला पड़ गया, खाँड पत्थर बन गई और अमृत डर कर स्वर्गलोक को चला गया।

After knowing the grace of good quotations, the face of the grapes blackened, sugar turned into a stone and nectar being frightened went to the heaven.

(781)

द्वन्द्वो द्विगुरपि चाहं, मद्गेहे नित्यमव्ययीभावः।
तत्पुरुष कर्मधारय, येनाहं स्यां बहुव्रीहिः ॥

अन्न की कामना सुभाषितावलि / 2343

Dvandvo dvigurapi cāhaṁ, madgehe nityamavyayībhāvaḥ ।
Tatpuruṣa karma dhāraya, yenāhaṁ syāṁ bahuvrīhiḥ ॥

Desire of corm Subhāśitāvali / 2343

मैं द्वन्द्व भी हूँ, क्योंकि मैं और मेरी पत्नी दो घर में रहते हैं। मैं द्विगु भी हूँ क्योंकि मेरे घर में दो गौएँ हैं। मेरे घर में अव्ययीभाव भी है, अर्थात् सब कुछ खर्च नहीं हो जाता और किसी वस्तु की कमी भी नहीं। हे पुरुष, वह (तत्पुरुष) कर्म कर (कर्मधारय) जिससे मैं बहुत अनाज वाला (बहुव्रीहि) बन जाऊँ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

I am compound called 'द्वन्द्व' (in the form of pair of two — husband and wife, I am 'द्विगु' (i.e., I have two cows) and in my house there is always अव्ययी-भाव (i.e. no exhaustion of commodities). O man, resort to that action (पुरुष तत् कर्म धारय) whereby I may be having abundant grain. (बहुः व्रीहिर्यस्य सः)।

(782)

द्वाविमावम्भसि क्षेप्यौ, गाढं बध्वा गले शिलाम्।
धनिनं चाप्रदातारं, दरिद्रञ्चातपस्विनम्॥

डुबोने योग्य महाभा. / उद्योग / 33 / 65

Dvāvimāvambhasi kṣepyau, gāḍhaṁ badhvā gale śilām |
Dhaninaṁ cāpradātāraṁ, daridrañcātapasvinam ||

Mahābhā. / Udyoga / 33 / 65

Deserving drowning

निम्नलिखित दो को गले में चट्टान बाँधकर पानी में डुबो देना चाहिए :- एक तो दान न देने वाले धनी को और दूसरे परिश्रम न करने वाले निर्धन व्यक्ति को।

These two persons should be thrown into water with a stone tied firmly to their necks — a rich person who does not give charity and a poor person who is not a hard-worker.

(783)

द्वाविमौ कण्टकौ तीक्ष्णौ, शरीरपरिशोषिणौ।
यश्चाधनः कामयते, यश्च कुप्यत्यनीश्वरः॥

तेज काँटे महाभारत/उद्योग/33/62

Dvāvimau kaṇṭakau tikṣṇau, śarīrapariśoṣiṇau |
Yaścādhanaḥ kāmayate, yaśca kupyatyanīśvaraḥ ||

Sharp thorns Mahābhā. / Udyoga / 33 / 62

मनुष्य को दो ही बातें तेज काँटों के समान शरीर को कष्ट देती हैं - एक तो निर्धन होने पर बड़ी-बड़ी कामनाएँ करना और दूसरे असमर्थ होने पर भी अधिक क्रोध करना।

There are two things which trouble the body of a man like a sharp thorn; one of them is to desire unavailable things inspite of poverty and the second is to be angry in spite of being unable to act accordingly.

(784)

द्वाविमौ पुरुषौ राजन्, स्वर्गस्योपरि तिष्ठतः।
प्रभुश्च क्षमया युक्तो, दरिद्रश्च प्रदानवान्॥

प्रशंसनीय दो व्यक्ति महाभा. / उद्योग / 33 / 63

Dvāvimau puruṣau loke, svargasyopari tiṣṭhataḥ |
Prabhuśca kṣamayā yukto, daridraśca pradānavān ||

Mahābhā. / Udyoga / 33 / 63

Admirable two persons

हे राजन् ये दो व्यक्ति स्वर्ग से भी ऊपर स्थित होते हैं :- एक तो क्षमाशील समर्थ व्यक्ति और दूसरा निर्धन होते हुए भी दान देने वाला।

Two persons in this world stand above the heaven; a powerful man endowed with the endurance and a poor man who gives charity.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(785)

द्वाविमौ पुरुष व्याघ्र, सूर्यमण्डलभेदिनौ।
परिव्राड्योगयुक्तश्च, रणे चाभिमुखो हतः॥

महाभा. / उद्योग / 33 / 66

प्रशंसनीय संन्यासी और योद्धा

Dvāvimau puruṣau loke, suryamaṇḍalabhedinau |
Parivrāḍyogayuktaśca, raṇe cābhimukho hataḥ ||

Mahābhā. / Udyoga / 33 / 66

Admirable a saṁnyāsī and a warrior

हे वीर शासक! योग से युक्त संन्यासी और युद्ध में लड़ते-लड़ते सामने आए हुए प्रहार द्वारा मारे जाने वाला योद्धा ये दोनों पुरुष सूर्य के मण्डल को भी फोड़ देने वाले हैं, अर्थात् ये बहुत सम्मान के योग्य हैं।

A saṁnyāsi who performs yoga and a brave person who dies while facing attack of an enemy go above the sphere of the sun. It means that these two persons are praised by every one.

(786)

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यः अभिचाकशीति॥

जीव और ब्रह्म का निवास ऋ./1/164/20

Dvā suparṇā sayujā sakhāyā samānaṁ vṛkṣaṁ pariṣasvajāte |
Tayoranyaḥ pippalaṁ svādvattyanaśnannanyaḥ abhicākaśīti ||

Two birds on a tree Ṛg. / 1 / 164 / 20

दो सुन्दर पंखों वाले, साथ-साथ मित्र रूप से रहने वाले पक्षी (जीव और ब्रह्म) एक ही वृक्ष (प्रकृति) पर टिके हुए हैं। उन दोनों में से एक (जीव) स्वादु फल (कर्मफल) का उपभोग करता है और दूसरा (ब्रह्म) साक्षी रूप में प्रकाशित हो रहा है।

There are two birds (soul and God) which have beautiful wings (qualities) and live together as friends on one tree (Nature). One of them (the soul) enjoys fruits (fruits of his deeds) and other (God) is shining as a witness.

(787)

द्विषद्भिः शत्रुभिः कश्चित्कदाचित्पीड्यते न वा।
इन्द्रियैर्बाध्यते सर्वः, सर्वत्र च सदैव च॥

दुःख का मुख्य कारण सौन्दरनन्द/13/32

Dviṣadbhiḥ śatrubhiḥ kaścitkadācitpīḍyate na vā |
Indriyairbādhyate sarvaḥ, sarvatra ca sadaiva ca ||

Saundamanda / 13 / 32

Main cause of adversity

द्वेषी शत्रुओं से कोई कभी पीड़ित होता हो या न होता हो परन्तु इन्द्रियों से सभी, सब जगह और सदैव पीड़ित होते हैं।

Somebody may or may not be tormented by terrible enemies, but everybody is tormented, everywhere and always by senses.

(788)

द्वे कर्मणी नरः कुर्वन्नस्मिंल्लोके विरोचते।
अब्रुवन् परुषं किञ्चिदसतोऽनर्चयंस्तथा॥

दो प्रशंसनीय कर्म महाभारत/उद्योग/33/61

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Dve karmanī naraḥ kurvannasmiṅlloke virocate |
Abruvan paruṣaṁ kiñcidasato'narcayaṁstathā ||

Mahābhā. / Udyoga / 33 / 61

Two admirable works

इस संसार में मनुष्य ये दो कर्म करते हुए ही विशेष शोभा पाता है; एक तो कटु शब्द न बोलना और दूसरे दुष्टों का सम्मान न करना।

A man who practises these two things in his life in this world becomes glorious :- one of them is not to speak harshly and the other is not to respect mean persons.

ध = Dha

(789)

धनं लभेत दानेन, मौनेनाज्ञां विशाम्पते।
उपभोगांश्च तपसा, ब्रह्मचर्येण जीवितम्॥

उत्तम साधन अज्ञात

Dhanaṁ labheta dānena, maunenājñāṁ viśāmpate |
Upabhogāṁśca tapasā, brahmacaryeṇa jīvitam ||

Admirable means Unknown

हे राजन्! दान से धन मिलता है, मौन से आज्ञा पालने वाले मिलते हैं, तप (परिश्रम) से विविध उपभोग प्राप्त होते हैं और ब्रह्मचर्य से दीर्घ जीवन का लाभ होता है।

O king! Donation is helpful in getting wealth, silence is helpful to get the power of order, hardwork is helpful to obtain the things of enjoyment and long life is attained by Brahmacarya (saving of semen).

(790)

धनधान्यप्रयोगेषु, तथा विद्यागमेषु च।
आहारे च व्यवहारे, त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्॥

लज्जा के अयोग्य स्थान चाणक्यशतक/35

Dhana-dhānyaprayogesu, tathā vidyāgameṣu ca |
Āhāre ca vyavahāre, tyaktalajjaḥ sukhī bhavet ||

Cāṇkyaśatak / 35

Places not to feel shame

धन-धान्य के लेन-देन में, विद्या-लाभ में, खाने-पीने में तथा व्यवहार में लज्जा न करने वाला ही सुखी रहता है।

One should not feel shame in transactions of money and grains, acquisition of knowledge, taking food and social dealings. In this way he remains happy.

(791)

धनस्य यस्यास्ति न राजतो वा
न चोरतो वाऽपि भयं कदाचित्।
विद्याख्यमन्तर्धनमर्जयत्त-
दन्यद्धनं नश्यति सर्वमेव॥

विद्या-धन कमाओ सुभाषितसंग्रह / 2 / 30

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Dhanasya yasyāstī na rājato vā
na corato vā'pi bhayaṁ kadācit |
Vidyākhyamantardhanamarjayett-
danyddhanaṁ naśyati sarvamevall

Earn education Subhāṣitaśanghara / 2 / 30

जिस धन के लिए न राजा से कोई डर है और न चोर से ही तथा मरने पर भी जो साथ नहीं छोड़ता, तुम उस धन अर्थात् विद्या का अर्जन करो।

You should earn such money, for which you have no fear from a king or from a thief and which will not depart from you even when you die. All other riches end soon.

(792)

धनानि जीवितं चैव, परार्थे प्राज्ञ उत्सृजेत्।
सन्निमित्ते वरं त्यागो, विनाशे नियते सति॥

जीवन की सफलता अज्ञात

Dhanāni jīvitaṁ caiva, parārthe prājña utsṛjet |
Sannimitte varaṁ tyāgo, vināśe niyate sati ll

Success of life Unknown

बुद्धिमान को चाहिए कि वह परोपकार के लिए धन और शरीर का त्याग करे, क्योंकि जब इनका नाश होना ही है, तो अच्छे कार्य के लिए त्याग क्यों न किया जाए?

For the sake of others, a wise man should give up his riches and even the life. When death is certain, it is better to give up for a good cause.

(793)

धनानि भूमौ पशवश्च गोष्ठे,
नारी गृहद्वारि जनाः श्मशाने।
देहश्चितायां परलोकमार्गे,
धर्मानुगो गच्छति जीव एकः॥

धर्म — सच्चा साथी अज्ञात

Dhanāni bhūmau paśavaśca goṣṭhe,
Nārī gṛhadvāri janāḥ śmaśāne |
Dehaścitāyāṁ paralokamārge,
Dharmānugo gacchati jīva ekaḥ ll

Good deeds — good companion Unknown

मृत्यु होते ही धन भूमि में पड़े रह जाते हैं, पशु पशुशाला में, पत्नी घर के दरवाजे तक, लोग श्मशान-भूमि तक और शरीर चिता में स्थान पाता है। उस समय जीवात्मा के साथ केवल धर्म ही जाता है।

As a man dies, his wealth remains in the earth, animals stay in the cowshed, the wife goes only upto the gate, the people upto the cremation ground and the body is put on the pyre. It is only good deeds which go with the soul to the next world.

(794)

धन्यानां गिरि कन्दरे निवसतां, ज्योतिः परं पश्यताम्,
आनन्दाश्रुकणान् पिबन्ति शकुनाः निश्शंकमङ्केशयाः।
अस्माकं तु मनोरथोपरचित - प्रासाद - वापी - तट-
क्रीडाकाननकेलिकौतुकजुषामायुः परं क्षीयते॥

जीवन की सफलता वैराग्यशतक./90

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Dhanyānāṁ girikandare nivasatāṁ jyotiḥ paraṁ paśyatām,
Ānandāśrukaṇān pibanti śakunāḥ niśśaṅkamaṅkeśayāḥ ।
Asmākaṁ tu manorathoparacita-prāsāda-vāpī-taṭa-
Krīḍākānanakelikautukajuṣāmāyuḥ paraṁ kṣīyate ॥

Successful life Vairagyaśataka / 90

पहाड़ों की गुफाओं में रहने वाले और भगवान् की परम ज्योति को देखने वाले उन योगियों की आँखों से निकलते हुए आँसुओं के कणों को निर्भयता-पूर्वक गोद में बैठे हुए पक्षी पीते हैं। परन्तु हम लोग तो अपनी इच्छाओं को पूर्ण करने में लगे हुए महलों और बावड़ियों के किनारों पर या खेल के मैदानों में खेल-कूद तथा आश्चर्यजनक कार्यों से प्रीति कर रहे हैं और इस प्रकार अपनी आयु को व्यर्थ ही नष्ट कर रहे हैं।

Those are lucky persons who are living in the caves of mountains and enjoying the super light of God and whose particles of tears burst out due to the spiritual happiness are being drunk by the birds sitting in their laps feeling no fear. Opposite to this, we have many desires, to make palaces and tanks and on their banks we are busy in enjoying different kinds of plays and in this way, spending our lives uselessly.

(795)

धन्यानामुत्तमं दाक्ष्यं, धनानामुत्तमं श्रुतम्।
लाभानां श्रेय आरोग्यं, सुखानां तुष्टिरुत्तमा॥

प्रशंसनीय वस्तुएँ महाभारत वन० प०/313/74

Dhanyānāmuttamaṁ dākṣyaṁ, dhanānāmuttamaṁ śrutam ।
Lābhānāṁ śreya ārogyaṁ, sukhānāṁ tuṣṭiruttamā ॥

• Mahābhā. / Vana. / 313 / 74

Admirable things

धन्यों में दक्षता, धनों में विद्या, लाभों में आरोग्य और सुखों में सन्तुष्टि सबसे उत्तम हैं।

Skilfulness is the best of all objects, knowledge is the best of all sorts of wealth, health is the best gain and contentment is the best happiness.

(796)

धन्या पतिव्रता नारी, मान्या पूज्या विशेषतः।
पावनी सर्वलोकानां, सर्वपापौघनाशिनी॥

पतिव्रता नारी की महिमा शिवपुराण/3/54/8

Dhanyā pativratā nārī, mānyā pūjyā viśeṣataḥ ।
Pāvanī sarvalokānāṁ, sarva-pāpaughanāśinī ॥

Sivapu. / 3 / 54 / 8

Greatness of a loyal wife

पतिव्रता नारी धन्य है। वह विशेष रूप में माननीय और पूजनीय है। वह समस्त लोकों को पवित्र करने वाली और समस्त पापों का नाश करने वाली है।

Blessed is the wife who is faithful to her husband. She deserves special respect and honour. She purfies all the worlds and removes all the sins.

(797)

धनैर्निष्कुलीनाः कुलीनाः क्रियन्ते,
धनैरापदो मानवा निस्तरन्ति।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धनेभ्यो न कश्चित् सुहृद्विद्यतेऽन्यो,
धनान्यर्जयध्वं धनान्यर्जयध्वम् ॥

धनों का महत्त्व कवितामृतकूप/47

Dhanairniṣkulīnāḥ kulīnāḥ kriyante,
Dhanairāpado mānavā nistaranti |
Dhanebhyo na kaścit suhṛdvidyate'nyo,
Dhanānyarjayadhvaṁ dhanānyarjayadhvam ||

Importance of riches Kavitāmṛtakūpa. / 47

धन से अकुलीन भी कुलीन बना दिये जाते हैं, धन से मनुष्य विपदाओं को पार कर जाते हैं। धन से बढ़कर और कोई मित्र नहीं है; अतः धन कमाओ, धन कमाओ।

By wealth the low-bred are turned into high-bred, by wealth men cross-over calamities. There is no better friend than wealth. So, earn wealth, earn wealth.

(798)

धर्मं कृत्वा कर्मणां तात मुख्यम्,
महाप्रतापः सवितेव भाति।
हीनो हि धर्मेण महीमपीमाम्,
लब्ध्वा नरः सीदति पापबुद्धिः ॥

धर्म-सुख का साधन महाभा./उद्योग/27/6

Dharmaṁ kṛtvā karmaṇāṁ tāta mukhyam,
Mahāpratāpaḥ saviteva bhāti |
Hīno hi dharmeṇa mahīmapīmām,
Labdhvā naraḥ sīdati pāpabuddhiḥ ||

Mahābhā. / Udyoga / 27 / 6

Only morality—The source of happiness

हे प्रिय! कर्मों में मुख्य धर्म ही है, जिसे करके मनुष्य महाप्रतापी बनकर सूर्य के समान चमकता है। जो दुष्ट बुद्धि वाला धर्म से हीन है, वह इस सम्पूर्ण पृथ्वी को पाकर भी असंतुष्ट और दुःखी रहता है।

O dear! It is Dharma which is the best of all works. The man who practises Dharma shines like the sun with his glory. The person who thinks badly and does anti-dharma, remains unsatisfied and sad even after occupying the whole of earth.

(799)

धर्मः पिता क्षमा माता, दया भार्या गुणाः सुताः।
कुटुम्बं सुधियस्तस्य, ह्येतदन्ये तु विभ्रमाः ॥

बुद्धिमान् व्यक्ति के सम्बन्धी उद्भटश्लोक

Dharmaḥ pitā kṣamā mātā, dayā bhāryā guṇāḥ sutāḥ |
Kuṭumbaṁ sudhiyastasya, hyetadanye tu vibhramāḥ ||

Relatives of the wise Udbhaṭaśloka

बुद्धिमान् व्यक्ति के परिवार में तो धर्म ही पिता है, क्षमा ही माता है, दया ही पत्नी है और गुण ही पुत्र हैं। उसके लौकिक सम्बन्धी तो भ्रान्ति-मात्र हैं।

In the family of a wise man, religion is his father, forbearance is his mother, kindness is his wife and his qualities are his sons. All other worldly relatives are illusion only.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(800)

धर्मज्ञं च कृतज्ञं च, तुष्टप्रकृतिमेव च।
अनुरक्तं स्थिरारम्भं, लघुमित्रं प्रशस्यते॥

प्रशंसनीय मित्र मनु. / 7 / 209

Dharmajñaṁ ca kṛtajñaṁ ca, tuṣṭaprakṛtimeva ca |
Anuraktaṁ sthirārambhaṁ, lagumitraṁ praśasyate ||

Admirable friend Manu. / 7 / 209

धर्मज्ञ, कृतज्ञ, संतोषी स्वभाव वाला, अनुरक्त और सुदृढ़ रूप से कार्य प्रारम्भ करने वाला छोटा-सा मित्र भी प्रशंसा के योग्य होता है।

Even a small friend who knows Dharma, is grateful and is contented by nature deserves appreciation.

(801)

धर्मार्थं नार्थकामार्थमायुर्वेदो महर्षिभिः।
प्रकाशितो धर्मपरैरिच्छद्भिः स्थानमक्षरम्॥

आयुर्वेद का उद्देश्य चरक/सूत्रस्थान

Dharmārthaṁ nārthakāmārthamāyurvedo maharṣibhiḥ |
Prakāśito dharmaparairicchadbhiḥ sthānamakṣaram ||

Aim of Āyurveda Caraka / Sūtra.

स्वर्ग में अक्षय स्थान प्राप्त करने की इच्छा करने वाले धर्मनिष्ठ महर्षियों ने आयुर्वेद का प्रकाशन धर्म करने की दृष्टि से किया है, न कि काम की और धन प्राप्त करने की दृष्टि से।

The great sages who desired to attain permanent place in the heaven and who practised religion discovered Āyurveda only for charity, not for money and lust.

(802)

धर्मार्थं यततामपीह विपदो दैवाद्यदि स्युः क्वचित्,
तत्तासामुपशान्तये सुमतिभिः कार्यो विशेषान्नयः।
लोके ख्यातिमुपागतात्र सकले लोकोक्तिरेषा यतो,
दग्धानां किल वह्निना हितकरः सेकोऽपि तस्योद्भवः॥

कष्ट सहकर भी धर्म करो पञ्च./मित्रभेद/322

Dharmārthaṁ yatatāmapīha vipado daivādyadi syuḥ kvacit,
Tattāsāmupaśāntaye sumatibhiḥ kāryo viśeṣānnayaḥ |
Loke khyātimupāgatātra sakale lokoktireṣā yato,
Dagdhānāṁ kila vahninā hitakaraḥ seko'pi tasyodbhavaḥ ||

Pañca. / Mitrabhe. / 322

Do good even in troubles

धर्म के कार्य करते हुए भी यदि दुर्भाग्य से विपत्तियाँ आ जाएँ तो बुद्धिमानों को चाहिए कि उन विपत्तियों को दूर करने के लिए विशेष धार्मिक कार्य ही करें। संसार में यह लोकोक्ति प्रसिद्ध हो चुकी है कि आग से जले हुए स्थान पर आग का ही सेक लाभ पहुँचाता है।

If some people have to face troubles while practising religious works, then to remove those troubles the wise-men should do some other religious work. A proverb is very famous in this world that the part burnt with fire should be tomented with fire to heal it.

(803)

धर्मार्थं यस्य वित्तेहा, वरं तस्य निरीहता।
प्रक्षालनाद्धि पङ्कस्य, दूरादस्पर्शनं वरम्॥

धर्मार्थ धन की कामना सुभाषितावलि / 3001

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Dharmārtham yasya vittehā, varam tasya nirīhatā |
Prakṣālanāddhi paṅkasya, dūrādasparśanam varam ||

Subhāṣitāvali / 3001

To earn money for Dharma

दान-धर्म करने के लिए जिसको धन की इच्छा होती है, उसके लिए धन की इच्छा न करना ही श्रेयस्कर है। कीचड़ को धोने की अपेक्षा यही अच्छा है कि उससे दूर ही रहकर उसे छुआ न जाए।

One who desires to earn money for religious works, it is better for him to keep off such desire. It is better to remain away from the mud than to be muddy and then to wash it.

(804)

धर्मार्थकाममोक्षाणां, यस्यैकोऽपि न विद्यते।
अजागलस्तनस्येव, तस्य जन्म निरर्थकम्॥

निन्दनीय जीवन चाणक्यनीति/3/20

Dharmārtha-kāma-mokṣāṇāṁ, yasyaiko'pi na vidyate |
Ajāgalastanasyeva, tasya janma nirarthakam ||

Condemnable life Cāṇakyanīti / 3 / 20

धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष में से एक भी जिसने नहीं कमाया है, बकरी के गले के स्तन की तरह उसका जन्म निरर्थक है। (किसी-किसी बकरी के ही गले में स्तन जैसे मांसपिंड होते हैं।)

A life of such a person is futile like the nipples of a goat's throat, if he does not possess even one of the four — morality, riches, enjoyment of life and salvation. (Only some goats have hanging nipples under their necks.)

(805)

धर्म्यं यशस्यमायुष्यं, लोकद्वयरसायनम्।
अनुमोदामहे ब्रह्मचर्यमेकान्तनिर्मलम्॥

ब्रह्मचर्य की महिमा (अष्टांगहृदय)

Dharmyaṁ yaśasyamāyuṣyaṁ, lokadvaya-rasāyanam |
Anumodāmahe brahmacaryamekāntanirmalam ||

Advantages of Brahmacarya Aṣṭaṅgahṛdaya

नैष्ठिक ब्रह्मचर्य धर्मप्रद, यशवर्धक, दीर्घायुप्रद, इहलोक और परलोक में रसायन के समान फलप्रद और शरीर तथा मन की निर्मलता करने वालों में सर्वश्रेष्ठ होता है, इसलिए हम उसका समर्थन करते हैं।

Celibacy (protection of sperm) is useful for religion, fame, long life and like a fruitful alchemy for this and the next world. So we recommend celibacy, which is quite pure and spotless.

(806)

धिक् तस्य जन्म यः पित्रा, लोके विज्ञायते नरः।
यः पुत्रात् ख्यातिमभ्येति, तस्य जन्म सुजन्मनः॥

निन्दनीय और प्रशंसनीय जन्म अज्ञात

Dhik tasya janma yaḥ pitrā, loke vijñāyate naraḥ |
Yaḥ putrāt khyātimabhyeti, tasya janma sujanmanaḥ ||

Unknown

Condemnable and admirable lives

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उस मनुष्य के जन्म को धिक्कार है जो संसार में पिता के कारण (नाम से) जाना जाता है। जन्म तो उस सुजन्मा का है, जिसे पुत्र के कारण ख्याति मिलती है।

Fie upon the birth of the man who is known in this world through his father. The birth is praiseworthy of that well-born who becomes famous through his son.

(807)

धीरस्सदा रचयते हि परोपकारं,
वाक्यं कठोरमपि तस्य दयार्द्रगर्भम्।
निर्वान्त-तोयनिवहैर्जलदैर्विसृष्टा-
वर्षोपला दधति शीतलवारिगर्भम्॥

सूक्तिमुक्तावली/125

महापुरुषों के कठोर वाक्य

Dhirassadā racayate hi paropakāraṁ,
Vākyaṁ kaṭhoramapi tasya dayārdragarbham |
Nirvānta-toyanivahairjaladairvisṛṣṭā-
Varṣopalā dadhati śītalavārigarbham ||

Sūktimu. / 125

Even harsh words of the great

धीर पुरुष सदा परोपकार ही करता है। उसका कठोर वचन भी भीतर से दया से भीगा रहता है। भरपूर जल बरसाने के बाद बादलों के द्वारा गिराये गये ओले अपने अन्दर ठंडा पानी लिये रहते हैं।

A strong-minded person always does good to others. Even his harsh words remain full of mercy. The hailstones showered by clouds after they have emptied contain cold water in themselves.

(808)

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं, शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो, दशकं धर्मलक्षणम्॥

धर्म के दस लक्षण मनु./6/92

Dhṛtiḥ kṣamā damo'steyaṁ, śaucamindriyanigrahaḥ |
Dhirvidyā satyamakrodho, daśakaṁ dharmalakṣaṇam ||

Ten signs of morality Manu. / 6 / 92

धैर्य, क्षमा, संयम, चोरी न करना, शुचिता, इन्द्रिय-निग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य और क्रोध न करना – ये धर्म की पहचान के दस चिह्न हैं।

The following are the ten signs of morality by which one can be recognized as a religious person :- (1) patience, (2) forbearance, (3) control of mind, (4) rejection of theft, (5) cleanliness, (6) control on senses, (7) thoughtfulness, (8) learning, (9) truth and (10) absence of anger.

(809)

धृतिर्दाक्ष्यं संयमो बुद्धिरात्मा,
धैर्यं शौर्यं देश-कालाप्रमादः।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अल्पस्य वा बहुनो वा विवृद्धौ,
धनस्यैतान्यष्ट समिन्धनानि ॥

धन बढ़ाने के साधन महाभारत/शान्तिपर्व/120/37

Dhṛtirdākṣyaṁ saṁyamo buddhirātmā,
Dhairyaṁ śauryaṁ deśakālāpramādaḥ ।
Alpasya vā bahuno vā vivṛddhau,
Dhanasyaitānyaṣṭa samindhanāṇi ॥

Mahābhā. / Śāntipa. / 120 / 37

Helpers to increase wealth

धन को संभालना, कार्यकुशलता, संयम, विचार-शीलता, स्वावलम्बन, धैर्य, वीरता और स्थान तथा समय की लापरवाही न करना – ये आठ धन को थोड़ा या अधिक बढ़ाने के साधन हैं।

The following are eight means by which money grows in less or big quantity :- (1) control on money, (2) efficiency, (3) control on senses and mind, (4) thoughtfulness, (5) self-dependence, (6) patience, (7) bravery, (8) carefulness for the place and the time.

न = Na

(810)

न करोति यतः पातं, पित्रोः शोकमहोदधौ।
अपत्यत्वमपत्यस्य, तद्वदन्ति सुमेधसः ॥

अपत्य का लक्षण पद्मपुराण/31/153

Na karoti yataḥ pātaṁ, pitroḥ śokamahodadhau ।
Apatyatvamapatyasya, tadvadanti sumedhasaḥ ॥

Padmapu. / 31 / 153

Definition of offspring

क्योंकि वह (पुत्र) माता-पिता को शोक-सागर में नहीं गिराता, इस कारण बुद्धिमान् पुत्र को अपत्य कहते हैं।

Because he (son) does not make the parents fall into the ocean of sorrow, he is called 'apatya', (which means offspring) by wise persons.

(811)

न कर्मणां विप्रणाशोऽस्त्यमुत्र,
पुण्यानामथवा पापकानाम्।
पूर्वं कर्तुर्गच्छति पुण्यपापम्,
पश्चात् त्वेनमनुयात्येव कर्ता ॥

कर्मों का क्षय नहीं महाभा./उद्योग/27/10

Na karmaṇāṁ vipraṇāśo'styamutra,
Puṇyānāmathavā pāpakānām ।
Pūrvaṁ karturgacchati puṇyapāpam,
Paścāt tvenamanuyātyeva kartā ॥

Mahābhā. / Udyoga / 27 / 10

Deeds are not destroyed

पुण्य वाले अथवा पाप वाले कर्मों का नाश दूसरे लोक में नहीं होता। कर्म करने वाले से पूर्व उसके पुण्य तथा पाप उस लोक में पहुँच जाते हैं और उनके पीछे उन कर्मों को करने वाला जाता है।

No good or bad deeds done are destroyed in the next world. The good or bad deeds reach before their doer

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

and then the doer follows them to the next world.

(812)

न कश्चित्कस्यचिन्मित्रं, न कश्चित् कस्यचिद्रिपुः।
व्यवहारेण जायन्ते, मित्राणि रिपवस्तथा॥

मित्रता या शत्रुता में कारण हितोपदेश/मित्रलाभ/72

Na kaścitkasyacinmitraṁ, na kaścit kasyacidripuḥ।
Vyavahāreṇa jāyante, mitrāṇi ripavastathā॥

Hitopa / Mitrala. / 72

Means of frienship or enmity

न कोई किसी का मित्र है, न शत्रु। व्यवहार से ही मित्र और शत्रु बनते हैं।

No one is anybody's friend or foe. It is only one's conduct that makes friends and enemies.

(813)

न कश्चित्कस्यचिन्मित्रं, न कश्चित् कस्यचिद्रिपुः।
अर्थतस्तु निबध्यन्ते, मित्राणि रिपवस्तथा॥

प्रयोजन से ही महाभा./शान्ति./138/110

मित्र या शत्रु

Na kaścitkasyacinmitraṁ na kascit kasyacidripuḥ।
Arthatastu nibadhyante, mitrāṇi ripavastathā॥

Mahābhā. / Śānti. / 138 / 110

Purposes make friends or enemies

न कोई किसी का मित्र होता है और न कोई किसी का शत्रु, प्रयोजन से ही कोई मित्र बन जाते हैं और कोई शत्रु।

There is neither any friend nor any enemy. Friends and enemies are made due to their purpose.

(814)

न कश्चिदपि जानाति, किं कस्य श्वो भविष्यति।
अतः श्वः-करणीयानि, कुर्यादद्यैव बुद्धिमान्॥

भविष्य निश्चित नहीं अज्ञात

Na kaścidapi jānāti, kiṁ kasya śvo bhaviṣyati।
Ataḥ śvaḥ-karaṇīyāni, kuryādadyaiva buddhimān॥

Future is uncertain Unknown

कोई नहीं जानता कि कल किसको क्या होने वाला है। अतः बुद्धिमान् लोगों को कल करने वाले कार्य को आज ही कर लेना चाहिए।

No one knows what will happen to a person on the next day (Tomorrow). Therefore one should do the things today which are to be done on the next day.

(815)

न कश्चिदात्मनः शत्रुं, नात्मानं कस्यचिद्रिपुम्।
प्रकाशयेन्नापमानं, न च निःस्नेहतां प्रभोः॥

गोपनीय बात भावप्रकाश/दिनचर्यादिप्रकरण/253

Na kaścidātmanaḥ śatruṁ, nātmānaṁ kasyacidripum।
Prakāśayennāpamānaṁ, na ca niḥsnehatāṁ prabhoḥ॥

Bhāvapra. / Dinaca. / 253

Things to hide

किसी को अपना शत्रु या किसी को अपना मित्र घोषित न करे और नाहीं अपने हुए अपमान को तथा अपने स्वामी द्वारा किए गए दुर्व्यवहार को भी बताए।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

One should not announce any body as his friend or as his enemy. Besides, self disgrace and bad behaviour shown by one's master should not be disclosed.

(816)

नक्रः स्वस्थानमासाद्य, गजेन्द्रमपि कर्षति।
स्वस्थानात् परिभ्रष्टः, शुनाऽपि परिभूयते॥

अपने स्थान का महत्त्व पञ्चतन्त्र/काकोलूकीय/44

Nakraḥ svasthānamāsādya, gajendramapi karṣati |
Svasthānāt paribhraṣṭaḥ, śunā'pi paribhūyate ||

Pañca. / Kāko. / 44

Advantage of own place

मगरमच्छ अपने स्थान (जल) को प्राप्त कर बड़े हाथी को भी खींच कर ले जाता है, परन्तु वही अपने स्थान से हटा हुआ (स्थल पर आया हुआ) कुत्ते से भी मार दिया जाता है।

A crocodile when remains in its place (water), it takes away even a big elephant, but when it is far from its place, and is on land, it is dragged even by a dog.

(817)

न गच्छेत्पूज्ययोर्मध्ये, दम्पत्योरन्तरेण च।
रिपोरन्नं न भुञ्जीत, गणिकान्नमपि क्वचित्॥

शिष्टाचार की बातें भावप्रकाश/दिनचर्या/268

Na gacchet pujyayormadhye, dampatyorantareṇa ca |
Reporannaṁ na bhuñjīta, gaṇikānnamapi kvacit ||

No to be done Bhāva. / Dina. / 268

पूज्य व्यक्तियों के बीच में तथा पति-पत्नी के मध्य में नहीं जाना चाहिए। शत्रु द्वारा या वेश्या द्वारा दिया गया अन्न भी किसी परिस्थिति में नहीं खाना चाहिए।

One should not go between two respected persons and a couple. He should not eat the food given by an enemy or a prostitute at any time.

(818)

न गणस्याग्रतो गच्छेत्सिद्धे कार्ये समं फलम्।
यदि कार्यविपत्तिः स्यान्मुखरस्तत्र हन्यते॥

मुखिया बनने पर हानि हितोपदेश / 1 / 12

Na gaṇasyāgrato gacchet, siddhe kārye samaṁ phalam |
Yadi kārya-vipattiḥ syāt, mukharastatra hanyate ||

Harms in leadership Hitopa. / 1 / 12

किसी समूह का नेता बनकर आगे नहीं जाना चाहिए; क्योंकि यदि सफलता मिलेगी तो लाभ सभी को बराबर मिलेगा, परन्तु यदि कोई संकट आ गया तो नेता ही मारा जाएगा।

One should not go as a leader of any group. If the undertaking succeeds, the fruit is shared equally by all but if there is some risk, then it is the leader, who is killed.

(819)

न गृहं गृहमित्याहुर्गृहिणी गृहमुच्यते।
गृहं हि गृहिणीहीनमरण्यसदृशं मतम्॥

पत्नी का महत्त्व पञ्चतन्त्र / काकोलूकीय / 143

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Na gṛhaṁ gṛhamityāhurgṛhiṇī gṛhamucyate |
Gṛhaṁ hi gṛhiṇīhīnamaraṇyasadṛśaṁ matam ||

Pañca. / Kāko / 143

Importance of the wife

घर तब तक घर नहीं कहा जाता, जब तक घर वाली वहाँ न हो, क्योंकि घर वाली ही घर का स्वरूप होती है। जो घर पत्नी से रहित है, वह तो जंगल-सा ही कहा जाता है।

The house is not a house, until there is a wife, because it is the wife by whom a house is maintained. The house without a wife is considered as a forest.

(820)

न गोप्रदानं न महीप्रदानं न चान्नदानं हि तथा प्रधानम्।
यथा वदन्तीह बुधाः प्रधानं सर्वप्रधानेष्वभयप्रदानम्॥

अभयदान की मुख्यता पञ्च./मित्रभेद/234

Na gopradānaṁ na mahīpradānaṁ,
Na cānnadānaṁ hi tathā pradhānam |
Yathā vadantīha budhāḥ pradhānaṁ,
Sarvapradhāneṣvabhayapradānam ||

Pañca. / Mitrabhe. / 234

Superiority of giving fearlessness

गौ, पृथ्वी और अन्न का दान उतने मुख्य नहीं हैं, जितनी मुख्यता बुद्धिमान लोग अभयदान को देते हैं अर्थात् अभयदान ही सबसे मुख्य दान है।

The donations of a cow, a piece of land and food are not so important as the assurance of protection. It means that assurance of protection is the most important of all donations.

(821)

न च शत्रुरवज्ञेयो, दुर्बलोऽपि बलीयसा।
अल्पोऽपि हि दहत्यग्निर्विषमल्पं हिनस्ति च॥

शत्रु उपेक्षणीय नहीं महाभारत/शान्तिपर्व/58/17

Na ca śatruravajñeyo, durbalo'pi balīyasā |
Alpo'pi hi dahatyagnirviṣamalpaṁ hinasti ca ||

Mahābhā. / Śānti. / 58 / 17

Not to be ignored an enemy

बलवान् को दुर्बल शत्रु की भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। थोड़ी-सी आग भी जला डालती है और थोड़ा-सा जहर भी मार डालता है।

A more powerful person should not be careless about even a weak enemy. Even a small fire burns and also a little quantity of poison kills a man.

(822)

न च हसति नाभ्यसूयति,
न परान् परिभवति नानृतं वदति।
नाक्षिप्य कथां कथयति,
लक्षणमेतत् कुलीनस्य॥

कुलीन के चिह्न नीतिद्विषष्टिका/75

Na ca hasati nābhyasūyati,
Na parān paribhavati nānṛtaṁ vadati |
Nākṣipya kathāṁ kathayatī,
Lakṣaṇametat kulīnasya ||

Nītidviṣaṣṭikā / 75

Signs of a noble family

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो न किसी का उपहास करता है, न किसी से द्वेष करता है, न औरों का तिरस्कार करता है, न मिथ्याभाषण करता है और न किसी की बात को काटकर अपनी बात कहता है, वही कुलीन है। यही कुलीन का लक्षण है।

One who neither ridicules others nor feels jealous of anybody, nor humiliates others, nor tells a lie, nor interrupts talks of others; is a noble person. These are the signs of a man belonging to a noble family.

(823)

न चैष धर्मो वन एव सिद्धः,
पुरेऽपि सिद्धिर्नियता यतीनाम्।
बुद्धिश्च यत्नश्च निमित्तमत्र,
वनं च लिङ्गं च हि भीरुचिह्नम्॥

योग का स्थान अज्ञात

Na caiṣa dharmo vana eva siddhaḥ,
Pure'pi siddhirniyatā yatīnām।
Buddhiśca yatnaśca nimittamatra,
Vanaṁ ca liṅgaṁ ca hi bhīrucihnam॥

Place of yoga Unknown

धर्म की उपासना के लिए जंगल जाना अनिवार्य नहीं है, शहरों में भी मुनिजनों को सिद्धियाँ मिल सकती हैं क्योंकि बुद्धि एवं यत्न ही यहाँ निमित्त हैं। वन एवं लिङ्ग (चिह्न) तो कायरों के पलायन के ही द्योतक हैं।

The religious duty is not such as which may be acquired only in a forest. Even in a town success of ascetics is ensured. Intelligence and effort are the causes in this matter. A forest and symbols are the marks of a coward (i.e., of those who do not want to face the reality of the world.)

The idea is that renunciation is something inward for which no outer symbol is necessary. Those who adopt some outer symbol, as living in forest or wearing red garments, are cowards, i.e., insincere.

(824)

न चौरहार्यं, न च राजहार्यम्,
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यम्,
विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्॥

विद्या — प्रमुख धन सुभाषित / 30 / 48

Na caurahāryaṁ na ca rājahāryam,
Na bhrātṛbhājyaṁ na ca bhārakāri।
Vyaye kṛte vardhata eva nityam,
Vidyā-dhanaṁ sarvadhanapradhānam॥

Subhāṣita / 30 / 48

Education - best riches

विद्या-रूपी धन को न चोर चुरा सकते हैं, न राजा छीन सकता है और न ही इसे भाई बाँट सकते हैं। इसके उठाने में भार भी नहीं होता। इसे जितना खर्च करें, उतना ही यह बढ़ता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जाता है। इसीलिए विद्यारूपी धन सभी धनों में श्रेष्ठ है।

The wealth of knowledge cannot be stolen by thieves, cannot be taken away by the king and cannot be divided by brothers. It has no weight. The more it is spent the more it increases. So the wealth of knowledge is the best of all wealths.

(825)

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव, भूय एवाभिवर्धते॥

कामनाओं का भोग महाभारत/आदिपर्व/75/50

Na jātu kāmaḥ kāmānāmupabhogena śāmyati |
Haviṣā kṛṣṇavartmeva, bhūya evābhivardhate ||

Mahābhā. / Ādip. / 75 / 50

Enjoying passions

जैसे आहुति डालने से अग्नि और भड़कती है, उसी प्रकार वासनाएँ भोग भोगने से शान्त नहीं होतीं, प्रत्युत वे और अधिक बढ़ती जाती हैं।

Desires cannot be decreased by their enjoyment, but they increase more and more as the fire burns more brightly after getting oblations.

(826)

न जात्या ब्राह्मणश्चात्र,
क्षत्रियो वैश्य एव न।
न शूद्रो न च वै म्लेच्छो,
भेदिता गुणकर्मभिः॥

वर्ण-व्यवस्था शुक्रनीति/1/38

Na jātyā brahmaṇaścātra,
Kṣatriyo vaiśya eva na |
Na śūdro na ca vai mleccho,
Bheditā guṇakarmabhiḥ ||

Caste-system Śukranīti / 1 / 38

इस संसार में कोई भी जन्म से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र या म्लेच्छ नहीं है। ये सब भेद गुण और कर्म से होते हैं।

In this world nobody is Brahmaṇa, Kṣatriya, Vaiśya, Śudra or Mlechha by birth. Qualities and their deeds are responsible for these differences.

(827)

न तच्छस्त्रैर्न नागेन्द्रैर्न हयैर्न पदातिभिः।
कार्यं संसिद्धिमभ्येति, यथा बुद्ध्या प्रसाधितम्॥

बुद्धि का महत्त्व पञ्च./मित्रभेद/131

Na tacchastrairna nāgendrairna hayairna padātibhiḥ |
Kāryaṁ saṁsiddhimabhyeti, yathā buddhyā prasādhitam ||

Pañca. / Mitrabhe. / 131

Importance of intellect

बुद्धि से सोचा हुआ योजनाबद्ध कार्य जिस प्रकार सफलता प्राप्त करता है, उस प्रकार की सफलता न शस्त्रों से, न बड़े-बड़े हाथियों से, न घोड़ों से और नाहीं पैदल सेना से प्राप्त हो सकती है।

As success is achieved by planning with intelligence, such success cannot be achieved through weapons or big elephants or horses or infantry.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(828)

न तज्जलं यन्न सुचारुपङ्कजं,
न पङ्कजं तद् यदलीनषट्पदम्।
न षट्पदोऽसौ न जुगुञ्ज यः कलं,
न गुञ्जितं तन्न जहार यन्मनः॥

सौन्दर्य के आधार भट्टिः तथा सुभाषितावलि / 1819

Na tajjalaṁ yanna sucārupaṅkajaṁ,
Na paṅkajaṁ tad yadalīnaṣaṭapadam।
Na ṣaṭpado'sau na juguñja yaḥ kalaṁ,
Na guñjitaṁ tanna jahāra yanmanaḥ॥

Basis of beauty Subhāṣitāvali / 1819

शरद ऋतु में ऐसा कोई जलाशय नहीं, जिसमें सुन्दर कमल न खिले हों और ऐसा कमल भी नहीं, जिस पर भ्रमर न बैठे हों तथा भ्रमर भी ऐसा नहीं, जो मधुर गुञ्जन न कर रहा हो और वह गुञ्जन भी ऐसा नहीं, जिससे मन आकृष्ट न होता हो।

In the autumn season there is no such tank, which is not adorned with lotuses, there is no such lotus which is not covered with black-bees, there is no such black bee which is not buzzing and there is no such buzzing which does not attract one's mind.

(829)

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्र-तारकम्,
नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः।
तमेव भान्तमनुभाति सर्वम्,
तस्य भासा सर्वमिदं विभाति॥

परमेश्वर की ज्योति प्रश्नोपनिषद्/2/15

Na tatra sūryo bhāti na candratārakam,
Nemā vidyuto bhānti kuto'yamagniḥ।
Tameva bhāntamanubhāti sarvam,
Tasya bhāsā sarvamidaṁ vibhāti॥

Light of God Praśnopanisad / 2 / 15

उस परमात्मा को न सूर्य, न चाँद-तारे, ना ही बिजलियाँ प्रकाशित कर सकती हैं; आग की तो सत्ता ही क्या है। वह (परमात्मा) जब चमकता है, तो ये सब वस्तुएँ चमकती हैं। उसी के प्रकाश से सूर्यादि सभी तेजस्वी वस्तुएँ चमक प्राप्त करती हैं।

God cannot be illuminated by the sun, the moon, the stars and electricity, What to say of this fire? When God shines, all these things shine. It is His light which illuminates all the shining things.

(830)

न तस्य बीजं रोहति रोहकाले,
न तस्य वर्षं वर्षति वर्षकाले।
भीतं प्रपन्नं प्रददाति शत्रवे,
न स त्रातारं लभते त्राणमिच्छन्॥

शरणागत के प्रति कर्तव्य महाभा./उद्योग/12/19

Na tasya bījaṁ rohati rohakāle,
Na tasya varṣaṁ varṣati varṣakāle।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Bhītaṁ prapannaṁ pradadāti śatrave,
Na sa trātāraṁ labhate trāṇamicchan ॥

Mahābhā. / Udyoga / 12 / 19

Duty for a refugee

जो व्यक्ति डरे हुए और शरण में आए हुए को शत्रु के हवाले कर देता है, उसका बोया हुआ बीज उगने के समय उगता नहीं है और वर्षा के समय उसे वर्षा भी प्राप्त नहीं होती। इसके अतिरिक्त संकट में जब वह रक्षा की माँग करता है, तो उसे रक्षण देने वाला भी कोई नहीं मिलता।

The person who gives away the man who is frightened and approached him for refuge, from his enemy, his sown seed does not grow in time and he gets no rain in rainy season. Besides, when he falls into some trouble and wants protection, no body comes forward to protect him.

(831)

न त्वेव मन्ये पुरुषस्य कर्म,
संवर्तते सुप्रयुक्तं यथावत्।
मातुः पितुः कर्मणाभिप्रसूतः,
संवर्धते विधिवद् भोजनेन ॥

भाग्य की मुख्यता महाभा./उद्योग/32/26

Na tveva manye puruṣasya karma,
Saṁvartate suprayuktaṁ yathāvat ।
Matuḥ pituḥ karmaṇābhiprasūtaḥ,
Saṁvardhate vidhivad bhojanena ॥

Mahābhā. / Udyoga / 32 / 26

Superiority of fate

लोग कहते हैं कि केवल पुरुषार्थ का अच्छे ढंग से प्रयोग होने पर ही वह उत्तम फल देने वाला होता है। जैसे माता-पिता के प्रयत्न से उत्पन्न हुआ पुत्र विधिपूर्वक भोजन देने से वृद्धि को प्राप्त होता है। परन्तु मैं (विदुर) इस बात को मानने को तैयार नहीं हूँ, क्योंकि इस विषय में दैव ही प्रधान है।

It is said that if efforts are done in a correct manner they will give success certainly, as the parents give birth to a son and bring him up with wholesome food with good planning. But in my (Vidura) opinion this is wrong. There is more importance of the fortune.

(832)

न दद्यादामिषं श्राद्धे, न चाद्याद्धर्मतत्त्ववित्।
मुन्यन्नैः स्यात् परा प्रीतिर्यथा न स्यात् पशुहिंसया ॥

पशु हिंसा का विरोध श्रीमद्भागवत/7/15/3

Na dadyādāmiṣaṁ śrāddhe, na cādyāddharma-tattvavit ।
Munyannaiḥ syāt parā prītiryathā na syāt paśuhiṁsayā ॥

Bhāgavatapu. / 7 / 15 / 3

Rejection of killing animals

श्राद्ध में न तो खाने को मांस देना चाहिए और नाहीं धर्म के सार को समझने वाले को स्वयं भी मांस खाना चाहिए। मुनि लोग जो कुछ खाते हैं, उसी को पसन्द करना चाहिए और पशुहिंसा से दूर रहना चाहिए।

Serving food to respectful persons during Śrāddha, neither meat should be served nor the person who knows

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

the realities of religion should eat meat himself also. The food which sages eat should be liked by all and avoid killing of any animal.

(833)

न देवा यष्टिमादाय, रक्षन्ति पशुपालवत्।
यं हि रक्षितुमिच्छन्ति, धिया संयोजयन्ति तम्॥

देवों की रक्षण-विधि चाणक्यराजनीति/6/37

Na devā yaṣṭimādāya, rakṣanti paśupālavat |
Yaṁ hi rakṣitumicchanti, dhiyā saṁyojayanti tam ||

Cāṇkya Rājniti / 6 / 37

Devine protection-method

देवता चरवाहे की तरह लाठी लेकर रक्षा नहीं करते हैं। वे जिसकी रक्षा करना चाहते हैं, उसे सुबुद्धि से संयुक्त कर देते हैं।

The gods do not protect with a stick like a cowherd. Whomsoever they want to protect, they unite him with intelligence.

(834)

न देशो मनुजैर्हीनो, न मनुष्या निरामयाः।
ततः सर्वत्र वैद्यानां, सुसिद्धा एव वृत्तयः॥

वैद्यों की आजीविका भावप्रकाश/दैनिकचर्या

Na deśo manujairhīno, na manuṣyā nirāmayāḥ |
Tataḥ sarvatra vaidyānāṁ, susiddhā eva vṛttayaḥ ||

Bhāvpra. / Dainika.

Livelihood for doctors

कोई भी देश मनुष्यों से रहित नहीं है और सभी मनुष्य नीरोग भी नहीं होते। इस कारण वैद्यों की आजीविका स्वयं ही सिद्ध हो जाती है।

There is no such a place where people do not live and all the people are not healthy. So, means of livelihood for the vaidyas are available everywhere.

(835)

न दैवमपि सञ्चिन्त्य, त्यजेदुद्योगमात्मनः।
अनुद्योगेन तैलानि, तिलेभ्यो नाप्तुमर्हति॥

उद्योग का महत्त्व हितोपदेश/प्रस्तावना/32

Na daivamapi sañcintya, tyajedudyogamātmanaḥ |
Anudyogena tailāni, tilebhyo nāptumarhati ||

Importance of work Hito. / Prasta. / 32

भाग्य को ही सब कुछ सोचकर मनुष्य अपना उद्यम न छोड़े। उद्यम न करने पर वह तिलों से तेल नहीं पा सकता, अर्थात् परिश्रम से ही कार्य-सिद्धि होती है।

Depending on fate one should not give up his effort. One can never get oil from sesame seeds without exertion. So one should work hard to get success.

(836)

न धर्मशास्त्रं पठतीति कारणं, न चापि वेदाध्ययनं दुरात्मनः।
स्वभाव एवात्र तथातिरिच्यते, यथा प्रकृत्या मधुरं गवां पयः॥

स्वभाव की मुख्यता हितोपदेश/1/17

Na dharmaśāstraṁ paṭhatīti kāraṇaṁ,
Na cāpi vedādhyayanaṁ durātmanaḥ |

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Svabhāva evātra tathātiricyate,

Yathā prakṛtyā madhuraṁ gavāṁ payaḥ ॥

Superiority of nature Hitopa. / 1 / 17

दुष्ट व्यक्ति धर्म-शास्त्र पढ़ने या वेद के अध्ययन करने से श्रेष्ठ पुरुष बन जाएगा, यह संभव नहीं है। स्वभाव की ही मुख्यता सदा रहती है, जैसे गौओं का दूध स्वभाव से ही मीठा होता है।

A badman never can be a noble person by reading scriptures or by study of the Vedas. It is one's nature that makes a difference between good and bad, as cow-milk remains always sweet.

(837)

न पञ्चसाधारणमत्र किञ्चि-

च्छरीरमेको वहतेऽन्तरात्मा ।

स वेत्ति गन्धांश्च रसान् श्रुतीश्च,

स्पर्शं च रूपं च गुणांश्च येऽन्ये ॥

भोक्ता - जीवात्मा महाभा./शान्ति./187/19

Na pañcasādhāraṇamatra kiñci-

ccharīrameko vahate'ntarātmā ।

Sa vetti gandhāṁśca rasān śrutīśca,

Sparśaṁ ca rūpaṁ ca guṇāṁśca ye'nye ॥

Soul — gainer of the fruits of deeds Mahābhā. / Śānti / 187 / 19

पृथ्वी आदि पाँच तत्त्वों से बने शरीर का कोई महत्त्व नहीं है। इसे तो अन्तरात्मा गति देता है। वही आत्मा इसमें रहता हुआ गन्धों, रसों, शब्दों, स्पर्श, रूप तथा अन्य जो भी गुण हैं, उनको समझता और जानता है।

Only body which is made of five elements has no value. Only the soul makes it move or work. It is the soul which knows smells, tastes, sounds, touches, colours and all other qualities.

(838)

न पश्यति जन्मान्धः, कामान्धो नैव पश्यति।

न पश्यति मदोन्मत्तो, ह्यर्थी दोषान्न पश्यति ॥

देखने में असमर्थ (वृद्धचाणक्य)

Na paśyati janmāndhaḥ, kāmāndho naiva paśyati ।

Na paśyati madonmatto, hyarthī doṣānna paśyati ॥

Unable to see (Vṛddhacāṇakya)

जन्मांध आँखों के अभाव में वस्तुओं को नहीं देखता, कामान्ध विवेक-भ्रष्ट हो जाने के कारण नहीं देख पाता, शराब या अभिमान से पागल हुआ व्यक्ति विवेक शून्य हो जाता है और कामनाएँ करने वाला दाता के दोषों को नहीं देखता।

The person blind by birth doesn't see, the person blind with lust doesn't see, the person mad with arrogance or wine doesn't see and person who has desires doesn't see the defects of donator.

(839)

न पिता नात्मजो नात्मा, न माता न सखीजनः।

इह प्रेत्य च नारीणां, पतिरेको गतिः सदा ॥

पति का महत्त्व वाल्मीकि-रामायण/2/175

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Na pitā nātmajo nātmā, na mātā na sakhījanaḥ |
Iha pretya ca nārīṇāṁ, patireko gatiḥ sadā ||

Importance of a husband Vā. Rā. / 2 / 175

नारियों के लिए इस लोक में तथा परलोक में भी न पिता, न पुत्र, न वे स्वयं, न माता और न सखियाँ सहारा बनते हैं बल्कि केवल पति ही उनका एकमात्र आश्रय होता है।

The only supporters for women in this world and in the other world are only their husbands but not their fathers, sons, own self, mothers or female friends.

(840)

न भवति, भवति च न चिरं,
भवति चिरं चेत्, फले विसंवदति।
मन्युः सत्पुरुषाणां,
तुल्य-स्नेहेन नीचानाम् ॥

स्नेह के रूप सुभाषितावलि / 236

Na bhavati, bhavati ca na ciraṁ,
Bhavati ciraṁ cet, phale visaṁvadati |
Manyuḥ satpuruṣāṇāṁ,
Tulya snehena nīcānām ||

Forms of love Subhāśitāvali / 236

सत्पुरुषों का क्रोध और नीचों का स्नेह एक समान होता है। प्रथमतः तो सत्पुरुषों को क्रोध होता ही नहीं, यदि होता भी है तो देर तक नहीं ठहरता, यदि देर तक रहता भी है, तो उसका कोई दुष्परिणाम नहीं होता।

First of all, the noble persons have no anger. If they become angry, their anger remains for a short time. If it remains even for a long time, it doesn't effect badly. Anger of noble persons is similar to the love of mean fellows.

(841)

न भूतपूर्वो न च केन दृष्टो,
हेम्नः कुरङ्गो न कदापि वार्ता।
तथापि तृष्णा रघुनन्दनस्य,
विनाशकाले विपरीतबुद्धिः ॥

हितोपदेश / I / 11

विनाश-काल में बुद्धि की स्थिति

Na bhūtapūrvo na ca kena dṛṣṭo,
Hemnaḥ kuraṅgo na kadāpi vārtā |
Tathāpi tṛṣṇā Raghunandanasya,
Vināśakāle viparītabuddhiḥ ||

Hito. / I / 11

Condition of intellect in adversity

सोने के मृग के विषय में न पहले कभी सुना गया, न पहले किसी ने देखा ही। पहले ऐसा कभी भी नहीं हुआ, यह जानते हुए भी राम को स्वर्ण मृग को देखकर तृष्णा हुई। सच है कि दुर्भाग्य के समय बुद्धि विपरीत हो जाती है।

A golden deer has not existed and never seen by anybody and there was no information about it at any time. Even then Rama felt the desire for it. Indeed, at the time of calamity, intelligence becomes perverse.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(842)

न यस्य चेष्टितं विद्यान्न कुलं न पराक्रमम्।
न तस्य विश्वसेत्प्राज्ञो, यदीच्छेच्छ्रियमात्मनः॥

विश्वास के अयोग्य पञ्च./मित्रभेद/205

Na yasya ceṣṭitaṁ vidyānna kulaṁ na parākramam |
Na tasya viśvasetprājño, yadīcchecchriyamātmanaḥ ||

Not to be trusted Pañca. / Mitrabhe. / 205

बुद्धिमान् मनुष्य यदि अपना भला चाहता है तो उसे ऐसे व्यक्ति का विश्वास नहीं करना चाहिए जिसके कार्यों, खानदान तथा पराक्रम का ज्ञान न हो।

A wise man who desires his welfare should not trust such a person whose actions, family and bravery is unknown to him.

(843)

नरस्याभरणं रूपं, रूपस्याभरणं गुणः।
गुणस्याभरणं ज्ञानं, ज्ञानस्याभरणं क्षमा॥

आभरणों की विविधता नराभरण/2

Narasyābharaṇaṁ rūpaṁ, rūpasyābharaṇaṁ guṇaḥ |
Guṇasyābharaṇaṁ jñānaṁ, jñānasyābharaṇaṁ kṣamā ||

Kinds of ornaments Narābharaṇa / 2

मनुष्य का आभूषण उसका रूप है, रूप का आभूषण गुण है, गुण का आभूषण ज्ञान है और ज्ञान का आभूषण क्षमा है।

Man's beauty is handsomeness of his body, merit is the beauty of handsomeness, knowledge is the beauty of merit and forbearance is the beauty of knowledge.

(844)

न रागान्नाप्यविज्ञानादाहारानुपयोजयेत्।
परीक्ष्य हितमश्नीयाद्, देहो ह्याहारसंभवः॥

भोजन करने की विधि (चरक)

Na rāgānnāpyavijñānādāhārānupayojayet |
Parīkṣya hitamaśnīyād, deho hyāhāra-saṁbhavaḥ ||

Method to eat food Caraka

जिह्वा-लौल्य या अज्ञान से अन्नद्रव्यों का सेवन न करें, बल्कि ठीक परीक्षण करके ही उनका सेवन करें, क्योंकि देह आहार से बना है।

One should not eat edibles only for taste or with ignorance, but he should examine them first and then eat, as the body is made of edibles.

(845)

न राज्ञा मृदुना भाव्यं, मृदुर्हि परिभूयते,
न भाव्यं दारुणेनातितीक्ष्णादुद्विजते जनः।
काले मृदुर्यो भवति, काले भवति दारुणः,
राजा लोकद्वयापेक्षी, तस्य लोकद्वयं भवेत्॥

मृदुता और कठोरता मत्स्यपुराण/220/22,24

Na rājñā mṛdunā bhāvyaṁ, mṛdurhi paribhūyate,
Na bhāvyaṁ dāruṇenātitīkṣṇādudvijate janaḥ |
Kāle mṛduryo bhavati, kāle bhavati dāruṇaḥ,
Rājā lokadvayāpekṣi, tasya lokadvayaṁ bhavet ||

Matsyapu. / 220 / 22, 24

Softness and harshness

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजा को बहुत नरम नहीं होना चाहिए, क्योंकि नरम का लोग तिरस्कार कर देते हैं। राजा को कठोर भी नहीं होना चाहिए, क्योंकि कठोर से जनता विद्रोही हो जाती है। जो राजा समय पर नरम और समय पर कठोर हो जाता है, वही दोनों प्रकार के लोगों को वश में रख सकता है, क्योंकि उसके शासन में सरल तथा दुष्टप्रकृति दोनों प्रकार के लोग रहते हैं।

A king should not be soft, as the soft one is insulted. He should not be harsh as the public revolts against too much harshness. One, who is soft and harsh according to the time, can control both kinds of people, as there are some good and some bad persons in his kingdom.

(846)

न रात्रौ दधि भुञ्जीत, न च निर्लवणं तथा।
नामुद्गसूपं नाक्षौद्रं, न चाप्यघृतशर्करम्॥

दही कैसे खायें भावप्रकाश/दिनचर्या प्र./256

Na rātrau dadhi bhuñjīta, na ca nirlavanaṁ tathā।
Nāmudgasūpaṁ nākṣaudraṁ, na cāpyaghṛtaśarkaram॥

How to eat curd Bhāvapra. / Dina. / 256

रात के समय दही नहीं खाना चाहिए और बिना नमक डाले या मूँग की दाल के बिना या शहद के बिना, या घी और शक्कर के बिना भी नहीं खाना चाहिए।

One should not eat curd at night. It should not be eaten without salt or mūṅga (a kind of bean) or honey or ghee and sugar.

(847)

नवं वस्त्रं, नवं छत्रं, नव्या स्त्री, नूतनं गृहम्।
सर्वत्र नूतनं शस्तं, सेवकान्ने पुरातने॥

प्रशंसनीय वस्तुएँ (नीतिप्रदीप)

Navaṁ vastraṁ, navaṁ chatraṁ,
Navyā strī, nūtanaṁ gṛham।
Sarvatra nūtanaṁ śastaṁ,
Sevakānne purātane॥

Admirable things (Nītipradīpa)

नवीन वस्त्र, नवीन छत्र, नवोढा स्त्री, नवीन घर ये सब नये-नये अच्छे होते हैं, परन्तु सेवक और अन्न पुराने ही अच्छे होते हैं, नये नहीं।

New clothes, new umbrella, new wife and a new house, all these new things are praised but an old servant and old corns are considered better, not new.

(848)

न वध्यन्ते ह्यविश्वस्ता, बलिभिर्दुर्बला अपि।
विश्वस्तास्त्वेव वध्यन्ते, बलवन्तोऽपि दुर्बलैः॥

विश्वास न करने का परिणाम पञ्च./मित्रभेद/119

Na vadhyante hyaviśvastā, balibhirdurbalā api।
Viśvastāstveva vadhyante, balavanto'pi durbalaiḥ॥

Result to trust Pañca. / Mitrabhe. / 119

जो दूसरों पर विश्वास नहीं करते, वे कमजोर होते हुए भी बलवानों से मार नहीं खाते परन्तु जो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बलवान् भी दूसरों पर विश्वास करते हैं, वे दुर्बलों द्वारा भी मारे जाते हैं।

Those who do not trust others, even such weak persons are not killed by strong ones, but strong ones who trust others are killed by even weak persons.

(849)

नवनीतोपमा वाणी, करुणाकोमलं मनः।
धर्मबीजप्रसूतानामेतत् प्रत्यक्षलक्षणम्॥

धार्मिकों के लक्षण अज्ञात

Navanītopamā vāṇī, karuṇā-komalaṁ manaḥ।
Dharmabījaprasūtānāmetat pratyakṣa-lakṣaṇam॥

Signs of great persons Unknown

मक्खन के समान कोमल वाणी और करुणा से पूर्ण कोमल मन धर्म रूपी बीज से उपजे लोगों का प्रत्यक्ष लक्षण है।

Butter-like soft speech and the mind softened with compassion are the obvious signs of those who are born from the seeds of morality.

(850)

न वा उ देवाः क्षुधमिद्वधं ददु-
रुताशितमुपगच्छन्ति मृत्यवः।
उतो रयिः पृणतो नोपदस्य-
त्युतापृणन्मर्डितारं न विन्दते॥

दाता का धन ऋ./10/117/1

Na vā u devāḥ kṣudhamidvadhaṁ dadu-
rutāśitamupagacchanti mṛtyavaḥ।
Uto rayiḥ pṛṇato nopadasya-
tyutāpṛṇanmarḍitāraṁ na vindate॥

Riches of a donator Ṛg./10/117/1

दिव्य शक्तियाँ भूखे को ही नहीं मारतीं, अपितु जो खाता-पीता भी है, मृत्यु उसे भी निगल जाती है। दान देने वाले का धन कभी क्षीण नहीं होता और जो धन से किसी की सहायता नहीं करता, वह सुख प्राप्त नहीं कर सकता।

The divine powers or gods do not kill only the person who is hungry, but god of death kills even him who enjoys edible much. Money given by a generous person does not decrease but who does not help others with his money never gets happiness.

(851)

न वाच्यः परिवादोऽयं, न श्रोतव्यः कथञ्चन।
कर्णावपि पिधातव्यौ, प्रस्थेयं चान्यतो भवेत्॥

निन्दा करना और सुनना महाभारत, शान्तिपर्व/132/12

Na vācyaḥ parivādo'yaṁ, na srotavyaḥ kathañcana।
karnāvapi pidhātavyau, prastheyaṁ cānyato bhavet॥

Mahābhā/Śānti./132/12

To defame or to hear such thing

दूसरे की निन्दा कभी भी न तो करनी चाहिए और ना ही सुननी चाहिए। या तो कान बन्द कर लेने चाहिए या कहीं अन्यत्र चल देना चाहिए।

Neither one should be slandered nor the slander should be heard in

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

any way. Either ears should be shut or one should go to some other place.

(852)

न वित्तं दर्शयेत्प्राज्ञः, कस्यचित्स्वल्पमप्यहो।
मुनेरपि यतस्तस्य, दर्शनाच्चलते मनः॥

अपना धन मत दिखाओ पञ्च./मित्रभेद/352

Na vittaṁ darśayet prājñaḥ, kasyacit svalpamapyaho |
Munerapi yatastasya, darśanāccalate manaḥ ||

Pañca. / Mitrabhe. / 352

Don't show your money

बुद्धिमान् व्यक्ति को अपना थोड़ा सा भी धन किसी को नहीं दिखाना चाहिए, क्योंकि उसे देखने से मुनि का भी मन विचलित हो जाता है।

A wiseman should not show even his little money to anybody, because seeing this the mind of even a saint becomes unsteady.

(853)

न वित्तेन न पारुष्यैर्न सान्त्वेन न च श्रुतैः।
कोपाग्निः शाम्यते राजंस्तोयाग्निरिव सागरे॥

क्रोध की आग महाभा./शान्ति./139/45

Na vittena na pāruṣyairna sāntvena ca na śrutaiḥ |
Kopāgniḥ śāmyate rajaṁstoyāgniriva sāgare ||

Fire of rage Mahābhā. / Śānti / 139 / 45

जिस प्रकार समुद्र की वाडवाग्नि शान्त नहीं हो पाती, उसी प्रकार क्रोध की अग्नि न धन से, न कठोर साधनों से, न शान्ति के वचनों से और न उपदेशों से शान्त होती है।

As the fire of the sea-water does not quench, so is the case of the fire of anger which cannot be appeased by riches, by harsh means, by cool words and by preachings.

(854)

न विश्वसेत् कुमित्रे च, मित्रे चापि न विश्वसेत्।
कदाचित् कुपितं मित्रं, सर्वं गुह्यं प्रकाशयेत्॥

विश्वास करने के अयोग्य चाणक्यनीतिदर्पण/2/6

Na viśvaset kumitre ca, mitre cāpi na viśvaset |
Kadācit kupitaṁ mitraṁ, sarvaṁ guhyaṁ prakāśayet ||

Not to be trusted Cāṇkyanītidarpaṇa / 2 / 6

कुमित्र पर विश्वास नहीं करना चाहिए और मित्र पर भी विश्वास नहीं करना चाहिए। हो सकता है कि मित्र कभी क्रोध में आने पर सारी रहस्य की बातें प्रकट कर दे।

One should not trust a bad friend and also a true friend. It is possible that a friend in anger may reveal all the secrets.

(855)

न विश्वसेदविश्वस्ते, विश्वस्तेऽपि न विश्वसेत्।
विश्वासाद्भयमुत्पन्नं, मूलान्यपि निकृन्तति॥

विश्वास से हानि पञ्च./मित्रसम्प्राप्ति/45

Na viśvasedaviśvaste, viśvaste'pi na viśvaset |
Viśvāsād bhayamutpannaṁ, mūlānyapi nikṛntati ||

Pañca. / Mitrasam. / 45

Loss due to trust

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो विश्वास के योग्य न हो, उस पर तो विश्वास करें ही नहीं, परन्तु विश्वास के योग्य पर भी विश्वास नहीं करना चाहिए, क्योंकि विश्वास करने से जो संकट आ सकता है, वह जड़ों को भी नष्ट कर देता है।

One should not trust a person who is not trustworthy. He should not trust-even such a person who is trust worthy, because due to trust such dangerous thing may take place which destroys even the roots.

(856)

न वेगान् धारयेद्धीमान्, जातान् मूत्रपुरीषयोः।
न रेतसो न वातस्य, न वम्याः क्षवथोर्न च॥
नोद्गारस्य न जृम्भाया, न वेगान् क्षुत्पिपासयोः।
न बाष्पस्य न निद्राया, निःश्वासस्य श्रमेण च॥

शारीरिक वेग (हाजतें) चरक/सूत्रस्थान/7/3-4

Na vegān dhārayeddhīmān, jātān mūtra-purīṣayoḥ |
Na retaso na vātasya, na vamyāḥ kṣavathorna ca ||
Nodgārasya na jṛmbhāyā, na vegān kṣutpipāsayoḥ |
Na bāṣpasya na nidrāyā, niḥśvāsasya śrameṇa ca ||

Physical impulses Caraka / Sūtra / 7 / 3-4

बुद्धिमान् व्यक्ति को निम्नलिखित वेगों (हाजतों) को नहीं रोकना चाहिए :- (1) पेशाब के, (2) शौच के, (3) वीर्य के, (4) अपान वायु के, (5) उल्टी के, (6) छींक के, (7) डकार के, (8) जम्भाई के, (9) भूख के, (10) प्यास के, (11) आँसू के, (12) नींद के और (13) थकावट से आते हुए साँस के।

A wise man should not control the impulses of the following things :- (1) Urine, (2) latrine (3) semen, (4) wind, (5) vomitting, (6) sneeze, (7) belch, (8) yawning, (9) hunger, (10) thirst, (10) tears, (12) sleep and (13) breath hastening by tiredness.

(857)

न वेगितोऽन्यकार्यः स्यान्न वेगान्नीरयेद्बलात्।
काम-शोक-भय-क्रोधान्, मनोवेगान् विधारयेत्॥

शारीरिक वेग (हाजतें) भावप्रकाश/दिनचर्या/21

Na vegito'nyakāryaḥ syānna vegānnīrayedbalāt |
Kāma-śoka-bhaya-krodhān, manovegān vidhārayet ||

Impulses of body Bhāvapa. / Dina. / 21

जब किसी प्रकार का वेग (हाजत) हो तो अन्य कोई कार्य नहीं करना चाहिए और वेगों को बलपूर्वक समाप्त करने की भी चेष्टा नहीं करनी चाहिए। हाँ, काम, शोक, भय और क्रोध की भावनाओं पर नियन्त्रण रखना चाहिए।

When one feels any impulse, he should not do any other work and also should not try to remove the impulses forcibly. But the passions of lust, sorrow, fear and anger must be controlled.

(858)

नवे वयसि यः शान्तः, स शान्त इति कथ्यते।
धातुषु क्षीयमाणेषु, शमः कस्य न जायते॥

वास्तविक शान्त सुभाषितसुधानन्द लहरी / पृ. 113

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nave vayasi yaḥ śāntaḥ, sa śānta iti kathyate |
Dhātuṣu kṣīyamāṇeṣu, śamaḥ kasya na jāyate ||

Subhāṣitasudhānanda laharī / P. 113

Real clam

चढ़ती जवानी में जिसने अपने आपको शान्त कर लिया है, वही वस्तुतः शान्त कहला सकता है। जब शरीर की धातुएँ क्षीण होने लगें, तब भला कौन शान्त नहीं होगा? अर्थात् तब तो मनुष्य स्वतः ही शान्त हो जाया करता है, प्रयत्न की आवश्यकता ही नहीं होती।

When a man in the young age remains calm, he may be called calm in reality. When the elements of the body begin to flow away, then all become calm automatically, and there is no need of any efforts.

(859)

नवोऽर्थो जातिरग्राम्या, श्लेषोऽक्लिष्टः स्फुटो रसः।
विकटाक्षरबन्धश्च, कृत्स्नमेकत्र दुष्करम्॥

गद्य-रचना के गुण बाणभट्ट

Navo'rtho jātiragrāmyā, śleṣo'kliṣṭaḥ sphuṭo rasaḥ |
Vikaṭākṣarabandhaśca, kṛtsnamekatra duṣkaram ||

Qualities of prose Bāṇabhatta

अभिनव विषय, ग्राम्य-दोष से शून्य, स्वाभाविक सुन्दर वर्णन-शैली, सरल श्लेष, स्पष्ट रूप से रस-प्रतीति, गम्भीर पदावली का प्रयोग - इन सबका किसी एक ही काव्य में एकत्र समावेश दुष्कर होता है।

A new subject matter, a noble style, easy pun, clear beauty of sense, high levelled words and syllables, these all qualities are very rare in any literary work.

(860)

नष्टं द्रव्यं प्राप्यते ह्युद्यमेन,
नष्टा विद्या प्राप्यतेऽभ्यासयुक्त्या।
नष्टारोग्यं सूपचारैः सुसाध्यं,
नष्टा वेला या गता सा गतैव॥

नष्ट समय नहीं मिलता अज्ञात

Naṣṭaṁ dravyaṁ prāpyate hyudyamena,
Naṣṭā vidyā prāpyate'bhyāsayuktyā |
Naṣṭārogyaṁ sūpacāraiḥ susādhyaṁ,
Naṣṭa velā yā gatā sā gataiva ||

Time gone is gone forever Unknown

नष्ट हुआ धन प्रयत्न से फिर प्राप्त किया जा सकता है; नष्ट हुई (विस्मृत) विद्या अभ्यास से फिर स्मरण हो जाती है; नष्ट हुआ स्वास्थ्य उत्तम चिकित्सा-साधनों से फिर से प्राप्त हो सकता है, परन्तु जो समय बीत गया, वह तो सदा के लिए चला गया; उसे लौटाया नहीं जा सकता।

Lost money can be reobtained with effort, forgotten education recollected with practice, spoilt health can be regained with suitable treatment but the time once gone has gone forever; it cannot be regained.

(861)

नष्टं मृतमतिक्रान्तं, नानुशोचन्ति पण्डिताः।
पण्डितानां च मूर्खाणां विशेषोऽयं यतः स्मृतः॥

नष्ट पर शोक त्याज्य पञ्च./मित्रभेद/284

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Naṣṭaṁ mṛtamatikrāntaṁ, nānuśocanti paṇḍitāḥ ।
Paṇḍitānāṁ ca mūrkhāṇāṁ, viśeṣo'yaṁ yataḥ smṛtaḥ ॥

Pañca. / Mitrabhe. / 284

Never feel sad on destroyed things

बुद्धिमान् अर्थात् विचारशील ज्ञानी लोग नष्ट हुई वस्तु, मरे हुए व्यक्ति और हाथ से निकली हुई वस्तु पर शोक नहीं किया करते, (परन्तु मूर्ख इनका शोक करते ही रहते हैं)। यही विचारशील और मूर्ख लोगों में अन्तर बताया गया है।

The thoughtful learned people do not feel sadness over the destroyed, the dead or the things gone away from their approach, (but the fools cry over split milk). This difference is said between the learned and the foolish persons.

(862)

न संशयमनारुह्य, नरो भद्राणि पश्यति।
संशयं पुनरारुह्य, यदि जीवति पश्यति॥

संकट ही सुख का द्वार है महाभा./शान्ति./140/34

Na saṁśayamanāruhya, naro bhadrāṇi paśyati ।
Saṁśayaṁ punarāruhya, yadi jīvati paśyati ॥

Mahābhā. / Śānti / 140 / 34

Adventure—source of success

मनुष्य संकटों में पड़े बिना अपने सुख-साधनों को प्राप्त नहीं कर सकता। परन्तु संकटों का सामना करते हुए यदि जीता रह जाता है, तो सब प्रकार का सुख और मंगल प्राप्त कर लेता है।

Without facing troubles nobody can achieve auspicious things and happiness. But if he faces risks and survives, he enjoys happiness and auspicious things.

(863)

न स सखा यो न ददाति सख्ये,
सचाभुवे सचमानाय पित्वः।
अपास्मात्प्रेयान्न तदोको अस्ति,
पृणन्तमन्यमरणं चिदिच्छेत्॥

कुमित्र ऋ./10/117/4

Na sa sakhā yo na dadāti sakhye,
Sacābhuve sacamānāya pitvaḥ ।
Apāsmātpreyānna tadoko asti,
Pṛṇantamanyamaraṇaṁ cidicchet ॥

A bad friend Ṛg. / 10 / 117 / 4

जो मित्र साथ निभाने वाले और सेवा करने में सदा तत्पर रहने वाले मित्र को आवश्यकता पड़ने पर अन्न आदि पोषक वस्तुओं को नहीं देता और वह ऐसे मित्र को छोड़कर वापस चला जाता है, तो उस दानहीन मित्र का घर वस्तुतः घर नहीं कहा जा सकता। तब लौटा हुआ मित्र किसी अन्य दाता व्यक्ति की ही कामना करता है। अर्थात् दानहीन मित्र का त्याग कर किसी दानी मित्र से सम्बन्ध जोड़ लेता है।

The friend who does not help his good and generous friend with edibles etc. in his adversity, is not good. His house is not a house in the real sense of the word. The needful friend leaves him for ever and likes such a person who is generous and fills his demands. So a friend in need is a friend indeed.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Other friends are useless and not fit for friendship.

(864)

न सा विद्या न तद्दानं, न तच्छिल्पं न सा कला।
न तत्स्थैर्यं हि धनिनां, याचकैर्यन्न गीयते॥

धन का महत्त्व पञ्च/मित्रभेद/4

Na sā vidyā na taddānaṁ, na tacchilpaṁ na sā kalā |
Na tatsthairyaṁ hi dhaninām̐, yācakairyanna gīyaṭe ||

Importance of riches Pañca. / Mitrabhe. / 4

ऐसी कोई विद्या, दान, कारीगरी, कला और दृढ़ संकल्प नहीं है, जो कि माँगने वाले लोग धनिकों के मध्य न बताते हों, अर्थात् भिखारी धनिकों की झूठी-मूठी सब प्रकार की प्रशंसा करते हैं।

There is no such science, donation, craft, art and steadiness, which is not expressed by the beggars in the rich. Really the beggars praise the rich persons with true and false words also to get money from them.

(865)

न स्नानमाचरेद् भुक्त्वा, नातुरो न महानिशि।
न वासोभिः सहाजस्त्रं, नाविज्ञाते जलाशये॥

स्नान के लिए समय और स्थान भावप्रकाश

Na snānamācared bhuktvā, nāturo na mahāniśi |
Na vāsobhiḥ sahājasraṁ, nāvijñāte jalāśaye ||

Bhāvaprakāsa

Time and place to take both

भोजन करने के बाद, रोग से पीड़ित होने पर, मध्यरात्रि में, बहुत वस्त्र पहन कर तथा अज्ञात जलाशय में स्नान नहीं करना चाहिए।

One should not take bath after taking meals, in the state of disease, during midnight, wearing many clothes and in such a tank about which he does not know.

(866)

न स्वल्पस्य कृते भूरि, नाशयेन्मतिमान्नरः।
एतदेवात्र पाण्डित्यं, यत्स्वल्पाद् भूरिरक्षणम्॥

थोड़े से अधिक लाभ की प्राप्ति पञ्च./मित्रभेद/19

Na svalpasya kṛte bhūri, nāśayenmatimānnaraḥ |
Etadevātra pāṇḍityaṁ, yatsvalpād bhūrirakṣaṇam ||

Pañca. / Mirtabhe. / 19

More gain than less thing

बुद्धिमान् मनुष्य को चाहिए कि वह थोड़े लाभ के लिए अधिक व्यय न करे। थोड़ा सा ले-देकर बहुत सी वस्तु की रक्षा करने में ही बुद्धिमत्ता है।

A wise man should not lose much for a little gain. To save more by losing less is the real wisdom.

(867)

न हि कश्चित् कृते कार्ये, कर्तारं समवेक्षते।
तस्मात् सर्वाणि कार्याणि, सावशेषाणि कारयेत्॥

कार्य की अपूर्णता सुभाषितावलि / 2761

Na hi kaścit kṛte kārye, kartāraṁ samavekṣate |
Tasmāt sarvāṇi kāryāṇi, sāvaśeṣāṇi kārayet ||

Imcompletion of work Subhāṣitāvali / 2761

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कार्य की पूर्णता हो जाने के बाद कार्य करने वाले की अपेक्षा नहीं रहती। अतः सभी कार्यों को कुछ न कुछ बचाकर रखना चाहिए, सर्वथा पूर्ण नहीं कर देना चाहिए।

After the completion of a work the performer of the work is neglected. So all work should be shown incomplete.

(868)

न हि खल्वनुपायेन, कश्चिदर्थोऽभिसिध्यति।
सूत्रजालैर्यथा मत्स्यान्, बध्नन्ति जलजीविनः॥

उपाय से कार्यसिद्धि महाभारत/शान्तिपर्व/203/99

Na hi khalvanupāyena, kaścidartho'bhisidhyati |
Sūtrajālairyathā matsyān, badhnanti jalajīvinaḥ ||

Mahābhā / Śānti / 203 / 99

Means lead to success

बिना उपाय के कोई भी कार्य सिद्ध नहीं होता। जैसे मछुआरे भी सूत के जाल द्वारा ही मछलियों को पकड़ते हैं।

Nothing is accomplished without a device. The fishermen catch fish with their nets made of threads.

(869)

न हि तद्विद्यते किंचिद्, यदर्थेन न सिध्यति।
यत्नेन मतिमांस्तस्मादर्थमेकं प्रसाधयेत्॥

धन का महत्त्व पञ्च./मित्रभेद/2

Na hi tadvidyate kiñcid, yadarthena na sidhyati |
Yatnena matimāṁstasmādarthamekaṁ praśādhayet ||

Importance of riches Pañca. / Mitrabhe. / 2

कोई भी ऐसा कार्य नहीं है, जो धन द्वारा सिद्ध न हो सके। अतः बुद्धिमान् को चाहिए कि वह मुख्यरूप से धन को ही कमाए।

There is no such work which cannot be completed with money. So a wise man, first of all, should try to earn money.

(870)

नहि प्रतिज्ञां कुर्वन्ति, वितथां सत्यवादिनः।
लक्षणं हि महत्त्वस्य, प्रतिज्ञा-परिपालनम्॥

महान् वचन निभाते हैं वा. रा. / युद्ध / 102 / 49

Na hi pratijñāṁ kurvanti, vitathāṁ satyavādinaḥ |
Lakṣaṇaṁ hi mahattvasya, pratijñā-paripālanam ||

Vā. Rā. / Yuddha. / 102 / 49

The great keep their words

सत्यवादी लोग अपनी प्रतिज्ञा को मिथ्या नहीं होने देते, क्योंकि अपनी प्रतिज्ञा का पालन करना ही बड़प्पन का लक्षण है।

Truthful men do not make a false promise. Fulfilling one's promise is a sign of greatness.

(871)

न हि बुद्धिगुणेनैव, सुहृदामर्थदर्शनम्।
कार्यसिद्धिपथः सूक्ष्मः, स्नेहेनाप्युपलभ्यते॥

कार्यसिद्धि में स्नेह मालविकाग्निमित्र/4/6

Na hi buddhiguṇenaiva, suhṛdāmarthadarśanaṁ |
Kārya-siddhipathaḥ sūkṣmaḥ, snehenāpyupalabhyate ||

Mālavikā. / 4 / 6

Love helpful in success

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मित्र लोगों के काम को सिद्ध करने के लिए केवल बुद्धि का बल ही काम नहीं आता, अपितु कार्य-सफलता का कठिन कार्य स्नेह से भी देखना होता है।

It is not only the power of wisdom to complete the work of the friends, but also the completion of the work is to be checked with affection.

(872)

न हि भवति वियोगः स्नेह-विच्छेदहेतु-
र्जगति गुणनिधीनां सज्जनानां कदाचित्।
घन-तिमिर-निबद्धो दूरसंस्थोऽपि चन्द्रः,
किमु कुमुद-वनानां प्रेम-भङ्गं करोति॥

सज्जनों का स्नेह अज्ञात

Na hi bhavati viyogaḥ snehavicchedahetuḥ,
Jagati guṇanidhīnāṁ sajjanānāṁ kadācit।
Ghanatimira-nibaddho dūrasaṁstho'pi candraḥ,
Kimu kumudavanānāṁ premabhaṅgaṁ karoti॥

Love of the good Unknown

इस संसार में गुणवान एवं सज्जन लोगों का प्रेम दूर चले जाने पर भी समाप्त नहीं हो जाता, ठीक उसी प्रकार जैसे घने अन्धेरे से ढके होने पर भी चन्द्र कुमुद-वन से अपना प्रेम भङ्ग नहीं करता है।

In the case of good people, who are treasuries of virtue, separation does never lead to breach of affection; as the moon situated at a distance and covered with dence darkness never decreases its affection for the lilies-forests.

(873)

नहि वक्ता मृदुवक्ता विमृश्यवक्ता न चापि बहुवक्ता।
ऋतवक्ता गुणवक्ता हितवक्ता दुर्लभः पुरुषः॥

हितवक्ता की दुर्लभता नीतिद्विषष्टिका/1/6

Na hi vaktā mṛduvaktā vimṛśyavaktā na cāpi bahuvaktā।
Ṛtavaktā guṇavaktā hitavaktā durlabhaḥ puruṣaḥ॥

Nītidviṣaṣṭikā / 1 / 6

Rarity of favourable saying

बोलने वाला, मीठा बोलने वाला, सोचकर बोलने वाला और बहुत बोलने वाला भी व्यक्ति दुर्लभ नहीं है, परन्तु सत्य बोलने वाला, गुणों को बताने वाला तथा हितकर बात कहने वाला पुरुष बहुत कठिनाई से पाया जाता है।

A speaker, a sweet-talker and thoughtful speaker are available, but one who speaks the truth, the meritorious thing and favourable thing is rare.

(874)

नहि सुखमन्विच्छन्, पीडयेत् कृपणं जनम्।
कृपणः पीड्यमानः स्वमृत्युना हन्ति पार्थिवम्॥

दुर्बल को न सताइए शुक्रनीति/1/160

Na hi sukhamanvicchan, pīḍayet kṛpaṇaṁ janam।
Kṛpaṇaḥ pīḍyamānaḥ svamṛtyunā hanti pārthivam॥

Śukranīti / 1 / 160

Don't torment the poor

अपने सुख के लिए किसी दीन-हीन को दुःख

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नहीं देना चाहिए। पीड़ित दीन व्यक्ति अपनी मृत्यु से ही राजा को भी मार डालता है।

For the sake of one's own pleasure one should not torment a helpless person. The helpless one when tormented kills even a king with his death.

(875)

न हृष्यत्यात्मसम्माने, नावमानेन तप्यते।
गाङ्गो ह्रद इवाक्षोभ्यो, यः स पण्डित उच्यते॥

बुद्धिमान् उद्विग्न नहीं होता महाभा./उद्योग/33/26

Na hṛṣyatyātmasammāne, nāvamānena tapyate |
Gāṅgo hrada ivākṣobhyo, yaḥ sa paṇḍita ucyate ||

Mahābhā. / Udyoga / 33 / 26

The wise remains undisturbed

जो सम्मान पाकर प्रसन्न नहीं होता और अपमान होने पर संतप्त नहीं होता और इस प्रकार गङ्गा के सरोवर के समान जो चंचल नहीं होता, वही विद्वान् और ज्ञानी है।

One who feels no pleasure after being honoured and no sadness after being insulted and who is calm like a tank of the Gaṅgā, is called a learned wise man.

(876)

न ह्येकः साधको हेतुः, स्वल्पस्यापीह कर्मणः।
यो ह्यर्थं बहुधा वेद, स समर्थोऽर्थसाधने॥

वाल्मीकि-रामायण/5/41/6

कार्यसिद्धि में अनेक साधन

Na hyekaḥ sādhako hetuḥ, svalpasyāpīha karmanaḥ |
Yo hyarthaṁ bahudhā veda, sa samartho'rthasādhane ||

Many means are required for success Vā. Rā. / 5 / 41 / 6

छोटे से छोटे काम को करने में भी एक कारण नहीं होता। जो कार्य-सिद्धि के अनेकविध उपायों को जानता है, वही कार्य को सिद्ध करने में समर्थ होता है।

There is not only one resource in this world for accomplishing even a minor undertaking. He who uses countless means, is in a position to achieve his objective.

(877)

नाकृष्य स्थापयेत्क्रोडे, न क्षिप्रं शयने क्षिपेत्।
रोदयेन्नैव क्वचित्कार्ये, विधिमावश्यकं विना॥

शिशु से व्यवहार भावप्रकाश/बालप्रकरण/38

Nākṛṣya sthāpayetkroḍe, na kṣipraṁ śayane kṣipet |
Rodayennaiva kvacitkārye, vidhimāvaśyakaṁ vinā ||

Bhāvapra. / Bālapra. / 38

Treatment with a baby

शिशु को खींच कर गोद में नहीं लेना चाहिए और नाहीं झटके से बिछौने पर डालना चाहिए। स्नान-मालिश आदि विशेष कार्यों को छोड़ सामान्य रूप से बच्चे को रुलाना भी नहीं चाहिए।

A baby should neither be taken into a lap by pulling nor it should be put on bed hastly. Except for some importent work such as bathing

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

and massage, it should not be caused to weep.

(878)

नाच्छादयति कौपीनं, न दंशमशकापहम्।
शुनः पुच्छमिव व्यर्थं, पाण्डित्यं धर्मवर्जितम्॥

धर्महीन विद्वत्ता—निन्दनीय पञ्चतन्त्र/काकोलूकीय/94

Nācchādayati kaupīnaṁ, na daṁśamaśakāpaham।
Śunaḥ pucchamiva vyarthaṁ, pāṇḍityaṁ dharmavarjitam॥

Learning without morality — condemnable Pañca. / Kāko. / 94

कुत्ते की पूँछ न गुप्त अंगों को ढक पाती है और न मक्खी-मच्छर ही उड़ाने के काम आती है। जिस प्रकार यह पूँछ व्यर्थ है, उसी प्रकार धर्म से रहित विद्वत्ता भी सारहीन है।

The tail of a dog is neither used to cover the secret parts of the body nor it can remove flies and mosquitoes. In the same way the knowledge without religion is useless.

(879)

नात्यन्तं सरलैर्भाव्यं, गत्वा पश्य वनस्थलीम्।
छिद्यन्ते सरलास्तत्र, कुब्जास्तिष्ठन्ति पादपाः॥

बहुत सरलता — एक दोष चाणक्यनीति/7/12

Nātyantaṁ saralairbhāvyaṁ, gatvā paśya vanasthalīm।
Chidyante saralāstatra, kubjāstiṣṭhanti pādapāḥ॥

Cāṇkyanīti / 7 / 12

Too much simplicity — a defect

बहुत सीधा-सादा नहीं होना चाहिए। जंगल के स्थान को जा कर देखो। वहाँ सीधे खड़े पेड़ काट लिए जाते हैं और टेढ़े-मेढ़े पेड़ खड़े रह जाते हैं।

One should not be too straight and softminded. Go to see the land of a forest. All straight trees are cut down and the curved remain standing there.

(880)

नानृतात् पातकं किञ्चित्, न सत्यात् सुकृतं परम्।
विवेकान्न परो बन्धुरिति वेदविदो विदुः॥

पाप और पुण्य अज्ञात

Nānṛtāt pātakaṁ kiñcit, na satyāt sukṛtaṁ param।
Vivekānna paro bandhuriti Vedavido viduḥ॥

Bad and good works Unknown

झूठ बोलने से बड़ा कोई पाप नहीं है, सत्य से बड़ा कोई शुभ कर्म नहीं है और विवेक से बढ़कर कोई मित्र भी नहीं है, ऐसा वेद जानने वाले विद्वानों की राय है।

There is no sin greater than falsehood, no good work is greater than truthfulness and no friend is better than power of discrimination; This is the opinion of the scholars of Vedas.

(881)

नान्तर्विचिन्तयति किञ्चिदपि प्रतीपम्-
आकोपितोऽपि सुजनः पिशुनेन पापम्।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्कद्विषोऽपि हि मुखे पतिताग्रभागा-
स्तारापतेरमृतमेव कराः क्षिपन्ति ॥

सज्जनों का चरित्र सुभाषितावलि / 276

Nantarvicintayati kiṅcidapi pratīpam,
Ākopito'pi sujanaḥ piśunena pāpam |
Arkadviṣo'pi hi mukhe patitāgrabhāgā-
stārāpateramṛtameva karāḥ kṣipanti ||

Subhāṣitāvali / 276

Character of the great

सज्जन पुरुष दुष्टों के द्वारा विक्षुब्ध किये जाने पर भी अपने मन में उनके प्रति कोई विरुद्ध विचार नहीं रखते। राहु के मुख में पड़ी हुई भी चन्द्रमा की किरणें अमृत की ही वर्षा करती हैं।

Though a good man is troubled by a wicked person, yet he never thinks ill for that badman. Even swallowed by Rāhū, the moon, throws nectar from its rays.

(882)

नाप्राप्यमभिवाञ्छन्ति, नष्टं नेच्छन्ति शोचितुम्।
आपत्सु च न मुह्यन्ति, नराः पण्डित-बुद्धयः ॥

बुद्धिमानों के गुण महाभा./उद्योग/33/23

Nāprāpyamabhivāñchanti, naṣṭaṁ necchanti śocitum |
Āpatsu ca na muhyanti, narāḥ paṇḍitabuddhayaḥ ||

Mahābhā. / Udyoga / 33 / 23

Qualities of the wise

विचारशील बुद्धि वाले लोग न प्राप्त होने योग्य वस्तु की कामना ही नहीं करते, जो नष्ट हो चुका है उस पर शोक भी नहीं करते और संकट आने पर विवेक को खो नहीं देते अर्थात् घबराते नहीं है।

The wise thoughtful persons don't desire such a thing which is not available for them, don't feel sad for the thing which has been destroyed and donot become perplexed in bad circumstances.

(883)

नाभक्ष्यं भक्षयेत्प्राज्ञः, प्राणैः कण्ठगतैरपि।
विशेषात्तदपि स्तोकं, लोकद्वयविनाशकम् ॥

अभक्ष्य न खाये पञ्च./मित्रभेद/240

Nābhakṣyaṁ bhakṣayetprājñaḥ, prāṇaiḥ kaṇṭhagatairapi |
Viśeṣāttadapi stokaṁ, lokadvayavināśakam ||

Pañca. / Mitrabhe. / 240

Never eat non-edibles

प्राण चाहे निकलने वाले भी हों, तो भी बुद्धिमान् व्यक्ति को अभक्ष्य पदार्थ नहीं खाना चाहिए, क्योंकि थोड़ा-सा भी खाया हुआ ऐसा पदार्थ इस लोक और परलोक दोनों को नष्ट कर देता है अर्थात् मनुष्य दोनों लोकों में कष्ट भोगता है।

A wise man should not eat such a thing which is not edible for him in spite of the time of death, as such a thing taken even in a little quantity becomes harmful in this and the next life.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(884)

नाभित्त्वा परमर्माणि, नाकृत्वा कर्म दुष्करम्।
नाहत्वा मत्स्यघातीव, प्राप्नोति महतीं श्रियम्॥

ऐश्वर्य के लिए कर्त्तव्य शुकसप्तति पृष्ठ-60

Nābhittvā paramarmāṇi, nākṛtvā karma duṣkaram |
Nāhatvā matsyaghātīva, prāpnoti mahatīṁ śriyam ||

Śuksaptati / Page 60

To be done for prosperity

दूसरे का मर्म-भेदन किये बिना, दुष्कर कर्म किये बिना, मछुआरे की तरह मछली मारे बिना व्यक्ति विपुल सम्पत्ति हासिल नहीं कर सकता।

One cannot earn large amount of wealth without piercing the vitals of others, without doing dificult deeds and without killing like a fisherman.

(885)

नाभिषेको न संस्कारः, सिंहस्य क्रियते वने।
विक्रमार्जितसत्त्वस्य, स्वयमेव मृगेन्द्रता॥

वीरता ही उन्नति का साधन है हितोपदेश / II / 11

Nabhiṣeko na saṁskāraḥ, siṁhasya kriyate vane |
Vikramārjitasattvasya, svayameva mṛgendratā ||

Hitopadeśa / II / 11

Only bravery leads to prosperity

वन में सिंह का न तो अभिषेक किया जाता है और न संस्कार ही, फिर भी वह अपने बल से अर्जित सामर्थ्य के आधार पर ही जानवरों का राजा बन जाता है।

Neither a bath for crowning nor a ceremony is observed for a lion in the forest. Having acquired dignity by his valour, he becomes king of animals of his own accord.

(886)

नाभ्युत्थानक्रिया यत्र, नालापो मधुराक्षरम्।
गुणदोषकथा नैव, स स्वर्गोऽपि न गम्यताम्॥

न जाने योग्य स्थान नराभरण/41

Nābhyutthānakriyā yatra, nālāpo madhurākṣaram |
Guṇa-doṣa-kathā naiva sa svargo'pi na gamyatām ||

Place not fit to go Narābharaṇa / 41

जहाँ उठकर किसी का स्वागत न हो, मीठे शब्दों में बातचीत न हो और गुण-दोष की भी चर्चा न हो, वह स्थान यदि स्वर्ग भी हो, तो भी वहाँ नहीं जाना चाहिए।

Where there is no welcome, no sweet talk, no statement about merits and demerits, that place, even if it were heaven, does not deserve visit.

(887)

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो, न मेधया न बहुना श्रुतेन।
यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा वृणुते तनुं स्वाम्॥

आत्मज्ञान की प्राप्ति कठोपनिषद्/वल्ली 2/23

Nāyamātmā pravacanena labhyo,
Na medhayā na bahunā śrutena |
Yamevaiṣa vṛṇute tena labhya-
stasyaiṣa ātmā vṛṇute tanuṁ svām ||

Kaṭhopaniṣad / 2 / 23

Method to know self

यह परमात्मा वाग्जाल से नहीं मिल सकता, न

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बुद्धि से प्राप्त होता है और ना ही बहुत शास्त्र श्रवण से पाया जा सकता है। जिस भक्त को यह स्वीकार कर लेता है, उसी को यह प्राप्त होता है। उसी भक्त पर यह परमात्मा अपना स्वरूप प्रकाशित करता है।

God is neither obtained by net of words, nor by intellect and nor by hearing of many scriptures. It is only obtained by such a devotee whom God accepts. God shows his virtue to that devotee only.

(888)

नारिकेल-समाकारा, दृश्यन्ते हि सुहृज्जनाः।
अन्ये बदरिकाकारा, बहिरेव मनोहराः॥

नारियल और बेर के सदृश अज्ञात

Nārikela-samākārā, dṛśyante hi suhṛjjanāḥ |
Anye badarikākārā, bahireva manoharāḥ ||

Unknown

Persons like coconut and berry

सज्जन लोग नारियल के फल के समान बाहर से तो कठोर परन्तु अन्दर से उतने ही मुलायम होते हैं, ठीक इसके विपरीत कुछ लोग बेरी के फल के समान होते हैं जो बाहर से ही आकर्षक दिखाई देते हैं, परन्तु अन्दर से कठोर होते हैं।

Kind hearted people in this world are like coconut fruit i.e. rough outside, but having sweet flavour inside. There are others like berry fruit who are attractive only externally but hard internally.

(889)

नार्थमल्पं परिभवेन्नावमन्येत शात्रवान्।
बुद्ध्या तु बुद्ध्येदात्मानं, न चाबुद्धिषु विश्वसेत्॥

तिरस्कार मत करो महाभा./शान्ति/120/3

Nārthamalpaṁ paribhavennāvamanyeta śātravān |
Buddhyā tu buddhyedātmānaṁ, na cābuddhiṣu viśvaset ||

Mahābhā. / Śānti / 120 / 3

Don't degrade anybody

थोड़े धन का भी तिरस्कार नहीं करना चाहिए और शत्रुओं के साथियों का भी अपमान नहीं करना चाहिए। बुद्धि द्वारा अपने कर्त्तव्याकर्त्तव्य का निर्णय करना चाहिए और मूढ़ पुरुषों पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

One should not overlook even a little money and should not dishonour even the friends of enemies. He should decide with his intellect what is to be done and what is not and he should not trust fools.

(890)

नालम्बते दैष्टिकतां, न निषीदति पौरुषे।
शब्दार्थौ सत्कविरिव, द्वयं विद्वानपेक्षते॥

भाग्य और पुरुषार्थ शिशुपालवध/2/86

Nālambate daiṣṭikatāṁ, na niṣīdati pauruṣe |
Śabdārthau satkaviriva, dvayaṁ vidvānapekṣate ||

Fate and efforts Śisupālav. / 2 / 86

जिस प्रकार अच्छा कवि शब्द और अर्थ दोनों को महत्त्व देता है, उसी प्रकार विद्वान् राजनीतिज्ञ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

न तो केवल भाग्य का ही भरोसा करता है और न केवल पुरुषार्थ पर ही आश्रित रहता है। वह तो दोनों का महत्त्व जानकर ही सब कार्य करता है।

As a good poet gives importance to the both, the words and the sense, in the same manner, a good politician neither depends on the fortune only and nor on the efforts only. He understands the importance of both of these and works accordingly.

(891)

नालसाः प्राप्नुवन्त्यर्थान्न क्लीबा न च मानिनः।
न च लोकरवाद् भीता, न च शश्वत्प्रतीक्षिणः॥

असफलता के कारण सुभाषितावलि / 2647

Nālasāḥ prāpnuvantyarthānna klībā na ca māninaḥ |
Na ca lokaravād bhītā, na ca śaśvatpratīkṣiṇaḥ ||

Reasons of failure Subhāśitā. / 2647

न तो आलसी, न कायर, न अभिमानी, न लोक-निन्दा से डरने वाले और ना ही सदा अवसर की प्रतीक्षा करने वाले ही धन को प्राप्त करते हैं। अर्थात् ऐसे लोग धन नहीं कमा सकते।

Neither lazy persons, nor cowards nor the proud, nor such persons who fear from the bad name in the public and nor those who always wait for a good opportunity can earn money. Such persons never enjoy riches.

(892)

नालोकः क्रियते सूर्ये, भूः प्रतीपं न धार्यते।
नहि प्रत्युपकाराणामपेक्षा सत्सु विद्यते॥

सज्जनों की विशेषता सुभाषितावलि / 226

Nālokaḥ kriyate surye, bhūḥ pratīpaṁ na dhāryate |
Na hi pratyupakārāṇāmapekṣā satsu vidyate ||

Subhāśitāv. / 226

Speciality of the good

सूर्य सबके लिए प्रकाश करता है, किन्तु सूर्य में कोई प्रकाश करने नहीं जाता, पृथ्वी सबके लिए अन्नादि उत्पन्न करती है किन्तु बदले में उसके लिए कोई कुछ नहीं करता। सत्पुरुष प्रत्युपकार की अपेक्षा नहीं करते।

Good persons never desire to be repaid their favours done for others, as the sun gives light but doesn't desire its repayment and the earth gives corns and other things also but wants nothing for the favours it does.

(893)

नासंवृतं मुखं कुर्यात्, सभायां च विचक्षणः।
कासं हासं तथोद्गारं, जृम्भणं क्षवथुं तथा॥

सभा में निषिद्ध भावप्रकाश/दिनचर्या-प्रकरण/262

Nāsaṁvṛtaṁ mukhaṁ kuryāt, sabhāyāṁ ca vicakṣaṇaḥ |
Kāsaṁ hāsaṁ tathodgāraṁ, jṛmbhaṇaṁ kṣavathuṁ tathā ||

Bhāvapr. / Dina. / 262

Objectionable in a meeting

समझदार व्यक्ति को चाहिए कि वह सभा में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खाँसने, हँसने, डकार लेने, जम्भाई लेने तथा छींक के समय मुँह नंगा न करे, प्रत्युत आगे हाथ रखकर अर्थात् मुँह को ढककर ये कार्य करे।

A wise man should not open his mouth for cough, laughter, belch, yawn and sneeze. He should keep his hand in front of his mouth while doing these things.

(894)

नास्ति कामसमो व्याधिर्नास्ति मोहसमो रिपुः।
नास्ति क्रोधसमो वह्निर्नास्ति ज्ञानात्परं सुखम्॥

निकृष्ट और उत्कृष्ट वस्तुएँ वृद्धचाणक्य

Nāsti kāmasamo vyādhirnāsti mohasamo ripuḥ |
Nāsti krodhasamo vahnirnāsti jñānātparaṁ sukham ||

Vṛddhacāṇakya

Condemnable and admirable things

काम-वासना जैसा कोई रोग नहीं है, मोह के समान कोई शत्रु नहीं है, क्रोध के समान कोई आग नहीं है और ज्ञान से बढ़कर कोई सुख नहीं है।

There is no such disease as lust, no such enemy as ignorance, no such fire as anger and no greater happiness than knowledge.

(895)

नास्ति जात्या रिपुर्नाम, मित्रं चापि न विद्यते।
सामर्थ्यादेव जायन्ते, मित्राणि रिपवस्तथा॥

मित्रता और शत्रुता के कारण सुभाषितावलि / 2652

Nāsti jātyā ripurnāma, mitraṁ cāpi na vidyate |
Sāmarthyādeva jāyante, mitrāṇi ripavastathā ||

Subhāśitā. / 2652

Causes of friendship and enmity

जन्म से न कोई शत्रु होता है और न मित्र। मनुष्य के अपने सामर्थ्य के अनुसार ही मित्र और शत्रु हुआ करते हैं।

Nobody is an enemy or a friend from his birth. Friends and enemies are created according to one's ability.

(896)

नास्थाने जातु वप्तव्यं, विद्याबीजं मनीषिणा।
दूरे तिष्ठतु तद्वृद्धिर्यतो मूलेऽपि संशयः॥

विद्या का सुपात्र नीतिकल्पतरु/36/1

Nāsthāne jātu vaptavyaṁ, vidyābījaṁ manīṣiṇā |
Dūre tiṣṭhatu tadvṛddhiryato mūle'pi saṁśayaḥ ||

Nītikalpataru / 36 / 1

Deserving education

बुद्धिमान को कभी भी अनुचित स्थान पर विद्या का बीज नहीं बोना चाहिए। इससे उसके बढ़ने की बात तो दूर, उसका मूल भी संशय में पड़ जाता है।

A wise man should in no case sow the seed of knowledge in a wrong place. Leave about its growth there, even its existence remains under doubt.

(897)

निंस्त्रिशं हृदयं कृत्वा, वाणीं क्षुरसमोपमाम्।
विकल्पोऽत्र न कर्त्तव्यो, हन्यात्तत्रापकारिणम्॥

अपकारी — हन्तव्य पञ्च./मित्रभेद/318

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nimstriśaṁ hṛdayaṁ kṛtvā, vāṇīṁ kṣurasamopamām |
Vikalpo'tra na karttavyo, hanyāttatrāpakāriṇam ||

Pañca. / Mitrabhe. / 318

Deserving death

अपकार करने वाले को मारते समय हृदय को तलवार और वाणी को छुरे के समान बना लेना चाहिए। इस विषय में द्विविधा में नहीं पड़ना चाहिए और उस अपकारी को मार ही देना चाहिए।

To kill a harmful person one should make his mind as a sword and the tongue like a razor. In this matter one should not hesitate and the harmful person must be killed.

(898)

निन्दन्तु नीतिनिपुणाः यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥

महापुरुषों का चरित्र नीतिशतक/79

Nindantu nītinipuṇāḥ yadi vā stuvantu,
Lakṣmīḥ samāviśatu gacchatu vā yatheṣṭam |
Adyaiva vā maraṇamastu yugāntare vā,
Nyāyyātpathaḥ pravicalanti padaṁ na dhīrāḥ ||

Character of the great Nītiśataka / 79

नीतिनिपुण व्यक्ति चाहे निन्दा करें या स्तुति, लक्ष्मी इच्छानुसार चाहे आए अथवा चली जाए, मृत्यु चाहे आज ही हो जाए या एक युग के बाद, धैर्यवान् व्यक्ति न्यायोचित मार्ग से एक कदम भी पीछे नहीं हटते।

Whether the politicians praise or defame, wealth comes or goes away, death takes place today or after a long time, the men of determination don't deviate even a step from the path of justice.

(899)

निबन्धनी ह्यर्थतृष्णेह पार्थ,
तामिच्छतां बाध्यते धर्म एव।
धर्मं तु यः प्रवृणीते स बुद्धः,
कामे गृध्नो हीयतेऽर्थानुरोधात् ॥

तृष्णा से हानि महाभा./उद्योग/27/5

Nibandhanī hyarthatṛṣṇeha Pārtha,
Tāmicchatāṁ bādhyate dharma eva |
Dharmaṁ tu yaḥ pravṛṇīte sa buddhaḥ,
Kāme gṛdhno hīyate'rthānurodhāt ||

Mahābhā. / Udyoga / 27 / 5

Loss due to greed

हे पृथापुत्र युधिष्ठिर! धन का लोभ ही इस संसार में बन्धन का कारण बना करता है। जो धन का लोभ करते हैं, उनके धर्म के कार्यों में विघ्न पड़ जाता है। जो व्यक्ति धर्म को विशेष महत्त्व देता है, वही समझदार है। लोभी व्यक्ति तो धन को पाने के लिए धर्म से पतित हो जाता है।

O Yudhiṣṭhira! the greed of money is the cause of confinement. Those who are greedy for money, their work of religion is disturbed. One who gives more importance to religion is really a learned person. On the other hand who is desirous of money deviates from the path of religion.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(900)

निमित्तमुद्दिश्य हि यः प्रकुप्यति,
ध्रुवं स तस्यापगमे प्रशाम्यति।
अकारणद्वेषपरो हि यो भवेत्,
कथं नरस्तं परितोषयिष्यति॥

अकारण शत्रु पञ्च./मित्रभेद/227

Nimittamuddiśya hi yaḥ prakupyati,
Druvaṁ sa tasyāpagame praśāmyati।
Akāraṇa-dveṣaparo hi yo bhavet,
Kathaṁ narastaṁ paritoṣayiṣyati॥

Pañca. / Mitrabhe. / 227

An enemy without any reason

यदि कोई किसी प्रयोजन से रूठता है, तो उस प्रयोजन के सिद्ध हो जाने पर उसका रोष समाप्त हो जाता है। परन्तु जो बिना किसी कारण से ही शत्रु बन जाए, तो उसे, प्रसन्न करना असम्भव है।

If one becomes angry due to some reason, he may be gratified when that reason is solved. But one who becomes an enemy without any reason, he cannot be gratified by any means.

(901)

निम्नेन तोयं हरितेन गावः, सान्त्वेन बाला विनयेन सन्तः।
अर्थेन नारी तपसा च देवाः, सर्वो हि लोको ह्रियते प्रियेण॥

वशकर्ता – प्रेम सुभाषितावलि / 2910

Nimnena toyaṁ haritena gāvaḥ,
Sāntvena bālā vinayena santaḥ।
Arthena nārī tapasā ca devāḥ,
Sarvo hi loko hriyate priyeṇa॥

Attractive — love Subhāṣitā. / 2910

नीची ढालू जमीन की ओर जल अपने आप बहता है, हरियाली की ओर गाय स्वयं जाती है, मधुर व्यवहार से बालक, विनय भाव से सत्पुरुष, पैसे से नारी और तप से देवता प्रसन्न होते हैं। इस प्रकार सभी लोग अपनी–अपनी प्रिय वस्तु से आकृष्ट हुआ करते हैं।

Water flows towards slope. Cows are attracted by greenery, children by sweet behaviour, great persons by politeness, wife by money and gods by devotion. In this way, all persons are attracted by their loving likings.

(902)

निम्ब! त्वदीयकटुता यदि दाहहन्त्री,
गायन्तु मूढमनुजास्तव दोषगाथाः।
तप्तास्त एव तपनोपमपित्ततापै-
र्गास्यन्ति मित्रवर! तावकगीतकानि॥

श्रेष्ठ पुरुषों के कटु वचन मुक्तिराम उपाध्याय

Nimba! Tvadīyakaṭutā yadi dāhahantrī,
Gāyantu mūḍhamanujāstava doṣagāthāḥ।
Taptāsta eva tapanopamapittatāpai-
rgāsyanti mitravara! Tāvakagītakāni॥

Muktirāma Upādhyāya

Bitter words of the great

हे नीम! तेरी कड़वाहट ताप को नष्ट करने वाली है। यदि मूढ़ मनुष्य तेरी बुराइयों (कड़वाहट आदि)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की चर्चा करते हैं, तो करने दे। एक समय आएगा जब वे अग्नि के समान पित्त की गर्मी से तपेंगे। तब, हे मित्र, वे तेरे गुणों के ही गीत गाएँगे। (भाव यह है कि श्रेष्ठ लोगों के कटुवचन भी अन्त में सुखदायी होते हैं।)

O Morgosa tree! Your bitterness is a remedy for heat. If fools defame you for this reason, let them do as they like. A time will come when they will suffer with the heat of gall which burns like fire. Then my friend, they will sing the song of your merits. (The underlying sense is this that even bitter words of greatmen become advantageous in the end.)

(903)

निर्गुणमप्यनुरक्तं प्रायो,
न समाश्रितं जहति सन्तः।
समवृद्धिक्षयभाजं,
वहति शशाङ्कः कलङ्कमपि॥

श्रेष्ठ पुरुष निर्गुण को त्यागते नहीं सुभाषितावलि / 242

Nirguṇamapyanuraktaṁ prāyo,
Na samāṣritaṁ jahati santaḥ।
Samavṛddhi-kṣaya-bhājaṁ,
Vahati śaśāṅkaḥ kalañkamapi॥

Subhāṣitāvali / 242

The great never reject a dependent

सज्जन लोग प्रायः अपने आश्रित और अनुरागी निर्गुण व्यक्ति का भी त्याग नहीं करते। चन्द्रमा वृद्धि और क्षय के भागी कलङ्क को भी साथ रखता है।

Good persons never leave such a person who depends on them and loves them, though he may be without merits. The moon takes with its spot, which remains with it in the time of growth and even declination.

(904)

निर्गुणेष्वपि सत्त्वेषु, दयां कुर्वन्ति साधवः।
न हि संहरते ज्योत्स्नां, चन्द्रश्चाण्डालवेश्मनः॥

साधु सब पर दया दिखाते हैं चा. नीतिशास्त्र / 3 / 50

Nirguṇeṣvapi sattveṣu, dayāṁ kurvanti sādhavaḥ।
Na hi saṁharate jyotsnāṁ, candraścāṇḍālaveśmanaḥ॥

Cā. Nītiśā. / 3 / 50

The great show kindness

साधु जन अच्छे एवं बुरे दोनों के प्रति समान रूप से दया-भाव रखते हैं, जैसे चन्द्रमा अपनी रोशनी से चण्डालों के घर को भी आलोकित करता है।

Good people extend mercy even to creatures devoid of qualities. The moon does not withdraw its moonlight even from the houses of chandalas (persons belonging to the lowest of depressed classes).

(905)

निर्वनो वध्यते व्याघ्रो, निर्व्याघ्रं छिद्यते वनम्।
तस्माद् व्याघ्रो वनं रक्षेत्, वनं व्याघ्रं च पालयेत्॥

पारस्परिक सहायता महाभा./उद्योग/29/55

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nirvano vadhyate vyāghro, nirvyāghraṁ chidyate vanam |
Tasmād vyāghro vanaṁ rakṣet, vanaṁ vyāghraṁ ca pālayet ||

Mutual help Mahābhā. / Udyoga / 29 / 55

जंगल के बिना बाघ मारा जाता है और बिना बाघ के जंगल काट लिया जाता है। इसीलिए बाघ तो जंगल की रक्षा करे और जंगल बाघ को पाले।

A tiger is killed without a forest and a forest is cut down without a tiger. Therefore the tiger should protect the forest and the forest should bring up the tiger.

(906)

निर्वाणदीपे किमु तैलदानं,
चौरे गते वा किमु सावधानम्।
वयो-गते किं वनिता-विलासः,
पयो-गते किं खलु सेतुबन्धः ॥

समयचूकि पुनि का पछिताने (नीतिप्रदीप)

Nirvāṇadīpe kimu tailadānaṁ,
Caure gate vā kimu sāvadhānam |
Vayo-gate kiṁ vanitā-vilāsaḥ,
Payo-gate kiṁ khalu setubaṇdhaḥ ||

Nitipradipa

It is useless to work after due time

दीपक के बुझ जाने पर तेल डालने से क्या लाभ? चोर के निकल जाने पर सावधान होने का क्या उपयोग? यौवन समाप्त हो जाने पर वनिता-विलास से क्या आनंद? और पानी बह जाने पर पुल बाँधने का क्या फल?

There is no use of pouring oil when the lantern has been extinguished. It is also of no use to be alert when the thief has gone away. There is no use of enjoyment with a lady who has become old. And to construct a bridge is also useless when there is no water in the river.

(907)

निर्विण्णे निर्विण्णा मुदिते मुदिता,
समाकुलाऽऽकुलिते।
प्रतिबिम्बसमा कान्ता,
संक्रुद्धे केवलं भीता ॥

आदर्श पत्नी कुट्टिनीमत/441

Nirviṇṇe nirviṇṇā mudite muditā,
Samākulā'kulite |
Pratibimbasamā kāntā,
Saṁkruddhe kevalaṁ bhītā ||

An ideal wife Kuṭṭinīmata / 441

पति के प्रतिबिम्ब समान प्रिय पत्नी उसके खिन्न होने पर खेद का अनुभव करती है, प्रसन्न होने पर खिल उठती है, व्याकुल होने पर व्याकुल हो जाती है, परन्तु केवल उसके क्रुद्ध होने पर डर जाती है।

Like a reflection, the beloved wife feels sad at the sadness of her husband, she feels pleasure when he is pleased, she becomes troubled when

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

he is in trouble, but only when he is angry, she feels fear.

(908)

निर्विषेणापि सर्पेण, कर्त्तव्या महती फणा।
विषमस्तु मा वास्तु, फटाटोपो भयङ्करः॥

सामर्थ्य प्रकट करो पञ्चतन्त्र/काकोलूकीय/83

Nirviṣeṇāpi sarpeṇa, karttavyā mahatī phaṇā।
Viṣamastu mā vāstu, phaṭāṭopo bhayaṅkaraḥ॥

Show your ability Pañca. / Kāko. / 83

विषरहित साँप को भी अपना विस्तृत फण दिखा देना चाहिए। चाहे विष हो या न हो, फण का दिखावा ही अगले को डराने के लिए पर्याप्त होता है। भाव यह है कि चाहे दूसरे को हानि पहुँचाने का सामर्थ्य न भी हो, तो भी शत्रुओं को दूर रखने हेतु अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर ही देना चाहिए।

A snake which is not poisonous, should show its expanded hood. Whether there is poison or not, the show of the expanded hood is fearful. It means that whether one can harm other or not, still he should show his power to keep off the enemy.

(909)

निश्चित्य यः प्रक्रमते, नान्तर्वसति कर्मणः।
अवन्ध्यकालो वश्यात्मा, स वै पण्डित उच्यते॥

विचारशील ही बुद्धिमान् है महाभा./उद्योग/33/24

Niścitya yaḥ prakramate, nantarvasati karmaṇaḥ।
Avandhyakālo vaśyātmā, sa vai paṇḍita ucyate॥

Mahābhā. / Udyoga / 33 / 24

Ony thoughtful is wise

जो व्यक्ति दृढ़ निश्चयपूर्वक कार्य को आरम्भ कर देता है और कार्य के बीच में नहीं रुकता, अपने समय को जो व्यर्थ नहीं गँवाता तथा अपने पर संयम रखता है, वही बुद्धिमान् तथा विद्वान् कहलाता है।

One who begins the work with full determination and does not stop without completing it, who does not spend his time in vain and has self-control is called a wise and learned man.

(910)

निषेवते प्रशस्तानि, निन्दितानि न सेवते।
अनास्तिकः श्रद्दधान, एतत् पण्डितलक्षणम्॥

बुद्धिमान् का आचरण महाभा./उद्योग/33/16

Niṣevate praśastāni, ninditāni na sevate।
Anāstikaḥ śraddadhāna, etat paṇḍita-lakṣaṇam॥

Mahābhā. / Udyoga / 33 / 16

Behaviour of the wise

जो व्यक्ति शुभ कर्म ही करता है और निन्दनीय काम नहीं करता, वेद और ईश्वर को पूर्ण श्रद्धापूर्वक मानता है, वही पण्डित है, ज्ञानी है। यही उसका लक्षण है।

One who practises only good work and doesn't do bad work, who has full faith in God and the Vedas, is called paṇḍita, a learned man. This is his trait.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(911)

निस्सारस्य पदार्थस्य, प्रायेणाडम्बरो महान्।
नहि स्वर्णे ध्वनिस्तादृक्, यादृक् कंसे प्रजायते॥

थोथा चना बाजे घना यशस्तिलकचम्पू: / 1 / 35

Nissārasya padārthasya, prāyeṇāḍambaro mahān |
Nahi svarne dhvanistādṛk, yādṛk kaṁse prajāyate ||

Yaśastilakacampū / 1 / 35

Barking dogs seldome bite

प्राय: निस्सार पदार्थ का आडम्बर बड़ा होता है। सोने की वैसी ध्वनि नहीं होती जैसी कि कांसे की।

Generally, the show of a worthless thing is more than a good thing. Gold produces no such loud sound as the bell-metal.

(912)

नेच्छेद्बलवता युद्धं, न भारं शिरसा वहेत्।
गात्रं न वादयेत् केशान् हस्तेन धुनुयान्न च॥

त्याज्य कर्म भावप्रकाश/दिनचर्या/267

Necchedbalavatā yuddhaṁ, na bhāraṁ śirasā vahet |
Gātraṁ na vādayet keśān hastena dhunuyānna ca ||

To be abandoned Bhāvapra. / Din. / 267

बलवान् के साथ लड़ने की कामना नहीं करनी चाहिए, भार सिर पर रखकर नहीं ढोना चाहिए, शरीर को हाथों से नहीं बजाते रहना चाहिए और बालों को दूसरों के सामने सँवारना नहीं चाहिए।

One should not desire to fight with a strong person, load should not be carried on the head, the organs of body should not be beaten by hands and the hair should not be shaken in front of others.

(913)

नैतादृश: परो धर्मो, नृणां सद्धर्ममिच्छताम्।
न्यासो दण्डस्य भूतेषु, मनोवाक्कायजस्य य:॥

सर्वश्रेष्ठ कर्म श्रीमद्भागवत/7/15/8

Naitādṛśaḥ paro dharmo, nṛṇāṁ saddharmamicchatām |
Nyāso daṇḍasya bhūteṣu, manovākkāyajasya yaḥ ||

Bhāgavata / 7 / 15 / 8

Best morality — nonviolence

श्रेष्ठ धर्म को चाहने वाले मनुष्यों के लिए इससे बढ़कर कोई दूसरा धर्म नहीं है कि मन, वाणी या शरीर द्वारा प्राणियों को किसी प्रकार भी दु:ख न पहुँचाया जाए।

For those who like the best religion, should note that avoiding of violence of the creatures by mind, by tongue and by the body is the best religion and there is no better religion than this.

(914)

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावक:।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो, न शोषयति मारुत:॥

आत्मा अविनाशी है महाभा./भीष्म./26/23

Nainaṁ chindanti śastrāni, nainaṁ dahati pāvakaḥ |
Na cainaṁ kledayantyāpo, na śoṣayati mārutaḥ ||

Mahābhā. / Bhiṣma. / 26 / 23

Soul is imperishable

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकते, आग जला नहीं सकती, पानी गला नहीं सकता और वायु सुखा नहीं सकती।

This soul cannot be cut with weapons, cannot be burnt by fire, cannot be drenched with water and cannot be dried with air.

(915)

नैर्गुण्यमेव साधीयो, धिगस्तु गुणगौरवम्।
शाखिनोऽन्ये विराजन्ते, खण्ड्यन्ते चन्दनद्रुमाः॥

गुणियों की दुर्दशा भामिनीविलास/1/86

Nairguṇyameva sādhīyo, dhigastu guṇagauravam।
Śākhino'nye virājante, khaṇḍyante candanadrumāḥ॥

Bhāminivi. / 1 / 86

Bad state of the meritorious

गुणहीन होना ही अच्छा है। गुणातिशय को धिक्कार है। देखो तो सही कि अन्य पेड़ तो मजे से रहते हैं, जबकि चन्दन के पेड़ अपने गुणों के कारण काट डाले जाते हैं।

To be without qualities is better. Fie upon qualities! Look! Other trees enjoy their existence, while the sandal-trees are cut down due to their qualities.

(916)

नोदन्वानर्थितामेति, न चाम्भोभिर्न पूर्यते।
आत्मा तु पात्रतां नेयः, पात्रमायान्ति सम्पदः॥

पात्र ही सम्पत्ति के आश्रय सुभाषितावलि / 2665

Nodanvānarthitāmeti, na cāmbhobhirna pūryate।
Ātmā tu pātratāṁ neyaḥ, pātramāyānti sampadaḥ॥

Subhāsitāvali / 2665

First deserve then desire

समुद्र किसी से याचना करने नहीं जाता, फिर भी वह जल से भरा रहता है अतः मनुष्य को स्वयं को योग्य बनाना चाहिए। योग्य पात्र के पास सम्पत्तियाँ स्वयं आती हैं।

The sea never goes for begging, but still it is filled with water. One should make himself dese.ving because riches come to the deserving person.

(917)

नोपरक्तं न चोद्यन्तं, नास्तं यातं दिवाकरम्।
सर्वथा न समीक्षेत, न जले प्रतिबिम्बितम्॥

सूर्य-दर्शन भावप्रकाश/दिनचर्या/265

Noparaktaṁ na codyantaṁ, nāstaṁ yātaṁ divākaram।
Sarvathā na samīkṣeta, na jale pratibimbitam॥

Seeing the sun Bhāvapra. / Dina. / 265

ग्रहण लगे हुए, उदय होते हुए और अस्त होते सूर्य को बिलकुल भी नहीं देखना चाहिए। साथ ही जल में भी उसकी परछाईं नहीं देखनी चाहिए।

The sun should not be seen at all when it is in the state of eclipse, when it is rising and when it is setting. Besides, its shadow in water also should not be seen.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प

(918)

पञ्च यत्र न विद्यन्ते, न कुर्यात्तत्र संस्थितिम्।
लोकयात्रा, भयं, लज्जा, दाक्षिण्यं, धर्मशीलता॥

निवास के अयोग्य स्थान चाणक्यनीति/2/108

Pañca yatra na vidyante, na kuryāttatra saṁsthitim |
Lokayātrā, bhayaṁ, lajjā, dakṣiṇyaṁ, dharmaśīlatā ||

Place not fit to live Cāṇkyanīti / 2 / 108

जीविका, भय, लज्जा, उदारता और धार्मिकता – ये पाँच जहाँ न हों, वहाँ न रहे।

One should not stay there, where the following five are not present; means of livelihood, fear, shame, generosity and morality.

(919)

पतिवाक्यमनादृत्य, स्वेच्छया वर्त्तते तु या।
सा नारी सततं घोरे, पतत्याचन्द्रतारकम्॥

निन्दनीय नारी स्कन्दपुराण वै० ख० वै० स०/26/82

Pativākyamanādṛtya, svecchayā varttate tu yā |
Sā nārī satataṁ ghore, patatyācandratārakam ||

Skandapu. / Vai. kha. Vai. Sa. / 26 / 82

Condemnable wife

पति का कहना न मान कर जो स्त्री मनमानी करती है, वह तब तक घोर नरक में प्रवास करती है, जब तक चन्द्रमा और तारों की सत्ता है।

The wife who ignoring the words of her husband does everything on her accord, remains in the hell as long as there are the moon and the stars.

(920)

पतिव्रता पतिप्राणा, पत्युः प्रियहिते रता।
यस्य स्यादीदृशी भार्या, धन्यः स पुरुषो भुवि॥

प्रशंसनीय पत्नी पञ्चतन्त्र/काकोलूकीय/142

Pativratā patiprāṇā, patyuḥ priyahite ratā |
Yasya syādīdṛśī bhāryā, dhanyaḥ sa puruṣo bhuvi ||

Admirable wife Pañca. / Kāko. / 142

जो पतिव्रता है और पति को ही अपना जीवन मानती है और जो पति की मंगलकामना में ही लगी रहती है, ऐसी जिसकी पत्नी है, वह पुरुष इस भूमि पर धन्य है।

The life of that husband is lucky whose wife is faithful to him, takes her husband as her life and who does every work for welfare of her husband.

(921)

पतिहीना तु या नारी, न सा शक्ष्यति जीवितुम्।
काममेवंविधं राम, त्वया मम निदर्शितम्॥

वा० रामायण/अयोध्या काण्ड/29/7

पतिहीन नारी की दशा

Patihīnā tu yā nārī, na sā śakṣyati jīvitum |
Kāmamevaṁvidhaṁ Rāma, tvayā mama nidarśitam ||

Vā. Rāmā. / Ayodhyā / 29 / 7

Condition of a wife without her husband

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सीता कह रही है — "हे राम जी! आपने ही मुझे यह बताया था कि जो नारी पतिहीन हो जाती है, वह जीने में असमर्थ हो जाती है।"

Sītā says, "Shri Rāma! It was stated even by you to me that the wife separated from her husband is unable to live."

(922)

पत्रं नैव यद करीरविटपे दोषो वसन्तस्य किम्?
नोलूकोऽप्यवलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम्?
धारा नैव पतन्ति चातकमुखे मेघस्य किं दूषणम्?
यत्पूर्वं विधिना ललाट-लिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः??

विधाता का विधान — नीतिशतक/86

Patraṁ naiva yadā karīraviṭape, doṣo vasantasya kim?
Nolūko'pyavalokate yadi divā, sūryasya kiṁ dūṣaṇam?
Dhārā naiva patanti cātaka-mukhe meghasya kiṁ dūṣaṇam?
Yatpūrvaṁ Vidhinā lalāṭalikhitaṁ tanmārjituṁ kaḥ kṣamaḥ ||

Nītiśataka / 86

Fortune must takes place

यदि करीर के वृक्ष पर पत्ते नहीं आते, तो इसमें वसन्त का क्या दोष है? यदि उल्लू दिन में नहीं देख पाता तो इसमें सूर्य का क्या दोष है? यदि पपीहे के मुख में जल की धारा नहीं पड़ती तो इसमें बादल का क्या दोष है? विधाता ने जो पहले माथे पर लिख दिया है उसे कौन मिटा सकता है?

What fault is there of the spring if a Karira tree does not have leaves? What fault is there of the sun if an owl is not able to see during the day time? What fault is there of the cloud if the streams of water do not fall into the mouth of cātaka? Who can wipe out that which has been priviously written on one's forehead by the Creator.

(923)

पथ्ये सति गदार्त्तस्य, किमौषध-निषेवणैः।
पथ्येऽसति गदार्त्तस्य, किमौषध-निषेवणैः॥

पथ्य का महत्त्व — अज्ञात

Pathye sati gadārttasya, kimauṣadhaniṣevaṇaiḥ |
Pathye'sati gadārttasya, kimauṣadhaniṣevaṇaiḥ ||

Importance of prevention — Unknown

यदि परहेज़ किया जाए तो रोगी का रोग स्वयं शान्त हो जाता है, अतः दवाई लेने का कोई लाभ नहीं। और यदि परहेज़ नहीं किया जाता तब भी दवाई लेने का कोई लाभ नहीं, क्योंकि परहेज़ के बिना केवल दवाई से रोग ठीक नहीं हो सकता।

If preventive measures are taken against a disease, then there is no use of any medicine as prevention itself will cure the disease. On the other hand, if preventive measures are not taken, then taking of any medicine cannot remove the disease, as without prevention medicine becomes ineffective.

(924)

पद्माकरं दिनकरो विकचीकरोति,
चन्द्रो विकासयति कैरव-चक्रवालम्।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नाभ्यर्थितो जलधरोऽपि जलं ददाति,
सन्तः स्वयं परहितेषु कृताभियोगाः ॥

परोपकार — सन्तों का स्वभाव नीतिशतक/70

Padmākaraṁ dinakaro vikacīkaroti,
Candro vikāsayati kairava-cakravālam |
Nābhyarthito jaladharo'pi jalaṁ dadāti,
Santaḥ svayaṁ parahiteṣu kṛtābhiyogāḥ ||

Helping nature of the great Nitiśataka / 70

सूर्य स्वतः ही कमलवन को विकसित करता है, चन्द्रमा ऐसे ही कुमुद-वन को विकसित करता है और बादल भी बिना प्रार्थना किए ही पानी बरसा देता है। इसी प्रकार सज्जन लोग बिना किसी के कहे ही परोपकार में लगे रहते हैं।

The sun makes the group of lotuses bloom. In the same way the moon makes the grove of lillies bloom. A cloud gives water without demanding. In the same way, great persons always help others even without any request.

(925)

पन्था देयो ब्राह्मणाय, गवे राज्ञे ह्यचक्षुषे।
वृद्धाय भारतप्ताय, गर्भिण्यै दुर्बलाय च ॥

रास्ता देने योग्य बौधायन धर्मसूत्र/2/3/30

Panthā deyo Brahmaṇāya, gave rājñe hyacakṣuṣe |
Vṛddhāya bhārataptāya, garbhiṇyai durbalāya ca ||

Way to be given to Baudhāyan. / 2 / 3 / 30

ब्राह्मण, गाय, राजा, नेत्रहीन, वृद्ध, भार से परेशान, गर्भवती स्त्री तथा दुर्बल व्यक्ति को रास्ता दे देना चाहिए।

Way should be given to a Bráhmaïa, a cow, a king, a blind person, an old man, a man carrying a heavy load, a pregnant woman and a weak person.

(926)

पदद्वयस्य संधानं, कर्तुमप्रतिभाः खलाः।
तथापि परकाव्येषु, दुष्करेष्वप्यसंभ्रमाः ॥

दोष-दर्शन — दुष्ट का स्वभाव सुभाषितावलि / 140

Padadvayasya saṁdhānaṁ, kartumapratibhāḥ khalāḥ |
Tathāpi parakāvyeṣu, duṣkareṣvapyasaṁbhramāḥ ||

Subhāṣitāvali / 140

Nature of the bad to see faults

प्रतिभा-शून्य दुष्टजन स्वयं दो पदों की भी रचना करने में असमर्थ होते हुए भी दूसरे के दुष्कर अर्थात् श्रमपूर्वक रचे हुए काव्य में दोष निकालने के लिए सदा तत्पर रहते हैं।

The mean fellows who are not genious cannot compose even two stanzas of a poem, still they always are prepared to find faults in the poetry of others which has been composed with great labour.

(927)

पयःपानं भुजङ्गानां, केवलं विषवर्धनम्।
उपदेशो हि मूर्खाणां, प्रकोपाय न शान्तये ॥

मूर्खों को उपदेश देने से हानि हितोपदेश/3/4

Payaḥpānaṁ bhujaṅgānāṁ, kevalaṁ viṣavardhanam |
Upadeśo hi mūrkhāṇāṁ, prakopāya na śāntaye ||

Harm in preaching fools Hitopadeśa / 3 / 4

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

साँपों को दूध पिलाना केवल उनके विष को ही बढ़ाता है। मूर्खों को दिया हुआ उपदेश उन्हें प्रकुपित ही करता है; न कि शान्त।

Feeding milk to serpents increases their poison only. Advice given to fools leads to their provocation and not appeasement.

(928)

परं क्षिपति दोषेण, वर्तमानः स्वयं तथा।
यश्च क्रुध्यत्यनीशानः, स च मूढतमो नरः॥

मूढ़ का लक्षण महाभा./उद्योग./33/37

Paraṁ kṣipati dosheṇa, vartamānaḥ svayaṁ tāthā।
Yaśca krudhyatyanīśānaḥ, sa ca muḍhatamo naraḥ॥

Mahābhā. / Udyoga / 33 / 37

Definition of the most foolish

जो व्यक्ति दोषी तो स्वयं होता है, परन्तु दूसरे का दोष बताता है और जो अत्यन्त क्रोधी स्वभाव का होता है, उसे सबसे मूढ़ (नासमझ) कहा जाता है।

A man who commits a fault and blames others for that fault and becomes angry fiercely is called the most foolish man.

(929)

परं विवर्धनं बुद्धेरज्ञानतरुशातनम्।
समुत्सारणमाधीनां, विद्धि साधुसमागमम्॥

साधु-संगति का लाभ सुभाषितावलि / 210

Paraṁ vivardhanaṁ buddherajñānataruśātanam।
Samutsāraṇamādhīnāṁ, viddhi sādhusamāgamam॥

Subhāṣitāvali / 210

Advantages of good company

साधु-समागम को अत्यन्त बुद्धिवर्धक, अज्ञान-रूपी वृक्ष को काटने वाला तथा चित्त-व्यथा को नष्ट करने वाला जानना चाहिए।

It should be noted that an association with good persons increases understanding, removes ignorance and keeps away the mental agony.

(930)

परकार्य-विहन्ता च दाम्भिकः स्वार्थसाधकः।
छली द्वेषी मृदुक्रूरो, विप्रो मार्जार उच्यते॥

निन्दनीय ब्राह्मण चाणक्यनीति/11/15

Parakārya-vihantā ca, dāmbhikaḥ svārthasādhakaḥ।
Chalī dveṣī mṛdukrūro, vipro mārjāra ucyate॥

Cāṇkyaniti / 11 / 15

Condemnable Brāhmaṇa

दूसरों के काम में विघ्न डालने वाला, पाखण्डी, अपना स्वार्थ ही साधने में लगा हुआ, छल और द्वेष करने वाला तथा ऊपर से मीठा परन्तु मन से क्रूर ब्राह्मण बिलाव कहा जाता है।

A Brāhmaṇa, who disrupts the works of others, who is boastful, selfish, deceiver, has enmity and externally kind but cruel in mind is called a cat.

(931)

परदुःखं समाकर्ण्य, स्वभावसरलो जनः।
उपकारासमर्थत्वात्, प्राप्नोति हृदये व्यथाम्॥

सरल मनुष्य की व्यथा सुभाषितावलि / 231

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Paraduḥkhaṁ samākarṇya, svabhāva-saralo janaḥ ।
Upakārāsamarthatvāt, prāpnoti hṛdaye vyathām ॥

Pain to simple man Subhāṣītāvali / 231

सरल स्वभाव का मनुष्य दूसरे के दुःख को सुनकर और अपने को उपकार करने में असमर्थ पाकर हार्दिक क्लेश का अनुभव करता है।

A man having an honest nature when hears about one's trouble and finds himself unable to remove that trouble, feels pain in heart.

(932)

पराङ्मुखेऽपि दैवेऽत्र, कृत्यं कार्यं विपश्चिता।
आत्मदोषविनाशाय, स्वचित्तस्तम्भनाय च॥

पुरुषार्थ आवश्यक पञ्च./मित्रभेद/312

Paraṅmukhe'pi daive'tra, kṛtyaṁ kāryaṁ vipaścitā ।
Ātma-doṣavināśāya, svacittastambhanāya ca ॥

Pañca. / Mitrabhe. / 312

Importance of work

समझदार व्यक्ति को भाग्य के विपरीत होने पर भी अपना कार्य करते रहना चाहिए। इससे अपने परिश्रम की कमी नहीं अखरेगी, और हृदय को सान्त्वना मिलेगी कि "मैंने तो अपनी ओर से कसर नहीं छोड़ी।"

A wiseman should do his work inspite of the adverse fate. Doing this he will not feel his carelessness and also feel consolation that he has done his best, whatever he could.

(933)

परान्नं परवस्त्रं च, परशय्यां परस्त्रियम्।
परवादं परद्रव्यं, दूरतः परिवर्जयेत्॥

त्याज्य वस्तुएँ (चाणक्यराजनीति)

Parānnaṁ paravastraṁ ca, paraśayyām parastriyam ।
Paravādaṁ paradravyaṁ, dūrataḥ parivarjayet ॥

Things to be avoided (Cāṇkyarājnīti)

दूसरे का भोजन, दूसरे का कपड़ा, दूसरे का बिछौना, पराई स्त्री, दूसरे की निन्दा और दूसरे के धन को दूर से ही छोड़ देना चाहिए।

The following six things of others should be neglected at once :- (1) food, (2) clothes, (3) bed, (4) wife, (5) disgrace and (6) money.

(934)

परिक्षीणः कश्चित् स्पृहयति यवानां प्रसृतये,
स पश्चात् सम्पूर्णो गणयति धरित्रीं तृणसमाम्।
अतश्चानैकान्त्याद् गुरुलघुतयार्थेषु धनिना-
मवस्था वस्तूनि प्रथयति च सङ्कोचयति च॥

कामनाओं की वृद्धि नीतिशतक/41

Parikṣīṇaḥ kaścit spṛhayati yavānāṁ prasṛtaye,
Sa paścāt sampurṇo gaṇayati daritrīṁ tṛṇasamām ।
Ataścānaikāntyād gurulaghutayārtheṣu dhaninā-
mavasthā vastūni prathayati ca saṅkocayati ca ॥

Increasing of desires Nītisataka / 41

दरिद्र व्यक्ति दरिद्रता की अवस्था में केवल मुट्ठी-भर जौ (या अन्न) को ही चाहता है, परन्तु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जब वही सम्पन्न हो जाता है तो इस संपूर्ण भूमि को भी तुच्छ समझने लगता है। इसलिए गुरुता और लघुता धनिकों की विभिन्न अवस्थाओं के कारण ही होती है; वे किसी एक के लिए निश्चित नहीं हैं। इससे सिद्ध होता है कि मनुष्य की अवस्था के अनुसार ही कोई वस्तु उसे बड़ी या छोटी लगती है।

When a man is poverty-stricken he desires only handful of corns, but when he becomes prosperous, the whole of the earth is like a straw for him. So, the conditions are not everlasting, but, change according to the circumstances of a man. If he has nothing he is called poor, but when he possesses much wealth he is rich.

(935)

परिवर्तिनि संसारे, मृतः को वा न जायते।
स जातो येन जातेन, याति वंशः समुन्नतिम्॥

सफल जीवन नीतिशतक/31

Parivartini saṁsāre, mṛtaḥ ko vā na jāyate |
Sa jāto yena jātena, yāti vaṁśaḥ samunnatim ||

Successful life Nītisataka / 31

भला कौन ऐसा व्यक्ति है जो मर कर इस परिवर्तनशील संसार में फिर पैदा नहीं होता? वस्तुतः पैदा हुआ उसे ही समझना चाहिए, जिसके जन्म से खानदान उन्नति को प्राप्त हो जाए।

Who is not born after death in this changing world? But he is really born by whose birth family becomes prosperous.

(936)

परिवर्ज्या भुजङ्गीव, वनिताऽन्यस्य दूरतः।
सा हि लोभवशा पापा, पुरुषस्य विनाशिका॥

पर स्त्री त्याज्य है पद्मपुराण/14/191

Parivarjyā bhujaṅgīva, vanitā'nyasya dūrataḥ |
Sā hi lobhavaśā pāpā, puruṣasya vināśikā ||

Keep off other's wife Padmapu. / 14 / 191

दूसरे की पत्नी को साँपिन की तरह दूर से त्याग देना चाहिए। लालच में पड़ी वह पापिनी पुरुष को नष्ट कर देती है।

One should keep off from a distance the wife of any other thinking her like a female snake, because due to greed she becomes a sinner and a destroyer of a man.

(937)

परीक्षका यत्र न सन्ति देशे,
नार्घन्ति रत्नानि समुद्रजानि।
आभीरदेशे किल चन्द्रकान्तं,
त्रिभिर्वराटैर्विपणन्ति गोपाः॥

परीक्षकों का लाभ पञ्च./मित्रभेद/80

Parīkṣakā yatra na santi deśe,
Nārghanti ratnāni samudrajāni |
Ābhīradeśe kila candrakāntaṁ,
Tribhirvarāṭairvipaṇanti gopāḥ ||

Pañca. / Mitrabhe. / 80

Advantage of examiners

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिस देश में पहचान करने वाले (पारखी) नहीं होते, वहाँ समुद्र से प्राप्त किए हुए बहुमूल्य रत्नों का भी मूल्य नहीं मिलता। अहीरों के प्रदेश में तो ग्वाले लोग चन्द्रकान्त मणि को भी तीन कौड़ियों में ही बेच देते हैं।

The very precious gems which are derived from the sea have no value at the place where their examiners are not available. In the region of cowherds, those people sell even a moonstone for three cowries only.

(938)

परोक्षे कार्यहन्तारं, प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्।
वर्जयेत्तादृशं मित्रं, विषकुम्भं पयोमुखम्॥

त्याज्य मित्र हितोपदेश/मित्रलाभ/77

Parokṣe kāryahantāraṁ, pratyakṣe priyavādinam |
Varjayettādṛśam mitraṁ, viṣakumbhaṁ payomukham ||

Avoidable friend Hitopa. / Mitralā. / 77

पीठ पीछे कार्य बिगाड़ने वाले और सामने प्रिय वचन बोलने वाले मित्र को त्याग देना चाहिए। वह मित्र विष से भरे उस घड़े के समान है, जिसके केवल मुख पर ही थोड़ा सा दूध है।

A man should discard such a friend who is harmful in absence and speaks sweet words on the face. Such friend is like that pitcher which is full of poison but has only a little milk at its mouth.

(939)

परोपदेशे पाण्डित्यं, सर्वेषां सुकरं नृणाम्।
धर्मे स्वीयमनुष्ठानं, कस्यचित्तु महात्मनः॥

पर-उपदेश कुशल बहुतेरे हितोपदेश/1/107

Paropadeśe pāṇḍityaṁ, sarveṣāṁ sukaraṁ nṛṇām |
Dharme svīyamanuṣṭhānaṁ, kasyacittu mahātmanaḥ ||

Hitopa. / 1 / 107

To preach others is very easy

सभी मनुष्य दूसरों को उपदेश देने में ही सहज विद्वत्ता समझते हैं, परन्तु कोई महात्मा ही अपने धार्मिक कृत्यों को नियमपूर्वक कर पाता है। इसीलिए कहा गया है – 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे।'

All people are prepared to preach others showing their natural knowledge but only a few great souls perform their religious duties honestly.

(940)

पश्यन्ति मां दशदिशो वनदेवताश्च,
चन्द्रश्च दीप्त-किरणश्च दिवाकरोऽयम्।
धर्मानिलौ च गगनं च तथान्तरात्मा,
भूमिस्तथा सुकृतदुष्कृत-साक्षिभूता॥

सुकृत और दुष्कृत के साक्षी अज्ञात

Paśyanti māṁ daśadiśo vanadevatāśca,
Candraśca dīptakiraṇaśca divākaro'yam |
Dharmānilau ca gaganaṁ ca tathāntarātmā,
Bhūmistathā sukṛtaduṣkṛta-sākṣibhūtā ||

Unknown

Witnesses of good or bad deeds

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दसों दिशाएँ, वन-देवता, चन्द्रमा, चमकती किरणों वाला सूर्य, धर्म, वायु, आकाश, मेरी अन्तरात्मा तथा अच्छे और बुरे कर्मों की गवाह बनी हुई इस पृथ्वी सहित सभी मुझे देख रहे हैं।

Ten quarters, the forest-deities, the moon and the sun with its brilliant rays, righteousness, wind, the sky, the inner soul and also the earth, which is the witness of all good and bad deeds—all are observing me.

(941)

पाटीर तव पटीयान् कः परिपाटीमिमामुरीकर्तुम्।
यत्पिषतामपि नृणां पिष्टोऽपि तनोषि परिमलैः पुष्टिम्॥

श्रेष्ठ व्यक्तियों की विशेषता भामिनीविलास/1/11

Paṭīra tava paṭīyān kaḥ paripāṭīmimāmurīkartum।
Yatpiṣatāmapi nṛṇāṁ piṣṭo'pi tanoṣi parimalaiḥ puṣṭim॥

Quality of the great Bhāminīvilāsa / 1 / 11

हे चन्दन, तुम्हारी इस परिपाटी को स्वीकार करने में तुमसे भी अधिक पटु और कौन हो सकता है कि घिसे जाने पर भी तुम घिसने वालों को (भी) अपनी सुगन्ध से तृप्त कर देते हो।

O sandalwood, who could be cleverer than you to follow this path of yours that you, even when rubbed, fill with your fragrance even those who rub you.

(942)

पाणिमद्भ्यः स्पृहास्माकं, यथा तव धनस्य वै।
न पाणिलाभादधिको, लाभः कश्चन विद्यते॥

हाथों का महत्त्व महाभा/शान्ति./180/12

Pāṇimadbhyaḥ spṛhāsmākaṁ, yathā tava dhanasya vai।
Na pāṇilābhādadhiko, lābhaḥ kaścana vidyate॥

Mahābhā. / Śānti. / 180 / 12

Usefulness of hands

"जैसे तेरी इच्छा धन पाने की है, वैसे ही हम शृगालों की इच्छा हाथ पाने की है। हाथ मिलने से बढ़कर कोई दूसरा लाभ नहीं हो सकता।" ये वाक्य शृगाल-वेषधारी इन्द्र आत्महत्या के इच्छुक एक ब्राह्मण को कह रहा है।

In the disguise of a jackal, Indra is saying following words to the Brahmana who is going to commit suicide, "As your desire is to get money, in the same way we, the jackals, desire hands, because there is no other better gain than hands."

(943)

पाणिमन्तो बलवन्तो, धनवन्तो न संशयः।
मनुष्या मानुषैरेव, दासत्वमुपपादिताः॥

अधिक हाथों की शक्ति महाभा./शान्ति./180/34

Pāṇimanto balavanto, dhanavanto na saṁśayaḥ।
Manuṣyā mānuṣaireva, dāsatvamupapāditāḥ॥

Mahābhā. / Śānti. / 180 / 34

Power of many hands

जिनके जितने हाथ होते हैं, उतने ही अधिक वे धनवान् और बलवान् होते हैं। अधिक हाथ वाले (अधिक साथियों वाले) मनुष्यों ने ही कम हाथों वाले (साथियों वाले) मनुष्यों को गुलाम बना रखा है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Those who have more hands (men) are more powerful and rich. Having more hands (men) people enslave other men who possess less hands (men).

(944)

पातितोऽपि कराघातैरुत्पतत्येव कन्दुकः।
प्रायेण हि सुवृत्तानामस्थायिन्यो विपत्तयः॥

स्थायी या अस्थायी विपत्तियाँ सुभाषितावलि / 222

Pātito'pi karāghātairutpatatyeva kandukaḥ।
Prāyeṇa hi suvṛttānāmasthāyinyo vipattayaḥ॥

Subhāṣitavali / 222

Temporary or permanent troubles

कर के आघात से बारम्बार नीचे की ओर फेंका गया गेंद पुनः ऊपर ही उछलता है। सुन्दर आचार से सम्पन्न व्यक्तियों की विपत्तियाँ प्रायः अस्थायी हुआ करती हैं और वे समय पाकर गेंद के समान ही ऊपर पहुँच जाते हैं।

By a stroke of a hand a ball first goes down, but at the same time it jumps up. In the same way men of good character fallen in adversity go up soon. So the troubles which come in the way of such persons are inconstant.

(945)

पातेन कन्दुक इवोत्पतत्यार्यः पतन्नपि।
तथापि त्वनार्यः पतति मृत्पिण्डपतनं यथा॥

आर्य और अनार्य पर संकट सुभाषितावलि / 221

Pātena kanduka ivotpatatyāryaḥ patannapi।
Tathāpi tvanāryaḥ patati mṛtpiṇḍapatanaṁ yathā॥

Subhāṣitāvali / 221

The good and bad men in adversities

ऊँचे चरित्र वाला व्यक्ति दैवी विपत्ति आने पर गेंद के समान नीचे गिर कर फिर उठ खड़ा होता है, परन्तु चरित्रहीन व्यक्ति मिट्टी के ढेले के समान गिर कर फिर नहीं उठ पाता।

A man of high-character if falls down due to some bad luck, he makes his progress soon as a ball gone down jumps up at once, but a low-character man if falls, he makes no progress again and remains like a lump of earth fallen down.

(946)

पात्रविशेषे न्यस्तं गुणान्तरं व्रजति शिल्पमाधातुः।
जलमिव समुद्रशुक्तौ मुक्ताफलतां पयोदस्य॥

मालविकाग्निमित्र/1/6

योग्य पात्र में ही गुणों का लाभ

Pātraviśeṣe nyastaṁ guṇāntaraṁ vrajati śilpamādhātuḥ।
Jalamiva samudraśuktau muktāphalatāṁ payodasya॥

Mālavikā. / 1 / 6

Glory of merits in deserving person

जब कोई व्यक्ति अपनी कारीगरी किसी विशेष पात्र को सिखाता है, तो उसका स्वरूप कुछ निखर जाता है; जैसे बादल का पानी समुद्र की सीप के मुँह में जाकर मोती बन जाता है।

When a man teaches his art to some special person, then it changes into a better thing; as the water of

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

a cloud when falls in the mouth of an oyster then it gets the form of a pearl.

(947)

पादाभ्यां न स्पृशेदग्निं, गुरुं ब्राह्मणमेव च।
नैव गाञ्च कुमारीं च, न वृद्धं न शिशुं तथा॥

पैरों से न छूने योग्य चाणक्यनीति/7/6

Pādābhyāṁ na spṛśedagniṁ, guruṁ Brāhmaṇameva ca |
Naiva gāñca kumāriṁ ca, na vṛddhaṁ na śiśuṁ tathā ||

Cāṇkyaniti / 7 / 6

Not to be touched with feet

पैरों से आग, गुरु, ब्राह्मण, गाय, कुमारी, वृद्ध स्त्री-पुरुष तथा छोटे बच्चे को नहीं छूना चाहिए।

One should not touch the following things with feet :- (1) fire, (2) a teacher, (3) a Brahmana, (4) a cow, (5) a virgin, (6) an old man or a woman and (7) a baby.

(948)

पादाहतं यदुत्थाय, मूर्धानमधिरोहति।
स्वस्थादेवापमानेऽपि, देहिनस्तद्वरं रजः॥

अपमानित जीवन — निन्दनीय शिशुपालवध/2/46

Pādāhataṁ yadutthāya, mūrdhānamadhirohati |
Svasthādevāpamāne'pi, dehinastadvaraṁ rajaḥ ||

Śiśupāla. / 2 / 46

Condemnable life of the degraded

अपमान होने पर भी जो शान्त रहता है, उस प्राणी से वह धूल ही अच्छी है, जो ठोकर खाकर ठोकर मारने वाले के सिर पर उड़कर चढ़ जाती है; अर्थात् अपमान का बदला लेने वाला निकम्मे बैठे रहने वाले व्यक्ति से कहीं अच्छा है।

The dust which flies upon the head of the person who kicks it, is better than that person who doesn't react against the person who insults him.

(949)

पादाहतोऽपि दृढदण्डसमाहतोऽपि,
यं दंष्ट्रया स्पृशति तं किल हन्ति सर्पः।
कोऽप्येष एव पिशुनोऽग्रमनुष्यधर्मः,
कर्णे परं स्पृशति हन्ति परं समूलम्॥

चुगलखोर साँप से भी भयानक पञ्च./मित्रभेद/250

Pādāhato'pi dṛḍhadaṇḍasamāhato'pi,
Yaṁ daṁṣṭrayā spṛśati taṁ kila hanti sarpaḥ |
Ko'pyeṣa eva piśuno'gramanuṣyadharmaḥ,
Karṇe paraṁ spṛśati hanti paraṁ samūlam ||

A backibiter Pañca. / Mitrebhe. / 250
more dangerous than a snake

पैर से कुचला हुआ और मजबूत डण्डे से चोट खाया हुआ भी साँप अपना दाँत चुभो कर केवल उसे ही मारता है। परन्तु मानवता से हटा हुआ कोई चुगलखोर साँप से भी बढ़कर है, जो स्पर्श तो किसी के कान से करता है, परन्तु जड़ सहित मारता किसी और को ही है। भावार्थ यह है कि चुगलखोर उल्टी-सीधी बातों से किसी को दूसरे के विरुद्ध भड़का कर उसे नष्ट करवा देता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Trodden with feet and attacked with a strong club, a snake if touches any body with its poisonous tooth, then he is killed, but there is such an inhuman backbiter person who touches one's ear and kills another one. It means that a backbiter provokes a person against another and causes his death.

(950)

पानमक्षस्तथा नार्यो, मृगया गीतवादितम्।
एतानि युक्त्या सेवेत, प्रसङ्गो ह्यत्र दोषवान्॥

शासक के लिए त्याज्य महाभारत शा० प०/140/26

Pānamakṣastathā nāryo, mṛgayā gīta-vāditam |
Etāni yuktyā seveta, prasaṅgo hyatra doṣavān ||

Mahābhā. / Śānti. / 140 / 26

To be avoided by the ruler

मद्यपान, जुआ, स्त्रियाँ, शिकार, गाना-बजाना इनका सन्तुलित रूप में ही उपभोग करना चाहिए, इनकी लत पड़ जाना खराब होता है।

One should be careful when he enjoys the following things — (1) drinking of wine, (2) gambling, (3) women, (4) hunting, (5) singing and playing on instruments. One should take enjoyment reasonably and should not be given into them.

(951)

पापान्निवारयति योजयते हिताय,
गुह्यं निगूहति गुणान् प्रकटीकरोति।
आपद्गतं च न जहाति ददाति काले,
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः॥

श्रेष्ठ मित्र के चिह्न नीतिशतक/69

Pāpānnivārayati yojayate hitāya,
Guhyaṁ nigūhati guṇān prakatīkaroti |
Āpadgataṁ ca na jahāti, dadāti kāle,
Sanmitralakṣaṇamidaṁ pravadanti santaḥ ||

Qualities of a good friend Nītiśataka / 69

अच्छा मित्र पाप-कर्म से हटाता है, अच्छे काम में प्रवृत्त करता है, रहस्य को गुप्त रखता है, गुणों को प्रकट करता है, विपदा में पड़े हुए का साथ नहीं छोड़ता, समय पड़ने पर सहयोग देता है। सज्जनों ने अच्छे मित्र के ये ही लक्षण बताये हैं।

A good friend keeps his friend away from sins, directs towards good, keeps secrets concealed, proclaims qualities of the friend, does not desert him in adversity and provides timely help. These are the characteristics of a sincere friend as mentioned by the wise persons.

(952)

पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती।
यज्ञं वष्टु धियावसुः॥

उत्तम वाणी की कामना ऋ./1/3/10

Pāvakā naḥ sarasvatī vājebhirvājinīvatī |
Yajñaṁ vaṣṭu dhiyāvasuḥ ||

Desire of good speech Ṛg. / 1 / 3 / 10

हमारी वाणी पवित्र हो और ज्ञान द्वारा प्रभाव-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शालिनी बने। यह बुद्धि और कर्म से मिलकर बसाने वाली तथा उपकार के कार्यों को करने वाली हो।

May our speech be pure and clear! May it be effective with the help of knowledge! Associated with intellect and practice, it should help others to live happily and it may be busy in doing good works!.

(953)

पिबन्ति नद्यः स्वयमेव नाम्भः,
स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः।
नादन्ति सस्यं खलु वारिवाहाः,
परोपकाराय सतां विभूतयः॥

सज्जनों की सम्पत्तियाँ नीतिशास्त्र / 66

Pibanti nadyaḥ svayameva nāmbhaḥ,
Svayaṁ na khādanti phalāni vṛkṣāḥ।
Nādanti sasyaṁ khalu vārivāhāḥ,
Paropakārāya satāṁ vibhūtayaḥ॥

The wealth of the good Nītiśāstra / 66

नदियाँ पानी स्वयं नहीं पीतीं, वृक्ष स्वयं फल नहीं खाते और न बादल अनाज खाते हैं। इस प्रकार सज्जनों का वैभव परोपकार के लिए ही होता है।

The rivers do not drink their own water, the trees do not eat their own tasty fruits and the clouds do not eat the crops themselves. So the prosperity of the good people is for helping others.

(954)

पिण्डे पिण्डे मतिर्भिन्ना, कुण्डे कुण्डे नवं पयः।
जातौ जातौ नवाचारा, नवा वाणी मुखे मुखे॥

प्राय सबमें भेद होता है अज्ञात

Piṇḍe piṇḍe matirbhinnā, kuṇḍe kuṇḍe navaṁ payaḥ।
Jātau jātau navācārā, navā vāṇī mukhe mukhe॥

Difference is every where Unknown

प्रत्येक व्यक्ति का सोचने का ढंग अलग-अलग होता है। प्रत्येक जलाशय के जल में भी अन्तर होता है। प्रत्येक जाति का रहन-सहन का ढंग भिन्न-भिन्न होता और प्रत्येक व्यक्ति के मुख से बात प्रकट करने का ढंग भी अलग-अलग होता है। इस प्रकार सर्वत्र विविधता दीखती है।

Every person thinks in his own way. Every water-tank has different taste. The culture of every caste seems different and also the speech of every person differs. In this way we see difference in every field of this world.

(955)

पितरं चाप्यवज्ञाय मातरं च नराधिप।
गुरुं च भरत-श्रेष्ठ नरकं प्रतिपद्यते॥

नरक में जाने के कारण सुभाषितावलि / 2987

Pitaraṁ cāpyavajñāya mātaraṁ ca narādhipa।
Guruṁ ca Bharat-śreṣṭha narakaṁ pratipadyate॥

Causes for hell Subhāṣitā. / 2987

हे भरत-वंश में श्रेष्ठ राजन्! पिता, माता और गुरु का अनादर करके मनुष्य नरक को जाता है।

O the king of Bharata-dynasty! If

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Trodden with feet and attacked with a strong club, a snake if touches any body with its poisonous tooth, then he is killed, but there is such an inhuman backbiter person who touches one's ear and kills another one. It means that a backbiter provokes a person against another and causes his death.

(950)

पानमक्षस्तथा नार्यो, मृगया गीतवादितम्।
एतानि युक्त्या सेवेत, प्रसङ्गो ह्यत्र दोषवान्॥

शासक के लिए त्याज्य महाभारत शा० प०/140/26

Pānamakṣastathā nāryo, mṛgayā gīta-vāditam |
Etāni yuktyā seveta, prasaṅgo hyatra doṣavān ||

Mahābhā. / Śānti. / 140 / 26

To be avoided by the ruler

मद्यपान, जुआ, स्त्रियाँ, शिकार, गाना-बजाना इनका सन्तुलित रूप में ही उपभोग करना चाहिए, इनकी लत पड़ जाना खराब होता है।

One should be careful when he enjoys the following things — (1) drinking of wine, (2) gambling, (3) women, (4) hunting, (5) singing and playing on instruments. One should take enjoyment reasonably and should not be given into them.

(951)

पापान्निवारयति योजयते हिताय,
गुह्यं निगूहति गुणान् प्रकटीकरोति।
आपद्गतं च न जहाति ददाति काले,
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः॥

श्रेष्ठ मित्र के चिह्न नीतिशतक/69

Pāpānnivārayati yojayate hitāya,
Guhyaṁ nigūhati guṇān prakaṭīkaroti |
Āpadgataṁ ca na jahāti, dadāti kāle,
Sanmitralakṣaṇamidaṁ pravadanti santaḥ ||

Qualities of a good friend Nītiśataka / 69

अच्छा मित्र पाप-कर्म से हटाता है, अच्छे काम में प्रवृत्त करता है, रहस्य को गुप्त रखता है, गुणों को प्रकट करता है, विपदा में पड़े हुए का साथ नहीं छोड़ता, समय पड़ने पर सहयोग देता है। सज्जनों ने अच्छे मित्र के ये ही लक्षण बताये हैं।

A good friend keeps his friend away from sins, directs towards good, keeps secrets concealed, proclaims qualities of the friend, does not desert him in adversity and provides timely help. These are the characteristics of a sincere friend as mentioned by the wise persons.

(952)

पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती।
यज्ञं वष्टु धियावसुः॥

उत्तम वाणी की कामना ऋ./1/3/10

Pāvakā naḥ sarasvatī vājebhirvājinīvatī |
Yajñaṁ vaṣṭu dhiyāvasuḥ ||

Desire of good speech Ṛg. / 1 / 3 / 10

हमारी वाणी पवित्र हो और ज्ञान द्वारा प्रभाव-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शालिनी बने। यह बुद्धि और कर्म से मिलकर बसाने वाली तथा उपकार के कार्यों को करने वाली हो।

May our speech be pure and clear! May it be effective with the help of knowledge! Associated with intellect and practice, it should help others to live happily and it may be busy in doing good works!.

(953)

पिबन्ति नद्यः स्वयमेव नाम्भः,
स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः।
नादन्ति सस्यं खलु वारिवाहाः,
परोपकाराय सतां विभूतयः॥

सज्जनों की सम्पत्तियाँ नीतिशास्त्र / 66

Pibanti nadyaḥ svayameva nāmbhaḥ,
Svayaṁ na khādanti phalāni vṛkṣāḥ।
Nādanti sasyaṁ khalu vārivāhāḥ,
Paropakārāya satāṁ vibhūtayaḥ॥

The wealth of the good Nītiśāstra / 66

नदियाँ पानी स्वयं नहीं पीतीं, वृक्ष स्वयं फल नहीं खाते और न बादल अनाज खाते हैं। इस प्रकार सज्जनों का वैभव परोपकार के लिए ही होता है।

The rivers do not drink their own water, the trees do not eat their own tasty fruits and the clouds do not eat the crops themselves. So the prosperity of the good people is for helping others.

(954)

पिण्डे पिण्डे मतिर्भिन्ना, कुण्डे कुण्डे नवं पयः।
जातौ जातौ नवाचारा, नवा वाणी मुखे मुखे॥

प्राय सबमें भेद होता है अज्ञात

Piṇḍe piṇḍe matirbhinnā, kuṇḍe kuṇḍe navaṁ payaḥ।
Jātau jātau navācārā, navā vāṇī mukhe mukhe॥

Difference is every where Unknown

प्रत्येक व्यक्ति का सोचने का ढंग अलग-अलग होता है। प्रत्येक जलाशय के जल में भी अन्तर होता है। प्रत्येक जाति का रहन-सहन का ढंग भिन्न-भिन्न होता और प्रत्येक व्यक्ति के मुख से बात प्रकट करने का ढंग भी अलग-अलग होता है। इस प्रकार सर्वत्र विविधता दीखती है।

Every person thinks in his own way. Every water-tank has different taste. The culture of every caste seems different and also the speech of every person differs. In this way we see difference in every field of this world.

(955)

पितरं चाप्यवज्ञाय मातरं च नराधिप।
गुरुं च भरत-श्रेष्ठ नरकं प्रतिपद्यते॥

नरक में जाने के कारण सुभाषितावलि / 2987

Pitaraṁ cāpyavajñāya mātaraṁ ca narādhipa।
Gurum ca Bharat-śreṣṭha narakaṁ pratipadyate॥

Causes for hell Subhāṣitā. / 2987

हे भरत-वंश में श्रेष्ठ राजन्! पिता, माता और गुरु का अनादर करके मनुष्य नरक को जाता है।

O the king of Bharata-dynasty! If

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

a man disgraces his father, mother or teacher, he falls into hell.

(956)

पिता विवेकः सुमतिर्जनित्री,
स्वसाऽप्यहिंसा दयिता दयैव।
धर्मः सहायः करुणा कुमारी,
सूनुस्तथा दीनजनोपकारः॥

महात्माओं के सम्बन्धी चाणक्यराजनीतिशास्त्र/8/153

Pitā vivekaḥ, sumatirjanitrī,
Svasā'pyahiṁsā dayitā dayaiva।
Dharmaḥ sahāyaḥ karuṇā kumarī,
Sūnustathā dīnajanopakāraḥ॥

Cāṇkyarājanītiśāstra / 8 / 153

Relatives of the great

महात्माओं का विवेक ही पिता, सुबुद्धि माता, अहिंसा बहिन, दया ही पत्नी, धर्म साथी, करुणा सुपुत्री तथा दीनजनों के प्रति किया गया उपकार ही पुत्र होता है। इस प्रकार महात्माओं के परिवार में सभी श्रेष्ठ गुण सम्मिलित हो जाते हैं।

In the family of saints, discri-mination is their father, right thinking is their mother, non-violence is their sister, kindness is their wife, religion is their companion, mercy is their daughter and helping distressed per-sons is their son. In this way all good qualities exist in their family.

(957)

पिशुनेभ्यो नमस्तेभ्यो यत्प्रसादान्नियोगिनः।
दूरस्था अपि जायन्ते सहस्त्रश्रोत्रचक्षुषः॥

चुगलखोरों का स्वभाव नर्ममाला/51

Piśunebhyo namastebhyo yatprasādānniyoginaḥ।
Dūrasthā api jāyante sahasraśrotracakṣuṣaḥ॥

Nature of backbiters Narmamālā / 51

उन चुगलखोरों को नमस्कार है, जिनकी कृपा से मालिक लोग दूर रहने पर भी हजारों कानों और आँखों वाले हो जाते हैं।

Salutations to those backbiters whose favour makes their employers possessers of thousand of ears and eyes even staying at long distance.

(958)

पुंसामसमर्थानामुपद्रवायात्मनो भवेत्कोपः।
पिठरं ज्वलदतिमात्रं निजपार्श्वानेव दहतितराम्॥

असमर्थ के क्रोध से अपनी हानि पञ्च./मित्रभेद/274

Puṁsāmasamarthānāmupadravāyātmano bhavet kopaḥ।
Piṭharaṁ jvaladatimātraṁ nijapārśvāneva dahatitarām॥

Pañca. / Mitrebhe. / 274

Unable's anger harmful for himself

असमर्थ लोगों का क्रोध अपने ही विनाश के लिए होता है। पतीला अधिक तपता हुआ अपने ही अंगों को जला डालता है।

The anger of unable persons bears their own destruction. If a pan is heated too much, it burns its own sides.

(959)

पुत्राश्च विविधैः शीलैर्नियोज्याः सततं बुधैः।
नीतिज्ञाः शीलसम्पन्नाः भवन्ति कुलपूजिताः॥

पुत्रों के प्रति कर्त्तव्य चाणक्यनीति/2/10

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Putrāśca vividhaiḥ śīlairniyojyāḥ satataṁ budhaiḥ |
Nītijñāḥ śīlasampannāḥ bhavanti kulapūjitāḥ ||

Duties for their sons Cāṇkyanīti / 2 / 10

बुद्धिमानों को चाहिए कि वे अपने पुत्रों को निरन्तर अनेक प्रकार के सद्गुणों से सम्पन्न करें; क्योंकि ऐसे ही पुत्र नीतिज्ञ, सदाचारी बन कर खानदान में पूजे जाते हैं।

Wise persons should try continuously to make their sons meritorious, because such kind of sons become politicians and virtuous and are respected in their dynasty.

(960)

पुनरेहि वाचस्पते देवेन मनसा सह।
वसोष्पते नि रमय मय्येवास्तु मयि श्रुतम्॥

हमारा ज्ञान स्थायी हो अथर्व./1/1/2

Punarehi vācaspate devena manasā saha |
Vasoṣpate ni ramaya mayyevāstu mayi śrutam ||

Atharva. / 1 / 1 / 2

Knowledge taken be permanent in us

हे वाणी के स्वामी (परमेश्वर या गुरुदेव), दिव्य मननशक्ति के साथ पुनः आइए (अर्थात् मुझे ज्ञान दीजिए)। हे ज्ञान के स्वामी, मेरे अन्दर समा जाइए (अर्थात् मैं ज्ञान को लेने के लिए पूर्णतः दत्तचित्त रहूँ), जिससे आप द्वारा दिया गया ज्ञान मेरे अन्दर स्थायी रूप से रहे।

O master of speech (God or my teacher)! Give me your knowledge with divine thinking power and I should be completely attentive to obtain that knowledge, so that the knowledge imparted by you, may remain in me permanently.

(961)

पुनर्वित्तं पुनर्मित्रं पुनर्भार्या पुनर्मही।
एतत्सर्वं पुनर्लभ्यं, न शरीरं पुनः पुनः॥

शरीर की दुर्लभता चाणक्यनीति/14/2

Punarvittaṁ punarmitraṁ punarbhāryā punarmahī |
Etatsarvaṁ punarlabhyaṁ, na śarīraṁ punaḥ punaḥ ||

Rarity of human body Cā. Nīti / 14 / 2

धन, मित्र, पत्नी और भूमि इत्यादि सभी वस्तुएँ फिर मिल सकती है, परन्तु मानव का शरीर इस जीवन में फिर नहीं मिलता। (अतः इसे स्वस्थ और सुरक्षित रखना चाहिए।)

Riches, friends, wife, land and other things can be obtained again but human body cannot be regained in this life. (So one should try to protect and keep it healthy.)

(962)

पुनाति त्रायते चायं पितरं येन शोकतः।
एतत्पुत्रस्य पुत्रत्वं प्रवदन्ति मनीषिणः॥

पुत्र की विशेषता पद्मपुराण/31/126

Punāti trāyate cāyaṁ pitaraṁ yena śokataḥ |
Etat putrasya putratvaṁ pravadanti manīṣiṇaḥ ||

Quality of the son Padmapu. / 31 / 126

क्योंकि वह पिता को अपने श्रेष्ठ कार्यों द्वारा पवित्र करता है और उसकी रक्षा भी करता है, अतः मनीषी लोग इसी कारण से पुत्र में पुत्रभाव को बताया करते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

As a son purifies his father with his noble actions and also protects him, due to this reason thoughtful persons state this condition of being a son in it.

(963)

पुरःफलायामाशायां जनः कामं विडम्बते।
आसन्ने ही घनारम्भे द्विगुणं रौति चातकः॥

फल की आशा से उद्वेग विदग्धमाधव/14/18

Puraḥphalāyāmāśāyāṁ janaḥ kāmaṁ viḍambate |
Āsanne hi ghanārambhe dviguṇaṁ rauti cātakaḥ ||

Vidagdha Mā / 14 / 18

Impatience in hope of success

आशा जब सफल होती दिखाई पड़ती है तो व्यक्ति और अधिक अधीर हो उठता है। जब बरसात प्रारम्भ होने वाली होती है तो चातक दूने जोर से पी-पी करने लगता है।

When a hope seems to become successful, the hopeful person becomes more impatient, as the chataka begins to make more noise when the first shower of rain is expected very soon.

(964)

पुराणमित्येव न साधु सर्वम्,
न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते,
मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः॥

सभी पुरानी बातें ठीक नहीं मालवाग्निमित्रम्/1/2

Purāṇamityeva na sādhu sarvam,
Na cāpi kāvyaṁ navamityavadyam |
Santaḥ parīkṣyānyatarad bhajante,
Mūḍhaḥ parapratyayaneyabuddhiḥ ||

Mālavagni. / 1 / 2

All old things are not just

सभी पुरानी बातें ही ठीक हों, यह आवश्यक नहीं है और अमुक काव्य नया है इसलिए यह अच्छा नहीं, यह भी बात ठीक नहीं। अच्छे लोग तो परख कर ही किसी बात को स्वीकार करते हैं, जब कि मूढ़ मनुष्य दूसरों के कहे पर ही चलता है।

It is not necessary that all old things are good and it is also not reasonable that the new poetry-book is useless. The wisemen accept any kind of the thing after justification, while fools follow others blindly.

(965)

पुरुषस्येह जातस्य भवन्ति गुरवस्त्रयः।
आचार्यश्चैव काकुत्स्थ पिता माता च राघव॥

मनुष्य के तीन गुरु वा० रामायण/अयोध्याकाण्ड/111/2

Puruṣasyeha jātasya bhavanti guravastrayaḥ |
Ācāryaścaiva kākutstha pitā mātā ca Rāghava ||

Vā. Rā. / Ayodhyā. / 111 / 2

Three teachers of a man

हे रघुनन्दन! इस संसार में उत्पन्न हुए व्यक्ति के तीन ही गुरु होते हैं — आचार्य, पिता और माता।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

O dear Ram, the man who takes birth in this world has his three instructors only - a teacher, a father and a mother.

(966)

पुलाका इव धान्येषु पूतिका इव पक्षिषु।
मशका इव मर्त्येषु येषां धर्मो न कारणम्॥

निन्दनीय - धर्महीन पुरुष महाभा./शान्ति/181/7

Pulākā iva dhānyeṣu pūtikā iva pakṣiṣu |
Maśakā ive martyeṣu yeṣāṁ dharmo na kāraṇam ||

Mahābhā. / Śānti / 181 / 7

Condemnable — irreligious person

जो धर्म की उपेक्षा करते हैं, वे अनाजों में पुलाक नामक निकृष्ट अन्न के समान, पक्षियों में पंखों वाली दीमक के समान तथा अन्य प्राणियों में मच्छरों के समान होते हैं।

Those who ignore religion are like puláka in corns, like white ants with wings in birds and like mosquitoes in other dying creatures.

(967)

पुष्पं दृष्ट्वा फलं दृष्ट्वा दृष्ट्वा योषितयौवनम्।
त्रीणि रत्नानि दृष्ट्वैव कस्य नोच्चलते मनः॥

मन की चंचलता के तीन कारण अज्ञात

Puṣpaṁ dṛṣṭvā phalaṁ dṛṣṭvā, dṛṣṭvā yoṣitayauvanam |
Trīṇi ratnāni dṛṣṭvalva kasya noccalate manaḥ ||

Unknown

Three causes of unstability of mind

फूल, फल और नारी की जवानी इन तीन रत्नों को देखकर ही किसका मन विचलित नहीं हो जाता? अर्थात् सभी का मन चंचल हो उठता है।

A flower, a fruit and the youth of a woman are three such gems, on seeing which the mind of every one becomes unsteady and desirous.

(968)

पुष्पे गन्धं, तिले तैलं, काष्ठे वह्निं पयोघृतम्।
इक्षौ गुडं तथा देहे पश्यात्मानं विवेकतः॥

आत्मदर्शन चाणक्यनीति/7/21

Puṣpe gandhaṁ, tile tallaṁ, kāṣṭhe vahniṁ payoghṛtam |
Ikṣau guḍaṁ tathā dehe paśyātmānaṁ vivekataḥ ||

Appearance of soul Cāṇkyanīti / 7 / 21

जैसे फूल में सुगन्ध, तिलों में तेल, लकड़ी में आग, दूध में घी और ईख में गुड़ छिपा होता है, उसी प्रकार शरीर में आत्मा विद्यमान रहती है। विवेक द्वारा उसे पहचानो।

As smell remains in a flower, oil in the seeds of sesame, fire in a wood, ghee in milk, and treacle in the sugarcane, in the same way the soul exists in the body. Recognize the soul with your discriminative power.

(969)

पुस्तकस्था तु या विद्या परहस्तगतं धनम्।
कार्यकाले समुत्पन्ने न सा विद्या न तद्धनम्॥

लाभहीन विद्या और धन चाणक्यनीतिदर्पण / 16 / 20

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Pustakasthā tu yā vidyā parahastagataṁ dhanam |
Kāryakāle samutpanne na sā vidyā na taddhanam ||

Cānkyanitidar. / 16 / 20

Useless knowledge and money

पुस्तक में रखी विद्या (जो कण्ठस्थ नहीं) और दूसरे के हाथ में गया हुआ धन, आवश्यकता के समय कोई भी लाभ नहीं पहुँचा सकते। ऐसी विद्या और ऐसा धन किस काम के हैं?

Knowledge which exists in the books and wealth which is in the hands of others, In the time of need, neither that knowledge nor that wealth becomes useful.

(970)

पृणीयादिन्नाधमानाय तव्यान्,
द्राघीयांसमनुपश्येत पन्थाम्।
ओ हि वर्त्तन्ते रथ्येव चक्रा-
न्यमन्यमुप तिष्ठन्त रायः॥

दीनों की सहायता करो ऋ./10/117/5

Pṛṇīyādinnādhamānāya tavyān,
Drāghīyāṁsamanupaśyeta panthām |
O hi varttante rathyeva cakrā-
nyamanyamupa tiṣṭhanta rāyaḥ ||

Help the poor Ṛg. / 10 / 117 / 5

समर्थ व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह दीन-हीन व्यक्ति की सहायता कर उसे पुष्ट करे और भूत तथा भविष्यत्काल के लम्बे चौड़े समय पर दृष्टि डाले क्योंकि जैसे रथ के पहिए घूमते रहते हैं, उसी प्रकार सम्पत्तियाँ आज एक के पास तो कल दूसरे के पास चली जाती हैं। (अतः चञ्चल धन-दौलत द्वारा परोपकार करना ही मानवता है।)

A capable person should help the distressed person to uplift him and throw his sight on the long path of the past and the future and he should also understand that wealth rotates from one person to the other like the wheels of a chariot.

(971)

पृथिवी रत्नसम्पूर्णा हिरण्यं पशवः स्त्रियः।
नालमेकस्य तत्सर्वमिति मत्वा शमं व्रजेत॥

शान्ति का मार्ग महाभारत, आदिपर्व/75/5

Pṛthivī ratnasampūrṇāṁ hiraṇyaṁ paśavaḥ striyaḥ |
Nālamekasya tatsarvamiti matvā śamaṁ vrajet ||

Way to peace Mahābhā. / Ādip. / 75 / 5

रत्नों से भरपूर पृथ्वी, सोना, पशु और स्त्रियाँ ये सब एक व्यक्ति को भी सन्तुष्ट करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं; यह जानकर मनुष्य को सन्तोष करना चाहिए।

The earth rich in jewels, gold, animals and women, all these things are not enough even for a single individual to satisfy him. So, one should adopt contentment and remain happy.

(972)

पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम्।
मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते॥

वास्तविक रत्न — तीन उद्भटश्लोक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Pṛthivyāṁ triṇi ratnāni jalamannaṁ subhāṣitam |
Mūḍhaiḥ pāṣāṇakhaṇḍeṣu ratna-saṁjñā vidhīyate ||

Real gems — three Udbhaṭaśloka

पृथ्वी पर जल, अन्न और सुभाषित ये तीन ही रत्न हैं। अज्ञानी लोग पत्थर के टुकड़ों को रत्न का नाम देते हैं।

There are only three gems in this world :- water, food and beautiful sayings. Only fools give the name of gems to the pieces of a stone.

(973)

पृष्ठतः सेवयेदर्कं जठरेण हुताशनम्।
स्वामिनं सर्वभावेन परलोकममायया॥

सेवन करने की विधि हितोपदेश/सुहृद्भेद/34

Pṛṣṭhataḥ sevayedarkaṁ jaṭhareṇa hutāśanam |
Svāminaṁ sarvabhāvena, paralokamamāyayā ||

Methods to serve Hitopa. / Sutṛd / 34

सूर्य का सेवन पीठ की ओर से करना चाहिए और अग्नि का पेट की ओर से, स्वामी की सेवा सभी प्रकार से करनी चाहिए और परलोक का सेवन निष्कपट भाव से करना चाहिये।

Basking in the sun should be enjoyed with back and the heat of fire be enjoyed with the stomach. The master should be served with all kind of devotion and the next world should be made good with honesty and truthfulness.

(974)

प्रजहाति यदा कामान्, सर्वान् पार्थ मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः, स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते॥

स्तिप्रज्ञ का लक्षण महाभारत/भीष्मपर्व/26/55

Prajahāti yadā kāmān, sarvān Pārtha manogatān |
Ātmanyevātmanā tuṣṭaḥ, sthitaprajñastadocyate ||

Mahābhā. / Bhīṣma. / 26 / 55

Definition of peaceful mind

हे अर्जुन! जब मनुष्य मन में रहने वाली सभी कामनाओं को छोड़ देता है और अपने में ही सन्तुष्ट रहता है, तभी वह स्थिर बुद्धि वाला या स्थितप्रज्ञ कहलाता है।

O Arjun! When a man removes all the desires which are in his mind and becomes satisfied with himself, then he is called resolute or 'sthitaprajña'.

(975)

प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ
विफलत्वमेति बहुसाधनता।
अवलम्बनाय दिनभर्तुरभून्न
पतिष्यतः करसहस्त्रमपि॥

विधाता की प्रतिकूलता शिशुपालवध / 9 / 6

Pratikūlatāmupagate hi vidhau,
Viphalatvameti bahusādhanatā |
Avalambanāya dinabharturabhūnna,
Patiṣyataḥ karasahasramapi ||

Adversity of fate Śiśu. / 9 / 6

जब विधाता प्रतिकूल हो जाता है, तब अनेक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकार के साधन भी व्यर्थ हो जाते हैं। विधु (चन्द्रमा) के पूर्व दिशा में प्रकट होते ही सूर्य की किरण रूपी हाथ भी उसे (सूर्य को) गिरने से नहीं बचा सकते।

(यहाँ 'विधौ' तथा 'कर' शब्द में श्लेष है।)

When the luck becomes adverse, all helping means become useless. When the moon rises in the east, the sun which is going to be set cannot be saved by its own hands of rays.

(Here 'Vidhu' and 'Kara' these two words have two meanings)

(976)

प्रत्युपस्थितकालस्य सुखस्य परिवर्जनम्।
अनागतसुखाशा च नैव बुद्धिमतां नयः॥

वर्तमान और भविष्य अज्ञात

Pratyupasthitakālasya sukhasya parivarjanam |
Anāgatasukhāśā ca naiva buddhimatāṁ nayaḥ ||

Present and future Unknown

वर्तमान सुख का परित्याग और भविष्य के सुख की आशा बुद्धिमानों की नीति नहीं है।

The relinquishing of present happiness and pursuiting for future one is not the policy of the intelligent people.

(977)

प्रदानं प्रच्छन्नं गृहमुपगते सम्भ्रमविधिः,
प्रियं कृत्वा मौनं सदसि कथनं चाप्युपकृतेः।
अनुत्सेको लक्ष्म्या निरभिभवसाराः परकथाः,
सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधारा-व्रतमिदम्॥

सज्जनों का कठोरव्रत नीतिशतक/60

Pradānaṁ pracchannaṁ gṛhamupagate sambhramavidhiḥ,
Priyaṁ kṛtvā maunaṁ sadasi kathanaṁ cāpyupakṛteḥ |
Anutseko lakṣmyā nirabhibhavasārāḥ parakathāḥ,
Satāṁ kenoddiṣṭaṁ viṣamamasidhārā-vratamidam ||

Difficult principle the good people Nitiśataka / 60

बिना घोषणा किए चुपके से दान देना, घर में आने वाले का आदर-सत्कार करना, किसी का भला कर के उसे न जताना और चुप रहना, किसी के द्वारा किए गए उपकार को दूसरों को बताना, धन-दौलत पाकर भी अभिमान न करना और दूसरों की बात करते हुए अपमानजनक शब्द न कहना - इस प्रकार तलवार की धार पर चलने के समान कठिनता से निभाने के गुण सज्जनों को किसने दिये? किसी ने नहीं, अर्थात् उनके स्वभाव में ही ये गुण होते हैं।

Giving of alms without showing or announcing, respecting the person who comes to their house, keeping silent after helping others, disclosing the help given by somebody, absence of pride due to wealth and describing of other's works without defaming him, who has given this kind of hard duties which is equal to run on the blade of a sword to the noble people? Nobody, but these qualities are in their nature.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(978)

प्रमदा मदिरा लक्ष्मीर्विज्ञेया त्रिविधा सुरा।
दृष्ट्वैवोन्मादयत्येका पीता चान्यातिसंचयात्॥

मद्य के तीन रूप (सुभाषित-रत्नभाण्डागार)

Pramadā madirā lakṣmīrvijñeyā trividhā surā |
Dṛṣṭvaivonmādayatyekā pītā cānyātisaṁcayāt ||

There kinds of wine (Subhā. Ratnabhā.)

स्त्री, शराब और लक्ष्मी इस प्रकार मद्य के ये तीन रूप हैं। एक दर्शन से, दूसरा पीने से और तीसरा संचय से पागलपन उत्पन्न करता है।

There are three kinds of spirituous liquor - woman, wine and wealth. A woman makes mad when she is looked by a person. The wine makes mad after drinking and the wealth, when collected too much makes mad.

(979)

प्रमीयते चास्य प्रजा ह्यकाले,
सदा विवासं पितरोऽस्य कुर्वते।
भीतं प्रपन्नं ददाति यः शत्रवे,
सेन्द्रा देवाः प्रहरन्त्यस्य वज्रम्॥

शरणागत त्याज्य नहीं महाभा./उद्योग/12/21

Pramīyate cāsya prajā hyakāle,
Sadā vivāsaṁ pitaro'sya kurvate |
Bhītaṁ prapannaṁ dadāti yaḥ śatrave,
Sendrā devāh praharantyasya vajram ||

Mahābhā. / Udyoga / 12 / 21

A rufugee is not to be lefts

जो डरे हुए और शरण में आए हुए व्यक्ति को शत्रु को सौंप देता है, उसकी सन्तान मर जाती है और उसके पितर दर-दर की ठोकरें खाते हैं तथा इन्द्र-सहित सभी देवता उसकी क्षमता को नष्ट कर देते हैं।

The person who hands over such a person, who is afraid and wants refuge, to the enemy, his off-springs die and ancestors wander in trouble. Besides, all gods including Indra take away his capabilities.

(980)

प्रयोगः शमयेद् व्याधिं योऽन्यमन्यमुदीरयेत्।
नासौ विशुद्धः, शुद्धस्तु शमयेद्यो न कोपयेत्॥

उत्तम औषध की विशेषता (भावप्रकाश)

Prayogaḥ śamayed vyādhiṁ yo'nyamanyamudīrayet |
Nāsau viśuddhaḥ, śuddhastu śamayedyo na kopayet ||

Quality of a good medicine (Bhāvapr.)

जो दवाई एक रोग को हटा देती है, परन्तु अन्य कई रोगों को उभार डालती है, वह अच्छी नहीं मानी जाती। अच्छी दवाई तो वह है, जो वर्तमान रोग को तो शान्त करे परन्तु नया रोग पैदा न करे।

The medicine which removes the present disease but becomes the cause of other different diseases, is not considered good. The good medicine is that which removes the present disease and does not allow any other side-effect.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(981)

प्रवाता वान्ति पतयन्ति विद्युत-
उदोषधीर्जिहते पिन्वते स्वः।
इरा विश्वस्मै भुवनाय जायते,
यत्पर्जन्यः पृथिवीं रेतसावति॥

वर्षाकाल का परिवेश ऋ./5/83/4

Pravātā vānti patayanti vidyuta-
Udoṣadhīrjihate pinvate svaḥ।
Irā viśvasmai bhuvanāya jāyate,
Yatparjanyaḥ pṛthivīṁ retasāvati॥

Ṛg./5/83/4

Environment of the rainy season

जब मेघ जल द्वारा भूमि की रक्षा करने लगता है, तो हवाएँ तेज चलती हैं, बिजलियाँ गिरती हैं, ओषधियाँ उठ खड़ी होती हैं, सुख का वातावरण बन जाता है और सभी प्राणियों के लिए खाद्य पदार्थ (अन्न, घास, पत्ते आदि) उत्पन्न हो जाते हैं।

When the cloud gets prepared to save the earth by its rain-drops, winds blow swiftly, lightnings fall, herbs, plants and trees grow up, the environment becomes joyful and edibles come into existence for all the creatures.

(982)

प्रवृत्तवाक् चित्रकथ ऊहवान् प्रतिभानवान्।
आशुग्रन्थस्य वक्ता च यः स पण्डित उच्यते॥

वाणि में निपुण ही सच्चा विद्वान् महाभा./उद्योग/33/28

Pravṛttavāk citrakatha ūhavān pratibhānavān।
Āśugranthasya vaktā ca yaḥ sa paṇḍita ucyate॥

Mahābhā./Udyoga/33/28

A good orator is a real scholar

धाराप्रवाह बोलने में समर्थ, अद्भुत बातें बताने वाला, सूझ-बूझ वाला, कल्पनाशक्ति-सम्पन्न और ग्रन्थों को शीघ्र स्पष्ट करने वाला व्यक्ति पण्डित (बुद्धिमान्) कहा जाता है।

One who can speak fluently, says peculiar things, can tell unknown things by imagination, full of fancy and can explain the scriptures clearly is called a Paṇḍita (very wise man).

(983)

प्रसन्नाः कान्तिहारिण्यो नानाश्लेषविचक्षणाः।
भवन्ति कस्यचित् पुण्यैर्मुखे वाचो गृहे स्त्रियः॥

पत्नियों और वाणियों के गुण नलचम्पू/1/4

Prasannāḥ kāntihāriṇyo nānāśleṣavicakṣaṇāḥ।
Bhavanti kasyacit puṇyairmukhe vāco gṛhe striyaḥ॥

Nalacampū/1/4

Qualities of wives and speeches

किसी के पुण्य प्रताप से ही मुख में प्रसाद गुण सम्पन्न, अपने शब्द और अर्थ से मनोहर तथा अनेक प्रकार के श्लेष अलंकार से सजी हुई वाणियों (कविताओं) का सृजन होता है और इसी प्रकार घर में ऐसी स्त्रियों का निवास हो जाता है जो सदा खुश रहती हैं, अपने सौन्दर्य से मन को मुग्ध कर लेती हैं तथा विविध प्रकार के आलिंगनों में निपुण होती हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Due to one's good luck he becomes able to compose such literary pieces, which have clear sense, attractive beauty and full of different kinds of the pun. In the same way he possesses such women in his house who always remain happy and also are beautiful and attractive, knowing the different kinds of embrace.

(984)

प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते॥

प्रसन्नचित्त का लाभ महाभारत/भीष्मपर्व/26/65

Prasāde sarvaduḥkhānāṁ hānirasyopajāyate |
Prasannacetaso hyāśu buddhiḥ paryavatiṣṭhate ||

Mahābhā. / Bhīṣma. / 26 / 65

Advantage of being happy

प्रसन्न रहने वाले मनुष्य के सभी दुःख नष्ट हो जाते हैं। प्रसन्नचित्त मनुष्य की बुद्धि स्थिर हो जाती है।

One who always remains happy, all his troubles are removed themselves. His mind enjoys pleasure, and intellect becomes unshaken and steady.

(985)

प्रस्तुतस्य विरोधेन ग्राम्यस्सर्वोऽप्युपक्रमः।
वीणायां वाद्यमानायां वेदोद्गारो न युज्यते॥

समयानुसार ही बात की शोभा नलचम्पू/6/46

Prastutasya virodhena grāmyassarvo'pyupakramaḥ |
Viṇāyāṁ vādyamānāyāṁ Vedodgāro na yujyate ||

Beauty of a thing only at a due time Nalacampū / 6 / 46

जो कार्यक्रम चल रहा हो, उसी समय यदि कोई और कार्यक्रम किया जाए, तो वह भद्दा प्रतीत होता है। जब वीणा-वादन हो रहा हो, तो उस समय वेदमन्त्रों के पाठ की कोई शोभा नहीं होती।

When one programme is going on already, then it looks very awkward to induce another one. When a musician is playing on a flute, it is not advisable to chant Veda-mantrās.

(986)

प्राक्पादयोः पतति खादति पृष्ठमांसं-
कर्णे कलं किमपि रौति शनैर्विचित्रम्।
छिद्रं निरूप्य सहसा प्रविशत्यशङ्कः,
सर्वं खलस्य चरितं मशकः करोति॥

सुभा. रत्नभाण्डागारम् / पृ. 60 / 235

मच्छर और दुष्ट का स्वभाव

Prāk pādayoḥ patati khādati pṛṣṭhamāṁsaṁ-
Karṇe kalaṁ kimapi rauti śanairvicitram |
Chidraṁ nirūpya sahasā praviśatyaśaṅkaḥ,
Sarvaṁ khalasya caritaṁ maśakaḥ karoti ||

Subhā. Ratna. Bhā. / P. 60 / 235

Nature of the mosquito and a badman

जैसे दुष्ट व्यक्ति पहले पैरों में पड़ता है और पीठ पीछे हानि पहुँचाता है, ऐसे ही मच्छर पहले पैरों पर और फिर पीठ के मांस पर काटता है। जैसे दुष्ट व्यक्ति आकर कान में मीठी-मीठी विचित्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बातें सुनाता है, ऐसे ही मच्छर भी कान में आकर गुनगुनाता है। जैसे कोई त्रुटि देखकर दुष्ट व्यक्ति निडर होकर प्रहार करता है, ऐसे ही मच्छर भी किसी छिद्र से अंदर घुसकर काट खाता है। इस प्रकार मच्छर सभी कार्य दुष्ट व्यक्ति के समान ही करता है।

As a mean fellow first kneels on the feet and after that becomes harmful, in the same way the mosquito first stings on the feet and then at the back. As a bad man tells sweet and strange things in the ears, in the same manner the mosquito sounds in the ears strangely. As a bad man attacks fearlessly seeing some fault, in the same way the mosquito enters from a hole and stings. In this way the mosquito performs all the works of a bad man.

(987)

प्रियं वा यदि वा द्वेष्यं शुभं वा यदि वाऽशुभम्।
अपृष्टोऽपि हितं ब्रूयाद्यस्य नेच्छेत् पराभवम्॥

पञ्च./मित्रभेद/183

प्रिय के हित के लिए कटु भी उचित

Priyaṁ vā yadi vā dveṣyaṁ, śubhaṁ vā yadi vā'śubham |
Aprṣṭo'pi hitaṁ brūyādyasya necchet parābhavam ||

Better to Pañca. / Mitrabhe. / 183
say even bitter news for loving person.

मनुष्य जिसकी हानि अथवा पराजय नहीं चाहता, उसे बिना पूछे ही मीठी या कड़वी, भली या बुरी सभी प्रकार की बात उसके हित में बता देनी चाहिए।

The man who does not like the harm or defeat of some person, he should tell him without enquiring the matter which may be sweet or bitter and good or bad for the welfare of the listener.

(988)

प्रियमेवाभिधातव्यं नित्यं सत्सु द्विषत्सु वा।
शिखीव केकां मधुरां वाचं ब्रूते जनप्रियः॥

सबसे मीठा बोलो शुक्रनीति/1/168

Priyamevābhidhātavyaṁ nityaṁ satsu dviṣatsu vā |
Śikhīva kekāṁ madhurāṁ vācaṁ brūte janapriyaḥ ||

Speak sweet Śukranīti / 1 / 168

सज्जनों अथवा दुर्जनों के साथ सदा मीठे बोल ही बोलने चाहिएँ। मोर के केकारव की तरह लोकप्रिय व्यक्ति, सदा मीठी वाणी का ही उच्चारण करता है।

One should always speak sweet with the good people or the enemies. A popular man speaks sweet words always like the cry of a peacock.

(989)

प्रियाप्रिये सुखदुःखे च राजन्,
निन्दाप्रशंसे च भजन्त एव।
परस्त्वेनं गर्हयतेऽपराधे,
प्रशंसते साधुवृत्तं तमेव॥

शत्रु और मित्र के विभिन्न दृष्टिकोण महाभा./उद्योग/32/27

Priyāpriye sukha-duḥkhe ca rājan,
Nindāpraśaṁse ca bhajanta eva |

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Parastvenaṁ garhayate'parādhe,
Praśaṁsate sādhuvṛttaṁ tameva ॥
Mahābhā. / Udyoga / 32 / 27

Different attitudes of a friend and an enemy

हे राजा धृतराष्ट्र! प्रिय और अप्रिय, सुख और दुःख तथा निन्दा और प्रशंसा – ये तो मनुष्य को प्राप्त होते ही रहते हैं। किसी के द्वारा अपराध होने पर शत्रु तो उसकी निन्दा करने लगता है, परन्तु श्रेष्ठ चरित्र वाले लोग उसमें भी कुछ अच्छाई देखकर उसकी प्रशंसा करने लगते हैं।

O king Dhṛtarāṣṭra! Liked and unliked things, happiness and grief, fame and defame come often in the life of every one. The enemy insults seeing a mistake done by other, while a noble man praises him seeing something nice in that action also.

(990)

प्रत्यक्षं गुणवादी यः परोक्षे चास्ति निन्दकः।
स मानवः श्ववल्लोके नष्टलोकपरावरः॥

कुत्ते के सदृश मानव महाभा./शान्तिपर्व/114/12

Pratyakṣaṁ guṇavādī yaḥ parokṣe cāsti nindakaḥ ।
Sa mānavaḥ śvavalloke naṣṭalokaparāvaraḥ ॥
Mahābhā. / Śānti. / 114 / 12

The man like a dog

जो व्यक्ति मुख पर तो प्रशंसा करता है और पीठ के पीछे निन्दा करता है वह कुत्ते के समान है और उसका यह लोक भी और परलोक भी नष्ट हुआ ही समझो।

One who praises at the face and speaks ill in absence is like a dog and his present birth and the next one both get spoiled.

(991)

प्राणाघातान्निवृत्तिः, परधनहरणे संयमः सत्यवाक्यम्,
काले शक्त्या प्रदानं, युवतिजनकथा-मूकभावः परेषाम्।
तृष्णा-स्रोतोविभङ्गो, गुरुषु च विनयः सर्वभूतानुकम्पा,
सामान्यं सर्वशास्त्रेष्वनुपहतविधिः, श्रेयसामेष पन्थाः॥

कल्याण का मार्ग नीतिशतक/25

Prāṇāghātānnivṛttiḥ, paradhanaharaṇe saṁyamaḥ satyavākyam,
Kāle śaktyā pradānaṁ, yuvatijanakathā-mūkabhāvaḥ pareṣām ।
Tṛṣṇāsroto-vibhaṅgo, guruṣu ca vinayaḥ, sarvabhūtānukampā,
Sāmānyaṁ sarvaśāstreṣvanupahatavidhiḥ śreyasāmeṣa panthāḥ ॥

The way for welfare Nītiśataka / 25

प्राणियों की हत्या से दूर रहना, दूसरे के धन को न लेने की अभिलाषा, अपने पर संयम रखना, सत्य बोलना, समय पर यथाशक्ति दान देना, दूसरों की स्त्रियों की चर्चा में मौन रहना, तृष्णा के कारणों को दूर करना, गुरुजनों के प्रति नम्रता दिखाना और सभी प्राणियों पर दयाभाव रखना – ये सामान्य बातें सभी शास्त्रों से सम्मत है। वस्तुतः यही कल्याण का मार्ग है।

To avoid from killing creatures, to control oneself from taking others wealth, speaking truth, donating according to one's condition at a proper time, to keep silence during the discussion about the wives of others, to remove the sources of thirst, showing politeness to the elders and to be kind towards all creatures are the

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

common factors in all the scriptures, which are the way to welfare.

(992)

प्राता रत्नं प्रातरित्वा दधाति, तं चिकित्वान् प्रतिगृह्या निधत्ते।
तेन प्रजां वर्धयमान आयू रायस्पोषेण सचते सुवीरः॥

प्रातः जागने के लाभ ऋ./1/125/1

Prātā ratnaṁ prātaritvā dadhāti, taṁ cikitvān pratigṛhyā nidhatte।
Tena prajāṁ vardhayamāna āyū rāyaspoṣeṇa sacate suvīraḥ॥

Advantages of leaving bed in morning Ṛg. / 1 / 125 / 1

प्रातःकाल उठने वाला स्वास्थ्य आदि रमणीय पदार्थों को धारण करता है। उसे सर्वज्ञ परमेश्वर अपनाकर परमानन्द में स्थापित करता है। प्रातःकाल उठने से वह सुसंस्कृत सन्तानों और दीर्घ आयु का विकास करता हुआ उत्तम वीर पुत्रों वाला होकर ऐश्वर्यों से पुष्ट होता चला जाता है। अर्थात् वह आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक – सभी प्रकार के ऐश्वर्यों को प्राप्त कर लेता है।

He, who gets up early in the morning possesses health and all other good things. Omniscient God adopts him and sets him in his super bliss. He gets noble offsprings, developing his long age, acquires good brave sons and increases all the three kinds of prosperity; worldly, spiritual and godly.

(993)

प्राप्ताः श्रियः सकलकामदुघास्ततः किं,
दत्तं पदं शिरसि विद्विषतां ततः किम्।
सम्मानिताः प्रणयिनो विभवैस्ततः किं,
कल्पं स्थितं तनुभृता तनुभिस्ततः किम्॥

संसार के वैभवों की निःसारता वैराग्यशतक/65

Prāptāḥ śriyaḥ sakalakāmadughāstataḥ kiṁ,
Dattaṁ padaṁ śirasi vidviṣatāṁ tataḥ kim।
Sammānitāḥ praṇayino vibhavaistataḥ kiṁ,
Kalpaṁ sthitaṁ tanubhṛtā tanubhistataḥ kim॥

Vairāgaśatka / 65

Uselessness of worldly achievements

समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाली सम्पत्ति यदि मिल भी जाये तो भी उससे क्या? शत्रुओं के सिर पर पाँव यदि रख भी लिया जाए तो उससे क्या? अपने स्नेही जनों को धनधान्य से यदि सम्मानित भी कर लिया तो उससे भी क्या? यदि शरीरों को युगों तक धारण भी कर लिया जाए तो उससे भी क्या? अर्थात् जब तक मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती तब तक ये सभी कार्य महत्त्वहीन हैं।

Although they have aquired wealth, the unfailing means of fulfilling all desires, although they have succeeded to trample upon the heads of their deadly enemies, although they have favoured their relatives with wealth and prosperity and although the mortal men have got prolonged the span of their lives up to the end of a kalpa, yet they must bear it in mind that unless they have secured their future happiness of salvation, they have done really nothing.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(994)

प्राप्ते भये परित्राणं प्रीतिविश्रम्भभाजनम्।
केन रत्नमिदं सृष्टं मित्रमित्यक्षरद्वयम्॥

मित्र शब्द का सौन्दर्य पञ्च./मित्रसम्प्राप्ति/181

Prāpte bhaye paritrāṇaṁ prītiviśrambha-bhājanam |
Kena ratnamidaṁ sṛṣṭam mitramityakṣaradvayam ||

Pañca. / Mitrasam. / 181

Beauty of the word 'Mitra' (friend)

भला 'मित्र' यह दो अक्षरों वाला रत्नरूप शब्द किस ने रचा है, जो डर के आने पर रक्षा करता है और पूर्ण रूप से विश्वास का पात्र है।

Please tell me, who has composed the word of two syllable, 'mitra' (friend), which in the real sense is a gem of all the words saves at the time of fear and deserves full trust?

(995)

प्राप्य चलानधिकाराञ्छत्रुषु मित्रेषु बन्धुवर्गेषु।
नोपकृतं नोपकृतं नोपकृतं किं कृतं तेन॥

अधिकारों की व्यर्थता अब्दुलरहीम खानेखान

Prāpya calānadhikārāñchatruṣu mitreṣu bandhuvargeṣu |
Nopakṛtaṁ nopakṛtaṁ nopakṛtaṁ kiṁ kṛtaṁ tena ||

Uselessness of rights Abdularahima / Khā.

अस्थायी अधिकार पदों को प्राप्त कर जिसने शत्रुओं, मित्रों और बन्धुजनों का तनिक भी उपकार नहीं किया, उसने क्या किया? अर्थात् उस पद को प्राप्त करके भी उसने कोई लाभ नहीं उठाया।

One who being in positions of transitory authority has done nothing good to friends, foes and relatives, what has he done? It means that his all rights have been useless.

(996)

प्रायो दुरन्तपर्यन्ताः सम्पदोऽपि दुरात्मनाम्।
भवन्ति हि सुखोदर्का विपदोऽपि महात्मनाम्॥

सम्पत्तियाँ और विपत्तियाँ प्रसन्नराघव/5/49

Prāyo durantaparyantāḥ sampado'pi durātmanām |
Bhavanti hi sukhodarkā vipado'pi mahātmanām ||

Wealth and adversities Prasanarā. / 5 / 49

प्राय: दुरात्माओं की सम्पत्तियों का अन्त भी बुरा ही होता है परन्तु महात्माओं की विपत्तियों की भी परिणति सुख में होती है।

Generally, the wealth of the demonic people have a bad end, while even the adversities of the good people have a happy end.

(997)

प्रायश्चित्तं चिकित्सां च ज्योतिषं धर्मनिर्णयम्।
विना शास्त्रेण यो ब्रूयात्तं विद्याद् ब्रह्मघातकम्॥

ब्रह्मघातक का लक्षण (नारदस्मृति)

Prāyaścittaṁ cikitsāṁ ca jyotiṣaṁ dharmanirṇayam |
Vinā śāstreṇa yo brūyāttaṁ vidyād Brahmaghātakam ||

Destroyer of Brāhmana (Nārada)

जो शास्त्र का अध्ययन किए बिना प्रायश्चित्त, चिकित्सा, ज्योतिष तथा धर्म का निर्णय बताता है, वह ब्रह्मघातक कहलाता है।

One who without consulting the

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

scriptures, says about an expiation, a treatment of a disease, astrology and astronomy and decision of the religious duties is called murderer of a Brahmaṇa.

(998)

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः,
प्रारभ्य विघ्नविहताः विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः,
प्रारभ्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति॥

तीन प्रकार के मानव नीतिशतक/26

Prārabhyate na khalu vighnabhayena nīcaiḥ,
Prārabhya vighna-vihatāḥ viramanti madhyāḥ।
Vighnaiḥ punaḥ punarapi pratihanyamānāḥ,
Prārabhya cottamajanā na parityajanti॥

Three kinds of men Nītiśataka / 26

नीच पुरुष विघ्नों के डर से किसी कार्य को आरम्भ ही नहीं करते। मध्यम श्रेणी के लोग कार्य आरम्भ तो कर देते हैं, परन्तु विघ्नों के आने पर उन्हें बीच में ही छोड़ देते हैं। परन्तु उत्तम श्रेणी के लोग जिस कार्य को शुरू कर देते हैं, बारम्बार विघ्नों से टकराने पर भी वे उसे नहीं छोड़ते और पूरा करके ही दम लेते हैं।

Low kind of persons do not begin anywork due to being afraid of obstacles, medium kind of persons begin a work but when they face some obstacles, they leave it in midway, but the people of the best nature if begin a work, they do not rest untill its complition, inspite of facing many obstacles in their way.

(999)

प्रियवाक्य-प्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।
तस्मात्तदेव वक्तव्यं, वचने का दरिद्रता॥

मधुर वचन चाणक्यनीति/16/17

Priyavākya-pradānena sarve tuṣyanti jantavaḥ।
Tasmāttadeva vaktavyaṁ, vacane kā daridratā॥

Sweet talk Cāṇkyanīti / 16 / 17

सभी प्राणी मीठी वाणी सुन कर प्रसन्न हो जाते हैं, इसलिए मधुर वचन ही बोलने चाहिएँ। मीठा बोलने से कोई घाटा नहीं हो जाता।

All creatures become pleased when they hear sweet words. Therefore every body should speak sweet words. Speaking sweetly causes no harm.

ब = Ba

(1000)

बद्धो हि को यो विषयानुरागी,
का वा विमुक्तिर्विषये विरक्तिः।
को वाऽस्ति घोरो नरकः स्वदेहः,
तृष्णाक्षयः मोक्षपदं किमस्ति॥

बन्ध, मुक्त, आदि की परिभाषा शांकरप्रश्नोत्तरी

Baddho hi ko yo viṣayānurāgī,
Kā vā vimuktirviṣaye viraktiḥ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Ko vā'sti ghoro narakaḥ svadehaḥ,
Tṛṣṇākṣayaḥ mokṣapadaṁ kimasti ॥
Śāṅkaraprasnottarī

Definitions of tied, liberation, hell etc.

(प्रश्न) बंधा हुआ कौन है? (उत्तर) जो विषयों में लिप्त है। (प्र.) छुटकारा क्या है? (उ.) विषयों से अलग हो जाना। (प्र.) घोर नरक कौन सा स्थान है? (उ.) अपना शरीर ही। (प्र.) मोक्ष-प्राप्ति किसे कहते हैं? (उ.) तृष्णा के नाश को।

(Q.) Who is tied? (Ans.) One who clings to the enjoyment of senses. (Q.) What is emancipation? (Ans.) Detachment from sensual enjoyment. (Q.) What is dreadful hell? (Ans.) It is only one's own body. (Q.) What is salvation. (Ans.) Destruction of desires is the real salvation.

(1001)

बन्धनानि खलु सन्ति बहूनि,
प्रेमरज्जुकृतबन्धनमन्यत् ।
दारुभेदनिपुणोऽपि षडंघ्रिः,
निष्क्रियो भवति पङ्कजकोशे ॥

प्रेम का बन्धन चाणक्यनीति/15/17

Bandhanāni khalu santi bahūni,
Prema-rajjukṛtabandhanamanyat ।
Dārubhedanipuṇo'pi ṣaḍaṅghriḥ,
Niṣkriyo bhavati paṅkajakośe ॥

Tie of love Cāṇkyanīti / 15 / 17

संसार में बन्धन कई प्रकार के हैं, परन्तु प्रेम की रस्सी का बन्धन सबसे विचित्र होता है। यद्यपि भौंरा लकड़ी तक में छेद कर सकता है, तो भी कमल की कली में वह बन्द तो हो जाता है, परन्तु उसमें छेद नहीं करता।

There are many ties in this world but the tie of the string of love is quite peculiar. A black-bee which is able to bore a wood, remains passive in the bud of the lotus and does not harm it.

(1002)

बन्धाय विषयैः संगः, मुक्त्यै निर्विषयं मनः।
मन एव मनुष्याणां कारणं बन्ध-मोक्षयोः ॥

मन के कार्य चाणक्यनीति/13/12

Bandhāya viṣayaiḥ saṅgaḥ muktyai nirviṣayaṁ manaḥ ।
Mana eva manuṣyāṇāṁ kāraṇaṁ bandha-mokṣayoḥ ॥

Works of mind Cāṇkyanīti / 13 / 12

विषयों से प्रेम बन्धन का कारण होता है और मुक्ति के लिए मन को विषयों से हटाना होता है, क्योंकि मन ही मनुष्यों के बन्धन और मोक्ष का साधन है।

Sensual enjoyment causes attachment and if one wants salvation, he should detach his mind from sensual enjoyment, because it is the mind which is the means of attachment and salvation.

(1003)

बन्धुरिव भवति पूर्वं मित्रमिव शत्रुरिव चान्ते।
कृकलास इव दुरात्मा त्रीन् वर्णान् दर्शयति नीचः ॥

दुरात्मा का चरित्र नीतिद्विषष्टिका/82

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Bandhuriva bhavati pūrvaṁ mitramiva śatruriva cānte |
Kṛkalāsa iva durātmā trīn varṇān darśayati nīcaḥ ||

Character of the badminded Nītidvi. / 82

नीच व्यक्ति पहले बन्धु-सा प्रतीत होता है, फिर मित्र-सा और अन्त में शत्रु बन जाता है। वह नीच व्यक्ति दुष्ट गिरगिट की तरह तीन रंग दिखलाता है।

A wicked person first appears like a kinsman, after that like a friend and at the end he turns into an enemy. Like a chameleon he shows three colours one after the other.

(1004)

बलवन्तं रिपुं दृष्ट्वा नैवात्मानं प्रकोपयेत्।
बलवद्भिश्च कर्त्तव्या शरच्चन्द्रप्रकाशता ॥

बलवान् शत्रु के प्रति नीति पञ्च./मित्रभेद/257

Balavantaṁ ripuṁ dṛṣṭvā naivātmānaṁ prakopayet |
Balavadbhiśca karttavyā śaraccandra-prakāśatā ||

Pañca. / Mitrabhe. / 257

Policy against a stronger enemy

बलवान् शत्रु को देखकर अपने आप को गुस्से से नहीं भर लेना चाहिए। बलवानों के साथ शरत्काल के चन्द्रमा के प्रकाश के समान व्यवहार करना चाहिए; अर्थात् शीतल चन्द्रमा के समान शीतलता-पूर्वक शान्ति से व्यवहार करना चाहिए।

One should not show anger upon seeing a powerful enemy. He should behave with him in very cool and calm manner just as the moon of autumn break.

(1005)

बलिना सह योद्धव्यमिति नास्ति निदर्शनम्।
प्रतिवातं न हि घनः कदाचिदुपसर्पति ॥

बलवान् से युद्ध का निषेध पञ्चतन्त्र/काकोलूकीय/22

Balinā saha yoddhavyamiti nāsti nidarśanam |
Prativātaṁ na hi ghanaḥ kadācidupasarpati ||

Not to fight against stronger Pañca. / Kāko. / 22

बलवान् के साथ युद्ध करना चाहिए इस विषय में कोई भी दृष्टान्त नहीं है। बादल कभी भी वायु की गति के विपरीत नहीं जाता।

There is no example to show that one should fight against a stronger person. The cloud never moves against the wind.

(1006)

बलिभिर्मुखमाक्रान्तं पलितैः रञ्जितं शिरः।
गात्राणि शिथिलायन्ते तृष्णैका तरुणायते ॥

तृष्णा का कार्य सुभाषितावलि / 3242

Balibhirmukhamākrāntaṁ palitaiḥ rañjitaṁ siraḥ |
Gātrāṇi śithilāyante, tṛṣṇaikā taruṇāyate ||

Work of greed Subhāṣitā / 3242

वृद्धावस्था आने पर झुर्रियों से मुख भर जाता है, सफेद बालों से सिर ढक जाता है और सब अंग ढीले पड़ जाते हैं; परन्तु केवल लालसा बढ़ती जाती है।

At the commence of old age the face is covered with wrinkles, the

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

head is covered with white hair and all organs of the body become sluggish, but desires increase more and more.

(1007)

बलं विद्या तु विप्राणां, राज्ञां सैन्यबलं तथा।
बलं वित्तञ्च वैश्यानां, शूद्राणां च कनिष्ठता॥

बल के भेद चाणक्यनीति/2/16

Balaṁ vidyā tu viprāṇāṁ, rajñāṁ sainyabalaṁ tathā |
Balaṁ vittañca vaiśyānāṁ, śūdrāṇāṁ ca kaniṣṭhatā ||

Kinds of powers Cāṇkyanīti / 2 / 16

ब्राह्मणों का बल विद्या है, राजाओं का बल सैन्यशक्ति है, वैश्यों का बल उनका धन है और शूद्रों का बल नम्रता तथा सेवाभाव है।

The power of Brahmas is education, of the kings is forces, of the Vaiśyas is money and that of the Śūdras is the humility and tendency of service.

(1008)

बहुरक्षितबहुशिक्षितोऽपि नीचजनो भजति नैव सन्मार्गम्।
पुच्छमिव शुनो नालिकाधृतमपि सरलं यथा न स्यात्॥

नीच का स्वभाव आभणकशतक/28

Bahurakṣitabahuśikṣito'pi nīcajano bhajati naiva sanmārgam |
Pucchamiva śuno nālikādhṛtamapi saralaṁ yathā na syāt ||

Ābhāṇaśataka / 28

Nature of a mean person

नीच व्यक्ति बहुत बचा-बचा कर रखे जाने एवं बहुत सीख दिये जाने पर भी सन्मार्ग का आश्रयण नहीं करता, ठीक उसी तरह जिस तरह कुत्ते की पूँछ नलिका में रखे जाने पर भी सीधी नहीं होती।

In spite of protection and instructions a mean fellow never adopts a good path, as the tail of a dog if kept in a pipe for a sufficient time, still it never straightens.

(1009)

बहूनामप्यसाराणां समवायो हि दुर्जयः।
तृणैरावेष्ट्यते रज्जुर्येन नागोऽपि बध्यते॥

संगठन की शक्ति पञ्च./मित्रभेद/282

Bahūnāmapyasārāṇāṁ samavāyo hi durjayaḥ |
Tṛṇairāveṣṭyate rajjuryena nāgo'pi badhyate ||

Power of unity Pañca. / Mitrabhe. / 282

तुच्छ प्राणियों का भी संगठन कठिनाई से जीता जा सकता है। पतले-पतले तिनकों से बने हुए रस्से से हाथी भी बाँध दिया जाता है।

When even very weak things become one in association, they become invincible. Though a straw is very weak, yet when many straws get united as a rope, even an elephant can be tied with it.

(1010)

बह्वपि स्वेच्छया कामं प्रकीर्णमित्यभिधीयते।
अनुज्झितार्थ-सम्बन्धः प्रबन्धो दुरुदाहरः॥

विषयानुकूल रचना शिशुपालवध/2/73

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Bahvapi svecchayā kāmaṁ prakīrṇamityabhidhīyate |
Anujjhitārthasambandhaḥ prabandho durudāharaḥ ||

Śiśu. / 2 / 73

Expression according to subject

अपनी इच्छा से बहुत कुछ कहा हुआ भी अव्यवस्थित बिखरा-सा कथन कहा जाता है। परस्पर सम्बन्ध रखने वाले वाक्यों से तैयार की गई रचना बहुत दुर्लभ होती है।

Sentences spoken willingly by any person in a great volume are called scattered and irrelevant. The composition having relevance in all its sentences is very rare.

(1011)

बालमङ्कं सुखं दध्यान्न चैनं तर्जयेत्क्वचित्।
सहसा बोधयेन्नैव नायोग्यमुपवेशयेत् ॥

शिशु से व्यवहार भावप्रकाश/बालप्रकरण/37

Bālamaṅkaṁ sukhaṁ dadhyānna cainaṁ tarjayetkvacit |
Sahasā bodhayennaiva, nāyogyamupaveśayet ||

Treatment with a baby Bhāvapra. / Bāla. / 37 /

शिशु को गोदी में धीरे से रखना चाहिए और इसे कभी धमकाना नहीं चाहिए। सोया हो तो झटपट जगाना भी नहीं चाहिए और जब तक वह बैठने योग्य न हो जाए, तब तक बिठाने का भी यत्न नहीं करना चाहिए।

A baby should be taken in one's lap very softly and should not be admonished. If the baby is enjoying sleep, it should not be awakened quickly. As long as it is unable to sit, one should not try to make it sit.

(1012)

बालस्यापि रवेः पादाः पतन्त्युपरि भूभृताम्।
तेजसा सह जातानां वयः कुत्रोपयुज्यते ॥

तेजस्वी की आयु पञ्च./मित्रभेद/278

Bālasyāpi raveḥ pādāḥ patantyupari bhūbhṛtām |
Tejasā saha jātānāṁ vayaḥ kutropayujyate ||

Pañca. / Mitrabhe. / 278

Age of the glorious

उदीयमान शिशु-रूपी सूर्य की किरण-रूपी पाँव पहाड़ रूपी राजाओं के ऊपर जा पड़ते हैं। अतः तेजस्वी व्यक्तियों की आयु का विशेष महत्त्व नहीं होता; छोटे तेजस्वी भी बड़े-बड़े कार्य कर दिखलाते हैं।

The rising sun is like a baby who throws its feet of rays on the mountains which are like kings. So, it should be noted that the age of glorious persons does not matter much. They, being even young in age, can do extraordinary deeds.

(1013)

बुद्धिं लुम्पति यद् द्रव्यं मदकारि तदुच्यते।
तमोगुण-प्रधानञ्च यथा मद्यं सुरादिकम् ॥

मदकारी वस्तुएँ भावप्रकाश/मिश्रप्रकरण/232

Buddhiṁ lumpati yad dravyaṁ madakāri taducyate |
Tamoguṇa-pradhānañca yathā madyaṁ surādikam ||

Bhāvapra. / Miśra. / 232

Spirituous liquors

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो वस्तु बुद्धि का लोप कर देती है, उसे नशीला पदार्थ कहते हैं; जैसे कि शराब और सुरा आदि।

The thing who vanishes one's wisdom is called intoxicating thing, as wine and sura.

(1014)

बुद्धिर्दीप्ता बलवन्तं हिनस्ति,
बलं बुद्ध्या पाल्यते वर्धमानम्।
शत्रुर्बुद्ध्या सीदते वर्धमानो,
बुद्धेः पश्चात् कर्म यत्तत् प्रशस्तम्॥

बुद्धि का महत्त्व महाभा./शान्ति./120/42

Buddhirdīptā balavantaṁ hinasti,
Balaṁ buddhyā pālyate vardhamānam।
Śatrurbuddhyā sīdate vardhamāno,
Buddheḥ paścāt karma yattat praśastam॥

Mahābhā. / Śānti. / 120 / 42

Greatness of wisdom

तीव्र बुद्धि बलवान् शत्रु को भी मार देती है। बुद्धि से ही बढ़ते हुए बल (या सेना) को सुरक्षित रखा जा सकता है। बढ़ता हुआ शत्रु बुद्धि द्वारा ही नष्ट होता है। बुद्धि से सोच-विचार कर जो भी कार्य किया जाता है, वही प्रशंसनीय होता है।

The keen intellect kills even powerful enemy. The increasing power (or force) can be maintained by intellect. The progressing enemy is destroyed by intellect. So the work which is done after thinking with intellect is praised.

(1015)

बुद्धिश्च हीयते पुंसां नीचैः सह समागमात्।
सा मध्यैर्मध्यतां याति श्रेष्ठतां याति चोत्तमैः॥

संगति का बुद्धि पर प्रभाव महाभा. / वन. / 1 / 30

Buddhiśca hīyate puṁsāṁ nicaiḥ saha samāgamāt।
Sā madhyairmadhyatāṁ yāti śreṣṭhatāṁ yāti cottamaiḥ॥

Mahābhā. / Vana. / 1 / 30

Influence of company on intellect

नीच लोगों की संगति से पुरुषों की बुद्धि का ह्रास होता है। मध्यम कोटि के लोगों की संगति से वह मध्यम तथा उत्तम लोगों की संगति से वह (बुद्धि) श्रेष्ठ बन जाती है।

A company of mean people lowers the intellect of any man. It becomes mediocre if the company is medium, but when the company of the best is availed, the intellect becomes the best.

(1016)

बुभुक्षितैर्व्याकरणं न भुज्यते,
पिपासितैः काव्यरसो न पीयते।
नच्छन्दसा केनचिदुद्धृतं कुलं,
हिरण्यमेवार्जय, निष्फलाः कलाः॥

धन की महिमा (औचित्यविचारचर्चा)

Bubhukṣitairvyākaraṇaṁ na bhujyate,
Pipāsitaiḥ kāvyaraso na pīyate।
Nacchandasā kenaciduddhṛtaṁ kulaṁ,
Hiraṇyamevārjaya niṣphalāḥ kalāḥ॥

Importance of riches (Aucityavicāracarcā)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूखों द्वारा न व्याकरण खाया जाता है, न प्यासों द्वारा काव्यरस पिया जाता है। वैसे ही वेदाध्ययन द्वारा किसी ने कुल का उद्धार नहीं किया। अतः धनार्जन करना ही चाहिए, कलाओं का कोई भी महत्त्व नहीं।

Neither hungry persons eat grammar, nor thirsty persons drink the juice of poetry. There is no such person who has uplifted his family by the study of the Vedas. So one should earn money certainly, as all arts are useless.

(1017)

बुभुक्षितो न योऽश्नाति तस्याहारेन्धनक्षयात्।
मन्दीभवति कायाग्निर्यथा चाग्निरनिन्धनः॥

न खाने से हानि भावप्रकाश/दिनचर्या/112

Bubhukṣito na yo'śnāti tasyāhārendhanakṣayāt |
Mandībhavati kāyāgniryathā cāgniranindhanaḥ ||

Bhāvapra. / Diva. / 112

Harm due to not eating

भूख लगने पर जो भोजन नहीं करता, उसका भोजन रूपी इन्धन समाप्त हो जाता है और शरीर का ताप भी कम हो जाता है, जैसे इन्धन न रहने पर यह भौतिक अग्नि ठण्डी पड़ जाती है।

One who does not take food at the time of hunger, his fuel of the food ends and the body-temperature decreases, as the common fire is extinguished in the absence of fuel.

(1018)

बुद्धिश्रेष्ठानि कर्माणि बाहुमध्यानि भारत।
तानि जङ्घाजघन्यानि भार-प्रत्यवराणि च॥

कर्मों की तीन श्रेणियाँ महाभा./शान्तिपर्व/112/18

Buddhiśreṣṭhāni karmāṇi bāhumadhyāni Bhārata |
Tāni jaṅghājaghanyāni, bhārapratyavarāṇi ca ||

Mahābhā. / Śānti. / 112 / 18

Three classes of works

कर्मों की तीन श्रेणियाँ हैं। बौद्धिक कर्म सबसे श्रेष्ठ माने जाते हैं। बाँहों से किए जाने वाले कर्म मध्यम श्रेणी के कहे जाते हैं। टाँगों द्वारा किये जाने वाले तथा भार उठाये जाने वाले कर्म निम्न श्रेणी में आते हैं।

There are three categories of works. Mental works are of the first standard. The works which are done by hands, are of second standard and those works which are done by legs and of carrying load are considered of low standard.

(1019)

बृहस्पतिर्नो परिपातु पश्चाद्,
उतोत्तरस्मादधरादघायोः।
इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः,
सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु॥

युद्ध में रक्षा की विधि ऋ./10/42/11

Bṛhaspatirno paripātu paścād,
utottarasmādadharādaghāyoḥ |

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Indraḥ purastāduta madhyato naḥ,
sakhā sakhibhyo varivaḥ kṛṇotu ॥

Mathods of safety Ṛg. / 10 / 42 / 11

बृहस्पति (ज्ञान का स्वामी) घातक शत्रुओं से पीछे, ऊपर और नीचे की ओर से हमारी रक्षा करें और इन्द्र (शासक–गण) आगे तथा मध्य के स्थान से हमारी रक्षा करें। मित्र, मित्रों के कल्याण में सहायक हों। (इस मन्त्र में राजा और मन्त्रियों आदि का कर्त्तव्य बताया गया है कि वे प्रजा की दुष्ट लोगों से सब प्रकार से रक्षा करें।)

Bṛhaspati should protect us from the enemies on back, upper and lower sides and Indra should save us from front and middle sides. Every friend should help his friends for their welfare. (The substance is this that the king and his government should manage in this way that people feel safe and sound in his government).

(1020)

बृहस्पतेरपि प्राज्ञो न विश्वासं व्रजेन्नरः।
य इच्छेदात्मनो वृद्धिमायुष्यं च सुखानि च॥

कोई भी विश्वसनीय नहीं पञ्च./मित्रभेद/120

Bṛhaspaterapi prājño na viśvāsaṁ vrajennaraḥ ।
Ya icchedātmano vṛddhimāyuṣyaṁ ca sukhāni ca ॥

Pañca. / Mitrabhe. / 120

Nobody is trust-worthy

यदि बुद्धिमान् मनुष्य अपनी उन्नति, दीर्घायु और सुख चाहता है, तो उसे देवताओं के गुरु बृहस्पति का भी विश्वास नहीं करना चाहिए।

If a wise man desires his progress, longlife and happiness, he should not trust on even Bṛhaspati, the preacher of gods.

(1021)

बोद्धारो मत्सरग्रस्ताः प्रभवः स्मयदूषिताः।
अबोधोपहताश्चान्ये जीर्णमङ्गे सुभाषितम्॥

सुभाषितों की समाप्ति वैराग्यशतक/2

Boddhāro matsaragrastāḥ prabhavaḥ smayadūṣitāḥ ।
Abodhopahatāścānye jīrṇamaṅge subhāṣitam ॥

End of good sayings Vairāgyaśataka / 2

समझदार लोग तो ईर्ष्याग्रस्त हैं, राजा अथवा धनी लोग धन के मद में मस्त हैं और शेष लोगों में इतनी समझ नहीं है कि वे रचना की प्रशंसा कर सकें; अतः सुभाषित शरीर में ही जीर्ण–शीर्ण हो जाता है।

Those who are capable of appreciation, are over powered by jealousy, kings or the rich are spoiled by arrogance and others are spoiled by ignorance. So the good speech gets worn out in the person (of the speaker).

(1022)

ब्रह्मघ्ने च सुरापे च गोघ्ने भग्नव्रते तथा।
निष्कृतिर्विहिता सद्भिः कृतघ्ने नास्ति निष्कृतिः॥

कृतघ्न — वा. रामायण/किष्किन्धा./34/12

सबसे अधिक निन्दनीय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Brahmaghne ca surāpe ca goghne bhagnavrate tathā |
Niṣkṛtirvihitā sadbhiḥ, kṛtaghne nāsti niṣkṛtiḥ ||

Vā. Rā. / Kiṣkindhā / 34 / 12

Ungrateful — most condemnable

ब्रह्महत्या करने वाले, शराब पीने वाले, गोहत्या करने वाले तथा व्रतभंग करने वाले - इन सभी के लिए विद्वानों ने प्रायश्चित्त का विधान किया है। परन्तु कृतघ्न के लिए कोई प्रायश्चित्त नहीं है, उसे तो कृतघ्नता के पाप का दण्ड भुगतना ही पड़ेगा।

He who kills a Brahmaïa or a cow or drinks an intoxicating liquor or violates his vow is still able to expiate his sin, but the person who is not grateful deserves no expiation and surely he has to get punishment for ungratefulness.

(1023)

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत।
इन्द्रो ब्रह्मचर्येण देवेभ्यः स्वराभरत॥

ब्रह्मचर्य की महिमा अथर्व./11/5/19

Brahmacaryeṇa tapasā devā mṛtyumupāghnata |
Indro brahmacaryeṇa devebhyaḥ svarābharat ||

Atharva / 11 / 5 / 19

Superiority of Brahmacarya

विद्वान् लोग ब्रह्मचर्य की शक्ति से मृत्यु को पीछे धकेल देते हैं। जीवात्मा ब्रह्मचर्य द्वारा ही सभी इन्द्रियों को स्वस्थ और सुखी बना सकता है।

Learned person keeps off the death by the power of Brahmacarya (storing of semon). The soul makes all his organs healthy with the help of Brahmacarya.

(1024)

ब्राह्मे मुहूर्त्ते बुध्येत धर्मार्थौ चानुचिन्तयेत्।
कायक्लेशांश्च तन्मूलान् वेदतत्त्वार्थमेव च॥

ब्राह्ममुहूर्त्त में कर्त्तव्य मनु./4/92

Brāhme muhūrtte budhyeta dharmārthau cānucintayet |
Kāyakleśāṁśca tanmūlān Vedatattvārthameva ca ||

To be done in dawn Manu. / 4 / 92

मनुष्य को सुबह-सवेरे ब्रह्ममुहूर्त्त में जाग जाना चाहिए। फिर धर्म और अर्थ पर तथा शरीर के कष्टों और उनके कारणों और वेद-मंत्रों के रहस्य पर भी विचार करना चाहिए।

Every man should leave his bed at dawn and should think about religion, finance, trouble in body and their causes and real sense of the Vedic mantras.

भ = Bha

(1025)

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा-
भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभि-
र्व्यशेम देवहितं यदायुः॥

भद्र देखने की कामना ऋ./89/2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Bhadraṁ karṇebhiḥ sṛṇuyāma devā-
Bhadraṁ paśyemākṣabhiryajatrāḥ ।
Sthirairaṅgaistuṣṭuvāṁsastanūbhir-
vyaśema devahitaṁ yadāyuḥ ॥

Desire to enjoy auspicious Ṛg. / 89 / 2

हे उपकारी विद्वानो! हम सदा कानों से हितकर बात ही सुनें और आँखों से हितकर दृश्य ही देखें, ऐसी प्रेरणा हमें देते रहिए। हमारे अंग नीरोग रहें और हम प्रसन्नचित्त रहकर अपने शरीर से भगवान् द्वारा प्रदत्त दीर्घायु को आनन्द से बिताएँ।

O well-wisher learned people, you should continue to instruct us, so that we may always hear good words and see useful views. May our organs remain healthy and all of us with happy minds enjoy our long life which God has bestowed upon us.

(1026)

भद्रमिच्छन्त ऋषयः,
स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे ।
ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातम्,
तदस्मै देवा उप संनमन्तु ॥

अथर्व./19/41/1

राष्ट्र की उत्पत्ति और इसके प्रति कर्त्तव्य

Bhadramicchanta ṛṣayaḥ,
svarvidastapo dīkṣāmupaniṣeduragre ।
Tato rāṣṭraṁ balamojaśca jātam,
tadasmai devā upa saṁnamantu ॥

Atharva. / 19 / 41 / 1

Birth of nation and duties towards it

सब का कल्याण चाहने वाले और सुख-प्राप्ति की विद्या के ज्ञाता ऋषियों ने पहले तप और नियम पालन की शिक्षा का अनुष्ठान किया। उसी से राष्ट्र, उसका बल और पराक्रम सिद्ध हुए। विद्वानों को चाहिए कि ऐसे राष्ट्र को अपना पूरा-पूरा सहयोग दें।

Those who wished the welfare of all and who knew the path of happiness, such sages first practised penance and carried on good rules. Due to this the nation, its power and valour came into existence. All scholars should co-operate fully with such a nation.

(1027)

भ्रमन् सम्पूज्यते राजा, भ्रमन् सम्पूज्यते द्विजः ।
भ्रमन् सम्पूज्यते योगी, स्त्री भ्रमती विनश्यति ॥

भ्रमण के योग्य और अयोग्य चाणक्यनीति/6/4

Bhraman sampūjyate rājā, bhraman sampūjyate dvijaḥ ।
Bhraman sampūjyate yogī, strī bhramati vinaśyati ॥

Fit or unfit to wander Cā. Niti / 6 / 4

भ्रमण करने वाला राजा पूजनीय होता है, घूमने वाला ब्राह्मण भी पूजा के योग्य होता है और घूमता-फिरता योगी भी पूजनीय होता है, परन्तु घूमने-फिरने वाली स्त्री नष्ट हो जाती है। अर्थात् वह घृणा की पात्र हो जाती है।

The king who performs tours to look after the welfare of the subjects, the Brahmana who tours for religious works and the sage who goes here and there for preaching, get

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

honour, but a lady who wanders here and there is blamed and spoils herself.

(1028)

भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः
नवाम्बुभिर्भूरिविलम्बिनो घनाः।
अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः,
स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्॥

परोपकारियों का स्वभाव नीतिशतक / 74

Bhavanti namrāstaravaḥ phalodgamaiḥ,
Navāmbubhirbhūrivilambino ghanāḥ।
Anuddhatāḥ satpuruṣāḥ samṛddhibhiḥ,
Svabhāva evaiṣa paropakāriṇām॥

Nature of the helpers Nītiśataka / 74

जिस प्रकार फल लगने के बाद वृक्ष अपने आप नीचे झुक जाते हैं, बादल भी पानी बरसाने के समय नीचे आ जाते हैं, उसी प्रकार सज्जन पुरुष समृद्धि पाकर भी विनम्र बने रहते हैं। परोपकारी लोगों का प्रायः यही स्वभाव होता है।

Trees bow down on appearance of fruits, clouds lower down carrying fresh water and good people remain humble (not arrogant) with their wealth. This is the nature of benevolant persons.

(1029)

भवन्तो वेदान्तप्रणिहितधियामाप्तगुरवो,
विदग्धालापानां वयमपि कवीनामनुचराः।
तथाऽप्येतद्भूमौ नहि परहितात्पुण्यमधिकम्,
न चास्मिन्त्संसारे कुवलयदृशोरन्यमपरम्॥

सबसे श्रेष्ठ कर्म — परोपकार शृङ्गारशतक./52

Bhavanto vedāntapraṇihitadhiyāmāptaguravo,
Vidagdhālāpānāṁ vayamapi kavīnāmanucarāḥ।
Tathā'pyetadbhūmau nahi parahitātpuṇyamadhikam,
Na cāsmintsaṁsāre kuvalaya-dṛśoranyamaparam॥

Śṛṅgāraśataka / 52

Best work—to help others

आप वेदान्त में दत्तचित्त लोगों के गुरु हैं तो हम भी उन कवियों के सेवक हैं जो चातुर्यपूर्ण संवादों की रचना करते हैं। तो भी इस संसार में परोपकार से बढ़कर कोई पुण्य नहीं है और कोई भी वस्तु कमल के समान सुन्दर आँखों वाली नारियों से बढ़कर सुन्दर भी नहीं है।

You are the preachers of those who are attentively learning spirituality, but we are also the followers of those poets who compose dialogues in a talented way. Not withstanding, there is no other work better than to help others and nothing is more beautiful than the women who have eyes like lotus.

(1030)

भर्तुर्भाग्यं तु नार्येका प्राप्नोति पुरुषर्षभ।
अतश्चैवाहमादिष्टा वने वस्तव्यमित्यपि॥

पति के भाग्य की संगिनी वा. रामायण/अयोध्या./28/5

Bharturbhāgyaṁ tu nāryekā prāpnoti puruṣarṣabha।
Ataścaivāhamādiṣṭā vane vastavyamityapi॥

Vā. Rā. / Ayodhyā / 28 / 5

Companion of husband's luck

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सीता राम से कह रही है, "हे श्रेष्ठ पुरुष, केवल पत्नी ही पति के भाग्य को प्राप्त किया करती है। इसीलिए मुझे आपके साथ वन में रहने की अनुमति प्राप्त हो गई है।"

Sitā is saying to Rāma, "O great person, it is only the wife, who joins the fate of her husband. Due to this, I have been allowed to live in the forest with you."

(1031)

भार्या ममेयमिति निर्भरलालिता चेत्,
भर्तारमुद्धतधियैव तिरस्करोति।
दीपो ममायमिति निर्भरचुम्बितश्चेत्,
क्षिप्रं दहत्यतितरां मुखरोमजालम्॥

अधिक प्यार करने का दुष्परिणाम सूक्तिमुक्तावली/45

Bhāryā mameyamiti nirbharalālitā cet,
Bhartāramuddhatadhiyaiva tiraskaroti।
Dīpo mamāyamiti nirbharacumbitaścet,
Kṣipraṁ dahatyatitarāṁ mukharomajālam॥

Too much love bears insult
Śūktimuktāvali / 45

यह मेरी पत्नी है, यह समझ कर यदि उससे भरपूर प्यार किया जाये तो वह उद्धत होकर पति का ही तिरस्कार करने लगती है। यह दीपक मेरा है, यह सोचकर यदि उसका भरपूर चुम्बन किया जाए तो वह तत्काल मुँह के रोमों को जला डालता है।

With the idea that this is my wife, if she is pampered a lot, she rudely insults her husband. The lamp is mine, if with this idea it is given a deep kiss, it burns badly the bristles of the face at the same moment.

(1032)

भार्यावियोगः सुजनापवादः,
ऋणस्य शेषं कृपणस्य सेवा।
दारिद्र्यकाले प्रियदर्शनं च,
विनाग्निना पञ्च दहन्ति कायम्॥

दाहक वस्तुएँ नीतिशास्त्र/18

Bhāryāviyogaḥ sujanāpavādaḥ,
ṛṇasya śeṣaṁ kṛpaṇasya sevā।
Dāridrya-kāle priyadarśanaṁ ca,
Vināgninā pañca dahanti kāyam॥

Burning things Nitiśāstiśastra / 18

पत्नी से वियोग, सज्जनों के द्वारा निन्दा, ऋण का शेष, कंजूस की सेवा, दरिद्रता के समय प्रिय जनों का आगमन — ये पाँच चीजें बिना आग के भी शरीर को जलाती हैं।

Separation from wife, criticism by good people, remainder of debt, service to the miser, visit of the dear ones when one is stricken with poverty, these five burn the body even without fire.

(1033)

भावशुद्धिर्मनुष्याणां विज्ञेया सर्वकर्मसु।
अन्यथा चुम्ब्यते कान्ता भावेन दुहिताऽन्यथा॥

भावों में भेद सुभाषितावलि / 2966

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Bhāvaśuddhirmanuṣyāṇāṁ vijñeyā sarvakarmasu |
Anyathā cumbyate kāntā, bhāvena duhitā'nyathā ||

Subhāṣitāvali / 2966

Difference of tendencies

सब कामों में मनुष्य के मन के भावों की शुद्धि ही प्रधान होती है। प्रियतमा का चुम्बन दूसरे भाव से और पुत्री का चुम्बन दूसरे भाव से किया जाता है।

The purity of the ideas is counted mainly in every action of men. Kissing the wife has different idea from kissing the daughter.

(1034)

भावस्निग्धैरुपकृतमपि द्वेष्यतां याति लोके,
साक्षादन्यैरपकृतमपि प्रीतये चोपयाति।
दुर्ग्राह्यत्वान्नृपतिमनसां नैकभावाश्रयाणाम्,
सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः ॥

सेवाधर्म की गम्भीरता पञ्च./मित्रभेद/229

Bhāvasnigdhairupakṛtamapi dveṣyatāṁ yāti loke,
Sākṣādanyairapakṛtamapi prītaye copayāti |
Durgrāhyatvānnṛpatimanasāṁ naikabhāvāśrayāṇām,
Sevādharmaḥ parāmagahano yogināmapyagamyaḥ ||

Pañca. / Mitrabhe. / 229

Grave work of service

यदि कोई व्यक्ति प्रेम से परिपूर्ण होकर राजा का भला भी करता है, तो उससे राजा द्वेष करने लगता है और यदि कोई स्पष्ट रूप से राजा का बुरा भी करता है, तो वह उसका प्रेमपात्र बन जाता है। वस्तुतः, राजाओं के हृदयों का कोई एक भाव स्थिर नहीं रहता, इसलिए उनके मन की गति को समझना अति कठिन है। अतएव सेवा का कार्य बड़ा रहस्यपूर्ण है, जिसे योगी भी नहीं समझ सकते।

If a person does useful work for the king with full affection, he gets his jealousy. On the other hand, if some one does any work to harm the king, he gets his love. As the minds of the kings have different types of ideas, therefore it is too difficult to know the intention of the mind of the kings. Hence, the duty of service is very difficult, which is not known even by the ascetics.

(1035)

भास्वानाक्रमते क्रमेण भगवानस्तं पुनर्गच्छति।
प्रातस्सायमिमं क्रमं प्रतिदिनं ब्रध्नो निबध्नाति यत्॥
चन्द्रोऽयं परितो भुवं भ्रमति यद् वृद्धिक्षयौ दर्शयन्।
नक्षत्रालिरियं यदेति नियमानां को नियन्तैव सः॥

प्रकृति का नियन्ता — ईश्वर प्रकृति–सौन्दर्यम्/1/6

Bhāsvānākramate krameṇa bhagavānastaṁ punargacchati |
Prātassāyamiṁ kramaṁ pratidinaṁ bradhno nibadhnāti yat ||
Candro'yaṁ parito bhuvaṁ bhramati yad vṛddhikṣayau darśayan |
Nakṣatrāliriyaṁ yadeti niyamānāṁ ko niyantaiva saḥ ||

Prakṛti. Saundaryam / 1 / 6

Controller of the nature — God

सूर्य उदय होता है और फिर अस्त हो जाता है। सूर्य प्रतिदिन प्रातः–सायं नियम में बंधा हुआ अपना कार्य कर रहा है। यह चाँद भी भूमि के चारों ओर चक्कर लगाता है और इसकी कलाएँ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रमशः बढ़ती और घटती रहती हैं। नक्षत्रों की पंक्ति भी रात को नियमपूर्वक दिखाई देती है। इस प्रकार सूर्य, चाँद और नक्षत्रों को नियम में भला कौन चला रहा है? वस्तुतः वह ईश्वर ही है, और कोई नहीं।

The sun rises and after that sets. This routine is seen everyday in the morning and in the evening regularly. The moon revolves around the earth and shows its increase and detriment. The cluster of stars is seen regularly. Then who is that personality which makes those work in order? Undoubtedly, it is only God and no one else.

(1036)

भिक्षाशनं तदपि नीरसमेकवारं,
शय्या च भूः परिजनो निजदेहमात्रम्।
वस्त्रं च जीर्णशत-खण्डमयी च कन्था,
हा हा तथापि विषया न परित्यजन्ति॥

विषयों की शक्ति वैराग्यशतक/17

Bhikṣāśanaṁ tadapi nīrasamekavāraṁ,
Śayyā ca bhūḥ parijano nijadehamātram।
Vastraṁ ca jīrṇaśatakhaṇḍamayī ca kanthā,
Hā Hā tathāpi viṣayā na parityajanti॥

Vairāgyaśataka / 17

Power of sensual affairs

भीख माँग कर स्वाद-रहित भोजन, वह भी दिन में एक बार ही खाने को मिल पाता है। भूमि ही बिछौना है और सेवक अपना शरीर ही है। पहनने के जो वस्त्र हैं, वह सौ टुकड़े जोड़कर बनाई गई गुदड़ी-मात्र है। इतना होने पर भी दुःख की बात यह है कि विषय अब भी पिण्ड नहीं छोड़ते।

Food obtained by alms and that too is tasteless and only once (in a day). Couch in the form of earth and attendant in the form of one's own body. Clothes are in the form of rag or patched garments. Alas! Even then the sensual appetites do not abandon such a man.

(1037)

भीतेभ्यश्चाभयं देयं, व्याधितेभ्यस्तथौषधम्।
देया विद्यार्थिने विद्या, देयमन्नं क्षुधातुरे॥

देने के पात्र (काशीखण्ड)

Bhītebhyaścābhayaṁ deyaṁ, vyādhitebhyastathauṣadham।
Deyā vidyārthine vidyā, deyamannaṁ kṣudhāture॥

Deserving persons to get (Kāśikhaṇḍa)

नाना शास्त्रों का विचार करके महर्षियों ने इहलोक तथा परलोक में सुख-प्राप्ति के लिए निम्न चार दान बतलाये हैं :— भयातुर को अभयदान, रोगी को औषधदान, विद्यार्थी को विद्यादान और क्षुधातुर को अन्नदान।

Our saints advised four kinds of charity to gain happiness in this and the next world :- (1) Assurance of fearlessness to the afraid, (2) medicines to the patients, (3) education to the students and (4) food to the hungry.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(1038)

भीमं वनं भवति तस्य पुरं प्रधानं,
सर्वो जनः सुजनतामुपयाति तस्य।
कृत्स्ना च भूर्भवति सन्निधिरत्नपूर्णा,
यस्यास्ति पूर्वसुकृतं विपुलं नरस्य॥

शुभकर्मों का फल नीतिशतक/94

Bhīmaṁ vanaṁ bhavati tasya puraṁ pradhānaṁ,
Sarvo janaḥ sujanatāmupayāti tasya।
Kṛtsnā ca bhūrbhavati sannidhiratnapūrṇā,
Yasyāsti pūrvasukṛtaṁ vipulaṁ narasya॥

Result of the good works Nītiśataka / 94

जिस व्यक्ति ने पूर्व जन्म में बहुत से शुभ कर्म किए हों, उसके लिए जंगल भी एक महानगर हो जाता है, सभी लोग उसके हितचिन्तक बन जाते हैं और यह सम्पूर्ण पृथ्वी भी उत्तम से उत्तम धनधान्य और रत्न देने वाली हो जाती है।

A frightening forest becomes like a great city, and all men become friends and the whole earth is filled with jewels of good treasure for one who did plenty of noble deeds in the previous •birth.

(1039)

भुक्ता मृणालपटलीर्भवता निपीता-
न्यम्बूनि यत्र नलिनानि निषेवितानि।
रे राजहंस! वद तस्य सरोवरस्य,
कृत्येन केन भवितासि कृतोपकारः॥

देश के प्रति कर्त्तव्य मुक्तिराम उपाध्याय

Bhuktā mṛṇālapaṭalīrbhavatā nipītā-
nyambūni yatra nalināni niṣevitāni।
Re rājahaṁsa! vada tasya sarovarasya,
Kṛtyena kena bhavitāsi kṛtopakārāḥ॥

Muktirām Upādhyāya

Duties towards the nation

हे राजहंस! जिस सरोवर में तुमने कमल-नालों का खूब उपभोग किया, जिसके पानी को पिया और कमलों में आनन्द लिया, बताओ तो सही कि उस तालाब के किए हुए उपकारों का बदला तुम कैसे चुकाओगे?

(विशेष :- यह लोकोक्ति प्रेरणा देती है कि जिस देश के अन्न-जल आदि से हमारा पोषण हुआ है, उसके प्रति हमारे भी कुछ कर्त्तव्य हैं।)

O swan, tell me how will you be free from the debt of that tank where you ate the stalks of lotuses, drank water and enjoyed the food of lotuses? (This verse advises the persons to do some useful work for their country where they enjoy every facility.)

(1040)

भुक्त्वा शतपदं गच्छेच्छनैस्तेन तु जायते।
अन्नसंघातशैथिल्यं ग्रीवा-जानुकटीषु च॥

भोजन के पश्चात् भावप्रकाश/दिनचर्या/196

Bhuktvā śatapadaṁ gacchecchanaistena tu jāyate।
Annasaṁghātaśaithilyaṁ grīvā-jānu-katīṣu ca॥

Bhāvapra./ Dina. / 196

To be done after meals

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भोजन करने के बाद धीरे-धीरे सौ कदम चलना चाहिए। इससे गर्दन, घुटनों और कमर में इकट्ठा हुआ अन्न का भार ढीला हो जाता है।

After taking meals one should walk at least hundred steps slowly. This will loosen the multitude of eaten things from the neck, the knees and the waist.

(1041)

भूतानां प्राणिनः श्रेष्ठाः प्राणिनां बुद्धिजीविनः।
बुद्धिमत्सु नराः श्रेष्ठाः, नरेष्वपि द्विजातयः॥

क्रमशः श्रेष्ठता महाभा./उद्योग/6/1

Bhūtānāṁ prāṇiṇaḥ śreṣṭhāḥ, prāṇināṁ buddhijīvinaḥ |
Buddhimatsu narāḥ śreṣṭhāḥ, nareṣvapi dvijātayaḥ ||

Mahābhā. / Udyoga / 6 / 1

Seniority in creatures

उत्पन्न हुई वस्तुओं में प्राणी श्रेष्ठ हैं, प्राणियों में भी बुद्धि से कार्य करने वाले, बुद्धिमानों में भी मनुष्य श्रेष्ठ हैं और मनुष्यों में भी ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये द्विजाति श्रेष्ठ हैं।

In this whole creation, animates are the best, in the animates those are the best who use their intellect, in the intellectuals men are the best, while having two births (Brahmanas, Kṣhatriyas and Vaiśhas) are the best of all.

(1042)

भूताश्चार्था विनश्यन्ति देशकालविरोधिताः।
विक्लवं दूतमासाद्य तमः सूर्योदये यथा॥

निन्दनीय दूत वा. रामायण/सुन्दर काण्ड/2/39

Bhūtāścārthā vinaśyanti deśakālavirodhitāḥ |
Viklavaṁ dūtamāsādya tamaḥ sūryodaye yathā ||

Vā. Rā. / Sundara. / 2 / 39

Condemnable messenger

अविवेकपूर्ण कार्य करने वाले तथा देश और काल का विचार न करने वाले दूत के कारण बने-बनाये काम भी उसी प्रकार बिगड़ जाते हैं, जैसे सूर्योदय होने पर अन्धकार नष्ट हो जाता है।

The messenger who works unwisely and does not consider about the place or time, spoils the whole work for which he is employed in the same way as the darkness disappears when the sun rises.

(1043)

भूमिर्मित्रं हिरण्यं च विग्रहस्य फलत्रयम्।
नास्त्येकमपि यद्येषां न तं कुर्यात्कथञ्चन॥

लाभ के लिए युद्ध पञ्च./मित्रभेद/170

Bhūmirmitraṁ hiraṇyaṁ ca vigrahasya phalatrayam |
Nāstyekamapi yadyeṣāṁ na taṁ kuryāt kathañcana ||

Pañca. / Mitrabhe. / 170

War for achievement

लड़ाई से तीन वस्तुएँ प्राप्त हो सकती हैं – जमीन, मित्र और सोना (धन-दौलत)। यदि इनमें से एक भी प्राप्त होने की आशा न हो, तो ऐसी लड़ाई कदापि नहीं लड़नी चाहिए।

There are three advantages of fighting — land, friend and gold (wealth). If there is no hope of any one

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

out of these three, one should not fight.

(1044)

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता-
स्तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः।
कालो न यातो वयमेव याता-
स्तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः॥

निष्फल जीवन वैराग्यशतक/12

Bhogā na bhuktā vayameva bhuktā-
stapo na taptaṁ vayameva taptāḥ।
Kālo na yāto vayameva yātā-,
stṛṣṇā na jīrṇā vayameva jīrṇāḥ॥

Useless life Vairāgyaśataka / 12

हम लोगों ने भोगों का भोग नहीं किया प्रत्युत हम ही काल द्वारा खा लिए गए। हमने तप नहीं किया बल्कि स्वयं तप्त हो गये। समय नहीं बीता परन्तु हम स्वयं बीत गये। तृष्णाएँ नहीं घटीं परन्तु हम खुद ही बूढ़े हो गये।

We have not enjoyed pleasures, but we have ourselves been eaten away by the time, we have not practised austerities, but we have ourselves been tormented, time has not passed, but we ourselves have been passed over, our thirst for pleasures has not decayed, but we ourselves have been decayed by old age.

(1045)

भोगे रोगभयं कुले च्युतिभयं वित्ते नृपालाद्भयम्,
मौने दैन्यभयं बले रिपुभयं रूपे जराया भयम्।
शास्त्रे वादिभयं, गुणे खलभयं, काये कृतान्ताद्भयम्,
सर्वं वस्तु भयान्वितं भुवि नृणां वैराग्यमेवाभयम्॥

निर्भयता का साधन वैराग्य वैराग्यशतक/31

Bhoge rogabhayaṁ kule cyutibhayaṁ vitte nṛpālādbhayam,
Maune dainyabhayaṁ bale ripubhayaṁ rūpe jarāyā bhayam।
Śāstre vādibhayaṁ guṇe khalabhayaṁ, kāye kṛtāntādbhayam,
Sarvaṁ vastu bhayānvitaṁ bhuvi nṛṇāṁ vairāgyamevābhayam॥

Vairāgyaśataka / 31

Detachment—the means to fearlessness

विषयों को भोगने में रोगों का भय है, वंश में किसी कारण से वंश से निकाले जाने का भय है, धन की वृद्धि होने पर राजा से भय है, चुप्पी साधने से दीन-हीन होने का भय है, बल वाले को शत्रु का भय है, रूप-सौन्दर्य को वृद्धावस्था से भय है, शास्त्र में शास्त्रार्थ करने वाले को पराजय का भय है, गुण-संग्रह में दुष्टों द्वारा दोष निकालने का भय है और शरीर को मृत्यु का भय है। इस प्रकार सभी वस्तुएँ किसी न किसी रूप से भयभीत हैं, केवल वैराग्य ही अभय है अर्थात् विरक्त पुरुष को किसी से भी भय नहीं होता।

There is fear of diseases in the sensual enjoyment, there is fear of ousting out from a dynasty, riches have fear from the government, silence has fear of poverty, forces have fear from the enemies, beauty has fear from the old age, a scholar of scriptures has fear from his opponents, merits have fear from fault-finders and the body has fear from

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

the death. In this way all things of the man have fear from this or that. It is only detached man who has no fear.

(1046)

भोजनान्ते पिबेत्तक्रम्, वासरान्ते पिबेत्पयः।
निशान्ते च पिबेद्वारि, त्रिभी रोगो न जायते॥

रोगों से बचने का ढंग अज्ञात

Bhojanānte pibettakram, vāsarānte pibetpayaḥ |
Niśānte ca pibedvāri, tribhī rogo na jāyate ||

Method to keep off diseases Unknown

भोजन के अन्त में मट्ठा, दिन की समाप्ति पर दूध और रात की समाप्ति पर पानी पीने से मनुष्य रोगों से बचा रहता है।

By drinking buttermilk at the end of meals, milk at the end of the day and water at the end of the night, a man can enjoy good health.

म = Ma

(1047)

मक्षिका व्रणमिच्छन्ति, धनमिच्छन्ति पार्थिवाः।
नीचाः कलहमिच्छन्ति, शान्तिमिच्छन्ति साधवः॥

इच्छाओं के भेद (चाणक्यनीति-शास्त्र)

Makṣikā vraṇamicchanti, dhanamicchanti pārthivāḥ |
Nīcāḥ kalahamicchanti, śāntimicchanti sādhavaḥ ||

Kinds of desires (Cāṇkyanitiśāstra)

मक्खियाँ घाव को चाहती हैं, राजा लोग धन को चाहते हैं, नीच लड़ाई पसन्द करते हैं और भले लोग शान्ति चाहते हैं।

Flies desire wounds, kings wish money, mean fellows like quarrel but good persons desire peace.

(1048)

मज्जमानमकार्येषु पुरुषं विषयेषु वै।
निवारयति यो राजन्! स मित्रं रिपुरन्यथा॥

सच्चा मित्र अभिषेकनाटक/6/22

Majjamānamakāryeṣu puruṣaṁ viṣayeṣu vai |
Nivārayati yo rājan! sa mitraṁ ripuranyathā ||

Real friend Abhiṣekanātaka / 6 / 22

हे राजन्! न करने योग्य विषयों में डूबते को जो रोक लेता है, वही सच्चा मित्र है; इसके विपरीत जो है, वह तो शत्रु ही है।

O king! The man who saves his drowning friend in the undeserving subjects, is a friend in the real sense; otherwise he is an enemy.

(1049)

मत्तेभकुम्भदलने भुवि सन्ति शूराः,
केचित्प्रमत्तमृगराजवधेऽपि दक्षाः।
किन्तु ब्रवीमि बलिनां पुरतः प्रसह्य,
कन्दर्पदर्पदलने विरलाः मनुष्याः॥

कामवासना की अनुपम शक्ति शृंगारशतक/58

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Mattebhakumbhadalane bhuvi santi śūrāḥ,
Kecit pramattamṛgarājavadhe'pi dakṣāḥ ।
Kintu bravīmi balināṁ purataḥ prasahya,
Kandarpadarpadalane viralāḥ manuṣyāḥ ॥

Śṛngāraśataka / 58

Special power of sexuality

इस संसार में मतवाले हाथियों के गण्डस्थलों को फोड़ने में समर्थ वीर लोग हैं। कुछ वीर ऐसे भी हैं, जो क्रोध से परिपूर्ण सिंह को भी मार सकते हैं। परन्तु मैं बलवानों के समक्ष बलपूर्वक कहना चाहता हूँ कि कामदेव के अभिमान को कुचलने वाले मनुष्य बहुत ही कम हैं।

There are such brave persons who can break the temples of the mad elephants. Besides, there are some other brave fellows who can kill an angry lion. But I wish to declare firmly in front of the strong persons that there are very few persons who can crush the pride of the Cupid.

(1050)

मदोन्मत्तस्य भूपस्य, कुञ्जरस्य च गच्छतः।
उन्मार्गं वाच्यतां यान्ति, महामात्राः समीपगाः ॥

निन्दनीय सहायक पञ्चतन्त्र/मित्रभेद/146

Madonmattasya bhūpasya, kuñjarasya ca gacchataḥ ।
Unmārgaṁ vācyatāṁ yānti, mahāmātrāḥ samīpagāḥ ॥

Pañca. / Mitrabhe. / 146

Condemnable helpers

अभिमान में पागल हुए राजा तथा हाथी द्वारा अनचाहे मार्ग पर जाते समय उनके पास रहने वाले उत्तरदायी व्यक्ति यदि उन्हें रोकते नहीं हैं तो वे ही निन्दा के पात्र हुआ करते हैं।

When a proud king or an elephant goes on an undesired path, then the responsible persons who remain with them and who do not check them, are blamed.

(1051)

मधुमन्मे निक्रमणं, मधुमन्मे परायणम्।
वाचा वदामि मधुमत्, भूयासं मधुसन्दृशः ॥

व्यवहार और वाणी मधुर हों अथर्व./1/34/3

Madhumanme nikramaṇaṁ madhumanme parāyaṇam ।
Vācā vadāmi madhumat, bhūyāsaṁ madhusandṛśaḥ ॥

Atharva. / 1 / 34 / 3

Let my behaviour and speech be sweet

मेरा किसी के निकट जाना माधुर्यपूर्ण हो और किसी से दूर जाना भी मिठास से भरा हो। मैं वाणी से मधुर ही बोलूँ और पूर्णरूप से शहद के समान माधुर्य से पूर्ण रहूँ।

Approaching somebody should be sweet and going off from any body also should be sweet. I should speak sweet from my tongue and I desire to be always as sweet as honey.

(1052)

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥

मधुरता की कामना ऋग्./1/90/6

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Madhu vātā ṛtāyate, madhu kṣaranti sindhavaḥ ।
Mādhvīrnaḥ santvoṣadhīḥ ॥

Desire of sweetness Ṛg. / 1 / 90 / 6

सत्य व्यवहार को चाहने वाले के लिए हवाएँ तथा नदियाँ आनन्द की वर्षा करती हैं। हमारे लिए ओषधियाँ आनन्द देने वाली हों अर्थात् हम ओषधि-विज्ञान को जानें और उनसे स्वास्थ्य और सुख प्राप्त करने का प्रयास करें।

Those who desire true behaviour, air and rivers shower them with happiness. Let the herbs and trees also give us happiness. It means we should know the botanical science in this way, by which we may be able to obtain health and happiness.

(1053)

मनःप्रसादः श्रद्धा च तथा करणपाटवम्।
सहायोत्थानसम्पच्च कर्मणां सिद्धिलक्षणम्॥

सफलता के साधन कामन्दकीयनीतिसार/15/82

Manaḥprasādaḥ śraddhā ca tathā karaṇapāṭavam ।
Sahāyotthānasampacca karmanāṁ siddhilakṣaṇam ॥

Kāmandakīya / 15 / 82

Means to get success

मन की प्रसन्नता, लगन, साधनों में दक्षता, सहायकों की प्राप्ति तथा सघन उद्यम ये कार्यों की सिद्धि के लक्षण हैं।

The steadiness of mind, devotion, dexterity in action, obtaining helpers and regular efforts are the indications of the success in any work.

(1054)

मनःशौचं, कर्मशौचं, कुलशौचं तथैव च।
शरीरशौचं, वाक्यशौचं, शौचं पञ्चविधं स्मृतम्॥

पाँच प्रकार की पवित्रता अज्ञात

Manaḥśaucaṁ, karmaśaucaṁ,
kulaśaucaṁ tathaiva ca ।
Śarīraśaucaṁ, vākyaśaucaṁ,
śaucaṁ pañcavidhaṁ smṛtam ॥

Five kinds of purity Unknown

मन की शुद्धि, कर्म की पवित्रता, खानदान का सदाचार, शरीर की शुद्धि और वाणी में सत्यता – यह पाँच प्रकार की पवित्रता कही गई है।

Purity of mind, purity of work, purity of the family, cleanliness of the body, truthfulness of the speech — these are five kinds of purifties

(1055)

मनसा चिन्तितं कार्यं वचसा न प्रकाशयेत्।
मन्त्रेण रक्षयेद् गूढं, कार्ये चापि नियोजयेत्॥

रहस्य को गुप्त रखो चाणक्यनीति/2/7

Manasā cintitaṁ kāryaṁ vacasā na prakāśayet ।
Mantreṇa rakṣayed gūḍhaṁ, kārye cāpi niyojayet ॥

Hide secrecy Cāṇkyanīti / 2 / 7

जिस कार्य-योजना को मन में सोचा हो, उसे वाणी द्वारा दूसरों को नहीं बताना चाहिए। उसे रहस्य रूप में छिपाकर रखें और उस योजना को कार्यान्वित करें।

Any work-plan which has been considered by mind should not be dis-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

closed to others by speaking. That should be kept as a hidden secret and then it should be put into action.

(1056)

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा-
स्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
परगुण-परमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यम्,
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः॥

श्रेष्ठ व्यक्तियों की दुर्लभता नीतिशतक/74

Manasi vacasi kāye puṇyapīyūṣapūrṇā-
stribhuvanamupakāraśreṇibhiḥ prīṇayantaḥ।
Paraguṇaparamāṇūn parvatīkṛtya nityam,
Nijahṛdi vikasantaḥ santi santaḥ kiyantaḥ॥

Rarity of good persons Nītiśataka / 74

भला ऐसे श्रेष्ठ लोग कितने हैं, (1) जो मन, वचन और शरीर द्वारा पवित्र अमृत (मिठास) से भरे हुए हैं, अर्थात् जिनका व्यवहार सब प्रकार से मधुर है, (2) जो अपने उपकारों द्वारा सारे विश्व को तृप्त कर रहे हैं और (3) जो दूसरों के तुच्छ गुणों को भी पहाड़ के समान बढ़ा-चढ़ा कर प्रकट करते हुए अपने हृदय में प्रसन्नता का अनुभव करते हैं?

How many are there such good people, (1) who are full of nectar in mind, words and body, that means whose behaviour is very sweet in all respects, (2) who are pleasing the whole world with their help and (3) who feel happiness in their minds by illustrating a trifle quality like an atom as big as a mountain.

(1057)

मनसि स्वजात्यानां योऽनिष्टानि प्रचिन्तयेत्।
भवन्ति तस्य तान्येव इह लोके परत्र च॥

बुरे का बुरा फल पञ्च./मित्रभेद/243

Manasi svajātyānāṁ yo'niṣṭāni pracintayet।
Bhavanti tasya tānyeva iha loke paratra ca॥

Pañca. / Mitrabhe. / 243

Bad gets bad result

जो व्यक्ति अपनी बिरादरी वालों के विषय में मन में अनिष्ट सोचता है, वे अनिष्ट इस लोक और परलोक में उसी को प्राप्त होते हैं।

A person who thinks bad against his relatives, these bad actions come into existence against himself in this life and in also the next one.

(1058)

मनस्वी म्रियते कामं, कार्पण्यं न तु गच्छति।
अपि निर्वाणमायाति नानलो याति शीतताम्॥

मनस्वी का चरित्र हितोपदेश./1/45

Manasvī mriyate kāmaṁ, kārpaṇyaṁ na tu gacchati।
Api nirvāṇamāyāti nānalo yāti śītatām॥

Hitopadesh / 1 / 45

Character of the respectful

स्वाभिमानी व्यक्ति प्राण दे सकता है, परन्तु दीन वचन नहीं कहता। जैसे आग बुझ जाती है, परन्तु वह ठण्डी नहीं होती।

A self-respecting person may die, but he will not say bad words, as fire extinguishes but it never becomes cold.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(1059)

मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्।
मनस्यन्यद् वचस्यन्यत् कर्मण्यन्यद् दुरात्मनाम्॥

महात्माओं और दुरात्माओं के कथन नीतिशास्त्र/2/26

Manasyekaṁ vacasyekaṁ karmaṇyekaṁ mahātmanām।
Manasyanyad vacasyanyat karmaṇyanyad durātmanām॥

Nītiśāstra / 2 / 26

Words of great and mean fellows

महात्माओं के मन, वाणी और कर्म में एकरूपता ही होती है। परन्तु दुष्ट लोगों के मन में कुछ और होता है, वाणी में कुछ और तथा कर्म में कुछ और।

The noble people have the similar thing in their mind, speech and action, while the wicked fellows have different things in their mind, speech and actions.

(1060)

मनागनभ्यावृत्त्या वा कामं क्षाम्यतु यः क्षमी।
क्रियासमभिहारेण विराध्यन्तं क्षमेत कः॥

निरन्तर अपराधी क्षम्य नहीं शिशुपालवध/2/43

Manāganabhyāvṛttyā vā kāmaṁ kṣāmyatu yaḥ kṣamī।
Kriyāsamabhihāreṇa virādhyantaṁ kṣameta kaḥ॥

Śiśupala. / 2 / 43

Not pardonable frequent sinner

क्षमाशील व्यक्ति यदि एक बार थोड़ा अपराध करने वाले को क्षमा कर दे, तो कोई बात नहीं, परन्तु जो बारम्बार शत्रुता किये ही चला जा रहा है, उसे कौन क्षमा करेगा?

A forbearing person may pardon the person who has committed once a little crime, but who is showing his enmity again and again can never be pardoned by any body.

(1061)

मनीषिणः सन्ति न ते हितैषिणो,
हितैषिणः सन्ति न ते मनीषिणः।
सुहृच्च विद्वानपि दुर्लभो नृणां,
यथौषधं स्वादु हितं च दुर्लभम्॥

दुर्लभ व्यक्ति और वस्तुएँ भोजप्रबन्ध/58

Manīṣiṇaḥ santi na te hitaiṣiṇo,
Hitaiṣiṇaḥ santi na te manīṣiṇaḥ।
Suhṛcca vidvānapi durlabho nṛṇām,
Yathauṣadhaṁ svādu hitaṁ ca durlabham॥

Rare persons and things Bhojapra. / 58

जो विद्वान (विचारशील) होते हैं वे हितैषी नहीं होते तथा जो हितैषी होते हैं वे विद्वान् (विचारशील) नहीं होते हैं। हितैषी मित्र भी हो और विद्वान् (विचार-शील) भी हो, ऐसा व्यक्ति मनुष्यों को इसी प्रकार कठिनाई से मिलता है, जैसे स्वादु और हितकारी औषध का मिलना कठिन होता है।

Those who are thoughtful (learned) are not well-wisher and those who are well-wisher are not thoughtful. A well-wisher and thoughtful (learned) person is very rare, as the good and tasteful medicine is very rare.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(1062)

मनुष्यशालावृकमप्रशान्तम्,
जनापवादे सततं निविष्टम्।
मात्तङ्गमुन्मत्तमिवोन्नदन्तं,
त्यजेत तं श्वानमिवातिरौद्रम्॥

त्याज्य व्यक्ति महाभारत/शान्तिपर्व/114/17

Manuṣyaśālāvṛkamapraśāntam,
Janāpavāde satataṁ niviṣṭam।
Māttaṅgamunmattamivonnadantaṁ,
Tyajeta taṁ śvānamivātiraudram॥

Mahābhā. / Śānti. / 114 / 17

To be abandoned

मनुष्य रूपी जो कुत्ता चैन से नहीं रहता है, लोगों की निन्दा करने में ही जुटा रहता है और पागल हाथी की तरह चिंघाड़ता रहता है, ऐसा कुत्ते के समान अतिभयंकर मनुष्य त्यागने योग्य होता है। उसे छोड़ देना चाहिए।

The man who wanders here and there and does not remain peacefully is like a dog and he remains busy in other's ill-fame. He is also like a mad elephant which makes dreadful noise loudly. Such person who is very dreadful like a mad dog, should be kept away.

(1063)

मन्त्रिणां भिन्नसन्धाने भिषजां सान्निपातिके।
कर्मणि व्यज्यते प्रज्ञा, स्वस्थे को वा न पण्डितः॥

बुद्धि की परख का समय पञ्च./मित्रभेद/134

Mantriṇāṁ bhinnasandhāne, bhiṣajāṁ sānnipātike।
Karmaṇi vyajyate prajñā, svasthe ko vā na paṇḍitaḥ॥

Pañca. / Mitrabhe. / 134

Time of the test of intellect

फूटे हुओं को मिलाने में मन्त्रियों की और अनेक प्रकार के रोगों से घिरे होने पर चिकित्सकों की बुद्धि की परख होती है। व्यक्ति के स्वस्थ रहने पर सभी अपनी-अपनी योग्यता दिखाने लगते हैं।

The ability of ministers is tested while uniting two devided nations and of the doctors is tested when the patient is attacked by different kinds of diseases. For a man who is healthy, everybody can show their ability.

(1064)

मन्त्रो योध इवाधीरः सर्वाङ्गैः संवृतैरपि।
चिरं न सहते स्थातुं परेभ्यो भेदशङ्कया॥

योजना लटकाओ नहीं शिशुपालवध/2/30

Mantro yodha ivādhīraḥ sarvāṅgaiḥ saṁvṛtairapi।
Ciraṁ na sahate sthātuṁ parebhyo bhedaśaṅkayā॥

Śiśupāla. / 2 / 30

Donot pend the scheme

जैसे कोई योद्धा सभी अंगों के ढके होने पर भी, शत्रु मुझे मार न दें, इस आशंका से देर तक शान्त नहीं रहना चाहता और उतावला होकर प्रहार करने को उद्यत हो जाता है, उसी प्रकार नीति में बनाई हुई किसी भी योजना को शीघ्र ही व्यावहारिक रूप दे देना चाहिए, ताकि शत्रुओं द्वारा उसका भेद न खुल जाए।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

As a warrior whose all organs are covered with armour etc., makes haste to attack his enemies fearing from their fatal attack, in the same way one must implement his secret plan very soon, so that it may not disclosed to the enemies.

(1065)

मन्दोऽप्यमन्दतामेति संसर्गेण विपश्चितः।
पङ्कच्छिदः पयस्येव निकषेणाविलं पयः॥

सत्संगति का लाभ मालविकाग्निमित्र/2/7

Mando'pyamandatāmeti saṁsargeṇa vipaścitaḥ।
Paṅkacchidaḥ payasyeva nikaśeṇāvilaṁ payaḥ॥

Mālavikāgni. / 2 / 7

Advantage of a good company

बुद्धिमानों के सम्पर्क में आने से मूढ़ भी निपुण बन जाया करता है। फिटकिरी अथवा कतक के बीजों के सम्पर्क से गन्दा पानी भी स्वच्छ हो जाता है।

If a foolish person comes in contact of wisemen, he also becomes wise. With the contact of alum or seeds of Kataka, muddy water becomes clean.

(1066)

मरणं प्रकृतिः शरीरिणां विकृतिर्जीवितमुच्यते बुधैः।
क्षणमप्यवतिष्ठते श्वसन् यदि जन्तुर्ननु लाभवानसौ॥

जीवन का समय रघुवंश/8/87

Maraṇaṁ prakṛtiḥ śarīriṇāṁ vikṛtirjīvitamucyate budhaiḥ।
Kṣaṇamapyavatiṣṭhate śvasan yadi janturnanu lābhavānasau॥

Time of life Raghuvaṁśa / 8 / 87

शरीरधारियों (आत्माओं) की मूल अवस्था तो मृत्यु ही है। उसमें जो परिवर्तन होता है, उसे ही जीवन कहा जाता है। यदि प्राणी एक क्षण भी साँस लेता हुआ विद्यमान रहता है, तो समझना चाहिए कि उसने कुछ प्राप्त ही किया है, खोया कुछ भी नहीं।

The originality of souls remains in death while some change in that is called life. If a creature breathes even for a moment, he has gained something and lost nothing.

(1067)

महत्त्वमेतन्महतां नयालङ्कारधारिणाम्।
न मुञ्चन्ति यदारब्धं कृच्छ्रेऽपि व्यसनोदये॥

श्रेष्ठ व्यक्तियों का गुण पञ्चतन्त्र/काकोलूकीय/216

Mahattvametanmahatāṁ nayālaṅkāradhāriṇām।
Na muncanti yadārabdhaṁ kṛcchre'pi vyasanodaye॥

Quality of the great Pañca. / Kāko. / 216

नीति-रूप आभूषण को धारण करने वाले बड़े लोगों का यही महत्त्व है कि भयंकर से भयंकर कष्ट के आने पर भी वे आरम्भ किए हुए कार्य को नहीं छोड़ते।

The great men who wear the ornament of justice, have their greatness in this matter that even facing dreadful troubles, they never leave their work in lurch, which they have begun.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(1068)

महाजनस्य सम्पर्कः कस्य नोन्नतिकारकः।
पद्मपत्रस्थितं तोयं धत्ते मुक्ताफलश्रियम्॥

सत्संगति का लाभ पञ्चतन्त्र/काकोलूकीय/59

Mahājanasya samparkaḥ kasya nonnatikārakaḥ |
Padmapatrasthitaṁ toyaṁ dhatte muktāphalaśriyam ||

Pañca. / Kāko. / 59

Advantage of good company

बड़े लोगों की संगति भला किस को उन्नत नहीं बना देती? देखिए कि कमल के पत्ते पर टिका हुआ जल भी मोतियों की-सी शोभा धारण कर लेता है।

Who is such a person who does not make his own progress when he remains in the company of great men? Please look that the water even lying on the leaf of a lotus receives the beauty of pearls.

(1069)

महानदीप्रतारणं महापुरुषविग्रहम्।
महाजनविरोधं च दूरतः परिवर्जयेत्॥

त्याज्य वस्तुएँ चाणक्यनीति/3/160

Mahānadīpratāraṇaṁ, mahāpuruśavigraham |
Mahājanavirodhaṁ ca dūrataḥ parivarjayet ||

To be abondoned Cā. Niti / 3 / 160

किसी बड़ी नदी को तैर कर पार करना, श्रेष्ठ पुरुषों से लड़ना तथा बहुत लोगों से विरोध करना इन बातों को सर्वथा त्याग देना चाहिए।

To cross a big river by swimming, to have contradiction against greatmen and to oppose many persons should be abandoned.

(1070)

महान्त एव महतामर्थं साधयितुं क्षमाः।
ऋते समुद्रादन्यः को बिभर्त्ति वडवानलम्॥

बड़े ही बड़े कार्य कर सकते हैं पञ्चतन्त्र/अपरीक्षित/33

Mahānta eva mahatāmarthaṁ sādhayituṁ kṣamāḥ |
Ṛte samudrādanyaḥ ko bibhartti vaḍavānalam ||

बड़े लोग ही बड़ों का कार्य सिद्ध करने में समर्थ होते हैं। समुद्र को छोड़कर भला कौन ऐसी वस्तु है जो वडवानल को अपने अन्दर धारण कर सकती है?

Only greatmen can solve the problems of the great. There is no such thing except the sea, which can retain the submarine fire.

(1071)

मही रम्या शय्या विपुलमुपधानं भुजलता,
वितानञ्चाकाशो व्यजनमनुकूलोऽयमनिलः।
स्फुरद्दीपश्चन्द्रो विरतिवनिता-सङ्गमुदितः,
सुखं शान्तः शेते मुनिरतनुभूतिर्नृप इव॥

मुनि की नींद वैराग्यशतक/71

Mahī ramyā śayyā vipulamupadhānaṁ bhujalatā,
Vitānañcākāśo vyajanamanukūlo'yamanilaḥ |
Sphuraddīpaścandro virativanitā-saṅgamuditaḥ,
Sukhaṁ śāntaḥ śete muniratanubhūtirnṛpa iva ||

Sleep of a saint Vairāgyaśa. / 71

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिस मुनि के लिए भूमि ही सुन्दर बिछौना है, बाँह रूपी लता ही विशाल तकिया है, आकाश ही चादर है, अनुकूल वायु ही पंखा है, चन्द्रमा ही चमचमाता दीपक है और विरक्ति ही ऐसी पत्नी है, जिसके साथ वह प्रसन्न रहता है, वह मुनि इस प्रकार की विशाल सम्पत्ति से सम्पन्न होकर राजा के समान सुखपूर्वक शान्त होकर सोता है।

One for whom earth is a pleasant couch, his creeper like arms are spacious pillow, sky is covering sheet, congenial breeze is fan, the moon is a shining lamp, indifference is his wife with whom he feels pleasure, such an ascetic sleeps calm like a king having these enormous wealth.

(1072)

मांसभक्ष्यैः सुरापानैर्मूर्खैश्चात्र नवार्जितैः।
पशुभिः पुरुषाकारैर्भाराक्रान्तास्ति मेदिनी॥

निन्दनीय पुरुष चाणक्यनीति/8/22

Maṁsabhakṣyaiḥ surāpānairmūrkhaiścātra navārjitaiḥ।
Paśubhiḥ puruṣākārairbhārākrāntāsti medinī॥

Condemnable men Cā. Nīti./8/22

मांसाहारी, शराबी, और निरक्षर मनुष्य नये रूप में इकट्ठे होने वाले पशु हैं, जो शक्ल-सूरत में मनुष्य दिखाई दे रहे हैं। ऐसे नर-पशुओं के कारण ही यह पृथ्वी भार से दब रही है।

Meat-eaters, drunkards and illiterate persons have been accumulated on this earth, who are like animals in the appearance of men. This earth is suffering with the burden of such men-animals.

(1073)

मा जीवन् यः परावज्ञादुःखदग्धोऽपि जीवति।
तस्याजननिरेवास्तु जननीक्लेशकारिणः॥

अपमान से मृत्यु ही अच्छी है शिशुपालवध/2/45

Mā jīvan yaḥ parāvajñāduḥkh-dagdho'pi jīvati।
Tasyājananirevāstu jananīkleśakāriṇaḥ॥

Śiśupāla./2/45

Death is better than a degraded life

शत्रु से तिरस्कृत होने से उत्पन्न दुःख से जलते हुए व्यक्ति के जीने को धिक्कार हो। ऐसा व्यक्ति तो व्यर्थ ही अपने जन्म से माँ को कष्ट देने वाला होता है। यदि ऐसे व्यक्ति का जन्म न होता, तो वही ठीक था।

Fie to the living person who is burning with grief which he received after being insulted by an enemy. Such a person uselessly gave the trouble to his mother by getting birth and it would be better if he had not been born.

(1074)

माता यस्य गृहे नास्ति भार्या च प्रियवादिनी।
अरण्यं तेन गन्तव्यं यथारण्यं तथा गृहम्॥

पञ्चतं./लब्धप्र./4/60

माता और पत्नी का महत्त्व

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Mātā yasya gṛhe nāsti bhāryā ca priyavādinī ।
Araṇyaṁ tena gantavyaṁ, yathāraṇyaṁ tathā gṛham ॥

Pañca. / Labdha. / 4 / 60

Importance of wife and mother

जिसके घर में माँ नहीं एवं प्रिय बोलने वाली पत्नी नहीं है, उसे जंगल में चले जाना चाहिए क्योंकि उसके लिए जैसा जंगल, वैसा ही घर है।

Whose house has neither mother and nor sweet speaking wife, he should go to a forest, because for him a house and a forest are alike.

(1075)

माता शत्रुः पिता वैरी, येन बालो न पाठितः ।
न शोभते सभामध्ये, हंसमध्ये बको यथा ॥

निन्दनीय माता-पिता चाणक्यनीति/2/11

Mātā śatruḥ pitā vairī, yena bālo na pāṭhitaḥ ।
Na śobhate sabhāmadhye, haṁsamadhye bako yathā ॥

Cā. Nīti / 2 / 11

Condemnable parents

बच्चे को न पढ़ाने वाली माता उसकी शत्रु है और जिस पिता ने बच्चे को नहीं पढ़ाया वह भी दुश्मन है। अनपढ़ व्यक्ति की सभा में वही दशा होती है, जो हंसों के बीच आए हुए बगुले की, अर्थात् सभा में उसका कोई मान नहीं होता।

The mother and the father who have not educated their child are his enemies. An illiterate person has no respect in a meeting of scholars as a heron does not look suitable among swans.

(1076)

मातुलो यस्य गोविन्दः, पिता यस्य धनञ्जयः ।
अभिमन्युर्वधं प्राप्तः, कालस्य कुटिला गतिः ॥

काल की गति नराभरण/265

Mātulo yasya Govindaḥ, pitā yasya dhanañjayaḥ ।
Abhimanyurvadhaṁ prāptaḥ, kālasya kuṭilā gatiḥ ॥

Gait of the time Narābharaṇa / 265

जिसके मामा श्रीकृष्ण थे और जिसके पिता अर्जुन थे, वह अभिमन्यु भी मारा गया। काल की चाल टेढ़ी है; मृत्यु का समय निकट आ जाने पर इससे कोई नहीं बच सकता।

Abhimanyu, whose maternal uncle was shri Krishna and whose father was Arjun, even he received death. The gait of the time is very crooked; nobody can be saved when his death-time comes.

(1077)

मातृवत्परदाराणि परद्रव्याणि लोष्ठवत् ।
आत्मवत्सर्वभूतानि वीक्षन्ते धर्मबुद्धयः ॥

धार्मिक व्यक्तियों के चरित्र पञ्च./मित्रभेद/354

Mātṛvat paradārāṇi paradravyāṇi loṣṭhavat ।
Ātmavat sarvabhūtāni vīkṣante dharmabuddhayaḥ ॥

Pañca. / Mitrabhe. / 354

Qualities of good persons

धार्मिक बुद्धि वाले लोग पराई स्त्रियों को माता के समान, पराये धन को ढेले के समान और सभी प्राणियों को अपने समान देखते हैं।

The religious minded persons look

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

at the wives of others as their mothers, riches of others as a lump of earth and all the creatures like themselves.

(1078)

मातेव रक्षति पितेव हिते नियुङ्क्ते,
कान्तेव चाभिरमयत्यपनीय खेदम्।
कीर्तिं च दिक्षु विमलां वितनोति लक्ष्मीं,
किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या॥

विद्या के कार्य भोजप्रबन्ध/5

Māteva rakṣati piteva hite niyuṅkte,
Kaṇteva cābhiramayatyapaṇīya khedam।
Kirtiṁ ca dikṣu vimalāṁ vitanoti lakṣmīṁ,
Kiṁ kiṁ na sādhayati kalpalateva vidyā॥

Works of knowledge Bhojapr. / 5

विद्या माता के समान रक्षा करती है, पिता के समान हितकारी कार्यों में लगाती है, प्रिय पत्नी के समान दुःख दूर कर मन को प्रसन्न करती है, दिशाओं में विमल कीर्ति फैलाती है और ऐश्वर्य प्रदान करती है। बताओ तो सही कि कल्पलता के समान वह क्या-क्या काम नहीं करती? अर्थात् विद्या सभी कार्य सिद्ध कर देती है।

Learning protects like a mother, sets in a useful work like a father, removes sadness and gives pleasure like a wife, spreads good fame in all directions and gives wealth. Please tell me what is the thing which cannot be obtained by learning, which is like the 'Kalpalatā'?

(1079)

मात्रा स्वस्रा दुहित्रा वा, न विविक्तासनो भवेत्।
बलवान् इन्द्रियग्रामो विद्वांसमपि कर्षति॥

इन्द्रियों की शक्ति मनुस्मृति/2/215

Mātrā svasrā duhitrā vā na viviktāsano bhavet।
Balavān indriyagrāmo vidvāṁsamapi karṣati॥

Power of senses Manu. / 2 / 215

माँ, बहिन या बेटी के साथ भी अकेले में न बैठे। इन्द्रियों का जोर इतना होता है कि वे समझदार को भी अपनी ओर खींच लेती हैं।

One should not sit in a lonely place even with his mother, sister or daughter, as the senses are so powerful that they pull towards themselves even a learned man.

(1080)

मान्धाता क्व गतस्त्रिलोकविजयी, राजा क्व सत्यव्रतो,
देवानां नृपतिः गतः क्व नहुषस्सच्छास्त्रवान् केशवः।
मन्यन्ते सरथाः सकुञ्जरवराः शक्रासनाध्यासिनः,
कालेनैव महात्मना त्वनुकृताः कालेन निर्वासिताः॥

काल की महिमा पञ्चतन्त्र/काकोलूकीय/232

Mandhātā kva gatastrilokavijayī, rājā kva Satyavrato,
Devānāṁ nṛpatiḥ gataḥ kva Nahuṣassacchāstravān Keśavaḥ।
Manyante sarathāḥ sakuñjaravarāḥ Śkrāsanādhyāsinaḥ,
Kālenalva mahātmanā tvanukṛtāḥ kālena nirvāsitāḥ॥

Greatness of time Pañca. / Kāko. / 232

तीनों लोकों पर विजय प्राप्त करने वाला मान्धाता कहाँ गया? राजा सत्यव्रत कहाँ हैं? देवताओं का राजा नहुष कहाँ गया? श्रेष्ठ शास्त्रों का विद्वान्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृष्ण कहाँ गया? ऐसा माना जाता है कि इन्द्र के आसन पर बैठने वालों को भी बढ़िया-बढ़िया रथों और हाथियों के साथ ही महात्मा काल ने ही ऊँचा उठाया था और फिर काल ने ही उन्हें संसार से विदा कर दिया।

Where has gone Māndhātā, the conqueror of the three worlds, where has gone the king Satyavrata, where is Nahuṣa, the king of gods now and where is Krishna the scholar of all good scriptures? It is said that even the persons who enjoyed the throne of Indra, with their chariots and grand elephants made progress by time and they were sent away from this world by time.

(1081)

मान्यः कुलीनः कुलजात्कलावान्,
विद्वान् कलाज्ञाद् विदुषः सुशीलः।
धनी सुशीलाद्धनिनोऽपि दाता,
दातुर्जिता कीर्तिरयाचकेन॥

मान के योग्य व्यक्ति चतुर्वर्गसङ्ग्रह/1/26

Mānyaḥ kulīnaḥ kulajātkalāvān,
Vidvān kalājñād viduṣaḥ suśilaḥ।
Dhanī suśīlāddhanino'pi dātā,
Dāturjita kīrtirayācakena॥

Admirable persons Caturvarga. / 1 / 26

कुलीन व्यक्ति माननीय होता है, कलाकार कुलीन से भी अधिक माननीय होता है, विद्वान् कलाकार से भी अधिक माननीय होता है, विद्वान् से भी अधिक सुशील व्यक्ति, उससे भी अधिक धनी और उससे भी अधिक दानी पूजनीय होता है। पर जिस व्यक्ति ने कभी याचना नहीं की, उसने दानी की कीर्ति को भी जीत लिया है।

A well-born person is respectable and an artist is respectable than him. A scholar is more respectable than an artist. A man of good moral character is more respectable than a scholar. A richman is more respectable than a scholar and a generous man deserves more respect than a richman. But the person who never begs wins the fame of even the generous person.

(1082)

मा प्र गाम पथो वयं मा यज्ञादिन्द्र सोमिनः।
मान्तः स्थुर्नो अरातयः॥

शुभ मार्ग से विचलित न हों ऋ./10/57/1

Mā pra gāma patho vayaṁ mā yajñādindra sominaḥ।
Māntaḥ sthurno arātayaḥ॥

Ṛg / 10 / 57 / 1

हे इन्द्र, परमैश्वर्यशाली भगवन्! हम आपके उपासक लोग यज्ञ के मार्ग से कभी विचलित न हों अर्थात् सदा दान, आप की उपासना और सत्सङ्गति के मार्ग को न छोड़ें। ऐसी कृपा करो कि हमारे मध्य कोई भी कृपण और जमाखोर व्यक्ति न रहे।

O Indra, the possesser of the supreme riches God! We, your devotees, never deviate from the path of Yajña; from charity, from devotion and from

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

good company. Be kind to us, as no such person should remain in our society, who is miserly.

(1083)

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्, मा स्वसारमुत स्वसा।
सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा, वाचं वदत भद्रया॥

घर में रहने के ढंग अथर्व./3/30/3

Mā bhrātā bhrātaraṁ dvikṣan, mā svasāramuta svasā |
Samyañcaḥ savratā bhutvā vācaṁ vadata bhadrayā ||

Atharva. / 3 / 30 / 3

Method to remain in a house

भाई-भाई से द्वेष न करे, बहिन-बहिन के प्रति शत्रु भाव न रखे। हे मनुष्यो! मैं, ईश्वर, तुम्हें समझाता हूँ कि तुम सभी अच्छे कर्म करने वाले बनो और श्रेष्ठ नियमों का समान रूप से पालन करते हुए कल्याणकारी मीठी वाणी ही बोलो।

A brother should not be an enemy of a brother. A sister should not have malice for her sister. O men! I, God, advise you that all of you should do good works and perform good equal principles, speak useful and sweet language.

(1084)

मायया शत्रवो वध्या अवध्याः स्युर्बलेन ये।
यथा स्त्रीरूपमास्थाय हतो भीमेन कीचकः॥

शत्रु सर्वथा मारने योग्य पञ्चतन्त्र/काकोलूकीय/29

Māyayā śatravo vadhyā avadhyāḥ syurbalena ye |
Yathā strīrūpamāsthāya hato Bhīmena Kīcakaḥ ||

Pañca. / Kāko. / 29

Enemy to be killed by any means

जो शत्रु सीधे ढंग से न मारे जा सकें, उन्हें छल-कपट से मार डालना चाहिए; जैसे भीम ने स्त्री का वेश धारण कर कीचक को मार डाला था।

The enemies who cannot be killed easily, may be killed with deception; as Bhīma killed Kīchaka adopting disguise of a woman.

(1085)

मारुतोदकवेगेन ये नमन्त्युन्नमन्ति च।
ओषध्यः पादपा गुल्मा न ते यान्ति पराभवम्॥

नम्रता और अभिमान महाभा./शान्तिपर्व/113/11

Mārutodakavegena ye namantyunnamanti ca |
Oṣadhyaḥ pādapā gulmā na te yānti parābhavam ||

Mahābhā. / Śāntip. / 113 / 11

Humbleness and pride

वायु और पानी के वेग से जो ओषधियाँ, पेड़ और झाड़ियाँ झुक जाते और फिर खड़े हो जाते हैं, वे तिरस्कार को प्राप्त नहीं होते, अर्थात् नष्ट नहीं होते।

The herbs, trees and bushes which bow down and stand up with the velocity of air and water are never destroyed.

(1086)

मासानष्टौ यथा सूर्यस्तोयं हरति रश्मिभिः।
सूक्ष्मेणैवाभ्युपायेन तथा शुल्कादिना नृपः॥

कर लेने की विधि मार्कण्डेयपुराण/24/25

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Māsānaṣṭau yathā sūryastoyaṁ harati raśmibhiḥ ।
Sukṣmeṇaivābhyupāyena tathā śulkādinā nṛpaḥ ॥

Mārkaṇḍeyapu. / 24 /25

How to collect taxes

जिस प्रकार आठ महीनों तक सूर्य किरणों से जल खींचता रहता है, उसी प्रकार सूक्ष्म उपाय से राजा को प्रजा से धीरे-धीरे करों द्वारा धन लेना चाहिए।

Just as the sun pulls water with it rays for eight months, in the same manner a king should receive money from his subjects slowly and steadily in the form of taxes.

(1087)

मितं ददाति हि पिता मितं भ्राता मितं सुतः।
अमितस्य तु दातारं भर्तारं का न पूजयेत्॥

पति का गौरव वा. रामायण/अरण्यकाण्ड/39/30

Mitaṁ dadāti hi pitā, mitaṁ bhrātā mitaṁ sutaḥ ।
Amitasya tu dātāraṁ bhartāraṁ kā na pūjayet ॥

Vā. Rā. / Araṇya. / 39 / 30

Greatness of the husband

पिता, भाई और पुत्र सीमित मात्रा में ही सुख तथा धन देते हैं। असीम मात्रा में सुख तथा धन देने वाले पति की कौन स्त्री पूजा नहीं करेगी? अर्थात् वह तो पूजा के ही योग्य है।

Father, brother and sons give only limited happiness and wealth. Which woman would not adore a husband who gives unlimited happiness and wealth?

(1088)

मित्रं च शत्रुतामेति कस्मिंश्चित् कालपर्यये।
शत्रुश्च मित्रतामेति, स्वार्थो हि बलवत्तरः॥

महाभा./शान्ति/138/142

मित्रता और शत्रुता में कारण - स्वार्थ

Mitraṁ ca śatrutāmeti, kasmiṁścit kālaparyaye ।
Śatruśca mitratāmeti, svārtho hi balavattaraḥ ॥

Mahābhā. / Śānti / 138 / 142

Selfishness—cause in friendship or enmity

समय बदलने पर कभी-कभी मित्र शत्रु बन जाता है और शत्रु मित्र, क्योंकि स्वार्थ ही अधिक बलवान् होता है।

In the adverse conditions, sometimes the friend becomes an enemy and an enemy becomes a friend, as selfishness is stronger than other things.

(1089)

मित्रद्रोही कृतघ्नश्च यश्च विश्वासघातकः।
ते नरा नरकं यान्ति यावच्चन्द्रदिवाकरौ॥

नरक के योग्य पञ्च./मित्रभेद/372

Mitradrohī kṛtaghnaśca yaśca viśvāsaghātakaḥ ।
Te narā narakaṁ yānti yāvaccandradivākarau ॥

Deserving hell Pañca. / Mitrabhe. / 372

मित्र से शत्रुता करने वाला, उपकार भूल जाने वाला और जो विश्वासघातक है, वे लोग तब तक नरक में रहते हैं, जब तक चाँद और सूर्य हैं।

One who shows enmity towards his friend, one who is ungrateful and

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

one who is not trustworthy, these remain in hell as long as the moon and the sun exist.

(1090)

मित्रवान् साधयत्यर्थान् दुःसाध्यानपि वै यतः।
तस्मान्मित्राणि कुर्वीत समानान्येव चात्मनः॥

मित्रों का महत्त्व पञ्च./मित्रसम्प्राप्ति/28

Mitravān sādhayatyarthān duḥsādhyānapi vai yataḥ।
Tasmānmitrāṇi kurvīta samānānyeva cātmanaḥ॥

Pañca. / Mitrasam. / 28

Usefulness of friends

जिसके अनेक मित्र होते हैं, वह कठिन से कठिन भी कार्यों को सिद्ध कर लेता है। इस कारण मनुष्य को अपने जैसे ही अनेक मित्र बनाने चाहिएँ।

One, who has many friends, can get success in even difficult works. Therefore one should make many friends like himself.

(1091)

मुक्तिमिच्छसि चेत्तात, विषयान् विषवत्त्यज।
क्षमार्जवदयाशौचं सत्यं पीयूषवत्पिब॥

मुक्ति का मार्ग चाणक्यनीति/9/1

Muktimicchasi cettāta, viṣayān viṣavattyaja।
Kṣamārjavadayāśaucaṁ satyaṁ pīyūṣavatpiba॥

Way to salvation Cā. Nīti / 9 / 1

हे प्रिय! यदि तुम मुक्ति चाहते हो, तो कामक्रोधादि विषयों को विष के समान समझ कर छोड़ दो और सहनशीलता, सरलता, दया, पवित्रता तथा सत्य को अमृत समझकर इनका पान करो; अर्थात् इन्हें अपनाओ।

O dear! If you are desirous of salvation, you must abandon sensual passions like the poison and drink the nectar of forbearance, simplicity, kindness, purity and truth. It means that you should adopt these qualities in your life.

(1092)

मुहुर्विघ्नितकर्माणं द्यूतकारं पराजितम्।
नालापयेद्विवेकज्ञो यदीच्छेत् सिद्धिमात्मनः॥

आलाप न करने योग्य पञ्च./मित्रभेद/338

Muhurvighnitakarmāṇaṁ dyūtakāraṁ parājitam।
Nālāpayedvivekajño yadīcchet siddhimātmanaḥ॥

Unfit to talk Pañca. / Mitrabhe. / 338

यदि समझदार मनुष्य अपनी सफलता अथवा कल्याण चाहता है, तो उसे ऐसे लोगों से बात नहीं करनी चाहिए, एक तो जिसके कार्यों में बारम्बार विघ्न आ पड़ते हों और दूसरे हारे हुए जुआरी से।

If a wiseman wishes his success or welfare, he should not have any talk with such persons, whose work has been interrupted with obstacles again and again and the second, who has been defeated in gambling.

(1093)

मुहूर्त्तमपि जीवेच्च नरः शुक्लेन कर्मणा।
न कल्पमपि दुष्टेन लोकद्वयविरोधिना॥

छोटा भी शुभ जीवन श्रेष्ठ चाणक्यनीति/13/1

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Muhūrttamapi jīvecca naraḥ śuklena karmaṇā |
Na kalpamapi duṣṭena lokadvayavirodhinā ||

Admirable life Cā. Nīti / 13 / 1

पवित्र कर्म करते हुए थोड़ी देर तक भी जीना मनुष्य के लिए उत्तम है परन्तु दोनों लोकों को बरबाद करने वाले बुरे कर्म को करते हुए लाखों वर्षों का जीवन भी बुरा है।

If a man lives for a little time doing good works that is better than living for a long time doing bad works which spoil this and that both worlds.

(1094)

मूर्खस्तु परिहर्त्तव्यः प्रत्यक्षो द्विपदः पशुः।
भिनत्ति वाक्यशूलेन अदृश्यं कण्टकं यथा॥

कटुभाषी मूर्ख त्याज्य है चाणक्यनीति/3/7

Mūrkhastu pariharttavyaḥ pratyakṣo dvipadaḥ paśuḥ |
bhinatti vākyaśūlena adṛśyaṁ kaṇṭakaṁ yathā ||

Keep off bitter talking fool Cā. Nīti / 3 / 7

जो मूर्ख अपने कटु वचनों रूपी बर्छे से अदृश्य कांटे के समान हृदय को बींध देता है, उसे दूर से ही त्याग देना चाहिए। वह तो मनुष्य की आकृति में दोपाया जानवर ही है।

The fool who pierces the minds of others with the thorn of his bitter words, must be discarded, as he is an animal having only two feet.

(1095)

मूर्खाः यत्र न पूज्यन्ते, धान्यं यत्र सुसञ्चितम्।
दम्पत्योः कलहो नास्ति, तत्र श्रीः स्वयमागता॥

प्रशंसनीय गृहस्थ चाणक्यनीति/3/21

Mūrkhāḥ yatra na pūjyante, dhānyaṁ yatra susañcitam |
Dampatyoḥ kalaho nāsti, tatra śrīḥ svayamāgatā ||

Admirable house Cā. Nīti / 3 / 21

जहाँ मूर्खों की पूजा नहीं होती, जहाँ अनाज जमा रहता है और पति-पत्नी में जहाँ झगड़ा नहीं होता, वहाँ लक्ष्मी स्वतः आई हुई समझनी चाहिए।

Wealth itself comes there, where fools are not worshipped, edibles remain stored and husband and wife have no dispute between them.

(1096)

मूर्खाणां पण्डिताः द्वेष्या निर्धनानां महाधनाः।
व्रतिनः पापशीलानामसतीनां कुलस्त्रियः॥

शत्रुता के आधार पञ्च./मित्रभेद/368

Mūrkhāṇāṁ paṇḍitāḥ dveṣyā nirdhanānāṁ mahādhanāḥ |
Vratinaḥ pāpaśīlānāmasatīnāṁ kulastriyaḥ ||

Pañca. / Mitrabhe. / 368

Basis of enmity

मूर्ख लोग विद्वानों से द्वेष करते हैं, निर्धन लोग बड़े धनिकों से, पापी लोग पुण्य करने वालों से और भ्रष्ट स्त्रियाँ खानदानी स्त्रियों से द्वेष करती हैं।

Fools have enmity with scholars, the poor with the rich, sinners with the persons performing good deeds and bad ladies have enmity with the noble ladies.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(1097)

मृगा मृगैः सङ्गमनुव्रजन्ति,
गावश्च गोभिस्तुरगास्तुरङ्गैः।
मूर्खाश्च मूर्खैः, सुधियः सुधीभिः,
समानशीलव्यसनेषु सख्यम्॥

जैसे का संगी तैसा पञ्च./मित्रभेद/226

Mṛgā mṛgaiḥ saṅgamanuvrajanti,
Gāvaśca gobhisturagāsturaṅgaiḥ।
Mūrkhāśca mūrkhaiḥ sudhiyaḥ sudhībhiḥ,
Samānaśīlavyasaneṣu sakhyam॥

Pañca. / Mitrabhe. / 226

Friends have equal qualities

हरिण हरिणों के साथ, गौएँ गौओं के साथ, घोड़े घोड़ों के साथ, मूर्ख मूर्खों के साथ और बुद्धिमान् बुद्धिमानों के साथ चलते-फिरते हैं। मित्रता प्रायः समान स्वभाव और आदतों वालों में ही हुआ करती है।

Deers go with deers, cows go with cows, horses remain with horses, fools accompany fools and intellectuals remain with intellectuals. So, the friendship takes place in those who have similar habits and nature.

(1098)

मृतस्य कीर्त्या किं कार्यं भस्मीभूतस्य देहिनः।
मृतः कीर्तिं न जानीते जीवन् कीर्तिं समश्नुते॥

कीर्ति का लाभ महाभारत वन प०/301/6

Mṛtasya kīrtyā kiṁ kāryaṁ bhasmībhūtasya dehinaḥ।
Mṛtaḥ kīrtiṁ na jānīte, jīvan kīrtiṁ samaśnute॥

Use of fame Mahābhā. / Vana. / 301 / 6

जिस व्यक्ति का शरीर मरने पर जल कर राख हो गया, उसे कीर्ति से क्या लेना? मरे हुए को कीर्ति का क्या पता? कीर्ति का भोग तो व्यक्ति जीते हुए ही करता है।

The dead person whose body has turned into ashes has nothing to get from his fame. The dead person does not know about his fame. A man enjoys his good name only when he is living.

(1099)

मृत्योः पदं योपयन्त एत,
द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः।
आप्यायमानाः प्रजया धनेन,
शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः॥

शुभ कर्मों वाली दीर्घ आयु ऋग्./10/18/2

Mṛtyoḥ padaṁ yopayanta eta,
Drāghīya āyuḥ prataraṁ dadhānāḥ।
Āpyāyamānāḥ prajayā dhanena,
Śuddhāḥ pūtā bhavata yajñiyāsaḥ॥

Ṛg. Vai. / 10 / 18 / 2

Longlife with good works

हे यज्ञिय लोगो, हे उत्तम कर्म करने वालो, तुम मृत्यु के कदम को पीछे धकेलते हुए, लम्बी से लम्बी आयु प्राप्त करते हुए तथा सन्तान एवं धन से बढ़ते हुए अपने जीवन को शुद्ध और पवित्र बनाए रखो।

O the doer of good works, try

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

to keep far the pace of death, obtain long and longer life and increasing with your offsprings and wealth, retain your life clean and pure.

(1100)

मृत्योर्बिभेषि किं बाल! न स भीतं विमुञ्चति।
अद्य वाऽब्दशतान्ते वा मृत्युर्वै प्राणिनां ध्रुवः॥

मृत्यु से मत डरो पञ्च./मित्रभेद/370

Mṛtyorbibheṣi kiṁ bāla! na sa bhītaṁ vimuñcati |
Adya va'bdaśatānte vā mṛtyurvai prāṇināṁ dhruvaḥ ||

Pañca. / Mitrabhe. / 370

Donot be afraid of death

अरे भोलेभाले मनुष्य! तुम मृत्यु से क्यों डरते हो? वह डरने वाले को छोड़ नहीं देती। यह समझ लो कि आज या सौ वर्षों के बाद सभी प्राणियों की मृत्यु निश्चित रूप से होनी ही है।

O innocent man! Why are you afraid of the death? It never abandons the person who is frightened. Be certain, that every body must die today or after hundred years.

(1101)

मृदुं वै मन्यते पापो भाषमाणमशक्तिकम्।
जितमर्थं विजानीयादबुधो मार्दवे सति॥

मीठा बोलना दुर्बलता नहीं है महाभा./उद्योग/4/6

Mṛduṁ vai manyate pāpo bhāṣamāṇamaśaktikam |
Jitamarthaṁ vijānīyādabudho mārdave sati ||

Sweet Mahābhā. / Udyoga / 4/ 6

speaking is not the sign of weakness

नासमझ, पापी व्यक्ति मीठा बोलने वाले को शक्तिहीन समझने लगता है और अपने स्वार्थ को उसके द्वारा सिद्ध हुआ मान लेता है, जो केवल उसकी मूढ़ता है।

A foolish, sinner person takes sweet speaking person as powerless and weak and thinks that he will be successful in gaining his selfish interest from him, which is only his foolishness.

(1102)

मृदुनाऽपि सुवृत्तेन सुमिष्टेनापि हारिणा।
मोदकेनापि किं तेन निष्पत्तिर्यस्य सेवया॥

पञ्च./मित्रभेद/215

सेवा का फल तो महान् होना चाहिए

Mṛdunā'pi suvṛttena sumiṣṭenāpi hāriṇā |
Modakenāpi kiṁ tena niṣpattiryasya sevayā ||

Pañca. / Mitrabhe. / 215

The fruit of service should be better

कोमल, गोलमटोल, खूब मधुर, और मनपसन्द भी उस लड्डू से क्या लाभ, जो सेवा करके प्राप्त हुआ हो। (भाव यह है कि सेवा जैसे कठिन कार्य का बदला एक लड्डू पूरा नहीं कर सकता, उसके बदले तो कोई बड़ी वस्तु ही चाहिए।)

If a ball of sweet which is soft, round shaped, very sweet and very delicious is obtained after hard service, that has no meaning. (It means that to serve a person's hardwork can not be paid only by a ball of sweet.)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(1103)

मृदुनाप्यवमन्यन्ते तीक्ष्णादुद्विजते जनः।
मा तीक्ष्णो मा मृदुर्भूस्त्वं तीक्ष्णो भव मृदुर्भव॥

महाभारत, शान्तिपर्व/103/34

तीक्ष्णता और मृदुता दोनों आवश्यक

Mṛdunāpyavamanyante tīkṣṇādudvijate janaḥ।
Mā tīkṣṇo mā mṛdurbhūstvaṁ tīkṣṇo bhava mṛdurbhava॥

Mahābhā. / Śānti. / 103 / 34

Be soft and harsh at due time

कोमल स्वभाव के व्यक्ति की लोग अवज्ञा करते हैं और कठोर से उन्हें उद्वेग होता है। तू न कठोर बन और न कोमल। कठोर और कोमल दोनों बन।

A mild person is always disregarded. If he becomes fierce i.e. strikes people with fear, people turn away from him. Therefore neither be fierce nor be so mild. Be both—fierce and mild.

(1104)

मृदुना सलिलेन खन्यमाना-
न्यवघृष्यन्ति गिरेरपि स्थलानि।
उपजापविदां च कर्णजापैः,
किमु चेतांसि मृदूनि मानवानाम्॥

चुगलखोरों के वचनों का प्रभाव पञ्च./मित्रभेद/247

Mṛdunā salilena khanyamānā
nyavaghṛṣyanti girerapi sthalāni।
Upajāpavidāṁ ca karṇajāpaiḥ,
Kimu cetāṁsi mṛdūni mānavānām॥

Pañca. / Mitrabhe. / 247

Effects of the words of back-biters

कोमल जल से खोदे जाते हुए पहाड़ के भी प्रदेश घिस जाते हैं। ऐसी दशा में क्या चतुर चुगलखोरों की चुगलखोरियों के कारण मनुष्यों के कोमल हृदय प्रभावित नहीं होंगे? अर्थात् उन पर अवश्य प्रभाव पड़ेगा।

When the parts of a mountain can be deteriorated by very soft water, then will the soft hearts of men not be effected by the backbiting of the persons who are expert in back-biting?

(1105)

मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा॥

मेरे बुजुर्ग मुझे बुद्धि-सम्पन्न करें यजु./32/15

Medhāṁ me varuṇo dadātu medhāmagniḥ prajāpatiḥ।
Medhāmindraśca vāyuṣca medhāṁ dhātā dadātu me svāhā॥

May I get intellect Yaju. / 32 / 15
from the superior one's

अतिश्रेष्ठ विद्वान् धर्मयुक्त क्रिया से मुझे शुद्ध बुद्धि तथा धन को दें। विद्या से प्रकाशित प्रजा का रक्षक मुझे मेधा बुद्धि दे। परम ऐश्वर्यवान् मुझे बुद्धि दे। शक्तिशाली पुरुष मुझे बुद्धि दे और संसार को धारण करने वाला परमेश्वर भी मुझे बुद्धि और धन दे। तात्पर्य यह है कि विद्वानों, प्रजा-रक्षकों, ऐश्वर्यशाली और शक्तिशाली लोगों के सम्पर्क से तथा प्रभुभक्ति से अपनी बुद्धि और धन को बढ़ाना चाहिए।

A good learned person should give me pure intellect and wealth with

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

his moral practice. The protector of the people who is enlightened with knowledge should give me intelligence. A wealthy person should give me understanding and God who is maintaining this world should give me pure intellect and wealth. The substance is that a person should learn the ways of increasing intellect and wealth from the said persons and pray to God to help him in his work.

(1106)

मेधामहं प्रथमां ब्रह्मण्वतीं,
ब्रह्मजूतामृषिष्टुताम् ।
प्रपीतां ब्रह्मचारिभि-
र्देवानामवसे हुवे ॥

इन्द्रिय-विजेता बनने के लिए अथर्व./6/108/2
श्रेष्ठ बुद्धि

Medhāmahaṁ prathamāṁ brahmaṇvatīṁ,
Brahmajūtāmṛṣiṣṭutām ।
Prapītāṁ brahmacāribhir-
devānāmavase huve ॥

Good intellect to control senses Atharva / 6 / 108 / 2

मैं ईश्वर, वेद, अन्न, धन आदि को धारण करने वाली सर्वश्रेष्ठ ज्ञानियों द्वारा सेवन की गई, ऋषियों द्वारा प्रशंसित और ब्रह्मचारियों द्वारा अच्छी प्रकार पान की गई धारणावती बुद्धि को दिव्यगुणों अथवा अपनी ज्ञानेन्द्रियों की रक्षा के लिए आह्वान करता हूँ, स्वीकार करता हूँ या धारण करता हूँ।

I, a devotee is trying to have such a wisdom which gives the knowledge of God, the Vedas, edibles and wealth, which is adopted by the best learned people, is appreciated by the sages and is drunk by Brahmacārīs for good qualities and for the protection of the senses.

(1107)

मैत्री सद्भिः समं कुर्यात्, स्नेहं सत्सु तु सर्वथा।
सत्सङ्गं साधुभिः कुर्यात्, असत्सङ्गं परित्यजेत्॥

सत्संगति करो, कुसंगति त्याग दो भावप्र./दिनचर्या/249

Maitrī sadbhiḥ samaṁ kuryāt, snehaṁ satsu tu sarvathā ।
Satsaṅgaṁ sādhubhiḥ kuryāt, asatsaṅgaṁ parityajet ॥

Adopt good company Bhāva. / Dina. / 249

सज्जनों से ही मित्रता करनी चाहिए, सज्जनों के प्रति ही सब प्रकार से प्यार दिखाना चाहिए, श्रेष्ठ व्यक्तियों की ही संगति करनी चाहिए और दुष्टों का संग छोड़ देना चाहिए।

Friendship should be made with good people and love also should be shown towards good people in all respects. Also company of good people should be joined and the company of bad persons should be abandoned.

(1108)

मोक्षसाधनमप्येष तपो दूषयति क्षणात्।
चतुर्वर्गरिपुः क्रोधः क्रोधः स्वपरनाशकः॥

क्रोध से हानियाँ हरिवंशपुराण/61/63

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Mokṣasādhanamapyeṣa tapo dūṣayati kṣaṇāt ।
Caturvargaripuḥ krodhaḥ, krodhaḥ svaparanāśakaḥ ॥

Losses due to anger Harivsaṁśa / 61 / 63

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इस चतुवर्ग का शत्रु क्रोध है। यह मोक्ष की साधनभूत तपस्या को भी क्षण-भर में दूषित कर देता है। क्रोध अपने और पराये का भी नाश कर देता है।

Morality, finance, love and salvation are called a group of four. Anger is the enemy of this group. It also spoils the penance in a moment which is a means of salvation. It is anger, which is the destroyer of oneself and of others.

(1109)

मोघमन्नं विन्दति चाप्यचेताः,
स्वर्गाल्लोकाद् भ्रश्यति नष्टचेष्टः।
भीतं प्रपन्नं प्रददाति यो वै,
न तस्य हव्यं प्रगृह्णन्ति देवाः ॥

महाभा./उद्योग./12/20

शरणागत को शत्रु को सौंपना निन्दनीय है

Moghamannaṁ vindati cāpyacetāḥ,
Svargāllokād bhraśyati naṣṭaceṣṭaḥ ।
Bhītaṁ prapannaṁ pradadāti yo vai,
Na tasya havyaṁ pragṛhṇanti devāḥ ॥

Mahābhā. / Udyoga / 12 / 20

Condemnable to hand over a refugee

जो डरे हुए और शरण में आए हुए को शत्रु को सौंप देता है, उस मूढ़ का खाया-पिया अन्न निष्फल हो जाता है। निश्चेष्ट होकर वह स्वर्ग लोक से गिर जाता है और उसकी आहुतियों को भी देवता स्वीकार नहीं करते।

One who hands over an afraid and demanding refuge person to his enemy is a fool and all his eating and drinking becomes useless. He falls from the heaven and gods don't accept his dedications.

(1110)

मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः,
सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य।
नार्यमणं पुष्यति नो सखायम्,
केवलाघो भवति केवलादी ॥

अकेला खाने वाला पापी होता है ऋ./10/117/6

Moghamannaṁ vindate apracetāḥ,
Satyaṁ bravīmi vadha itsa tasya ।
Nāryamaṇaṁ puṣyati no sakhāyam,
Kevalāgho bhavati kevalādī ॥

Ṛg. / 10 / 117 / 6

He is a sinner who eats alone

अज्ञानी व दान न देने वाला व्यक्ति व्यर्थ ही अन्न आदि पदार्थों को प्राप्त करता है। मैं परमेश्वर अथवा विद्वान् यह सत्य बात कह रहा हूँ कि उसके धन का संग्रह उसका नाशक ही है। उसका धन न तो सत्यवादी विद्वान् या शासक का ही पोषक होता है और न ही उससे मित्र को कुछ लाभ पहुँचता है। इस प्रकार अकेले खाने वाला व्यक्ति केवल पाप-कर्म ही करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

A fool who never gives alms gets useless edibles and other things. I, God or a learned man, state this truth that earning of his money is harmful to him. His money is neither the helper of truthful learned man nor of the government and nor is helpful for his friend. Hence, one who eats alone is an embodiment of sins.

(1111)

मौनान्मूकः प्रवचनपटुर्वाचको जल्पको वा,
धृष्टः पार्श्वे वसति च तदा दूरतश्चाप्रगल्भः।
क्षान्त्या भीरुर्यदि न सहते प्रायशो नाभिजातः,
सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः॥

सेना के कार्य में कठिनाइयाँ नीतिशतक/54

Maunānmūkaḥ pravacanapaṭurvācako jalpako vā,
Dhṛṣṭaḥ pārśve vasati ca tadā dūrataścāpragalbhaḥ।
Kṣāntyā bhīruryadi na sahate prāyaśo nābhijātaḥ,
Sevādharmaḥ paramagahano yogināmapyagamyaḥ॥

Problems in service Nitiśataka / 54

सेवक यदि चुप रहता है, तो उसे गूँगा और यदि बातचीत करने में निपुण हो तो उसे बहुत बोलने या बकवास करने वाला कहा जाता है। यदि पास रहता है तो उसे ढीठ और यदि दूर रहता है तो मूर्ख माना जाता है। यदि सहनशील है तो उसे डरपोक और यदि नहीं सहता तो उसे अकुलीन कहा जाता है। अतः सेवा का कार्य बहुत ही कठिन है; योगी भी इसे न समझ सकते हैं और न निभा सकते हैं।

If a servant remains silent, he is considered as dumb and if he is expert in talking, then he is called talkative or babbler. If he remains near, then he is considered impudent and if stays at some distance, then is taken as a fool. If he tolerates, then he is called coward and if he does not tolerate then called of low family. In this way the duty of service is very hard. Even the yogīs cannot understand and perform it.

य = Ya

(1112)

यं मातापितरौ क्लेशं सहेते सम्भवे नृणाम्।
न तस्य निष्कृतिः शक्या, कर्तुं वर्षशतैरपि॥

माता-पिता का ऋण मनु./2/227

Yaṁ mātāpitarau kleśaṁ sahete sambhave nṛṇām।
Na tasya niṣkṛtiḥ śakyā, kartuṁ varṣaśatairapi॥

Debt of parents Manu. / 2 / 227

मनुष्यों के जन्म तथा पालन-पोषण में माता-पिता जिस कष्ट को सहन करते हैं, उसका बदला सौ वर्षों में भी नहीं चुकाया जा सकता।

The troubles which are tolerated by the parents during birth and also development of their offsprings, can not be repaid even in hundreds of years.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(1113)

यः कश्चिदप्यसम्बद्धो, मित्रभावेन वर्त्तते।
स एव बन्धुस्तन्मित्रं, सा गतिस्तत्परायणम्॥

मित्र का स्वरूप महाभा./उद्योगपर्व/33/38

Yaḥ kaścidapyasambaddho mitrabhāvena varttate |
Sa eva bandhustanmitraṁ, sā gatistatparāyaṇam ||

Mahābhā. / Udyoga. / 33 / 38

Signs of a friend

बिना किसी सम्बन्ध के भी जो व्यक्ति मित्रता का व्यवहार करता है, वही सम्बन्धी है और वही मित्र है, वही उन्नति में सहायक है और वही कार्य-साधक है।

One, who even without any relation behaves as a friend, is really a relative, a friend and helper in the progress and also completes the work.

(1114)

यः पश्चात् पूर्वकार्याणि कर्तुमभिचिकीर्षति।
पूर्वं चापरकार्याणि स न वेद नयानयौ॥

वा.रामा./युद्धकाण्ड/32

कार्यों को क्रमशः न करने वाला अज्ञानी है

Yaḥ paścāt pūrvakāryāṇi kartumabhicikīrṣati |
Pūrvaṁ cāparakāryāṇi, sa na veda nayānayau ||

One who does Vā. Rā. / Yuddha. / 32
not do works in due times, is a fool

जो व्यक्ति पहले करने योग्य कार्यों को पीछे करना चाहता है और पीछे वाले कार्यों को पहले करना चाहता है, वह नीति तथा अनीति का ज्ञान नहीं रखता, अर्थात् वह विवेकशील नहीं है।

One who desires to do the work before, which are to be done after and wishes to do the work after, which are to be done earlier, has no discrimination.

(1115)

यः पृष्ट्वा कुरुते कार्यं प्रष्टव्यान् स्वहितान् गुरून्।
न तस्य जायते विघ्नं कस्मिंश्चिदपि कर्मणि॥

विघ्नों से बचने के लिए पञ्च./लब्धप्रणाश/48
बड़ों से परामर्श आवश्यक है

Yaḥ pṛṣṭvā kurute kāryaṁ praṣṭavyān svahitān gurūn |
Na tasya jāyate vighnaṁ kasmiṁścidapi karmaṇi ||

Consultation Pañca. / Labdha. / 48
with elders

जो अपने हितकारी गुरुजनों से पूछने योग्य कार्यों को परामर्श करके करता है, उसके किसी भी कार्य में विघ्न उपस्थित नहीं होता।

One who consults his well-wishing elders about the work which deserves their consultation and then he begins it, faces no obstacle in any work.

(1116)

यः प्रीणयेत् सुचरितैः पितरं स पुत्रो,
यद्भर्तुरेव हितमिच्छति तत्कलत्रम्।
तन्मित्रमापदि सुखे च समक्रियं य-
देतत्त्रयं जगति पुण्यकृतो लभन्ते॥

भाग्यशाली व्यक्ति नीतिशतक/64

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Yaḥ prīṇayet sucaritaiḥ pitaraṁ sa putro,
Yadbhartureva hitamicchati tatkalatram |
Tanmitramāpadi sukhe ca samakriyaṁ ya-
detattrayaṁ jagati puṇyakṛto labhante ||

Lucky persons Nītiśataka / 64

जो अपने पिता को अपने सदाचरण से प्रसन्न कर देता है, वही वस्तुतः पुत्र है। जो पति के ही हित की कामना करती है, वही वस्तुतः पत्नी है। सच्चा मित्र वही है जो संकट और सुख के समय समान रूप से साथ निभाता है। इस प्रकार के तीनों श्रेष्ठ व्यक्तियों को पुण्यशाली लोग ही प्राप्त कर सकते हैं।

He is the real son who pleases his father by his good deeds. She is the real wife who is a well-wisher of her husband. He is a real friend who remains in weal and woe equally. Such kind of three persons are availed only by virtuous persons.

(1117)

यः समुत्पतितं क्रोधं, निगृह्णाति हयं यथा।
स यन्तेत्युच्यते सद्भिर्न यो रश्मिषु लम्बते॥

प्रशंसनीय - क्रोध का विजेता महाभा./आदिपर्व/79/2

Yaḥ samutpatitaṁ krodhaṁ nigṛhṇāti hayaṁ yathā |
Sa yantetyucyate sadbhirna yo raśmiṣu lambate ||

Admirable — controller of rage Mahābhā. / Ādi. / 79 / 2

जो व्यक्ति बढ़े हुए क्रोध को घोड़े के समान वश में कर लेता है, वही वस्तुतः सज्जनों द्वारा वशीकर्ता (यन्ता) कहा जाता है; वह नहीं जो लगाम ही पकड़े रखता है।

The person, who controls advanced rage as one controls a horse, is called the controller by good persons; but not he, who has only reigns in his hand.

(1118)

यः समुत्पतितं क्रोधमक्रोधेन निरस्यति।
देवयानि विजानीहि, तेन सर्वमिदं जितम्॥

विश्व-विजेता कौन है? महाभा./आदिपर्व/79/3

Yaḥ samutpatitaṁ krodhamakrodhena nirasyati |
Devayāni vijānīhi, tena sarvamidaṁ jitam ||

Real winner Mahābhā. / Ādi. / 79 / 3

हे देवयानी! यह बात समझ लो कि जो व्यक्ति किसी के उत्तेजित क्रोध को बिना क्रोध के शान्त कर लेता है, समझो कि उसने सारे संसार को ही जीत लिया है।

O Devayānī! Understand this fact that the person who appeases other's advanced rage without showing any rage, definitely has conquered the whole world.

(1119)

यः स्वपक्षं परित्यज्य परपक्षं निषेवते।
स स्वपक्षे क्षये जाते पश्चात् तैरेव हन्यते॥

वा. रामा./युद्धकाण्ड/16

शत्रुपक्ष से मिलने वाले की दुर्दशा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Yaḥ svapakṣaṁ parityajya parapakṣaṁ niṣevate |
Sa svapakṣe kṣaye jāte paścāt taireva hanyate ||

Bad result for him who joins the enemy side Vā. Rā. / Yuddha. / 16

जो अपने साथियों को छोड़कर शत्रु के पक्ष में चला जाता है, वह अपने साथियों के नष्ट हो जाने के बाद शत्रु-पक्ष के लोगों द्वारा ही मार दिया जाता है।

One who, leaving his own side goes to the enemy's side, when the persons of his side are killed, he is killed only by the enemy-side then.

(1120)

य आतृणत्त्यवितथेन कर्णावदुःखं,
कुर्वन्नमृतं सम्प्रयच्छन्।
तं मन्येत पितरं मातरं च,
तस्मै न द्रुह्येत् कतमच्चनाह ॥

शिक्षक से व्यवहार निरुक्त/2/4

Ya ātṛṇattyavitathena karṇāvaduḥkhaṁ,
Kurvannamṛtaṁ samprayacchan |
Taṁ manyeta pitaraṁ mātaraṁ ca,
Tasmai na druhyet katamaccanāha ||

Treatment with a teacher Nirukta / 2 / 4

जो कानों को बिना कष्ट पहुँचाए अमृत के समान सच्ची विद्या देकर कान खोलता है, उसे पिता और माता मानना चाहिए; उससे किसी भी प्रकार से द्वेष नहीं करना चाहिए।

He who gives the nectar of knowledge without giving any trouble to the ears and telling true things, should be respected as the father and the mother and one should never show any kind of enmity against him.

(1121)

यच्च कामसुखं लोके, यच्च दिव्यं महत्सुखम्।
तृष्णाक्षयसुखस्यैते, नार्हतः षोडशीं कलाम् ॥

महाभा./शान्तिपर्व/267/6

निष्कामता ही परम सुख है

Yacca kāmasukhaṁ loke, yacca divyaṁ mahatsukham |
Tṛṣṇākṣayasukhasyaite, nārhataḥ ṣoḍaśīṁ kalāṁ ||

Mahābhā. / Śānti. / 267 / 6

Desirelessness is best happiness

कामनाओं की पूर्ति से जो सांसारिक सुख मिलता है और जो ऐश्वर्य द्वारा अद्भुत सुख प्राप्त होता है, ये सुख के दोनों प्रकार तृष्णा की समाप्ति से होने वाले सुख के सोलहवें भाग के तुल्य भी नहीं हैं।

The happiness which is obtained after fulfilment of desires and which also gained from prosperity, these two kinds of happiness cannot match even one sixteenth of the contentment which is obtained by the relinquishment of desires.

(1122)

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं,
तदु सुप्तस्य तथैवेति दूरङ्गमम्।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्योतिषां ज्योतिरेकं,
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥

मेरा मन शुभ संकल्पों वाला हो यजु./34/1

Yajjāgrato dūramudaiti daivaṁ,
tadu suptasya tathaiveti dūraṅgamam |
jyotiṣāṁ jyotirekaṁ,
tanme manaḥ śivasaṅkalpamastu ||

May my mind have auspicious determinations Yaju. / 34 / 1

हे परमात्मन्! जो जीवात्मा का साधन, दूर-दूर तक जाने वाला, ज्ञानेन्द्रियों को ज्योति देने वाला (प्रेरक) है और जो जागृत अवस्था में भी दूर भाग जाता है तथा सोते हुए भी वैसे ही दूर चला जाता है, वह मेरा मन कल्याणकारी संकल्पों वाला हो।

O God, the mind which is an instrument of the soul, which gives light to the senses, and which goes very far in the time of awakening and also in sleeping, it may have auspicious determinations and wishes.

(1123)

यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्॥

यज्ञ, ज्ञान और तप के लाभ भग. गीता/18/5

Yajñadānatapaḥkarma na tyājyaṁ kāryameva tat |
Yajño dānaṁ tapaścaiva pāvanāni manīṣiṇām ||

Advantages of sacrifices, charity and penance Bhaga. Gitā / 18 / 5

यज्ञ, दान और तप – ये कर्म तो सभी को करने ही चाहिए, इन्हें छोड़ना नहीं चाहिए। यज्ञ, दान और तप विद्वानों को भी पवित्र करने वाले होते हैं।

Everybody should perform sacrifices, charity and penance and those should not be avoided. Sacrifice, charity and penance are such means which purify the learned people also.

(1124)

यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम्।
नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरुसत्तम॥

यज्ञ से बचे हुए भोजन का लाभ भग. गीता/4/3

Yajñaśiṣṭāmṛtabhujo yānti Brahma sanātanam |
Nāyaṁ loko'styayajñasya kuto'nyaḥ Kurusattama ||

Advantage to eat after sacrifice Bhaga. Gītā/ 4 / 3

हे अर्जुन! यज्ञ से बचे हुए अमृत रूप पदार्थ को जो खाते हैं, वे ही शाश्वत ब्रह्म को प्राप्त करते हैं। जो व्यक्ति यज्ञ नहीं करता, उसके लिए यह संसार भी सुखदायी नहीं, दूसरे लोक की तो बात ही क्या!

O Arjun! The persons who enjoy the things remained after the sacrifice as the nectar, attain the eternal God. Those who don't perform sacrifices cannot be happy in this world, what to say about the other world!

(1125)

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्विषैः।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्॥

अपने लिए ही पकाने वाले पापी हैं भग. गीता/3/13

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Yajñaśiṣṭāśinaḥ santo mucyante sarvakilviṣaiḥ |
Bhuñjate te tvaghaṁ pāpā ye pacantyātmakāraṇāt ||

Those who prepare Bhaga. Gītā / 3 / 13
food only for themselves are sinner

वे पुण्यात्मा जो यज्ञ-शेष खाते हैं, सब पापों से छूट जाते हैं, परन्तु जो पापी केवल अपने लिए ही पकाते हैं, वे तो पाप ही खाते हैं, अर्थात् उनका कल्याण नहीं होता।

The noble persons who eat remained from the sacrifice, get rid of all sins, but the sinners who cook for themselves only, they eat sins. It means that they cannot enjoy real happiness.

(1126)

यज्ञार्थात् कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः।
तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचर॥

यज्ञमय कर्म ही सर्वश्रेष्ठ है भग. गीता/3/9

Yajñārthāt karmaṇo'nyatra loko'yaṁ karmabandhanaḥ |
Tadarthaṁ karma kaunteya muktasaṅgaḥ samācara ||

Bhaga. Gītā / 3 / 9

Sacrificial works are the best

हे अर्जुन! यज्ञीय कर्म के अतिरिक्त यह संसार कर्मबन्धन है। अतः यज्ञ-हेतु ही सब कर्म निःसङ्ग होकर करते चलो।

O Arjun! The works which are not related to sacrifice, are ties of the world. So you should practise sacrificial works only avoiding attachment.

(1127)

यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।
शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥

हम निर्भय होकर रहें यजु./36/22

Yato yataḥ samīhase tato no abhayaṁ kuru |
Śannaḥ kuru prajābhyo'bhayaṁ naḥ paśubhyaḥ ||

Yaju. / 36 / 22

May all of us remain fearless

हे परमात्मन्, जहाँ-जहाँ भी आपकी सत्ता है, वहाँ-वहाँ से हमें निर्भय कर दीजिए। हमारी सन्तानों का कल्याण कीजिए और हमारे पशुओं को भी निर्भयता का दान दीजिए।

O God, from all those places, where you exist, make us fearless. Do good for our offsprings and give fearlessness to our animals also.

(1128)

यतो यतो निश्चरति मनश्चञ्चलमस्थिरम्।
ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत्॥

मन का वशीकरण भग. गीता/6/26

Yato yato niścarati manaścañcalamasthiram |
Tatastato niyamyaitadātmanyeva vaśaṁ nayet ||

Bhaga. / Gītā / 6 / 26

Controlling of the mind

जहाँ-जहाँ से यह चञ्चल और विक्षिप्त मन निकल कर भागे, वहीं-वहीं से इसे रोक कर अपने वश में करना चाहिए।

Wherever this agile and unsteady

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

mind goes, it should be removed from there and should be kept in one's own control.

(1129)

यत्र देशेऽथवा स्थाने भोगान्भुक्त्वा स्ववीर्यतः।
तस्मिन् विभवहीनो यो वसेत्स पुरुषाधमः॥

धनहीनता निन्दनीय पञ्च./मित्रभेद/362

Yatra deśe'thavā sthāne bhogānbhuktvā svavīryataḥ |
Tasmin vibhavahīno yo vasetsa puruṣādhamaḥ ||

Pañca. / Mitrabhe. / 362

Poverty is blamable

जिस देश अथवा स्थान पर अपने बलबूते पर भोगों को भोग कर जीवन बिताया हो, उसी स्थान पर जो व्यक्ति निर्धन बन कर रहता है, वह नीच पुरुष है।

One who lives devoid of money at the same place or country, where he had been with honour and enjoyed all things with his power, is a mean fellow.

(1130)

यत्र न स्यात्फलं भूरि, यत्र च स्यात्पराभवः।
न तत्र मतिमान् युद्धं, समुत्पाद्य समाचरेत्॥

त्याज्य युद्ध पञ्च./मित्रभेद/171

Yatra na syātphalaṁ bhūri, yatra ca syātparābhavaḥ |
Na tatra matimān yuddhaṁ, samutpādya samācaret ||

Condemnable war Pañca. / Mitrabhe. / 171

जहाँ युद्ध करने से अधिक लाभ न हो और जहाँ पराजय का मुँह देखना पड़े, वहाँ बुद्धिमान् व्यक्ति को युद्ध छेड़ने का यत्न नहीं करना चाहिए।

A wise man should not begin and continue a fight there, where he sees no major advantage and where he has to face defeat also.

(1131)

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते, सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः॥

नारी-पूजा का महत्त्व मनु./3/56

Yatra nāryastu pūjyante, ramante tatra devatāḥ |
yatraitāstu na pūjyante, sarvāstatrāphalāḥ kriyāḥ ||

Manu. / 3 / 56

Importance of ladies-respect

जहाँ नारियों का सम्मान होता है, वहाँ दिव्य गुणों वाले आत्मा जन्म लेते हैं और जहाँ इनका सत्कार नहीं होता, वहाँ सभी किए-कराए कर्म निष्फल हो जाते हैं।

Divine souls take birth in such houses, where the women are respected. Where they are not respected, all works become useless there.

(1132)

यत्रापि कुत्रापि गता भवन्ति,
हंसा महीमण्डनमण्डनानि।
हानिस्तु तेषां हि सरोवराणाम्,
येषां मरालैः सह विप्रयोगः॥

श्रेष्ठों का तिरस्कार मत करो अज्ञात

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Yatrāpi kutrāpi gatā bhavanti,
Haṁsā mahīmaṇḍanamaṇḍanāni ।
Hānistu teṣāṁ hi sarovarāṇām,
Yeṣāṁ marālaiḥ saha viprayogaḥ ॥

Don't degrade good ones Unknown

भूमि की शोभा को बढ़ाने वाले हंस तो जहाँ कहीं भी चले जाएँगे, परन्तु उन तालाबों को क्षति पहुँचेगी, जिनसे हंसों का वियोग हो जाएगा। भाव यह है कि श्रेष्ठ व्यक्तियों से आश्रय कदापि नहीं छीनना चाहिए, वे ही तो उस स्थान की शोभा होते हैं।

The swans which increase the beauty of the pond, may go to any place, but the pond which is separated from them will lose its beauty. Hence, the pond will suffer more harm. The sense is that the great persons are the beauty of any place; so they must be kept with oneself.

(1133)

यत्रासते मतिमन्तो मनस्विनः,
शक्रो विष्णुर्यत्र सरस्वती च।
वसन्ति भूतानि च यत्र नित्यम्,
तस्माद् विद्वान् नावमन्येत देहम्॥

मानव-शरीर का महत्त्व महाभा./शान्ति./120/46

Yatrāsate matimanto manasvinaḥ,
Śakro viṣṇuryatra Sarasvatī ca ।
Vasanti bhūtāni ca yatra nityam,
Tasmād vidvān nāvamanyeta deham ॥

Mahābhā. / Śānti / 120 / 46

Speciality of the human body

क्योंकि इसी मानव-देह में ही बुद्धिमान् और विचारशील आत्माएँ निवास करती हैं, इसी में ही इन्द्र, विष्णु और सरस्वती आदि देवता भी भिन्न-भिन्न इन्द्रियों के माध्यम से स्थित रहते हैं और पृथ्वी, जल आदि पाँचों भूत भी इसी में पाए जाते हैं, अतः विद्वान् मनुष्य को अपने शरीर का अपमान या उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

As it is the human body where wise and learned souls live, where Indra, Viṣhṇu and Śarasvatī etc. gods and goddesses have existence in the form of senses and also the five main elements are found in it, so a learned person should not overlook or ignore his own body.

(1134)

यत्रोत्साहसमारम्भो यत्रालस्यविहीनता।
नयविक्रमसंयोगस्तत्र श्रीरचला ध्रुवम्॥

लक्ष्मी के स्थायित्व की विधि पञ्च./मित्रसम्प्राप्ति/136

Yatrotsāhasamārambho yatrālasyavihīnatā ।
Nayavikramasamyogastatra Śrīracalā dhruvam ॥

Pañca. / Mitrasam. / 136

Methods to have riches permanently

जहाँ (जिस घर में) प्रत्येक शुभ कार्य उत्साह के साथ आरम्भ किया जाता है, जहाँ आलस्य का नामोनिशान नहीं होता, जहाँ नीति और बहादुरी दोनों साथ रहते हैं, वहाँ लक्ष्मी का वास स्थायी रूप से होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

The residence where all works are begun with zeal, where laziness has no place and where good conduct and bravery exist jointly, the goddess of wealth certainly lives there permanently.

(1135)

यथा खनित्वा खनित्रेण भूतले वारि विन्दति।
तथा गुरुगतां विद्यां शुश्रूषुरधिगच्छति॥

विद्या पाने की विधि चाणक्यनीति/13/17

Yathā khanitvā khanitreṇa bhūtale vāri vindati |
Tathā gurugatāṁ vidyāṁ śuśrūṣuradhigacchati ||

Cā. Nīti / 13 / 17

Method to receive education

जैसे कोई मनुष्य कुदाल से भूमि को खोदकर नीचे से जल प्राप्त कर लेता है, वैसे ही सेवा करने वाला छात्र गुरु में स्थित विद्या को पा लेता है।

As a man gets ground water by digging the land with a hoe, in the same way a student can get education from his teacher by means of his service.

(1136)

यथाऽऽगारं दृढस्थूणं जीर्णं भूत्वोपसीदति।
तथाऽवसीदन्ति नरा जरामृत्युवशं गताः॥

वा. रामा./अयोध्या./105/18

बुढ़ापे और मृत्यु का प्रभाव

Yathā'gāraṁ dṛḍhasthūṇaṁ jīrṇaṁ bhutvopasīdati |
Tathā'vasīdanti narā jarāmṛtyuvaśaṁ gatāḥ ||

Vā. Rā. / Ayo. / 105 / 18

Effects of old age and death

जैसे मज़बूत खम्भों वाला घर भी पुराना होकर गिर जाता है, उसी प्रकार मनुष्य बुढ़ापे और मृत्यु के वश में जाकर नष्ट हो जाते हैं।

As a house supported with strong pillars deteriorates and falls down with time, in the same manner men die trapped by old age and death.

(1137)

यथा गौर्दुह्यते काले पाल्यते च तथा प्रजा।
सिच्यते चीयते चैव लता पुष्पफलप्रदा॥

शासक का प्रजा से व्यवहार पञ्च./मित्रभेद/166

Yathā gaurduhyate kāle, pālyate ca tathā prajā |
Sicyate cīyate caiva latā puṣpa-phalapradā ||

Pañca. / Mitrabhe. / 166

Behaviour of a ruler with his subjects

जैसे गाय को समय पर दूहते और पालते हैं, वैसे ही जनता से कर भी लिया जाता है और उसको पाला भी जाता है। फूल और फल देने वाली बेल को सींचकर बढ़ाने में ही बुद्धिमत्ता है।

As a cow milked and nourished at proper time, in the same manner taxes should be collected from the people and they should be protected also in time by a king. To water and to allow the growth of the creeper which gives flowers and fruits is a reasonable practice.

(1138)

यथा चतुर्भिः कनकं परीक्ष्यते,
निघर्षणच्छेदन - तापताडनैः।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथा चतुर्भिः पुरुषः परीक्ष्यते,
त्यागेन शीलेन गुणेन कर्मणा ॥

पुरुष की परीक्षा की चार विधियाँ चाणक्यनीति/5/2

Yathā caturbhiḥ kanakaṁ parīkṣyate,
Nigharṣaṇacchedana-tāpatāḍanaiḥ |
Tathā caturbhiḥ puruśaḥ parīkṣyate,
Tyāgena śīlena guṇena karmaṇā ||

Cā. Nīti / 5 / 2

Four methods to test a man

जिस प्रकार सोना रगड़ कर, काट कर, तपा कर और कूट कर इन चार विधियों से परखा जाता है, वैसे ही पुरुष भी त्याग, शील, गुण और कर्म-इन चार वस्तुओं से परखा जाता है।

As gold is examined by four methods—rubbing, cutting, heating and beating, in the same manner a man is tested by four methods—reliquishment, good behaviour, any special art and work.

(1139)

यथा छायातपौ नित्यं सुसम्बद्धौ परस्परम्।
एवं कर्म च कर्ता च संश्लिष्टावितरेतरम् ॥

पञ्च./मित्रसम्प्राप्ति/125

कर्म और कर्ता का स्थायी संबन्ध

Yathā chāyātapau nityaṁ susambaddhau parasparam |
Evaṁ karma ca kartā ca saṁśliṣṭāvitaretaram ||

Eternal Pañca. / Mitrasam. / 125
relation of the work and the worker

जैसे छाया और धूप सदा एक दूसरे से जुड़े रहते हैं, ऐसे ही कर्म तथा कर्ता भी परस्पर सम्बद्ध रहते हैं; वे अलग-अलग नहीं हो सकते।

As the shadow and sunlight are connected to each other, in the same way the deed and the doer both remain connected; Those cannot be separated.

(1140)

यथा धेनुसहस्रेषु वत्सो विन्दति मातरम्।
तथा पूर्वकृतं कर्म कर्तारमनुगच्छति ॥

कर्म की गति महाभा./शान्ति/181/16

Yathā dhenusahasreṣu vātso vindati mātaram |
Tathā pūrvakṛtaṁ karma kartāramanugacchati ||

Mahābhā. / Śānti / 181 / 16

Movement of the deeds

जैसे हज़ारों गौओं में से भी बछड़ा अपनी माँ को पहचान लेता है, उसी प्रकार पहले किया कर्म उसके कर्ता के पीछे पहुँच ही जाता है।

As a calf recognizes his mother among thousands of cows, in the same manner the work done before follows its doer.

(1141)

यथा पूर्वं गजः स्नात्वा गृह्य हस्तेन वै रजः।
दूषयत्यात्मनो देहं तथाऽनार्येषु सौहृदम् ॥

दुष्टों की मित्रता वा. रामा./युद्धकाण्ड/16/15

Yathā pūrvaṁ gajaḥ snātvā gṛhya hastena vai rajaḥ |
Dūṣayatyātmano dehaṁ tathā'nāryeṣu sauhṛdam ||

Vā. Rā. / Yuddha. / 16 / 15

Friendship of bad persons

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जैसे हाथी पहले स्नान करके बाद में सूँड से धूल उठाकर अपना शरीर गंदा कर लेता है, ऐसी ही दुष्टों की मित्रता होती है, अर्थात् पहले बहुत प्रेम दिखाते हैं और बाद में झगड़ने लगते हैं।

As an elephant first takes bath and after that it takes dust with its trunk and makes its body dirty with that dust, so is the case of the mean person's friendship. It means that first they show great love but afterwards they begin to quarrel mutually.

(1142)

यथा फलानां पक्वानां नान्यत्र पतनाद्भयम्।
एवं नरस्य जातस्य नान्यत्र मरणाद् भयम्॥

मृत्यु निश्चित है वा. रामा./अयोध्या./105/17

Yathā phalānāṁ pakvānāṁ nānyatra patanādbhayam |
Evaṁ narasya jātasya nānyatra maraṇād bhayam ||

Vā. Rā. / Ayodh. / 105 / 17

Death is eternal

जैसे पके हुए फलों को नीचे गिरने का ही भय बना रहता है, उसी प्रकार जन्म लेने वाले मनुष्य को भी मृत्यु का ही डर बना रहता है।

As a ripe fruit has fear from falling down only, in the same way the man who is born, has fear from death only.

(1143)

यथा बीजाङ्कुरः सूक्ष्मः प्रयत्नेनाभिरक्षितः।
फलप्रदो भवेत्काले, तद्वल्लोकः सुरक्षितः॥

सुरक्षित प्रजा से लाभ पञ्च./मित्रभेद/167

Yathā bījāṅkuraḥ sūkṣmaḥ prayatnenābhirakṣitaḥ |
Phalaprado bhavetkāle, tadvallokaḥ surakṣitaḥ ||

Pañca. / Mitrabhe. / 167

Advantages from protected subjects

जिस प्रकार बहुत बारीक बीज के अंकुर की सुरक्षा का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता है और वही समय पाकर फल देने लगता है, उसी प्रकार सुरक्षित की गई ही प्रजा से लाभ उठाया जा सकता है।

As very minute shoot from a seed is protected and nourished well and it gives fruits at a proper time, same is the case with the protected subjects.

(1144)

यथा मधुकरस्तर्षात् काशपुष्पं पिबन्नपि।
रसमत्र न विन्देत तथाऽनार्येषु सौहृदम्॥

दुष्टों की मित्रता वा. रामा./युद्धकाण्ड/16/14

Yathā madhukarastarṣāt kāśapuṣpaṁ pibannapi |
Rasamatra na vindeta, tathā'nāryeṣu sauhṛdam ||

Vā. Rā. / Yuddha. / 16 / 14

Friendship of bad persons

जैसे भौंरा प्यासा होने पर कास के फूल को पीता है, परन्तु वहाँ से रस को प्राप्त नहीं करता, उसी प्रकार दुष्टों की मित्रता होती है, जिससे कुछ भी सुख प्राप्त नहीं हो सकता।

As a black bee being thirsty tries to have some nectar from the flower of a reed but gets nothing, same is the case of the friendship of

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

wicked persons, which cannot give peace.

(1145)

यथामिषं जले मत्स्यैर्भक्ष्यते श्वापदैर्भुवि।
आकाशे पक्षिभिश्चैव तथा सर्वत्र वित्तवान्॥

धनिक की दशा पञ्च./मित्रभेद/353

Yathāmiṣaṁ jale matsyairbhakṣyate śvāpadairbhuvi |
Ākāśe pakṣibhiścaiva tathā sarvatra vittavān ||

Pañca. / MItrabhe. / 353

Condition of the rich

जैसे माँस को जल में मछलियाँ, भूमि पर मांसाहारी पशु और आकाश में पक्षी खा जाते हैं, उसी प्रकार धनी व्यक्ति का धन लूटने के लिए सभी सर्वत्र तैयार रहते हैं।

As flesh is eaten by fish in the water, by wild animals on the earth and by birds in the sky, in the same manner all kinds of persons are prepared to seize money from the rich at every place.

(1146)

यथा यथा हि पुरुषः, शास्त्रं समधिगच्छति।
तथा तथा विजानाति, विज्ञानं चास्य रोचते॥

स्वाध्याय का लाभ मनु./4/2

Yathā yathā hi puruṣaḥ, śāstraṁ samadhigacchati |
Tathā tathā vijānāti, vijñānaṁ cāsya rocate ||

Advantage of self-study Manu. / 4 / 2

ज्यों-ज्यों पुरुष शास्त्र को हृदयंगम करता जाता है, त्यों-त्यों उसका विवेक बढ़ता जाता है और विवेक-पूर्ण ज्ञान में उसकी रुचि बढ़ती जाती है।

The more a man becomes an expert in the scriptures, the more his discriminating power extends and he begins to take interest in discrimination.

(1147)

यथार्थकथनं यच्च सर्वलोकसुखप्रदम्।
तत्सत्यमिति विज्ञेयमसत्यं तद्विपर्ययः॥

सत्य की परिभाषा सूक्तिनिधि / पृ. 68

Yathārthakathanaṁ yacca sarvalokasukhapradam |
Tat satyamiti vijñeyamasatyaṁ tadviparyayaḥ ||

Sūktinidhi / Page 68

Definition of the truth

जो बात जैसी हो, उसे वैसे ही कहना और जो सबको सुख देने वाली हो, उसे ही सत्य समझना चाहिए। इसके विपरीत जो हो, वह असत्य है।

Saying of an exact thing which is also good for the public is called the truth. The opposite from this is called falsehood.

(1148)

यथा वायुं समाश्रित्य, वर्त्तन्ते सर्वजन्तवः।
तथा गृहस्थमाश्रित्य, वर्त्तन्ते सर्व आश्रमाः॥

गृहस्थ का महत्त्व मनु./3/77

Yathā vāyuṁ samāśritya varttante sarvajantavaḥ |
Tathā gṛhasthamāśritya varttante sarva āśramāḥ ||

Greatness of the house life Manu. / 3 / 77

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जैसे वायु को प्राप्त करके सभी प्राणी जीते हैं, उसी प्रकार गृहस्थ के सहारे से ही सभी आश्रमों की स्थिति होती है।

As all the creature get life from air, in the same manner all the four stages of life depend on the domestic stage.

(1149)

यथाशक्ति चिकीर्षन्ति यथाशक्ति च कुर्वते।
न किञ्चिदवमन्यन्ते नराः पण्डितबुद्धयः॥

बुद्धिमानों के कार्य महाभा./उद्योग/33/21

Yathāśakti cikīrṣanti yathāśakti ca kurvate |
Na kiñcidavamanyante narāḥ paṇḍitabuddhayaḥ ||

Mahābhā. / Udyoga / 33 / 21

Works of the wise

समझदार लोग अपनी शक्ति के अनुसार ही कोई कार्य करना चाहते हैं और शक्ति के अनुसार ही करते हैं तथा किसी का तिरस्कार भी नहीं करते।

Wise men wish to do any work according to their power, also do according to their power and never disgrace anybody.

(1150)

यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं नोपलिप्यते।
सर्वत्रावस्थितो देहे तथाऽऽत्मा नोपलिप्यते॥

आत्मा की निर्लिप्तता भग. गीता./13/32

Yathā sarvagatam̐ saukṣmyādākāśam̐ nopalipyate |
Sarvatrāvasthito dehe tathā'tmā nopalipyate ||

Bhaga. / Gītā / 13 / 32

Detachment of the soul

जिस प्रकार सबमें रहने वाला आकाश सूक्ष्म होने के कारण बाहरी वस्तुओं से उपलिप्त नहीं होता, उसी प्रकार परमात्मा शरीर में सर्वत्र रहते हुए भी देह के विकारों से प्रभावित नहीं होता।

As the sky exists everywhere and due to being minute it is not effected by the worldly things, so is the case with the Super Soul (God) who even existing everywhere in the body is not effected by the physical things.

(1151)

यथा हि मलिनैर्वस्त्रैर्यत्र तत्रोपविश्यते।
एवं चलितवित्तस्तु वित्तशेषं न रक्षति॥

नष्ट धन वाले की दशा पञ्च./लब्धप्रणाश/27

Yathā hi malinairvastrairyatra tatropaviśyate |
Evam̐ calitavittastu vittaśeṣam̐ na rakṣati ||

Pañca. / Labdha. / 27

Condition of a poor person

जैसे गंदे कपड़ों वाला मनुष्य उन कपड़ों के साथ जहाँ-तहाँ, साफ या गंदे स्थान पर बैठ जाता है, उसी प्रकार नष्ट हुए धन वाला व्यक्ति बचे हुए धन को भी समाप्त कर देता है।

As a man wearing dirty clothes sits anywhere, upon clean or dirty place, in the same way the man whose riches have been destroyed, does not save even the remaining money.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(1152)

यथा ह्यनुदका नद्यो यथा वाऽप्यतृणं वनम्।
अगोपाला यथा गावस्तथा राष्ट्रमराजकम्॥

वा. रामा./अयोध्या./67/29

शासकहीन राष्ट्र की दुर्दशा

Yathā hyanudakā nadyo yathā vā'pyatṛṇaṁ vanam |
Agopālā yathā gāvastathā raṣṭramarājakam ||

Bad Vā. Rā. / Ayodhyā / 67 / 29
condition of a nation without the ruler

जो स्थिति जलहीन नदियों की अथवा तृणहीन जंगल की अथवा ग्वाले से रहित गौओं की होती है, वही स्थिति शासक से हीन राष्ट्र की हो जाती है। अर्थात् तब कोई भी मर्यादा का पालन नहीं करता और सब मनमानी करने लगते हैं।

The condition which is seen in the waterless rivers, of strawless forest and of the cowherdless cows, the same condition becomes of the nation, having no ruler, as there seems no order and everyone does according to his own will.

(1153)

यथैकेन न हस्तेन तालिका सम्प्रपद्यते।
तथोद्यम-परित्यक्तं, न फलं कर्मणः स्मृतम्॥

उद्यम और भाग्य का सहयोग पञ्च./मित्रसम्प्राप्ति/126

Yathaikena na hastena tālikā samprapadyate |
Tathodyamaparityaktaṁ na phalaṁ karmaṇaḥ smṛtam ||

Pañca. / Mitrasam. / 126
Cooperation of fate and work

जैसे एक हाथ से ताली नहीं बजा करती, उसी प्रकार परिश्रम के बिना केवल भाग्य से ही फल की प्राप्ति नहीं होती।

As one hand is unable to clap, in the same way only fate cannot give big result. So, one has to do hard work also.

(1154)

यदक्षरं वेदविदो वदन्ति,
विशन्ति यद्यतयो वीतरागाः।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति,
तत्ते पदं संग्रहेण प्रवक्ष्ये॥

ईश्वर का नाम ओ३म् भग. गीता/8/11

Yadakṣaraṁ Vedavido vadanti,
viṣanti yadyatayo vītarāgāḥ |
Yadicchanto brahmacaryaṁ caranti,
tatte padaṁ saṁgrahena pravakṣye ||

Om—God's name Bhaga. / Gītā / 8 / 1

हे अर्जुन! जिस 'ओ३म्' अविनाशी पद को वेद के ज्ञाता बोलते हैं, जिस (परमेश्वर) में वीतराग संन्यासी प्रवेश करते हैं, जिसे चाहते हुए लोग ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, उसी 'ओ३म्' पद के विषय में मैं तुम्हें बताऊँगा।

O Arjun, 'Om' the holy word which is pronounced by the scholars of the Vedas, into whom the ascetics having no worldly attachment enter and whom desiring people carry on Brahmacarya, I shall tell you about that 'Om' word.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(1155)

यदन्येषां हितं न स्यादात्मनः कर्म पौरुषम्।
अपत्रपेत वा येन, न तत् कुर्यात् कथञ्चन॥

न करने योग्य कार्य महाभा./शान्ति./124/67

Yadanyeṣāṁ hitaṁ na syādātmanaḥ karma pauruṣam |
Apatrapeta vā yena, na tat kuryāt kathañcana ||

Mahābhā. / Śānti / 124 / 67

Not worth to be done

अपनी शक्ति से होने वाला कोई कार्य, जो दूसरों के लिए हितकर न हो, अथवा जिसे करते हुए लज्जा का अनुभव हो, उसे कभी नहीं करना चाहिए।

The work which is not good for others or doing which one feels shame, that must not be done.

(1156)

यदपसरति मेषः कारणं तत्प्रहर्त्तुम्,
मृगपतिरपि कोपात् संकुचत्युत्पतिष्णुः।
हृदयनिहितवैरा गूढमन्त्रोपचाराः,
किमपि विगणयन्तो बुद्धिमन्तः सहन्ते॥

पञ्चतन्त्र./काकोलूकीय/41

बुद्धिमान् सब कुछ सहकर भी बदला ले लेते हैं

Yadapasarati meṣaḥ kāraṇaṁ tatpraharttum,
Mṛgapatirapi kopāt saṁkucatyutpatiṣṇuḥ |
Hṛdayanihitavairā gūḍhamantropacārāḥ,
Kimapi vigaṇayanto buddhimantaḥ sahante ||

The wise tolerate every thing to take revenge from the enemy Pañca. / Kāko. / 41

भेड़ा (मेंढा) तेज प्रहार के लिए ही पीछे हटता है। शेर भी क्रोध में छलांग लगाने की इच्छा से पहले सिकुड़ता है। जिन्होंने हृदय में वैर को छिपाया हुआ है और गुप्त योजनाएँ बनाने में कुशल हैं, ऐसे बुद्धिमान लोग किसी भी दशा की चिन्ता न करते हुए सब कुछ सहन कर लेते हैं।

The ram goes backward to attack fiercely. The lion full of rage when desires to jump, it shrinks. The wise-men who have hidden enmity in their minds and are expert to design secret plans, tolerate every-thing without caring of any kind of state.

(1157)

यदसत्यं वदेन्मर्त्यो, यद्वाऽसेव्यं च सेवते।
यद्गच्छति विदेशं च, तत्सर्वमुदरार्थतः॥

पेट ही सब कुछ करवाता है पञ्च./मित्रभेद/200

Yadasatyaṁ vadenmartyo, yadvā'sevyaṁ ca sevate |
Yadgacchati videśaṁ ca, tatsarvamudarārthataḥ ||

Pañca. / Mitrabhe. / 200

It is stomach which makes work

यदि कोई मनुष्य झूठ बोलता है, अथवा जो न सेवा करने योग्य व्यक्ति की सेवा करता है और जो विदेश में जाता है – यह सब कुछ पेट के कारण ही होता है।

If a man tells a lie, or serves an unserviceable person or goes to the foreign country, all such things are only for this belly.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(1158)

यदा किञ्चिज्ज्ञोऽहं द्विप इव मदान्धः समभवम्,
तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवदवलिप्तं मम मनः।
यदा किञ्चित्किञ्चिद् बुधजनसकाशादवगतम्,
तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः॥

ज्ञानी ही नम्र बनता है नीतिशतक/7

Yadā kiñcijjño'haṁ dvipa iva madāndhaḥ samabhavam,
Tadā sarvajño'smītyabhavadavaliptaṁ mama manaḥ।
Yadā kiñcitkiñcid budhajanasakāśādavagatam,
Tadā mūrkho'smīti jvara iva mado me vyapagataḥ॥

Nītiśataka / 7

Knowledgeable becomes polite

जब मैं थोड़ा सा ही जानता था, तब मदमस्त हाथी के समान मैं अभिमान में अन्धा हो गया था। यह समझ कर कि 'मैं सर्वज्ञ हूँ', मेरा मन अभिमान से भर गया। परन्तु जब बुद्धिमानों के सम्पर्क से थोड़ा-थोड़ा जानने लगा, तो मैं समझ गया कि मैं तो अभी मूर्ख ही हूँ। यह विचार आते ही मेरा अभिमान ऐसे नष्ट हो गया जैसे चढ़ा हुआ बुखार उतर जाता है।

When I had a little knowledge, I became blind with pride like an elephant in rut. Then I thought that I was omniscient and therefore my mind became very proud. But as I began to know little by little with the contact of learned persons, I felt that I was still fool and in this way my pride destroyed as one's fever decreases.

(1159)

यदाचरति कल्याणि! शुभं वा यदि वाऽशुभम्।
तदेव लभते भद्रे! कर्त्ता कर्मजमात्मनः॥

वा. रामा./अयोध्या./63/6

कर्म का फल भोगना ही पड़ता है

Yadācarati kalyāṇi! Śubhaṁ vā yadi vā'śubham।
Tadeva labhate bhadre! karttā karmajamātmanaḥ॥

Vā. Rā. / Ayodhyā. / 63 / 6

As one sows so he reaps

श्री राम सीता को समझा रहे हैं कि हे मंगलमयी सीते! मनुष्य जो अच्छा या बुरा कर्म करता है, अपने उसी किए कर्म के वैसे ही फल को वह प्राप्त किया करता है।

Shri Rama is saying to Sita, "O auspicious lady! A man who does a work, good or bad, reaps fruits accordingly, good or bad. It means — "As you sow, so shall you reap."

(1160)

यदा चर्मवदाकाशं वेष्टयिष्यन्ति मानवाः।
तदा देवमविज्ञाय दुःखस्यान्तो भविष्यति॥

श्वेताश्वतरोपनिषद्/6/20

दुख नाश के लिए ईश्वर का जानना आवश्यक

Yadā carmavadākāśaṁ veṣṭayiṣyanti mānavāḥ।
Tadā Devamavijñāya duḥkhasyānto bhaviṣyati॥

To have Śvetā. Up. / 6 / 20

peace God's knowledge is necessary

जिस समय लोग आकाश को चमड़े के समान लपेटने में समर्थ हो सकेंगे, तभी परमात्मा को जाने बिना ही दुःखों का अन्त हो सकेगा। भाव यह

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है कि परमात्मा को जाने बिना दुःखों का नाश कदापि नहीं हो सकता।

Whenever the people will be able to fold the sky like the sheet of leather, only then they will be able to get rid of difficulties even without knowing God. It means that without having knowledge of God nobody can get rid of difficulties any how.

(1161)

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता॥

महाभा./भीष्मपर्व/26/58

इन्द्रियों को वश में करने से ही बुद्धि स्थिर होती है

Yadā saṁharate cāyaṁ kūrmo'ṅgānīva sarvaśaḥ |
Indriyāṇīndriyārthebhyastasya prajñā pratiṣṭhitā ||

Control on senses makes the intellect steady Mahābhā. / Bhīṣma. / 26 / 58

जैसे कछुआ अपने अंगों को सब ओर से समेट लेता है, इसी प्रकार जो व्यक्ति इन्द्रियों के विषयों से इन्द्रियों को अपने अन्दर समेट लेता है, उसी की बुद्धि स्थिर हो जाती है।

As a tortoise coils all its organs from all sides, in the same way the man who contracts his senses from their subjects in himself, his intellect becomes steady.

(1162)

यदा हि नेन्द्रियार्थेषु न कर्मस्वनुषज्जते।
सर्वसंकल्प-संन्यासी योगारूढस्तदोच्यते॥

योगारूढ़ संन्यासी भग. गीता/6/4

Yadā hi nendriyārtheṣu na karmasvanuṣajjate |
Sarvasaṁkalpasaṁnyāsī, yogārūḍhastadocyate ||

Bhaga. Gītā / 6 / 4

An ascetic—well-versed in Yoga

जब व्यक्ति न तो इन्द्रियों के विषयों में लिप्त होता है और न ही कर्मों में फँसता है और सब प्रकार की ममता को छोड़ देता है, तभी वह 'योगारूढ़' कहलाता है।

When a person neither clings to the subjects of senses, nor has the attachment with work and relinquishes all kinds of attachment, only then he is called well-versed in yoga or 'yogāruḍha.'

(1163)

यदि स्याच्छीतलो वह्निः शीतांशुर्दहनात्मकः।
न स्वभावोऽत्र मर्त्यानां शक्यते कर्तुमन्यथा॥

स्वभाव बदलना असम्भव है पञ्च./मित्रभेद/202

Yadi syācchītalo vahniḥ śītāṁśurdahanātmakaḥ |
Na svabhāvo'tra martyānāṁ śakyate kartumanyathā ||

Pañca. / Mitrabhe. / 202

To change one's nature is impossible

हो सकता है कि आग ठण्डी हो जाये और चन्द्रमा आग बरसाने लगे, परन्तु फिर भी प्राणियों का स्वभाव बदला नहीं जा सकता।

It may be possible that fire becomes cool and the moon showers heat, but still the nature of the creatures cannot be changed.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(1164)

यदीच्छसि वशीकर्तुं जगदेकेन कर्मणा।
परापवादसस्येभ्यो गां चरन्तीं निवारय॥

परनिन्दा - निन्दनीय चाणक्यनीति/14/13

Yadīcchasi vaśīkartuṁ jagadekena karmaṇā |
Parāpavādasasyebhyo gāṁ carantīṁ nivāraya ||

Cā. Nīti / 14 / 13

Slandering other—condemnable

यदि तुम एक ही कर्म से संसार को वश में करना चाहते हो तो दूसरे की निन्दारूपी चारे को चरती हुई वाणी रूपी गाय को वहाँ से रोक दो। अर्थात् दूसरों की निन्दा मत करो।

If you wish to have control on the world only with one work, then control your tongue from slandering others as a cowherd removes his cow from the crops.

(1165)

यद्धात्रा निजभालपट्टलिखितं स्तोकं महद् वा धनम्,
तत्प्राप्नोति मरुस्थलेऽपि नितरां मेरौ ततो नाधिकम्।
तद्धीरो भव वित्तवत्सु कृपणां वृत्तिं वृथा मा कृथाः,
कूपे पश्य पयोनिधावपि घटो गृह्णाति तुल्यं जलम्॥

भाग्य-लिखित को मेटनहारा नीतिशतक/45

Yaddhātrā nijabhālapaṭṭalikhitaṁ stokaṁ mahad vā dhanam,
Tatprāpnoti marusthale'pi nitarāṁ merau tato nādhikam |
Taddhīro bhava vittavatsu kṛpaṇāṁ vṛttiṁ vṛthā mā kṛthāḥ,
Kūpe paśya payonidhāvapi ghaṭo gṛhṇāti tulyaṁ jalam ||

Nītiśataka / 45

One gets according to his destiny

विधाता ने किसी के मस्तक पर जो थोड़ा या बहुत जितना भी धन लिख दिया है, उतना वह रेगिस्तान में भी पा लेगा और सोने के पहाड़ मेरु पर भी उससे अधिक प्राप्त नहीं कर सकेगा। इसलिए हे मानव! सन्तोष करो और धनिकों के आगे जाकर दीन-हीन बन कर मत गिड़गिड़ाओ। देखो, घड़े को चाहे कुएँ से भरो और चाहे समुद्र से, उसमें बराबर ही जल आएगा।

A man gets money less or more as the destiny has written on his forehead even in a desert and also on the golden mountain 'Meru'. Neither he will get less nor more at any place. So keep patience and don't beg earnestly to the rich showing your inferiority. Please, note that a pitcher takes equal water from a well and from a sea also.

(1166)

यदृच्छयाप्युपनतं सकृत्सज्जनसंगतम्।
भवत्यजरमत्यन्तं नाभ्यासक्रममीक्षते॥

पञ्च./मित्रभेद/137

सत्संगति एक बार में ही दृढ़ हो जाती है

Yadṛcchayāpyupanataṁ sakṛtsajjanasaṁgatam |
Bhavatyajaramatyantaṁ nābhyāsakramamīkṣate ||

A good Pañca. / Mitrabhe. / 137

company becomes permanent for ever

संयोगवश यदि सज्जनों की संगति कहीं एक बार हो जाती है, तो वही संगति सदा के लिए पक्की हो जाती है। उसे स्थिर करने के लिए बारम्बार मिलना आवश्यक नहीं होता।

If by chance, noble persons meet to each other once, their such meeting

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

becomes confirmed for ever and it is not necessary to meet again and again to confirm that.

(1167)

यद् दुरापं भवेत्किंचित् तत् सर्वं तपसो भवेत्।
ऐश्वर्यमृषयः प्राप्तास्तपसैव न संशयः॥

तप का प्रभाव महाभा./शान्ति./161/5

Yad durāpaṁ bhavetkiṁcit tat sarvaṁ tapaso bhavet |
Aiśvaryamṛṣayaḥ prāptāstapasaiva na saṁśayaḥ ||

Mahābhā. / Śānti / 161 / 5

Effect of penance

जो भी वस्तु दुर्लभ हो, वह तपस्या द्वारा प्राप्त हो जाती है। ऋषियों ने तप द्वारा ही सब ऐश्वर्य प्राप्त किया था, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

Any thing that is difficult to be acquired can be obtained with penance. Undoubtedly, the sages obtained all prosperity only with their penance.

(1168)

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥

श्रेष्ठ का आचरण ही प्रमाण होता है भग. गीता/3/21

Yadyadācarati śreṣṭhastattadevetaro janaḥ |
Sa yatpramāṇaṁ kurute, lokastadanuvartate ||

Bhaga. Gitā / 3 / 21

Character of the great is followed

श्रेष्ठ व्यक्ति जो-जो कार्य करता है, वही-वही दूसरे लोग भी करते हैं। वह जिसे सत्य मानकर चलता है, लोग भी उसे ही प्रमाण मानकर उसके पीछे हो लेते हैं।

The public does the same work which a great man does. His ideals are followed by the common people.

(1169)

यद्यप्यशीला नृपते, प्राप्नुवन्ति श्रियं क्वचित्।
न भुञ्जते चिरं तात! समूलाश्च न सन्ति ते॥

महाभा./शान्ति./124/69

पापी व्यक्ति लक्ष्मी का भोग नहीं कर सकते

Yadyapyaśīlā nṛpate, prāpnuvanti śriyaṁ kvacit |
Na bhuñjate ciraṁ tāta, samūlāśca na santi te ||

Mahābhā. / Śānti. / 124 / 69

Sinners cannot enjoy the wealth

हे राजन् (युधिष्ठिर), बुरे कार्य करने वाले लोग यद्यपि कहीं-कहीं धन-दौलत प्राप्त कर लेते हैं, परन्तु, प्रिय, वे उसका देर तक उपभोग नहीं कर पाते और समूल नष्ट हो जाते हैं।

O king Yudhiṣṭhira, even bad persons get wealth in some cases, but they cannot enjoy it for a long time and become completely uprooted.

(1170)

यद्वा तद्वा विषमपतितः साधु वा गर्हितं वा,
कालापेक्षी हृदयनिहितं बुद्धिमान् कर्म कुर्यात्।
किं गाण्डीव-स्फुरदुरुघनास्फालनक्रूरपाणि-
र्नासील्लीलानटन-विलसन-मेखलीसव्यसाची॥

संकटावस्था में कर्त्तव्य पञ्चतन्त्र/काकोलूकीय/202

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Yadvā tadvā viṣamapatitaḥ sādhu vā garhitaṁ vā,
Kālāpekṣī hṛdayanihitaṁ buddhimān karma kuryāt ।
Kiṁ Gāṇḍīvasphuradurughanāsphālanakṛūrapāṇir-,
Nāsīllīlānaṭanavilasanamekhali Savyasācī ॥

Pañca. / Kāko / 202 /

To be done in adversity

संकट में पड़े हुए और शुभ अवसर की प्रतीक्षा करने वाले बुद्धिमान् को मन में निश्चित किए हुए अच्छे अथवा निन्दित कर्म को जैसे-तैसे भी कर लेना चाहिए। क्या गाण्डीव धनुष को दृढता से चलाने के कारण कठोर हाथ वाले अर्जुन ने नर्तकों के समान नृत्य करते हुए मेखला (करधनी) को धारण नहीं किया था ? अर्थात् उस वीर ने भी समयानुसार नर्तकों का कार्य अपना लिया था।

The wise man who is fallen into an adversity and is waiting for a favourable condition, should adopt any kind of good or bad work for which he has determined. Did Arjun, whose hands had been hard due to pulling his Gaṇḍīva bow, not adopted the work of a dancer wearing a girdle around his waist also? So, one should adopt any kind of work according to time.

(1171)

यमर्थसिद्धिः परमा न मोहयेत्,
तथैव काले व्यसनं न मोहयेत्।
सुखं च दुःखं च तथैव मध्यमं,
निषेवते यः स धुरन्धरो नरः॥

धुरन्धर नर का लक्षण महाभा./शान्तिप./226/16

Yamarthasiddhiḥ paramā na mohayet,
Tathaiva kāle vyasanaṁ na mohayet ।
Sukhaṁ ca duḥkhaṁ ca tathaiva madhyamaṁ,
Niṣevate yaḥ sa dhurandharo naraḥ ॥

Mahābhā. / Śānti / 226 / 16

Definition of a leader

जिसको प्रयोजन की सफलता विचलित न कर सके और किसी समय आई हुई विपत्ति भी डगमगा न पाए तथा जो सुख और दुःख तथा दोनों के मध्य की स्थिति में एक समान रहता है, वही मनुष्य नेतृत्व की शक्ति रखता है।

One who is not disturbed by the success of his purpose and also by any trouble come upon him at any time and who remains undisturbed in the time of happiness, adversity and common state, can lead others undoubtedly.

(1172)

यमेव विद्याः शुचिमप्रमत्तं,
मेधाविनं ब्रह्मचर्योपपन्नम्।
यस्ते न द्रुह्येत् कतमच्चनाह,
तस्मै मा ब्रूयाः निधिपाय ब्रह्मन्॥

वेद-विद्या का अधिकारी निरुक्त./2/4

Yameva vidyāḥ śucimapramattaṁ,
Medhāvinaṁ brahmacaryopapannam ।
Yaste na druhyet katamaccanāha,
Tasmai mā brūyāḥ nidhipāya brahman ॥

Nirukta. / 2 / 4

Desering Vedic education

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विद्या द्वारा कहा जा रहा है — "हे वेद-विद्या के ज्ञाता! तुम जिसे पवित्र, प्रमाद-रहित, बुद्धिमान् और ब्रह्मचर्य से सम्पन्न समझो तथा जो तुमसे किसी दशा में द्वेष न करे और जो तुम्हारे दिये विद्याकोष का रक्षक हो, उसे ही मेरा ज्ञान देना।"

The goddess of knowledge says, "O the scholar of the Vedavidyā, you should give this knowledge to that person, who is pious, devoid of negligence, wise and performs Brahmacharya; besides, who never hates you in any condition and protects the treasury of the knowledge given by you."

(1173)

ययोरेव समं वित्तं, ययोरेव समं कुलम्।
तयोर्मैत्री विवाहश्च, न तु पुष्टविपुष्टयोः॥

मैत्री और विवाह के लिए समता पञ्च./मित्रभेद/225

Yayoreva samaṁ vittaṁ, yayoreva samaṁ kulam।
Tayormaitrī vivāhaśca, na tu puṣṭavipuṣṭayoḥ॥

Necessary things for friendship and marriage Pañca. / Mitrabhe. / 225

समान धन वालों और समान कुल वालों में ही मित्रता और विवाह हुआ करते हैं; कम या अधिक वालों में नहीं।

Those who have equal wealth and whose families are equal, only those make relations of friendship and marriage.

(1174)

यशा इन्द्रो यशा अग्निर्यशाः सोमो अजायत।
यशा विश्वस्य भूतस्याहमस्मि यशस्तमः॥

मैं भी प्राणियों में यशस्वी बनूँ अथर्व./6/39/3

Yaśā Indro yaśā Agniryaśāḥ somo ajāyata।
Yaśā visvasya bhūtasyāhamasmi yaśastamaḥ॥

May I achieve fame Atharva. / 6 / 39 / 3

जैसे ऐश्वर्यवान् राजा यश का अभिलाषी होता है, सेनापति भी यश का इच्छुक होता है और शान्त मन वाला मन्त्री भी यश चाहता है, वैसे ही मैं भी सभी प्राणियों में सबसे अधिक यशस्वी बन जाऊँ।

As a wealthy king, as a commander of an army and as a minister having peaceful mind desires fame, in the same way I am also desirous of fame. May I get the most fame among all creatures!

(1175)

यशोऽधिगन्तुं सुखलिप्सया वा,
मनुष्यसंख्यामतिवर्तितुं वा।
निरुत्सुकानामभियोगभाजाम्,
समुत्सुकेवाङ्कमुपैति सिद्धिः॥

सफलता के पात्र किरातार्जुनीय/3/40

Yaśo'dhigantuṁ sukhalipsaya vā,
Manuṣyasaṁkhyāmativartituṁ vā।
Nirutsukānāmabhiyogabhājām,
Samutsukevāṅkamupaiti siddhiḥ॥

Deserving success Kirātā. / 3 / 40

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो लोग गम्भीरतापूर्वक काम में लगे रहते हैं, सफलता या यश प्राप्त करने के लिए अथवा आराम से रहने की इच्छा से अथवा श्रेष्ठ मनुष्यों की अल्प संख्या को बताने के लिए बड़ी उत्सुकता के साथ उनकी गोद में आ बैठती है।

Those who are not perplexed but do their work seriously, success comes to their lap eagerly to get fame or to stay happily or to show the minority of such persons.

(1176)

यशो यशस्विनां शुद्धं, श्लाघ्या ये गुणिनां गुणाः।
लोभः स्वल्पोऽपि तान् हन्ति, श्वित्रो रूपमिवेप्सितम्॥

लोभ से हानि श्रीमद्भागवत/11/23/16

Yaśo yaśaśvināṁ śuddhaṁ, ślāghyā ye guṇināṁ guṇāḥ।
Lobhaḥ svalpo'pi tān hanti, śvitro rūpamivepsitam॥

Bhāgavata / 11 / 23 / 16

Harm due to greed

थोड़ा सा लोभ भी उसी प्रकार यशस्वियों के शुद्ध यश को और गुणियों के प्रशंसनीय गुणों को नष्ट कर देता है, जिस प्रकार कोढ़ मनुष्य के मनचाहे रूप को बिगाड़ देता है।

Even a little greed destroys the spotless fame of the famous persons and praiseworthy merits of the meritorius persons in such a manner as leprosy spoils one's desired beauty.

(1177)

यस्तु राजा स्थितोऽधर्मे मित्राणामुपकारिणाम्।
मिथ्या प्रतिज्ञां कुरुते, को नृशंसतरस्ततः॥

सबसे क्रूर शासक वा. रामा./किष्किन्धा/34/8

Yastu rājā sthito'dharme mitrāṇāmupakāriṇām।
Mithyā pratijñāṁ kurute, ko nṛśaṁsatarastataḥ॥

Vā. Rā. / Kiṣkindhā / 34 / 8

Most cruel ruler

अधर्म का अनुसरण करता हुआ जो राजा उपकारी मित्रों के प्रति झूठी प्रतिज्ञा करता है, उससे बढ़कर क्रूर भला कौन हो सकता है? अर्थात् कोई नहीं।

The king who acts immorally and makes false promise for his helper friends, is more cruel than anybody. Really, he is very cruel.

(1178)

यस्त्यक्त्वा सापदं मित्रं याति निष्ठुरतां सुहृद्।
कृतघ्नस्तेन पापेन नरके यात्यसंशयम्॥

पञ्च./अपरीक्षितकारक/79

संकट में मित्र को छोड़ने वाले को दण्ड

Yastyaktvā sāpadaṁ mitraṁ yāti niṣṭhuratāṁ suhṛd।
Kṛtaghnastena pāpena narke yātyasaṁśayam॥

Punishment for the person who leaves his friend in adversity Pañca. / Aparī. / 79

जो मित्र आपत्ति में फ़ँसे हुए मित्र को छोड़कर कठोरता दिखाता है, वह कृतघ्न उस पाप के कारण निस्सन्देह नरक में ही जा गिरता है।

The friend who deserts his friend in an adversity and in this way shows cruelty, such ungrateful person certainly falls into hell due to that sin.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(1179)

यस्मात् त्रयोऽप्याश्रमिणो, ज्ञानेनान्नेन चान्वहम्।
गृहस्थेनैव धार्यन्ते, तस्माज्ज्येष्ठाश्रमो गृही॥

ज्येष्ठ आश्रम - गृहस्थ मनु./3/78

Yasmāt trayo'pyāśramiṇo jñānenānnena cānvaham |
Gṛhasthenaiva dhāryante tasmājjyeṣṭhāśramo gṛhī ||

Superiority of house life Manu. / 3 / 78

क्योंकि तीनों ही आश्रमवासी (ब्रह्मचारी, वान-प्रस्थी और संन्यासी) ज्ञान तथा अन्न द्वारा प्रतिदिन गृहस्थ द्वारा ही धारण किए जाते हैं (पाले जाते हैं), अतः गृहस्थ ही सबसे बड़ा आश्रम है।

As all the other people of three stages are maintained daily through knowledge and edibles by the householders, so the stage of a house-holder is the greatest of all.

(1180)

यस्मात् पश्यन्ति दूरस्थान् सर्वानर्थान् नराधिपाः।
चारेण तस्मादुच्यन्ते राजानो दीर्घचक्षुषः॥

शासक दीर्घचक्षु वा. रामा./अरण्य./33/10
क्यों?

Yasmāt paśyanti dūrasthān sarvānarthān narādhipāḥ |
Cāreṇa tasmāducyante rājāno dīrghacakṣuṣaḥ ||

Vā. Rā. / Araṇya. / 33 / 10

Why are rulers called farseers?

क्योंकि राजा लोग दूतों द्वारा दूर-दूर के सब विषयों को देख लेते हैं, अतएव वे दीर्घचक्षु कहलाते हैं।

As the kings are able to look at all the things existing at the remote places with the help of spies, so they are called far-seers.

(1181)

यस्मिञ्जीवति जीवन्ति बहवः सोऽत्र जीवतु।
वयांसि किं न कुर्वन्ति चञ्च्वा स्वोदर-पूरणम्॥

सफल जीवन पञ्च./मित्रभेद/22

Yasmiñjīvati jīvanti bahavaḥ so'tra jīvatu |
Vayāṁsi kiṁ na kurvanti cañcvā svodara-pūraṇam ||

Successful life Pañca. / Mitrabhe. / 22

जिसके जीने से अनेकों को जीवन प्राप्त होता है, उसी का जीवन सफल है। क्या पक्षी चञ्चु से अपना पेट नहीं भर लेते?

Only the life of such a person is successful, whose life gives life to others. Do the birds not fill their belly with their beaks?

(1182)

यस्मिन् देशे च काले च वयसा सादृशेन च।
कृतं शुभाशुभं कर्म तत्तथा तेन भुज्यते॥

कर्मफल की प्राप्ति पञ्च./मित्रसम्प्राप्ति/82

Yasmin deśe ca kāle ca vayasā sādṛśena ca |
Kṛtaṁ śubhāśubhaṁ karma, tattathā tena bhujyate ||

Pañca. / Mitrasam. / 82

Achievement of the result of the deeds

जिस स्थान और समय में और समान आयु वाले के साथ जो अच्छा अथवा बुरा कर्म किया गया है, वह उसी रूप में उसके द्वारा भोगा जाता है।

The fruit of good or bad work done is experienced by the same

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

person in the same manner, as it was done by him at any place, at any time and with any person of the similar age.

(1183)

यस्य कृत्यं न जानन्ति मन्त्रं वा मन्त्रितं परे।
कृतमेवास्य जानन्ति, स वै पण्डित उच्यते॥

मन्त्र की सुरक्षा महाभा./उद्योग/33/18

Yasya kṛtyaṁ na jānanti mantraṁ vā mantritaṁ pare |
Kṛtamevāsya jānanti, sa vai paṇḍita ucyate ||

Mahābhā. / Udyoga / 33 / 18

Secrecy of a plan

जिसके करने योग्य कार्य, गुप्त योजना अथवा किए हुए परामर्श को दूसरे नहीं जानते; केवल जिसके सिद्ध हुए कार्य को ही जानते हैं, वह पण्डित (बुद्धिमान्) कहलाता है।

Whose planned work or secret planning or consulted matter is not known by others and only the work he has successfuly done is known, such a person is called a paṇḍita (a wiseman).

(1184)

यस्य कृत्यं न विघ्नन्ति शीतमुष्णं भयं रतिः।
समृद्धिरसमृद्धिर्वा स वै पण्डित उच्यते॥

सदा स्थिरमति ही बुद्धिमान् महाभा./उद्योग/33/19

Yasya kṛtyaṁ na vighnanti śītamuṣṇaṁ bhayaṁ ratiḥ |
Samṛddhirasamṛddhirvā sa vai paṇḍita ucyate ||

The wise remain always undisturbed Mahābhā. / Udyoga / 33 / 19

जिसके कार्य में सर्दी, गर्मी, भय, प्रेम, अमीरी या गरीबी विघ्न नहीं डाल सकते, वही पण्डित (बुद्धिमान्) कहलाता है।

Whose work is not disturbed by cold, heat, fear, love, prosperity or poverty, is called 'paṇḍita' (a wiseman).

(1185)

यस्य देशस्य यो जन्तुस्तज्जं तस्यौषधं हितम्।
देशादन्यत्र वसतस्तत्तुल्यगुणमौषधम्॥

उचित औषध भावप्रकाश/दिनचर्या/10

Yasya deśasya yo jantustajjaṁ tasyauṣadhaṁ hitam |
Desādanyatra vasatastattulyaguṇamauṣadham ||

Useful medicine Bhāvapra. / Dina. / 10

जिस देश का जो भी प्राणी है, वहीं पर उत्पन्न हुई दवाई उसके लिए लाभदायक होती है। यदि वह अपने देश से कहीं अन्यत्र जा बसता है, तो उसी औषध के गुणों के समान औषध ही उसके लिए लाभकारी होता है।

Only that medicine is useful which is produced in the same country where a creature gets birth. In case he goes to some other place or country, the medicine of the similar qualities is useful for him.

(1186)

यस्य धर्म-विहीनानि दिनान्यायान्ति यान्ति च।
स लोहकारभस्त्रेव श्वसन्नपि न जीवति॥

पञ्चतन्त्र./काकोलूकीय/93

धर्महीन जीता हुआ भी मृतवत्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Yasya dharma-vihīnāni dinānyāyānti yānti ca |
Sa lohakārabhastreva śvasannapi na jīvati ||

Pañca. / Kākio. / 93

A sinner is like a dead even in his life

जिस व्यक्ति के दिन बिना धार्मिक कार्यों के आते और जाते हैं, वह लोहार की धौंकनी के समान साँस लेता हुआ भी नहीं जीता।

The person, whose days come and go without performing any religious deed, is lifeless and is only breathing like the bellows of a blacksmith.

(1187)

यस्य न ज्ञायते वीर्यं, न कुलं न विचेष्टितम्।
न तेन सङ्गतिं कुर्यादित्युवाच बृहस्पतिः ॥

सङ्गति न करने योग्य पञ्च./मित्रसम्प्राप्ति/62

Yasya na jñāyate vīryaṁ, na kulaṁ na viceṣṭitam |
Na tena saṅgatiṁ kuryādityuvāca Bṛhaspatiḥ ||

Pañca. / Mitrasam. / 62

Not fit for a company

देवताओं के गुरु बृहस्पति का कथन है कि जिसकी शक्ति, खानदान और क्रिया-कलाप का ज्ञान न हो, उसकी संगति नहीं करनी चाहिए।

The preacher of gods Bṛihaspati says, "one should not remain in the company of such a person, whose power, family and actions are unknown".

(1188)

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा, शास्त्रं तस्य करोति किम्।
लोचनाभ्यां विहीनस्य, दर्पणः किं करिष्यति ॥

निर्बुद्धि के लिए शास्त्र व्यर्थ है चाणक्यनीति/10/8

Yasya nāsti svayaṁ prajñā śāstraṁ tasya karoti kim |
Locanābhyāṁ vihīnasya darpaṇaḥ kiṁ kariṣyati ||

Cā. Nīti / 10 / 8

Scriptures are suseless for a fool

जिसकी अपनी समझ नहीं है, शास्त्र पढ़ने से उसका क्या लाभ? जिसकी आँखें नहीं हैं, दर्पण उसका क्या उपकार करेगा?

One who has no wisdom, the bookish knowledge is not useful for him. One who is unable to see, the mirror cannot show him anything.

(1189)

यस्य प्रसादे पद्मास्ते, विजयश्च पराक्रमे।
मृत्युश्च वसति क्रोधे, सर्वतेजमयो हि सः ॥

तेजस्वी शासक के गुण सूक्तिनिधिः / पृ. 84

Yasya prasāde padmāste, vijayaśca parākrame |
Mṛtyuśca vasati krodhe, sarvatejamayo hi saḥ ||

Sūktinidhi / P. 84

Qualities of a glorious ruler

जिसकी प्रसन्नता या कृपा में लक्ष्मी का वास है, वीरता में विजय है और क्रोध में मृत्यु रहती है, ऐसा व्यक्ति पूर्णतः तेजस्वी है।

Whose pleasure or kindness gives wealth, whose bravery is victorious and whose anger becomes

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

the cause of death, is a fully glorious person.

(1190)

यस्य मित्रेण सम्भाषा, यस्य मित्रेण संस्थितिः।
यस्य मित्रेण संलापस्ततो नास्तीह पुण्यवान्॥

पुण्यवान् व्यक्ति हितोपदेश/मित्रलाभ/39

Yasya mitreṇa sambhāṣā, yasya mitreṇa saṁsthitiḥ |
Yasya mitreṇa saṁlāpastato nāstīha puṇyavān ||

A lucky person Hito. / Mitralā. / 39

वह ही अधिक पुण्यवान् व्यक्ति है, जो मित्र के साथ मीठी वाणी में बोलता है, मित्र के साथ रहता है और मित्र से बातचीत रखता है। उससे बढ़कर भाग्यशाली दूसरा कोई नहीं है।

He is the most lucky person, who talks with his friend in sweet language, remains with his friend and has dialogue with his friend.

(1191)

यस्य यस्य हि यो भावस्तेन तेन समाचरेत्।
अनुप्रविश्य मेधावी क्षिप्रमात्मवशं नयेत्॥

किसी को वश में करने का ढंग पञ्च./मित्रभेद/70

Yasya yasya hi yo bhāvastena tena samācaret |
Anupraviśya medhāvī kṣipramātmavaśaṁ nayet ||

Pañca. / Mitrabhe. / 70

Method to control anybody

यदि किसी को वश में करना हो, तो उस के भावों को समझ कर तदनुसार आचरण करना चाहिए। उसके बाद उस के हृदय में अपना स्थान बना कर शीघ्र ही उसे अपने वश में किया जा सकता है।

If a man wishes to have control on some one, then first he should act according to his intentions and after wards making his own place in his mind he may have control on him very soon.

(1192)

यस्य संसारिणी प्रज्ञा धर्मार्थावनुवर्तते।
कामादर्थं वृणीते यः स वै पण्डित उच्यते॥

धर्म और अर्थ की मुख्यता महाभा./उद्योग/33/20

Yasya saṁsāriṇī prajñā dharmārthāvanuvartate |
Kāmādarthaṁ vṛṇīte yaḥ, sa vai paṇḍita ucyate ||

Mahābhā. / Udyoga / 33 / 20

Superiority of Dharma and artha

जिसकी सांसारिक व्यवहार वाली बुद्धि भी धर्म और अर्थ का अनुसरण करती है और जो काम की अपेक्षा अर्थ को अधिक महत्त्व देता है, वही पण्डित (बुद्धिमान्) कहलाता है।

The man, whose worldly wisdom works according to morality and finance and who gives more importance to the finance than sensual desires, is called paṇḍita (a wise man).

(1193)

यस्यार्थास्तस्य मित्राणि, यस्यार्थास्तस्य बान्धवाः।
यस्यार्थाः स पुमांल्लोके, यस्यार्थाः स च पण्डितः॥

धन का महत्त्व पञ्च./मित्रभेद/3

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Yasyārthāstasya mitrāṇi, yasyārthāstasya bāndhavāḥ |
Yasyārthāḥ sa pumāṁlloke, yasyārthāḥ sa ca paṇḍitaḥ ||

Pañca. / Mitrabhe. / 3

Importance of riches

धनवान् व्यक्ति के ही मित्र होते हैं, धनवान् के ही रिश्तेदार बनते हैं, संसार में धनवान् ही प्रभावशाली मनुष्य माना जाता है और धनवान् ही विद्वान् तथा बुद्धिमान् समझा जाता है।

Only wealthy person has friends and relatives. He is considered as an influencial, learned and wise person.

(1194)

यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥

प्रभो, मैं मेधावी बन जाऊँ यजु./32/14

Yāṁ medhāṁ devagaṇāḥ pitaraścopāsate |
Tayā māmadya medhayā'gne medhāvinaṁ kuru svāhā ||

May I have good wisdom! Yaju. / 32 / 14

जिस मेधा बुद्धि के लिए विद्वान् लोग तथा पालन करनेवाले माता-पिता आदि ईश्वर की उपासना करते हैं, उसी मेधा (धारणावती) बुद्धि से हे सन्मार्ग दर्शक परमेश्वर, मुझे भी शीघ्र ही मेधावी बना दो।

O God, my guide, give me soon the same wisdom for which the scholars, the parents and experienced persons worship and which can retain all learnt things properly.

(1195)

या चेयं जगतो माता सर्वलोकनमस्कृता।
अस्याश्च चलनं भूमेर्दृश्यते कोसलेश्वर ॥

भूकम्प का भय वा. रामा./अरण्य./66/10

Yā ceyaṁ jagato mātā sarvalokanamaskṛtā |
Asyāśca calanaṁ bhūmerdṛṣyte Kosaleśvara ||

Vā. Rā. / Araṇya / 66 / 10

Fear of earth-quake

सीता के खोए जाने पर लक्ष्मण राम को ढाढ़स देते हुए कहते हैं — "हे राम जी,जो यह संसार की माता, सब लोगों से पूजनीय पृथ्वी है, वह भी भूकम्प से डोल जाती है। अतः संकट तो सभी पर आते हैं।"

When Sitā was lost, Lakṣmaṇ says to Rāma for consolation, "Dear Rāma, even this earth which is the mother of all things and which is worshipped by all, also suffers unsteadiness due to earth-quake. So everybody has to face troubles."

(1196)

याते मय्यचिरान्निदाघमिहिरज्वालाशतैःशीर्णताम्,
गन्ता कं प्रति पान्थसन्ततिरसौ सन्तापमालाकुला।
इत्थं यस्य निरन्तराधिपटलैर्नित्यं वपुः क्षीयते,
धन्यं जीवनमस्य मार्गसरसो, धिग्वारिधीनां जनुः ॥

परोपकारी जीवन ही धन्य है मुक्तिराम उपाध्याय

Yāte mayyacirānnidāghamihirajvālāśataiḥ śīrṇatām,
Gantā kaṁ prati pānthasantatirasau santāpamālākulā |

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Itthaṁ yasya nirantarādhipaṭalairnityaṁ vapuḥ kṣīyate,
Dhanyaṁ jīvanamasya mārgasaraso dhigvāridhīnāṁ januḥ ॥

Muktirāma Upādhyāya

Helpful life is admirable

"ग्रीष्मकाल के सूर्य की सैकड़ों ज्वालाओं द्वारा शीघ्र ही मेरे सूख जाने पर गर्मी की भयंकरता से व्याकुल हुई पथिकों की पंक्ति किससे जल प्राप्त करेगी?" इस प्रकार परोपकार की चिन्ताओं से ही जिसका शरीर प्रतिदिन क्षीण हो रहा है, उस मार्ग के तालाब का जीवन धन्य है, परन्तु धिक्कार है उन सागरों को, जिनका जल किसी के पीने के काम भी नहीं आता!

"When I shall be dried soon by the hundred flames of sun of the summer season, where will go the group of perplexed travellers to take water?" Thinking in such a way the way-tank which is decreasing day by day with this anxiety is praise-worthy, but the seas whose water is not fit for drinking by the people, fie to their existence!

(1197)

या निशा सर्वभूतानां, तस्यां जागर्ति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि, सा निशा पश्यतो मुनेः ॥

संयमी का जागना और सोना भगवद्गीता/2/69

Yā niśā sarvabhūtānāṁ, tasyāṁ jāgarti saṁyamī ।
Yasyāṁ jāgrati bhūtāni, sā niśā paśyato muneḥ ॥

Awakening and sleeping of a sage Bagavadgītā / 2 / 69

भगवान् की प्राप्ति से विमुख होकर सामान्य जनता अज्ञानान्धकार रूपी जिस रात्रि में स्थित होती है, संयमी व्यक्ति भगवत्प्राप्ति रूपी उस दिन में जागता है। अन्य प्राणी जिन विषयों में जगे या लिप्त रहते हैं, मुनि के लिए वे त्याज्य होने के कारण रात्रि के समान हैं।

The common people ignoring the gain of God remain in a night full of the darkness of ignorance, but a sage remains in the day of devotion of God at the same time being awaken there. While other creatures enjoy the sensual subjects being awaken there, a sage sleeps considering that enjoyment as a night and such enjoyment is relinquished by him.

(1198)

यावत्वित्तोपार्जनसक्तस्तावन्निजपरिवारो रक्तः।
पश्चाद्धावति जर्जरदेहे, वार्त्तां पृच्छति कोऽपि न गेहे ॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते ॥

प्रभु भक्ति ही कल्याणमयी है चर्पटपञ्चरिका/3

Yāvatvittopārjanasaktastāvannijaparivāro raktaḥ ।
Paścāddhāvati jarjaradehe, vārttāṁ pṛcchati ko'pi na gehe ॥
Bhaja Govindaṁ, bhaja Govindaṁ, bhaja Govindaṁ mūḍhamate ॥

Carpaṭa-Pañcarikā / 3

Only God's devotion is auspicious

जब तक मनुष्य धन कमाने में लगा रहता है, तब तक उसका परिवार उससे प्रेम दिखाता है। बाद में शरीर जर्जर होने पर व्यर्थ ही इधर-उधर दौड़ता फिरता है और कोई भी घर वाला उसकी बात तक नहीं पूछता। इसलिए हे मूढ बुद्धि वाले

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मनुष्य, भगवान की उपासना कर, और उसी की शरण में जा।

As long as a man is busy in earning the money, his family shows love for him but as his body decays, he runs uselessly here and there and no body in his house cares for him. So, O fool, you should adore God and go to his refuge.

(1199)

यावत्स्वस्थमिदं शरीरमखिलं यावज्जरा दूरतो,
यावच्चेन्द्रियशक्तिरप्रतिहता यावत्क्षयो नायुषः।
आत्मश्रेयसि तावदेव विदुषा कार्यः प्रयत्नो महान्,
उद्दीप्ते भवने तु कूपखनन-प्रत्युद्यमः कीदृशः॥

आत्मकल्याण का समय वैराग्यशतक/82

Yāvat svasthamidaṁ śarīramakhilaṁ yāvajjarā dūrato,
Yavaccendriyaśaktirapratihatā yāvatkṣayo nāyuṣaḥ।
Ātmaśreyasi tāvadeva viduṣā kāryaḥ prayatno mahān,
Uddīpte bhavane tu kūpakhanana-pratyudyamaḥ kīdṛśaḥ॥

Vairāgyaśataka / 82

Time of spiritual progress

जब तक यह सम्पूर्ण शरीर स्वस्थ है, जब तक बुढ़ापा दूर है, जब तक इन्द्रियों की शक्ति क्षीण नहीं हुई और जब तक यह जीवन समाप्त नहीं होता, तब तक ही विद्वान् मनुष्य को आत्मा की उन्नति के लिए खूब प्रयत्न कर लेना चाहिए। जब मकान में आग लग जाए, तो उस समय पानी के लिए कुआँ खोदने का कोई लाभ नहीं होता।

As long as this whole body is safe and sound, the old age is far off, all organs have full energy and the life has not been completed, so long a learned person should try his best to make spiritual progress. There is no use of digging a well, when the house catches fire.

(1200)

यावत्स्वस्थो ह्ययं देहो, यावन्मृत्युश्च दूरतः।
तावदात्महितं कुर्यात्, प्राणान्ते किं करिष्यति॥

आत्मकल्याण का समय चाणक्यनीति/4/4

Yāvatsvastho hyayaṁ deho, yāvanmṛtyuśca dūrataḥ।
Tāvadātmahitaṁ kuryāt, prāṇānte kiṁ kariṣyati॥

Cārakyanīti / 4 / 4

Time of spiritual progress

जब तक यह शरीर स्वस्थ है और जब तक मृत्यु दूर है, तभी तक मनुष्य को आत्मा का कल्याण कर लेना चाहिए। प्राण निकल जाने के बाद फिर कुछ नहीं हो सकेगा।

As long as the body is healthy and the death is far off, a man should purify his soul. Nobody can do such a work after his death.

(1201)

या वेदबाह्याः स्मृतयो, याश्च काश्च कुदृष्टयः।
सर्वास्ताः निष्फलाः प्रेत्य, तमोनिष्ठा हि ताः स्मृताः॥

निन्दनीय स्मृतियाँ और दर्शन मनु./12/94

Yā Vedabāhyāḥ smṛtayo, yāśca kāśca kudṛṣṭayaḥ।
Sarvāstāḥ niṣphalāḥ pretya, tamoniṣṭhā hi tāḥ smṛtāḥ॥

Manu. / 12 / 94

Condemnable smṛtis etc.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो वेद के विरुद्ध स्मृतियाँ हैं और जो कोई कुत्सित दर्शन हैं, वे मरणोपरान्त भी कुसंस्कार-कारक होने के कारण त्याज्य हैं। ऐसे सभी ग्रन्थ अज्ञानान्धकार युक्त माने गए हैं।

The smṛtīs which are contrary to the Vedas and vile philosophies, all of them should be rejected as they cause bad impressions on minds even after death. So those are called full of the darkness of ignorance.

(1202)

युक्तं सभायां खलु मर्कटानाम्,
शाखास्तरूणां मृदुलासनानि।
सुभाषितं चीत्कृतिरातिथेयी,
दन्तैर्नखाग्रैश्च विपाटितानि॥

संगति का फल भामिनीविलास / 1 / 83

Yuktaṁ sabhāyāṁ khalu markaṭānām,
Śākhāstarūṇāṁ mṛdulāsanāni।
Subhāṣitaṁ cītkṛtirātitheyī,
Dantairnakhāgraiśca vipāṭitāni॥

Bhāminīvilāsa / 1 / 83

Result of the company

बन्दरों की सभा में शाखाओं को ही कोमल आसन समझकर वहाँ बैठाना एवं चीं-चीं रूपी सुन्दर वचनों द्वारा तथा दाँतों और नाखूनों से काटना ही अतिथि-सेवा माननी उचित है। भाव यह है कि कोई व्यक्ति जैसा होता है, वह अपने स्वभाव के अनुसार ही सेवा के साधन प्रदर्शित करता है।

In the meeting of the monkeys the following things are advisable :- (1) The soft seatings are the branches of trees and (2) hospitality is performed by their 'Chiṁ-Chiṁ' sounds and cutting with teeth and piercing with the front parts of nails. It means that every person shows hospitality towards his guests according to his nature.

(1203)

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा॥

दुःखनाशक योग भग. गीता/6/17

Yuktāhāravihārasya yuktaceṣṭasya karmasu।
yuktasvapnāvabodhasya yogo bhavati duḥkhahā॥

Baga. Gītā / 6 / 17

Yoga—remover of sadness

जो व्यक्ति उचित आहार और विहार करता है, कार्यों में उचित ढंग से प्रयत्न करता है और उचित रूप से सोता और जागता है, उसके लिए योग दुःखनाशक होता है।

Yoga is remover of troubles for him who takes food properly, walks properly, takes apt actions in completing his works properly and sleeps as well as awakes properly.

(1204)

यूयं वयं वयं यूयमित्यासीन्मतिरावयोः।
किं जातमधुना मित्र! यूयं यूयं वयं वयम्॥

कोई किसी का स्थायी साथी नहीं वैराग्यशतक/59

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Yūyaṁ vayaṁ vayaṁ yūyamityāsīnmatirāvayoḥ ।
Kiṁ jātamadhunā mitra! yūyaṁ yūyaṁ vayaṁ vayam ॥

Vairāgyaśataka / 59

None is relative permanently

हम दोनों का विचार था कि तुम और हम भिन्न-भिन्न नहीं हैं और परस्पर बहुत प्रेम है। परन्तु मित्र! अब क्या हो गया है कि तुम तो तुम ही रह गये और हम भी हम ही रह गये। भाव यह है कि धन-दौलत पास आने पर सभी मित्रता दिखाते हैं, परन्तु निर्धनता की दशा आने पर प्रेम करने वाले मित्र भी साथ नहीं निभाते।

Both of us had an opinion that you and we are not separate and lover of each other deeply. But O friend! What has happened now that you are you and we are we. It means that the love, we had, ended because of poverty which had been only due to prosperity.

(1205)

ये ग्रामा यदरण्यं याः सभा अधि भूम्याम्।
ये संग्रामाः समितयस्तेषु चारु वदेम ते॥

भूमि के लिए श्रेष्ठ वचन ही कहें अथर्व./12/1/56

Ye grāmā yadaraṇyaṁ yāḥ sabhā adhi bhūmyām ।
Ye saṁgrāmāḥ samitayasteṣu cāru vadema te ॥

Let us say Atharva. / 12 / 1 / 56
auspicious things for the land

हे भूमि-माता! जो तुझमें बसे गाँव हैं, जो जंगल हैं, जो तुझ पर सभाएँ होती हैं तथा जो कहीं युद्ध होते हैं, उन सब में हम तेरी प्रशंसा ही करें और कभी निन्दा न करें।

O motherland! We should praise you always in the villages which are settled on you, the forests existing on you, the meetings which are organized on you and the wars which take place on you.

(1206)

येन केनाप्युपायेन शुभेनाप्यशुभेन वा।
उद्धरेद्दीनमात्मानं समर्थो धर्ममाचरेत्॥

पहला आत्मोद्धार, फिर धर्माचरण पञ्च./मित्रभेद/310

Yena kenāpyupāyena śubhenāpyaśubhena vā ।
Uddhareddinamātmānaṁ samartho dharmamācaret ॥

Pañca. / Mitrabhe. / 310

First self-progress then adopt morality

यदि कोई मनुष्य गरीब है तो उसे चाहिए कि वह पहले अच्छे अथवा बुरे किसी भी उपाय से अपना उद्धार करे और उसके बाद धर्म का आचरण करे।

If a man is poor, first he should try to make his progress by good or even by bad means and after that he should perform the religious duties.

(1207)

ये न रक्षन्ति विषयमस्वाधीनं नराधिपाः।
ते न वृद्ध्या प्रकाशन्ते गिरयः सागरे यथा॥

निन्दनीय शासक वा. रामा./अरण्य./33/6

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Ye na rakṣanti viṣayamasvādhīnaṁ narādhipāḥ ।
Te na vṛddhyā prakāśante girayaḥ sāgare yathā ॥

Vā. Rā. / Araṇya / 33 / 6

Comdemnable ruler

जो राजा लोग पराधीन हुए अपने राज्य की रक्षा नहीं कर पाते, वे कभी भी उत्कर्ष से शोभित नहीं होते; जैसे कि समुद्र में स्थित पहाड़ प्रकट नहीं हो पाते।

The kings who cannot save. the kingdom which has gone under the enemy, cannot make their progress, as the mountains existing in the sea remain hidden.

(1208)

येन येन यथा यद्यत् पुरा कर्म समीहितम्।
तत्तदेकतरो भुङ्क्ते नित्यं विहितमात्मना ॥

कर्ता ही कर्मफल का भोक्ता महाभा./शान्ति./181/10

yena yena yathā yadyat purā karma samīhitam ।
Tattadekataro bhuṅkte nityaṁ vihitamātmanā ॥

Mahābhā. / Śānti. / 181 / 10

Only the doer has to achieve the fruits of his deeds

जिस-जिस ने भी पहले जिस प्रकार से जो-जो भी कर्म किया है, वह-वह अपना किया कर्म करने वाला सदैव अकेला ही भोगता है, दूसरा उसका साथ नहीं देता।

The works which have been done by different people, out of those each person has to get the fruit of the work done by him alone and no other will help him.

(1209)

येषां चाराश्च कोशश्च नयश्च जयतां वर।
अस्वाधीना नरेन्द्राणां प्राकृतैस्तैः जनैः समाः ॥

पराधीन शासक वा. रामा./अरण्य./33/9

Yeṣāṁ cārāśca kośaśca nayaśca jayatāṁ vara ।
Asvādhīnā narendrāṇāṁ prākṛtaistaiḥ janaiḥ samāḥ ॥

Vā. Rā. / Araṇya. / 33 / 9

Dependent ruler

हे विजयशील भाई! (शूर्पणखा कह रही है) जिन राजाओं के गुप्तचर और खजाना पराधीन होते हैं, वे राजा सामान्य लोगों के समान ही होते हैं; उन का कोई महत्त्व नहीं रहता।

Śūrpaṇakhā says to Rāvaṇa, "O victorious brother, the kings whose spies and treasury are not independent, are similar to the common people and they have no importance."

(1210)

येषां न विद्या न तपो न दानम्,
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता,
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ॥

मनुष्य-रूप में मृग नीतिशतक/12

Yeṣāṁ na vidyā na tapo na dānam,
Jñānaṁ na śīlaṁ na guṇo na dharmaḥ ।
Te martyaloke bhuvi bhārabhūtā,
Manuṣyarūpeṇa mṛgāścaranti ॥

Nitiśataka / 12

Animals in human bodies

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिनके पास न विद्या है, और न तप तथा दान करते हैं, न ज्ञानी हैं, न उत्तम स्वभाव वाले हैं, न गुणी हैं और न धर्मशील हैं, ऐसे लोग पृथ्वी पर भार बने हुए हैं और मनुष्यों की आकृति में पशु बनकर ही घूमते फिरते हैं।

Those who have no education, do not perform penance and give no alms, who have neither knowledge nor good nature, nor have some virtue and nor perform any religious duty, are burden on this earth and wander like animals in the shape of men.

(1211)

यो जागार तमृचः कामयन्ते,
यो जागार तमु सामानि यन्ति।
यो जागार तमयं सोम आह,
तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः॥

जागने वाले को लाभ ऋग्/5/44/14

Yo jāgāra tamṛcaḥ kāmayante,
Yo jāgāra tamu sāmāni yanti I
Yo jāgāra tamayaṁ soma āha,
tavāhamasmi sakhye nyokāḥ II

Ṛg. / 5 / 44 / 14

Advantage who remains awaken

जो जागता है, वही प्रशंसा का पात्र बनता है। जो जागता है, उसीको शान्ति प्राप्त होती है। और जो जागता है, सर्वस्रष्टा प्रभु कहता है कि मैं घर के सदृश ही उसका मित्र बन जाता हूँ, अर्थात् जैसे घर सुखद होता है, परमात्मा उसका मित्र बनकर उसे सुखी बना देता है।

One who is awaken, is praised and gets peace. God becomes such a friend of him who removes all his difficulties and makes him happy like one's home.

(1212)

योऽत्ति यस्य यदा मांसमुभयोः पश्यतान्तरम्।
एकस्य क्षणिका प्रीतिरन्यः प्राणैर्वियुज्यते॥

निन्दनीय – मांसाहार हितोपदेश/मित्रलाभ/66

Yo'tti yasya yadā māṁsamubhayoḥ paśyatāntaram I
Ekasya kṣaṇikā prītiranyaḥ prānairviyujyate II

Hito. / Mitralā. / 66

Condemnable — meat-eating

जब किसी के द्वारा किसी अन्य (प्राणी) का मांस खाया जाता है, उन दोनों के अन्तर को समझो। खाने वाले को तो क्षणभर का ही स्वाद मिलता है, परन्तु दूसरे का तो जीवन ही समाप्त हो जाता है।

One who eats the other's meat, see the difference between these two. The eater enjoys it only for a moment, while the other losts his life for ever.

(1213)

यो दत्त्वा सर्वभूतेभ्यः प्रव्रजत्यभयं गृहात्।
तस्य तेजोमया लोका भवन्ति ब्रह्मवादिनः॥

सच्चे वेद-प्रचारक को लाभ मनु./6/39

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Yo dattvā sarvabhūtebhyaḥ pravrajatyabhayaṁ gṛhāt |
Tasya tejomayā lokā bhavanti Brahmavādinaḥ ||

Advantages to who gives knowledge of Vedas Manu. / 6 / 39

जो सब प्राणियों को अभय-दान देकर सर्वकल्याणार्थ संन्यास की दीक्षा लेता है, उस ईश्वर-भक्त और वेद-प्रचारक के लिए सभी स्थान प्रकाशमय बन जाते हैं।

One who gives fearlessness to all creatures and becomes a saṁnyāsī for the welfare of the world and being a devotee propagates the Vedas, all places become shining for him.

(1214)

यो ध्रुवाणि परित्यज्य, अध्रुवाणि निषेवते।
ध्रुवाणि तस्य नश्यन्ति, अध्रुवं नष्टमेव च॥

नौ नगद न तेरह उधार पञ्च./मित्रसम्प्राप्ति/134

Yo dhruvāṇi parityajya, adhruvāṇi niṣevate |
Dhruvāṇi tasya naśyanti, adhruvaṁ naṣṭameva ca ||

One in hand is better than two in future Pañca. / Mitrasam. / 134

जो व्यक्ति निश्चित रूप से प्राप्य वस्तु को छोड़कर अनिश्चित लाभ के पीछे भागता है, उसकी निश्चित रूप से प्राप्य वस्तुएँ नष्ट हो जाती हैं और अनिश्चित तो नष्ट है ही।

One who leaves certain things aside and goes after uncertain things, loses certain ones while the uncertain ones are not availed by him.

(1215)

यो न वेत्ति गुणान् यस्य, न तं सेवेत पण्डितः।
न हि तस्मात्फलं किञ्चित्, सुकृष्टादूषरादिव॥

सेवा के अयोग्य पञ्च./मित्रभेद/45

Yo na vetti guṇān yasya, na taṁ seveta paṇḍitaḥ |
Na hi tasmātphalaṁ kiñcit, sukṛṣṭādūṣarādiva ||

Unfit for service Pañca. / Mitrabhe. / 45

जो व्यक्ति गुणों की पहचान नहीं करता, बुद्धिमान् व्यक्ति को उसकी सेवा नहीं करनी चाहिए। जैसे ऊसर भूमि पर हल चलाने पर भी कोई लाभ नहीं होता, उसी प्रकार उस व्यक्ति की सेवा भी निष्फल ही जाती है।

One who does not recognize the qualities of a person, that person should not adopt his service. As a barren piece of land even if ploughed properly, gives no fruit, in the same way the service of such person is fruitless.

(1216)

यो नियुक्तः परं कार्यं न कुर्यान्नृपतेः प्रियम्।
भृत्यो युक्तः समर्थश्च तमाहुर्मध्यमं नरम्॥

मध्यम श्रेणी का नौकर वा. रामा./युद्धकाण्ड/1/8

Yo niyuktaḥ paraṁ kāryaṁ na kuryānnṛpateḥ priyam |
Bhṛtyo yuktaḥ samarthaśca tamāhurmadhyamaṁ naram ||

Vā. Rā. / Yuddha. / 1 / 8

Middle type of a servant

जो नियुक्त नौकर कार्यकुशल और समर्थ होकर भी राजा के दूसरे प्रिय कार्य को नहीं करता (केवल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एक ही कार्य करता है), उसे मध्यम श्रेणी का मनुष्य कहा जाता है।

The servant being expert and able appointed to do a work, does not do another work desired by the king, is called the man of middle standard.

(1217)

यो भूतं च भव्यं च सर्वं यश्चाधितिष्ठति।
स्वर्यस्य च केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः॥

ब्रह्म ही आनन्द का स्रोत है अथर्व/10/8/1

Yo bhūtaṁ ca bhavyaṁ ca, sarvaṁ yaścādhitiṣṭhati |
Svaryasya ca kevalaṁ, tasmai jyeṣṭhāya Brahmaṇe namaḥ ||

Atharva. / 10 / 8 / 1

Only God is the source of Bliss

जो बीते हुए और आने वाले समय तथा सभी को अपने नियन्त्रण में रख रहा है और केवल जो एकमात्र आनन्द का स्रोत है, उस सबसे बड़े ब्रह्म को नमस्कार है।

One, Who is managing the past, and the future and Who has control on all the world, only He is the source of the spiritual bliss. Let our salute go to such the greatest Brahma (God).

(1218)

योऽमित्रं कुरुते मित्रं वीर्याभ्यधिकमात्मनः।
स करोति न सन्देहः स्वयं हि विषभक्षणम्॥

पञ्च./लब्धप्रणाश/22

शक्तिशाली शत्रु को मित्र बनाने का दुष्परिणाम

Yo'mitraṁ kurute mitraṁ vīryābhyadhikamātmanaḥ |
Sa karoti na sandehaḥ svayaṁ hi viṣabhakṣaṇam ||

Bad result to make a friend to an stroger enemy Pañca. / Labda. / 22

जो व्यक्ति अपने से अधिक बलवान् शत्रु को अपना मित्र बना लेता है, निःसन्देह वह स्वयं ही ज़हर खा रहा है।

One, who makes friendship with such a person who is more powerful than he and who also had been his enemy, is eating poison himself undoubtedly.

(1219)

यो विषादं प्रसहते विक्रमे समुपस्थिते।
तेजसा तस्य हीनस्य पुरुषार्थो न सिद्ध्यति॥

वा. रामा./किष्किन्धा/64/10

निराश व्यक्ति सफल नहीं होता

Yo viṣādaṁ prasahate vikrame samupasthite |
Tejasā tasya hīnasya puruṣārtho na siddhyati ||

Vā. Rā. / Kiṣkindhā / 64 / 10

Disappointed never gets success

जो व्यक्ति साहस दिखाने के समय निराशा में उलझा रहता है, वह व्यक्ति निस्तेज है। अतएव उसका परिश्रम सफल नहीं हुआ करता।

One who becomes disappointed at the time of bravery, is spiritless. So his efforts never get success.

(1220)

योऽहिंसकानि भूतानि, हिनस्त्यात्मसुखेच्छया।
स जीवंश्च मृतश्चैव, न क्वचित् सुखमेधते॥

अहिंसक प्राणियों के घातक को दण्ड मनु./5/45

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Yo'hiṁsakāni bhūtāni, hinastyātmasukhecchayā |
Sa jīvaṁśca mṛtaścaiva, na kvacit sukhamedhate ||

Bad result for Manu. / 5 / 45
who kills harmless creatures

जो व्यक्ति अपने सुख को पाने की इच्छा से अहिंसक प्राणियों को मारता है, वह जीते हुए भी और मर कर भी कहीं सुख प्राप्त नहीं कर सकता।

One who for gaining his own happiness kills harmless creatures, does not obtains happiness in life and even after death also.

(1221)

यो हि भृत्यो नियुक्तः सन् भर्त्रा कर्मणि दुष्करे।
कुर्यात् तदनुरागेण तमाहुः पुरुषोत्तमम्॥

श्रेष्ठ नौकर वा. रामा./युद्धकाण्ड/1/7

Yo hi bhṛtyo niyuktaḥ san bhartrā karmaṇi duṣkare |
Kuryāt tadanurāgeṇa, tamāhuḥ puruṣottamam ||

Best servant Vā. Rāmā / Yuddha. / 1 / 7

स्वामी द्वारा अति कठिन कार्य में भी लगाए जाने पर जो नौकर उस कार्य को पूर्ण प्रीतिपूर्वक करता है, उसे पुरुषोत्तम कहा जाता है।

The servant who is given tough work to do by his master and who does it with complete devotion and happily, is called the best man.

(1222)

यो हि मित्रेषु कालज्ञः सततं साधु वर्त्तते।
तस्य राज्यं च कीर्तिश्च प्रतापश्चापि वर्धते॥

वा. रामा./किष्किन्धा/10

मित्रों से सद्व्यवहार का सुफल

Yo hi mitreṣu kālajñaḥ satataṁ sādhu varttate |
Tasya rājyaṁ ca kīrtiśca pratāpaścāpi vardhate ||

Good result Vā. Rā. / Kiṣkindhā / 10
to behave justly with friends

जो समय की परख करने वाला, मित्रों के साथ लगातार सद्व्यवहार करता है, उसका राज्य, यश और प्रताप सभी वृद्धि को प्राप्त होते हैं।

One who realising the time behaves well with his friends, his kingdom, fame and glory—all grow.

(1223)

यौ धर्मौ जगतो नेत्रौ यत्र सर्वं प्रतिष्ठितम्।
आदित्यचन्द्रौ ग्रहमभ्युपेतो महाबलौ॥

प्रत्येक संकटों को देखता है वा. रामा./अरण्य./66/11

Yau dharmau jagato netrau yatra sarvaṁ pratiṣṭhitam |
Ādityacandrau grahamabhyupeto mahābalau ||

Vā. Rā. / Araṇya. / 66 / 11

Every one faces adversities

संसार को धारण करने वाले, सब पदार्थों को दिखाने वाले और जिनके आधार पर यह संसार चल रहा है, वे महाबली सूर्य और चाँद भी ग्रहों द्वारा ग्रसे जाते हैं।

The sun and the moon which are the supports of this world, which help to show the things and due to which this world is going on, those powerful sun and moon also become the prey of eclipses.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(1224)

यौवनं धनसम्पत्तिः प्रभुत्वमविवेकिता।
एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्॥

अनर्थ के कारण हितोपदेश / प्र. 4

Yauvanaṁ dhanasampattiḥ prabhutvamavivekitā |
Ekaikamapyanarthāya kimu yatra catuṣṭayam ||

Hitopadeśa / Pra. 4

Causes of adversities

जवानी, धन-दौलत, स्वामित्व और अविवेक — इनमें से एक-एक भी वस्तु मनुष्य के पतन का कारण बन जाती है और एक ही स्थान पर स्थित इन चारों का समूह तो निश्चित रूप से मनुष्य को ले डूबता है।

Youth, wealth, ownership and absence of discrimination, each one out of these becomes the source of degradation and when the group of all these four is found at one place, the fall is certain.

र = Ra

(1225)

रक्तत्वं कमलानां सत्पुरुषाणां परोपकारित्वम्।
असतां च निर्दयत्वं स्वभावसिद्धं त्रिषु त्रितयम्॥

स्वाभाविक गुण सुभाषितावलि /251

Raktatvaṁ kamalānāṁ satpuruṣāṇāṁ paropakāritvam |
Asatāṁ ca nirdayatvaṁ svabhāvasiddhaṁ triṣu tritayam ||

Natural qualities Subhāṣitāvali / 251

लाल कमलों की ललाई, सत्पुरुषों की परोपकारिता और असत् पुरुषों की निर्दयता- ये तीनों बातें स्वभाव-सिद्ध होती हैं।

Redness of the red lotuses, helpfulness of good persons and cruelty of bad persons are natural in them.

(1226)

रङ्कं करोति राजानं, राजानं रङ्कमेव च।
धनिनं निर्धनं चैव निर्धनं धनिनं विधिः॥

विधाता के कार्य चाणक्यनीति/10/5

Raṅkaṁ karoti rājānaṁ, rājānaṁ raṅkameva ca |
Dhaninaṁ nirdhanaṁ caiva, nirdhanaṁ dhaninaṁ vidhiḥ ||

Works of the destiny Cā. Nīti / 10 / 5

विधाता कंगाल को बादशाह और बादशाह को कंगाल तथा धनी को निर्धन और निर्धन को धनी बना देता है।

Fortune changes a bankrupt person into a king and a king into a bankrupt person. In the same way it changes a rich person into a poor person and a poor man into a richman.

(1227)

रत्नैर्महाब्धेस्तुतुषुर्न देवाः,
न भेजिरे भीमविषेण भीतिम्।
सुधां विना न प्रययुर्विरामं,
न निश्चितार्थाद्विरमन्ति धीराः॥

नीतिशतक/79

महापुरुष निश्चित कार्य करके ही रुकते हैं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Ratnairmahābdhestutuṣurna devāḥ,
Na bhejire bhīmaviṣeṇa bhītim ।
Sudhāṁ vinā na prayayurvirāmaṁ,
Na niścitārthādviramanti dhīrāḥ ॥

Nītiśataka / 79

The great complete their determination

महासमुद्र से प्राप्त रत्नों से देवताओं की तुष्टि नहीं हुई, न ही वे भयंकर विष से भयभीत हुए। अमृत की प्राप्ति तक वे तनिक भी नहीं रुके। धीर-जन जिस चीज के लिए अपना मन बना लेते हैं, उसे प्राप्त करके ही छोड़ते हैं; बीच में नहीं रुकते।

At the time of the churning of the Milk-ocean, the celestial beings were not satisfied merely with the possession of the precious jewels, nor they were struck with fear from the deadly poison. They did not stop till they got the nectar. The greatman do not take rest until they get their desired thing.

(1228)

रथस्यैकं चक्रं भुजगयमिता सप्त तुरगाः,
निरालम्बो मार्गश्चरणविकलः सारथिरपि।
रविर्यात्येवान्तं प्रतिदिनमपारस्य नभसः,
क्रिया-सिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे॥

आत्मबल की उत्कृष्टता भोजप्रबन्ध/169

Rathasyaikaṁ cakraṁ bhujagayamitā sapta turagāḥ,
Nirālambo mārgaścaraṇavikalaḥ sārathirapi ।
Raviryātyevāntaṁ pratidinamapārasya nabhasaḥ,
Kriyā siddhiḥ sattve bhavati mahatāṁ nopakaraṇe ॥

Bhojaprabandha / 169

Superiority of will-power

सूर्य के रथ का एक ही पहिया है, उसके सातों घोड़े साँप रूपी लगामों से नियंत्रित हैं, रास्ता निराधार है और उसके सारथि अरुण के पाँव नहीं हैं, फिर भी सूर्य प्रतिदिन इस विशाल आकाश के पार तक जाता है। इससे सिद्ध होता है कि बड़ों के आत्मबल में ही सफलता छिपी होती है, साधनों का उतना महत्त्व नहीं होता।

The chariot of the sun has only one wheel and his seven horses are controlled by the serpents, the path is supportless and the driver Aruṇa is also feetless. In such circumstances the sun crosses sky every day. It proves that the will-power of the greatmen has more importance than instruments.

(1229)

रमणीयोऽपि देशः सुभिक्षः क्षेम एव च।
कुदेश इति विज्ञेयो यत्र क्लेशैर्विदह्यते॥

क्लेश पूर्ण स्थान ही कुदेश है सौन्दरनन्द/15/48

Ramaṇīyo'pi deśaḥ subhikṣaḥ kṣema eva ca ।
Kudeśa iti vijñeyo, yatra kleśairvidahyate ॥

A place Saundarananda / 15 / 48
full of adversities is a bad place

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जहाँ मनुष्य कष्टों से सन्तप्त हो जाए, उस सुन्दर, कल्याणकारी तथा धनधान्य से भरपूर देश को भी कुदेश ही समझना चाहिए।

In spite of the beauty, availability of edibles and all other facilities, if in such a country a man burns with the fire of vices, then that country is bad, and not a good one.

(1230)

रविनिशाकरयोर्ग्रहपीडनम्,
गजभुजङ्गविहङ्गमबन्धनम् ।
मतिमतां च विलोक्य दरिद्रताम्,
विधिरहो बलवानिति मे मतिः ॥

विधाता ही बलवान् है पञ्च./मित्रसम्प्राप्ति/22

Raviniśākarayorgrahapīḍanam,
Gajabhujaṅgavihaṅgamabandhanam ।
Matimatāṁ ca vilokya daridratām,
Vidhiraho balavāniti me matiḥ ॥

Pañca. / Mitrasam. / 22

Only destriny is powerful

सूर्य और चन्द्रमा को भी ग्रहों से पीड़ित होते तथा हाथियों, साँपों और पक्षियों के बन्धन और बुद्धिमानों की दरिद्रता को देखकर मेरे मन में यही विचार आता है कि विधाता ही बलवान् है।

Seeing the eclipses of the sun and the moon, the trapping of the elephants, snakes and birds and the poverty in the wisemen, I think that it is the fate which is most powerful.

(1231)

रसायनं तु तज्ज्ञेयं यज्जराव्याधिनाशनम् ।
यथा हरीतकी दन्ती गुग्गुलुश्च शिलाजतु ॥

रसायन का लक्षण भावप्रकाश/मिश्रप्रकरण/229

Rasāyanaṁ tu tajjñeyaṁ yajjarāvyādhināśanam ।
Yathā harītakī dantī gugguluśca śilājatu ॥

Bhāvapra. / Misra. / 229

Definition of alchemy

जो बुढापे और रोगों को नष्ट करे, उसे ही रसायन समझना चाहिए, जैसे हरड़, दन्ती, गूगल और शिला-जीत।

A medicine which keeps off the old age and diseases is called alchemy, as yellow marabalan, dantī, guggulu and śilājatu.

(1232)

रसायनमयी शीता परमानन्ददायिनी ।
नानन्दयति कं नाम साधुसंगतिचन्द्रिका ॥

साधु-संगति का लाभ सुभाषितावलि / 206

Rasāyanamayī śītā paramānandadāyinī ।
Nānandayati kaṁ nāma sādhusaṁgati-candrikā ॥

Subhāṣitāvali / 206

Adventage of a good company

जो रसायनरूप है, शीतल है और परमानन्द देने वाली है, ऐसी श्रेष्ठ लोगों की संगति रूपी चाँदनी भला किसे आनन्दमग्न नहीं कर देती? अर्थात् सभी को आनन्द में डुबो देती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

The company of noble persons is like an alchemy, cool and producer of super bliss. Whom will not such company make happy which is equal to the moonlight?

(1233)

रसायनानां विधिवच्चोपयोगः प्रशस्यते।
शस्यते देहवृत्तिश्च, भेषजैः पूर्वमुद्धृतैः॥

चरक/विमानस्थान/3/18

स्वास्थ्य के लिए रसायनों का प्रयोग

Rasāyanānāṁ vidhivaccopayogaḥ praśasyate।
Śasyate dehavrittiśca, bheṣajaiḥ pūrvamuddhṛtaiḥ॥

Caraka. / Vimāna. / 3 / 18

Use of alchemies for health

रसायनों का प्रयोग नियमानुसार करना ही अच्छा होता है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए पूर्व निर्दिष्ट दवाइयाँ भी अच्छी होती हैं।

The alchemies should be taken methodically. Besides, the medicines stated already are also useful for the health of the body.

(1234)

रहस्यभेदो याच्ञा च, नैष्ठुर्यं चलचित्तता।
क्रोधो निःसत्यता द्यूतमेतन्मित्रस्य दूषणम्॥

मित्र के अवगुण हितोपदेश/मित्रलाभ/98

Rahasyabhedo yacñā ca, naiṣṭhuryaṁ calacittatā।
Krodho niḥsatyatā dyūtametanmitrasya dūṣaṇam॥

Hitopa. / Mitralāba. / 98

Demerits of a friend

निम्नलिखित बातें मित्र के अवगुण होती हैं :- (1) रहस्य को खोल देना, (2) माँगते रहना, (3) क्रूरता, (4) चञ्चलचित्तता, (5) क्रोध, (6 झूठ बोलना और (7) जुआ खेलना। अच्छे मित्र में ये दोष नहीं होने चाहिए।

The following things are the disqualities of a friend :- (1) disclosing of secret, (2) begging, (3) brutality, (4) unsteadiness of mind, (5) anger, (6) telling a lie and (7) gambling. These disqualities should not be in a good friend.

(1235)

राजन् दुधुक्षसि यदि क्षितिधेनुमेताम्,
तेनाद्य वत्समिव लोकममुं पुषाण।
तस्मिंश्च सम्यगनिशं परिपुष्यमाणे,
नानाफलं फलति कल्पलतेव भूमिः॥

शासक का कर्त्तव्य नीतिशतक/42

Rājan dudhukṣasi yadi kṣitidhenumetām,
Tenādya vatsamiva lokamamuṁ puṣāṇa।
Tasmiṁśca samyaganiśaṁ paripuṣyamāṇe,
Nānāphalaṁ phalati Kalpalateva bhūmiḥ॥

Duty of the ruler Nītiśataka / 42

राजन्! यदि तुम पृथ्वी रूपी गाय से दूध रूपी धन प्राप्त करना चाहते हो, तो आज से इसके बछड़े रूप मानव-समूह का पालन-पोषण करो। मनुष्यों के अच्छी प्रकार पुष्ट होने से यह भूमि कल्प-लता के समान तुम्हें अनेक प्रकार के फल प्रदान करेगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

O king, if you want to milk the cow of land, then nourish the public, which is like a calf of the land. When this calf will be nourished well, the land will give you all kinds of things like the different fruits of 'Kal-palata', the divine creeper.

(1236)

राजपत्नी गुरोः पत्नी मित्रपत्नी तथैव च।
पत्नी-माता स्वमाता च पञ्चैताः मातरः स्मृताः॥

पाँच माताएँ चाणक्यनीति/5/23

Rājapatnī guroḥ patnī mitrapatnī tathaiva ca |
Patnimātā svamātā ca pañcaitāḥ mātaraḥ smṛtāḥ ||

Five mothers Cā. Nīti / 5 / 23

राजा की पत्नी (रानी), गुरु की पत्नी, मित्र की पत्नी, अपनी पत्नी की माता (सास) तथा अपनी माँ – ये पाँचों माताएँ कहलाती हैं।

The following five ladies should be considered as mothers :- (1) the king's wife, (2) teacher's wife, (3) friend's wife, (4) the mother-in-law and (5) own mother.

(1237)

राजा घृणी ब्राह्मणः सर्वभक्षः,
स्त्री चावशा दुष्प्रकृतिः सहायः।
प्रेष्यः प्रतीपोऽधिकृतः प्रमादी,
त्याज्या इमे यश्च कृतं न वेत्ति॥

त्याज्य व्यक्ति हितोपदेश/सुहृद्भेद/182

Rajā ghṛṇī Brāhmaṇaḥ sarvabhakṣaḥ,
Strī cāvaśā duṣprakṛtiḥ sahāyaḥ |
Preṣyaḥ pratipo'dhikṛtaḥ pramādī,
Tyājyā ime yaśca kṛtaṁ na vetti ||

To be abandoned Hitopa. / Suhṛdbha / 182

निम्नलिखित लोगों से पृथक् हो जाना या उन्हें पृथक् कर देना चाहिए :- (1) क्रूर राजा, (2) सब कुछ खाने वाला ब्राह्मण, (3) वश में न रहने वाली नारी, (4) बुरे स्वभाव वाला सहायक, (5) विरोधी पत्रवाहक, (6) लापरवाही करने वाला अधिकारी और (7) कृतघ्न व्यक्ति।

Leave the following persons or get rid of them :- (1) a cruel king, (2) the Brahmana who eats everything, (3) disobedient wife, (4) bad natured helper, (5) a letter carrier who is against, (6) careless office-bearer and (7) the ungrateful person.

(1238)

राजा तुष्टो हि भृत्यानां मानमात्रं प्रयच्छति।
ते तु सम्मानितास्तस्य प्राणैरप्युपकुर्वते॥

प्रशंसनीय सेवक भोजप्रबन्ध/17

Rājā tuṣṭo hi bhṛtyānāṁ mānamātraṁ prayacchati |
Te tu sammānitāstasya prāṇairapyupakurvate ||

Admirable servants Bhojaprabandha / 17

राजा प्रसन्न होने पर नौकरों को सम्मान या इनाम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देता है, परन्तु वे सम्मानित होने पर प्राण तक भी देकर उसका भला करते हैं।

If the king pleases, he gives honour or awards to the servants, but the honoured servants help the king even by sacrificing their lives.

(1239)

राजा राष्ट्रं यथाऽऽपत्सु द्रव्यौघैरपि रक्षति।
राष्ट्रेण राजा व्यसने रक्षितव्यस्तथा भवेत्॥

राजा तथा राष्ट्र के कर्त्तव्य महाभा./शान्ति./130/31

Rājā rāṣṭram yathā'patsu dravyaughairapi rakṣati |
Rāṣṭreṇa rājā vyasane rakṣitavyastathā bhavet ||

Mahābhā. / Śānti. / 130 / 31

Duties of the ruler and the nation

जैसे राजा किसी भी संकट के आने पर प्रजा की सब प्रकार से, धन आदि द्वारा रक्षा करता है, उसी प्रकार प्रजा का भी कर्त्तव्य है कि राजा पर संकट आने की स्थिति में उसकी सब प्रकार से रक्षा करे।

As the king protects his subjects in all difficulties with money and other things, so it is the duty of the public to save their king, when he is in difficulty.

(1240)

राज्ञि धर्मिणि धर्मिष्ठाः, पापे पापाः समे समाः।
राजानमनुवर्त्तन्ते, यथा राजा तथा प्रजा॥

जैसा राजा, वैसी प्रजा चाणक्यनीति/13/8

Rājñi dharmiṇi dharmiṣṭhāḥ, pāpe pāpāḥ same samāḥ |
Rājānamanuvarttante, yathā rājā tathā prajā ||

Cā. Nīti / 13 / 8

As the king, so are his subjects

यदि राजा धार्मिक है, तो लोग भी धार्मिक होते हैं और यदि राजा पापी है तो लोग भी पापी बन जाते हैं। लोग प्रायः राजा की ही नकल किया करते हैं। इसलिए जैसा राजा होता है, वैसी ही प्रजा होती है।

If a king is religious, the public becomes religious and if the king is sinful, the public becomes sinful. Generally, the public follows his king. So it is said, "As is the king, so are his subjects."

(1241)

राज्यं तिष्ठति दक्षस्य, संगृहीतेन्द्रियस्य च।
आर्तस्य बुद्धिमूलं हि विजयं मनुरब्रवीत्॥

श्रेष्ठ शासक के गुण महाभा./शान्तिपर्व/112/19

Rājyaṁ tiṣṭhati dakṣasya, saṁgṛhītendriyasya ca |
Ārtasya buddhimūlaṁ hi vijayaṁ manurabravīt ||

Mahābhā. / Śānti. / 112 / 19

Admirable qualities of a king

मनु कहते हैं कि जो राजा निपुण तथा जितेन्द्रिय है, उसी का राज्य स्थिर रहता है। संकट आने पर वही बुद्धि द्वारा विजय प्राप्त कर सकता है।

Manu says, "The king who is expert and controller of his senses, can make his kingdom stable. In difficulties, he can be victorious on account of his wisdom."

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(1242)

राज्यं सुसम्पदो भोगाः कुले जन्म सुरूपता।
पाण्डित्यमायुरारोग्यं धर्मस्यैतत् फलं विदुः॥

धर्म के फल क्षेमेन्द्र – उपदेश प्रकरण / 4

Rājyaṁ susampado bhogāḥ kule janma surūpatā |
Paṇḍityamāyurārogyaṁ dharmasyaitat phalaṁ viduḥ ||

Updeśaprakarana / 4

Result of good deeds

राज्य, भरपूर सम्पत्ति, भोग, अच्छे कुल में जन्म, रूपवान होना, पाण्डित्य, दीर्घायु तथा नीरोगता – धर्म के ये फल माने जाते हैं।

Kingdom, enough wealth, enjoyments, birth in a good family, beauty, learning, long life and good health - these are considered to be the fruits of Dharma.

(1243)

रात्रिं रात्रिमप्रयातं भरन्तोऽ-
श्वायेव तिष्ठते घासमस्मै।
रायस्पोषेण समिषा मदन्तो,
मा ते अग्ने प्रतिवेशा रिषाम॥

हम कभी दरिद्र न हों अथर्व./19/55/1

Rātriṁ ratrimaprayātaṁ bharanto'-
śvāyeva tiṣṭhate ghāsamasmai |
Rāyaspoṣeṇa samiṣā madanto,
mā te agne prativeśā riṣāma ||

Atharva. / 19 / 55 / 1

May we not see poverty!

हे प्रभो! जैसे घोड़े के लिए खाने-पीने का प्रबन्ध किया जाता है, उसी प्रकार प्रति रात्रि तक न समाप्त होने वाले धनधान्य को गृहस्थाश्रम में हम भरते रहें। अन्न-सहित पुष्टिकारक सब प्रकार के धन से आनन्दित होते हुए हम, तेरे उपासक, दरिद्रता के कारण कभी दुःखी न हों।

O God, we householders should be careful for edibles in our houses as a horseman manages for his horse before the commencement of night. We must manage all the things before the beginning of every night. With corns we should have such money which nourishes the family. In this way, with all the riches we enjoy the house life and we, your devotees, should never suffer due to poverty.

(1244)

रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम्,
भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पंकजश्रीः।
इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे,
हा! हन्त! हन्त! नलिनीं गज उज्जहार॥

भाग्यचक्र सुभाषितरत्न / 233 / 7

Ratrirgamiṣyati bhaviṣyati suprabhātam,
Bhāsvānudeṣyati hasiṣyati paṅkajaśrīḥ |
Itthaṁ vicintayati kośagate dvirephe,
Hā! Hanta! Hanta! Nalinīṁ gaja ujjahāra ||

Subhāśitā Ratna. / 233 / 7

Wheel of the fate

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कमल की कली में बन्द हुआ भौंरा यह सोच ही रहा था कि "रात बीत जाएगी, सुन्दर सवेरा होगा, सूर्य निकलेगा, कमल की शोभा खिल उठेगी," यह सोचते-सोचते ही, बहुत दुःख की बात है कि एक हाथी ने उस कमल को ही उखाड़ फेंका। भाव यह है कि मनुष्य भविष्य की योजनाएँ बनाता रहता है, परन्तु कालरूपी हाथी उन्हें पूरा नहीं होने देता।

A black-bee shut in a bud of a lotus, was thinking, "The night will end, a nice morning will take place, the sun will rise and the beauty of the bloomed lotus will come out." When it was thinking in this way, it is very sad that an elephant uprooted the plant of lotus. The sense is this, "Man proposes and God disposes."

(1245)

रामस्य व्रजनं बलेर्नियमनं पाण्डोः सुतानां वनम्,
वृष्णीनां निधनं नलस्य नृपते राज्यात्परिभ्रंशनम्।
नाट्याचार्यकमर्जुनस्य पतनं सञ्चिन्त्य लङ्केश्वरम्,
सर्वं कालवशाज्जनोऽत्र सहते कः कं परित्रायते॥

सभी काल के अधीन है पञ्चतन्त्र./लब्धप्रणाश/230

Rāmasya vrajanaṁ balerniyamanaṁ Pāṇḍoḥ sutānāṁ vanam,
Vṛṣṇīnāṁ nidhanaṁ Nalasya nṛpate rājyāt paribhraṁśanam।
Nāṭyācāryakamarjunasya patanaṁ sañcintya Laṅkeśvaram,
Sarvaṁ kālavaśātjano'tra sahate kaḥ kaṁ paritrāyate॥

Pañca. / Labdha. / 230

All depends on the time

राम के वनगमन को, बलिराजा के विष्णु द्वारा बन्धन को, पाण्डवों के वनवास को, यादवों के सर्वनाश को, राजा नल के राज्य से च्युत होने को, नाट्याचार्य के रूप में अर्जुन के पतन को और लङ्का के राजा रावण के विनाश को सोचकर यही परिणाम निकलता है कि सभी लोग काल के अधीन होकर सभी कष्ट सहते हैं; कोई किसी को काल से बचा नहीं सकता।

After seeing the exile of Rāma, trapping of Bali by Vishnu, forest-living of Pandavās, destruction of Yadavas, dethroning of king Nala, demotion of Arjuna, a dance-teacher and the death of Rāvana, it may be said that every man has to tolerate everything produced by time and nobody can save anybody against it.

(1246)

रूपयौवनसम्पन्ना विशालकुलसम्भवाः।
विद्याहीना न शोभन्ते, निर्गन्धा इव किंशुकाः॥

विद्या का महत्त्व हितोपदेश/प्रस्तावना/39

Rūpa-yauvana-sampannā viśālakulasambhavāḥ।
Vidyāhīnā na śobhante nirgandhā iva kiṁśukāḥ॥

Hitopa. / Pra. / 39

Importance of knowledge

सौन्दर्य और जवानी से सम्पन्न तथा ऊँचे कुल में भी जन्म लेने वाले व्यक्ति बिना विद्या के उसी प्रकार शोभा नहीं पाते जिस प्रकार सुगन्ध से रहित ढाक के सुन्दर फूलों की कोई शोभा नहीं होती।

The persons who are physically

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

beautiful, young and born in a noble family but without knowledge are not honoured as the beautiful but smell-less flowers of 'Dhaka' have no value.

(1247)

रे रे! चातक! सावधान-मनसा मित्र क्षणं श्रूयता-
मम्भोदा बहवो हि सन्ति गगने सर्वे तु नैतादृशाः।
केचिद् वृष्टिभिरार्द्रयन्ति वसुधां गर्जन्ति केचिद् वृथा,
यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः॥

सभी उदार नहीं होते नीतिशतक/47

Re re cātaka sāvadhānamanasā mitra kṣaṇaṁ śrūyatām-,
ambhodā bahavo hi santi gagane, sarve tu naitādṛśāḥ |
Kecid vṛṣṭibhirārdrayanti vasudhāṁ garjanti kecid vṛthā,
Yaṁ yaṁ paśyasi tasya tasya purato mā brūhi dīnaṁ vacaḥ ||

All are not generous Nītiśataka / 47

हे मित्र चातक! सावधान मन से तनिक सुनो कि आकाश में बादल तो बहुत हैं, परन्तु सभी बरसने वाले नहीं। कुछ तो वर्षा से भूमि को तर कर देते हैं, परन्तु कुछ यों ही गरजते रहते हैं। इसलिए जिस-जिस को देखो, सभी के सामने दीन होकर मत गिड़गिड़ाओ। भाव यह है कि संसार में उदारतापूर्वक दान देने वाले बहुत कम लोग हैं; धन के अभिमानी तो बहुत हैं। अतः आवश्यकता पड़ने पर किसी उदार से ही याचना करनी चाहिए; प्रत्येक से नहीं।

O friend chataka, listen for a moment with attentive mind. There are many clouds in the sky but all donot bring rain. Some of them make the earth wet with rain, while others thunder in vain; therefore you should not make a piteous cry before everyone, whom you see.

The idea in this stanza is that there are a few generous people in this world but some are such rich people who never help the needy. Therefore, one should not indiscriminately beg before every person in a piteous manner. Such begging is extremely degrading.

(1248)

रोहति सायकैर्विद्धं छिन्नं रोहति चासिना।
वचो दुरुक्तं बीभत्सं न प्ररोहति वाक्क्षतम्॥

पञ्च./काकोलूकीय/107

कठोर वाणी का घाव भयंकर होता है

Rohati sāyakairviddhaṁ chinnaṁ rohati cāsinā |
Vaco duruktaṁ bībhatsaṁ na prarohati vākkṣatam ||

Pañca. / Kāko. / 107

The wound of harsh words is dreadful

बाणों से हुआ घाव भर जाता है और तलवार से कटा हुआ स्थान भी ठीक हो जाता है, परन्तु वाणी से किया हुआ भयंकर घाव कभी ठीक नहीं हो पाता; अर्थात् वाणी से कहा हुआ कटु वचन सदा ही दुखाता रहता है।

The wound made by arrows grows up and the cut made by a sword also recovers but the wound made by dreadful bitter words never heals. It means that bitter words are painful forever.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ल = La

(1249)

लक्ष्मीवन्तो न जानन्ति प्रायेण परवेदनाम्।
शेषे धराभराक्लान्ते, शेते नारायणः सुखम्॥

धनवान् दूसरों के कष्ट नहीं समझते अज्ञात

Lakṣmīvanto na jānanti prāyeṇa paravedanām |
Śeṣe dharābharāklānte śete Nārāyaṇaḥ sukham ||

Unknown

The rich never feel the pains of others

धनवान् लोग प्रायः दूसरों की पीड़ा का अनुभव नहीं करते। देखो, लक्ष्मीपति विष्णु भगवान् अपने भार से व्याकुल हुए शेषनाग पर आराम से शयन करते हैं। (बेचारे शेषनाग के कष्ट की उन्हें चिन्ता नहीं, क्योंकि वे धनी हैं, लक्ष्मीपति हैं।)

The rich never feel the trouble of others. Nārāyaṇa, who is the husband of the goddess of wealth sleeps on Śeṣanāga troubling him by his burden, and doesnot care about the pain caused to poor Śeṣa.

(1250)

लङ्कापतेः सङ्कुचितं यशो यद्,
यत्कीर्तिपात्रं रघुराजपुत्रः।
स सर्व एवादिकवेः प्रभावो,
न कोपनीयाः कवयः क्षितीन्द्रैः॥

कवियों का महत्त्व विक्रमाङ्कदेवचरित/1/27

Laṅkāpateḥ saṅkucitaṁ yaśo yad,
yatkīrtipātraṁ Raghurājaputraḥ |
Sa sarva evādikaveḥ prabhāvo,
Na kopanīyāḥ kavayaḥ kṣitīndraiḥ ||

Greatness of poets Vikramāṅka. / 1 / 27

लंकापति का यश जो नष्ट हुआ और राम कीर्ति के पात्र बने, यह सब आदिकवि का ही प्रभाव है। राजाओं को चाहिए कि कवियों को नाराज न करें।

It is due to Ādikavi Valmīki that all the glory of Rāvaṇa contracted while Rāma earned his good name. So kings should not displease poets.

(1251)

लज्जागुणौघजननीं जननीमिव स्वा-
मत्यन्तशुद्धहृदयामनुवर्तमानाम्।
तेजस्विनः सुखमसूनपि संत्यजन्ति,
सत्यव्रत-व्यसनिनो न पुनः प्रतिज्ञाम्॥

सत्यव्रती प्रतिज्ञा को निभाते हैं नीतिशतक/100

Lajjāguṇaughajananīṁ jananīmiva svām-
atyantaśuddhahṛdayāmanuvartamānām |
Tejasvinaḥ sukhamasūnapi saṁtyajanti,
Satyavrata-vyasanino na punaḥ pratijñām ||

Nitiśataka / 100

True persons keep their words

सच्चाई के व्रत के व्रती तेजस्वी लोग अपने प्राणों को तो छोड़ सकते हैं, परन्तु ऐसी प्रतिज्ञा को कभी नहीं त्यागते, जो लज्जा आदि अनेक गुणों को जन्म देती है, जो अत्यन्त पवित्र अपनी माता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के समान है और जो सदा उनके हृदय में घर बनाये रहती है।

The glorious persons and the men of principle of truth may sacrifice even their lives but they never abandon their promise, which is the source of many merits like bashfulness, which is like their mother who has pure mind for them and remains always in their hearts.

(1252)

लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पीडयन्,
पिबेच्च मृगतृष्णिकासु सलिलं पिपासार्दितः।
कदाचिदपि पर्यटन् शशविषाणमासादयेत्,
न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत्॥

अभिमानी मूर्ख को समझाना असम्भव है नीतिशतक/4

Labheta sikatāsu tailamapi yatnataḥ pīḍayan,
Pibecca mṛgatṛṣṇikāsu salilaṁ pipāsārditaḥ।
Kadācidapi paryaṭan śaśaviṣāṇamāsādayet,
Na tu pratiniviṣṭamūrkhajanacittamārādhayet॥

It is impossible to make understand a proud fool Nītiśataka / 4

हो सकता है कि बहुत दबाने से रेत से भी तेल निकल आए, हो सकता है कि प्यास से व्याकुल व्यक्ति कहीं मरुमरीचिका से भी पानी प्राप्त कर पी ले और यह भी सम्भव है कि कोई घूमता-फिरता व्यक्ति कहीं पर खरगोश के सींग प्राप्त कर ले, तो भी अपनी बात पर अड़े हुए मूर्ख व्यक्ति के चित्त को समझा पाना असम्भव है। भाव यह है कि अन्य असम्भव बातें यदि सम्भव हो भी जायें, तो भी दुराग्रही व्यक्ति को नहीं समझाया जा सकता।

It may be possible that one gets oil from sands by crushing them, it may be possible that a thirsty person obtains water from mirages and it may be possible that one finds the horn of a hare at some place wandering there, but it is quite impossible to make a fool understand who is prejudiced. The sense is that impossible things may be possible, but the prejudiced person cannot be made understand.

(1253)

लाङ्गूलचालनमधश्चरणावपातं,
भूमौ निपत्य वदनोदरदर्शनं च।
श्वा पिण्डदस्य कुरुते, गजपुङ्गवस्तु,
धीरं विलोकयति चाटुशतैश्च भुङ्क्ते॥

नीच और श्रेष्ठ में अंतर नीतिशतक/23

Lāṅgūlacālanamadhaścaranāvapātaṁ,
būmau nipatya vadanodaradarśanaṁ ca।
Śvā piṇḍadasya kurute, gajapuṅgavastu,
dhīraṁ vilokayati cāṭuśataiśca bhuṅkte॥

Nītiśataka / 23

Difference between the low and the great

कुत्ता अपने स्वामी के आगे पूँछ हिलाता है, उसके चरणों में जा गिरता है, जमीन पर लेट कर मुँह और पेट दिखाता है पर गजराज चुपचाप देखता रहता है और अनेक बार आग्रह करने के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बाद खाता है। तात्पर्य यह है कि ओछे लोग खुशामद करके जो कुछ प्राप्त करते हैं, गम्भीर लोगों को वही वस्तु ग्रहण करने के लिए दूसरे आग्रह करते हैं।

A dog wags its tail, falls at the feet of its master and lies down flat on the ground to show its mouth and stomach to the man who feeds it, but the noble elephant looks with a calm and steady glance upon the face of its master and accepts its food after a series of soothing and flattering entreaties. It means that the thing which low persons get by flattery, that is given to the great persons with a strong request.

(1254)

लुब्धमर्थेन गृह्णीयात्, स्तब्धमञ्जलिकर्मणा।
मूर्खं छन्दानुरोधेन, यथार्थवादेन पण्डितम्॥

वश में करने की विधियाँ चाणक्यनीति/6/12

Lubdhamarthena gṛhṇīyāt, stabdhamañjalikarmaṇā।
Mūrkhaṁ chandānurodhena, yathārthavādena paṇḍitam॥

Methods to control Cā. Nīti / 6 / 12

लोभी व्यक्ति को धन देकर, अहंकारी को हाथ जोड़कर और नम्रता दिखाकर, मूर्ख को मनमानी करने की स्वतन्त्रता देकर और सत्य बोलकर समझदार व्यक्ति को अपने अनुकूल बनाना चाहिए।

The greedy person should be given some money, the proud person be shown humility with folded hands, a fool be given to do things according to his will and a wiseman be told true things in order to win their favour.

(1255)

लुब्धस्य नश्यति यशः पिशुनस्य मैत्री,
नष्टक्रियस्य कुलमर्थपरस्य धर्मः।
विद्याबलं व्यसनिनः कृपणस्य सौख्यं,
राज्यं प्रमत्तसचिवस्य नराधिपस्य॥

नाश के कारण पञ्च. / काको. / 210

Lubdhasya naśyati yaśaḥ piśunasya maitrī,
Naṣṭakriyasya kulamarthaparasya dharmaḥ।
Vidyābalaṁ vyasaninaḥ kṛpaṇasya saukhyaṁ,
Rājyaṁ pramattasacivasya narādhipasya॥

Pañca. / Kāko. / 210

Causes of destruction

लालची लोगों के यश का नाश हो जाता है, पीठ पीछे निन्दा करने वालों की मैत्री नष्ट हो जाती है, अकर्मण्य का परिवार नष्ट हो जाता है, धन के लोभी का धर्म नष्ट हो जाता है, शराब-जुए आदि बुरे व्यसनों से विद्या की शक्ति नष्ट हो जाती है, कंजूस का सुख नष्ट हो जाता है और ऐसे राजा का राज्य नष्ट हो जाता है, जिसके मंत्री लापरवाह होते हैं।

Reputation is destroyed of a greedy person, friendship of a backbiter, family of one who has given up action, virtue of one who is greedy for wealth, power of learning of one who is given to evil things, happiness of a miser person and kingdom

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

of the king whose ministers are careless.

(1256)

लुब्धानां याचकः शत्रुः, मूर्खाणां बोधको रिपुः।
जारस्त्रीणां पतिः शत्रुश्चौराणां चन्द्रमाः रिपुः॥

कौन किस का शत्रु है चाणक्यनीति/9/6

Lubdhānāṁ yācakaḥ śatruḥ, mūrkhāṇāṁ bodhako ripuḥ।
Jārastrīṇāṁ patiḥ śatruścaurāṇām candramāḥ ripuḥ॥

Whose is enemy of who Cā. Nīti / 9 / 6

लोभी व्यक्ति का भिखारी, मूर्खों का समझाने वाला, व्यभिचारिणी स्त्रियों का पति और चोरों का चाँद शत्रु होता है।

A beggar is an enemy of greedy persons, an advisor is an enemy of fools, husband is an enemy of an adulteress and the moon is enemy of thieves.

(1257)

लोकानुग्रहकर्तारः प्रवर्धन्ते नरेश्वराः।
लोकानां संक्षयाच्चैव क्षयं यान्ति न संशयः॥

पञ्च./मित्रभेद/169

शासकों की उन्नति और अवनति के कारण

Lokānugrahakartāraḥ pravardhante nareśvarāḥ।
Lokānāṁ saṁkṣayāccaiva kṣayaṁ yānti na saṁśayaḥ॥

Causes of Pañca. / Mitrabhe. / 169
progress and down fall of rulers

जो राजा प्रजाओं पर कृपा करते हैं, वे ही उन्नति करते हैं और जो प्रजा का विनाश करते हैं, निःसन्देह उनका भी नाश हो जाता है।

The kings, who are kind to their subjects, make progress but who destroy the public are destroyed by themselves certainly.

(1258)

लोकान्तरं सुखं पुण्यं तपोदानसमुद्भवम्।
सन्ततिः शुद्धवंश्या हि परत्रेह च शर्मणे॥

उत्तम संतान का लाभ रघुवंश/1/69

Lokāntaraṁ sukhaṁ puṇyaṁ tapodānasamudbhavam।
Santatiḥ śuddhavaṁśyā hi paratreha ca śarmaṇe॥

Raguva. / 1 / 69

Advantage of good offspring

तप और दान से बनाया गया परलोक सुखकारी और पवित्र होता है। जो सन्तान श्रेष्ठ कुल में जन्म लेती है, वह इस लोक में भी और परलोक में भी सुख का कारण बनती है।

The other world which is produced by penance and donation is pure and gives happiness. The generation which takes birth in a noble family is the source of happiness in this and in the next world also.

(1259)

लोके सुखं परजनाय हितोपदेशः।
तद्वत्समाचरणमेव परन्तु दुःखम्॥

पर-उपदेश कुशल बहुतेरे सूक्तिमुक्तावली/47

Loke sukhaṁ parajanāya hitopadeśaḥ।
Tadvatsamācaraṇameva parantu duḥkham॥

Sūktimktāvati / 47

To teach others is an easy job

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संसार में दूसरे को हित का उपदेश देना बहुत सरल है परन्तु उसके अनुसार आचरण करना कठिन है।

It is easy to advise others for their welfare, but to act according to that advice is really very difficult.

(1260)

लोभः प्रतिष्ठा पापस्य, प्रसूतिर्लोभ एव च।
द्वेषक्रोधादिजनको लोभः पापस्य कारणम्॥

लोभ से हानियाँ भोजप्रबन्ध./1

Lobhaḥ pratiṣṭhā pāpasya, prasūtirlobha eva ca |
Dveṣakrodhādijanako lobhaḥ pāpasya kāraṇam ||

Bhojprabandha / 1

Disadvantages of greed

लोभ ही पाप का आधार है और लोभ ही पाप को जन्म देता है। द्वेष और क्रोध आदि को उत्पन्न करने वाला लोभ ही सब पापों की जड़ है।

It is greed which is the base of all sins. It is only greed which produces sins. Enmity, rage and other demerits are produced by greed. Therefore greed is the root of all sins.

(1261)

लोभश्चेदगुणेन किं, पिशुनता यद्यस्ति किं पातकैः,
सत्यं चेत्तपसा च किं, शुचि मनो यद्यस्ति तीर्थेन किम्।
सौजन्यं यदि किं गुणैः, सुमहिमा यद्यस्ति किं मण्डनैः,
सद्विद्या यदि किं धनैरपयशो यद्यस्ति किं मृत्युना॥

नीतिशतक/51

निन्दनीय अवगुण और प्रशंसनीय गुण

Lobhaścedagunena kiṁ, piśunatā yadyasti kiṁ pātakaiḥ,
Satyaṁ cettapasā ca kiṁ, śuci mano yadyasti tīrthena kim |
Saujanyaṁ yadi kiṁ guṇaiḥ, sumahimā yadyasti kiṁ maṇḍanaiḥ,
Sadvidyā yadi kiṁ dhanairapayaśo yadyasti kiṁ mṛtyunā ||

Condemnable demerits and admirable merits Nītiśataka / 51

यदि लालच है तो अन्य अवगुणों से क्या; चुगलखोरी यदि है तो पापों से क्या? सच्चाई यदि है तो तप से क्या? मन यदि शुद्ध है तो तीर्थ से क्या? सज्जनता यदि है तो गुणों से क्या? यदि सुयश है, तो आभूषणों से क्या? उत्तम विद्या यदि है तो धन से क्या और अपयश यदि है तो मृत्यु से क्या?

If there is greed, no need of other vices. If there is backbiting, no need of other sins. If there is truth, no need of separate penance. If there is pure mind, no need of pilgrimages. If there is humanity, no need of other merits. If there is good fame, no need of other ornaments. If there is good education, no need of riches and if there is ill fame, no need of death.

(1262)

लोभात्क्रोधः प्रभवति, क्रोधाद् द्रोहः प्रवर्तते।
द्रोहेण नरकं याति, शास्त्रज्ञोऽपि विचक्षणः॥

लोभ पापों का मूल भोजप्रबन्ध/2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Lobhāt krodhaḥ prabhavati, krodhād drohaḥ pravartate |
Droheṇa narakaṁ yāti, śāstrajño'pi vicakṣanaḥ ||

Bhojapra. / 2

Greed is the rool of all sins

लोभ से क्रोध का जन्म होता है, क्रोध से शत्रुता पैदा होती है और शत्रुता से शास्त्रों का विद्वान् और चतुर पुरुष भी नरक में पहुँच जाता है; अर्थात् बहुत दुःख प्राप्त करता है।

Greed produces anger, anger gives birth to enmity and due to enmity even a scholar of scriptures and very clever person falls into hell. It means he has to suffer many troubles.

(1263)

लोभेन बुद्धिश्चलति, लोभो जनयते तृषाम्।
तृषार्तो दुःखमाप्नोति, परत्रेह च मानवः ॥

लोभ बुद्धिनाशक हितोपदेश/मित्रलाभ/140

Lobhena buddhiścalati, lobho janayate tṛṣām |
Tṛṣārto duḥkhamāpnoti, paratreha ca mānavaḥ ||

Hitopa. / Mitralābha / 140

Greed destroys intellect

लोभ के कारण बुद्धि चंचल हो उठती है, लोभ तृष्णा को उत्पन्न करता है, तृष्णा से व्याकुल मनुष्य इस लोक तथा परलोक में भी दुःख को प्राप्त करता है।

Due to greed intellect begins to waver. It is greed which produces desires and a man whose desires never fulfil, suffers many troubles in this world and in other also.

(1264)

लौकिकं वैदिकं वाऽपि तथाऽऽध्यात्मिकमेव च।
आददीत यतो ज्ञानं, तं पूर्वमभिवादयेत् ॥

ज्ञानदाता को अभिवादन मनु./2/117

Laukikaṁ vaidikaṁ vā'pi, tathā'dhyātmikameva ca |
Ādadīta yato jñānaṁ, taṁ pūrvamabhivādayet ||

Manu. / 2 / 117

Greet the preacher

सांसारिक, वैदिक अथवा आध्यात्मिक ज्ञान जिससे प्राप्त करना हो, ज्ञान-प्राप्ति से पूर्व छात्र को उसे सादर नमस्कार करना चाहिए।

A student must first salute kneeling to such a person from whom he desires to obtain worldly, Vaidika or spiritual knowledge.

(1265)

लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते।
ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति ॥

ऋषियों की वाणी उत्तररामचरित / 1 / 10

Laukikānāṁ hi sādhūnāmarthaṁ vāganuvartate |
Ṛṣīṇāṁ punarādyānāṁ vācamartho'nudhāvati ||

Speech of sages Uttara Rāma. / 1 / 10

लौकिक साधुओं की वाणी कथनीय अर्थ का अनुसरण करती है, परन्तु पुरातन ऋषियों की वाणी के पीछे कथनीय अर्थ चला करते थे; अर्थात् वे जो कुछ कह देते थे, वही हो जाता था।

In the case of worldly wise saints, their speech follows facts. But in the case of premeval sages, the facts followed their speech.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व = Va

(1266)

वक्रोऽपि पङ्कजनितोऽपि दुरासदोऽपि,
व्यालाश्रितोऽपि विफलोऽपि सकण्टकोऽपि।
गन्धेन बन्धुरसि केतक पुष्पजेन,
ह्येको गुणः खलु निहन्ति समस्तदोषान्॥

एक ही गुण सब दोषों का नाशक (वृद्धचाणक्य)

Vakro'pi paṅkajanito'pi durāsado'pi,
Vyālāśrito'pi viphalo'pi sakaṇṭako'pi।
Gandhena bandhurasi ketaka puṣpajena,
Hyeko guṇaḥ khalu nihanti samastadoṣān॥

Only one good quality removes all faults (Vṛddhacāṇakya)

हे केवड़े, टेढ़ा होने पर भी, कीचड़ में उत्पन्न होने पर भी, दुष्प्राप्य होने पर भी, सर्पों द्वारा घिरे होने पर भी, फल रहित होने पर भी और काँटेदार होने पर भी, तुम्हारे फूलों से उत्पन्न सुगन्ध के कारण तुम (सबके) मित्र हो गये हो। ठीक ही है कि एक भी बड़ा गुण सब अवगुणों का नाश कर देता है।

O pandarnus, though your plant is curved, you grow in mud, you are rare, surrounded by snakes, have no fruit, and are full of thorns, yet the fragrance produced by your flowers is so good, that even this one quality covers all your demerits.

(1267)

वचस्तत्र प्रयोक्तव्यं यत्रोक्तं लभते फलम्।
स्थायी भवति चात्यन्तं रागः शुक्लपटे यथा॥

वचन का उचित प्रयोग पञ्च./मित्रभेद/32

Vacastatra prayoktavyaṁ yatroktaṁ labhate phalam।
Sthāyī bhavati cātyantaṁ rāgaḥ śukla-paṭe yathā॥

Pañca. / Mitrabhe. / 32

Just use of the word

अपनी बात वहीं कहनी चाहिए, जहाँ उसके कहने से कुछ लाभ हो। तभी उसका प्रभाव देर तक रहता है, जैसे सफेद कपड़े पर रंग स्थायी रूप से चढ़ जाता है।

One should give his opinion where he gets its result, due to which its impression becomes permanent as any colour on a white cloth remains permanently.

(1268)

वज्रलेपस्य मूर्खस्य नारीणां कर्कटस्य च।
एको ग्रहस्तु मीनानां नीलीमद्यपयोस्तथा॥

हठ के पक्के पञ्च./लब्धप्रणाश/7

Vajralepasya mūrkhasya nārīṇāṁ karkaṭasya ca।
Eko grahastu mīnānāṁ nīlīmadyapayostathā॥

Pañca. / Labdha. / 7

Those who stick on their obestinacy

कठोर लेप, मूर्ख, नारियों, केंकड़े, मछलियों, नीले रंग और शराबी की पकड़ अथवा हठ दृढ़ होते हैं अर्थात् ये जिस स्थान या बात पर अड़ जाते हैं, वहीं दृढ़ हो जाते हैं।

The following things stick to a place or to their obstinacy - (1) a mixture of

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

hard plaster, (2) food, (3) women, (4) crabs, (5) fish, (6) blue colour and (7) a drunkard.

(1269)

वनानि दहतो वह्नेः, सखा भवति मारुतः।
स एव दीपनाशाय, कृशे कस्यास्ति सौहृदम्॥

दुर्बल का कोई साथी नहीं पञ्च./काकोलूकीय/57

Vanāni dahato vahneḥ, sakhā bhavati mārutaḥ।
Sa eva dīpanāśāya, kṛśe kasyāsti sauhṛdam॥

No friend of the poor Pañca. / Kāko. / 57

वायु जंगल को जलाने वाली भयंकर आग की तो मित्र (सहायक) बन जाती है, परन्तु वही बेचारे दुर्बल दीपक को बुझा देती है। सच है कि दुर्बल का कोई साथी नहीं होता।

Air helps the strong forest fire to spread, but it extinguishes the poor earthen lamp. So it is said that there is nobody who helps the poor.

(1270)

वनेऽपि दोषाः प्रभवन्ति रागिणाम्,
गृहेऽपि पञ्चेन्द्रियनिग्रहस्तपः।
अकुत्सिते कर्मणि यः प्रवर्त्तते,
निवृत्तरागस्य गृहं तपोवनम्॥

हितोपदेश/सन्धि./84

कर्म की पवित्रता ही वाञ्छनीय है

Vane'pi doṣāḥ prabhavanti rāgiṇām,
Gṛha'pi pañcendriyanigrahastapaḥ।
Akutsite karmaṇi yaḥ pravarttate,
Nivṛttarāgasya gṛhaṁ tapovanam॥

Hitopa. / Sandhi. / 84

Purity of work is desirable

रागी लोग वन में जाकर भी दोषों से घिर जाते हैं और घर में रहता हुआ भी व्यक्ति पाँचों इन्द्रियों को वश में करता हुआ तप कर सकता है। जो व्यक्ति श्रेष्ठ कर्मों में लगा रहता है, और राग से रहित है, उसके लिए तो घर ही तपोवन है।

Passionate persons even living in a forest commit many sins, while a person who controls his senses performs penance even in his house. For one who performs good work and has no passions, even the house for him is the practice place of penance like a forest.

(1271)

वनेऽपि सिंहा मृगमांसभक्ष्याः,
बुभुक्षिता नैव तृणं चरन्ति।
एवं कुलीना व्यसनाभिभूताः,
न नीतिमार्गं परिलङ्घयन्ति॥

पञ्चतन्त्र/लब्धप्रणाश/55

संकटों में भी कुलीन श्रेष्ठ मार्ग नहीं छोड़ते

Vane'pi siṁhā mṛgamāṁsabhakṣyāḥ,
Bubhukṣitā naiva tṛṇaṁ caranti।
Evaṁ kulīnā vyasanābhibhūtāḥ,
Na nītimārgaṁ parilaṅghayanti॥

Pañca. / Labdha. / 55

Even in adversity great person never quit good path

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मृगों का मांस खानेवाले वन में रहनेवाले शेर, भूखे होने पर भी घास नहीं खाते। ठीक इसी प्रकार संकटों से घिर जाने पर भी ऊँचे वंश के लोग न्याय-मार्ग का उल्लंघन नहीं करते।

Even the lions who eat the flesh of deer, never eat grass in spite of keen hunger. In the same way the noble persons, even facing adversities, never abandon the right path.

(1272)

वने रणे शत्रुजलाग्निमध्ये,
महार्णवे पर्वतमस्तके वा।
सुप्तं प्रमत्तं विषमस्थितं वा,
रक्षन्ति पुण्यानि पुराकृतानि ॥

शुभकर्म ही सर्वत्र रक्षा करते हैं नीतिशतक/89

Vane raṇe śatrujalāgnimadhye,
Mahārṇave parvatamastake vā |
Suptaṁ pramattaṁ viṣamasthitaṁ vā,
Rakṣanti puṇyāni purākṛtāni ||

Nītiśataka / 89

Good deeds protect every where

कोई व्यक्ति वन में हो या युद्ध के मैदान में हो, या शत्रु, जल अथवा अग्नि के मध्य में भी हो, महासागर में हो अथवा पहाड़ की चोटी पर हो, सोया हो या पागल हो गया हो अथवा संकटों से भी घिरा हो, तो भी पूर्व जन्म में उसके द्वारा किए गए शुभ कर्म उसको बचा ही लेते हैं।

A man who did good works in the previous life, such works save him in forest, in wars, among the enemies, in water or in fire, in ocean or on the top of a mountain, whether he remains asleep, is mad or surrounded by adversities.

(1273)

वयं येभ्यो जाताश्चिरपरिगता एव खलु ते,
समं यैः संवृद्धाः स्मृतिविषयतां तेऽपि गमिताः।
इदानीमेते स्मः प्रतिदिवसमापन्नपतनाः,
गतास्तुल्यावस्थां सिकतिलनदीतीरतरुभिः ॥

लम्बी आयु की समस्याएँ वैराग्यशतक/34

Vayaṁ yebhyo jātāścirapariga tā eva khalu te,
Samaṁ yaiḥ saṁvṛddhāḥ smṛtiviṣayatāṁ te'pi gamitāḥ |
Idānīmete smaḥ pratidivasamāpannapatanāḥ,
Gatāstulyāvasthāṁ sikatilanadītīratarubhiḥ ||

Problems of long age Vairāgyaśataka / 34

जिनसे हमारा जन्म हुआ था, वे तो बहुत पूर्व ही संसार से विदा हो चुके हैं। जिनके साथ हम बड़े हुए, वे भी अब स्मरण करने योग्य हो गये हैं; अर्थात् संसार में नहीं है। इस समय हमारी दशा ऐसी है कि हम प्रतिदिन जरा-जीर्ण होते जा रहे हैं। जैसी नदी के रेतीले तट पर उगे पेड़ों की दशा होती है, वही दशा हमारी भी है; पता नहीं किस समय नदी की बाढ़ में वे पेड़ बह जाए और किस समय हम भी संसार से विदा हो जाएँ।

Those who had given us birth, left this world very long before. Those with whom we grew up also have

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

gone from this world. Now our bodies are decaying day by day and we have come to the state of the trees who have grown at the sandy shore of a river. Nobody knows when the flooded river takes them away and so it is also unknown when we also leave this world.

(1274)

वयमिह परितुष्टा वल्कलैस्त्वं दुकूलैः,
सम इह परितोषो निर्विशेषो विशेषः।
स तु भवति दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला,
मनसि तु परितुष्टे कोऽर्थवान् को दरिद्रः॥

सन्तोष ही सबसे बड़ा धन है वैराग्यशतक/45

Vayamiha parituṣṭā valkalaistvaṁ dukūlaiḥ,
Sama iha paritoṣo nirviśeṣo viśeṣaḥ।
Sa tu bhavati daridro yasya tṛṣṇā viśālā,
Manasi tu parituṣṭe ko'rthavān ko daridraḥ॥

Vairāgyaśatak / 45

Contentment is the greatest wealth

हम महात्मा लोग तो वृक्ष की छाल पहन कर ही प्रसन्न हैं और तुम धनी लोग बढ़िया वस्त्र पहनकर प्रसन्न हो। तुम्हारे वस्त्र हमारे वल्कल से भले ही विशेष दिखाई देते हों, परन्तु हम-तुम में सन्तोष बराबर है। गरीब तो वह होता है, जिसकी कामनाएँ बढ़ी हुई हैं। यदि मन में कामनाएँ नहीं हैं और वह संतुष्ट है, तो धनी और निर्धन में कोई अन्तर नहीं है।

We saints are happy even in the bark-clothes while you are happy in the precious garments. Though there is a difference in both type of clothes, yet the satisfaction of both is equal. Really he is poor who has many desires, but if there is no desire in one's mind, then there is no any difference between the rich and the poor.

(1275)

वयोरूपगुणैर्हीनमपि कुर्यात् सुदर्शनम्।
व्यायामं कुर्वतो नित्यं विरुद्धमपि भोजनम्॥

व्यायाम के लाभ सुश्रुत/चिकित्सा/44

Vayorūpaguṇairhīnamapi kuryāt sudarśanam।
Vyāyāmaṁ kurvato nityaṁ viruddhamapi bhojanam॥

Suśruta / Cikitsā / 44

Advantages of physical exercise

जो व्यक्ति व्यायाम करता है, चाहे वह आयु, सौन्दर्य तथा अन्य गुणों से रहित भी हो, सुन्दर दिखाई देने लगता है और उल्टा-सीधा खाया हुआ भी उसे पच जाता है।

The person who takes exercise regularly becomes worth looking, though he may be without required age, beauty and other merits. Any kind of good or bad food taken by him becomes easily digestive for him.

(1276)

वरं न राज्यं, न कुराजराज्यम्,
वरं न मित्रं, न कुमित्रमित्रम्।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वरं न शिष्यो, न कुशिष्यशिष्यो-
वरं न दाराः न कुदारदाराः ॥

इनका न होना ही भला है चाणक्यनीति/6/13

Varaṁ na rājyaṁ, na kurājarājyam,
Varaṁ na mitraṁ, na kumitramitram |
Varaṁ na śiṣyo, na kuśiṣyaśiṣyo,
Varaṁ na dārāḥ, na kudāradārāḥ ||

Cā. Nīti / 6 / 13

The absence of these things is better

भले ही राज्य न हो, परन्तु बुरा राज्य नहीं होना चाहिए। भले ही कोई मित्र न बने, परन्तु दुष्ट व्यक्ति मित्र नहीं होना चाहिए। भले ही कोई शिष्य मिले या न मिले, परन्तु बुरा शिष्य नहीं होना चाहिए। भले ही कोई पत्नी बने या न बने, परन्तु बुरी पत्नी नहीं होनी चाहिए।

Even there is no administration, that is better than a bad one. If one has no friend, that is better than a bad friend. If the teacher has no pupil, that is better than having a bad pupil. And if one has no wife, that is better than a bad wife.

(1277)

वरं पर्वतदुर्गेषु भ्रान्तं वनचरैः सह।
न मूर्खजनसम्पर्कः सुरेन्द्रभवनेष्वपि ॥

मूर्खों से सम्पर्क महान् हानिकारक नीतिशतक/13

Varaṁ parvatadurgeṣu bhrāntaṁ vanacaraiḥ saha |
Na mūrkhajanasamparkaḥ Surendrabhavaneṣvapi ||

Nitiśataka / 13

Contact with fools is much harmful

इन्द्र के भवनों में भी मूर्ख जनों की संगति की अपेक्षा पहाड़ों के दुर्गम स्थानों पर जंगली लोगों के साथ घूमना कहीं अच्छा है।

It is better to wander in the difficult hilly regions with the forestmen than to have contact of fools in the palaces of Indra, the king of gods.

(1278)

वरं मौनं कार्यं, न च वचनमुक्तं यदनृतम्,
वरं क्लैब्यं पुंसां, न च परकलत्राभिगमनम्।
वरं प्राणत्यागो, न च पिशुनवाक्येष्वभिरुचिः,
वरं भिक्षाशित्वं, न च परधनास्वादनसुखम् ॥

हितोपदेश/मित्रलाभ/135

बुरे कामों से बचने का प्रयत्न करना चाहिए

Varaṁ maunaṁ kāryaṁ, na ca vacanamuktaṁ yadanṛtam,
Varaṁ klaibyaṁ puṁsāṁ, na ca parakalatrābhigamanam |
Varaṁ prāṇatyāgo, na ca piśunavākyeṣvabhirucih,
Varaṁ bhikṣāśitvaṁ, na ca paradhanāsvādanasukham ||

Hitopa. / Mitrabhe. / 135

झूठ बोलने की अपेक्षा चुप रह जाना अच्छा है। पराई स्त्रियों से सम्पर्क रखने की अपेक्षा नपुंसक हो जाना कहीं अच्छा है। चुगलखोरों की बातों का मजा लेने की अपेक्षा मर जाना अच्छा है। और, दूसरे के धन द्वारा सुख प्राप्त करने की कामना करने से भीख माँग कर खा लेना अच्छा है।

To remain silent is better than to tell a lie. To remain impotent is better than to have contact with the wives of others. It is better to die than to take interest in the talks of back-biters. And, to eat by begging is

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

better than to desire enjoyment with the money of others.

(1279)

वरं वनं व्याघ्रगजेन्द्रसेवितं,
द्रुमालयं पक्वफलाम्बुभोजनम्।
तृणानि शय्या परिधानवल्कलं,
न बन्धुमध्ये धनहीनजीवनम्॥

धनहीन जीवन - निन्दनीय हितोपदेश/मित्रलाभ/151

Varaṁ vanaṁ vyāghragajendra sevitaṁ,
Drumālayaṁ pakvaphalāmbubhojanam।
Tṛṇāni śayyā paridhānavalkalaṁ,
Na bandhumadhye dhanahīnajīvanam॥

Hitopa. / Mitralābha / 151

Life without money is condemnable

बन्धुओं के मध्य निर्धन होकर जीवन बिताने की अपेक्षा बाघों और हाथियों से भरपूर जंगल में निवास, पेड़ों के मध्य पके फलों का भोजन, तिनकों की शय्या और वल्कल का पहनावा कहीं अच्छा है।

It is better to live in the forest where tigers and big elephants live, to eat ripe fruits of the trees, to sleep on the bed of straws and to wear clothes• made of a tree bark, than to live among relatives without having money.

(1280)

वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतान्यपि।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारागणोऽपि च॥

गुणवान् एक पुत्र भी पर्याप्त है चाणक्यनीतिः / 4/6

Varameko guṇī putro, na ca mūrkhaśatānyapi।
Ekaścandrastamo hanti na ca tārāgaṇo'pi ca॥

Cā. Nīti / 4 / 6

Only one virtous son is better

एक गुणवान् पुत्र सैकड़ों मूर्ख पुत्रों से कहीं अच्छा है। एक ही चाँद अंधेरे को दूर करता है, परन्तु सैकड़ों तारे नहीं।

A meritorious son is better than hundred foolish ones. Only one moon removes the darkness, but hundreds of stars cannot do this work.

(1281)

वरयेत् कुलजां प्राज्ञो नीरूपामपि कन्यकाम्।
रूपशीलां न नीचस्य विवाहः सदृशे कुले॥

विवाह-योग्य कन्या चाणक्यनीति/1/14

Varayet kulajāṁ prājño, nīrūpāmapi kanyakām।
Rūpaśīlāṁ na nīcasya vivāhaḥ sadṛśe kule॥

Merrigeable girl Cā. Nīti / 1 / 14

बुद्धिमान् व्यक्ति को चाहिए कि अपने सदृश कुल की कुलीन कन्या का ही वरण करे, चाहे वह शरीर से भले ही सुन्दर न हो परन्तु स्वभाव से सुन्दर होनी चाहिए। और अपने से नीच कुल में विवाह नहीं करना चाहिए।

A wiseman should select a girl, for his marriage, from a similar family which should be of noble family. She should be of good habit inspite of being less beautiful. He should not marry a girl of lower family than his one.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(1282)

वलिभिर्मुखमाक्रान्तं पलितैरङ्कितं शिरः।
गात्राणि शिथिलायन्ते, तृष्णैका तरुणायते॥

वृद्धावस्था में तृष्णा का विकास वैराग्यशतक/14

Valibhirmukhamākrāntaṁ palitairaṅkitaṁ śiraḥ |
Gātrāṇi śithilāyante, tṛṣṇaikā taruṇāyate ||

Vairāgyaśataka / 14

Growing greed even in the old age

मुख झुर्रियों से घिर गया है, सिर सफेद बालों से ढक चुका है, सभी अंग ढीले पड़ रहे हैं, परन्तु लालसा जवान होती जा रही है।

The face has been covered with wrinkles. The head has been covered with white hair and all organs are going to be inefficient but desires are becoming young.

(1283)

वर्जयेन्मधु मांसं च, गन्धं माल्यं रसान् स्त्रियः।
कामं क्रोधं च लोभं च, नर्त्तनं गीतवादनम्॥

छात्र के लिए त्याज्य मनु./2/177

Varjayenmadhu māṁsaṁ ca gandhaṁ mālyaṁ rasān striyaḥ |
Kāmaṁ krodhaṁ ca lobhaṁ ca narttanaṁ gītavādanam ||

Manu. / 2 / 177

To be abandoned by a student

छात्र को शराब, मांस, सुगन्धित द्रव्यों, मालाओं, उत्तेजक रसीले पदार्थों, स्त्रियों, काम, क्रोध, लोभ, नृत्य तथा गाने-बजाने का परित्याग कर देना चाहिए।

A student should abandon wine, meat, perfuming things, garlands, delicious things, women, lust, rage, greed, dance, music and playing musical instruments which provoke bad ideas.

(1284)

वहेदमित्रं स्कन्धेन, यावत्कालस्य पर्ययः।
प्राप्तकालं तु विज्ञाय भिन्द्याद् घटमिवाश्मनि॥

संकट में शत्रु से सद्व्यवहार महाभा./शान्ति./140/18

Vahedamitraṁ skandhena, yāvat kālasya paryayaḥ |
Prāptakālaṁ tu vijñāya bhindyād ghaṭamivāśmani ||

To serve even an enemy in adversity Mahābhā. / Śānti / 140 / 18

जब तक समय प्रतिकूल हो, तब तक शत्रु को कंधे पर रखकर भी ढो लेना चाहिए। अनुकूल समय आने पर उसे ऐसे नष्ट कर देना चाहिए जैसे घड़े को पत्थर पर फेंककर तोड़ दिया जाता है।

In the time of adversity, a man should carry even his enemy on his shoulder, but when the time becomes favourable, he should kill his enemy in the same way as a pitcher is destroyed by throwing it upon a stone.

(1285)

वह्निस्तस्य जलायते, जलनिधिः कुल्यायते तत्क्षणात्,
मेरुः स्वल्पशिलायते, मृगपतिः सद्यः कुरङ्गायते।
व्यालो माल्यगुणायते विषरसः पीयूषवर्षायते,
यस्याऽङ्गेऽखिललोकवल्लभतमं शीलं समुन्मीलति॥

शील का परिणाम नीतिशतक/100

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Vahnistasya jalāyate, jalanidhiḥ kulyāyate tatkṣaṇāt,
Meruḥ svalpaśilāyate, mṛgapatiḥ sadyaḥ kuraṅgāyate |
Vyālo mālyaguṇāyate, viṣarasaḥ pīyūṣavarṣāyate,
Yasyāṅge'khilalokavallabhatamaṁ śīlaṁ samunmīlati ||

Result of good nature Nītiśataka / 100

जिसके शरीर के प्रत्येक भाग से संसार द्वारा सर्वोत्तम प्यार किए जाने योग्य शील (उत्तम स्वभाव) प्रकट होता है, उसके लिए आग जल के समान शीतल, सागर क्षणभर में छोटी सी नहर-सा, मेरु-पर्वत छोटी सी शिला-सा, सिंह मृग-सा, साँप फूल की माला-सा और विषैला पानी अमृत की वर्षा सा बन जाता है। भाव यह है कि उत्तम स्वभाव होने पर दूसरों के सहयोग से सभी कठिनाइयाँ समाप्त हो जाती हैं।

For him, whose body shows the best nobility which is loved by all, fire soon becomes cool like water, a sea soon becomes like a stream, 'Meru' becomes like a small rock, a lion becomes like a deer, a snake becomes like a flower-garland and poisonous water becomes like the rain of nectar. The sense is that all difficulties of a noble person are removed very soon by the help of other people.

(1286)

वाक्पारुष्यं परं लोक उद्वेजकमनर्थकम्।
न कुर्याद् विप्रियां वाचं प्रकुर्याज्जनमात्मसात्॥

कठोर — वचन - त्याज्य कामन्दकीयनीतिसार/15/9

Vākpāruṣyaṁ paraṁ loka udvejakamanarthakam |
Na kuryād vipriyāṁ vācaṁ prakuryājjanamātmasāt ||

Kāmandkiya. / 15 / 9

Keep off harsh words

संसार में बिना किसी कारण वाणी की कठोरता अत्यन्त उद्वेग का कारण होती है। अतः अप्रिय वाणी का उच्चारण नहीं करना चाहिए। प्रिय वाणी के द्वारा ही लोग अपने बन जाया करते हैं।

In the world the harshness of words causes great irritation and bad results. One should never utter unpleasant words. Due to sweet words one can make people his own friends.

(1287)

वाक्सूनृता दया दानं, दीनोपगतरक्षणम्।
इति सङ्गः सतां साधु, ह्येतत् सत्पुरुषव्रतम्॥

सत्पुरुषों के व्रत कामन्दकनीतिसार/3/2

Vāksūnṛtā dayā dānaṁ, dīnopagatarakṣaṇam |
Iti saṅgaḥ satāṁ sādhu, hyetat satpuruṣavratam ||

Kāmandak. / 3 / 2

Principles of good persons

सत्य और मधुर वाणी, दया, दान, दीन-दुःखियों की रक्षा और भली प्रकार से सज्जनों की सङ्गति करना - ये ही सत्पुरुषों के व्रत हैं।

The following are the principles of good persons :- (1) true and sweet speech, (2) kindness, (3) charity, (4) protection of the poor and the troubled and (5) the company of good people.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(1288)

वाङ्म आसन्नसोः प्राणश्चक्षुरक्ष्णोः श्रोत्रं कर्णयोः।
अपलिता केशा अशोणा दन्ता बहु बाह्वोर्बलम्॥

प्रभो मेरे सभी अंग सुदृढ़ रहें! अथर्व./19/60/1

Vaṅma āsannasoḥ prāṇaścakṣurakṣṇoḥ śrotraṁ karṇayoḥ |
Apalitā keśā aśoṇā dantā bahu bāhvorbalam ||

Atharva. / 19 / 60 / 1

May all my organs remains strong!

प्रभो! मेरे मुख में वाक्शक्ति, नासिका-छिद्रों में प्राणशक्ति, आँखों में देखने की शक्ति और कानों में सुनने की शक्ति बनी रहे। मेरे बाल सफेद न हों, दाँत लाल न हों और मेरी भुजाओं में बहुत शक्ति बनी रहे।

O God! May my mouth speak well, my nostrils breathe well, my eyes see well and my ears hear well! God! May my hair remain black, my teeth be without redness and my both arms may have much strength!

(1289)

वाच्यं श्रद्धासमेतस्य, पृच्छतश्च विशेषतः।
प्रोक्तं श्रद्धाविहीनस्य, अरण्यरुदितोपमम्॥

श्रद्धालु को ही बताना चाहिए पञ्च./मित्रभेद/343

Vācyaṁ śraddhāsametasya, pṛcchataśca viśeṣataḥ |
Proktaṁ śraddhāvihīnasya, araṇyaruditopamam ||

Pañca. / Mitrabhe. / 343

To advise to a devotee only

श्रद्धालु और विशेषरूप से पूछने वाले को ही कोई बात बतानी चाहिए। श्रद्धा से रहित को कही हुई बात तो ऐसी ही होती है, जैसे जंगल में रोना व्यर्थ होता है।

One should tell something who has faith and specially to him who desires to know. Any thing told to beliefless person is like crying in the forest.

(1290)

वाच्यावाच्यं प्रकुपितो न विजानाति कर्हिचित्।
नाकार्यमस्ति क्रुद्धस्य, नाऽवाच्यं विद्यते क्वचित्॥

क्रोध के दुष्परिणाम वा. रामा./सुन्दरकाण्ड/55/5

Vacyāvācyaṁ prakupito na vijānāti karhicit |
Nākāryamasti kruddhasya, nā'vācyaṁ vidyate kvacit ||

Vā. Rā. / Sundara. / 55 / 5

Bad results of anger

क्रोधाविष्ट व्यक्ति के लिए कहीं भी कथनीय या अकथनीय कुछ भी नहीं होता। क्रोध से पूर्ण व्यक्ति के लिए कुछ भी ऐसा नहीं कहा जा सकता, जिसे वह कहीं भी न कर बैठे और जिसे वह मुख से बोलने न पाए। अर्थात् क्रोधाविष्ट सब का बुरा-भला कर जाता या बोल जाता है।

A person full of rage may speak any good or bad thing. Such person may tell and may do every thing which is good or bad.

(1291)

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तं शरीरम्।
ओ३म् क्रतो स्मर, क्लिबे स्मर कृतं स्मर॥

केवल ओ३म् को याद कर यजु./40/15

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Vāyuranilamamṛtamathedaṁ bhasmāntaṁ śarīram |
Om krato smara, klibe smara kṛtaṁ smara ||

Recollect Om only Yaju. / 40 / 15

वह गतिशील जीवात्मा अभौतिक है, अतएव कभी मृत्यु को प्राप्त नहीं होता, परन्तु यह भौतिक शरीर अन्त में जलकर राख हो जाता है। हे कर्मशील जीवात्मन्! तू सर्वरक्षक ईश्वर (ओ३म्) का स्मरण कर, सामर्थ्य प्राप्ति के लिए उसी का स्मरण किया कर और अपने कर्मों का निरीक्षण किया कर, ताकि तू सदा शुभ कार्य ही करे।

This soul is movable and immaterial. So it never gets death. But the body which is made of matter is burnt at the end and remains in the form of ashes. O active soul, you should remember God, who is the protector of the world. To receive ability you must meditate Him and always look into your deeds, so that you will always do good works.

(1292)

वार्ता च कौतुकवती विमला च विद्या,
लोकोत्तरः परिमलश्च कुरङ्गनाभेः।
तैलस्य बिन्दुरिव वारिणि दुर्निवार-
मेतत्त्रयं प्रसरति स्वयमेव भूमौ॥

स्वयं फैलने वाली वस्तुएँ प्रसन्नराघव/2/2

Vārtā ca kautukavatī vimalā ca vidyā,
Lokottaraḥ parimalaśca kuraṅganābheḥ |
Tailasya binduriva vāriṇi durnivāram,
etat trayaṁ prasarati svayameva bhūmau ||

Prasanna Rāghava / 2 / 2

The things which spread autometically

कौतुकपूर्ण वृत्तान्त, निर्मल विद्या, कस्तूरी की अलौकिक सुगन्ध – ये तीनों वस्तुएँ जैसे जल में तेल फैल जाता है, वैसे ही स्वयमेव फैल जाती हैं; इन्हें रोकना कठिन है।

An incident causing curiosity, pure knowledge and unique fragrance of musk — these three things spread everywhere like a drop of oil on water. So these cannot be checked from spreading.

(1293)

वासनानुदयो भोग्ये, वैराग्यस्य परोऽवधिः।
अहम्भावोदयाभावो, बोधस्य परमोऽवधिः॥

विवेकचूडामणिः/425

उत्तम वैराग्य और उत्तम बोध

Vāsanānudayo bhogye, vairāgyasya paro'vadhiḥ |
Ahambhāvodayābhāvo, bodhasya paramo'vadhiḥ ||

Best detachment and the best knowledge Vivekacū. / 425

भोग्य पदार्थ के प्रति वासना का उद्दीप्त न होना ही सब से उत्कृष्ट वैराग्य है। अहंकार की समाप्ति हो जाना ही ज्ञान की परम सीमा है।

Absence of desire for the thing that is to be enjoyed is the last limit of the absence of desire. The end of ego is the last limit of knowledge.

(1294)

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय,
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥

आत्मा का नया शरीर भगवद्गीता/2/22

Vāsāṁsi jīrṇāni yathā vihāya,
Navāni gṛhṇāti naro'parāṇi |
Tathā śarīrāṇi vihāya jīrṇā-
nyanyāni saṁyāti navāni dehī ||

Bhaga. Gītā / 2 / 22

New body of the soul

जैसे फटे-पुराने कपड़ों का त्याग करके मनुष्य अन्य नये कपड़े पहन लेता है, उसी प्रकार जर्जर हुए शरीरों को छोड़कर यह जीवात्मा नये शरीर को धारण करता है।

As a man wears new clothes leaving aside the worn-out ones, in the same way this soul leaves the old and decayed bodies and goes into new ones.

(1295)

विघसाशी भवेन्नित्यं, नित्यं वाऽमृतभोजनः।
विघसो भुक्तशेषं तु, यज्ञशेषं तथामृतम् ॥

यज्ञशेष भोजन अमृत है मनु./4/285

Vighasāśī bhavennityaṁ, nityaṁ vā'mṛtabhojanaḥ |
Vighaso bhuktaśeṣaṁ tu, yajñaśeṣaṁ tathāmṛtam ||

The food eaten Manu. / 4 / 285
after sacrifices is like nectar

मनुष्य को 'विघस' अथवा 'अमृत' नामक भोजन करना चाहिए। 'विघस' का अर्थ है — सबके खाने के बाद बचा हुआ भोजन और 'अमृत' का अर्थ है — यज्ञ में आहुति देने के बाद बचा हुआ भोजन।

A man should eat 'Vighasa' or 'Amṛta' food. 'Vighasa' means the remaining food which is left after being eaten by others. And 'Amṛita' means the food left after performing sacrifice (Yajña).

(1296)

वित्तं बन्धुर्वयः कर्म, विद्या भवति पञ्चमी।
एतानि मान्यस्थानानि, गरीयो यद् यदुत्तरम् ॥

क्रमशः माननीय से माननीय मनु./2/136

Vittaṁ bandhurvayaḥ karma, vidyā bhavati pañcamī |
Etāni mānyasthānāni, garīyo yad yaduttaram ||

Manu. / 2 / 136

Series of honourable things

धन, सम्बन्धी, आयु, कर्म और पाँचवीं विद्या – ये सभी सम्मान योग्य वस्तुएँ हैं, परन्तु पहली से आगे की वस्तुएँ क्रमशः अधिक मान योग्य हैं, जैसे धन की अपेक्षा सम्बन्धी और विद्या सबसे अधिक माननीय होती है।

Wealth, relatives, age, work and the fifth is education. All these are respectable, but latter one is more respectable than previous one. So education deserves the most respect.

(1297)

वितीर्णशिक्षा इव हृत्पदस्थसरस्वती-वाहनराजहंसैः।
ये क्षीरनीरप्रविभागदक्षा विवेकिनस्ते कवयो जयन्ति ॥

विवेकशील कवियों की जय हो सुभाषितावलि / 171

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Vitīrṇaśikṣā iva hṛtpadasthasarasvatī-vāhanarājahaṁsaiḥ |
Ye kṣīranīrapravibhāga-dakṣā vivekinaste kavayo jayanti ||

Vicorious are the discriminative poets Subhāśitāvali / 171

हृदय में रहने वाली सरस्वती देवी की सवारी बने हुए राजहंसों से ही मानो शिक्षा प्राप्त करके जो कवि दूध और पानी को पृथक् करने में चतुर और विवेकी हो चुके हैं, वे ही सर्वत्र विजय प्राप्त करते हैं।

The poets who can discriminate good and bad like the swans who can separate milk from water, are honoured every where. They have this education of discrimination from the swans, the vehicle of the goddess of education 'Sarasvati', that lives in the hearts of these poets.

(1298)

वित्तेन रक्ष्यते धर्मो, विद्या योगेन रक्ष्यते।
मृदुना रक्ष्यते भूपः, सत्स्त्रिया रक्ष्यते गृहम्॥

रक्षा करने के साधन चाणक्यनीति/5/9

Vittena rakṣyate dharmo, vidyā yogena rakṣyate |
Mṛdunā rakṣyate bhūpaḥ, satstriyā rakṣyate gṛham ||

Means to protect Cā. Nīti / 5 / 9

धन से धर्म की और प्रयोग करने से विद्या की रक्षा होती है। कोमल व्यवहार से राजा को वश में किया जा सकता है और अच्छी स्त्री से घर की रक्षा होती है।

Morality can be saved with money, practice saves education, the king can be made favourite with soft behaviour and a house is saved by a good wife.

(1299)

विद्यमाना गतिर्येषामन्यत्रापि सुखावहा।
ते न पश्यन्ति विद्वांसो देशभङ्गं कुलक्षयम्॥

आत्मरक्षा प्रथम कर्त्तव्य पञ्च./मित्रभेद/270

Vidyamānā gatiryeṣāmanyatrāpi sukhāvahā |
Te na paśyanti vidvāṁso deśabaṅgaṁ kulakṣayam ||

Pañca. / Mitrabhe. / 270

Self-safety is the first duty

जो लोग विदेश में भी सुखपूर्वक रह सकते हैं, ऐसे विद्वान् देश की उथल-पुथल और कुल के नाश की उपेक्षा कर देते हैं।

Those who can live happily in other countries, such learned persons overlook the disturbance of their own country and destruction of their creed.

(1300)

विद्यां वित्तं शिल्पं तावन्नाप्नोति मानवः सम्यक्।
यावद् व्रजति न भूमौ देशाद् देशान्तरं हृष्टः॥

भ्रमण के लाभ पञ्चत./मित्रभेद/350

Vidyāṁ vittaṁ silpaṁ tāvannāpnoti mānavaḥ samyak |
Yāvad vrajati na bhūmau, deśāddeśāntaraṁ hṛṣṭaḥ ||

Pañca. / Mitrabhe. / 350

Advantages of journeys

मनुष्य तब तक अच्छी तरह विद्या, धन और शिल्प नहीं प्राप्त कर सकता है, जब तक कि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वह प्रसन्न मन से एक देश से दूसरे देश को नहीं जाता।

A man does not properly acquire learning, wealth and knowledge of the arts, as long as he does not travel from one country to another with his heart full of joy.

(1301)

विद्याञ्चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते॥

ज्ञान और कर्म यजुर्वेद/40/14

Vidyāñcāvidyāṁ ca yastadvedobhayaṁ saha |
Avidyayā mṛtyuṁ tīrtvā vidyayā'mṛtamaśnute ||

Knowledge and work Yaju. / 40 / 14

जो ज्ञान तथा कर्म, दोनों का महत्त्व साथ-साथ समझ लेता है, वह कर्म द्वारा मृत्यु को पार करके ज्ञान द्वारा मुक्ति को पा लेता है। अतः कर्म और ज्ञान दोनों का समान महत्त्व है।

One who knows the importance of work and knowledge both, can cross death by work and obtain salvation by knowledge.

(1302)

विद्या तपो वा विपुलं धनं वा,
सर्वं ह्येतद् व्यवसायेन शक्यम्।
बुद्ध्यायत्तं तन्निवसेद् देहवत्सु,
तस्माद् विद्याद् व्यवसायं प्रभूतम्॥

परिश्रम सफलता का स्रोत महाभा./शान्ति/120/45

Vidyā tapo vā vipulaṁ dhanaṁ vā,
Sarvaṁ hyetad vyavasāyena śakyam |
Buddhyāyattaṁ tannivased dehavatsu,
Tasmād vidyād vyavasāyaṁ prabhūtam ||

Mahābhā. / Śānti / 120 / 45

Hard work means of success

विद्या, तप अथवा बहुत धन- यह सभी कुछ परिश्रम से प्राप्त किया जा सकता है। शरीरधारियों में यह परिश्रम विचारपूर्वक ही रहता है। अतः परिश्रम को ही कार्य की सफलता में मुख्य समझना चाहिए।

Education, penance or much wealth can be obtained with hard work. Hard-work remains in the creatures with their intellect. Therefore it is hardwork which mainly leads to success.

(1303)

विद्यातीर्थे विमलमतयः साधवः सत्यतीर्थे,
गङ्गातीर्थे मलिनमनसो दानतीर्थे धनाढ्याः।
लज्जातीर्थे कुलयुवतयो योगिनो ज्ञानतीर्थे,
धारातीर्थे धरणिपतयः कल्मषं क्षालयन्ति॥

विभिन्न तीर्थ प्रसङ्गाहरण पृ०/10

Vidyātīrthe vimalamatayaḥ, sādhavaḥ satyatīrthe,
Gaṅgātīrthe malinamanaso, dānatīrthe dhanāḍhyāḥ |
Lajjātīrthe kūlayuvatayo, yogino jñānatīrthe,
Dhārātīrthe dharaṇipatayaḥ kalmaṣaṁ kṣālayanti ||

Hermitages Prasaṅgāharaṇa / P. 10

निर्मल बुद्धि वाले विद्या-तीर्थ में, साधुजन सत्यतीर्थ में, मलिन मन वाले गंगा-तीर्थ में, धनाढ्य दान-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तीर्थ में, कुलांगनाएँ लज्जा–तीर्थ में, योगी ज्ञान–तीर्थ में और राजा युद्ध में अपने आप का प्रक्षालन (पवित्र) करते हैं।

The following persons take bath in the following holy places to remove their sins :- (1) Men with pure minds in education, (2) good persons in truth, (3) persons having impure minds in Ganga, (4) the rich in chairty, (5) noble-family- ladies in modesty, (6) Yogīs in knowledge and (7) kings in the battle field.

(1304)

विद्या ददाति विनयं, विनयाद्याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद्धनमक्षय्यं, धनाद्धर्मस्ततः सुखम्॥

सुख के साधन हितोपदेश/प्रस्तावना/6

Vidyā dadāti vinayaṁ, vinayādyāti pātratām |
Pātratvāddhanamakṣayyaṁ, dhanāddharmastataḥ sukham ||

Means of happness Hitopa. / Pra. 6

विद्या नम्रता पैदा करती है, नम्रता से मनुष्य अधिकारी बनता है, अधिकारी बन जाने पर स्थायी धन मिल जाता है, धन से फिर धर्म के कार्य होते हैं और उससे फिर सुख मिल जाता है।

Education is the source of politeness. Politeness makes a man deserving. Deserving man gets permanent wealth. With wealth he performs good works, which are the source of happiness.

(1305)

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्,
विद्या भोगकरी यशःसुखकरी, विद्या गुरूणां गुरुः।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने, विद्या परा देवता,
विद्या राजसु पूज्यते, न हि धनं, विद्याविहीनः पशुः॥

विद्या की महिमा नीतिशतक/20

Vidyā nāma narasya rūpamadhikaṁ, pracchannaguptaṁ dhanam,
Vidyā bhogakarī yaśaḥsukhakarī, vidyā gurūṇāṁ guruḥ |
Vidyā bhandhujano videśagamane, vidyā parā devatā,
Vidyā rājasu pūjyate, na hi dhanaṁ, vidyāvihīnaḥ paśuḥ ||

Excelency of knowledge Nītiśataka / 20

विद्या तो मनुष्य का विशेष सौन्दर्य तथा अत्यन्त छिपा हुआ धन है। विद्या सब भोग्य पदार्थ, यश और सुख देने वाली है। यह तो गुरुओं की भी गुरु है। विदेश जाने पर विद्या ही अपना सम्बन्धी है। विद्या ही सबसे श्रेष्ठ देवता है। विद्या का मान राजा भी करते हैं; वे धन का मान नहीं करते। जो विद्या से रहित है, वह तो निरा पशु है।

Education is the special beauty of a man and it is well-hidden money. Education is the source of all enjoyable things, fame and happiness. This is a teacher of teachers also. Education is a companion of a man in foreign land. It is the best goddess. It is honoured by the kings, but not the money. A person without education is only an animal.

(1306)

विद्यामदो धनमदस्तृतीयोऽभिजनो मदः।
मदा एतेऽवलिप्तानामेत एव सतां दमाः॥

मद या दम महाभारत, उद्योगपर्व/34/44

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Vidyāmado dhanamadastṛtīyo'bhijano madaḥ |
Madā ete'valiptānāmeta eva satāṁ damāḥ ||

Mahābhā. / Udyoga / 34 / 44

Haughtiness or self-control

विद्या का मद, धन का मद और तीसरा कुल का मद – ये तो घमण्डियों के लिए मद होते हैं परन्तु यही सज्जनों के लिए दम हैं, अर्थात् सज्जन इन्हीं को प्राप्त करके नम्र हो जाते हैं।

Education, riches and the third, high family are the sources of arrogance for the proud people but the good persons remain polite due to education, riches and high family.

(1307)

विद्या मित्रं प्रवासेषु, भार्या मित्रं गृहेषु च।
व्याधितस्यौषधं मित्रं, धर्मो मित्रं मृतस्य च॥

मित्रों के रूप चाणक्यनीति/5/15

Vidyā mitraṁ pravāseṣu, bhāryā mitraṁ gṛheṣu ca |
Vyādhitasyauṣadhaṁ mitraṁ, dharmo mitraṁ mṛtasya ca ||

Forms of friends Cā. Nīti / 5 / 15

विदेशों में विद्या मित्र होती है, घर में पत्नी मित्र होती है, रोगी का मित्र दवाई होती है और मरने वाले का मित्र उसका धर्म (किया हुआ शुभ कार्य) होता है।

Education is a companion in foreign countries, wife is a friend in the house, medicine is the friend of a patient and good deeds (morality) are the friends of a dying person.

(1308)

विद्याविनयोपेतो हरति न चेतांसि कस्य मनुजस्य।
काञ्चनमणि-संयोगो नो जनयति कस्य लोचनानन्दम्॥

विद्या की शोभा विनय से अज्ञात

Vidyāvinayopeto harati na cetāṁsi kasya manujasya |
Kañcanamaṇisaṁyogo no janayati kasya locanānandam ||

Knowledge has beauty of politeness Unknown

भला विद्या और विनय से युक्त मनुष्य किसका चित्त नहीं हर लेता? अर्थात् उसकी ओर सभी खिंचे चले आते हैं। सोने और मणि का संयोग भला किसकी आँखों को आनन्द नहीं देता? अर्थात् सभी को आनन्द देता है।

As the setting of jewel with gold pleases the eyes of everybody, in the same way a man having education and politness both, is liked by everyone.

(1309)

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसार-दुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्मपरोपकाराः॥

प्रशंसनीय व्यक्ति – सत्यार्थप्रकाश/3/1

Vidyāvilāsamanaso dhṛtaśīlaśikṣāḥ,
Satyavratā rahitamānamalāpahārāḥ |
Saṁsāraduḥkhadalanena subhūṣitā ye,
Dhanyā narā vihitakarmaparopakārāḥ ||

Admirable men Satyārthpra. / 3 / 1

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिनका मन ज्ञान की प्राप्ति में ही आनन्द लेता है, जिन्होंने उत्तम स्वभाव की शिक्षा को जीवन में धारण किया हुआ है, जो सत्यव्रती हैं, जिनमें अभिमान आदि दुर्गुणों की मलिनताएँ नहीं हैं, जो संसार के कष्टों को दूर करने से ही शोभा पा रहे हैं और जो वेद-विहित कर्मों के अनुसार ही परोपकार में लगे हुए हैं, ऐसे लोगों का ही जीवन प्रशंसनीय है।

The life of those people deserves praise, whose mind enjoys receiving knowledge, who have practised education of good nature in their lives, who love the truth, who have no pollution of arrogance and other demerits, who are getting glory by removing the troubles of others and who are given to help others by practising the works advised by the Vedas.

(1310)

विद्या विवादाय धनं मदाय,
प्रज्ञा-प्रकर्षः परवञ्चनाय।
अत्युन्नतिर्लोकपराभवाय,
येषां प्रकाशस्तिमिरं हि तेषाम्॥

निन्दनीय लोग दर्पदलन/2/5

Vidyā vivādāya dhanaṁ madāya,
Prajñā-prakarṣaḥ paravañcanāya |
Atyunnatirlokaparābhavāya,
Yeṣāṁ prakāśastimiraṁ hi teṣām ||

Condemnable persons Darpada./2/5

जिनके लिए विद्या विवाद का, धन मद का, बुद्धि-वैभव दूसरों को धोखा देने का और अत्युन्नति लोक-तिरस्कार का साधन है, उनके लिए प्रकाश भी अन्धकार है।

For whom knowledge is for quarrel, wealth for pride and intellect for deceiving others and too much progress for humiliating people, even light is darkness for them.

(1311)

विद्या विवादाय धनं मदाय,
शक्तिः परेषां परिपीडनाय।
खलस्य साधोर्विपरीतमेतत्,
ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय॥

दुष्टों और सज्जनों के गुण नराभरण / 281

Vidyā vivādāya dhanaṁ madāya,
Śaktiḥ pareṣāṁ paripīḍanāya |
Khalasya sādhorviparītametat,
Jñānāya dānāya ca rakṣaṇāya ||

Merits of the bad and the good Nrābhraṇa / 281

दुष्ट लोगों की विद्या झगड़ने के लिए, धन अभिमान करने के लिए और बल दूसरों को पीड़ा पहुँचाने के लिए होता है। परन्तु सज्जनों के ये गुण इससे विपरीत होते हैं। उनकी विद्या ज्ञान के लिए, धन दान के लिए और शक्ति अपनी तथा दूसरों की रक्षा के लिए होती है।

The education of bad persons is for quarrel, money for arrogance, and power for troubling others. But these

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

things of good persons are contrary to them. Their education is for knowledge, money for charity, and power for protection of the others and self.

(1312)

विद्या ह वै ब्राह्मणमाजगाम,
गोपाय मा शेवधिष्टेऽहमस्मि।
असूयकायानृजवेऽयताय,
न मा ब्रूयाः वीर्यवती यथा स्याम्॥

विद्या का पात्र निरुक्त/2/4

Vidyā ha vai Brāhmaṇamājagāma,
Gopāya mā śevadhiṣṭe'hamasmi।
Asūyakāyānṛjave'yatāya,
Na mā brūyāḥ viryavatī yathā syām॥

Deserving for knowledge Nirukta/2/4

विद्या विद्वान् के पास आकर कहती है – "तू मेरी रक्षा करना, क्योंकि मैं तेरा खजाना हूँ। मेरा ज्ञान डाह करने वाले, कुटिलता वाले और परिश्रमहीन को मत देना, जिससे मैं शक्तिशाली बनी रहूँ।"

Education advises the scholar - "you should protect me, as I am your treasury. You never impart me to such a person who is jealous, crooked and inactive, so that I may remain strong."

(1313)

विद्वत्त्वं च नृपत्वं च नैव तुल्ये कदाचन।
स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान् सर्वत्र पूज्यते॥

विद्वान और राजा पञ्चतन्त्र/मित्रसम्प्राप्ति/58

Vidvattvaṁ ca nṛpatvaṁ ca naiva tulye kadācana।
Svadeśe pūjyate rājā, vidvān sarvatra pūjyate॥

A learned man and a king Pañca/M.Sam./58

विद्वत्ता और राजधर्म की तुलना कभी नहीं हो सकती। राजा का मान तो अपने देश तक ही सीमित होता है, जबकि विद्वान् सर्वत्र पूजा जाता है।

Knowledge and kingdom can not be compared. A king is honoured only in his own country, while a learned man is honoured every where.

(1314)

विद्वद्गोष्ठी भारतं काव्यचिन्ता,
तन्त्रीवाद्यं सुप्रयुक्तं च गेयम्।
इष्टा भार्या तत्समानं च मित्रं,
सद्यः शोकं नाशयन्तीह सप्त॥

शोक नष्ट करने के साधन सुभाषितावलि/2907

Vidvadgoṣṭhī Bhāratam, kāvyacintā,
Tantrīvādyaṁ suprayuktaṁ ca geyam।
Iṣṭā bhāryā tatsamānaṁ ca mitraṁ,
Sadyaḥ śokaṁ nāśayantīha sapta॥

Means to vanish sadness Subhāṣitāvali/2907

विद्वानों के साथ बैठकर विचार-विमर्श, महाभारत का अध्ययन, अच्छे-अच्छे काव्य-ग्रन्थों का अध्ययन और चिन्तन, सितार का बाजा, सुन्दर गाया गया गान, प्रिय भार्या और वैसे ही प्रिय और अनुकूल लगने वाला मित्र – ये सात वस्तुएँ इस संसार में शोक को तत्काल दूर कर देती हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

The following seven things remove sadness at once in this world :- (1) The seminar of scholars, (2) the study of Mahābhārata, (3) study of litetrary books, (4) guitar, (5) well arranged song, (6) desired wife and (7) an affectionate friend.

(1315)

विधाय वैरं सामर्षे नरा येऽरौ उदासते।
प्रक्षिप्योदर्चिषं कक्षे शेरते तेऽभिमारुतम्॥

उपेक्षा से हानि शिशुपाल-वध/2/42

Vidhāya vairaṁ sāmarṣe narā ye'rau udāsate |
Prakṣipyodarciṣaṁ kakṣe śerate te'bhimārutam ||

Loss due to overlooking Śiśu. /2/42

जो लोग क्रोध से परिपूर्ण शत्रु से शत्रुता करके लापरवाह हो जाते हैं, वे तो घास में जलती ज्वाला को फेंक कर आती हुई वायु की ओर मुँह कर के सो जाते हैं। अर्थात् ऐसे लोग शत्रु की क्रोधाग्नि में जल जाते हैं।

The persons who show enmity against a rageful enemy and become careless, they sleep facing the coming air after throwing a burning flame into straws.

(1316)

विधिना मन्त्रयुक्तेन रूक्षाऽपि मथिताऽपि च।
प्रयच्छति फलं भूमिररणीव हुताशनम्॥

भूमि से लाभ पञ्च. / मित्रभेद/160

Vidhinā mantrayuktena rūkṣāpi mathitā'pi ca |
Prayacchati phalaṁ bhūmiraraṇīva hutāśanam ||

Advantages of land Pañca/M.bhda/160

रूखी-सूखी भूमि को भी यदि विचार-विमर्श पूर्वक ढंग से खोदा जाए, तो वह फल अवश्य देगी; जैसे दो अरणियाँ मथने पर आग उत्पन्न कर देती हैं।

If even a dry land is ploughed and served after good consultation, it will produce fruits, as two pieces of wood produce fire when they are churned properly.

(1317)

विना गोरसं को रसो भोजनानां,
विना गोरसं को रसो भूपतीनाम्।
विना गोरसं को रसः कामिनीनां,
विना गोरसं को रसः पण्डितानाम्॥

गोरस का महत्व अज्ञात

Vinā gorasaṁ ko raso bhojanānāṁ,
Vinā gorasaṁ ko raso bhūpatīnām |
Vina gorasaṁ ko rasaḥ kāminīnāṁ,
Vinā gorasaṁ ko rasaḥ paṇḍitānām ||

Importance of gorasa Unknown

इस श्लोक में 'गो' शब्द गाय, भूमि, इन्द्रियाँ और वाणी इन अर्थों में प्रयुक्त है। गो-रस (दूध, दही, मक्खन आदि) के बिना मनुष्यों को भोजन में क्या रुचि है? भूमि की फसल के बिना राजाओं को राज्य में क्या दिलचस्पी है? नेत्र आदि इन्द्रियों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की शोभा के बिना स्त्रियों में पुरुषों को क्या आकर्षण है? वाणी के पदलालित्यादि के बिना पण्डितों को भाषा में क्या आनन्द मिलने वाला है?

In this verse, 'go' word is used for cow, land, senses and language. If there is no gorasa (milk, curd, butter etc.) the food is tasteless. If there is no goras (corns, fruits in a land), the land is useless for a king. If there is no gorasa (beauty of organs) in women, they have no attraction. If there is no gorasa (beauty of language) the learned persons are not attracted by such composition.

(1318)

विनाऽपि भेषजैर्व्याधिः पथ्यादेव निवर्त्तते।
न तु पथ्य-विहीनस्य भेषजानां शतैरपि॥

पथ्यों का महत्व अज्ञात

Vinā'pi bheṣajairvyādhiḥ pathyādeva nivarttate |
Na tu pathyavihīnasya bheṣajānāṁ śatairapi ||

Importance of prevention Unknown

दवाइयों के बिना भी रोग परहेज से नष्ट किया जा सकता है। परन्तु यदि कोई परहेज नहीं करता, तो सौ दवाइयों से भी उसका रोग शान्त नहीं हो सकता।

A disease can be removed by adopting preventive measures even without any medicine, but who doesn't take preventing measures, his disease cannot be removed even with hundred medicines.

(1319)

विपक्षमखिलीकृत्य प्रतिष्ठा खलु दुर्लभा।
अकृत्वा पङ्कतां धूलिमुदकं नावतिष्ठते॥

शत्रु-नाश आवश्यक शिशुपालवध/2/34

Vipakṣamakhilīkṛtya pratiṣṭhā khalu durlabhā |
Akṛtvā paṅkatāṁ dhūliṁudakaṁ nāvatiṣṭhate ||

Destroying of enemies necessary Śiśupala / 2 / 34

जब तक शत्रु-पक्ष का सर्वनाश नहीं किया जाता, तब तक चैन से नहीं रहा जा सकता। जैसे जब तक जल धूलि पर गिरकर उसे कीचड़ नहीं बना देता, तब तक वह आगे नहीं बढ़ता।

As long as the enemies are not destroyed completely, nobody can remain peacefully like water, which without converting the dust into mud never goes forward.

(1320)

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा,
सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः।
यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ,
प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्॥

महात्माओं के स्वाभाविक गुण नीतिशतक/59

Vipadi dhairyamathābhyudaye kṣamā,
sadasi vākpaṭutā yudhi vikramaḥ |
Yaśasi cābhirucirvyasanaṁ śrutau,
Prakṛtisiddhamidaṁ hi mahātmanām ||

Natural merits of the great Nitiṣataka / 59

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महात्माओं के स्वभाव में निम्न बातें स्वतः पाई जाती हैं :- (1) संकट में धैर्य, (2) सम्पत्ति-काल में क्षमाशीलता, (3) सभा में वाक्चातुर्य, (4) युद्ध-स्थल में वीरता, (5) कीर्ति के प्रति लगाव और (6) वेदाध्ययन का स्वभाव।

The following things can easily be seen in the nature of great souls :- (1) patience in adversity, (2) forbearance in prosperity, (3) eloquency in meeting, (4) bravery in the battle-field, (5) desire for fame and (6) habit of studying Vedas.

(1321)

विप्रो वृक्षस्तस्य मूलं च सन्ध्या,
वेदाः शाखाः धर्मकर्माणि पत्रम्।
तस्मान्मूलं यत्नतो रक्षणीयम्,
छिन्ने मूले नैव शाखा न पत्रम्॥

सन्ध्या का महत्त्व चाणक्यनीति/10/13

Vipro vṛkṣastasya mūlaṁ ca sandhyā,
Vedāḥ śākhāḥ dharma-karmāṇi patram।
Tasmānmūlaṁ yatnato rakṣaṇīyam,
Chinne mule naiva śākhā na patram॥

Importance of meditation Cā. Niti / 10 / 13

ब्राह्मणरूपी वृक्ष की जड़ सन्ध्या (भगवद्भजन) है। वेद उसकी शाखाएँ हैं और धर्म-कार्य उसके पत्ते हैं। अतः ब्राह्मण को मूल की रक्षा प्रयत्न से करनी चाहिए (अर्थात् सन्ध्या नियमपूर्वक करनी चाहिए)। यदि जड़ ही कट गई तो शाखाएँ और पत्र हो ही नहीं सकते।

Morning and evening meditation are the roots of the tree of Brāhmaṇa. The Vedas are the branches and religious works are the leaves of this tree. Therefore a Brāhmaṇa must meditate both times daily, because if root is cut, neither branches nor leaves will grow.

(1322)

विमल एव रविर्विशदः शशी,
प्रकृतिशोभन एव हि दर्पणः।
शिवगिरिः शिवहाससहोदरः,
सहजसुन्दर एव हि सज्जनः॥

सज्जनों का प्रिय स्वभाव साहित्यदर्पण /10

Vimala eva ravirviśadaḥ śaśī,
Prakṛtiśobhana eva hi darpaṇaḥ।
Śivagiriḥ Śivahāsasahodaraḥ,
Sahajasundara eva hi sajjanaḥ॥

Good nature of the gentle man Sahityada / 10

सज्जन व्यक्ति प्राकृतिक रूप से ही इस प्रकार सुन्दर होता है, जैसे विमल सूर्य चमकता है, चन्द्रमा प्रिय लगता है, दर्पण स्वभाव से ही सुन्दर दिखाई देता है, तथा शिव की हँसी का सगा भाई कैलाश पर्वत चमचमाता है।

A good man is naturally as beautiful as the bright sun, the loving moon, a mirror which has natural beauty and the Kailāśa mountain which is as white as the laughter of God Śiva.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(1323)

विरोधिवचसो मूकान् वागीशानपि कुर्वते।
जडानप्यनुलोमार्थान् प्रवाचः कृतिनां गिरः॥

श्रेष्ठ वक्ताओं का प्रभाव शिशुपाल-वध/2/25

Virodhivacaso mūkān vāgīśānapi kurvate।
Jaḍānapyanulomārthān pravācaḥ kṛtināṁ giraḥ॥

Influence of good orators Śiśupala / 2 / 25

कार्यकुशल लोगों की उत्कृष्ट वचनों वाली वाणियाँ विरुद्ध बोलने वाले और बात करने में कुशल लोगों को गूँगा बना देती हैं, अर्थात् वे उनके सामने बोल नहीं पाते। साथ ही, ऐसी वाणियाँ मूर्ख लोगों को अपने अनुकूल कर लिया करती हैं।

The speeches decorated with effective words of the efficient persons are able to make dumb the best speakers who try to oppose their words. Besides, such speeches make favourite even foolish persons also.

(1324)

विविक्तवर्णाभरणा सुखश्रुतिः,
प्रह्लादयन्ती हृदयान्यपि द्विषाम्।
प्रवर्तते नाकृतपुण्यकर्मणां,
प्रसन्नगम्भीरपदा सरस्वती॥

उत्तम वाणी शुभ कर्मों का फल किरातार्जुनीयम्/14/3

Viviktavarṇābharaṇā sukhaśrutiḥ,
Prahlādayantī hṛdayānyapi dviṣām।
Pravartate nākṛtapuṇyakarmaṇāṁ,
Prasannagambhīrapadā sarasvatī॥

Best tongue—the result of good deeds Kirātā / 14 / 3

जिन्होंने पुण्य न किया हो, उनकी वाणी इस तरह नहीं निकलती जो विविध प्रकार के वर्णों से अलंकृत हो, श्रुति-सुखद हो, शत्रुओं के हृदय को भी आह्लादित करने वाली हो और जिसमें शब्द आसानी से समझ आने वाले तथा भावगाम्भीर्य से युक्त हों।

The speech which is pleasant to the ears, adorned with different kinds of faultless letters, characterised by easily intelligible and signficant words and which gladdenes even the hearts of the enemies, is not produced by those who have done no pious deeds.

(1325)

विवेकिनमनुप्राप्तो गुणो याति मनोज्ञताम्।
सुतरां रत्नमाभाति चामीकरनियोजितम्॥

गुण की शोभा चाणक्यनीति/16/9

Vivekinamanuprāpto guṇo yāti manojñatām।
Sutarāṁ ratnamābhāti, cāmīkaraniyojitam॥

Beautification of merits Cā. Niti / 16 / 9

विवेकशील व्यक्ति के सम्पर्क में आया हुआ गुण सौन्दर्य को प्राप्त हो जाता है, जैसे सोने में जड़ा हुआ रत्न स्वयमेव शोभा देने लगता है।

Any quality which comes into contact with a discriminative person

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

gets beutification, as a jewel set in gold looks beautiful.

(1326)

विश्वम्भरा वसुधानी प्रतिष्ठा,
हिरण्यवक्षा जगतो निवेशनी।
वैश्वानरं बिभ्रती भूमिरग्नि-
मिन्द्रऋषभा द्रविणे नो दधातु॥

भूमि हमें ऐश्वर्य-सम्पन्न बना दे अथर्व/12/1/6

Viśvambharā vasudhānī pratiṣṭhā,
hiraṇyavakṣā jagato niveśanī।
Vaiśvānaraṁ bibhratī bhūmiragni-
mindra-ṛṣabhā draviṇe no dadhātu॥

May this land Atherva / 12 / 1 / 6
make us posperious

प्राणिमात्र का पालन-पोषण करने वाली, धन की आधार-भूत, सबको निवास देने वाली, अपने अन्दर सुवर्णादिक चमकीले पदार्थ रखने वाली, संसार को सुख देने वाली, प्राणिमात्र की हितकर अग्नि को अपने अन्दर धारण करने वाली और इन्द्र (ईश्वर, सूर्य या राजा) से सुपुष्ट की जाने वाली यह भूमि हमें धन-धान्य से सम्पन्न करे।

The earth which nourishes and supports all creatures, is foundation of all kinds of wealth, is refuge of all things, holds all kinds of shining things like gold in itself, is source of happiness, has the beneficial fire for all in itself and is strengthened by Indra (the sun, God, the king etc.), may give us all kinds of wealth.

(1327)

विश्वे यजत्रा अधिवोचतोतये,
त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिह्रुतः।
सत्यया वो देवहूत्या हुवेम,
शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये॥

विद्वान् भ्रष्टाचार से बचाएँ ऋ./10/63/11

Visve yajatrā adhivocatotaye,
trāyadhvaṁ no durevāyā abhihrutaḥ।
Satyayā vo devahūtyā huvema,
śṛṇvato devā avase svastaye॥

May the learned Rg. / 10 / 63 / 11
remove corruption

हे उपकार में लगे हुए ज्ञान-दान करने वाले विद्वानो! आप सभी से निवेदन है कि आप हमें सदुपदेश दीजिए, ताकि हम पापों से बच सकें। कुटिलता से प्राप्त होने वाली दुष्ट सम्पदा से हमें बचाइये। हम हृदय से अच्छी वाणी द्वारा आपको पुकारते हैं। हे विद्वानो! हमारी प्रार्थना सुनकर हमें वह मार्ग बताइए, जिससे हमारा कल्याण हो।

O helper of others and deliverer of knowledge scholars! we request you to preach us in such a way so that we become able to keep off ourselves from sins. Protect us from the riches which are obtained through deception. We are calling you with our truthful request. Respected scholars, listen to our call and suggest us in such a way through which we can make our lives auspicious.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(1328)

विषं विषेण व्यथते वज्रं वज्रेण भिद्यते,
गजेन्द्रो दृष्टसारेण गजेन्द्रेणैव बध्यते।
मत्स्यो मत्स्यमुपादत्ते ज्ञातिर्ज्ञातिमसंशयम्,
रावणोच्छित्तये रामो विभीषणमपूजयत्॥

कामन्दकीय नीतिसार/8/69/70

काँटे से काँटा निकाला जाता है

Viṣaṁ viṣeṇa vyathate, vajraṁ vajreṇa bhidyate,
Gajendro dṛṣṭasāreṇa gajendreṇaiva badhyate।
Matsyo matsyamupādatte jñātirjñātimasaṁśayam,
Rāvaṇocchittaye Rāmo Vibhīṣaṇamapūjayat॥

Poison heals poison Kāmandkīya / 8 / 69 / 70

विष विष से ही नष्ट होता है, वज्र वज्र से तोड़ा जाता है, गजेन्द्र शक्तिशाली गजेन्द्र के द्वारा ही पकड़ में आता है, मछली ही मछली को निगलती है और बन्धु ही बन्धु का नाश करता है। रावण का नाश करने के लिए राम ने विभीषण को ही आदर दिया था।

Poison goes away with poison, steel is broken with steel. A mighty elephant is caught with the help of an equally mighty elephant with its strength well proved. Fish swallows fish and the relative indeed kills the relative. For destroying Rāvaṇa, Rāma respected Vibhīṣaṇa.

(1329)

विषस्य विषयाणां हि दृश्यते महदन्तरम्।
उपभुक्तं विषं हन्ति विषयाः स्मरणादपि॥

विष और विषय सुभाषितावलि / 3368

Viṣasya viṣayāṇāṁ hi dṛṣyate mahadantaram।
Upabhuktaṁ viṣaṁ hanti, viṣayāḥ smaraṇādapi॥

Subhāṣitāvali / 3368

Poison and sensualities

विष और विषयों में बहुत फर्क है। विष तो खाये जाने पर ही मारता है, जबकि विषय चिन्तन-मात्र से ही नष्ट कर देते हैं।

There is a great difference between poison and sensual pleasures. Poison kills only when taken, but sensual pleasures kill even by recollection in mind.

(1330)

विषादप्यमृतं ग्राह्यममेध्यादपि काञ्चनम्।
नीचादप्युत्तमा विद्या स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि॥

श्रेष्ठ वस्तुएँ ग्राह्य हैं चाणक्यनीति/1/16

Viṣādapyamṛtaṁ grāhyamamedhyādapi kāñcanam।
Nīcādapyuttamā vidyā, strīratnaṁ duṣkulādapi॥

Good things should be owned Cā nīti / 1 / 16

यदि विष में भी अमृत हो तो उसे ग्रहण कर लेना चाहिए। गन्दी जगह से भी सोना उठा लेना चाहिए। नीच व्यक्ति से भी श्रेष्ठ विद्या ले लेनी चाहिए और नीच कुल में भी यदि उत्तम स्त्री हो, तो भी उसे ग्रहण कर लेना चाहिए।

If there is nectar in poison, that should be accepted. If gold is lying at a dirty place, that must be taken. If a low person has a good art, it should be adopted and if there is a good lady even in a lower family, she should be accepted.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(1331)

वीणा वंशश्चन्दनं चन्द्रभासः,
शय्या यानं यौवनस्थास्तरुण्यः।
नैतद्रम्यं क्षुत्पिपासार्दितानां,
सर्वारम्यास्तण्डुलप्रस्थमूलाः ॥

सुभाषितावलि / 3174

भूखे के लिए अन्न ही सर्वश्रेष्ठ है

Viṇā vaṁśaścandanaṁ candrabhāsaḥ,
śayyā yānaṁ yauvanasthāstaruṇyaḥ।
Naitadramyaṁ kṣutpipāsārditānāṁ,
Sarvāramyāstanḍulaprasthamūlāḥ ॥

Hungry likes only edibles Subhāsitivali / 3 / 74

भूख और प्यास से पीड़ित व्यक्तियों के लिए न तो वीणा या बांसुरी के स्वरों में कोई आकर्षण होता है, न चन्दन और चन्द्रमा की चाँदनी में। उनके लिए बिछौना, सवारी गाड़ी और जवान नारियाँ भी आकर्षण का विषय नहीं होतीं। उनके लिए तो मुट्ठी में आए हुए भात या अन्य खाद्य पदार्थ ही सबसे प्रिय वस्तु होते हैं।

For those who are thirsty and hungry neither the sweet music of a lute nor of a flute have any attraction. Sandal wood and moonlight are also useless for them. They have no desire for bed or traffic and don't like even young ladies. The thing which they like most of all is handful of boiled rice or any edible thing.

(1332)

वृक्षांश्छित्त्वा पशून् हत्वा कृत्वा रुधिरकर्दमम्।
यद्येवं गम्यते स्वर्गं, नरकं केन गम्यते॥

स्वर्ग और नरक का मार्ग चार्वाक

Vṛkṣāṁśchittvā paśūn hatvā kṛtvā rudhirakardamam।
Yadyevaṁ gamyate svargaṁ, narakaṁ kena gamyate ॥

Way to heaven and hell Cārvāni

पेड़ों को काटकर, पशुओं को मारकर और खून का कीचड़ बनाकर यदि स्वर्ग को जाया जा सकता है, तो बताओ नरक में पहुँचने का क्या ढंग है? भाव यह है कि ये कर्म स्वर्ग के साधन नहीं हैं, ये तो नरक के ही साधन हैं; दुःख के कारण हैं।

If by cutting trees, killing animals and making mud of blood lead to heaven, then which work will lead to hell? It means that the said works are not good, and lead to troubles.

(1333)

वृत्तं यत्नेन संरक्षेद्, वित्तमेति च याति च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो, वृत्ततस्तु हतो हतः॥

चरित्र की महिमा महाभा./उद्योगपर्व/36/30

Vṛttaṁ yatnena saṁrakṣed, vittameti ca yāti ca।
Akṣīṇo vittataḥ kṣīṇo, vṛttatastu hato hataḥ ॥

Mahābhā / Udyoga / 30

Glory of character

मनुष्य को चाहिए कि वह अपने चरित्र की यत्न-पूर्वक रक्षा करे। धन तो आता और जाता रहता है। धन के नष्ट होने से मनुष्य नष्ट नहीं होता, परन्तु चरित्र के नष्ट होने से वह नष्ट हो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जाता है अर्थात् समाज में उसका मान नहीं रहता, जो मृत्यु के समान ही है।

One should try to save his character with great effort. Wealth comes and goes. One, who has lost his riches, has lost nothing but who has lost his character has lost himself. It means he loses his respect in the society which is equal to death.

(1334)

वृत्ततस्त्वविहीनानि कुलान्यल्पधनान्यपि।
कुलसंख्यां च गच्छन्ति, कर्षन्ति च महद्यशः॥

चरित्र के लाभ महाभा./उद्योग/28/29

Vṛttatastvavihīnāni kulānyalpadhanānyapi |
Kulasaṁkhyāṁ ca gacchanti, karṣanti ca mahadyaśaḥ ||

Mahābhā / Udyog / 28 / 29

Advantages of Character

जिन कुलों में चरित्र बना रहता है, चाहे उनके पास थोड़ा भी धन हो तो भी वे श्रेष्ठ कुल कहलाते हैं और महान् यश को प्राप्त करते हैं।

The families having good character are called noble families, inspite of their less riches and they become very famous everywhere.

(1335)

वृथा वृष्टिः समुद्रेषु, वृथा तृप्तेषु भोजनम्।
वृथा दानं धनाढ्येषु, वृथा दीपो दिवापि च॥

व्यर्थ के कार्य चाणक्यनीति/5/16

Vṛthā vṛṣṭiḥ samudreṣu, vṛthā tṛpteṣu bhojanam |
Vṛthā dānaṁ dhanāḍhyeṣu, vṛthā dīpo divāpi ca ||

Useless works Cā Niti / 5 / 16

समुद्रों में वर्षा का कोई लाभ नहीं होता, भरे पेट वालों के लिए भोजन का कोई महत्त्व नहीं रहता, धनियों को दान देने का कोई लाभ नहीं होता और दिन में दीपक जलाना भी व्यर्थ ही है।

Rain in the seas is useless, the food has no importance whose belly is already full, giving of alms to the rich persons has no value and to light a lamp in day time is also useless.

(1336)

वृद्धकाले मृता भार्या, बन्धुहस्तगतं धनम्।
भोजनं च पराधीनं, तिस्रः पुंसां विडम्बनाः॥

दुःख के तीन कारण चाणक्यनीति/8/9

Vṛddhakāle mṛtā bhāryā, bandhuhastagataṁ dhanam |
Bhojanaṁ ca parādhīnaṁ, tisraḥ puṁsāṁ viḍambanāḥ ||

Three causes of sadness Cā Niti / 8 / 9

बुढ़ापे में पत्नी का मरना, धन का रिश्तेदारों के हाथों में चले जाना और भोजन के लिए पराश्रित होना – ये तीन बातें मनुष्यों के लिए अतीव दुःख-दायी हैं।

The following three things are very troublesome for people :- (1) death of the wife when a man is old, (2) money gone in the hands of relatives and (3) depending on others for food.

(1337)

वृद्धिः प्रभावः तेजश्च, सत्त्वमुत्थानमेव च।
व्यवसायश्च यस्य स्यात्, तस्यावृत्तिभयं कुतः॥

जीविका के साधन महाभा./उद्योग/37/41

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Vṛddhīḥ prabhāvaḥ tejaśca, sattvamutthānameva ca |
Vyavasāyaśca yasya syāt, tasyāvṛttibhayaṁ kutaḥ ||

Mahābhā / Udyog / 37 / 41

Means of livlihood

जो व्यक्ति उन्नतिशील है, जिसमें प्रभाव और तेज है, जो कार्य करने में सदा तत्पर रहता है, तथा जो उद्यमशील है, उसे रोजी (वृत्ति) का भय कैसे होगा ? अर्थात् रोजी–रोटी का उसके लिए अभाव नहीं है।

The man who is of progressive nature, influential, glorious, always prepared to do any work and painstaking, never remains jobless and to earn livelihood is not difficult for him.

(1338)

वेगं करोति तुरगस्त्वरितं प्रयातुं,
प्राणव्यान्न चरणास्तु तथा वहन्ति।
सर्वत्र यान्ति पुरुषस्य चलस्वभावाः,
नष्टास्ततो हृदयमेव पुनर्विशन्ति ॥

यथाशक्ति कार्य करना मृच्छकटिक/1

Vegaṁ karoti turagastvaritaṁ prayātuṁ,
Prāṇavyānna caraṇāstu tathā vahanti |
Sarvatra yānti puruṣasya calasvabhāvāḥ,
Naṣṭāstato hṛdayameva punarviśanti ||

Work according to capacity Mṛcha / 1

घोड़ा बहुत तेज दौड़ने की इच्छा रखता है, परन्तु साँस के फूल जाने के कारण उसके पाँव उसकी इच्छा के अनुसार नहीं दौड़ पाते। इसी प्रकार मनुष्य में चञ्चलता स्वभावतः सब जगह पाई जाती है, परन्तु शरीर की असमर्थता के कारण उसकी मन की कामनाएँ मन में ही रह जाती हैं।

A horse desires to run very very fast, but the limit of breathing checks his feet from running according to his desire. In the same way, the unsteady nature of the man remains with him everywhere and he wishes to complete any work in a moment but physically less efficiency checks him and his desire remains only in his mind.

(1339)

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम् ॥

धर्म का स्पष्ट लक्षण मनु./2/12

Vedaḥ smṛtiḥ sadācāraḥ svasya ca priyamātmanaḥ |
Etaccaturvidhaṁ prāhuḥ sākṣāddharmasya lakṣaṇam ||

Clear definition of Dharma Manu / 2 / 12

वेदों और स्मृतियों द्वारा निर्दिष्ट बातें, श्रेष्ठ लोगों का चाल–चलन और अपनी आत्मा के अनुकूल सबसे व्यवहार करना — ये चार व्यावहारिक धर्म के लक्षण बताए गये हैं।

The following four definitions are indicated for practical morality :- (1) The things advised in the Vedas, (2) the things advised in smritis, (3) the works practised by ideal men and (4) to behave with others

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

as one wishes to be behaved by others.

(1340)

वेदा मे परमं चक्षुर्वेदा मे परमं बलम्।
वेदा मे परमं धाम, वेदा मे ब्रह्म चोत्तमम्॥

वेदों की महिमा महाभा./शान्ति/347/32

Vedā me paramaṁ cakṣurVedā me paramaṁ balam |
Vedā me paramaṁ dhāma, Vedā me Brahma cottamam ||

Superiority of the Vedas Mahābhā / Śanti / 347 / 32

वेद ही मेरे उत्तम नेत्र हैं, वेद ही मेरे परम बल हैं, वेद ही मेरे परम आश्रय हैं और वेद ही मेरे परम ज्ञान हैं।

The Vedas are my best eyes, They are my best strength, They are my best refuge and also they are my best knowledge.

(1341)

वेदोऽखिलो धर्ममूलं, स्मृतिशीले च तद्विदाम्।
आचारश्चैव साधूनामात्मनस्तुष्टिरेव च॥

वेद ही सब कर्त्तव्यों के मूल हैं मनु./2/6

Vedo'khilo dharmamūlaṁ, smṛtiśīle ca tadvidām |
Ācāraścaiva sādhūnāmātmanastuṣṭireva ca ||

Vedas explain all duties Manu / 2 / 6

वेद सम्पूर्ण धर्मों (कर्त्तव्यों) के मूल हैं और वेदज्ञों द्वारा रची गई स्मृतियाँ और उनके स्वभाव, सत्पुरुषों के आचरण और अन्तरात्मा की तुष्टि भी धर्म के मूल हैं।

Complete Vedas are the sources of all morality (the work to be done) and the smritis which are written by such persons who know the Vedas and also their character. The practice of ideal men and satisfaction of one's conscience are also the sources of morality.

(1342)

वेनस्तत्पश्यन्निहितं गुहा,
सद्यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्।
तस्मिन्निदं सञ्च विचैति सर्वं,
स ओतः प्रोतश्च विभुः प्रजासु॥

ईश्वर के दर्शन का स्थान यजु./32/8

Venastatpaśyannihitaṁ guhā,
sadyatra viśvaṁ bhavatyekanīḍam |
Tasminnidaṁ sañca vicaiti sarvaṁ,
sa otaḥ protaśca Vibhuḥ prajāsu ||

Place to meet God Yaju / 32 / 8

जिसमें यह सम्पूर्ण संसार एक आश्रय वाला होता है, उस बुद्धि में स्थित सत्स्वरूप ब्रह्म को विद्वान् मनुष्य ज्ञान की दृष्टि से देखता है। उसी ब्रह्म में यह सारा विश्व प्रलय के समय सिमटकर रह जाता है और सृष्टि की उत्पत्ति के समय पुनः उसी से प्रकट होता है। वह सर्वव्यापक परमात्मा सभी उत्पन्न हुए पदार्थों में ओतप्रोत है।

The ever-existing God in which the whole universe gets refuge, is known by the learned people with their eyes of knowledge. At the time of final destruction of this universe all things

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

get dissolved into God and at the time of new creation all appear from him. He is existing in all the creation present everywhere.

(1343)

वैराग्यस्य फलं बोधो, बोधस्योपरतिः फलम्।
स्वानन्दानुभवाच्छान्तिरेषैवोपरतेः फलम्॥

शान्ति जीवन का परम लक्ष्य विवेक-चूडामणिः/420

Vairāgyasya phalaṁ bodho, bodhasyoparatiḥ phalam |
Svānandānubhavācchāntireṣaivoparateḥ phalam ||

Supreme goal of life–peace Viveka-cuḍā / 420

वैराग्य का फल बोध है, बोध का फल तृष्णा का क्षय है, तृष्णा के क्षय का फल आनन्द की अनुभूति करना और उससे सच्ची शान्ति प्राप्त करना है।

Detachment from worldly affairs produces discrmination, the produce of discrimination is the destruction of desires which produces self-realisation and internal peace.

(1344)

वैरिणा न हि संदध्यात् सुश्लिष्टेनापि संधिना।
सुतप्तमपि पानीयं शमयत्येव पावकम्॥

वैरी—संधि के अयोग्य पञ्च./मित्रसम्प्राप्ति/32

Vairiṇā na hi saṁdadhyāt suślisṭenāpi saṁdhinā |
Sutaptamapi pānīyaṁ śamayatyeva pāvakam ||

Enemy—unfit for treaty Panca / M. Sam / 32

बहुत पक्की शर्तों पर भी शत्रु से सन्धि नहीं करनी चाहिए। खूब तपा हुआ पानी भी अग्नि को बुझा ही देता है।

One should not come into any contact based even on best terms with his enemies, because even well heated water extinguishes fire.

(1345)

व्यसनं प्राप्य यो मोहात्केवलं परिदेवयेत्।
क्रन्दनं वर्धयत्येव तस्यान्तं न गच्छति॥

रोना दुःख-निवारक नहीं पञ्च./मित्रसम्प्राप्ति/182

Vyasanaṁ prāpya yo mohāt kevalaṁ paridevayet |
Krandanaṁ vardhayatyeva tasyāntaṁ na gacchati ||

Pañca. / Mitrasam. / 182

Lamntation is not means of peace

जो व्यक्ति संकट आने पर अज्ञानवश विलाप करता है, उसके विलाप से रोना-धोना ही बढ़ता है परन्तु संकट का अन्त नहीं होता।

The person who weeps in the time of an adversity due to his ignorance, only increases his lamentation and his adversity does not end.

(1346)

व्यसने वाऽर्थकृच्छ्रे वा, भये वा जीवितान्तगे।
विमृशंश्च स्वया बुद्ध्या, धृतिमान् नावसीदति॥

धैर्य ही संकट में मित्र है वा. रामा./किष्किन्धा/7/9

Vyasane vā'rthakṛcchre vā, bhaye vā jīvitāntage |
Vimṛśaṁśca svayā buddhyā, dhṛtimān nāvasīdati ||

Vā. Rā. / Kiṣkindhā / 7 / 9

Patience – friend in adversity

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो धैर्यशाली व्यक्ति संकट के आने पर या धन के संकटकाल में अथवा प्राणहारी भय के आने के समय अपनी बुद्धि से विचार कर बचने का कोई रास्ता ढूँढ लेता है, वह दुखी होकर पछताता नहीं है।

The man, full of patience, when faces some adversity or financial crisis or deadly fear, thinks some means to overcome those circumstances with his intellect, never becomes sad.

(1347)

व्यसनेष्वेव सर्वेषु यस्य बुद्धिर्न हीयते।
स तेषां पारमभ्येति, तत्प्रभावादसंशयम्॥

स्थिर बुद्धि के लाभ पञ्च./मित्रसम्प्राप्ति/6

Vyasaneṣveva sarveṣu yasya buddhirna hīyate |
Sa teṣāṁ pāramabhyeti, tatprabhāvādasaṁśayam ||

Pañca. / Mitrasam. / 6

Advantage of undisturbed mind

सभी संकटों के आने पर जिसकी बुद्धि डगमगाती नहीं है, वही अपनी बुद्धि के प्रभाव से उन संकटों से पार हो जाता है।

The man whose intellect does not waver in all disasters, can cross all difficulties with the help of his thoughtful wisdom.

(1348)

व्याघ्रीव तिष्ठति जरा परितर्जयन्ति,
रोगाश्च शत्रव इव प्रहरन्ति देहम्।
आयुः परिस्त्रवति भिन्नघटादिवाम्भो-
लोकस्तथाऽप्यहितमाचरतीति चित्रम्॥

निन्दनीय - आत्मोन्नति का अभाव वैराग्यशतक/100

Vyāghrīva tiṣṭhati jarā paritarjayanti,
Rogāśca śatrava iva praharanti deham |
Āyuḥ parisravati bhinnaghaṭādivāmbho-
Lokastathā'pyahitamācaratīti citram ||

Condemnable – to be off from spirituality Vairāśataka / 100

वृद्धावस्था बाघिन की तरह धमकाती हुई सामने खड़ी है। रोग शत्रुओं के समान शरीर पर प्रहार कर रहे हैं। आयु फूटे घड़े में से जल के बहने के समान निकलती जा रही है तो भी आश्चर्य की बात है कि लोग अहित करने में लगे रहते हैं।

Old age stands threatening like a tigress, diseases are striking the body like enemies and life is leaking out like water from a broken pitcher, still it is strange to say that men are doing unfavourable things for their soul.

(1349)

व्याघ्रे च महदालस्यं, सर्पे चैव महद्भयम्।
पिशुने चैव दारिद्र्यं, तेन जीवन्ति जन्तवः॥

शत्रु के दोषों से लाभ अज्ञात

Vyāghre ca mahadālasyaṁ, sarpe caiva mahadbhayam |
Piśune caiva dāridryaṁ, tena jīvanti jantavaḥ ||

Faults of enemies are helpers Unknown

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्योंकि बाघ बहुत आलसी होता है, साँप भयभीत हो जाता है और चुगलखोर गरीब होता है, इसी कारण लोग जी रहे हैं। (अन्यथा ये तीनों दुष्ट प्राणी लोगों को शीघ्र ही नष्ट कर दें।)

As a tiger remains lazy, a snake becomes afraid and a back-biter remains poor, due to this fact, the people are enjoying life (otherwise they will kill all the people very soon.)

(1350)

व्याधेस्तत्त्वपरिज्ञानं वेदनायाश्च निग्रहः।
एतद्वैद्यस्य वैद्यत्वं, न वैद्यः प्रभुरायुषः॥

वैद्य का कार्य भावप्रकाश./मिश्रप्रकरण/53

Vyādhestattvaparijñānaṁ, vedanāyāśca nigrahaḥ।
Etadvaidyasya vaidyatvaṁ, na vaidyaḥ prabhurāyuṣaḥ॥

Bhāvapra. / Miśra. / 53

Duty of the doctor

वैद्य की विद्वत्ता केवल इन्हीं बातों में है कि (1) रोग को समझ ले और (2) पीड़ा को हटा दे। वैद्य किसी की आयु बढ़ाने में समर्थ नहीं हो सकता।

The doctor's ability remains only in two things:- (1) diagnosis of the disease and (2) removing of the pain. The doctor has no power to increase one's age.

(1351)

व्यायामक्षुण्णगात्रस्य, पद्भ्यामुद्वर्त्तितस्य च।
व्याधयो नोपसर्पन्ति, सिंहं क्षुद्रमृगा इव॥

व्यायाम के लाभ सुश्रुतसंहिता/चिकित्सा/24/43

Vyāyāmakṣuṇṇagātrasya, padbhyāmudvarttitasya ca।
Vyādhayo nopasarpanti, siṁhaṁ kṣudramṛgā iva॥

Suśruta. / Ciki. / 24 / 43

Advantages of physical exercise

व्यायाम से सधे हुए शरीर वाले और पैरों पर मालिश करने वाले मनुष्य के पास रोग इसी प्रकार नहीं फटकते, जैसे छोटे प्राणी शेर के पास नहीं आते।

Diseases do not come near such a person who has maintained his body with physical exercise and also rubs oil on his legs. The diseases remain off in such a way as small animals do not come near a lion.

(1352)

व्यालं बालमृणालतन्तुभिरसौ रोद्धुं समुज्जृम्भते,
छेत्तुं वज्रमणीञ्छिरीषकुसुमप्रान्तेन सन्नह्यते।
माधुर्यं मधुबिन्दुना रचयितुं क्षाराम्बुधेरीहते,
नेतुं वाञ्छति यः खलान् पथि सतां सूक्तैः सुधास्यन्दिभिः॥

दुष्टों को सत्पथ पर लाना असम्भव नीतिशतक/5

Vyālaṁ bālamṛṇālatantubhirasau roddhuṁ samujjṛmbhate,
Chettuṁ vajramaṇīñchirīṣakusumaprāntena sannahyate।
Mādhuryaṁ madhubindunā racayituṁ kṣārāmbudherīhate,
Netuṁ vañchati yaḥ khalān pathi satāṁ sūktaiḥ sudhāsyandibhiḥ॥

To guide the bad to noble path is impossible Nītiśataka / 5

जो व्यक्ति दुष्ट लोगों को अमृत बरसाने वाले सुन्दर वचनों से सज्जनों के मार्ग पर चलाना चाहता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है, वह जंगली हाथी को कोमल कमल के तन्तुओं से रोकने का प्रयत्न करता है, वह हीरे को फूल की नोक से काटने का प्रयत्न करता है और वह खारे सागर में शहद की एक बूँद डालकर मीठा बना देना चाहता है। भाव यह है कि जैसे बताए हुए उपर्युक्त साधनों से कार्यों में सफलता नहीं मिल सकती, उसी प्रकार मीठे वचनों से दुष्टों को सज्जन नहीं बनाया जा सकता।

A man who intends to bring bad persons on the path of good persons with sweet words, is prepared to tie a wild elephant with the tendril of a lotus, to cut diamonds with a part of flower of acacia and to make sweet water of a saltish sea with a drop of honey.

The sense is that as the said things are impossible to be done, in the same way to bring bad men on the path of good persons is quite impossible.

(1353)

व्योमैकान्तविहारिणोऽपि विहगाः सम्प्राप्नुवन्त्यापदम्,
बध्यन्ते निपुणैरगाधसलिलान्मीनाः समुद्रादपि।
दुर्णीतं किमिहास्ति किञ्च सुकृतं, कः स्थानलाभे गुणः,
कालः सर्वजनप्रसारितकरो गृह्णाति दूरादपि॥

काल की भयंकरता पञ्च./मित्रसम्प्राप्ति/23

Vyomaikāntavihāriṇo'pi vihagāḥ samprāpnuvantyāpadam,
Badhyante nipuṇairagādhasalilānmīnāḥ samudrādapi।
Durṇītaṁ kimihāsti kiñca sukṛtaṁ, kaḥ sthānalābhe guṇaḥ,
Kālaḥ sarvajanaprasāritakaro gṛhṇāti dūrādapi॥

Pañca. / Mitrasam. / 23

Dreadfulness of the time

आकाश में एक ही तरफ उड़ने वाले पक्षी भी संकट से घिर जाते हैं। अथाह सागर में से भी मछलियों को निपुण लोग पकड़ लेते हैं। बुरा क्या है और अच्छा क्या है, किस स्थान पर जाने से लाभ हो सकता है इत्यादि कहना कठिन है, क्योंकि काल ने तो सभी जन्तुओं की ओर अपने हाथ फैला रखे हैं, जिनके द्वारा वह दूर से ही प्राणियों को पकड़ लेता है। भाव यह है कि कुछ भी कर लो, परन्तु मृत्यु से बचना असम्भव है।

The birds which fly on lonely side of the sky fall into troubles. The expert people catch the fish from even a fathomless sea. So it cannot be said what is good or what is bad and a place where one can be saved, because the time or death has stretched its hands in all directions and can hold any one from a distant place also.

The sense is that inspite of all saving means nobody can be escaped from death.

(1354)

व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवम्,
भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।
प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधा-
नसंवृताङ्गान्निशिता इवेषवः॥

नाशकारी व्यवहार किरातार्जुनीय/1/30

Vrajanti te mūḍhadhiyaḥ parābhavam,
bhavanti māyāviṣu ye na māyinaḥ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Praviśya hi ghnanti śaṭhāstathāvidhān-
asaṁvṛtāṅgānniśitā iveṣavaḥ ॥

Destroyer behaviour Kirātā. / 1 / 30

जो लोग धूर्त लोगों के साथ धूर्तता का व्यवहार नहीं करते, वे बुद्धिहीन लोग पराजित हो जाते हैं। दुष्ट लोग अन्दर प्रवेश करके ऐसे मूढ़ लोगों को इस प्रकार मार देते हैं, जैसे तेज बाण नंगे अंगों को काट डालते हैं।

Those who do not behave with fraudulency against the fraudulent persons, are fools and are defeated. As arrows enter into the bodies of naked persons and kill them, in the same way the fraudulent persons enter into them and kill the fools.

(1355)

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति, श्रद्धया सत्यमाप्यते॥

प्रभु को प्राप्त करने की विधि यजु./19/30

Vratena dīkṣāmāpnoti, dīkṣayā'pnoti dakṣiṇām ।
Dakṣiṇā śraddhāmāpnoti, śraddhayā satyamāpyate ॥

Method to achieve God Yaju. / 19 / 30

मनुष्य उत्तम कर्म करने से शुभ कर्म करने की कला को समझता है, फिर दीक्षा से कार्य-दक्षता प्राप्त करता है, कार्यदक्षता से श्रद्धा को प्राप्त करता है और श्रद्धा से सत्य की प्राप्ति होती है।

A man doing good work learns the art of doing auspicious deeds. After this learning, he becomes dexterous and dexterity leads him to faith and with faith he obtains the truth.

श = Śa

(1356)

शं नो वातः पवतां, शं नस्तपतु सूर्यः।
शं नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो अभिवर्षतु॥

मंगल-कामना यजु./36/10

Śaṁ no vātaḥ pavatāṁ, śaṁ nastapatu sūryaḥ ।
Śaṁ naḥ kanikradaddevaḥ parjanyo abhivarṣatu ॥

Auspicious desire Yaju. / 36 / 10

वायु हमारे लिए कल्याणकारी हो, सूर्य का ताप हमारे लिए मंगलमय हो और गरजता हुआ मंगलमय बादल हमारे चारों ओर कल्याण की ही वर्षा करे।

Air may be auspicious for us, the heat of the sun may bring welfare for us and the thundering auspicious cloud may shower the rain of welfare on us.

(1357)

शक्तिवैकल्यनम्रस्य निःसारत्वाल्लघीयसः।
जन्मिनो मानहीनस्य तृणस्य च समा गतिः॥

निन्दनीय जीवन पञ्च./मित्रभेद/11

Śaktivaikalyanamrasya, niḥsāratvāllaghīyasaḥ ।
Janmino mānahīnasya, tṛṇasya ca samā gatiḥ ॥

Condemnable life Pañca. / Mitrabhe. / 11

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शक्ति की कमी के कारण जो नम्र हो चुका है, किसी के लिए लाभप्रद न होने के कारण जो हीन बन चुका है, तथा जिसका समाज में मान नहीं रहा, वह उस तिनके के समान है, जो पैरों से ही रौंदा जाता है।

One, who is humble due to lack of power, who is inferior due to his uselessness and who has no respect is like a straw which is trodden under feet.

(1358)

शक्तेनापि सदा नरेन्द्रविदुषा कालान्तरापेक्षिणा,
वस्तव्यं खलु वाक्यवज्रविषमे क्षुद्रेऽपि पापे जने।
दर्वीव्यग्रकरेण धूममलिनेनायासयुक्तेन च,
भीमेनातिबलेन मत्स्यभवने किं नोषितं सूदवत्॥

संकट में सहन-शक्ति पञ्च./काकोलूकीय/20

Śaktenāpi sadā narendravidusā kālāntarāpekṣiṇā,
Vastavyaṁ khalu vākyavajravisame kṣudre'pi pāpe jane |
Darvīvyagrakareṇa dhūmamalinenāyāsayuktena ca,
Bhīmenātibalena matsyabhavane kiṁ noṣitaṁ sūdavat ||

Pañca. / Kāko. / 20

Toleration in adversity

शुभ अवसर की प्रतीक्षा करने वाले शक्तिशाली विद्वान् राजा को भी चाहिए कि वह कठोर वचन कहने वाले नीच पापी जनों के मध्य में कठिन समय बिता दे। क्या अति बलवान् भीम ने विराट राजा के यहाँ हाथ से कलछी चला कर, धूएँ से मलिन होकर और कठोर परिश्रम करते हुए रसोइए के समान अपना समय नहीं बिताया ? अर्थात् भीम को भी अवसर के अनुसार तुच्छ कार्य करना ही पड़ा।

The powerful and learned king who waits for a favourable opportunity should remain among mean and sinful persons, who speak harsh words. Did strong Bhīma not live in the house of king Virāṭa like a cook, who used to move laddles and became dirty with smoke and performed hard duty? Really Bhīma did such a work which was not according to his standard to see the bad time.

(1359)

शक्यो वारयितुं जलेन हुतभुक्, छत्रेण सूर्यातपो-
नागेन्द्रो निशिताङ्कुशेन समदो, दण्डेन गो-गर्दभौ।
व्याधिर्भेषजसङ्ग्रहैश्च विविधैर्मन्त्रप्रयोगैर्विषम्,
सर्वस्यौषधमस्ति शास्त्रविहितं मूर्खस्य नासत्यौषधम्॥

अभिमानी मूर्ख को समझाना कठिन है नीतिशतक/10

Śakyo vārayituṁ jalena hutabhuk, chatreṇa sūryātapo,
Nāgendro niśitāṅkuśena samado, daṇḍena gogardabhau |
Vyādhirbheṣajasaṅgrahaiśca vividhairmantraprayogairviṣam,
Sarvasyauṣadhamasti śāstra-vihitaṁ mūrkhasya nāsatyauṣadham ||

Obestinate fool cannot be advised Nitiśataka / 10

आग को पानी से बुझाया जा सकता है, सूर्य की धूप का बचाव छाते से हो सकता है, मदमस्त हाथी को तेज अंकुश से वश में किया जा सकता है, बैल और गधे को डण्डे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से भगाया जा सकता है, विविध दवाइयों द्वारा रोग नष्ट किया जा सकता है और विषहारक साधनों से विष का प्रभाव मिटाया जा सकता है। इस प्रकार सभी समस्याओं का निदान शास्त्रों में बताया गया है, परन्तु अल्पज्ञानी मूर्ख को वश में करने की कोई दवाई नहीं है।

Fire may be extinguished with water, an umbrella can protect from the sunshine, an elephant in rut may be controlled with sharp iron hook, a bullock and a donkey can be driven with a staff, the treatment of a disease is possible by different kinds of medicines and poison may be treated with due means. In this way all problems can be solved with the ways shown in books but there is no remedy of such a fool who is proud with his little knowledge.

(1360)

शङ्कनीया हि सर्वत्र निष्प्रतापा दरिद्रता।
उपकर्तुमपि प्राप्तं निःस्वं सन्त्यज्य गच्छति॥

दरिद्रता – निन्दनीय पञ्च./मित्रसम्प्राप्ति/96

Śaṅkanīyā hi sarvatra niṣpratāpā daridratā |
Upakartumapi prāptaṁ niḥsvaṁ santyajya gacchati ||

Poverty – condemnable Pañca. / Mitrasam. / 96

निर्धनता के कारण मनुष्य सभी स्थान पर प्रभावहीन हो जाता है और उसे सभी सन्देह की दृष्टि से देखते हैं। यदि निर्धन व्यक्ति किसी का उपकार भी करना चाहता हो, तो उसे निर्धन समझकर लोग उसे छोड़कर पृथक् हो जाते हैं, क्योंकि उन्हें उसकी परोपकारिता पर विश्वास नहीं होता।

The man who is poor loses his influence and his work is seen with doubt. If a poor person wants to help some body, people don't have faith in his help and so they abandon him and go away.

(1361)

शतं विहाय भोक्तव्यं, सहस्रं स्नानमाचरेत्।
लक्षं विहाय दातव्यं, कोटिं त्यक्त्वा हरिं भजेत्॥

कार्यों का क्रमशः महत्त्व अज्ञात

Śataṁ vihāya bhoktavyaṁ, sahasraṁ snānamācaret |
Lakṣaṁ vihāya dātayaṁ, koṭiṁ tyaktvā Hariṁ bhajet ||

Unknown

Importance of works respectively

मनुष्य को चाहिए कि वह भोजन के समय सौ काम छोड़कर भोजन कर ले। यदि स्नान करना शेष हो, तो हजार काम छोड़कर स्नान कर लेना चाहिए। यदि दान देना हो, तो लाखों कार्य छोड़कर दान देना चाहिए और प्रभु-भक्ति का समय हो तो करोड़ों कार्य भी छोड़कर प्रभु-भजन कर लेना चाहिए।

A man should leave aside hundred works and take food when its time is due. If one has not taken bath, he should take bath setting aside thousands of works. Alms should be given keeping aside one lac works and God should be worshipped leaving aside hundred lacs of works.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

In this way, worshipping is given the most priority.

(1362)

शतेषु जायते शूरः, सहस्रेषु च पण्डितः।
वक्ता दशसहस्रेषु, दाता भवति वा न वा॥

दाता की दुर्लभता सुभाषितरत्नभाण्डागार / 70 / 1

Śateṣu jāyate śūraḥ, sahasreṣu ca paṇḍitaḥ |
Vaktā daśasahasreṣu, dātā bhavati vā na vā ||

Subhā. Ratna. / 70 / 1

Rarity of the generous

सैंकडों में एकाध शूरवीर होता है। हजारों में एकाध पण्डित होता है। दस हजार में एकाध वक्ता जन्म लेना है। दाता जन्म लेता है अथवा नहीं, कहा नहीं जा सकता।

One brave fellow takes birth in hundreds, one wise and learned man comes into existence out of one thousand and only one becomes good speaker among ten thousand but a generous person takes birth or not, cannot be said.

(1363)

शत्रुभिर्योजयेच्छत्रुं बलिना बलवत्तरम्।
स्वकार्याय यतो न स्यात् काचित्पीडाऽत्र तत्क्षये॥

शत्रु से शत्रु का नाश पञ्च./लब्धप्रणाश/15

Śatrubhiryojayecchatruṁ balinā balavattaram |
Svakāryāya yato na syāt kācitpīḍā'tra tatkṣaye ||

Pañca. / Labdha. / 15

Destroying an enemy by other one

अपने कार्य की सिद्धि के लिए बलवान् शत्रु के साथ उससे अधिक बलशाली शत्रु को भिड़ा देना चाहिए, जिससे अपने कार्य की सफलता के लिए कोई भी कष्ट न उठाना पड़े।

To get success in own work one should provoke the stronger enemy against his strong enemy and let them fight. In this way one will not suffer any trouble to kill his enemy.

(1364)

शत्रुमुन्मूलयेत्प्राज्ञस्तीक्ष्णं तीक्ष्णेन शत्रुणा।
व्यथाकरं सुखार्थाय कण्टकेनेव कण्टकम्॥

शत्रु से शत्रु का नाश पञ्च./लब्धप्रणाश/16

Śatrumunmūlayet prājñastīkṣṇaṁ tīkṣṇena śatruṇā |
Vyathākaraṁ sukhārthāya kaṇṭakeneva kaṇṭakam ||

Destroy an enemy by stronger one. Pañca. / Labdha. / 16

बुद्धिमान् व्यक्ति को चाहिए कि अपने उग्र कष्ट-दायी शत्रु को उसके उग्र शत्रु द्वारा अपने सुख के लिए इस प्रकार नष्ट कर दे, जैसे काँटे से काँटा निकाला जाता है।

A wise man should uproot his own terrible and troublesome enemy through his terrible enemy in such a way as a thorn is removed by another thorn.

(1365)

शत्रोरपि गुणा वाच्या, दोषा वाच्या गुरोरपि।
सर्वदा सर्वभावेन पुत्रे शिष्ये हितं वदेत्॥

कथनीय गुण या दोष कवितामृतकूप

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Śatrorapi guṇā vācyā doṣā vācyā gurorapi |
Sarvadā sarvabhāvena putre śiṣye hitaṁ vadet ||

To be shown merits or demerits Kavitāmṛtakūpa

शत्रु के भी गुणों का उल्लेख करना चाहिए और गुरु के भी दोषों का। हर समय पूरा प्रयत्न कर पुत्र और शिष्य से उनके हित की बात ही कहनी चाहिए।

One should express the qualities even of the enemy and the short-comings even of the teacher. One should always and with every effort advise the son and the pupil useful things for them.

(1366)

शनैः शनैश्च भोक्तव्यं स्वयं वित्तमुपार्जितम्।
रसायनमिव प्राज्ञैर्हेलया न कदाचन॥

धन की उपयोग-विधि पञ्च./मित्रसम्प्राप्ति/83

Śanaiḥ śanaiśca bhoktavyaṁ svayaṁ vittamupārjitam |
Rasāyanamiva prājñairhelayā na kadācana ||

Pañca. / Mitrasam. / 83

Method to enjoy money

बुद्धिमानों को चाहिए कि अपने द्वारा कमाये हुए धन का उपभोग रसायन के समान धीरे-धीरे करें और कभी विलास के रूप में उसका उपभोग न करें।

Wise men should consume their earned money slowly like an alchemy and never for luxury.

(1367)

शनैः शनैश्च यो राज्यमुपभुङ्क्ते यथाबलम्।
रसायनमिव प्राज्ञः सः पुष्टिं परमां व्रजेत्॥

राज्य के उपभोग की विधि पञ्च./मित्रभेद/159

Śanaih śanaiśca yo rājyamupabhuṅkte yathābalam |
Rasāyanamiva prājñaḥ saḥ puṣṭiṁ paramāṁ vrajet ||

Pañca. / Mitrabhe. / 159

Method to enjoy kingdom

जो बुद्धिमान् व्यक्ति अपने राज्य का उपभोग अपनी शक्ति के अनुसार रसायन की तरह धीरे-धीरे करता है, वह परम पुष्ट हो जाता है।

The wise man who enjoys his kingdom slowly according to his power like an alchemy, he becomes very strong.

(1368)

शनैरर्थः, शनैः पन्थाः, शनैः पर्वतमारुहेत्।
शनैर्विद्या च धर्मश्च, व्यायामश्च शनैः शनैः॥

धीरे-धीरे कर्त्तव्य कर्म (चाणक्यनीतिशास्त्र)

Śanairarthaḥ śanaiḥ panthāḥ, śanaiḥ parvatamāruhet |
Śanairvidyā ca dharmaśca, vyāyāmaśca śanaiḥ śanaiḥ ||

Works to be done gradualy Cā. Nītiśās.

धीरे-धीरे धनोपभोग करना चाहिए, धीरे-धीरे मार्ग तय करना चाहिए, धीरे-धीरे पहाड़ पर चढ़ना चाहिए, धीरे-धीरे विद्या और धर्म की साधना करनी चाहिए और धीरे-धीरे व्यायाम करना चाहिए।

Consumption of wealth, travelling on a path, ascending a mountain,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

getting education, practice of religion and exercise should be done slowly.

(1369)

शयनं पित्तनाशाय, वातनाशाय मर्दनम्।
वमनं कफनाशाय, ज्वरनाशाय लङ्घनम्॥

रोगों के इलाज भावप्रकाश

Śayanaṁ pittanāśāya, vātanāśāya mardanam |
Vamanaṁ kaphanāśāya, jvaranāśāya laṅghanam ||

Remedes of diseases Bhāvapr.

पित्त को नष्ट करने के लिए सोना चाहिए, वायु के प्रकोप को दूर करने के लिए मालिश करनी चाहिए, कफ निकालने के लिए उल्टी करनी चाहिए तथा बुखार हटाने के लिए उपवास रखना चाहिए।

To remove gall sleeping, to remove an air-disease massage, to remove phlegm vomiting and to remove fever fasting are useful things.

(1370)

शय्यासनेऽध्याचरिते श्रेयसा न समाविशेत्।
शय्यासनास्थश्चैवैनं, प्रत्युत्थायाभिवादयेत्॥

बड़ों के प्रति कर्त्तव्य मनु./2/19

Śayyāsane'dhyācarite śreyasā na samāviśet |
Śayyāsanāsthaścaivainaṁ, pratyutthāyābhivādayet ||

Duties towards elders Manu. / 2 / 19

अपने से बड़े द्वारा प्रयोग किए जाने वाले बिस्तर और आसन पर छोटे को न लेटना और न बैठना चाहिए। अपने बिस्तर या आसन पर स्थित होते समय यदि कोई बड़ा आ जाए तो उठकर उसका अभिवादन करना चाहिए।

A younger one should not sleep or sit on the bed or the seat of an elder one. If he is lying or sitting on his own bed or seat he should welcome the elder by standing and saluting him.

(1371)

शरीरनिरपेक्षस्य दक्षस्य व्यवसायिनः।
बुद्धिप्रारब्धकार्यस्य नास्ति किञ्चन दुष्करम्॥

सफलता का साधन - बुद्धि भोजप्रबन्ध/8

Śarīranirapekṣasya dakṣasya vyavasāyinaḥ |
Buddhiprārabdhakāryasya nāsti kiñcana duṣkaram ||

Means to success – intellect Bhojapra. / 8

स्वस्थ शरीर वाले, कार्यकुशल, परिश्रमी तथा बुद्धि से सोचकर कार्य आरम्भ करने वाले के लिए कोई भी कार्य कठिन नहीं रहता।

For one whose body is healthy and sound, who is expert, hard worker and who begins his work after thinking by his intellect, nothing remains difficult to be done by him.

(1372)

शरीरमेवायतनं सुखस्य,
दुःखस्य चाप्यायतनं शरीरम्।
यद्यच्छरीरेण करोति कर्म,
तेनैव देही समुपाश्नुते तत्॥

कर्म और भोग का साधन - शरीर अज्ञात

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Śarīramevāyatanaṁ sukhasya,
Duḥkhasya cāpyāyatanaṁ śarīram |
Yadyaccharīreṇa karoti karma,
Tenaiva dehī samupāśnute tat ||

Means of work and result – body Unknown

सुख का भी अधिष्ठान केवल शरीर है और दुःख का भी अधिष्ठान शरीर ही है। जीव शरीर द्वारा जो-जो कर्म करता है, उसी से अर्थात् शरीर से ही वह उस सुख या दुःख को भोगता है।

It is the body, which contains weals and woes. The soul feels weals and woes only through its body for the deeds which it does through its body.

(1373)

शरीरस्य गुणानां च, दूरमत्यन्तमन्तरम्।
शरीरं क्षणविध्वंसि, कल्पान्तरस्थायिनो गुणाः ॥

शरीर और गुण हितोपदेश/मित्रलाभ/49

Śarīrasya guṇānāṁ ca, dūramatyantamantaram |
Śarīraṁ kṣaṇa-vidhvaṁsi, kalpāntarasthāyino guṇāḥ ||

Body and merits Hitopa. / Mitralābha. / 49

शरीर तथा गुणों में बहुत अधिक अन्तर है, शरीर तो क्षणभङ्गुर है परन्तु गुण तो दूसरे कल्प तक भी साथ रहते हैं।

There is a lot of difference between the body and merits. The body is momentary while merits remain even upto the creation of new world.

(1374)

शरीरायासजननं कर्म व्यायाम-सञ्ज्ञितम्।
तत्कृत्वा तु सुखं देहं, विमृद्नीयात्समन्ततः ॥

सुश्रुतसंहिता/चिकित्सास्थान/24/38

परिश्रम के बाद कर्त्तव्य

Śarīrāyāsajananaṁ karma vyāyāmasañjñitam |
Tat kṛtvā tu sukhaṁ dehaṁ, vimṛdnīyātsamantataḥ ||

Suśruta. / Ci. / 24 / 38

To be done after efforts

शरीर में थकावट उत्पन्न करने वाले कार्य को ही व्यायाम कहा जाता है। मनुष्य को चाहिए कि व्यायाम करने के पश्चात् शरीर को सभी ओर से मसले।

The action which is tiresome for the body is called physical exercise. After performing exercise one should rub his body from all sides.

(1375)

शशी दिवसधूसरो, गलित-यौवना कामिनी,
सरो विगतवारिजं, मुखमनक्षरं स्वाकृतेः।
प्रभुर्धन-परायणः, सतत-दुर्गतः सज्जनो-
नृपाङ्गणगतः खलो, मनसि सप्त शल्यानि मे ॥

सात चुभने वाली वस्तुएँ नीतिशतक/52

Śaśī divasadhūsaro, galitayauvanā kāminī,
Saro vigatavārijaṁ, mukhamanakṣaraṁ svākṛteḥ |
Prabhurdhanaparāyaṇaḥ, satatadurgataḥ sajjano-
Nṛpāṅgaṇagataḥ khalo, manasi sapta śalyāni me ||

Piercing seven things Nītiśataka / 52

मेरे मन को चुभने वाली (पीड़ा देने वाली)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निम्न सात वस्तुएँ हैं :- (1) दिन के समय मटमैला चाँद, (2) नष्ट हुए यौवन वाली सुन्दरी, (3) कमलों से शून्य तालाब, (4) सुन्दर आकृति वाले का निरक्षर होना, (5) धन का लोभी स्वामी, (6) दुर्गति-ग्रस्त श्रेष्ठ मनुष्य और (7) राजा तक की पहुँच वाला दुष्ट व्यक्ति।

These are seven things which pierce my mind :— (1) the moon which is dust coloured in the day-time, (2) a beautiful woman whose youth is lost, (3) a pond devoid of lotuses, (4) the handsome man who is illiterate, (5) a king who is greedy (6) a good man ever striken with misery and (7) a wicked person who is in the courtyard of the king (i.e. having influence on the king).

(1376)

शस्त्रस्य चैव शास्त्रस्य, द्वे विद्ये प्रकीर्तिते।
आद्या हास्याय वृद्धत्वे, द्वितीयाद्रियते सदा॥

दो विद्याएँ अज्ञात

Śastrasya caiva śāstrasya, dve vidye prakīrtite |
Ādyā hāsyāya vṛddhatve, dvitīyādriyate sadā ||

Two sciences Unknown

शस्त्र और शास्त्र की - ये दो विद्याएँ मुख्य रूप से मानी जाती हैं। इन में से शस्त्रविद्या बुढ़ापे में उपहासास्पद बन जाती है परन्तु शास्त्रीय विद्या का सदैव मान रहता है।

Two kinds of knowledge are recognised. One of them is the knowledge of weapons and other is the knowledge of good books. The first becomes a matter of laughter in the old age, while the second is honoured always.

(1377)

शस्त्रैर्हता न हि हता रिपवो भवन्ति,
प्रज्ञाहतास्तु रिपवः सुहताः भवन्ति।
शस्त्रं निहन्ति पुरुषस्य शरीरमेकम्,
प्रज्ञा कुलं च विभवं च यशश्च हन्ति॥

बुद्धि से मारा हुआ पञ्च./काकोलूकीय/219

Śastrairhatā na hi hatā ripavo bhavanti,
Prajñāhatāstu ripavaḥ suhatāḥ bhavanti |
Śastraṁ nihanti puruṣasya śarīramekam,
Prajñā kulaṁ ca vibhavaṁ ca yaśaśca hanti ||

Killed by intellect Pañca. / Kāko. / 219

शस्त्रों से मारे हुए शत्रु न मारे हुए ही समझने चाहिएँ। जो शत्रु बुद्धि द्वारा मारे जाते हैं, वे ही वस्तुतः पूर्णतः मरे हुए कहलाते हैं। शस्त्र तो केवल एक ही शरीर को नष्ट करता है परन्तु बुद्धि परिवार, धन और कीर्ति सभी कुछ नष्ट कर देती है।

The enemies which are killed with weapons are not called killed. Really, those are said to be killed, which are killed by intellect, A weapon can kill only one man, while intellect kills a full family, wealth, fame and other things also.

(1378)

शाखाशतशतविततः सन्ति कियन्तो कानने न तरवः।
परिमलभरमिलदलिकुलदलितदलाः शाखिनो विरलाः॥

परोपकारियों की दुर्लभता भोजप्रबन्ध/222

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Śākhāśataśatavitatāḥ santi kiyanto kānane na taravaḥ |
Parimalabharamiladalikuladalitadalāḥ śākhino viralāḥ ||

Rarity of helpers Bhojapra. / 222

फैली हुई सैकड़ों शाखाओं वाले वृक्ष तो जंगल में अनेक हैं परन्तु ऐसे पेड़ बहुत कम हैं, जिनकी सुगन्ध से खिंचे हुए भौंरे आकर उनके पत्तों को अपने पाँवों से दबाते हों।

There are so many trees in a forest, which have hundreds of branches stretched around but there are only a few trees whose leaves are trodden by black bees, which are attracted to them for their fragrance.

(1379)

शाठ्येन मित्रं, कपटेन धर्मं,
परोपतापेन समृद्धभावम्।
सुखेन विद्यां परुषेण नारीं,
वाञ्छन्ति ये नूनमपण्डितास्ते ॥

मूर्खों के साधन नराभरण / 6

Śāṭhyena mitraṁ, kapaṭena dharmaṁ,
Paropatāpena samṛddhabhāvam |
Sukhena vidyāṁ, paruśeṇa nārīm,
Vañchanti ye nūnamapaṇḍitāste ||

Means of fools Narābhrana / 6

वे मनुष्य निश्चय ही मूर्ख होते हैं जो दुष्टता से मित्रता, कपट से धर्म, दूसरों को सता कर अपनी बढ़ती, सुख-भोग के साथ विद्या और कठोरता-पूर्ण व्यवहार से नारी को पाना चाहते हैं।

The persons who wish to have a friendship with wickedness, morality with cunningness, wealth by troubling others, easy education and to attain a woman with harsh behaviour, are really fools.

(1380)

शान्ता द्यौः शान्ता पृथिवी, शान्तमिदमुर्वन्तरिक्षम्।
शान्ता उदन्वतीरापः, शान्ता नः सन्त्वोषधीः ॥

कल्याण की कामना अथर्व./19/9/5

Śāntā dyauḥ śāntā pṛthivī, śāntamidamurvantarikṣam |
Śāntā udanvatīrāpaḥ, śāntā naḥ santvoṣadhīḥ ||

Desire of welfare Atharva / 19 / 9 / 5

हे प्रभो! हमारे लिए सूर्य अथवा द्युलोक, पृथ्वी, यह विस्तृत अन्तरिक्षलोक, चलती हुई नदियों का जल तथा ओषधियाँ शान्तिकारक हों। इनसे हम पूरा-पूरा लाभ उठा कर अपने जीवन को सुखी बनाएँ।

O God! Let the sun or the heaven, the earth, the stretched upper region of atmosphere, the water of flowing rivers, herbs and greenery be for our welfare and peace.

(1381)

शान्तितुल्यं तपो नास्ति, न सन्तोषात्परमं सुखम्।
न तृष्णायाः परो व्याधिर्न च धर्मो दयापरः ॥

उत्कृष्ट और निकृष्ट वस्तुएँ चाणक्यनीति/8/13

Śāntitulyaṁ tapo nāsti, na santoṣāt paramaṁ sukham |
Na tṛṣṇāyāḥ paro vyādhirna ca dharmo dayāparaḥ ||

Best and worst things Cā. Nīti./ 8 / 13

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शान्ति के समान दूसरा तप नहीं है, सन्तोष से बढ़कर सुख नहीं है, तृष्णा से भयंकर कोई अन्य रोग नहीं है और दया से बढ़कर कोई दूसरा धर्म नहीं है।

There is no other penance like peace, no better happiness than contentment, nothing more dreadful disease than greed and no better morality than kindness.

(1382)

शाश्वतं विधिवद्दानं, शाश्वतम् सत्यभाषणम्।
शाश्वती प्रगुणा विद्या, हृद्यं मित्रं च शाश्वतम्॥

स्थायी वस्तुएँ चाणक्य-राजनीतिशास्त्र/2/50

Śāśvataṁ vidhivaddānaṁ, śāśvatam satyabhāṣaṇam |
Śāśvatī praguṇā vidyā, hṛdyaṁ mitraṁ ca śāśvatam ||

Permanent things Cā. Rājanīti śā. / 2 / 50

विधिपूर्वक दिया गया दान, सत्य-भाषण, गुणवती विद्या तथा मनोनुकूल मित्र — ये सभी चिरस्थायी होते हैं।

Donation given in proper way, speaking of truth, education full of merits and a pleasing friend – all of these stay for a long time.

(1383)

शास्त्रे प्रतिष्ठा सहजश्च बोधः,
प्रागल्भ्यमभ्यस्तगुणा च वाणी।
कालानुरोधः प्रतिभानवत्व-
मेते गुणाः कामदुघाः क्रियासु॥

सफलता के लिए आवश्यक गुण मालतीमाधव/3/2

Śāstre pratiṣṭhā sahajaśca bodhaḥ,
Prāgalbhyamabhyastaguṇā ca vāṇī |
Kālānurodhaḥ pratibhānavatvam,
Ete guṇāḥ kāmadughāḥ kriyāsu ||

Mālatimā. / 3 / 2

Important qualities for success

निम्नलिखित गुण कार्यों में इच्छाओं को पूर्ण करने वाले होते हैं :- (1) शास्त्रों का गहरा ज्ञान, (2) स्वाभाविक समझ, (3) उत्साह, (4) माधुर्यादि गुणों के अभ्यास वाली वाणी, (5) समय को समझ कर कार्य करना और (6) सूझबूझ।

The following six qualities complete one's desires in deeds :- (1) deep knowledge of authentic books, (2) natural understanding, (3) courage, (4) the tongue which has practice of sweetness, (5) timely action and (6) intelligence.

(1384)

शास्त्रोपस्कृतशब्दसुन्दरगिरः शिष्यप्रदेयागमाः,
विख्याताः कवयो वसन्ति विषये यस्य प्रभोर्निर्धनाः।
तज्जाड्यं वसुधाधिपस्य सुधियस्त्वर्थं विनापीश्वराः,
कुत्स्याः स्युः कुपरीक्षका हि मणयो यैरर्घतः पातिताः॥

निन्दनीय शासक नीतिशतक/14

Śāstropaskṛtaśabdasundaragiraḥ śiṣyapradeyāgamāḥ,
Vikhyātāḥ kavayo vasanti viṣaye yasya prabhornirdhanāḥ |
Tajjādyaṁ vasudhādhipasya sudhiyastvarthaṁ vināpīśvarāḥ,
Kutsyāḥ syuḥ kuparīkṣakā hi maṇayo yairarghataḥ pātitāḥ ||

Condemnable rulers Nitisatka / 14

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिस राजा के राज्य में शास्त्रों द्वारा सजे शब्दों से विभूषित वाणियों वाले तथा जिनकी विद्या शिष्यों द्वारा प्राप्त करने के योग्य है, ऐसे प्रसिद्ध कवि निर्धन होकर रहते हैं, वह जड़ता उस राजा की ही है, जो उनके गुणों का मान नहीं करता। बुद्धिमान् लोग तो बिना धन के भी ज्ञान द्वारा ऐश्वर्य के स्वामी हैं। निन्दनीय तो वे गन्दे परीक्षक हैं, जिन्होंने रत्नों का मूल्य ही गिरा दिया है।

This is the dullness of the king in whose kingdom such famous poets live in poverty, whose tongue is de-corated with the words purified with standard books and whose knowledge is worth for pupils, be-cause it is the king who does not give impor-tance to their works. The wise poets are prosperous due to their know-ledge, even without money. The bad examiners are blam-able, who decrease the value of such jewels.

(1385)

शिरः शार्वं स्वर्गात्पशुपतिशिरस्तः क्षितिधरम्,
महीध्रादुत्तुङ्गादवनिमवनेश्चापि जलधिम्।
अधोऽधो गङ्गेयं पदमुपगता स्तोकमथवा,
विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः॥

अविवेक से हानि नीतिशतक/10

Śiraḥ Śārvaṁ svargātPaśupatiśirastaḥ kṣitidharam,
Mahidhrāduttuṅgādavanimavaneścāpi jaladhim।
Adho'dho Gaṅgeyaṁ padamupagatā stokamathavā,
Vivekabhraṣṭānāṁ bhavati vinipātaḥ śatamukhaḥ॥

Harm due to lack of discrimination Nītiśataka / 10

यह गंगा स्वर्ग से शिवजी के सिर पर, शिवजी के सिर से पर्वत पर, ऊँचे पर्वत से पृथ्वी पर और पृथ्वी से नीचे-नीचे जाती हुई सागर में जा मिली। इस प्रकार उसका निरन्तर पतन ही होता चला गया। वस्तुतः, जिनका विवेक नष्ट हो जाता है, वे गंगा के समान ही सैंकड़ों रूप से गिरते चले जाते हैं।

The Ganga fell upon the head of Shivaji from the heaven. From there it fell upon the mountain and from the high peak of the mountain it fell upon the earth and from there, reached into the ocean. In this way it continuously fell down and down. It means the persons who lose their power of discrimination fall down in many ways.

(1386)

शीघ्रकृत्येषु कार्येषु विलम्बयति यो नरः।
तत्कृत्यं देवतास्तस्य कोपाद्विघ्नन्त्यसंशयम्॥

विलम्ब से हानि पञ्च./काकोलूकीय/197

Śīghrakṛtyeśu kāryeṣu vilambayati yo naraḥ।
Tatkṛtyaṁ devatāstasya kopādvighnantyasaṁśayam॥

Loss due to be late Pañca. / Kāko. / 197

शीघ्र करने योग्य कार्यों में जो देरी करता है, उसके देवता उस पर क्रुद्ध होकर उस कार्य में विघ्न डाल देते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

The person who is late in doing the works; which should be done soon, his gods become angry and disturb his work.

(1387)

शीतेन पयसा स्नानम्, रक्तपित्तप्रशान्तिकृत्।
तदेवोष्णेन तोयेन बल्यं, वातकफापहम्॥

स्नान के लाभ भावप्रकाश/दिनचर्या/83

Śītena payasā snānam, raktapittapraśāntikṛt |
Tadevoṣṇena toyena balyaṁ, vātakaphāpaham ||

Bhāvapra. / Dina. / 83

Advantages of taking bath

ठण्डे जल से किया हुआ स्नान रक्तपित्त को शान्त करता है। और यदि गरम पानी से स्नान किया जाए, तो वह बलवर्धक तथा वायु और कफ के विकारों को नष्ट करता है।

The bath taken with cold water appeases plethora, and if it is taken with warm water it gives strength and removes the bad effect of air and phlegm.

(1388)

शुकवद् भाषणं कुर्याद् बकवद्ध्यानमाचरेत्।
अजवच्चर्वणं कुर्याद् गजवत्स्नानमाचरेत्॥

क्रियाओं के आदर्श अज्ञात

Śukavad bhāṣaṇaṁ kuryād, bakavaddhyānamācaret |
Ajavaccarvaṇaṁ kuryād, gajavatsnānamācaret ||

Ideals for works Unknown

मनुष्य को तोते के समान स्पष्ट बोलना चाहिए, बगुले की तरह ध्यान स्थिरता-पूर्वक लगाना चाहिए, बकरे की तरह खूब चबाकर खाना चाहिए और हाथी के समान पानी में खूब नहाना चाहिए।

One should speak clearly like a parrot, meditate seriously like a heron, chew continuously like a goat and take enough bath in water like an elephant.

(1389)

शुचित्वं त्यागिता शौर्यं, सामान्यं सुखदुःखयोः।
दाक्षिण्यं चानुरक्तिश्च, सत्यता च सुहृद्गुणाः॥

मित्र के गुण हितोपदेश/मित्रलाभ/96

Śucitvaṁ tyāgitā śauryaṁ, sāmānyaṁ sukhaduḥkhayoḥ |
Dākṣiṇyaṁ cānuraktiśca, satyatā ca suhṛdguṇāḥ ||

Hitopa. / Mitralābha / 96

Qualities of a friend

पवित्रता, त्याग, वीरता, सुख-दुःख में समभाव, उदारता, प्रीति और सच्चाई-ये मित्र के श्रेष्ठ गुण हैं।

A good friend should possess the following qualities :- piousness, sacrifice, bravery, commonness in weal and woe, generosity, affection and truthfulness.

(1390)

शुभकृच्छुभमाप्नोति, पापकृत् पापमश्नुते।
विभीषणः सुखं प्राप्तः, त्वं प्राप्तः पापमीदृशम्॥

जैसे बोये, वैसा काटे वा. रामा./युद्धकाण्ड/111/26

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Śubhakṛcchubhamāpnoti, pāpakṛt pāpamaṣnute |
Vibhiṣaṇaḥ sukhaṁ prāptaḥ, tvaṁ prāptaḥ pāpamīdṛśam ||

Vā. Rā. / Yuddha. / 111 / 26

As one sows, so he reaps

हे लंकेश! अच्छे कर्म करने वाला अच्छा ही फल प्राप्त करता है और पापी दु:ख को भोगता है। विभीषण ने शुभ कर्म से सुख प्राप्त किया और तुमने पाप करके दु:ख ही भोगा है।

O the king of Laṅkā! A good-doer receives happiness and a bad-doer gets troubles. Vibhīṣaṇa enjoyed happiness and you are suffering by troubles.

(1391)

शुश्रूषा श्रवणं चैव, ग्रहणं धारणं तथा।
ऊहापोहार्थविज्ञाने, तत्त्वज्ञानं च धीगुणाः ॥

बुद्धि के गुण कामन्दकनीतिसार/4/22 /

Śuśrūṣā śravaṇaṁ caiva, grahaṇaṁ dhāraṇaṁ tathā |
Ūhāpohārthavijñāne, tattvajñānaṁ ca dhīguṇāḥ ||

Qualities of intellect Kāmandaka. / 4 / 22

सुनने की इच्छा, सुनना, ग्रहण करना, बुद्धि में बैठा लेना, तर्क-वितर्क करना, अर्थ का विशेष ज्ञान करना और तत्त्व को समझना – ये बुद्धि के गुण होते हैं।

Tendency to listen, hearing, adoption, keeping it in mind, reasoning, understanding of the special meaning and knowing of the reality are the qualities of an intellect.

(1392)

शुष्कस्य कीटखातस्य वह्निदग्धस्य सर्वथा।
तरोरप्यूषरस्थस्य वरं जन्म न चार्थिनः ॥

निन्दनीय – भिखमंगा पञ्च./मित्रसम्प्राप्ति/95

Śuṣkasya kīṭakhātasya vahnidagdhasya sarvathā |
Tarorapyūṣarasthasya varaṁ janma na cārthinaḥ ||

Pañca. / Mitrasam. / 95

Condemnable – a beggar

सूखे हुए, कीड़ों से खाए हुए, आग से पूर्णत: जले हुए और ऊसर में स्थित भी पेड़ का जन्म अच्छा है, परन्तु माँगने वाले का जीवन अच्छा नहीं है।

The life of such a tree, which has dried, eaten by worms, completely burnt by fire and even existing in a barren land is better than a beggar's life.

(1393)

शुष्केणैकेन वृक्षेण वनं पुष्पितपादपम्।
कुलं चरित्रहीनेन पुरुषेणेव दह्यते ॥

निन्दनीय चरित्रहीन पञ्चरात्र/1/12

Śuṣkeṇaikena vṛkṣeṇa vanaṁ puṣpitapādapam |
Kulaṁ carītrahīnena puruṣeṇeva dahyate ||

Pañcarātra / 1 / 12

Condemnable character

जिस प्रकार एक सूखा पेड़ फूलों से लदे पेड़ों वाले जंगल को जला देता है, उसी प्रकार चरित्रहीन पुरुष कुल को नष्ट कर देता है।

Just as one dry tree burns the forest which is full of bloomed trees,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

in the same way a characterless person destroys the whole family.

(1394)

शूरः को विजितेन्द्रियः, प्रियतमा का सुव्रता, किं धनं-
विद्या, किं सुखमप्रवासपरता, राज्यं किमाज्ञाफलम्।
लाभः को गुणिसङ्गमः, किमशुभं प्राज्ञेतरोपाश्रयः,
का हानिर्विनयच्युतिर्निपुणता का धर्मतत्त्वे रतिः॥

अच्छी और बुरी वस्तुएँ कवितामृतकूप/53

Śūraḥ ko vijitendriyaḥ, priyatamā kā suvratā, kiṁ dhanam-
Vidyā, kiṁ sukhamapravāsaparatā, rājyaṁ kimājñāphalam |
Lābhaḥ ko guṇisaṅgamaḥ, kimaśubhaṁ prājñetaropāśrayaḥ,
Kā hāniḥ vinayacyutiḥ nipuṇatā kā dharmatattve ratiḥ ||

Good and bad things Kavitāmṛtakūpa / 53

शूरवीर कौन है? जिसने अपनी इन्द्रियों को जीत लिया है। प्रियतमा कौन है? जो सदाचारिणी स्त्री है। धन क्या है? विद्या। सुख क्या है? परदेश में न बसना। राज्य क्या है? आज्ञा-पालन होना। लाभ क्या है? गुणी जनों की संगति। अशुभ क्या है? अज्ञानियों की शरण। हानि क्या है? विनय का अभाव। निपुणता क्या है? धर्म के वास्तविक स्वरूप में आसक्ति।

Who is brave? One who has control on his senses. Who is beloved? The lady of good character. What is money? Education. What is happiness? Absence of residing in a foreign land. What is kingdom? Obeying of orders. What is advantage? Company of meritorious persons. What is bad? The refuge of fools. What is loss? Absence of politeness. What is dexterity? Tendency towards morality.

(1395)

शूरः सुरूपः सुभगश्च वाग्मी,
शस्त्राणि शास्त्राणि विदांकरोतु।
अर्थं विना नैव यशश्च मानं,
प्राप्नोति मर्त्योऽत्र मनुष्यलोके॥

निर्धन की दुर्गति विक्रमार्कचरितम् / 21 / 246

Śūraḥ surūpaḥ subhagaśca vāgmī,
Śastrāṇi śāstrāṇi vidāṅkarotu |
Arthaṁ vinā naiva yaśaśca mānaṁ,
Prāpnoti martyo'tra manuṣyaloke ||

Vikramārka. / 21 / 246

Bad condition of pocketless

चाहे मनुष्य बहादुर हो, सुन्दर हो, वाक्पटु हो और शस्त्रविद्या तथा शास्त्रविद्या – दोनों में निपुण भी हो, तो भी इस मानव-जगत् में वह धन के बिना न यश प्राप्त कर सकता है और न मान ही।

A man may be brave, handsome, expert in talking and also expert in use of weapons and good books, but without money he can neither gain fame nor respect in this world.

(1396)

शून्यमाकीर्णतामेति, मृत्युरप्युत्सवायते।
आपत्सम्पदिवाभाति, विद्वज्जनसमागमे॥

विद्वानों की संगति का लाभ किरातार्जुनीय / 11 / 27

Śūnyamākīrṇatāmeti, mṛtyurapyutsavāyate |
Āpatsampadivābhāti, vidvajjanasamāgame ||

Kirātā. / 11 / 27

Advantages of the company of learned

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विद्वानों के समागम से एकान्त स्थल भी मनुष्यों से भरा-पूरा हो जाता है और आई हुई मृत्यु भी उत्सव के समान लगती है तथा आपत्ति भी सम्पत्ति के समान प्रतीत होती है।

Due to the arrival of learned people a lonely place becomes full of people, even coming death seems like a festival and an adversity be-comes like prosperity.

(1397)

शूराश्च कृतविद्याश्च रूपवत्यश्च योषितः।
यत्र यत्र गमिष्यन्ति तत्र तत्र कृतालयाः॥

गुणियों का मान — सर्वत्र सुभाषितावलि / 542

Śūrāśca kṛtavidyāśca, rūpavatyaśca yoṣitaḥ |
Yatra yatra gamiṣyanti, tatra tatra kṛtālayāḥ ||

Subhāśitāvali / 542

Meritorious are respected every where

शूरवीर पुरुष, विद्वान् लोग और रूपवती स्त्रियाँ ये जहाँ-जहाँ भी जायेंगे, वहीं-वहीं उनके लिए ठिकाना बनता जाएगा।

The place where-ever the brave persons, the scholars and beautiful ladies go, they will get a good residence there.

(1398)

शेते सह शयानेन, गच्छन्तमनुगच्छति।
नराणां प्राक्तनं कर्म, तिष्ठत्यथ सहात्मना॥

किया कर्म साथ ही साथ पञ्च./मित्रसम्प्राप्ति/124

Śete saha śayānena, gacchantamanugacchati |
Narāṇāṁ prāktanaṁ karma, tiṣṭhatyatha sahātmanā ||

Pañca. / Mitrasam. / 124

Deeds remain with soul

मनुष्य का पहले से किया हुआ कर्म प्रत्येक व्यक्ति के साथ सोते समय सो जाता है, चलते समय पीछे चलता है और सदा आत्मा के साथ ही रहता है।

Work already done by man sleeps with him when he sleeps, follows him when he goes and always remains with the soul.

(1399)

शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे।
साधवो नहि सर्वत्र चन्दनं न वने वने॥

दुर्लभ वस्तुएँ चाणक्यनीतिसार/2/5

Śaile śaile na māṇikyaṁ, mauktikaṁ na gaje gaje |
Sādhavo nahi sarvatra, candanaṁ na vane vane ||

Rare things Cā. Nītisāra / 2 / 5

प्रत्येक पर्वत पर माणिक्य नहीं होते, प्रत्येक हाथी में मोती नहीं पाये जाते, श्रेष्ठ व्यक्ति सब जगह नहीं होते हैं और चन्दन प्रत्येक वन में नहीं होता। भाव यह है कि श्रेष्ठ वस्तुएँ प्रायः दुर्लभ होती हैं।

There is no ruby on every mountain, no pearl in every elephant, no good men everywhere and the sandal trees are not available in every forest. The sense is that good things are very rare.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(1400)

शोकारातिपरित्राणम्, प्रीतिविश्रम्भभाजनम्।
केन रत्नमिदं सृष्टं मित्रमित्यक्षरद्वयम्॥

मित्र शब्द का सौन्दर्य भोजप्रबन्ध/148

Śokārātiparitrāṇaṁ, prītiviśrambhabhājanam |
Kena ratnamidaṁ sṛṣṭaṁ mitramityakṣaradvayam ||

Beauty of 'Mira' word Bhojapra. / 148

शोक और शत्रुओं से बचाने वाला, प्रेम और विश्वास का पात्र, दो अक्षरों वाला रत्न रूप यह 'मित्र' शब्द किसने रचा है?

Who has composed this 'Mitra' word having two letters, who protects us from sadness and enemies and who is a container of love and trust?

(1401)

शोकेन रोगा वर्धन्ते, पयसा वर्धते तनुः।
घृतेन वर्धते वीर्यम्, मांसान्मांसं प्रवर्धते॥

बढ़ाने वाली वस्तुएँ चाणक्यनीति/10/20

Śokena rogā vardhante, payasā vardhate tanuḥ |
Ghṛtena vardhate vīryaṁ, māṁsānmāṁsaṁ pravardhate ||

Means to increase Cā. Nīti/ 10 / 20

शोक से रोग बढ़ते हैं, दूध से शरीर बढ़ता है, घी से वीर्य बढ़ता है और मांस खाने से मांस बढ़ता है।

Sorrow increases diseases, milk develops body, ghee adds sperm and meat-eating develops flesh.

(1402)

शोको नाशयते धैर्यं, शोको नाशयते श्रुतम्।
शोको नाशयते सर्वं, नास्ति शोकसमो रिपुः॥

शोक से हानियाँ वा. रा. / अयोध्या. / 42 / 15

Śoko nāśayate dhairyaṁ, śoko nāśayate śrutam |
Śoko nāśayate sarvam, nāsti śokasamo ripuḥ ||

Vā. Rā. / Ayodhyā. / 42 / 15

Harms by sadness

शोक धैर्य को, ज्ञान को और सभी कुछ को नष्ट कर देता है। अतः शोक के समान कोई दूसरा शत्रु नहीं है।

Sorrow takes away patience, knowledge and also everything. So, it is the most dreadful enemy.

(1403)

शोचन्ति जामयो यत्र, विनश्यत्याशु तत्कुलम्।
न शोचन्ति तु यत्रैता वर्द्धते तद्धि सर्वदा॥

स्त्री - शोक का दुष्परिणाम मनु./3/57

Śocanti jāmayo yatra, vinaśyatyāśu tatkulam |
Na śocanti tu yatraitā varddhate taddhi sarvadā ||

Manu. / 3 / 57

Badresults of ladig's torture

जिस परिवार में नारियाँ शोक करती रहती हैं, वह शीघ्र ही नष्ट हो जाता है और जहाँ ये शोक नहीं करतीं वह कुल सदैव उन्नति करता है।

The family in which the ladies remain sorrowful, is destroyed soon and where they feel no sorrow that family grows certainly.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(1404)

शौचं च द्विविधं प्रोक्तं, बाह्यमाभ्यन्तरं तथा।
मृज्जलाभ्यां स्मृतं बाह्यम्, भावशुद्धिस्तथान्तरम्॥

पवित्रता के दो भेद दक्षस्मृतिः

Śaucaṁ ca dvividhaṁ proktaṁ, bāhyamābhyantaraṁ tathā।
Mṛjjalābhyāṁ smṛtaṁ bāhyam, bhāvaśuddhistathāntaram॥

Two kinds of cleanliness Dakṣasmṛti

शुद्धि दो प्रकार की कही गई है, एक तो बाहरी तथा दूसरी आन्तरिक। मिट्टी और पानी से जो शुद्धि की जाती है, वह बाह्य शुद्धि होती है परन्तु मानसिक भावों की शुद्धि आन्तरिक शुद्धि कहलाती है।

Purification is of two kinds; the first is external, while the second is internal. Purification made with soil and water is called the external one and purity of ideas and thoughts is called the internal one.

(1405)

श्रदिति सत्यमेवाहुर्धारणं धोच्यते बुधैः।
यया हि धार्यते सत्यं, वृत्त्या श्रद्धेति सा मता॥

श्रद्धा का स्वरूप सूक्तिनिधि / पृ. 39

Śraditi satyamevāhurdhāraṇam dhocyate budhaiḥ।
Yayā hi dhāryate satyaṁ, vṛttyā śraddheti sā matā॥

Definition of devotion Sūtinīdhi / P. 39

'श्रत्' का अर्थ है 'सत्य' और 'धा' का अर्थ है 'धारण करना'। जिस वृत्ति द्वारा सत्य धारण किया जाता है, उसे 'श्रद्धा' कहते हैं।

'Śrat' means 'the truth' and 'dhā' means 'to adopt', so the tendency which leads to adopt the truth is called 'śraddhā'.

(1406)

श्रद्दधानः शुभां विद्यां हीनादपि समाप्नुयात्।
सुवर्णमपि चामेध्यादाददीताविचारयन्॥

ग्राह्य वस्तुएँ महाभारत शान्तिपर्व/164/39

Śraddadhānaḥ śubhāṁ vidyāṁ hīnādapi samāpnuyāt।
Suvarṇamapi cāmedhyādādadītāvicārayan॥

Mahābhā. / Śānti. / 164 / 39

Things to be owned

मनुष्य को चाहिए कि अपने से छोटे व्यक्ति से भी शुभ विद्या श्रद्धापूर्वक ग्रहण कर ले और सोना यदि गन्दी जगह पर भी पड़ा हो, तो बिना सोचे ही उसे भी उठा ले।

A man should receive good art from even a lower person with devotion and if gold is found at a dirty place that should be accepted also without thinking.

(1407)

श्रद्धयाऽग्निः समिध्यते, श्रद्धया हूयते हविः।
श्रद्धां भगस्य मूर्धनि, वचसा वेदयामसि॥

श्रद्धा के लाभ ऋग्/10/151/1

Śraddhayāgniḥ samidhyate, śraddhayā hūyate haviḥ।
Śraddhāṁ bhagasya mūrdhani, vacasā vedayāmasi॥

Advantages of devotion Ṛg. / 10 / 151 / 1

श्रद्धा से ही अग्नि प्रदीप्त की जाती है और श्रद्धा से ही आहुति दी जाती है। ज्ञान, कीर्ति, लक्ष्मी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आदि ऐश्वर्यों में मुख्य मानी जाने वाली श्रद्धा को हम अपने वचन द्वारा स्वीकार करते हैं।

Fire is inflamed with devotion and an oblation is presented with devotion. Devotion is the main prosperity among knowledge, fame and wealth etc. So we adopt it with our words.

(1408)

श्रद्धया साध्यते धर्मो, महद्भिर्नार्थराशिभिः।
अकिञ्चना हि मुनयः, श्रद्धावन्तो दिवं गताः॥

श्रद्धा का महत्त्व स्कन्दपु. / मा. कौ. 4 / 46, 47

Śraddhayā sādhyate dharmo, mahadbhirnārtharāśibhiḥ |
Akiñcanā hi munayaḥ, śraddhāvanto divaṁ gatāḥ ||

Skandpu. / Mā. Kau. 4 / 46, 47

Superiority of devotion

धर्म के सभी कृत्य श्रद्धा से ही सिद्ध होते हैं; बहुत अधिक धन से नहीं। हम देखते हैं कि धनहीन भी मुनि लोग श्रद्धा द्वारा ही स्वर्ग में पहुँचे थे।

All good deeds are practised with devotion but not with abundance of money. We know that the sages who had nothing, went to the heaven on account of their devotion.

(1409)

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं, तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति॥

शान्ति प्राप्त करने की विधि महाभा./भीष्मपर्व/28/30

Śraddhāvāṁllabhate jñānaṁ, tatparaḥ saṁyatendriyaḥ |
Jñānaṁ labdhvā parāṁ śantimacireṇādhigacchati ||

Mahābhā. / Bhīṣma. / 28 / 30

Method to gain peace

श्रद्धावान् और जितेन्द्रिय व्यक्ति ही आध्यात्मिक ज्ञान को प्राप्त कर सकता है। इस ज्ञान को प्राप्त कर के ही वह अतिशीघ्र परम शान्ति पा लेता है।

Only a devotee and controller of his senses can get spiritual knowledge. After obtaining this knowledge, he gets real bliss and peace very soon.

(1410)

श्रमक्लमपिपासोष्णशीतादीनां सहिष्णुता।
आरोग्यं चापि परमं, व्यायामादुपजायते॥

व्यायाम के लाभ सुश्रुत/चिकित्सास्थान/24/40

Śramaklamapipāsoṣṇaśītādīnāṁ sahiṣṇutā |
Ārogyaṁ cāpi paramaṁ, vyāyāmādupajāyate ||

Suśruta / Ci. / 24 / 40

Advantages of Physical exercise

थकान, प्यास, गर्मी और सर्दी आदि को सहने की क्षमता तथा पूर्ण स्वास्थ्य भी व्यायाम द्वारा प्राप्त हो जाते हैं।

Weariness, thirst, heat and cold can be tolerated by the person who takes physical exercise regularly. It is the exercise, which gives full health to one's body.

(1411)

श्रियममृतनिधानं नायकोऽप्योषधीनाम्,
अमृतमयशरीरः कान्तियुक्तोऽपि चन्द्रः।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भवति विगतरश्मिर्मण्डले प्राप्य भानोः,
परसदननिविष्टः को लघुत्वं न याति ॥

दूसरे के घर में जाने से हानि चाणक्यनीति/15/14

Śriyamamṛtanidhānaṁ nāyako'pyoṣadhīnām,
Amṛtamayaśarīraḥ kāntiyukto'pi candraḥ |
Bhavati vigataraśmirmaṇḍale prāpya bhānoḥ,
Parasadananiviṣṭaḥ ko laghutvaṁ na yāti ||

Cā. nīti / 15 / 14

Harm to go to other's house

शोभा से परिपूर्ण, अमृत का भण्डार, ओषधियों का नायक, अमृत से पूर्ण शरीर वाला और चमक-दमक से पूर्ण भी चन्द्रमा जब सूर्य के घेरे के पास पहुँचता है, तो उसकी किरणें समाप्त हो जाती हैं। भला ऐसा कौन व्यक्ति है, जो दूसरे के घर में जाकर लघुता को प्राप्त नहीं करता? अर्थात् दूसरे के यहाँ जाने से सभी का मान घट जाता है।

The moon which is full of beauty, the store of nectar, leader of herbs, having body full of nectar and brilliancy, when reaches the circumference of the sun, loses its rays. Who is such a person, who does not lose his respect after reaching the house of others? Really, all persons lose their respect, if they go to the house of others.

(1412)

श्रुतं प्रज्ञानुगं यस्य प्रज्ञा चैव श्रुतानुगा।
असम्भिन्नार्यमर्यादः पण्डिताख्यां लभेत सः ॥

ज्ञान और कर्म का सामंजस्य महाभा./उद्योग/33/29

Śrutaṁ prajñānugaṁ yasya, prajñā calva śrutānugā |
Asambhinnāryamaryādaḥ paṇḍitākhyāṁ labheta saḥ ||

Mahābhā. / Udyoga / 33 / 29

Co-operation of knowledge and practice

जिसका शास्त्रज्ञान बुद्धि के अनुकूल होता है, और बुद्धि सुने हुए शास्त्र के अनुकूल होती है तथा जो श्रेष्ठ पुरुषों की मर्यादा का उल्लंघन नहीं करता, वही 'पण्डित' कहलाने योग्य है।

The person whose knowledge is according to his intellect and intellect works according to his knowledge taken from holy books and who does not leave the path of the good persons is called 'Paṇḍit', the wisest man.

(1413)

श्रुतिस्मृत्युदितं धर्ममनुतिष्ठन् हि मानवः।
इह कीर्तिमवाप्नोति, प्रेत्य चानुत्तमं सुखम् ॥

धर्म पर चलने के लाभ मनु./2/9

Śrutismṛtyuditaṁ dharmamanutiṣṭhan hi mānavaḥ |
Iha kīrtimavāpnoti, pretya cānuttamaṁ sukham ||

Manu. / 2 / 9

Advantages to practise dharma

वेदों और धर्मशास्त्रों द्वारा बताए गये कर्तव्यों का पालन करता हुआ ही मनुष्य इस संसार में यश को और परलोक में अनुपम सुख को प्राप्त करता है।

The person who follows the duties advised by the Vedas and holy books, gets fame in this world and after

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

death in the next world enjoys incomparable happiness.

(1414)

श्रुत्वा धर्मं विजानाति, श्रुत्वा त्यजति दुर्मतिम्।
श्रुत्वा ज्ञानमवाप्नोति, श्रुत्वा मोक्षमवाप्नुयात्॥

सुनने के लाभ चाणक्यनीति/6/1

Śrutvā dharmaṁ vijānāti, śrutvā tyajati durmatim |
Śrutvā jñānamavāpnoti, śrutvā mokṣamavāpnuyāt ||

Advantages of hearing Cā. nīti / 6 / 1

मनुष्य सुनकर ही धर्म के तत्त्व को समझता है, सुनकर ही दुष्ट भावों का त्याग करता है, सुनकर ही ज्ञान को प्राप्त करता है। अतः सदुपदेशों को सुनकर ही मोक्ष को प्राप्त करें।

One knows the reality of religion by hearing, relinquishes bad ideas by hearing and gets knowledge by hearing. So a man should obtain salvation by hearing spiritual preachings.

(1415)

श्रुत्वा स्पृष्ट्वा च दृष्ट्वा च, भुक्त्वा घ्रात्वा च यो नरः।
न हृष्यति ग्लायति वा, स विज्ञेयो जितेन्द्रियः॥

जितेन्द्रिय कौन है मनु./2/98

Śrutvā spṛṣṭvā ca dṛṣṭvā ca, bhuktvā ghrātvā ca yo naraḥ |
Na hṛṣyati glāyati vā, sa vijñeyo jitendriyaḥ ||

Manu. / 2 / 98

Who is the winner of senses

जो व्यक्ति सुनकर, छूकर, देखकर, खाकर और सूँघकर न प्रसन्न होता है और न दुःखी, उसे ही जितेन्द्रिय समझना चाहिए।

The person who neither becomes happy nor unhappy after touching, looking, eating and smelling deserves to be called controller of senses.

(1416)

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्॥

धर्म का सार पञ्च./काकोलूकीय/100

Śrūyatāṁ dharmasarvasvaṁ, śrutvā caivāvadhāryatām |
Ātmanaḥ pratikūlāni pareṣāṁ na samācaret ||

Substance of Dharma Pañca. / Kāko. / 100

धर्म के सार को सुनो और निश्चय करो कि जो व्यवहार स्वयं को पसन्द नहीं है, वह दूसरों से न किया जाए।

Listen to the essence of religion and make up your mind that one should not behave with others in such a way which he does not like with himself.

(1417)

श्रेयांसि बहुविघ्नानि भवन्ति महतामपि।
अश्रेयसि प्रपन्ने तु क्वापि यान्ति विनायकाः॥

कल्याण के मार्ग में विघ्न सुभाषितावलि / 3427

Śreyāṁsi bahuvighnāni bhavanti mahatāmapi |
Āśreyasi prapanne tu kvāpi yānti vināyakāḥ ||

Subhāśitāvali / 3427

Obstacles in auspicious works

अच्छे कामों के करने में महान् व्यक्तियों को

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भी बहुत विघ्नों का सामना करना पड़ता है। जब कोई संकट आ जाता है, तो पथ-प्रदर्शक भी दृष्टि-गोचर नहीं होते।

Even the great men have to face many obstacles while doing good works. At the time of any adversity even the advisers are not seen there.

(1418)

श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मात् स्वनुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः॥

कर्त्तव्य-पालन में ही कल्याण गीता/3/35

Śreyān svadharmo viguṇaḥ paradharmāt svanuṣṭhitāt |
Svadharme nidhanaṁ śreyaḥ paradharmo bhayāvahaḥ ||

Performance of own duty is advantageous Gītā / 3 / 35

अच्छी तरह आचरण में लाये गये दूसरे के कार्य से गुणरहित भी अपना कार्य अत्युत्तम है। अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए मृत्यु भी हो जाए तो अच्छा है, क्योंकि दूसरे का कर्त्तव्य भयावह होता है, (क्योंकि उसे उसका अभ्यास नहीं होता)।

The duty of one's own is better than to carry on other's duty well, inspite of being devoid of merits. If one dies performing his own duty that is for his welfare, as other's duty is dreadful for the person who is not accustommed to do that.

(1419)

श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन,
दानेन पाणिर्न तु कङ्कणेन।
विभाति कायः करुणापराणाम्,
परोपकारैर्न तु चन्दनेन॥

श्रेष्ठ व्यक्तियों के आभूषण नीतिशतक/72

Śrotraṁ śrutenaiva na kuṇḍalena,
Dānena pāṇirna tu kaṅkaṇena |
Vibhāti kāyaḥ karuṇāparāṇām,
Paropakārairna tu candanena ||

Ornament of the great Nītiśataka / 72

श्रेष्ठ और दयालु व्यक्तियों के कान ज्ञान की बातों से शोभित होते हैं, कुण्डलों से नहीं। उनके हाथ की शोभा दान देने से होती है, कङ्गन धारण करने से नहीं। उनका शरीर परोपकार से शोभा पाता है, चन्दन के लेप से नहीं।

The ears of great and kind persons are decorated by hearing good things but not with ear-rings. Their hands are beautified by giving alms but not with bangles. Their body is decorated by the help given to others but not with powder of sandalwood.

(1420)

श्लाघ्यः स एको भुवि मानवानां,
स उत्तमः सत्पुरुषः स धन्यः।
यस्यार्थिनो वा शरणागता वा,
नाशाभिभङ्गाद्विमुखाः प्रयान्ति॥

प्रशंसनीय जीवन हितोपदेश/मित्रलाभ/190

Ślāghyaḥ sa eko bhuvi mānavānāṁ,
Sa uttamaḥ satpuruṣaḥ sa dhanyaḥ |
Yasyārthino vā śaraṇāgatā vā,
Nāśābhibhaṅgādvimukhāḥ prayānti ||

Admirable life Hitopa. / Mitrabhe. / 190

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वह उत्तम पुरुष श्रेष्ठ और धन्य है और संसार में मनुष्यों में वही एकमात्र प्रशंसनीय है, जिसके पास से माँगने वाले अथवा शरण में आए हुए लोग निराश होकर उल्टे पाँव नहीं चले जाते।

He is the best, the highest and adorable man in this world among human beings, from whom the beggars or the persons wanting shelters don't go back disappointed.

(1421)

श्लिष्टा क्रिया कस्यचिदात्मसंस्था,
सङ्क्रान्तिरन्यस्य विशेषयुक्ता।
यस्योभयं साधु स शिक्षकाणाम्,
धुरि प्रतिष्ठापयितव्य एव॥

प्रशंसनीय शिक्षक मालविकाग्निमित्र/1/16

Ślisṭā kriya kasyacidātmasaṁsthā,
Saṅkrāntiranyasya viśeṣayuktā |
Yasyobhayaṁ sādhu sa śikṣakāṇām,
Dhuri pratiṣṭhāpayitavya eva ||

Admirable teacher Mālavikāgni. / 1 / 16

किसी की ज्ञानपूर्ण क्रिया अपने तक ही सीमित रहती है और किसी दूसरे की क्रिया अपने ज्ञान को दूसरे तक पहुँचाने में समर्थ होती है। जो कला का पर्याप्त ज्ञान भी रखता है और उसे दूसरों तक पहुँचा भी सकता है, वही शिक्षकों के ऊँचे पद पर स्थापित करने के योग्य होता है।

Some kind of people have sufficient knowledge and can show that practically also which remains limited upto them. The other kind of people have less knowledge but they can transfer their knowledge to others.

The person who possesses sufficient knowledge and can transfer it to others is apt for the high post of teachers; he is the best teacher.

(1422)

श्लोकेन वा तदर्धेन तदर्धादक्षरेण वा।
अवन्ध्यं दिवसं कुर्यात् दानाध्ययनकर्मभिः॥

दिन की सफलता के साधन चाणक्यनीति/2/13

Ślokena vā tadardhena tadardhādakṣareṇa vā |
Avandhyaṁ divasaṁ kuryāt dānādhyayana-karmabhiḥ ||

Cā. nīti / 2 / 13

Means to make the day useful

मनुष्य को चाहिए कि प्रतिदिन एक नये श्लोक, अथवा आधे अथवा चौथाई अथवा कम से कम एक अक्षर का स्वाध्याय करे तथा दान और अध्ययन आदि के कार्यों से दिन को सफल बनाए। तात्पर्य यह है कि मनुष्य को प्रतिदिन कुछ-न-कुछ स्वाध्याय और 'दान अवश्य करना चाहिए।

A man should study a new verse daily or its half or one fourth or one Akṣara and then by giving alms and doing study etc. should make his day useful. It means that a man should study and give alms at least upto lowest quantity to make the day useful.

(1423)

श्वःकार्यमद्य कुर्वीत पूर्वाह्णे चापराह्णिकम्।
न हि प्रतीक्षते मृत्युः कृतमस्य न वा कृतम्॥

समय को मत चूको महाभा./शान्ति/175/15

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Śvaḥkāryamadya kurvīta pūrvāhṇe cāparāhṇikam |
Na hi pratīkṣate mṛtyuḥ kṛtamasya na vā kṛtam ||

Mahābhā. / Śānti / 175 / 15

Don't avoid due time

मनुष्य को चाहिए कि वह कल का कार्य आज और दोपहर के बाद का कार्य दिन के पहले पहर में ही कर ले। मृत्यु इस बात की प्रतीक्षा नहीं करती कि अमुक् व्यक्ति ने अपना कार्य पूरा किया है या नहीं।

One should do his next day's work today and the work of afternoon just before noon. The death never waits whether the work has been done or not.

ष = Ṣa

(1424)

षट्कर्णो भिद्यते मन्त्रश्चतुष्कर्णः स्थिरो भवेत्।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन षट्कर्णं वर्जयेत्सुधीः ॥

रहस्य की रक्षा पञ्च./मित्रभेद/104

Ṣaṭkarṇo bhidyate mantraścatuṣkarṇaḥ sthiro bhavet |
Tasmāt sarvaprayatnena ṣaṭkarṇaṁ varjayet sudhīḥ ||

To save secret Pañca. / Mitrabhe. / 104

छः कानों में अर्थात् तीन व्यक्तियों में पहुँची हुई रहस्य की बात सबमें फैल जाती है और चार कानों अर्थात् दो व्यक्तियों में कही हुई वहीं बात गुप्त रहती है। अतः बुद्धिमान् को चाहिए कि वह छः कानों में बात न पहुँचाए।

A secret said to three persons gets disclosed and it remains hidden if it is told only to two persons. Therefore a wise man never should tell any secret among three persons.

(1425)

षडिमानि विनश्यन्ति, मुहूर्त्तमनवेक्षणात्।
गावः सेवा कृषिर्भार्या, विद्या वृषलसङ्गतिः ॥

उपेक्षा से नाश महाभा./उद्योग/33/91

Ṣaḍimāni vinaśyanti, muhūrttamanavekṣaṇāt |
Gāvaḥ sevā kṛṣirbhāryā, vidyā vṛṣalasaṅgatiḥ ||

Mahābhā. / Udyoga / 33 / 91

Loss due to ignoring

निम्नलिखित छह वस्तुओं की कुछ देर भी उपेक्षा करने से ये नष्ट हो जाती हैं :- (1) गौएँ, (2) सेवा, (3) खेती, (4) पत्नी, (5) विद्या और (6) नीच व्यक्ति का साथ।

If these things are ignored even for a little time, they are spoiled or ended :- (1) cows, (2) service, (3) farming, (4) wife, (5) learning and (6) the company of a mean fellow.

(1426)

षडिमान् पुरुषो जह्यात्, भिन्नां नावमिवार्णवे।
अप्रवक्तारमाचार्यमनधीयानमृत्विजम् ॥
अरक्षितारं राजानं, भार्यां चाप्रियवादिनीम्।
ग्रामकामं च गोपालं, वनकामं च नापितम् ॥

त्याज्य — छह व्यक्ति महाभा./उद्योगपर्व/33/84-85

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Ṣaḍimān puruṣo jahyāt, bhinnāṁ nāvamivārṇave ।
Apravaktāramācāryamanadhīyānamṛtvijam ॥
Arakṣitāraṁ rājānaṁ, bhāryāṁ cāpriyavādinīm ।
Grāmakāmaṁ ca gopālaṁ, vanakāmaṁ ca nāpitam ॥

Mahābhā. / Udyoga. / 33 / 84-85

To be abandoned these six

जैसे टूटी नौका को समुद्र में ही छोड़ दिया जाता है, उसी प्रकार जो आचार्य अच्छा प्रवक्ता न हो, जो पुरोहित स्वाध्याय न करता हो, जो राजा रक्षा न करता हो, कठोर बोलने वाली पत्नी, गाँव में ही रहने की इच्छा करने वाले ग्वाले और वन में घूमने के इच्छुक नाई को छोड़ देना चाहिए।

As broken boat is left into the sea, in the same manner the following six persons should be deserted :- (1) the teacher who is not a good orator, (2) the priest who does not study, (3) the king who does not protect, (4) the wife who speaks bitterly, (5) the cowherd who wants to stay in the village and (6) the barber who wants to remain in the forest.

(1427)

षडेव तु गुणाः पुंसा, न हातव्याः कदाचन।
सत्यं दानमनालस्यमनसूया क्षमा धृतिः ॥

न छोड़ने योग्य गुण महाभा./उद्योगपर्व/33/86

Ṣaḍeva tu guṇaḥ puṁsā, na hātavyāḥ kadācana ।
Satyaṁ dānamanālasyamanasūyā kṣamā dhṛtiḥ ॥

Mahābhā. / Udyoga. / 33 / 86

Not abandonable qualities

मनुष्य को ये छः गुण कभी नहीं छोड़ने चाहिए :- (1) सत्यवादिता, (2) दान, (3) पुरुषार्थ, (4) दूसरे की वृद्धि में प्रसन्न रहना, (5) सहन-शीलता और (6) धैर्य।

A man should not abandon the following six qualities :- (1) truthfulness, (2) charity, (3) activity, (4) feeling of happiness on seeing other's prosperity, (5) tolerance and (6) patience.

स = Sa

(1428)

सं पूषन् विदुषा नय।
यो अञ्जसाऽनुशासति य एवेदमिति ब्रवत्॥

निर्भ्रम विद्वान् की चाह ऋ./6/54/1

Saṁ pūṣan viduṣā naya ।
Yo añjasā'nuśāsati, Ya evedamiti bravat ॥

Desire of doubtless teacher Ṛg. / 6 / 54 / 1

हे पुष्टिकारक ईश्वर या विद्वान्! जो वस्तु जैसी हो उसे उसी रूप में जो उपदेश करे, जो सत्य के अनुकूल ही शिक्षा दे अर्थात् यथार्थ रूप से बताए, उससे हमारा साक्षात्-रूप से सम्पर्क करा कर हमारी उन्नति कीजिए।

O promoter God or the head of the institution! Please, make our contact

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

with such a teacher who can explain the reality of things, so that there remains no doubt.

(1429)

संसारयति कृत्यानि सर्वत्र विचिकित्सते।
चिरं करोति क्षिप्रार्थे, स मूढो भरतर्षभ॥

मूढ़ में अवगुण महाभा./उद्योग/33/34

Saṁsārayati kṛtyāni, sarvatra vicikitsate।
Ciraṁ karoti kṣiprārthe, sa mūḍho Bharatarṣabha॥

Mahābhā. / Udyoga / 33 / 34

Demerits in a fool

हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ धृतराष्ट्र! जो व्यक्ति कार्यों को बिखेर डालता है, प्रत्येक कार्य को संदेह की दृष्टि से देखता है और शीघ्र करने योग्य कार्यों को करने में देर लगा देता है, वह मूढ़ (मन्दमति) कहलाता है।

O, the best of Bharata dynesty (Dhṛtarāṣṭra), the person who uselessly spreads his work, remains doubtful in all works and gets late in doing the work which should be done soon, is called dull minded.

(1430)

संसार-विषवृक्षस्य द्वे एव रसवत्फले।
काव्यामृतरसास्वादः सङ्गमः सुजनैः सह॥

दो अमृतमय फल हितोपदेश/1/146

Saṁsāra-viṣavṛkṣasya dve eva rasavatphale।
Kāvyāmṛtarasāsvādaḥ, saṅgamaḥ sujanaiḥ saha॥

Two nectarlike fruits Hitopa. / 1 / 146

संसार रूपी विषवृक्ष के केवल दो ही सरस फल हैं – (1) काव्य के अमृत रूपी रस का आस्वादन और (2) सत्सङ्गति करना।

There are only two delicious fruits of the world which is a poisonous tree; (1) the taste of a literary books, which is like the juice of nectar and (2) the company of good persons.

(1431)

सकृज्जल्पन्ति राजानः सकृज्जल्पन्ति पण्डिताः।
सकृत्कन्याः प्रदीयन्ते त्रीण्येतानि सकृत् सकृत्॥

एक बार के कार्य स्कन्दपुराण मा. को./8/61/3

Sakṛjjalpanti rājānaḥ, sakṛjjalpanti paṇḍitāḥ।
Sakṛtkanyāḥ pradīyante, triṇyetāni sakṛt sakṛt॥

Skandapu. Mā. Ko. / 8 / 61 / 3

Works to be done once

राजा एक ही बार बोलते हैं, पण्डित भी एक ही बार बोलते हैं और कन्याएँ भी एक ही बार दी जाती हैं। ये तीन चीजें केवल एक-एक बार ही होती हैं।

The kings speak but once, so do the learned people and girls also are given away but once. All these three happen but once.

(1432)

सकृत् सतां संगतं लिप्सितव्यम्,
ततः परं भविता भव्यमेव।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नातिक्रमेत् सत्पुरुषेण संगतम्,
तस्मात् सतां संगतं लिप्सितव्यम्॥

सज्जनों की संगति का लाभ अज्ञात

Sakṛt satāṁ saṅgataṁ lipsitavyam,
Tataḥ paraṁ bhavitā bhavyameva।
Nātikramet satpuruṣeṇa saṅgatam,
Tasmāt satāṁ saṅgataṁ lipsitavyam॥

Unknown

Advantage of good company

सज्जनों की मित्रता की कामना एक बार ही करनी पड़ती है। उसके बाद तो उत्तम लाभ ही प्राप्त होता रहता है। श्रेष्ठ लोगों की मित्रता कभी टूटा नहीं करती। अतएव सज्जनों की ही मित्रता की कामना करनी चाहिए।

The friendship of good persons is wished only once. After that one obtains best advantages. The friendship of good persons remains permanent. Therefore one must desire the friendship of good ones only.

(1433)

सकृदपि दृष्ट्वा पुरुषं प्राज्ञास्तुलयन्ति सारफल्गुत्वम्।
हस्ततुलयापि निपुणाः पलपरिमाणं विजानन्ति॥

बुद्धिमान् परीक्षक सुभाषितावलि / 240

Sakṛdapi dṛṣṭvā puruṣaṁ prājñāstulayanti sāraphalgutvam।
Hastatulayāpi nipuṇāḥ palaparimāṇaṁ vijānanti॥

Wise examiners Subhāśitāvali / 240

बुद्धिमान् पुरुष किसी व्यक्ति को एक बार ही देख कर उसके सारासार की विवेचना या परख कर लेते हैं। चतुर मनुष्य हाथ के अन्दाजे से ही किसी वस्तु की मात्रा को समझ लेते हैं।

Wise men determine the usefulness or uselessness of a person as they see him even for first time. The experts can say the weight of things even with their hands which work as balances.

(1434)

सकृद्दुष्टं च यो मित्रं पुनः सन्धातुमिच्छति।
स मृत्युमुपगृह्णाति, गर्भमश्वतरी यथा॥

शत्रु बने मित्र से सन्धि पञ्च./लब्धप्रणाश/12

Sakṛddusṭaṁ ca yo mitraṁ punaḥ sandhātumicchati।
Sa mṛtyumupagṛhṇāti, garbhamaśvatarī yathā॥

Pañca. / Labdha. / 12

Treaty with an enemy

एक बार बिगड़े हुए मित्र से जो फिर मित्रता करना चाहता है, उसकी मृत्यु उसी प्रकार हो जाती है, जैसे खच्चर गर्भ को धारण करके मर जाती है। (खच्चर संकर से पैदा होती है और गर्भ-योग्य नहीं रहती)।

A man who wishes to make again the person his friend, whose friendship has been ended, he invites death for himself, as a female mule dies due to its pregnancy.

(1435)

सखा गरीयान् शत्रुश्च कृत्रिमस्तौ हि कार्यतः।
स्यातामभित्रे मित्रे च सहजप्राकृतावपि॥

अच्छे और बुरे मित्र शिशुपालवध/2/36

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Sakhā garīyān śatruśca kṛtrimastau hi kāryataḥ ।
Syātāmamitre mitre ca sahajaprākṛtāvapi ॥

Good and bad friends Śiśupāla. / 2 / 36

उपकार तथा अपकार से बने हुए नकली मित्र और शत्रु, उन मित्रों और शत्रुओं से अच्छे होते हैं जो सम्बन्धजन्य या प्राकृतिक होते हैं। भाव यह है कि कृत्रिम मित्र तो मित्र ही है, परन्तु सम्बन्ध-जन्य मित्र शत्रु बन सकता है, ऐसे ही कृत्रिम शत्रु शत्रु ही रहता है, परन्तु सम्बन्धजन्य शत्रु मित्र भी बन सकता है।

The artificial friends and enemies who come into existence due to some favour and harm respectively, are better than those who are natural or relative. The sense is that a person who becomes a friend due to some favour remains always as a friend, but a relative may become some time an enemy. In the same way the person who becomes an enemy due to some harm, remains enemy always, but a relative enemy may be friend again.

(1436)

सङ्क्षेपात्कथ्यते धर्मो, जनाः, किं विस्तरेण वः।
परोपकारः पुण्याय, पापाय परपीडनम्॥

धर्म का सार पञ्च./काकोलूकीय/99

Saṅkṣepāt kathyate dharmo, janāḥ, kiṁ vistareṇa vaḥ ।
Paropakāraḥ puṇyāya, pāpāya parapīḍanam ॥

Substance of dharma Pañca. / Kāko. / 99

हे लोगो! ध्यान से सुनो, संक्षेप में धर्म का लक्षण समझो, विस्तार से तुम्हें क्या मतलब है? दूसरों का भला करना ही धर्म है और दूसरों को दुःख देना ही पाप है।

Listen people, carefully. Understand briefly about morality and sin. There is no use of explaining it more. To help others is morality and to harm others is sin.

(1437)

सङ्गः सर्वात्मना त्याज्यः स चेत्त्यक्तुं न शक्यते।
स सद्भिः सह कर्त्तव्यः, सतां सङ्गो हि भेषजम्॥

सत्संगति का लाभ हितोपदेश/4/56

Saṅgaḥ sarvātmanā tyājyaḥ, sa cettyaktuṁ na śakyate ।
Sa sadbhiḥ saha karttavyaḥ, satāṁ saṅgo hi bheṣajam ॥

Hitopa. / 4 / 56

Advantage of good company

संग का सर्वथा परित्याग करना चाहिए, पर यदि वह छोड़ा नहीं जा सकता तो वह सज्जनों के साथ ही करना चाहिए, क्योंकि सज्जनों का संग ही दुःखों की औषध है।

Attachment should be given up by all means. If it cannot be given up, it should be made with good people only, The company of good is a medicine in troubles.

(1438)

संहतिः श्रेयसी पुंसां, स्वपक्षे च विशेषतः।
तुषैरपि परिभ्रष्टा न प्ररोहन्ति तण्डुलाः॥

संगठन का लाभ हितो. / मित्रलाभ / 26

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Saṁhgatiḥ śreyasī puṁsāṁ, svapakṣe ca viśeṣataḥ ।
Tuṣairapi paribhraṣṭā na prarohanti taṇḍulāḥ ॥

Hitopa. / Mitralābha. / 26

Advantage of unity

परस्पर मेल बढ़ाने में ही कल्याण है, विशेषत: अपने जैसे व्यक्तियों से। यदि धान के छिलके अलग कर दिये जाएँ तो चावल पैदा नहीं हो सकते। इसलिए तुच्छ साथियों का भी महत्त्व होता है।

Union is beneficial for men, especially with those which are of their standard. Rice seeds when separated from their chaff, do not grow. So, even unity of lower persons is useful.

(1439)

सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत।
अत्रा सखाय: सख्यानि जानते, भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधिवाचि ॥

आदर्श अध्यापक ऋग्./10/71/2

Saktumiva tita-unā punanto yatra dhīrā manasā vācamakrata ।
Atrā sakhāyaḥ sakhyāni jānate, bhadraiṣām lakṣmīrnihitādhivāci ॥

Ideal teachers Ṛg. / 10 / 71 / 2

जब गम्भीर विद्वान् मन से विचार करते हुए चलनी से छाने हुए सत्तुओं के समान वाणी के प्रत्येक शब्द को बोलते हैं, तब इस विषय में विद्या से प्रेम रखने वाले विद्वान् शब्द और अर्थ के स्थायी सम्बन्ध को जान लेते हैं। इस प्रकार एक-एक शब्द को स्पष्ट करने वाले विद्वानों की वाणी में कल्याणमयी लक्ष्मी-रूपी विद्या स्थित होती है।

As a meal of parched grain is cleaned particle by particle, in the same way the scholars think every word carefully with their mind and then speak them with their tongue. Such persons who love education and utter every word carefully, know the relation between the words and their meanings. In this way the scholars who possess the wealth of education in their tongue are very useful for the pupils.

(1440)

सज्जना एव साधूनां प्रथयन्ति गुणोत्करम्।
पुष्पाणां सौरभं प्रायस्तन्वते दिक्षु मारुता: ॥

सज्जनों द्वारा गुणों का प्रसारण सुभाषितावलि / 287

Sajjanā eva sādhūnāṁ prathayanti guṇotkaram ।
Puṣpāṇāṁ saurabhaṁ prāyastanvate dikṣu mārutāḥ ॥

Subhāśitāvali / 287

Propagation of good qualities

सज्जन लोग ही श्रेष्ठ व्यक्तियों के गुण-समूह को विख्यात करते हैं। पुष्पों की सुगन्ध का चारों ओर प्रसार प्राय: हवाएँ ही किया करती हैं।

It is the good people who make famous the merits of the noble people. It is air, which spreads everywhere the fragrance of flowers.

(1441)

स जीवति गुणो यस्य, धर्मो यस्य स जीवति।
गुणधर्मविहीनो यो जीवनं तस्य निष्फलम् ॥

सफल और निष्फल जीवन चाणक्यराजनीतिशास्त्र/1/23

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Sa jīvati guṇo yasya, dharmo yasya sa jīvati |
Guṇa-dharmavihīno yo, jīvanaṁ tasya niṣphalam ||

Cā. Rājanīti. / 1 / 23

Successful and failed life

जीवन सफल उसी का है, जो गुणवान् और धार्मिक है। जो गुणहीन और धर्म-विहीन है, उसका जीवन तो व्यर्थ है।

Only his life is succesful who earns merits and performs good deeds. The life of a person who has neither merits nor performs good deeds is useless.

(1442)

सत्काव्यभूषणा वाणी, रजनी चन्द्रभूषणा।
सुशीलभूषणा नारी, लक्ष्मीर्विनयभूषणा॥

विविध भूषण सुभाषितावलि / 3431

Satkāvyabhūṣaṇā vaṇī, rajanī candra-bhūṣaṇā |
Suśīlabhūṣaṇā nārī, lakṣmīrvinayabhūṣaṇā ||

Different ornaments Subhāśitāvali / 3431

वाणी की शोभा श्रेष्ठ कविताओं से होती है, रात की शोभा चाँद से होती है, नारी की शोभा सुशीलता से होती है और धन-दौलत की शोभा नम्रता से होती है।

Good poems beautify one's language, the moon beautifies the night, a lady gets beautification by good nature and the beauty of wealth is politeness.

(1443)

सत्यं न मे धनविनाशगताऽस्ति चिन्ता,
भाग्यक्रमेण हि धनानि पुनर्भवन्ति।
एतत्तु मां दहति नष्टधनश्रियो मे,
यत्सौहृदानि सुजने शिथिलीभवन्ति॥

निर्धनता से बड़ी हानि चारुदन्त/1/5

Satyaṁ na me dhanavināśagatāsti cintā,
Bhāgyakrameṇa hi dhanāni punarbhavanti |
Etattu māṁ dahati naṣṭadhanaśriyo me,
Yat sauhṛdāni sujane śithilībhavanti ||

Cārudutt / 1 / 5

Serious harm due to poverty

मैं सच कहता हूँ कि मुझे धन के नाश की कोई चिन्ता नहीं है। भाग्य के फेर से धन फिर मिल जाया करता है। मुझे विशेष दुःख इस बात का है कि मेरी धन-सम्पत्ति चले जाने पर सज्जन लोगों के प्रति मेरी मित्रता शिथिल होती जा रही है।

Truly, I am not worried with the loss of the wealth. Wealth may be earned again when the fortune is favourable. The thing which burns me is that due to my loss of wealth, my friendship with good people is deteriorating.

(1444)

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो,
ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य
पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु॥

पृथ्वी के लिए धारक गुण अथर्व./12/1/1

Satyaṁ bṛhadṛtamugraṁ dīkṣā tapo,
brahma yajñaḥ pṛthivīṁ dhārayanti |

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Sā no bhūtasya bhavyasya patnyu-
ruṁ lokaṁ pṛthivī naḥ kṛṇotu ॥

Athava. / 12 / 1 / 1

Qualities to protect the land

बढ़ा हुआ सत्य-ज्ञान और उग्र सत्य-व्यवहार, आत्म-निग्रह, ज्ञान, व्रत-पालन, देव-पूजा, संगठन और उदारता - ये गुण ही पृथ्वी अर्थात् राष्ट्र को धारण करते हैं। यह पृथ्वी ही बीते हुए और होने वाले कार्यों को पालने वाली है। यह पृथ्वी स्वतन्त्रता-पूर्वक हमारे विचरण के योग्य बने।

Promoted truth and its determined practice, self control, knowledge, obeying of rules and principles, respect of learned people, unity and generosity are the supporters of this earth or nation. This earth develops the work which have finished and also which are planned for future. May this earth be fit for our independent movement!

(1445)

सत्यं मनोरमाः कामाः सत्यं रम्या विभूतयः।
किन्तु मत्ताङ्गनापाङ्गभङ्गलोलं हि जीवितम् ॥

जीवन की नश्वरता सुभाषितावलि / 3266

Satyaṁ manoramāḥ kāmāḥ, satyaṁ ramyā vibhūtayaḥ |
Kintu mattāṅganāpāṅgabhaṅgalolaṁ hi jīvitam ॥

Unstability of life Subhāśitāvali / 3266

हमारी कामनाएँ बहुत सुन्दर हैं, धन-सम्पत्ति भी बहुत मनोरम हैं, यह तो सत्य है, किन्तु जीवन तो मदमाती युवतियों के कटाक्ष के समान चञ्चल है।

Our desires are very beautiful and wealths are attractive, but our life is as unsteady as the side glances of an intoxicated lady's are.

(1446)

सत्यं माता पिता ज्ञानं, धर्मो भ्राता दया सखा।
शान्तिः पत्नी क्षमा पुत्रः, षडेते मम बान्धवाः ॥

महात्माओं के सम्बन्धी नीतिशास्त्र/3

Satyaṁ mātā pitā jñānaṁ, dharmo bhrātā dayā sakhā |
Śānthi patnī kṣamā putraḥ, ṣadete mama bāndhavāḥ ॥

Relatives of spiritual people Nītiśāstra / 3

सत्य मेरी माता है, ज्ञान पिता है, धर्म भाई है, दया मित्र है, शान्ति पत्नी है और क्षमा पुत्र है - ये छः मेरे सम्बन्धी हैं।

Truth is my mother, knowledge is my father, Dharma is my brother, kindness is my friend, tranquility is my wife and forbearance is my son. In this way these six are my relatives.

(1447)

सत्यं स्वर्गस्य सोपानं पारावारस्य नौरिव।
न पावनतमं किञ्चित्सत्यादध्यगमं क्वचित् ॥

सत्य से श्रेष्ठ कुछ नहीं है अज्ञात

Satyaṁ svargasya sopānaṁ pārāvārasya nauriva |
Na pāvanatamaṁ kiñcit satyādadhyagamaṁ kvacit ॥

Nothing is better than the truth Unknown

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जैसे सागर पार करने के लिए जलयान या नौका आवश्यक होती है, उसी प्रकार सत्य स्वर्ग तक पहुँचने की सीढ़ी है। मैंने सत्य से अधिक पवित्र कोई भी वस्तु कहीं भी नहीं देखी।

Truth is a stair-case leading to heaven as a boat is for crossing the ocean. I did not know anything anywhere more sacred than truth.

(1448)

सत्यमस्तेयमक्रोधः शौचं धीर्धृतिर्दमः।
संयतेन्द्रियता विद्या धर्मः सर्व उदाहृतः॥

धर्म के अंग याज्ञवल्क्यस्मृति/3/4/66

Satyamasteyamakrodhaḥ śaucaṁ dhīrdhṛtirdamaḥ।
Saṁyatendriyatā vidyā dharmaḥ sarva udāhṛtaḥ॥

Yajña. smṛ. / 3 / 4 / 66

Constituents of Dharma

सत्याचरण, चोरी न करना, क्रोध न करना, पवित्रता, सोचकर कार्य करना, संकट में धैर्य रखना, मन का संयम, इन्द्रियों का संयम, ज्ञान-प्राप्ति - ये सभी मिलकर धर्म माने जाते हैं।

Practice of truth, keeping off theft, keeping off anger, cleanliness, thoughtfulness, control on the mind, control on the senses and getting education - all these are collectively called 'Dharma'.

(1449)

सत्यमेव जयते नानृतम्,
सत्येन पन्था विततो देवयानः।
येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामाः यत्र,
तत्सत्यस्य परमं निधानम्॥

सत्य का परम निधान—ईश्वर मुण्डकोपनिषद्/3/1/6

Satyameva jayate nānṛtam,
satyena panthā vitato devayānaḥ।
Yenākramantyṛṣayo hyāptakāmāḥ Yatra,
tat satyasya paramaṁ nidhānam॥

Muṇḍkopa. / 3 / 1 / 6

Supreme shelter of the truth – God

सत्य की ही विजय होती है, सत्य द्वारा ही मुक्ति तक फैला हुआ मार्ग सुलभ होता है और पूर्ण कामनाओं वाले ऋषि लोग सत्य द्वारा ही जिस तक पहुँचते हैं, वह परमेश्वर ही सत्य का सबसे उत्कृष्ट आश्रय है।

It is the truth, that ever wins. The path which leads to the salvation is obtained through the truth only and the saints whose all desires have been completed, reach upto God who is the supreme abode of the truth, with the help of the truth only.

(1450)

सत्याऽनृता च परुषा प्रियवादिनी च,
हिंस्रा दयालुरपि चार्थपरा वदान्या।
नित्यव्यया प्रचुर-नित्यधनागमा च,
वाराङ्गनेव नृपनीतिरनेकरूपा॥

राजनीति के अनेक रंग नीतिशतक/43

Satyānṛtā ca paruṣā priyavādinī ca,
Hiṁsrā dayālurapi cārthaparā vadānyā।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nityavyayā pracuranityadhanāgamā ca,
Vārāṅganeva nṛpanītiranekarūpā ॥

Many colours of politics Nītiśataka / 43

राजनीति वेश्या के समान विविध रूपों को धारण करती है। सच बोलना और झूठ भी बोलना, कठोर बोलना और मीठा भी बोलना, हिंसक बनना और दयालु भी हो जाना, धनेच्छु होना और उदार भी बन जाना, प्रतिदिन खर्च करते रहना और प्रतिदिन खूब धन भी प्राप्त करना – इस प्रकार इसके ये अनेक रूप हैं।

The politics is like a harlot which assumes different forms. It is truthful and yet false, it is harsh and yet sweet speaking, it is violent yet merciful, it is parsimonious yet liberal and it is incurring expenditure and yet realising large sums of money.

(1451)

सत्येन रक्ष्यते धर्मो विद्या योगेन रक्ष्यते।
मृजया रक्ष्यते रूपं कुलं वृत्तेन रक्ष्यते॥

रक्षा के साधन महाभारत/उद्योगपर्व/34/35

Satyena rakṣyate dharmo, vidyā yogena rakṣyate ।
Mṛjayā rakṣyate rūpaṁ, kulaṁ vṛttena rakṣyate ॥

Mahābhā. / Udyoga. / 34 / 35

Means to protect

धर्म की रक्षा सत्य से, विद्या की रक्षा अभ्यास से, रूप की रक्षा शुद्धि से और कुल की रक्षा चरित्र से होती है।

Virtue is preserved with truthfulness, learning with practice, beauty with cleanliness and the family is preserved with character.

(1452)

सत्सङ्गतेर्भवतिसाधुता खलानाम्,
साधूनां न खलसङ्गतेः खलत्वम्।
आमोदं कुसुमभवं मृदेव धत्ते,
मृद्गन्धं न हि कुसुमानि धारयन्ति॥

सत्संगति का प्रभाव चाणक्यनीति/12/7

Satsaṅgaterbhavati sādhutā khalānām,
Sadhūnāṁ na khalasaṅgateḥ khalatvam ।
Āmodaṁ kusumabhavaṁ mṛdeva dhatte,
Mṛdgandhaṁ na hi kusumāni dhārayanti ॥

Effect of good company Cā. nīti. / 12 / 7

सत्संगति से दुष्टों में श्रेष्ठ भाव आ जाते हैं, परन्तु कुसङ्गति का सज्जनों पर दुष्प्रभाव नहीं पड़ा करता। फूलों में उत्पन्न सुगन्ध को मिट्टी तो धारण कर लेती है, परन्तु फूल मिट्टी के गन्ध को धारण नहीं किया करते।

A company of good persons makes the bad persons good, but the bad company has no bad effect on good people. The fragrance of flowers is adopted by soil but the smell of soil doesn't have any effect on flowers.

(1453)

सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यं सनिं मेधामयासिषम् स्वाहा॥

ईश्वर के गुण यजु./32 /13

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Sadasaspatimadbhutaṁ priyamindrasya kāmyaṁ saniṁ medhāmayāsiṣam svāhā ।

Qualities of God Yaju. / 32 / 13

परमात्मा ही सकल संसार, हमारी सभाओं और हमारे शरीरों का स्वामी है। वह अनुपम है और आत्मा द्वारा कामना करने योग्य है। वह सभी को कर्मानुसार फल दे रहा है। मैं अपनी धारणावती बुद्धि और शुभ कर्मों के द्वारा उसकी ओर बढ़ रहा हूँ।

God is the master of the whole world and also our society and bodies. He is strange and loving. It is He Who is desirable by ourselves. He gives results to everybody according to one's works. I am reaching to Him with my intellect and good actions.

(1454)

सद्भावेन हरेन्मित्रं सम्भ्रमेण च बान्धवान्।
स्त्रीभृत्यान् प्रेमदानाभ्यां दाक्षिण्येनेतराञ्जनान्॥

आकर्षक विधियाँ कामन्दकीय नीतिसार/3 /33

Sadbhāvena harenmitraṁ, sambhrameṇa ca bāndhavān ।
Strībhṛtyān premadānābhyāṁ, dākṣiṇyenetarāñjanān ॥

Attractive methods Kāmandkiya. / 3 / 33

सद्भाव से मित्र को, आदर से बन्धुजनों को, प्रेम से स्त्री को, नौकर-चाकरों को कुछ ले-देकर और शालीनता से अन्य लोगों को वश में करना चाहिए।

One should win over a friend with goodwill, the kinsmen with due respect, the woman with love, attendants with gifts and the other people with generosity.

(1455)

सद्यः फलति गान्धर्वं मासमेकं पुराणकम्।
वेदा फलन्ति कालेषु ज्योतिर्वैद्यौ निरन्तरम्॥

लाभ-प्राप्ति के समय अज्ञात

Sadyaḥ phalati gāndharvaṁ, māsamekaṁ purāṇakam ।
Vedā phalanti kāleṣu, jyotirvaidyau nirantaram ॥

Times to achieve advantages Unknown

गायन तत्काल, पुराण एकमास में और वेद दीर्घ-काल में फलप्रद होते हैं; परन्तु ज्योतिष और वैद्य सभी समयों में लाभकर होते हैं।

Music is fruitful at once, the Puraṇas become fruitful in one month, the Vedas show their effect at due time and astrology and the doctors are always useful.

(1456)

सन्ततिर्नास्ति वन्ध्यायाः, कृपणस्य यशो न हि।
कातरस्य जयो नैव, मद्यपस्य न सद्गतिः॥

निन्दनीय व्यक्ति हिङ्गुलप्रकरण/21/3

Santatirnāsti vandhyāyāḥ, kṛpaṇasya yaśo na hi ।
Kātarasya jayo naiva, madyapasya na sadgatiḥ ॥

Condemnable persons Hiṅgula / 21 / 3

बाँझ की सन्तान नहीं होती, कंजूस को यश नहीं मिलता, कायर को विजय प्राप्त नहीं होती और शराबी की सद्गति नहीं होती।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

A barren women has no child, a miser gets no fame, a coward obtains no victory and a drunkard has no happy life.

(1457)

सन्तप्तायसि संस्थितस्य पयसो नामापि न ज्ञायते,
मुक्ताकारतया तदेव नलिनीपत्रस्थितं राजते।
स्वातौ सागरशुक्तिकुक्षिपतितं तन्मौक्तिकं जायते,
प्रायेणाधम-मध्यमोत्तमगुणः संवासतो जायते॥

संगति का प्रभाव पञ्च./मित्रभेद/194

Santaptāyasi saṁsthitasya payaso nāmāpi na jñāyate,
Muktākāratayā tadeva nalinīpatrasthitaṁ rājate।
Svātau sāgaraśuktikukṣipatitaṁ tanmauktikaṁ jāyate,
Prāyeṇādhama-madhyamottamaguṇaḥ saṁvāsato jāyate॥

Pañca. / Mitrabhe. / 194

Effect of the company

यदि पानी की बूँद तपे हुए लोहे पर पड़े तो उसका नामोनिशान भी मिट जाता है। वही बूँद यदि कमल के पत्ते पर हो तो मोती जैसी दिखाई देती है। स्वाति नक्षत्र के अवसर पर यदि मेघ की एक भी बूँद सीप के पेट में चली जाए, तो वह मोती ही बन जाती है। इस प्रकार प्रायः देखा जाता है कि नीच, मध्यम या उत्तम संगति के अनुसार ही बुरे, मध्यम तथा उत्तम गुणों का जन्म होता है।

If a drop of water falls upon a heated iron piece, it loses its existence. If the same drop comes on a leaf of a lotus, it looks like a pearl. If a drop of cloud goes into the belly of an oyster at the time of the star 'Svāti', it gets the form of a pearl. So it is often seen that bad, medium or good merits are produced according to the company one gets.

(1458)

सन्तानवाहीन्यपि मानुषाणां,
दुःखानि सम्बन्धिवियोगजानि।
दृष्टे जने प्रेयसि दुःसहानि,
स्रोतःसहस्रैरिव सम्प्लवन्ते॥

दुःखों की उग्रता का समय उत्तररामचरित / 4 / 8

Santānavāhīnyapi mānuṣāṇāṁ,
Duḥkhāni sambandhiviyogajāni।
Dṛṣṭe jane preyasi duḥsahāni,
Srotaḥsahasrairiva saṁplavante॥

Uttararāma. / 4 / 8

Time of bursting of pains

सम्बन्धीजन के विनाश से उत्पन्न निरन्तर बहते हुए भी मनुष्यों के दुःख किसी प्रिय व्यक्ति के सामने आ जाने पर दुःसह होकर मानो हजारों धाराओं में फूट कर बहने लगते हैं।

Sorrows of men produced from the loss of a kinsman flow continuously, but whenever a dear person comes to sight, they become such intolerable as if they begin to flow in thousands of streams.

(1459)

सन्ति पुत्राः सुबहवो दरिद्राणामनिच्छताम्।
नास्ति पुत्रः समृद्धानां विचित्रं विधिचेष्टितम्॥

विधाता की विचित्र गति महाभारत शा.प./28/24

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Santi putrāḥ subahavo daridrāṇāmanicchatām |
Nāsti putraḥ samṛddhānāṁ, vicitraṁ vidhiceṣṭitam ||

Mahābhā. / Śānti. / 28 / 24

Strange system of fortune

गरीबों के न चाहते हुए भी अनेक पुत्र हो जाते हैं, परन्तु अमीरों के पुत्र प्रायः होते ही नहीं। दैव की लीला विचित्र है।

The poor, though having no desire, get many sons, but on the other hand the rich have no son generally. Strange is the course of destiny.

(1460)

सन्ति वै पुरुषाः शूराः, सन्ति कापुरुषास्तथा।
उभावेतौ दृढौ पक्षौ दृश्येते पुरुषान् प्रति॥

वीरों और कायरों की स्थिति महाभा./उद्योग/4/2

Santi vai puruṣāḥ śūrāḥ, santi kāpuruṣāstathā |
Ubhāvetau dṛḍhau pakṣau dṛśyete puruṣān prati ||

Mahābhā. / Udyoga / 4 / 2

Place of the brave and cowards

कुछ पुरुष बहादुर होते हैं और कुछ कायर। ये दोनों रूप सभी स्थानों पर पुरुषों में देखे जाते हैं।

There are some brave persons, while some are cowards. These two forms may be seen everywhere.

(1461)

सन्तोषामृततृप्तानां यत्सुखं शान्तचेतसाम्।
कुतस्तद्धनलुब्धानामितश्चेतश्च धावताम्॥

सन्तोष का महत्त्व पञ्च./मित्रसम्प्राप्ति/149

Santoṣāmṛtatṛptānāṁ, yatsukhaṁ śāntacetasām |
Kutastaddhanalubdhānāmitaścetaśca dhāvatām ||

Pañca. / Mitrasam. / 149

Greatness of contentment

सन्तोष-रूपी अमृत से सन्तुष्ट रहने वाले शान्तचित्त वालों को जो सुख प्राप्त होता है, वह सुख धन के लोभी इधर-उधर दौड़ने वाले लोगों को कैसे प्राप्त हो सकता है? अर्थात् वह सुख उन्हें नहीं मिल सकता।

The happiness which is obtained by such people who are calm-minded and remain contented with the nectar of contentment, can never be obtained by those people who run from one place to the other in the desire of money.

(1462)

समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः,
समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि।
सम्यञ्चोऽग्निं सपर्य -
तारा नाभिमिवाभितः॥

प्रेम के साधन अथर्व./3/30/6

Samanī prapā saha vo'nnabhāgaḥ,
samāne yoktre saha vo yunajmi |
Samyañco'gniṁ saparya-
tārā nābhimivābhitaḥ ||

Means to love Atharva. / 3 / 30 / 6

प्रभु मानवमात्र को उपदेश दे रहे हैं — "हे मनुष्यो! तुम्हारा जलपान आदि का स्थान और भोजन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आदि का स्वरूप भी समान होना चाहिए। मैं तुम्हें सवारी के एक जैसे साधन प्राप्त करने की प्रेरणा देता हूँ। तुम लोग संगठित होकर यज्ञ-हवन आदि द्वारा अग्नि का वैसे ही सेवन करो जैसे रथ-चक्र की नाभि के चारों ओर सभी अरे संगठित होकर स्थित होते हैं।''

God advises the men, "O dear human beings, your place of water drinking and also your food should be similar. I suggest you to have vehicles, similar. All of you be united to perform havana-yajña etc. and get advantages from fire in such a way as spokes remain united with the axle in a wheel.

(1463)

समानी व आकूतिः, समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो, यथा वः सुसहासति॥

संगठन का ढंग ऋ./10/191/4

Samānī va ākūtiḥ, samānā hṛdayāni vaḥ।
Samānamastu vo mano, yathā vaḥ susahāsati॥

Method to protect unity Ṛg./10/191/4

हे मनुष्यो! तुम्हारे सङ्कल्प एक-समान हों, तुम्हारे हृदय एक जैसे हों और मन द्वारा तुम्हारा मनन ऐसा हो कि तुम्हारा संगठन सदा सुस्थिर रहे।

O men! Your determinations should be similar, your hearts should work similarly and thinking of minds should be similar in such a way as your unity should always remain permanent.

(1464)

समाने शोभते प्रीतिः, राज्ञि सेवा च शोभते।
वाणिज्यं व्यवहारेषु, दिव्या स्त्री शोभते गृहे॥

शोभा के स्थल चाणक्यनीति/2/20

Samāne śobhate prītiḥ, rājñi sevā ca śobhate।
Vāṇijyaṁ vyavahāreṣu, divyā strī śobhate gṛhe॥

Places of beauty Cā. nīti./2/20

प्रेम समान व्यक्तियों में ही अच्छा लगता है, राजा की सेवा अच्छी होती है, लेन-देन में व्यापार अच्छा होता है और सुन्दर स्त्री घर की शोभा होती है।

Love is justified in equal persons. The king's (government's) service is good. In occupations business is the best and a beautiful lady beautifies the house.

(1465)

समानो मन्त्रः समितिः समानी,
समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानमन्त्रमभिमन्त्रये वः,
समानेन वो हविषा जुहोमि॥

संगठन के सूत्र ऋ./10/191/3

Samāno mantraḥ samitiḥ samānī,
samānaṁ manaḥ saha cittameṣām।
Samānamantramabhimantraye vaḥ,
Samānena vo haviṣā juhomi॥

Principles of unity Ṛg./10/191/3

हे मनुष्यो! तुम्हारा मनन-चिन्तन एक जैसा हो,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तुम्हारी समिति समान हो और तुम्हारा मन और चित्त भी एक जैसा हो। मैं तुम्हें समान मन्त्र-ज्ञान से मन्त्र-युक्त बनाता हूँ और एक समान देय पदार्थों से सम्पन्न करता हूँ।

O men! May your thoughts and considerations be similar! May your committee have equal opinion! May your thinking and recognition be similar! I make you possess equal secret knowledge and give you similar things to help to each other.

(1466)

समूलघातमघ्नन्तो परान्नोद्यन्ति मानिनः।
प्रध्वंसितान्धतमसस्तत्रोदाहरणं रविः॥

शत्रु का पूर्ण विनाश आवश्यक शिशुपालवध/2/33

Samūlaghātamaghnanto parānnodyanti māninaḥ।
Pradhvaṁsitāndhatamasastatrodāharaṇaṁ raviḥ॥

Śiśupāla / 2 / 33

To uproot the enemy positively

स्वाभिमानी लोग जब तक शत्रुओं का पूर्णतः उन्मूलन नहीं कर देते, वे विश्राम नहीं करते। अन्धकार को पूर्णतः नष्ट कर देने वाला सूर्य ही इसका प्रबल दृष्टान्त है।

Till the self-respectful persons don't uproot their enemies, they have no rest. The sun who destroys the darkness fully is its good example.

(1467)

सम्पत्सु महतां चेतो भवत्युत्पलकोमलम्।
आपत्सु च महाशैलशिलासंघातकर्कशम्॥

बड़ों में विचित्रता नीतिशतक/6

Sampatsu mahatāṁ cheto bhavatyutpalakomalam।
Āpatsu ca mahāśailaśilāsaṁghātakarkaśam॥

Peculiarity in the great Nītiśatak / 6

महान् पुरुषों का हृदय समृद्धि के समय तो कमल के समान कोमल होता है परन्तु वही आपत्तिकाल में महान् पर्वत के शिला-समूह के समान कठोर हो जाता है।

The mind of greatmen becomes as mild as a flower in the time of their prosperity, but during any adversity it becomes so hard as a multitude of rocks.

(1468)

सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता।
उदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तमये तथा॥

सुख-दुख में समानता पञ्च./मित्रसम्प्राप्ति/7

Sampattau ca vipattau ca mahatāmekarūpatā।
Udaye savitā rakto raktaścāstamaye tathā॥

Pañca. / Mitrasam. / 7

Equality in weal and woe

सम्पत्ति हो या विपत्ति, दोनों दशाओं में महान पुरुष एक जैसे ही दिखाई देते हैं; जैसे सूर्य उदय होते समय भी और डूबते समय भी लाल ही होता है।

During prosperity or adversity the greatmen remain undisturbed; as the sun when rises or when it sets is seen red in the both cases.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(1469)

सम्पदा सुस्थिरम्मन्यो भवति स्वल्पयाऽपि यः।
कृतकृत्यो विधिर्मन्ये न वर्धयति तस्य ताम्॥

हीन मनुष्य शिशुपालवध/2/32

Sampadā susthirammanyo bhavati svalpayā'pi yaḥ |
Kṛtakṛtyo vidhirmanye na vardhayati tasya tām ||

Low person Śiśupāla / 2 / 32

जो व्यक्ति थोड़ी सी भी धन-दौलत प्राप्त करके सन्तुष्ट हो जाता है, विधाता उसके इस चिन्तन से अपना कर्त्तव्य पूरा समझ लेता है (कि मैंने इसकी इच्छा पूरी कर दी है), अतः वह उसकी सम्पत्ति को और अधिक नहीं बढ़ाता।

A man who becomes satisfied after getting even very little wealth, the fate thinks its own duty completed and so it does not increase his wealth more.

(1470)

सम्पदि यस्य न हर्षो विपदि विषादो रणे च भीरुत्वम्।
तं भुवनत्रय-तिलकं जनयति जननी सुतं विरलम्॥

दुर्लभ व्यक्ति हितोपदेश/मित्रलाभ/33

Sampadi yasya na harṣo, vipadi viṣādo raṇe ca bhīrutvam |
Taṁ bhuvanatrayatilakaṁ janayati jananī sutaṁ viralam ||

Rare person Hitopa. / Mitralābha / 33

सम्पत्ति आने पर जिसे प्रसन्नता नहीं होती, विपत्ति के समय जो दुःखी नहीं होता और युद्ध के मैदान में जो डरता नहीं, तीनों लोकों में श्रेष्ठतम ऐसे किसी विरले पुत्र को ही माता जन्म देती है, अर्थात् ऐसे लोग बहुत कम होते हैं।

The son who neither feels happiness in prosperity, nor feels sadness in adversity and nor feels fear in the battle-field, is the best among the three worlds and is born rarely to any mother.

(1471)

सम्भोजनं सङ्कथनं सम्प्रश्नोऽथ समागमः।
ज्ञातिभिः सह कार्याणि, न विरोधः कथञ्चन॥

सम्बन्धियों से सद्व्यवहार महाभा. / उद्योग. / 39 / 24

Sambhojanaṁ saṅkathanaṁ sampraśno'tha samāgamaḥ |
Jñātibhiḥ saha kāryāṇi na virodhaḥ kathañcana ||

Mahābhā. / Udyoga / 39 / 24

Behaviour with relatives

अपने सम्बन्धियों के साथ मिलकर भोजन, वार्त्तालाप, विचार-विमर्श और मेल-जोल करना चाहिए और उनसे विरोध कभी भी नहीं करना चाहिए।

One should have meals, consultation, dialogue and unity with his relatives but never have enmity against them.

(1472)

सभां वा न प्रवेष्टव्यम्, वक्तव्यं वा समञ्जसम्।
अब्रुवन् विब्रुवन् वापि, नरो भवति किल्विषी॥

सभासद् के कर्त्तव्य मनु./8/13

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Sabhāṁ vā na praveṣṭavyam, vaktavyaṁ vā samañjasam |
Abruvan vibruvan vāpi, naro bhavati kilviṣī ||

Manu. / 8 / 13

Duties of the member of an assembly

या तो सभा में प्रवेश नहीं करना चाहिए या यदि प्रवेश किया जाए, तो उचित सत्य ही बोलना चाहिए। सत्य न बोलने वाला अथवा असत्य बोलने वाला मनुष्य पाप का भागी होता है।

Either one should not assemble in the meeting or if he assembles, he must tell the justified truth. The person who does not speak or speaks lies becomes a sinner.

(1473)

सम्भ्रमः स्नेहमाख्याति वपुराख्याति भोजनम्।
आचारः कुलमाख्याति देशमाख्याति भाषणम्॥

संकेतों से गुणों का बोध नराभरण/52

Sambhramaḥ snehamākhyāti, vapurākhyāti bhojanam |
Ācāraḥ kulamākhyāti, deśamākhyāti bhāṣaṇam ||

Narābharaṇa / 52

Knowing of qualities by signs

सम्मान में व्याकुलता प्रेम को प्रकट करती है, शरीर भोजन के स्वरूप को बताता है, रहन-सहन का ढंग खानदान का बोधक होता है और बोलने का ढंग निवास-स्थान को बताता है।

The confusion in respect shows love, physique tells about one's food, the attitude and behaviour shows one's family and way of speaking expresses one's native place.

(1474)

सर्पः क्रूरः खलः क्रूरः, सर्पात्क्रूरतरः खलः।
मन्त्रौषधिवशः सर्पः, खलः केन निवार्यते॥

दुष्ट और साँप (चाणक्यशतक)

Sarpaḥ krūraḥ khalaḥ krūraḥ, sarpāt krūrataraḥ khalaḥ |
Mantrauṣadhivaśaḥ sarpaḥ, khalaḥ kena nivāryate ||

Bad man and a snake (Cāṇakyaśataka)

सर्प और दुष्ट व्यक्ति दोनों क्रूर हैं, परन्तु दुष्ट व्यक्ति सर्प से अधिक क्रूर है, क्योंकि सर्प मन्त्र और ओषधि से वश में आ जाता है, परन्तु दुष्ट का निवारण किससे करें? उसकी चिकित्सा का कोई साधन नहीं, अतः दुष्ट व्यक्ति साँप से भी बुरा है।

A snake and a bad person both are cruel, but the bad person is more cruel than a snake, because a snake can be controlled with magic and medicines but there is no remedy for a bad person. Therefore, a bad person is more harmful than a snake.

(1475)

सर्पाः पिबन्ति पवनं न च दुर्बलास्ते,
शुष्कैस्तृणैर्वनगजा बलिनो भवन्ति।
कन्दैः फलैर्मुनिवरा गमयन्ति कालम्,
सन्तोष एव पुरुषस्य परं निधानम्॥

सन्तोष ही सर्वश्रेष्ठ धन है पञ्च./मित्रसम्प्राप्ति/148

Sarpāḥ pibanti pavanaṁ na ca durbalāste,
Śuṣkaistṛnairvanagajā balino bhavanti |

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kandaiḥ phalairmunivarā gamayanti kālam,
Santoṣa eva puruṣasya paraṁ nidhānam ||

Pañca. / Mitrasam. / 148

Contentment is the best wealth

साँप भोजन के स्थान पर वायु ही पी लेते हैं परन्तु वे दुर्बल नहीं होते, जंगली हाथी सूखे तिनके खाकर ही बलशाली हो जाते हैं और मुनि लोग तो कन्दों और फलों से ही अपना निर्वाह कर लेते हैं। अतः सन्तोष ही मनुष्य का सबसे श्रेष्ठ खजाना है।

Serpents drink air in place of food but they do not become weak; forest-elephants become strong with dry straws; worthy ascetics pass their time by eating tuber roots and fruits. So contentment, indeed, is the ultimate resort of a person.

(1476)

सर्पाणाञ्च खलानाञ्च परद्रव्यापहारिणाम्।
अभिप्राया न सिध्यन्ति, तेनेदं वर्त्तते जगत्॥

संसार की स्थिति पञ्च./मित्रभेद/143

Sarpāṇāñca khalānāñca, paradravyāpahāriṇām |
Abhiprāyā na sidhyanti, tenedaṁ varttate jagat ||

Pañca. / Mitrabhe. / 143

The existence of the world

क्योंकि साँपों, दुष्टों और दूसरों के धन छीनने वालों की कामनाएँ पूर्ण नहीं हो पातीं, इसीलिए यह संसार अभी तक बचा हुआ है।

As the desires of snakes, bad persons and the persons who plunder other's money are never fulfilled, so the world is still existing upto this time.

(1477)

सर्वक्षयो यत्र कृत्स्नः,
पापोदयो निरयोऽभावसंस्थः।
कस्तत् कुर्याज्जातु कर्म प्रजानन्,
पराजयो यत्र समो जयश्च॥

न करने योग्य कार्य महाभा./उद्योग/25/7

Sarvakṣayo yatra kṛtsnaḥ,
Pāpodayo nirayo'bhāvasaṁsthaḥ |
Kastat kuryājjātu karma prajānan,
Parājayo yatra samo jayaśca ||

Works not to be done Mahābhā. / Udyoga / 25 / 7

जहाँ सम्पूर्णतः विनाश ही विनाश है, जिससे पाप की वृद्धि होती है और अभाव हो जाने से जो पूर्णतः नरक का द्वार है, ऐसा कार्य भला कौन व्यक्ति समझ-बूझ कर करेगा? उसमें तो हार और जीत दोनों ही समान रूप के हैं?

Who will do such a work knowingly in which there is complete destruction, which increases sin and is the door of hell due to devastation? Really, nobody will do such a work, because defeat and victory both are equal in that work.

(1478)

सर्वत्र बुद्धिः कथिता श्रेष्ठा ते भरतर्षभ।
अनागता तथोत्पन्ना दीर्घसूत्रा विनाशिनी॥

प्रशंसनीय तथा निन्दनीय बुद्धि महाभा./शान्तिप./138/1

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Sarvatra buddhiḥ kathitā śreṣṭhā te Bharatarṣabha ।
Anāgatā tathotpannā dīrghasūtrā vināśinī ॥

Mahābhā / Śānti / 138 / 1

Admirable and condemnable intellects

हे भरतकुल के श्रेष्ठ व्यक्ति (धृतराष्ट्र), तुम्हें सर्वत्र श्रेष्ठ बुद्धि के विषय में बताया गया है कि भविष्य के संकट का पहले से ही प्रबन्ध कर लेने वाली अनागत बुद्धि और तत्काल सूझ बता देने वाली उत्पन्न बुद्धि श्रेष्ठ है, परन्तु काम को लटकाने वाली दीर्घसूत्रा बुद्धि नष्ट कर देती है।

O the respectful person of Bharata dynasty, I have told you about the best intellect in this way that the intellect which thinks the means to remove coming troubles and the intellect which knows the means to remove any adversity at once are good, but the intellect which puts the work in suspence becomes the source of destruction.

(1479)

सर्वथा सुकरं मित्रं, दुष्करं प्रतिपालनम्।
अनित्यत्वात्तु चित्तानां, प्रीतिरल्पेऽपि भिद्यते॥

मित्रता निभाना वा. रामा. / कि. का./32/7

Sarvathā sukaraṁ mitraṁ, duṣkaraṁ pratipālanam ।
Anityatvāttu cittānāṁ, prītiralpe'pi bhidyate ॥

Vā. Rā. / Kiṣkindhā / 32 / 7

To sustain friendship

मित्र बनाना तो बहुत आसान है पर निभाना कठिन है, क्योंकि चित्त की अस्थिरता के कारण जरा सी बात पर ही प्यार टूट जाता है।

It is very easy to make friends but it is difficult to maintain it, as the mind being unsteady love gets snapped even on small grounds.

(1480)

सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्द्धं त्यजति पण्डितः।
अर्द्धेन कुरुते कार्यं, सर्वनाशो हि दुस्तरः॥

अर्धत्याग की नीति पञ्च./लब्धप्रणाश/25

Sarvanāśe samutpanne, arddhaṁ tyajati paṇḍitaḥ ।
Arddhena kurute kāryaṁ, sarvanāśo hi dustaraḥ ॥

Pañca. / Labdha. / 25

Policy to give up half

जब सब कुछ नष्ट होता दिखाई दे, तो आधा दे कर शेष बचा लेना चाहिए। समझदार व्यक्ति वही है, जो ऐसे समय में आधे से ही निर्वाह कर लेता है, क्योंकि सर्वनाश तो असहनीय हो जाता है।

When a wiseman feels that he is losing all he has, then it is advisable that he should save half of that by giving away half. Then he should take advantage from only that half, because the complete loss becomes intolerable.

(1481)

सर्वसाम्यमनायासं, सत्यवाक्यं च भारत।
निर्वेदश्चाविधित्सा च यस्य स्यात् स सुखी नरः॥

सुखी व्यक्ति के चिह्न महाभा./शान्ति./177/2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Sarvasāmyamanāyāsaṁ, satyavākyaṁ ca Bhārata |
Nirvedaścāvidhitsā ca yasya syāt sa sukhī naraḥ ||

Mahābhā. / Śānti. / 177 / 2

Signs of a happy person

हे युधिष्ठिर! जिस व्यक्ति का व्यवहार सबके प्रति समान है, जिसे कठोर परिश्रम नहीं करना पड़ता, जो सच बोलता है, जो विरक्त है और जिसमें नया कार्य करने की कामना नहीं है, वही सुखी है।

O Yudhiṣṭhira, a man who behaves equally with all, never faces hard work, speaks the truth, remains detached from the worldly affairs and who has no desire to do something new, is happy.

(1482)

सर्वस्तरतु दुर्गाणि सर्वो भद्राणि पश्यतु।
सर्वः कामानवाप्नोतु सर्वः सर्वत्र नन्दतु॥

सबके मंगल की कामना विक्रमोर्वशीय/5/39

Sarvastaratu durgāṇi, sarvo bhadrāṇi paśyatu |
Sarvaḥ kāmānavāpnotu, sarvaḥ sarvatra nandatu ||

Auspicious desire for all Vikramo. / 5 / 39

सब लोग कठिनाइयों को पार करें, सभी कल्याण ही कल्याण देखें, सभी की मनोकामना पूर्ण हो, और सभी हर परिस्थिति में आनन्दित रहें।

May all cross difficulties! May all enjoy welfare! May desires of all be completed! And may all enjoy happiness in all circumstances!

(1483)

सर्वासामेव शुद्धीनां मनःशुद्धिः प्रशस्यते।
अन्यथाऽऽलिङ्ग्यतेऽपत्यमन्यथाऽऽलिङ्ग्यते पतिः॥

श्रेष्ठतम पवित्रता पद्मपुराण/31/233

Sarvāsāmeva śuddhīnāṁ, manaḥśuddhiḥ praśasyate |
Anyathā'liṅgyate'patyamanyathā'liṅgyate patiḥ ||

Best purity Padmapu. / 31 / 233

सब प्रकार की शुद्धियों में मन की शुद्धि श्रेष्ठ है, क्योंकि सन्तान का अन्य प्रकार से आलिंगन किया जाता है और पति का अन्य प्रकार से।

Among all purities the purity of mind is the most praiseworthy, as embracing of the offspring differs from that of the husband inspite of the same action.

(1484)

सर्वेषां तु पदार्थानामभ्यासः कारणं परम्।
अनभ्यासेन मर्त्यस्य प्राप्तो योगोऽपि नश्यति॥

अभ्यास का महत्त्व (योगरसायन)

Sarveṣāṁ tu padārthānāmabhyāsaḥ kāraṇaṁ param |
Anabhyāsena martyasya prāpto yogo'pi naśyati ||

Importance of practice (Yogarasāyana)

प्रत्येक वस्तु की सिद्धि में अभ्यास ही मुख्य कारण होता है। बिना अभ्यास के मनुष्य की प्राप्त की हुई कार्य-कुशलता भी नष्ट हो जाती है।

Practice is the main source of success in every work. In the absence of

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

practice even the gained efficiency in any work is lost.

(1485)

सर्वेषामेव शौचानामर्थशौचं विशिष्यते।
योऽर्थे शुचिः स हि शुचिर्न मृद्भारैः शुचिः शुचिः॥

धन की पवित्रता चाणक्यराजनीतिशास्त्र / 6 / 40

Sarvesāmeva śaucānāmarthaśaucaṁ viśiṣyate |
Yo'rthe śuciḥ sa hi śucirna mṛdbhāraiḥ śuciḥ śuciḥ ||

Purity of finance Cā. Rāj. śāstra. / 6 / 40

सब स्वच्छताओं में से धन की पवित्रता ही सर्वश्रेष्ठ है। धन के रखने-रखाने में जो लोभ नहीं करता, वही वस्तुतः पवित्र है, मिट्टी के ढेर से सफाई करने मात्र से कोई पवित्र नहीं हो सकता।

Out of all kinds of purities the purity of money is the best one. The man who is pure in money-matters is really pure, but who makes purification only with a heap of earth, cannot be pure.

(1486)

सर्वो दण्डजितो लोको, दुर्लभो हि शुचिर्नरः।
दण्डस्य हि भयात्सर्वं, जगद् भोगाय कल्पते॥

दण्ड का प्रभाव मनुस्मृति/7/32

Sarvo daṇḍajito loko, durlabho hi śucirnaraḥ |
Daṇḍasya hi bhayāt sarvaṁ jagad bhogāya kalpate ||

Manu. / 7 / 32

Effect of the rod of punishment

सभी लोग दण्ड से वश में आते हैं। सर्वथा पाप-रहित साफ-सुथरा आदमी मिलना कठिन है। सारा संसार दण्ड के भय से ही उपभोग के योग्य बनता है।

All people remain under control through punishment. An upright having high character man is rare. It is through the fear of punishment that the world becomes fit for enjoyment.

(1487)

सर्वौषधीनाममृतं प्रधानम्,
सर्वेषु सौख्येष्वशनं प्रधानम्।
सर्वेन्द्रियाणां नयनं प्रधानम्,
सर्वेषु गात्रेषु शिरः प्रधानम्॥

प्रधान वस्तुएँ चाणक्यनीति/9/4

Sarvauṣadhīnāmamṛtaṁ pradhānam,
Sarveṣu saukhyeṣvaśanaṁ pradhānam |
Sarvendriyāṇāṁ nayanaṁ pradhānam,
Sarveṣu gātreṣu śiraḥ pradhānam ||

Supermost things Cā. nīti. / 9 / 4

सब दवाइयों में से अमृत ही मुख्य है, सभी सुख देने वाली वस्तुओं में भोजन ही मुख्य है, सभी इन्द्रियों में आँख ही मुख्य है और सभी अंगों में सिर ही मुख्य है।

Nectar is the best medicine, food is the best in all joy-producer things, eyes are the best of all senses and the head is the main organ of all organs.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(1488)

स स्निग्धोऽकुशलान्निवारयति यस्तत् कर्म यन्निर्मलं,
सा स्त्री याऽनुविधायिनी, स मतिमान् यः सद्भिरभ्यर्च्यते।
सा श्रीर्या न मदं करोति, स सुखी यस्तृष्णया मुच्यते,
तन्मित्रं यदकृत्रिमं, स पुरुषो यः खिद्यते नेन्द्रियैः॥

प्रशंसनीय वस्तुएँ हितोपदेश / II / 35

Sa snigdho'kuśalānnivārayati yastat karma yannirmalaṁ,
Sā strī yā'nuvidhāyinī, sa matimān yaḥ sadbhirabhyarcyate |
Sā śrīryā na madaṁ karoti, sa sukhī yastṛṣṇayā mucyate,
Tanmitraṁ yadakṛtrimaṁ, sa puruṣo yaḥ khidyate nendriyaiḥ ||

Admirable things Hitopa. / II / 35

प्रिय वही है जो संकट से रोकता है, कर्म वही है जो निष्पाप है, पत्नी वही है जो अनुकूल रहती है, बुद्धिमान् वही है जिसकी विद्वान् पूजा करते हैं, धन-दौलत वही है जो अभिमान पैदा नहीं करती, सुखी वही है जो लालसा से दूर रहता है, मित्र वही है जो स्वाभाविक रूप से हितचिन्तक है और पुरुष वही है जो इन्द्रियों का दास नहीं।

He is loving who removes our misfortune; real work is that which is sinless; real wife is that who is favourite; he is really wise who is honoured by learned people; real wealth is that which is not the source of arrogance; he is really happy who is off from desires; real friend is that who is naturally well-wisher and a real man is such a person who is not the slave of senses.

(1489)

स सुहृद् व्यसने यः स्यात्, स पुत्रो यस्तु भक्तिमान्।
स भृत्यो यो विधेयज्ञः, सा भार्या यत्र निर्वृतिः॥

प्रशंसनीय मित्र आदि पञ्च./मित्रभेद/289

Sa suhṛd vyasane yaḥ syāt, sa putro yastu bhaktimān |
Sa bhṛtyo yo vidheyajñaḥ, sā bhāryā yatra nirvṛtiḥ ||

Pañca. / Mitrabhe. / 289

Admirable friend etc.

मित्र वही है, जो संकट में साथ निभाता है। पुत्र वही है, जो माता-पिता का भक्त है। नौकर वस्तुतः वही है, जो आज्ञाकारी है और सच्चे अर्थों में पत्नी वही है, जो शान्ति प्रदान करती है।

The friend in need is a friend indeed. Real son is that who is a devotee of his parents. Real servant is he, who obeys his master. Real wife is that, who is the source of peace.

(1490)

स सुहृद् व्यसने यः स्यादन्यजात्युद्भवोऽपि सन्।
वृद्धौ सर्वोऽपि मित्रं स्यात्, सर्वेषामेव देहिनाम्॥

श्रेष्ठ मित्र पञ्च./मित्रभेद/288

Sa suhṛd vyasane yaḥ syādanyajātyudbhavo'pi san |
Vṛddhau sarvo'pi mitraṁ syāt, sarveṣāmeva dehinām ||

Best friend Pañca. / Mitrabhe. / 288

मित्र वही है, जो संकट में साथ निभाता है, भले ही वह दूसरी जाति में भी पैदा हुआ हो। उन्नति के समय तो सभी प्राणियों के सभी मित्र बन जाया करते हैं।

Real friend is that who is helpful

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

in adversity, inspite of born in any other caste. Every body becomes friend of all in the time of prosperity.

(1491)

सह नाववतु, सह नौ भुनक्तु, सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु, मा विद्विषावहै॥

गुरु-शिष्य के कर्त्तव्य तैत्तिरीयोपनिषद्/शिक्षावल्ली

Saha nāvavatu, saha nau bhunaktu, saha vīryaṁ karavāvahai।
Tejasvi nāvadhītamastu, mā vidviṣāvahai॥

Taittirīyopa. śikṣāvallī

Duties of teacher and taught

यह गुरु और शिष्य का कथन है कि हम दोनों की प्रभु एक साथ रक्षा करें, हम दोनों का खान-पान साथ-साथ हो, हम दोनों मिलकर शक्ति संचय करें, हमारा पठन-पाठन प्रभावशाली हो और हम परस्पर कभी द्वेष न करें।

This is the statement of the preacher and the preached both, "May God save both of us! May both of us enjoy food and drinks unitedly! May both of us earn strength unitedly! May the teaching and learning of both of us be effective! And may both of us never have enmity towards each other!.

(1492)

सहसा विदधीत न क्रिया-
मविवेकः परमापदां पदम्।
वृणते हि विमृश्यकारिणं,
गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः॥

सम्पत्तियों का आश्रय किरातार्जुनीय / 2 / 30

Sahasā vidadhīta na kriyā-
mavivekaḥ paramāpadāṁ padam।
Vṛṇate hi vimṛśyakāriṇaṁ,
Guṇalubdhāḥ svayameva sampadaḥ॥

Place of riches Kirātārjurnīya / 2 / 30

मनुष्य को बिना सोचे-समझे उतावलेपन में कार्य नहीं करना चाहिए, क्योंकि अविवेक सभी आपत्तियों का स्रोत है। जो लोग विचार-विमर्श पूर्वक कार्य करते हैं, धन-दौलत उनके गुणों से खींची हुई स्वयं उनके पास आ जाती हैं।

A man should not begin any work without full consideration, because want of discrimination is the source of all troubles. Those who do any work with full consideration, wealths come to them as if they are attracted by their qualities.

(1493)

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभिहर्यत, वत्सं जातमिवाघ्न्या॥

प्रेम से रहो अथर्व/3/30/1

Sahṛdayaṁ sāṁmanasyamavidveṣaṁ kṛṇomi vaḥ।
Anyo anyamabhiharyata, vatsaṁ jātamivāghnyā॥

Live with love Atharva. / 3 / 30 / 1

प्रभु उपदेश देते हैं — "हे मनुष्यो! मैं तुम्हें समान हृदय और समान विचारों वाला तथा परस्पर द्वेष से रहित बना रहा हूँ। तुम सब परस्पर इस प्रकार प्यार से रहो, जिस प्रकार गाय अपने नवजात बछड़े से प्यार करती है।"

God advises us, "O human beings!

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

I am suggesting you to have equal hearts, similar thoughtfulness and devoid of enmity. All of you should live in love in such a way as a cow loves its new born calf.

(1494)

साधुभ्यस्ते निवर्त्तन्ते पुत्राः मित्राणि बान्धवाः।
ये च तैः सह गन्तारस्तद्धर्मात् सुकृतं कुलम्॥

साधुओं की संगति का लाभ चाणक्यनीति/4/2

Sādhubhyaste nivarttante, putrāḥ mitrānl bāndhavāḥ |
Ye ca taiḥ saha gantārastaddharmāt sukṛtaṁ kulam ||

Cā. nīti. / 4 / 2

Advantage of good company

पुत्र, मित्र और सम्बन्धी जन श्रेष्ठ पुरुषों से दूर हो जाते हैं; परन्तु जो उनके साथ चलते हैं, उनके उस धर्म के कारण वंश शुभकर्मी हो जाता है।

Sons, friends and relatives leave the good persons generally, but those who follow them, due to their morality the family becomes ideal.

(1495)

साधुरेव प्रवीणः स्यात् सद्गुणामृतचर्वणे।
नवचूताङ्कुरास्वादकुशलः कोकिलः किल॥

सद्गुण प्रशंसक सुभाषितावलि / 288

Sādhureva pravīṇaḥ syāt, sadguṇāmṛtacarvaṇe |
Navacūtāṅkurāsvādakuśalaḥ, kokilaḥ kila ||

Admirer of virtues Subhāṣitāvali / 288

सद्गुण रूप अमृत का आनन्द लेने में प्रायः साधु पुरुष ही कुशल होते हैं। आम की अभिनव-मञ्जरियों का आनन्द लेने में कोकिल ही समर्थ होती है।

The nectar of good qualities are enjoyed only by good people. It is the cuckoo (kokila) bird which is able to enjoy new cluster of mango flowers.

(1496)

साधुसंगतरोर्जातं विवेककुसुमं शुभम्।
रक्षन्ति ये महात्मानो भाजनं ते फलश्रियः॥

परम आनन्द के पात्र सुभाषितावलि / 207

Sādhusaṅga-tarorjātaṁ viveka-kusumaṁ śubham |
Rakṣanti ye mahātmāno bhājanaṁ te phalaśriyaḥ ||

Subhāṣitāvali / 207

Deserving supreme bliss

जो महात्मा लोग श्रेष्ठ पुरुषों की संगति से उत्पन्न विवेक रूपी उत्तम फूल की रक्षा करते हैं, वे ही उससे उत्पन्न फल (परम आनन्द) के पात्र बनते हैं।

The great souls who protect the flower of discrimination produced by the company of good people, only those deserve to enjoy the fruit (superbliss) of that flower.

(1497)

साप्तपदीनं सख्यं भवेत् प्रकृत्या विशुद्धचित्तानाम्।
किमुतान्योऽन्यगुणकथा विश्रम्भनिबद्धभावानाम्॥

निश्छल व्यक्तियों की मित्रता हरिभट्ट

Sāptapadīnaṁ sakhyaṁ bhavet,
Prakṛtyā viśuddhacittānām |

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kimutānyo'nya-guṇakathā,
Viśrambhanibaddhabhāvānām ll

Haribhatta

Friendship of innocent persons

जबकि स्वभावतः निश्छल हृदय वालों की मित्रता केवल सात कदम साथ चलने पर ही हो जाती है, तो परस्पर गुणों की चर्चा के अनन्तर विश्वास-पूर्वक प्रेम में आबद्ध लोगों की मित्रता के विषय में तो कहना ही क्या है! अर्थात् वह तो और भी सुदृढ़ हो जाती है।

Those, who have naturally clean minds, unite into friendship by walking together only seven steps, then what to say about those persons who become united by explaining merits of each other and so have full trust in them-selves.

(1498)

सा भार्या या गृहे दक्षा सा भार्या या प्रियंवदा।
सा भार्या या पतिप्राणा सा भार्या या प्रजावती॥

आदर्श पत्नी चाणक्य-राजनीतिशास्त्र/1/28

Sā bhāryā yā gṛhe dakṣā, sā bhārya yā priyaṁvadā l
Sā bhāryā yā patiprāṇā, sā bhāryā yā prajāvatī ll

Ideal wife Cā. Rājnītiśā. / 1 / 28

पत्नी वही है जो गृह-कार्य में दक्ष हो, प्रियभाषिणी हो, पति-परायणा हो और सन्तति वाली हो।

A good wife is well-versed in domestic affairs, speaks sweetly, takes her husband as her life and possesses offsprings.

(1499)

सा भार्या या प्रियं ब्रूते, स पुत्रो यत्र निर्वृतिः।
तन्मित्रं यत्र विश्वासः, स देशो यत्र जीव्यते॥

प्रशंसनीय पत्नी आदि महाभा./शान्ति./139/96

Sā bhāryā yā priyaṁ brūte, sa putro yatra nirvṛtiḥ l
Tanmitraṁ yatra viśvāsaḥ, sa deśo yatra jīvyate ll

Admirable wife etc. Mahābhā. Śānti. / 139 / 96

पत्नी वही है, जो मीठा बोलती है। पुत्र वही है, जिससे शान्ति प्राप्त हो। मित्र वही है, जिस पर विश्वास किया जा सके और अपना देश वही है, जहाँ सुखपूर्वक जिया जा सके।

Real wife is that, who speaks sweet. Real son is that, who is source of peace. Real friend is that, who is trustworthy. And that is own country where one enjoys his life.

(1500)

सामवादाः सकोपस्य तस्य प्रत्युत दीपकाः।
प्रतप्तस्येव सहसा सर्पिषस्तोयबिन्दवः॥

क्रोधी पर शान्ति के वचन शिशुपालवध/2/55

Sāmavādāḥ sakopasya tasya pratyuta dīpakāḥ l
Prataptasyeva sahasā sarpiṣastoyabindavaḥ ll

Appeasing words upon an angry person. Śiśupāla / 2 / 55

जैसे तपे हुए घी पर पानी की बूँदें डालने से वह छिटकने लगता है, उसी प्रकार क्रोध से परिपूर्ण व्यक्ति को कही हुई शान्ति की बात उसके गुस्से को और बढ़ा देती है।

As the drops of water poured on

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

the heated ghee irritate it, in the same way appeasing words said to an angry person increase his anger more.

(1501)

सामादिदण्डपर्यन्तो नयः प्रोक्तः स्वयम्भुवा।
तेषां दण्डस्तु पापीयांस्तं पश्चाद् विनियोजयेत्॥

दण्डनीति का प्रयोग-काल पञ्च./मित्रभेद/328

Sāmādidaṇḍaparyanto nayaḥ proktaḥ svayambhuvā |
Teṣāṁ daṇḍastu pāpīyāṁstaṁ paścād vinlyojayet ||

Pañca. / Mitrabhe. / 328

The time of policy of punishment

ब्रह्मा ने राजनीति के चार भेद – साम, दान, भेद और दण्ड बताए हैं। उनमें से दण्ड सबसे बुरा है। अतः उसका प्रयोग सबके बाद करना चाहिए।

Brahmā stated four kinds of politics :- love, charity, division and punishment. The last is very bad; so it should be used finally.

(1502)

सायं प्रातर्मनुष्याणामशनं श्रुतिबोधितम्।
नान्तरा भोजनं कुर्यादग्निहोत्रसमो विधिः॥

भोजन करने की विधि भावप्रकाश/दिनचर्या/116

Sāyaṁ prātarmanuṣyāṇāmaśanaṁ śrutibodhitam |
Nāntarā bhojanaṁ kuryādagnihotrasamo vidhiḥ ||

Bhāvapr. / Dina / 116

Method to take meals

वेद द्वारा मनुष्यों को भोजन प्रातः तथा सायं इन दो कालों में करने को कहा गया है। इन दोनों कालों के मध्य में अतिरिक्त भोजन नहीं करना चाहिए। जैसे अग्निहोत्र दो समय ही किया जाता है, ऐसी ही विधि भोजन करने की भी है।

The Vedas have suggested taking of food only twice - in the morning and in the evening. Nothing should be eaten between these two times. This principle is like Agnihotra which is performed only twice a day.

(1503)

सारासारं बलं वीर्यमात्मनो द्विषतश्च यः।
जानन् विचरति प्राज्ञो न स याति पराभवम्॥

प्रशंसनीय राजनीतिज्ञ महाभा./शान्तिपर्व/113/13

Sārāsāraṁ balaṁ vīryamātmano dviṣataśca yaḥ |
Jānan vicarati prājño, na sa yāti parābhavam ||

Mahābhā. / Śānti. / 113 / 13

Admirable politician

अपनी तथा शत्रु की महत्ता या दुर्बलता एवं बल तथा बहादुरी को समझ कर जो बुद्धिमान् तदनुसार आचरण करता है, उसकी पराजय कभी नहीं होती।

The wiseman who after understanding the greatness and weakness as well as strength and bravery of his own and of the enemy, works accordingly, is never defeated.

(1504)

सारासारपरिच्छेत्ता स्वामी भृत्यस्य दुर्लभः।
यथोक्तकारी स्मृतिमान् प्रभोर्भृत्यश्च दुर्लभः॥

दुर्लभ स्वामी और भृत्य सुभाषितावलि / 2820

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Sārāsāraparicchettā svāmī bhṛtyasya durlabhaḥ ।
Yathoktakārī smṛtimān prabhorbhṛtyaśca durlabhaḥ ॥

Subhāṣitāvali / 2820

Rare master and a servant

सेवक के लिए अच्छे बुरे का पारखी स्वामी कठिनता से मिलता है, तथा स्वामी के लिए उसका ठीक-ठीक आदेश पालन करनेवाला और अच्छी स्मरण-शक्ति वाला सेवक भी मिलना कठिन हो जाता है।

For a servant, a master, the discriminator of good and bad is very rare and in the same way for an employer a servant well-obeying and having good memory is also rare.

(1505)

साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः,
साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः ।
तृणं न खादन्नपि जीवमान-
स्तद्भागधेयं परमं पशूनाम् ॥

पशु-सदृश मनुष्य नीतिशतक/11

Sahityasaṅgītakalāvihīnaḥ,
sākṣāt paśuḥ pucchaviṣānahīnaḥ ।
Tṛṇaṁ na khādannapi jīvamānaḥ,
tadbhāgadheyaṁ paramaṁ paśūnām ॥

A man like an animal Nītiśataka / 11

जो मनुष्य साहित्य, संगीत आदि कलाओं से अनभिज्ञ है, वह साक्षात् पशु है। अन्तर केवल इतना है कि उसके पूँछ और सींग नहीं हैं। मनुष्य रूपी पशु घास न खाने पर भी जीवित रहता है, यह पशुओं का बड़ा भाग्य है, अन्यथा यदि घास भी खाता होता, तो पशु क्या खाते?

A man who is ignorant of arts, literature and music etc. is just an animal, who has neither a tail nor horns. Such a person survives without eating grass, which is the good luck of animals.

(1506)

सिंहः शिशुरपि निपतति,
मदमलिनकपोलभित्तिषु गजेषु ।
प्रकृतिरियं सत्त्ववतां,
न खलु वयस्तेजसां हेतुः ॥

तेजस्वियों का गुण नीतिशतक/34

Siṁhaḥ śiśurapi nipatati,
Madamalinakapolabhittiṣu gajeṣu ।
Prakṛtiriyaṁ sattvavatāṁ,
na khalu vayastejasāṁ hetuḥ ॥

Quality of the glorious Nītiśataka / 34

शिशु-सिंह भी हाथियों के मद से मलिन हुए गण्ड-स्थलों पर आक्रमण कर बैठता है। साहसी व्यक्तियों में वीरता जन्म-सिद्ध ही होती है। तेजस्विता के लिए आयु का कोई महत्त्व नहीं होता।

Even a baby-lion attacks such elephants whose temples are covered with rut. Those who are adventurous are brave naturally. So the age is not any reason for one's glory.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(1507)

सिंहो व्याकरणस्य कर्तुरहरत्प्राणान् प्रियान् पाणिनेः,
मीमांसाकृतमुन्ममाथ सहसा हस्ती मुनिं जैमिनीम्।
छन्दोज्ञाननिधिं जघान मकरो वेलातटे पिङ्गलम्,
अज्ञानावृतचेतसामतिरुषां कोऽर्थस्तिरश्चां गुणैः॥

हिंसक विश्वसनीय नहीं पञ्च./मित्रसम्प्राप्ति/36

Siṁho vyākaraṇasya karturaharat prāṇāṇ priyān pāṇineḥ,
Mīmāṁsākṛtamunmamātha sahasā hastī muniṁ jaiminīm।
Chandojñānanidhiṁ jaghāna makaro velātaṭe piṅgalam,
Ajñānāvṛtacetasāmatiruṣāṁ ko'rthastiraścāṁ guṇaiḥ॥

Pañca. / Mitrasam. / 36

Beasts should not be trusted

व्याकरण की रचना करने वाले पाणिनि मुनि के प्रिय प्राणों को शेर ने हर लिया था। मीमांसाशास्त्र की रचना करने वाले जैमिनि मुनि को हाथी ने अचानक ही कुचल डाला था। छन्दःशास्त्र के ज्ञान के सागर पिंगल मुनि को समुद्र के तट पर मगरमच्छ ने मार डाला था। अतः अज्ञान से ढके हुए चित्त वाले और अति क्रोधी स्वभाव वाले प्राणियों के गुणों से क्या लाभ! वे तो अपनी प्रकृति के अनुसार ही आचरण करते हैं।

The best grammarian Paṇini was killed by a lion. Jaimini muni who was the author of Mīmāṁsā was trodden by an elephant. Pingala who was the store of the knowledge of metres was killed by a crocodile at the seashore. So the merits of the creatures whose minds are full of ignorance and who are naturally full of dreadful anger have no value.

(1508)

सिद्धमन्नं फलं पक्वं नारीं प्रथमयौवनाम्।
सुभाषितं च ताम्बूलं सद्यो गृह्णाति बुद्धिमान्॥

ग्राह्य वस्तुएँ नराभरण/120

Siddhamannaṁ phalaṁ pakvaṁ, nārīṁ prathamayauvanām।
Subhāṣitaṁ ca tāmbūlaṁ sadyo gṛhṇāti buddhimān॥

Things to be owned Narābharaṇa / 120

पका हुआ भोजन, पका फल, प्रथमयौवना नारी, सुभाषित और पान-पत्र को बुद्धिमान व्यक्ति तत्काल ग्रहण कर लेता है।

A wiseman accepts the following things immediately:- (1) prepared meals, (2) ripe fruits, (3) a lady having new youth, (4) a good saying and (5) a betel leaf.

(1509)

सुखं हि दुःखान्यनुभूय शोभते,
घनान्धकारेष्विव दीपदर्शनम्।
सुखात्तु यो याति नरो दरिद्रतां,
धृतः शरीरेण मृतः स जीवति॥

सुख-दुख का क्रम मृच्छकटिक/1/10

Sukhaṁ hi duḥkhānyanubhūya śobhate,
Ghanāndhakāreṣviva dīpadarśanam।
Sukhāttu yo yāti naro daridratāṁ,
Dhṛtaḥ śarīreṇa mṛtaḥ sa jīvati॥

Mṛcchaka. / 1 / 10

Routine of weal and woe

दुःख भोगने के बाद ही सुख अच्छा लगता है, जैसे घोर अन्धेरे में ही दीपक की शोभा होती

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है। जो व्यक्ति सुख भोगने के बाद गरीबी में पहुँचता है, वह शरीरधारी होने पर भी मृतक के समान ही जीवन व्यतीत करता है।

Happiness feels good after experiencing any trouble like the sight of a lamp in blinding darkness. But a person who turns poor after having been well-to-do, remains like a dead, though he possesses his body.

(1510)

सुखस्य दुःखस्य न कोऽपि दाता,
परो ददातीति कुबुद्धिरेषा।
अहं करोमीति वृथाभिमानः,
स्वकर्मसूत्रग्रथितो हि लोकः॥

कर्म के फल अध्यात्म रामा. / अयो. / 6 / 6

Sukhasya duḥkhasya na ko'pi dātā,
Paro dadātīti kubuddhireṣā |
Ahaṁ karomīti vṛthābhimānaḥ,
Svakarma-sūtragrathito hi lokaḥ ||

Adhyā. Rāmā. / Ayo. / 6 / 6

Result of own deeds

सुख और दुःख को देने वाला कोई नहीं है। दूसरा हमें सुख या दुःख देता है, यह विचार ठीक नहीं है। 'मैं करता हूँ' यह अभिमान भी व्यर्थ है। सभी लोग अपने-अपने किए कर्मों का ही भोग करते हैं।

There is nobody who gives happiness or trouble. It is an ill thinking that some body else gives these things. 'I do' this pride is also useless, because all people undergo what they have done before.

(1511)

सुखार्थाः सर्वभूतानां मताः सर्वाः प्रवृत्तयः।
सुखं च न विना धर्मात्, तस्माद्धर्मपरो भवेत्॥

सुख का साधन धर्म अज्ञात

Sukhārthāḥ sarvabhūtānāṁ matāḥ sarvāḥ pravṛttayaḥ |
Sukhaṁ ca na vinā dharmāt, tasmāddharmaparo bhavet ||

Unknown

Dharma is the source of happiness

सभी प्राणियों के सभी कार्यकलाप सुख-प्राप्ति के लिए ही माने जाते हैं। परन्तु धर्म के बिना सुख प्राप्त नहीं हो सकता। अतः धर्म का ही आचरण करना चाहिए।

All activities of all creatures are meant for getting happiness. But happiness cannot be achieved without good deeds. So one should do always good deeds (Dharma).

(1512)

सुखार्थिनः कुतो विद्या, कुतो विद्यार्थिनः सुखम्।
सुखार्थी वा त्यजेद् विद्यां, विद्यार्थी वा त्यजेत्सुखम्॥

विद्यार्थी का कर्त्तव्य महाभारत उद्योगप./40/5

Sukhārthinaḥ kuto vidyā, kuto vidyārthinaḥ sukham |
Sukhārthī vā tyajed vidyāṁ, vidyārthī vā tyajet sukham ||

Mahābhā. / Udyoga / 40 / 5

Duty of a student

सुख चाहने वाले को विद्या कहाँ? विद्या चाहने वाले को सुख कहाँ? यदि सुख की इच्छा हो तो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विद्या छोड़नी पड़ेगी, यदि विद्या की इच्छा हो तो सुख छोड़ना पड़ेगा।

One who desires comforts cannot get education, and the desirous of education cannot get comforts. Either the desirous of comforts should abandon education or the student leave the desire of comforts.

(1513)

सुजनो न कुप्यत्येव, कुप्यति विप्रियं न चिन्तयति।
अथ चिन्तयति न जल्पति, अथ जल्पति लज्जितो भवति॥

सज्जन के गुण गाथासप्तशती/3/50

Sujano na kupyatyeva, kupyati vipriyaṁ na cintayati |
Atha cintayati na jalpati, atha jalpati lajjito bhavati ||

Gāthāśapta. / 3 / 50

Qualities of a gentleman

सज्जन क्रोध नहीं करता। यदि क्रोध करता भी है तो कभी अनिष्ट का चिन्तन नहीं करता। यदि ऐसा चिन्तन करता भी है तो बोलता नहीं और यदि बोल देता है तो लज्जित हो जाता है।

A good man does not become angry. If ever he becomes angry, he would not think of causing any harm. Even if he thinks so, he would not talk about it. Even if he talks about it, he would feel ashamed.

(1514)

सुजनो न याति वैरं, परहितनिरतो विनाशकालेऽपि।
छेदेऽपि चन्दनतरुः, सुरभयति मुखं कुठारस्य॥

परोपकारी सज्जन सुभाषितावलि / 241

Sujano na yāti vairaṁ, parahitanirato vināśakāle'pi |
Chede'pi candanataruḥ, surabhayati mukhaṁ kuṭhārasya ||

Helpful good man Subhāṣitāvali / 241

परोपकार में सर्वदा संलग्न रहने वाला सज्जन व्यक्ति अपने विनाश के अवसर पर भी विनाश करने वाले से शत्रु-भाव नहीं रखता। चन्दन का वृक्ष छेदन करने वाले कुल्हाड़े का भी मुख सुगन्धित बना देता है।

The person who is always busy in helping others, never shows enmity even at the time of his death. If the sandal tree is cut, even then it makes the face of the axe fragrant.

(1515)

सुजीर्णमन्नं सुविचक्षणः सुतः,
सुशासिता स्त्री नृपतिः सुसेवितः।
सुचिन्त्य चोक्तं, सुविचार्य यत्कृतं,
सुदीर्घकालेऽपि न याति विक्रियाम्॥

लाभप्रद वस्तुएँ हितोपदेश1/8

Sujīrṇamannaṁ suvicakṣaṇaḥ sutaḥ,
Suśāsitā strī nṛpatiḥ susevitaḥ |
Sucintya coktaṁ, suvicārya yatkṛtaṁ,
Sudirghakāle'pi na yāti vikriyām ||

Admirable things Hitopa. / 1 / 8

भलीभाँति पचा हुआ अन्न, बहुत चतुर पुत्र, भली भाँति अनुशासित पत्नी, अच्छी सेवा किया हुआ राजा, बहुत चिन्तन करके किया हुआ भाषण और बहुत विचार करके किया हुआ कर्म दीर्घकाल व्यतीत होने पर भी हानिप्रद नहीं होते।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

The following things don't become harmful even after a long time: (1) well digested food, (2) a clever son, (3) a well controlled wife, (4) a well-served king, (5) any thing said after well thinking and (6) any work done after well planning.

(1516)

सुपात्रे दीप्तिकृद्विद्या, सुपात्रे दीप्तिकृत्कला।
सुपात्रे दीप्ति कृन्मैत्री, सुपात्रे दीप्तिकृद्धनम्॥

सुपात्र में दिए दान का लाभ हिंगुलप्रकरणम्/1/3

Supātre dīptikṛdvidyā, supātre dīptikṛtkalā |
Sapātre dīptikṛnmaitrī, supātre dīptikṛddhanam ||

Advantages of the thing given to deserving persons Hingulapra. / 1 / 3

सुपात्र को दी गई विद्या, सुपात्र को सिखाई गई कला, सुपात्र के साथ मैत्री तथा सुपात्र को दिया गया धन खूब चमकते हैं।

The following things transferred to deserving place or person shine with their beauty :- (1) education, (2) any art, (3) friendship and (4) money.

(1517)

सुपूरा स्यात् कुनदिका, सुपूरो मूषकाञ्जलिः।
सुसन्तुष्टः कापुरुषः, स्वल्पकेनापि तुष्यति॥

हीन व्यक्ति पञ्च./मित्रसम्प्राप्ति/135

Supūrā syāt kunadikā, supūro mūṣakāñjaliḥ |
Susantuṣṭaḥ kāpuruṣaḥ, svalpakenāpi tuṣyati ||

Low person Pañca. / Mitrasam. / 135

छोटी नदी थोड़े से ही जल से भर जाती है। चूहे की अञ्जलि भी थोड़े खाद्य से भर जाती है। इसी प्रकार छोटा व्यक्ति थोड़ा सा ही धनादि प्राप्त करके पूर्णतः सन्तुष्ट हो जाता है।

A stream gets quite full just by getting little water. The hand-cavity of a mouse becomes full with little grain. In the same way a lower class person becomes satisfied after getting the things even in small quantity.

(1518)

सुभाषितैः प्रीतिरनुन्नतिः श्रिया,
परार्थनिष्पत्तिपटीयसी क्रिया।
गुणेष्वतृप्तिर्गुणवत्सु चादरो-
निगूढमेतच्चरितं महात्मनाम्॥

महात्माओं के चरित्र हरिभट्ट

Subhaṣitaiḥ prītiranunnatiḥ śriyā,
Parārthaniṣpattipaṭīyasī kriyā |
Guṇeṣvatṛptirguṇavatsu cādaro,
Nigūḍhametaccaritaṁ mahātmanām ||

Qualities of the great Haribhaṭṭa

मधुर वचन से प्रेम, लक्ष्मी की प्राप्ति से गर्व का न होना, दूसरों का कार्य सिद्ध करने वाली क्रिया करना, गुणों से तृप्त न होना और गुणवानों का आदर करना – ये सब महात्माओं के चरित्र में छिपे हुए तत्त्व होते हैं।

The following things remain hidden in the characters of the great souls :- (1) love for proper good speech, (2) absence of arrogance in the condition of prosperity, (3) actions to help

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

others with dexterity, (4) desire of having more and more qualities and (5) respect for meritorious persons.

(1519)

सुभिक्षं कृषके नित्यं, नित्यं सुखमरोगिणि।
भार्या भर्तुः प्रिया यस्य, तस्य नित्योत्सवं गृहम्॥

सुख के साधन चाणक्यशतक / 90

Subhikṣaṁ kṛṣake nityaṁ, nityaṁ sukhamarogiṇi |
Bhāryā bhartuḥ priyā yasya, tasya nityotsavaṁ gṛham ||

Means of happiness Cānakyaśataka. / 90

जिस किसान के घर में सदा अन्न रहता है, जिस व्यक्ति को रोग नहीं सताता तथा जिसकी पत्नी प्यार-भरी है, उसके घर में प्रतिदिन खुशी का ही दिन होता है।

The farmer who has always sufficient corns, one who is never attacked by any disease, and one whose wife is full of love—he enjoys happy life daily, as if he is celebrating a festival.

(1520)

सुलभाः खलु संयुगे सहायाः,
विषयावाप्तसुखे धनार्जने वा।
पुरुषस्य तु दुर्लभाः सहायाः,
पतितस्यापदि धर्मसंभ्रमे वा॥

आपत्काल में सहायकों की दुर्लभता बुद्धचरित/5/76

Sulabhāḥ khalu saṁyuge sahāyāḥ,
Viṣayāvāptasukhe dhanārjane vā |
Puruṣasya tu durlabhāḥ sahāyāḥ,
Patitasyāpadi dharmasambhrame vā ||

Rare helper in adversity Buddhacarita / 5 / 76

मनुष्य को युद्ध में, विषय-जन्य सुख में, अथवा धनार्जन में सहायक आसानी से मिल सकते हैं पर आपद्-ग्रस्त होने पर या धर्म के विषय में संशय होने पर सहायक दुर्लभ होते हैं।

One can get helpers in a battle, in the sensual enjoyment and in earning of the money, but when a man is trapped by adversity or he is not clear about religious duties, then helpers are rare.

(1521)

सुलभाः पुरुषा राजन्, सततं प्रियवादिनः।
अप्रियस्य च पथ्यस्य, वक्ता श्रोता च दुर्लभः॥

दुर्लभ वक्ता और श्रोता वा. रामायण युद्धकाण्ड/16/22

Sulabhāḥ puruṣā rājan, satataṁ priyavādinaḥ |
Apriyasya ca pathyasya, vaktā śrotā ca durlabhaḥ ||

Vā.Rā. / Yuddha. / 16 / 22

Rare speakers and listners

हे राजन्! निरन्तर मीठी-मीठी बातें बोलने वाले लोग आसानी से मिल जाते हैं पर अप्रिय और हितकारी बात कहने वाला दुर्लभ है और वैसी बात सुनने वाला भी दुर्लभ है।

O king, the persons who speak sweetly always are easily available, but those who tell bitter but helpful things are rare and also those are rare who hear such things.

(1522)

सुवर्णपुष्पितां पृथ्वीं विचिन्वन्ति नरास्त्रयः।
शूरश्च कृतविद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम्॥

ऐश्वर्य के पात्र पञ्चतन्त्र/मित्रभेद/43

Suvarṇapuṣpitāṁ pṛthvīṁ vicinvanti narāstrayaḥ |
Śūraśca kṛtavidyaśca yaśca jānāti sevitum ||

Deserving wealth Pañca. / Mitrabhe. / 43

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुवर्ण के फूलों से भरपूर अर्थात् धन-सम्पत्ति से पूर्ण पृथ्वी को तीन प्रकार के लोग ही प्राप्त कर सकते हैं – (1) शूरवीर, (2) विद्वान् और (3) जो सेवा करना जानता है।

The earth full of golden flowers (full of wealth) can be occupied only by three kinds of persons :- (1) The brave, (2) the learned and (3) such persons who know how to serve others.

(1523)

सुश्रुतं न श्रुतं येन, किमन्यैर्बहुभिः श्रुतैः।
नालोकि चरकं येन, स वैद्यो वैद्यनिन्दितः॥

वैद्य की अयोग्यता क्षेमकुतूहल

Suśrutaṁ na śrutaṁ yena, kimanyairbahubhiḥ śrutaiḥ |
Nāloki Carakaṁ yena, sa vaidyo vaidyaninditaḥ ||

Unable vaidya Kṣemakutūhala

जिसने अच्छी तरह न सुश्रुत को सुना और न चरक का अवलोकन किया, उस वैद्य का अन्य अनेक ग्रन्थों के सुनने तथा अवलोकन करने का क्या लाभ है? इन ग्रन्थों को न पढ़ने वाला वैद्य तो निन्दनीय ही है।

One who has not studied Suśruta and Charaka thoroughly, all other studies are useless for that vaidya. Such vaidya is really blamable.

(1524)

सुहृदां हि धनं भुक्त्वा, कृत्वा प्रणयमीप्सितम्।
प्रतिकर्तुमशक्तस्य, जीवितान्मरणं वरम्॥

मरने योग्य व्यक्ति कवितामृत कूप / 67

Suhṛdāṁ hi dhanaṁ bhuktvā, kṛtvā praṇayamīpsitam |
Pratikartumaśaktasya, jīvitānmaraṇaṁ varam ||

Deserving death Kavitāmṛta kūpa / 67

मित्रों के धन को खा-पीकर और मनचाहा प्रेम प्राप्त कर के भी जो व्यक्ति उसका बदला चुकाने में असमर्थ है, उसके जीने से तो उसका मरना ही अच्छा है।

One who has got enjoyment from the money of his friends and got all kinds of love from them, if he is unable to get rid of that debt, his death is better than his life.

(1525)

सुहृदि निरन्तरचित्ते गुणवति भृत्येऽनुवर्तिनि कलत्रे।
स्वामिनि सौहृदयुक्ते निवेद्य दुःखं सुखी भवति॥

दुःख बताने योग्य व्यक्ति पञ्च./मित्रभेद/106

Suhṛdi nirantaracitte guṇavati bhṛtye'nuvartini kalatre |
Svāmini sauhṛdayukte nivedya duḥkhaṁ sukhībhavati ||

Persons deserving to disclose adversity Pañca. / Mitrabhe. / 106

अभेद रखने वाले मित्र को, गुणवान् नौकर को, पतिव्रता पत्नी को और सहानुभूतिमय स्वामी को अपना दुःख बताकर मनुष्य सुखी हो सकता है।

By telling his grievances to a intimate friend, to a meritorious servant, to a faithful wife and to a sympathetic master, a man can be happy.

(1526)

सुहृद्भिराप्तैरसकृद्विचारितम्,
स्वयञ्च बुद्ध्या प्रविचारिताश्रयम्।
करोति कार्यं खलु यः सः बुद्धिमान्,
स एव लक्ष्म्या यशसां च भाजनम्॥

लक्ष्मी और यश का पात्र पञ्च./काकोलूकीय/111

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Suhṛdbhirāptairasakṛdvicāritam,
Svayañca buddhyā pravicāritāśrayam ।
Karoti kāryaṁ khalu yaḥ saḥ buddhimān,
Sa eva lakṣmyā yaśasāṁ ca bhājanam ॥

Deserving wealth and fame Pañca. / Kako. / 111

जो व्यक्ति अनुभवी मित्रों द्वारा बारम्बार सोचे गये तथा अपनी बुद्धि से भी अच्छी प्रकार विचार किए गए कार्य को करता है, वही बुद्धिमान् है और वही धन-दौलत और कीर्ति का पात्र है।

The person who does a work after consultation with experienced friends and thinks deeply by own intellect, is a wiseman. It is he, who deserves wealth and fame also.

(1527)

सूर्यं प्रति रजः क्षिप्तं स्वचक्षुषि पतिष्यति।
गुरुं प्रति कृताऽवज्ञा सा तथा तस्य भाविनी ॥

बड़ों का तिरस्कार आभाणकशतक/43

Sūryaṁ prati rajaḥ kṣiptaṁ svacakṣuṣi patiṣyati ।
Gurum prati kṛtā'vajñā sā tathā tasya bhāvinī ॥

Insulting elders Abhāṇakaśataka / 43

सूर्य की ओर फेंकी गई धूल अपनी आँख में ही पड़ेगी। गुरु के प्रति की गई अवहेलना भी व्यक्ति के लिए ही अवहेलनाकारी बनेगी।

The dust thrown at the sun would fall in one's own eye. The insult shown to the Guru would also have the same effect on the pupil.

(1528)

सृष्टा मूत्रपुरीषार्थमाहाराय च केवलम्।
धर्महीनाः परार्थाय पुरुषाः पशवो यथा ॥

धर्महीन मानव पशुतुल्य पञ्च./काकोलूकीय/97

Sṛṣṭā mūtrapurīṣārthamāhārāya ca kevalam ।
Dharmahīnāḥ parārthāya puruṣāḥ paśavo yathā ॥

Immoral men like animals Pañca. / Kāko. / 97

जैसे पशुओं का कार्य मलमूत्र त्यागना और खाना-पीना मात्र है और वे दूसरों की गुलामी करते हैं, उसी प्रकार धर्महीन मनुष्यों का जीवन भी मलमूत्र त्यागने, खाने-पीने और दूसरों की गुलामी करने के लिए ही होता है।

As the animals lose their excrement and urine, consume food and work for others as slaves, in the same way the people whose life is devoid of morality, they only excrete, urinate consume food and work for others as slaves.

(1529)

सेवकः स्वामिनं द्वेष्टि कृपणं परुषाक्षरम्।
आत्मानं किं स न द्वेष्टि सेव्यासेव्यं न वेत्ति यः ॥

सेवा के योग्य पञ्च./मित्रभेद/48

Sevakaḥ svāminaṁ dveṣṭi kṛpaṇaṁ paruṣākṣaram ।
Ātmānaṁ kiṁ sa na dveṣṭi, sevyāsevyaṁ na vetti yaḥ ॥

Fit for service Pañca. / Mitrabhe. / 48

नौकर अपने ऐसे मालिक से द्वेष करता है, जो कंजूस है और कठोर बोलता है। क्या वह अपने आप से द्वेष नहीं करता, जो सेवा करने योग्य और न करने योग्य को नहीं पहचानता?

A servant hates such a master who is tight fisted and speaks harshly. Does he not hate himself, who cannot recognize a serviceable and not serviceable master?

(1530)

स्तिमितोन्नतसञ्चाराः, जनसन्तापहारिणः।
जायन्ते विरला लोके, जलदा इव सज्जनाः ॥

सज्जनों की दुर्लभता पञ्च./मित्रभेद/28

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Stimitonnatasañcārāḥ, janasantāpahāriṇaḥ ।
Jāyante viralā loke, jaladā iva sajjanāḥ ॥

Rarity of good persons Pañca. / Mitrabhe. / 28

जैसे जल से परिपूर्ण, आकाश में विचरने वाले, लोगों के ताप को नष्ट करने वाले बादल कम ही होते हैं, उसी प्रकार प्रेमार्द्र, उदारहृदय, जनता के कष्टों को नष्ट करने वाले सज्जन भी संसार में विरले ही होते हैं।

As the clouds which are full of water and remover of heat moving in the sky are very rare, in the same way, the good persons who have love for every body, generous and remover of troubles of the people are very rare.

(1531)

स्त्रियो रत्नान्यथो विद्या, धर्मः शौचं सुभाषितम्।
विविधानि च शिल्पानि, समादेयानि सर्वतः॥

ग्राह्य वस्तुएँ मनुस्मृति/2/240

Striyo ratnānyatho vidyā, dharmaḥ śaucaṁ subhāṣitam ।
Vividhāni ca śilpāni, samādeyāni sarvataḥ ॥

Things to be owned Manu. / 2 / 240

स्त्रियाँ, रत्न, विद्या, धर्म, स्वच्छता, सुभाषित तथा नाना शिल्पों को सब ओर से ग्रहण कर लेना चाहिए।

One should accept women, jewels, education, spiritual qualities, purity, good sayings and different kinds of arts from all sides.

(1532)

स्तोकादपि प्रदातव्यमदीनेनान्तरात्मना।
अहन्यहनि यत्किञ्चिदकार्पण्यं यदुच्यते॥

दान प्रतिदिन करना चाहिए भविष्यपुराण/1/2/163

Stokādapi pradātavyamadīnenāntarātmanā ।
Ahanyahani yat kiñcidakārpaṇyaṁ yaducyate ॥

Bhaviṣyapu. / 1 / 2 / 163

Give something daily

प्रतिदिन दैन्य-रहित मन से थोड़े से भी थोड़ा कुछ न कुछ देते रहना चाहिए। इसे ही अकार्पण्य अर्थात् उदारता कहा जाता है।

One should give daily something cheerfully. Even very little given in such a way is called generosity or absence of miserliness.

(1533)

स्तोकेनोन्नतिमायाति स्तोकेनायात्यधोगतिम्।
अहो सुसदृशी वृत्तिस्तुलाकोटेः खलस्य च॥

दुष्ट का चरित्र पञ्च. / मित्रभेद / 101

Stokenonnatimāyāti stokenāyātyadhogatim ।
Aho susadṛśī vṛttistulākoteḥ khalasya ca ॥

Pañca. / Mitrabhe. / 101

Character of a bad person

तराजू की डण्डी के एक पलड़े पर यदि भार कम हो जाए, तो वह उस ओर से ऊपर चढ़ जाती है, यदि कुछ अधिक भार पड़ जाए तो नीचे आ जाती है; इसी प्रकार नीच पुरुष थोड़ी-थोड़ी अनुकूल या प्रतिकूल बात से बनते या बिगड़ते रहते हैं; वे धैर्यशाली नहीं होते।

As the stick of the balances goes up or down with little or more weight, so is the case of bad persons. They may be happy on one thing and angry on the other one. They have no patience.

(1534)

स्थानेष्वेव नियोक्तव्या भृत्याश्चाभरणानि च।
न हि चूडामणिः पादे प्रभवामीति बध्यते॥

नियुक्ति का स्थान पञ्च./मित्रभेद/74

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Sthāneṣveva niyoktavyā bhṛtyāścābharaṇāni ca |
Na hi cūḍāmaniḥ pāde prabhavāmīti badhyate ||

Employ at deserving place Pañca. / Mitrabhe. / 74

नौकरों और आभूषणों को यथोचित स्थान पर ही लगाना चाहिए। कोई व्यक्ति अपने को समर्थ समझकर सिर का आभूषण पैरों से नहीं बाँधता।

Servants and ornaments should be applied at the right places, where they deserve. One, thinking himself able, never will tie the ornament of head with his foot.

(1535)

स्नानं नाम मनःप्रसादजननं दुःस्वप्न-विध्वंसनं,
शौचस्यायतनं मलापहरणं संवर्धनं तेजसः।
रूपद्योतकरं रिपुप्रमथनं कामाग्निसंदीपनं,
नारीणां च मनोहरं श्रमहरं स्नाने दशैते गुणाः॥

स्नान के लाभ सुभाषितावलि / 2988

Snānaṁ nāma manaḥprasādajananaṁ, duḥsvapnavidhvaṁsanaṁ,
Śaucasyāyatanaṁ malāpaharaṇaṁ saṁvardhanaṁ tejasaḥ |
Rūpādyotakaraṁ ripupramathanaṁ kāmāgnisandīpanaṁ,
Nārīṇāṁ ca manoharaṁ śramaharaṁ snāne daśaite guṇāḥ ||

Subhāśitāvali / 2988

Advantages of takaking a bath

स्नान मन में प्रसन्नता का उत्पादक, दुःस्वप्न-नाशक, पवित्रता का अधिष्ठान, अपवित्रता का अपहारक, तेजवर्धक, रूपवर्धक, शत्रुनाशक, कामाग्नि-दीपक, स्त्रियों का मन हरण करने वाला और थकावट दूर करने वाला होता है। स्नान में ये दश गुण होते हैं।

A bath has the following ten qualities :- (1) produces happiness in mind, (2) removes bad dreams, (3) is source of cleanliness, (4) removes dirt, (5) promotes luster (6) increases beauty, (7) destroys enemies and (8) excites passion, (9) has attraction for the minds of ladies and (10) removes fatigue.

(1536)

स्नेहो हि परमघटितो, न वरं सञ्जातविघटितस्नेहः।
हृतनयनो हि विषादी, न विषादी भवति जात्यन्धः॥

प्रेम-बन्धन मत तोड़ो बल्लालकृत भोज चरित्र / 137

Sneho hi paramaghaṭito, na varaṁ sañjātavighaṭitasnehaḥ |
Hṛtanayano hi viṣādī, na viṣādī bhavati jātyandhaḥ ||

Ballālakṛta Bhoja Charitra / 137

Don't untie tied the string of love

जो प्रेम पैदा नहीं किया गया, बाद में नष्ट हो जाने वाले प्रेम से कहीं अच्छा है। जिसकी ठीक-ठाक आँख नष्ट हो गई है, उसे ही दुःख होता है, जन्म से अन्धे को वह दुःख नहीं होता।

Affection, if not born is better than the affection which was first born and then destroyed. He laments whose sight is destroyed but not one who is blind by birth.

(1537)

स्पृशन्नपि गजो हन्ति, जिघ्रन्नपि भुजङ्गमः।
हसन्नपि नृपो हन्ति, मानयन्नपि दुर्जनः॥

खतरनाक वस्तुएँ पञ्च. / काको. / 89

Spṛśannapi gajo hanti, jighrannapi bhujaṅgamaḥ |
Hasannapi nṛpo hanti, mānayannapi durjanaḥ ||

Dreadful things Pañca. / Kāko. / 89

हाथी का स्पर्श मात्र भी मृत्यु का कारण बन सकता है। साँप के सूँघने मात्र से मृत्यु हो सकती है। राजा हँसता हुआ भी मृत्यु का दण्ड दे सकता है। दुष्ट व्यक्ति तो सम्मान करता हुआ भी मार देता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

An elephant by touching, a snake by smelling and a king by laughing may kill any body, and a bad man even by showing respect may kill a person.

(1538)

स्पृहणीयाः कस्य न ते सुमतेः सरलाशयाः महात्मानः।
त्रयमपि येषां सदृशं हृदयं वचनं तथाचारः॥

प्रशंसनीय मानव सुभाषितावलि/246

Spṛhaṇīyāḥ kasya na te sumateḥ,
Saralāśayāḥ mahātmānaḥ।
Trayamapi yeṣāṁ sadṛśaṁ,
Hṛdayaṁ vacanaṁ tathācāraḥ॥

Admirable persons Subhāṣitāvali / 246

कौन ऐसा सुबुद्धि पुरुष होगा जो उन सरल हृदय वाले महात्माओं की प्रशंसा न करेगा, जिनके हृदय, वचन और व्यवहार- ये तीनों ही एक समान हैं?

Who is such a wise man who will not praise such simple minded great souls, whose mind, talk and practice—these three things are similar?

(1539)

स्पृहा हि तावती कार्या, सत्ता भाग्यस्य यावती।
पादप्रसारणं कार्यं, यावत्प्रच्छादनांशुकम्॥

सामर्थ्य के अनुसार करो आभाणकशतक/102

Spṛhā hi tāvatī kāryā, sattā bhagyasya yāvatī।
Pādaprasāraṇaṁ kāryaṁ, yāvatpracchādanāṁśukam॥

Do according to own capacity Ābhāṇakaśatahka / 102

मनुष्य को उतनी ही इच्छा करनी चाहिए जितनी भाग्य की सत्ता हो। पाँव उतने ही फैलाने चाहिएं जितनी लम्बी चादर हो।

One should have desire as much as is written in one's fate. Feet should be extended as long as there is a covering sheet. (Cut your coat according to the cloth).

(1540)

स्फटिकस्य गुणो योऽसौ, स एवायाति दोषताम्।
धत्ते स्वच्छतया छायां, यस्तां मलवतामपि॥

संगति का प्रभाव सुभाषितावलि/894

Sphaṭikasya guṇo yo'sau, sa evāyāti doṣotām।
Dhatte svacchatayā chāyāṁ, yastāṁ malavatāmapi॥

Effect of the company Subhāṣitāvali / 894

स्फटिक का जो गुण है, वही उसका दोष बन जाता है, क्योंकि किसी स्वच्छ वस्तु की छाया पाकर वह सुंदर दीखता है, किंतु मलिन वस्तु की छाया से वह मलिन-ही दीखता है। अर्थात् वह अपनी स्वच्छता के कारण मलिनों की भी छाया अपना लेता है।

The merit of the quartz becomes its demerit also. It looks beautiful when it gets the shadow of some clean thing, but it looks dirty when a dirty thing reflects in it.

(1541)

स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी।
यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥

भूमि और गृहपत्नी हमें सुख दें यजु./32/13

Syonā pṛthivi no bhavānṛkṣarā niveśanī।
Yacchā naḥ śarma saprathāḥ॥

May this earth and wife give us happiness Yaju. / 32 / 13

यह पृथ्वी जिस प्रकार काँटों से रहित होकर निवास-योग्य बनकर सबको पर्याप्त सुख देती है,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसी प्रकार परिवार का विस्तार करने वाली विदुषी पत्नी घर के सब संकटों को दूर करके सब प्रकार से इसे सुखद बनाए, जिससे सम्पूर्ण परिवार सुख और शान्ति से रह सके।

As the earth, from where thorns and other obstacles are removed, becomes worth living and men get sufficient facilities from it, in the same way the duty of a well learned house-wife is to remove all problems of the house and to make it pleasing, so that all members of the house live happily and peacefully.

(1542)

स्वधर्मकर्मार्जितजीविकानां
स्वेष्वेव दारेषु सदा रतानाम्।
जितेन्द्रियाणामतिथिप्रियाणां
गृहेऽपि मोक्षः पुरुषोत्तमानाम्॥

मोक्ष का अधिकारी चाणक्यनीतिशास्त्र/2/47

Svadharmakarmārjitajīvikānāṁ,
Sveṣveva dāreṣu sadā ratānām।
Jitendriyāṇāmatithipriyāṇāṁ,
Gṛhe'pi mokṣaḥ puruṣottamānām॥

Deserving salvation Cā. Nītiśā. / 2 / 47

अपने धर्मानुकूल कर्म से जीविका चलाने वाले, अपनी पत्नी में ही सदा अनुरक्त रहने वाले जितेन्द्रिय तथा अतिथि-प्रिय उत्तम पुरुषों के लिए तो घर में ही मोक्ष है, अर्थात् उनका जीवन सुखपूर्ण है।

The good people who earn their livelihood with righteous means, who are attached only to their wives, who have control over their senses and who love the guests, for them, salvation remains in the house. It means that they enjoy a happy life.

(1543)

स्वबाहुबलमाश्रित्य यो हि जीवति मानवः।
स लोके लभते कीर्तिं, परत्र च शुभां गतिम्॥

स्वावलम्बन का लाभ अज्ञात

Svabāhubalamāśritya yo hi jīvati mānavaḥ।
Sa loke labhate kīrtiṁ, paratra ca śubhāṁ gatim॥

Advantage of self dependence Unknown

जो व्यक्ति अपने बाहुबल के भरोसे जीता है, वही संसार में यश को प्राप्त करता है और परलोक में उत्तम पद पाता है।

A man, who lives depending on the strength of his arms, wins fame in this world and worthy condition in the next life.

(1544)

स्वभावं नैव मुञ्चन्ति सन्तः संसर्गतोऽसताम्।
न त्यजन्ति रुतं मञ्जु काक-सम्पर्कतः पिकाः॥

उत्तमजन शुभ स्वभाव नहीं छोड़ते सुभाषितावलि / 294

Svabhāvaṁ nalva muñcanti santaḥ saṁsargato'satām।
Na tyajanti rutaṁ mañju kākasamparkataḥ pikāḥ॥

Good persons protect their good nature Subhāṣitāvali / 294

सज्जन पुरुष दुर्जनों के संसर्ग से अपना सहज स्वभाव नहीं छोड़ते। कौओं के सम्पर्क में आने पर भी कोयलें अपने मधुर स्वर को त्याग नहीं देतीं।

Good persons never abandon their good nature, in spite of remaining in the company of bad persons. cuckoos who remain in the company of crows never relinquish their sweet sound.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(1545)

स्वभावो नोपदेशेन शक्यते कर्त्तुमन्यथा।
सुतप्तमपि पानीयं पुनर्गच्छति शीतताम्॥

स्वभाव बदलना कठिन है पञ्च/मित्रभेद/20

Svabhāvo nopadeśena śakyate karttumanyathā |
Sutaptamapi pānīyaṁ punargacchati śītatām ||

Pañca. / Mitrabhe. / 20

To change one's nature is difficult

उपदेश देने मात्र से किसी का स्वभाव नहीं बदला जा सकता। खूब गरम किया हुआ भी पानी फिर ठण्डा हो जाता है।

One's nature cannot be changed only by preaching. Even well-heated water becomes cool again.

(1546)

स्वमर्थं यः परित्यज्य, परार्थमनुतिष्ठति।
मिथ्या चरति मित्रार्थे, यश्च मूढः स उच्यते॥

मूढ़ का लक्षण महाभा./उद्योग./33/31

Svamarthaṁ yaḥ parityajya, parārthamanutiṣṭhati |
Mithyā carati mitrārthe, yaśca mūḍhaḥ sa ucyate ||

Mahābhā. / Udyoga. / 33 / 31

Definition of a fool

जो व्यक्ति अपने कर्त्तव्य को छोड़कर दूसरे का कर्त्तव्य करने लगता है, तथा मित्र के साथ असत्य व्यवहार करता है, वह मूढ़ कहलाता है।

One, who overlooks his own duty and gets entangled in other's duty and who behaves falsely with his friend is called a fool.

(1547)

स्वयं प्रणमतेऽल्पेऽपि, परवायावुपेयुषि।
निदर्शनमसाराणां, लघुर्बहुतृणं नरः॥

कायर मानव का स्वभाव शिशुपालवध/2/50

Svayaṁ praṇamate'lpe'pi, paravāyāvupeyuṣi |
Nidarśanamasārāṇāṁ, laghurbahutṛṇaṁ naraḥ ||

Nature of a coward Śiśupāl. / 2 / 50

जैसे थोड़ी सी वायु के चलते ही निर्बल तिनकों का ढेर अपने आप झुक जाता है, ऐसे ही निम्न कोटि का मनुष्य छोटे–मोटे भी शत्रु को आते देखकर उसके सामने झुककर पराजय स्वीकार कर लेता है।

As even a little blow of wind makes multitude of weak straws kneel down, in the same way, a low-grade man when sees even a little enemy coming towards him, yields against him and accepts defeat.

(1548)

स्वयममृतनिधानो नायकोऽप्योषधीनां,
शतभिषगनुयातः शम्भुमूर्द्धावतंसः।
परिहरति न चैनं राजयक्ष्मा शशाङ्कम्,
हत–विधिपरिपाकः केन वा लङ्घनीयः॥

दुर्भाग्य का परिणाम नराभरण/146

Svayamamṛtanidhāno nāyako'pyoṣadhīnām,
Śatabhiṣaganuyātaḥ Śambhumūrddhāvataṁsaḥ |
Pariharati na cainaṁ rājayakṣmā śaśāṅkam,
Hata-vidhiparipākaḥ kena vā laṅghanīyaḥ ||

Result of bad luck Narābharaṇa / 146

स्वयं में अमृत का आधार, वनस्पतियों का स्वामी, शतशः वैद्यों द्वारा प्रशंसित तथा भगवान् शंकर के मस्तक का सिरमौर होने पर भी चन्द्रमा को क्षयरोग नहीं छोड़ता, अर्थात् वह घटता रहता है। पापी भाग्य की परिणति से कौन बच सकता है?

Even although the moon is a container of nectar, is the lord of herbs, is praised by hundreds of physicians and is the ornament of the forehead

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

of Shiva, still phthisis does not leave it (It decreases in dark nights). Who can escape from the wretched fate?

(1549)

स्वल्पं स्वल्पमपि प्राज्ञैः, कर्तव्यं सुकृतार्जनम्।
पतद्भिर्बिन्दुभिर्जाता, महानद्यः समुद्रगाः॥

पद्मपुराण/14/244

थोड़ा-थोड़ा भी शुभ कर्म महा फलदायक

Svalpaṁ svalpamapi prājñaiḥ, kartavyaṁ sukṛtārjanam।
Patadbhirbindubhirjātā, mahānadyaḥ samudragāḥ॥

Little by little good work leads to happiness Padmapu. / 14 / 244

थोड़ा-थोड़ा करके भी बुद्धिमानों को पुण्योपार्जन करना चाहिए। गिरती बून्दों से ही बनी हुई बड़ी-बड़ी नदियाँ समुद्र तक पहुँच जाती हैं।

Even by doing bit by bit the wise should earn merit. All big rivers are born with falling drops of water by which they are able to reach the sea.

(1550)

स्वशरीरशरीरिणावपि श्रुतसंयोगविपर्ययौ यदि।
विरहः किमिवानुतापयेद्वद बाह्यैर्विषयैर्विपश्चितम्॥

वियोग पर दुःखी नहीं होना चाहिए रघुवंश/8/89

Svaśarīraśarīriṇāvapi śrutasaṁyogaviparyayau yadi।
Virahaḥ kimivānutāpayedvada bāhyairviṣayairvipaścitam॥

Don't feel sad on separation Raghu. / 8 / 89

जब शरीर और जीवात्मा के संयोग और वियोग को श्रुतियाँ बताती हैं, तब ऐसी दशा में सभी का पुत्र-कलत्रादि बाह्य विषयों का वियोग निश्चित ही है। ऐसी दशा में विद्वान् को शोक करने की क्या आवश्यकता है? अतः वियोग होने पर शोक नहीं करना चाहिए।

When the Vedas tell about the separation of the body and the soul certainly, then how can outer things like separation of relatives bring sorrow to the learned man? It means the learned should not be disturbed by separation of anybody.

(1551)

स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु,
स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्वति।
स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु,
स्वस्ति राये मरुतो दधातन॥

हम सर्वत्र कल्याण ही देखें ऋ./10/63/15

Svasti naḥ pathyāsu dhanvasu,
Svastyapsu vṛjane svarvati।
Svasti naḥ putrakṛtheṣu yoniṣu,
Svasti rāye maruto dadhātana॥

May all of us enjoy happiness Ṛg. / 10 / 63 / 15

हे विद्वानो! आप हमारा पथ प्रदर्शन कीजिए ताकि हमारे लिए मार्ग में आने वाले मरु-प्रदेशों में, जल-प्रदेशों में, सुखदायक स्थानों में और सन्तानोत्पादक गृहों में भी कल्याण हो। आप लोगों की श्रेष्ठ शिक्षाओं से धन-प्राप्ति में भी हमारा कल्याण हो।

O learned people! Guide us in such a way, so that we may enjoy welfare in the deserts, in waterful regions and in pleasing places which come in our path. May we have happy life in the houses where children get birth. Your good advices may lead us to earn money for our welfare!

(1552)

स्वस्योन्नतेषु जनितं हृदि कोपवेगम्,
निघ्ने प्रदर्शयति भृत्यजने मनुष्यः।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्वश्रूगतं हृदयवर्धितमात्मकोपम्,
भाण्डे प्रदर्शयति हस्तगते वधूटी ॥

क्रोध दुर्बल पर प्रकट होता है सूक्तिमुक्तावली/50

Svasyonnateṣu janitaṁ hṛdi kopavegam,
nighne pradarśayati bhṛtyajane manuṣyaḥ ।
Svaśrūgataṁ hṛdayavardhitamātmakopam,
Bhaṇḍe pradarśayati hastagate vadhūṭī ॥

Anger is shown on the weaker one Sūktimuktāvalī / 50

अपने से ऊँचे के प्रति जो हृदय में क्रोध का आवेग आता है, उसे मनुष्य अधीनस्थ नौकर-चाकरों पर निकालता है। बहू अपनी सास के प्रति हृदय में संचित क्रोध को अपने हाथ के बर्तन पर निकालती है।

If one has anger against a senior person, he shows his anger against his subordinate ones, like servants. When a bride is angry against her mother-in-law, she expresses it on the pot, she has in her hand.

(1553)

स्वाच्छन्द्यफलं बाल्यं,
तारुण्यं रुचिरसुरतभोगफलम्।
स्थविरत्वमुपशमफलं,
परहितसम्पादनं च जन्मफलम् ॥

जन्म का फल — परोपकार कुट्टिनीमत/624

Svācchandyaphalaṁ bālyaṁ,
tāruṇyaṁ rucirasuratabhogaphalam ।
Sthaviratvamupaśamaphalaṁ,
parahitasampādanaṁ ca janmaphalam ॥

To help others is the fruit of life Kuttinīmata / 624

बचपन का फल स्वच्छन्दता है, जवानी का फल आनन्ददायक सम्भोग है, वृद्धावस्था का फल शान्ति है और जन्म लेने का फल दूसरे का हित करना है।

The fruit of childhood is freedom, of youth is enjoyment of sex, of old age is peace and the fruit of taking birth is to help others.

(1554)

स्वायत्तमेकान्तगुणं विधात्रा,
विनिर्मितं छादनमज्ञतायाः ।
विशेषतः सर्वविदां समाजे,
विभूषणं मौनमपण्डितानाम् ॥

मूर्खों का आभूषण – मौन नीतिशतक/6

Svāyattamekāntaguṇaṁ vidhātrā,
Vinirmitaṁ chādanamajñatāyāḥ ।
Viśeṣataḥ sarvavidāṁ samāje,
Vibhūṣaṇaṁ maunamapaṇḍitānām ॥

Silence – The beauty of the illiterate Nītuśatak / 6

परमात्मा ने व्यक्ति के अपने अधीनस्थ और सदा लाभ पहुँचाने वाला ऐसा गुण बनाया है, जो अज्ञानता को ढके रखता है। यह गुण मौन है, जो विद्वानों के समाज में मूर्खों के लिए विशेष रूप से आभूषण बन जाता है।

Creator made a quality which covers ignorance at one's own disposal, which is very useful, especially in the society of all knowing scholars. This (cover of ignorance), is silence which is ornament of the ignorant persons especially.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ह = Ha

(1555)

हरणं च परस्वानां, परदाराभिमर्शनम्।
सुहृदश्च परित्यागस्त्रयो दोषाः क्षयावहाः॥

तीन महान् दोष महाभा./उद्योगपर्व/33/70

Haraṇaṁ ca parasvānāṁ paradārābhimarśanam।
Suhṛdaśca parityāgastrayo doṣāḥ kṣayāvahāḥ॥

Mahābhā. / Udyoga. / 33 / 70

Three dangerous defects

दूसरों के धन को हर लेना, दूसरे की पत्नी से सम्पर्क रखना तथा मित्र को छोड़ देना - ये तीन दोष मनुष्य का नाश कर देते हैं।

The following three demerits destroy a man :- (1) seizing of other's money, (2) contact with other's wife and (3) quitting of one's friend.

(1556)

हर्त्तुर्याति न गोचरं किमपि शं पुष्णाति यत्सर्वदा,
ह्यर्थिभ्यः प्रतिपाद्यमानमनिशं प्राप्नोति वृद्धिं पराम्।
कल्पान्तेष्वपि न प्रयाति निधनं विद्याख्यमन्तर्धनम्,
येषां तान्प्रति मानमुज्झत नृपाः कस्तैः सह स्पर्धते॥

विद्या की विशेषताएँ नीतिशतक/15

Hartturyāti na gocaraṁ kimapi śaṁ puṣṇāti yatsarvadā,
Hyarthibhyaḥ pratipādyamānamaniśaṁ prāpnoti vṛddhiṁ parām।
Kalpānteṣvapi na prayāti nidhanaṁ vidyākhyamantardhanam,
Yeṣāṁ tānprati mānamujjhata nṛpāḥ, kastaiḥ saha spardhate॥

Qualities of knowledge Nītiśataka / 15

जिसे चोर नहीं देख सकता, जो सदा शान्ति प्रदान करता है, याचकों को दिन-रात देने पर भी जो निरन्तर बढ़ता ही जाता है और जो युग-युगान्तरों में भी नष्ट नहीं होता, ऐसा छिपा हुआ धन जिन विद्वानों के पास है, उनके प्रति हे राजा लोगो, अपने अभिमान को त्याग दो। ऐसे विद्या के धनियों के साथ कौन मुकाबला कर सकता है?

The wealth which cannot be stolen by a thief, which is always the source of peace, which increases daily even being given to others day and night and which never ends, is a hidden wealth. O kings! Abandon your pride against the scholars who possess such a wealth. There is nobody who can compete with them?

(1557)

हर्षशोकौ समौ यस्य, शास्त्रार्थे प्रत्ययस्तथा।
नित्यं भृत्यानुपेक्षा च, तस्य स्याद्धनदा धरा॥

भाग्यशाली व्यक्ति हितोपदेश/विग्रह/132 /

Harṣaśokau samau yasya, śāstrārthe pratyayastathā।
Nityaṁ bhṛtyānupekṣā ca, tasya syaddhanadā dharā॥

A lucky person Hitopa. / Vigraha / 132

जो खुशी तथा दुःखमय दोनों दशाओं में समान रहता है, जिसकी आदर्श ग्रन्थों में श्रद्धा है और जो नौकरों की उपेक्षा नहीं करता, उसके लिए सम्पूर्ण पृथ्वी धन देने वाली होती है।

One who is never disturbed with weal and woe and remains equal in both conditions, who has faith in ideal books and who is never careless about his servants, the whole earth gives him wealth.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(1558)

हविराज्यं पुरोडाशः, कुशा यूपाश्च खादिराः।
नैतानि यातयामानि कुर्वन्ति पुनरध्वरे ॥

वा. रामायण/अयोध्या/61/17

यज्ञ के लिए उपयोगी वस्तुएँ

Havirājyaṁ puroḍāśaḥ, kuśā yūpāśca khādirāḥ |
Naitāni yātayāmāni kurvanti punaradhvare ||

Things useful for sacrifices Vā. Rā. / Ayodhyā / 61 / 17

यज्ञ में मोदक आदि की हवि, घृत, भात आदि पुरोडाश, दर्भ और खैर आदि से निर्मित स्तम्भ – ये वस्तुएँ पुरानी स्वीकार नहीं की जाती हैं।

Old oblation of sweets, ghee, cooked rice etc; kuśā grass, and the pillars made of khadira in a fire-sacrifice are not accepted.

(1559)

हस्ती अङ्कुशमात्रेण वाजी हस्तेन ताड्यते।
शृङ्गी लगुडहस्तेन, खड्गहस्तेन दुर्जनः ॥

वश में रखने के साधन चाणक्यनीति/7/8

Hastī aṅkuśamātreṇa vājī hastena tāḍyate |
Śṛṅgī laguḍahastena, khaḍgahastena durjanaḥ ||

Means to control Cā. Nīti / 7 / 8

हाथी को अंकुश से, घोड़े को हाथ से और सींगधारी बैल आदि को हाथ के डण्डे से हाँका जाता है परन्तु दुष्ट को तलवार या किसी अस्त्र-शस्त्र से दूर किया जाता है।

An elephant is driven with an iron hook, a horse with a hand and an animal having horns like an ox with a stick but a bad man is driven away with a sword or any weapon.

(1560)

हस्ती स्थूलतरः स चाङ्कुशवशः, किं हस्तितुल्योऽङ्कुशः,
दीपे प्रज्वलिते प्रणश्यति तमः, किं दीपमात्रं तमः।
वज्रेणापि हताः पतन्ति गिरयः, किं वज्रतुल्यो गिरिः,
तेजो यस्य विराजते स बलवान्, स्थूलेषु कः प्रत्ययः ॥

तेजस्वी की महिमा पञ्च./मित्रभेद/279

Hastī sthūlataraḥ sa cāṅkuśavaśaḥ, kiṁ hastitulyo'ṅkuśaḥ,
Dīpe prajvalite praṇaśyati tamaḥ, kiṁ dīpamātraṁ tamaḥ ?
Vajreṇāpi hatāḥ patanti girayaḥ, kiṁ vajratulyo giriḥ,
Tejo yasya virājate sa balavān, sthūleśu kaḥ pratyayaḥ ||

Superiority of a glorious man Pañca. / Mitrabhe. / 279

हाथी बहुत मोटा होता है, परन्तु वह अंकुश के वश में रहता है। क्या हाथी और अंकुश बराबर हैं ? दीये के जलते ही अंधकार भाग जाता है। क्या अन्धकार दीये जितना छोटा होता है ? वज्र के आघात से पहाड़ गिर जाते हैं। क्या पहाड़ वज्र जितना होता है ? वास्तव में जो तेजस्वी होता है, वही बलवान् है, मोटा या बड़ा होने से कोई महत्त्वशाली नहीं होता।

The elephant is a fat animal which is controlled by a hook, which is very thin. As a burning lantern app-ears, dark-ness disappears. The lantern is very small if compared with dark-ness. Mountains when are struck by a vajra they fall down. The vajra and mountains are not equal in size. So it can be said that really, he is strong, who possesses lustre; fatness has no importance.

(1561)

हस्तौ दानविवर्जितौ, श्रुतिपुटौ सारस्वतद्रौहिणौ,
नेत्रे साधुविलोकनेन रहिते, पादौ न तीर्थं गतौ।
अन्यायार्जितवित्तपूर्णमुदरं, गर्वेण तुङ्गं शिरः,
रे रे जम्बुक! मुञ्च मुञ्च सहसा नीचं सुनिन्द्यं वपुः।

निन्दनीय जीवन चाणक्यनीति/12/4

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Hastau dānavivarjitau śrutipuṭau sārasvatadrauhiṇau,
Netre sādhuvilokanena rahite, pādau na tīrthaṁ gatau ।
Anyāyārjitavittapūrṇamudaraṁ, garveṇa tuṅgaṁ śiraḥ,
Re re jambuka! Muñca muñca sahasā nīcaṁ sunindyaṁ vapuḥ ॥

Condemnable life Cā. Nīti / 12 / 4

"हे सियार के समान तुच्छ वृत्ति वाले मानव, तेरे हाथों ने कभी दान नहीं दिया, तेरे कान उत्तम वाणी सुनने से विद्रोह करते रहे हैं, तेरी आँखों ने कभी महात्माओं के दर्शन नहीं किए, तेरे पाँव चलकर कभी किसी तीर्थ पर नहीं गए और तूने अन्यायपूर्वक धन कमाकर केवल अपना ही पेट पाला है और फिर भी धन के मद में सिर ऊँचा किए हुए है। ऐसे पापी और निन्दनीय शरीर को शीघ्र ही छोड़ दे।" भाव यह है कि ऐसा शरीर किसी काम का नहीं है।

"O man, mean like a jackal, your hands never gave alms, your ears never heard good preachings, your eyes have been deprived from seeing great souls, your feet never went to any pure place, and you have been taking your food with the money which you earned with injustice and still you are keeping your head high in pride with such unjust money. Now it is better for you to destroy your blamable body at once, because it is useless." It means that such blamable body has no value.

(1562)

हिंसाशून्यमयत्नलभ्यमशनं धात्रा मरुत्कल्पितम्,
व्यालानां, पशवस्तृणांकुरभुजस्तुष्टाः स्थलीशायिनः।
संसारार्णवलङ्घनक्षमधियां वृत्तिः कृता सा नृणाम्,
यामन्वेषयतां प्रयान्ति सततं सर्वे समाप्तिं गुणाः॥

मानवों का आहार वैराग्यशतक/10

Hiṁsāśūnyamayatnalabhyamaśanaṁ dhātrā marutkalpitam,
Vyālānāṁ, paśavastṛṇāṅkurabhujastuṣṭāḥ sthalīśāyinaḥ ।
Saṁsārārṇavalaṅghanakṣamadhiyāṁ vṛttiḥ kṛtā sā nṛṇām,
Yāmanveṣayatāṁ prayānti satataṁ sarve samāptiṁ guṇāḥ ॥

The human food Vairāgyaśataka / 10

विधाता ने साँपों के लिए तो हिंसा-रहित और सरलता से प्राप्त होने योग्य वायु को ही भोजन बना दिया है और पशु तिनके तथा अंकुर खाकर संतुष्ट होकर भूमि पर ही विश्राम कर लेते हैं। परन्तु संसार-सागर को पार करने में समर्थ बुद्धि वाले मनुष्यों के लिए ऐसी आजीविका उसने निश्चित की है, जिसे ढूँढते-ढूँढते उनके सभी गुण क्रमशः क्षीण होते चले जाते हैं।

The Creator has made air as the food for snakes which is non-violent and available easily and the animals eating only grass and shoots of trees remain happy and take rest on this earth. But the man whose intellect is able to cross the sea of the world has to investigate his food fixed by the Creator, due to which all his qualities decrease day by day and end at last.

(1563)

हिंस्यात् क्रोधादवध्यांस्तु,वध्यान् सम्पूजयेत् च।
आत्मानमपि च क्रुद्धः, प्रेषयेद् यमसादनम्॥

क्रोध के अवगुण महाभा./वनपर्व/29/6

Hiṁsyāt krodhādavadhyāṁstu, vadhyān sampūjayet ca ।
Ātmānamapi ca krūddhaḥ, preṣayed yamasādanam ॥

Defects of anger Mahābhā./ Vana./ 29 / 6

क्रोध से परिपूर्ण व्यक्ति न मारने योग्य लोगों को मार सकता है और मारने योग्य लोगों को पूज सकता है और अपने आपको भी मार सकता है।

A man full of anger may kill such persons who don't deserve death and respect such persons who deserve death. He may kill himself also.

(1564)

हिताशी स्यान्मिताशी स्यात्, कालभोजी जितेन्द्रियः।
पश्यन् रोगान् बहुकष्टान्, बुद्धिमान् विषमाशनात्॥

भोजन खाने की विधि चरक/निदानस्थान/6/12

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Hitāśī syānmitāśī syāt, kālabhojī jitendriyaḥ ।
Paśyan rogān bahukaṣṭān, buddhimān viṣamāśanāt ॥

Method to take food Caraka / Nidāna. / 6 / 12

बुद्धिमान् मनुष्य प्रतिकूल भोजन को अनेक रोगों और कष्टों का जनक समझता हुआ हितकर और परिमित भोजन समयानुसार करे और अपनी इन्द्रियों को नियंत्रण में रखें।

As a wise man knows that undue food causes many diseases and troubles, so one should take wholesome and limited food and that also at fixed time. Besides, he should have control on his senses.

(1565)

हितैः साधु-समाचारैः, शास्त्रज्ञैर्मतिशालिभिः ।
कथञ्चिन्न विकल्पन्ते, विद्वद्भिश्चिन्तिताः नयाः ॥

सफलता के उपाय पञ्चतन्त्र/मित्रभेद/291

Hitaiḥ sādhusamācāraiḥ, śāstrajñairmatiśālibhiḥ ।
Kathañcinna vikalpante, vidvadbhiścintitāḥ nayāḥ ॥

Method to success Pañca./Mitrabhe./291

हितचिन्तक, सदाचारी, शास्त्रज्ञ और बुद्धिमान् विद्वानों द्वारा सोची और विचारी हुई नीतियाँ किसी भी प्रकार से असफल नहीं हुआ करतीं।

The policies which are consulted by the learned people who are well-wisher, are of high character, well conversant with scriptures, and wise, never fail.

(1566)

हिममापत्सरोजिन्यै, मोहनीहारमारुतः ।
जयत्येको जगत्यस्मिन्, साधुः साधुसमागमः ॥

साधु संगति के लाभ सुभाषितावलि / 209

Himamāpatsarojinyai, mohanīhāramārutaḥ ।
Jayatyeko jagatyasmin, sādhuḥ sādhusamāgamaḥ ॥

Advantages of good company Subhāṣitāvali / 209

आपत्ति रूपी कमलिनी के लिए जो हिमपात सदृश है और मोह रूपी पौधे के लिए जो तुषार पूर्ण वायु के समान नाशक है, ऐसी श्रेष्ठ सत्पुरुषों की संगति ही इस संसार में विजय प्राप्त करती है।

The company of good persons is like a snowfall for the lotus of adversity and the cold air for the plant of attachment. So it is the company of good persons which is victorious in this world.

(1567)

हिरण्यधान्यरत्नानि धनानि विविधानि च ।
तथाऽन्यदपि यत्किञ्चित्प्रजाभ्यः स्युर्महीभृताम् ॥

राजसम्पत्ति प्रजार्थ भोज–प्रबन्ध/43

Hiraṇyadhānyaratnāni dhanāni vividhāni ca ।
Tathā'nyadapi yatkiñcitprajābhyaḥ syurmahībhṛtām ॥

King's wealth for subjects Bhojapra. / 43

राजाओं के पास जो सोना, अन्न, रत्न और अनेक प्रकार के धन तथा और भी जो कुछ होता है, वह सब प्रजा के लिए ही होता है।

The things which a king possesses, like gold, corns, jewels and different kinds of wealth and all other things, they are really for his subjects.

(1568)

हीनाङ्गान् अतिरिक्ताङ्गान्, विद्याहीनान् वयोऽधिकान् ।
रूपद्रव्यविहीनांश्च, जातिहीनांश्च नाक्षिपेत् ॥

आक्षेप न करने योग्य मनु./4/141

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Hīnāṅgān atiriktāṅgān, vidyāhīnān vayo'dhikān |
Rūpadravyavihīnāṁśca, jātihīnāṁśca nākṣipet ||

Not deserving remarks Manu. / 4 / 141

न्यून अंग वाले, अधिक अंग वाले, विद्या से रहित, आयु में बड़े, सौन्दर्य और धन से रहित तथा निम्न जाति के लोगों पर कभी कटाक्ष नहीं करना चाहिए।

One should not remark badly against those, who have less or extra organs, who have no education, who are elder in age, who are deprived of beauty and money and who possess a lower caste.

(1569)

हीनप्रज्ञो दौष्कुलेयो नृशंसो,
दीर्घं वैरी क्षत्रविद्यास्वधीरः ।
एवंधर्मानापदः संश्रयेयुः,
हीनवीर्यो यश्च भवेदशिष्टः ॥

आपत्तियों का आश्रय महाभा./उद्योग./32/18

Hīnaprajño dauṣkuleyo nṛśaṁso,
Dirghaṁ vairī kṣatravidyāsvadhīraḥ |
Evaṁdharmānāpadaḥ saṁśrayeyuḥ,
Hīnavīryo yasca bhavedaśiṣṭaḥ ||

Shelter of adversities Mahābhā. / Udyoga. / 32 / 18

निम्न प्रकार के लोग सदा संकटों से घिरे रहते हैं :- (1) कम बुद्धि वाला, (2) नीच कुल में उत्पन्न, (3) क्रूर, (4) लम्बी शत्रुता वाला, (5) क्षत्रियों की विद्याओं में अकुशल, (6) कम वीरता वाला और (7) असभ्य।

Following kinds of people always face troubles :- (1) having less intellect, (2) born in a lower family, (3) cruel, (4) having long enmity, (5) inefficient in the arts of kúatriyas, (6) having less bravery and (7) uncivilized.

(1570)

हीयते हि मतिस्तात, हीनैः सह समागमात् ।
समैश्च समतामेति, विशिष्टैश्च विशिष्टताम् ॥

जैसा संग कैसा रंग कवितामृतकूप / 7

Hīyate hi matīstāta, hīnaiḥ saha samāgamāt |
Samaiśca samatāmeti, viśiṣṭaiśca viśiṣṭatām ||

Birds of same feathers flock together Kavitāmṛtakūpa / 7

हे प्रिय! नीचों की संगति से मनुष्य नीच बन जाता है, अपने जैसों की संगति से वैसा ही बना रहता है और विशेष व्यक्तियों की संगति से वह विशेषता प्राप्त कर लेता है।

Dear! A man living in the company of lower persons becomes low, and of equal persons remains as he is but when he lives in the company of good persons, he also becomes good.

(1571)

हृदयेष्वेव तिष्ठन्ते वेदा ये नः परं धनम् ।
वत्स्यन्त्यपि गृहेष्वेव, दाराश्चारित्ररक्षिताः ॥

वा. रामायण./अयोध्या/45/25

वेदों और स्त्रियों के स्थान

Hṛdayeṣveva tiṣṭhante Vedāḥ ye naḥ paraṁ dhanam |
Vatsyantyapi gṛheṣveva, dārāścāritrarakṣitāḥ ||

Vā. Rā. / Ayodhyā / 45 / 25

Places for Vedās and ladies

वेद जो हमारे परम धन हैं, वे तो हमारे हृदयों में प्रतिष्ठित हैं और हमारी स्त्रियाँ अपने चरित्र-बल से अपने घरों में भी सुरक्षित रह लेंगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

The Vedas which are our best wealth, remain always in our minds and our ladies which are of high character will remain protected with their strength of character in their houses.

(1572)

हृदि विद्ध इवात्यर्थं यया सन्तप्यते जनः।
पीडितोऽपि हि मेधावी न तां वाचमुदीरयेत्॥

कठोर वाणी त्याज्य है कामन्दकीयनीतिसार/3/24

Hṛdi viddha ivātyarthaṁ yayā santapyate janaḥ।
Pīḍito'pi hi medhāvī na tāṁ vācamudīrayet॥

Kāmandkīya. / 3 / 24

Keep off harsh words

बुद्धिमान् व्यक्ति पीड़ित होने पर भी उन शब्दों का उच्चारण न करे, जिनसे कोई दूसरा मन में इस तरह सन्तप्त हो जाए, मानो उसे बींध डाला गया हो।

A wise man, even much troubled, should not use such words which may cause such deep anguish to another as if he has been pierced.

(1573)

हे जिह्वे! कटुकस्नेहे मधुरं किं न भाषसे?
मधुरं वद कल्याणि! लोकोऽयं मधुरप्रियः॥

मीठा बोलो चाणक्यनीति/3/132

He jihve! Kaṭukasnehe madhuraṁ kiṁ na bhāṣase?
Madhuraṁ vada kalyāṇi! Loko'yaṁ madhurapriyaḥ॥

Speak sweet Cā. nīti / 3 / 132

अरी कड़वी चीजों से प्यार करने वाली जिह्वा तू मीठा क्यों नहीं बोलती? हे कल्याणी! मीठा बोल। यह संसार मिठास को ही पसन्द करता है।

O my tongue! It may be that you love bitter things, but still why do you not speak sweet? O well-wisher, speak sweet. This world likes only sweet things.

(1574)

हे पाथोद यथोन्नतं हि भवता दिग् व्यावृता सर्वतो,
मन्ये धीर! तथा करिष्यसि खलु क्षीराब्धितुल्यं सरः।
किन्त्वेष क्षमते न हि क्षणमपि ग्रीष्मोष्मणा व्याकुलः,
पाठीनादिगणस्त्वदेकशरणस्तद्वर्ष तावत्कियत्॥

परोपकारी से आशा भोजप्रबन्ध/214

He pāthoda yathonnataṁ hi bhavatā dig vyāvṛtā sarvato,
Manye dhīra! Tathā kariṣyasi khalu kṣīrābdhitulyaṁ saraḥ।
Kintveṣa kṣamate na hi kṣaṇamapi grīṣmoṣmaṇā vyākulaḥ,
Pāṭhīnādigaṇastvadekaśaraṇastadvarṣa tāvat kiyat॥

Bhojapra. / 214

Expectation from the helpers

हे मेघ! तुमने ऊँचे उठ कर सारी दिशाओं को घेर लिया है। हे धीर! ऐसा प्रतीत होता है कि तुम बरस कर सरोवर को क्षीरसागर के समान बना दोगे। परन्तु जलचरों का यह समूह ग्रीष्म की गर्मी से व्याकुल होकर बड़ी कठिनाई से जीवन धारण कर रहा है। उसे तो केवल तुम्हारा ही भरोसा है। अतः इसी क्षण कुछ तो बरसो।

O cloud! You have covered all the directions with your arising. O full of patience, I think that you must make this tank like a sea with your water. But the fish and all other aquatic creatures are much disturbed with the heat of the summer and are living with great difficulty. Only you are their support. So you must pour some water just now.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मञ्जुल-मञ्जूषा
के
1574 सुभाषितों
की
क्रम-सूची

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कार्य (Works) : 512, 537.

परमात्मा से सम्बन्ध (Relation with God) : 695, 786.

ईश्वर-भक्त के गुण और कार्य (Qualities and works of a devotee) : 433, 453, 454, 640, 641, 655, 656, 667, 794, 1293.

भेद (Kinds) : 315.

पात्रता का महत्त्व (Importance of capacity) : 910.

पवित्रता के साधन (Means of purity) : 15, 47, 48, 203, 227, 676, 677, 760, 1303.

पवित्रता के लाभ (Advantage of purity) : 607.

3. कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य (To be done or not to be done)

कर्त्तव्य (To be done) : 7, 8, 9, 14, 15, 16, 17, 24, 43, 63, 65, 66, 70, 74, 83, 92, 109 110, 115, 120, 124, 145, 153, 171, 190, 198, 199, 223, 225, 226, 255, 260, 272, 278, 284, 288, 296, 320, 344, 353, 355, 368, 372, 381, 401, 425, 473, 477, 494, 502, 506, 509, 510, 549, 556, 559, 560, 564, 598, 601, 613, 624, 626, 638, 658, 659, 666, 740, 763, 764, 770, 771, 802, 835, 851, 932, 950, 968, 973, 1027, 1039, 1093, 1107, 1115, 1126, 1128, 1146, 1206, 1267, 1300, 1302, 1361, 1365, 1388, 1406, 1413, 1416, 1418, 1432, 1436, 1437, 1438, 1536, 1549, 1562, 1568.

अकर्त्तव्य (Not to be done) : 5, 7, 13, 14, 23, 28, 35, 56, 60, 61, 62, 63, 67, 79, 86, 94, 146, 149, 164, 165, 199, 215, 223, 256, 291, 297, 298, 301, 317, 318, 324, 332, 546, 560, 777, 803, 807, 818, 853, 893, 947, 955, 1092, 1133, 1155, 1212, 1248, 1527, 1552.

कार्यों के भेद (Kinds of works) : 1018.

शुभ कर्मों के लाभ (Advantages of good works) : 21, 529.

कर्मों के फल (Results of works) : 386, 426, 434, 435, 436,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

570, 620, 727, 811, 940, 1038, 1057, 1140, 1159, 1182, 1208, 1242, 1272, 1390, 1398, 1510.

भोगों से हानि (Disadvantages of passons) : 122, 541, 825.

4. कामनाएँ (Desires)

शुभ गुणों की (Of good merits) : 101, 102, 181, 211, 254, 274, 275, 279, 280, 294, 408, 555, 635, 657, 758, 759, 765, 767, 773, 952, 960, 1025, 1051, 1105, 1106, 1122, 1127, 1194.

ऐश्वर्य की (Of prosperity) : 91, 218, 258, 263, 271, 277, 281, 295, 781, 1243, 1326.

शुभ कर्मों की (Of good deeds) : 18, 70, 163, 219, 302, 354, 1082.

कामनाओं की वृद्धि (Addition of desires) : 253, 934, 963.

स्वास्थ्य की (Of health) : 1288.

भ्रष्टाचार से बचने की (To remain off corruption) : 1327.

उत्तम परिवेश की (Of good environment) : 1356, 1380

पृथ्वी से कल्याण की (Of welfare from land) : 1444, 1541.

ईश्वर भक्ति की (Of God's devotion) : 1453.

सबके कल्याण की (Of welfare for all) : 1482, 1551.

5. गुण और अवगुण (Merits and demerit)

प्रशंसनीय (Admirable) : 1, 40, 51, 71, 72, 84, 89, 90, 95, 125, 151, 159, 160, 161, 175, 176, 177, 178, 187, 190, 192, 193, 201, 257, 348, 380, 392, 406, 415, 437, 440, 446, 452, 457, 478, 485, 514, 516, 517, 518, 519, 526, 536, 537, 539, 540, 544, 545, 554, 633, 647, 648, 654, 691, 701, 702, 703, 704, 705, 706, 707, 708, 709, 713, 714, 716, 719, 722, 723, 754, 755, 772, 775, 780, 795, 808, 809,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

7. जीवन की दशाएँ (States of life)

वृद्धावस्था (Old age) : 22, 147, 408, 515, 566, 567, 1006, 1044, 1273, 1282, 1348.

जीवन की परिवर्तनशीलता (Changeability of life) : 105, 129, 172, 173, 208, 229, 443, 458, 590, 604, 671, 673, 1136.

भय के कारण (Causes of fear) : 183, 1045.

दुःख के कारण (Causes of sufferings) : 230, 243, 441, 451, 460, 672, 787.

संसार कर्म-क्षेत्र (World, a working place) : 308.

मृत्यु के बाद साथी (Companion after death) : 390, 424, 793.

शक्तियों की सीमा (Limit of capacities) : 1338.

स्वभाव (Nature) : 445, 836, 1047, 1163, 1507, 1545.

जन्म और मृत्यु की अटलता (Surity of birth and death) : 631, 738, 1142, 1445.

विभिन्नता (Differences) : 954.

8. दान (Charity)

धन देने के पात्र (Deserving charity) : 10, 139, 970.

पात्रों को न देने का फल (Loss due to not giving to the deserving) : 721.

धन देने के अपात्र (Not deserving charity) : 46, 718.

दाता को फल (Advantages to giver) : 323, 714.

दाता का महत्त्व (Importance of a giver) : 496, 712, 1362.

दान का महत्त्व (Importance of charity) : 543, 593, 722, 723, 724, 725, 850, 1532.

मार्ग देने योग्य (Way to be left for) : 597, 925.

दान के भेद (Kinds of charity) : 711, 820, 1037.

सबसे उत्कृष्ट दान (Best charity) : 820.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

9. परिवेश (Environment)

नदियों का (Of rivers) : 299.

देश का (Of the country) : 336, 568.

वर्षाकाल का (Of teh rainy season) : 981.

10. पुरुषों के भेद (Kinds of men)

ज्ञानी (Knowledgeables) : 11, 152, 197, 239, 337, 350, 479, 428, 542, 592, 649, 799, 861, 875, 876, 882, 909, 910, 956, 964, 974, 982, 984, 1071, 1149, 1158, 1183, 1184, 1192, 1265, 1325, 1371, 1412, 1446.

अज्ञानी (Fools) : 11, 69, 78, 152, 200, 305, 964, 1110, 1188, 1214, 1252, 1359, 1379, 1385, 1429, 1505, 1546.

सज्जन (Gentlemen) : 32, 85, 87, 114, 117, 209, 249, 349, 359, 565, 888, 892, 904, 924, 977, 989, 996, 1056, 1061, 1322, 1378, 1399.

संगति का प्रभाव (Effect of a company) : 162, 247, 478, 484, 600, 670, 745, 746, 747, 757, 929, 1015, 1065, 1068, 1097.

दुर्जन (Bad persons) : 68, 73, 85, 179, 180, 409, 428, 430, 438, 439, 447, 479, 531, 533, 548, 571, 596, 610, 646, 745, 748, 749, 750, 888, 926, 986, 989, 996, 1008, 1202, 1352, 1474, 1476, 1524, 1533, 1561.

महापुरुष (Great men) : 49, 152, 156, 175, 282, 450, 479, 489, 499, 572, 612, 616, 682, 708, 723, 761, 807, 849, 870, 872, 881, 1028, 1320, 1490, 1513, 1514, 1518.

निन्दनीय (Condemnable) : 2, 3, 6, 12, 27, 37, 38, 44, 45, 53, 55, 57, 100, 119, 127, 132, 136, 144, 188, 191, 232, 249, 360, 375, 395, 485, 486, 492, 505, 547, 577, 580, 589 594, 602, 634, 636, 679, 732, 739, 743, 753, 756, 779, 782, 783, 798, 806, 838, 878, 891, 900, 911, 928, 930, 949, 957, 966, 976, 990, 997, 1003, 1021, 1022, 1063, 1072,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राष्ट्र–रचना (Basis of nation) : 1026.

राष्ट्र–विनाश के कारण (Causes of a fall of nation) : 391, 1042.

राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य (Duties for the nation) : 1205.

नीति के भेद (Kinds of policies) : 213, 599, 665, 699, 913, 1043, 1084, 1085, 1156, 1254, 1450, 1486, 1501, 1559

निन्दनीय मन्त्री आदि (Condemnable) : 1417.

दण्डनीय (Punishable) : 1068.

माया का प्रयोग (Use of crookedness) : 1084.

मन्त्रणा के योग्य या अयोग्य (Fit or not fit for consultation) : 153, 364, 1472.

विश्वास के अयोग्य (Not to be trusted) : 503, 842, 848, 854, 855, 1020, 1104.

गोपनीय (To be hidden) : 231, 715, 730, 815, 852, 1055, 1064.

संधि के योग्य (Fit for treaty) : 357.

प्रशंसनीय शासक (Admirable ruler) : 1189, 1190, 1222, 1241, 1257, 1557.

नीच शासक (Bad ruler) : 387, 449, 481, 696, 1114, 1177, 1207, 1209, 1218, 1219, 1384.

मन्त्री (Ministers and secretaries etc.) : 289, 402.

नियुक्तियाँ (Employments) : 432, 469, 1534.

दूत और गुप्तचर (Messengers and spies) : 497, 569.

मध्यस्थ (Arbitrator) : 523.

निन्दनीय स्थान (Unfit place for living) : 886, 918, 1229.

शासक का महत्त्व (Importance of the ruler) : 1152.

प्रजा का कर्त्तव्य (Duty of the subjects) : 1239.

शासक का प्रभाव (Effect of the ruler) : 1240.

आपद्धर्म (Duties is adversities) : 1117, 1358.

धन का उपभोग (Enjoyment of riches) : 1366, 1367.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

13. राष्ट्र-रक्षा (Defence)

सेनापति के गुण और कार्य (Qualities and works of the commander) : 263, 507, 897.

सैनिकों के गुण और कार्य (Qualities of warriors and their works) : 142, 339, 370, 398, 414, 1460.

सुरक्षा की विधियाँ (Methods of defence) : 1014.

14. वस्तुएँ (Things)

प्रशंसनीय (Admerable) : 972, 983, 1000, 1166, 1167, 1168, 1232, 1276, 1278, 1279, 1280, 1296, 1298, 1307, 1317, 1323, 1324, 1339, 1340, 1341, 1382, 1401, 1404, 1405, 1425, 1442, 1451, 1452, 1454, 1455, 1458, 1464, 1473, 1487, 1488, 1489, 1490, 1508, 1515, 1576, 1531, 1535, 1553, 1566, 1571.

निन्दनीय (Condemnable) : 978, 1000, 1169, 1201, 1276, 1278, 1279, 1280, 1401, 1425, 1456, 1537, 1558, 1569.

त्याज्य (To be given up) : 1277, 1283, 1335, 1426.

ग्राह्य (Adoptable) : 1330, 1427.

अवगुणों से भी लाभ (Advantages even due to demerits) : 1349.

शनैः शनैः कर्त्तव्य (To be done slowly) : 1368.

15. विधाता या काल और उसके कार्य (Forturne or time and its works)

दुष्परिणाम (Bad results) : 112, 166, 222, 417, 423, 462, 463, 465, 467, 468, 491, 500, 504, 535, 551, 576, 614, 841, 975, 1205, 1353.

सत्परिणाम (Good results) : 112, 236, 833.

श्रेष्ठ कार्य (Good works) : 118, 427.

शक्ति और नियन्त्रण (Power and control) : 330, 427, 498, 637, 831, 1100, 1165, 1223, 1230, 1244, 1245.

विचित्रताएँ (Pecularities) : 562, 605, 922, 1076, 1080, 1226, 1459, 1548.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विश्राम के लाभ (Advantuges of rest) : 202.

व्यायाम और प्राणायाम के लाभ (Advantages of exercise etc.) : 269, 1275, 1351, 1374, 1410.

ओषधियाँ और औषध (Herbs and medicines) : 419, 420, 421, 980, 1185.

दिवा-स्वप्न (Day sleep) : 594, 595, 733.

दंश का उपचार (Treatment of stinging) : 618.

संशोधन का लाभ (Use of luxative) : 624.

इनसे बचें (Avoid these ones) : 697.

स्वास्थ्य-रक्षा के साधन (Means of health) : 720, 731, 1046, 1369.

रोग के कारण (Causes of diseases) : 743.

आयुर्वेद के लक्ष्य (Aims of Ayurved) : 801.

वैद्यों का व्यवसाय (Livelihood of doctors) : 834.

निषिद्ध (Rejected) : 846, 856, 859, 865, 883, 917, 1013.

भ्रमण (Walking) : 1040.

पथ्य का महत्त्व (Importance of prevention) : 1318.

खाद्यान्नों का महत्त्व (Superiority of edibles) : 1331.

वैद्य का कार्य (Duty of a doctor) : 1350.

स्नान (Bath) : 1387.

निन्दनीय वैद्य (Condemnable doctor) : 1523.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची
(Reference Books)

पूर्ण शब्दों के संक्षिप्त रूप - हिन्दी तथा अंग्रेजी में

(विशेष — जिनके पूरे शब्द दिए हैं, उन्हें संक्षेप में नहीं दिया गया। वैयक्तिक सुभाषितों के नाम भी यहाँ नहीं है।)

पूर्ण शब्द	संक्षिप्त हिन्दी	Brief Eng.
अग्निपुराण	अग्निपु.	Agniipu.
अत्रिस्मृति	अत्रिस्मृ.	A. Smṛ
अथर्ववेद	अथर्व.	Atharva.
अभिषेक नाटक	अभिषेकना.	Abhinā
अमरुकशतक	अमरुक.	A. śata.
अष्टांगहृदय.	अष्टांग.	Aṣṭaṅga
आभाणकशतक	आभाणक.	Abhānaka.
उत्तररामचरित	उ. राम.	U.Rāma.
उद्भट श्लोक	उद्भट श्लोक	Udbhaṭa
ऋग्वेद	ऋ., ऋग्	Ṛg.
ऐतरेय ब्राह्मण	ऐतरेय.	Aitareya
कठोपनिषद्	कठोप.	Kaṭho
कवितामृतकूप	—	—
कादम्बरी	—	—
कामन्दकीय नीतिसार	कामन्दकीय	Kamand.
काव्यादर्श	—	—
काशीखण्ड	—	—
किरातार्जुनीय	—	—
कुट्टिनीमत	—	—
केनोपनिषद्	केनोप.	Kenopa
क्षेमेन्द्र उपदेशप्रकरण	क्षेमेन्द्र.	Kṣemendra.
गाथा-सप्तशती	गाथा. सप्त.	Gāthā. Sapta
चर्तुर्वर्ग-संग्रह	चतुर्वर्ग	Caturvarga
चरकसंहिता	चरक	Caraka
चर्पटपंजरिका	चर्पटपंज.	Carpata.
चाणक्य राजनीति	चाण. राज.	Ca. Rāja
चाणक्य राजनीतिदर्पण	चाण. दर्पण	Cā. Darpaṇa
चाणक्य राजनीतिशास्त्र	चाण. शास्त्र	Cā. Śāstra
चाणक्य शतक	चाण. शत	Cā. Śāstra
चार्वाक	— —	— —
चौरपञ्चाशिका	— —	— —
जाबालयोग	— —	— —
जाबालोपनिषद्	जाबालोप.	Jābālopa.
ज्ञानार्णव	—	—
तैत्तिरीयोपनिषद्	तैत्तिरीयो.	Taittiriyo
दक्षस्मृति	—	—
दर्पदलन	—	—
देवीपुराण	देवीपु.	Devipur
देवीभागवत पुराण	देवीभाग.	Devibhag.
नराभरण	—	—
नर्ममाला	—	—
नलचम्पू	—	—
नारदस्मृति	—	—
निरुक्त	—	—
नीतिकल्पतरु	नीतिकल्प.	Nītikalpa
नीति द्विषष्टिका	नीतिद्वि.	Nītidvi.
नीतिप्रदीप	—	—
नीतिशतक	नी. शत.	Nī. Śata.
नीतिशास्त्र	नी. शास्त्र	Nī. Śā
पञ्चतन्त्र	पञ्च.	Pañca.
पञ्चरात्र	पञ्च. श.	Pañca.
पद्मपुराण	पद्मपु.	Padmapu.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अमृतेनेव संसिक्ता, चन्दनेनेव शीतला ।
दिव्या मञ्जुल-मञ्जूषा, संस्कृतसूक्ति-चर्चिता ॥

Amṛteneva saṁsiktā, candaneneva śītalā ।
Divyā mañjula-mañjūṣā, saṁskṛitasūkti-carcitā ॥

If I was asked what is the greatest treasure which India possesses and what is her finest heritage, I would answer unhesitatingly, it is the Sanskrit language and literature and all that it contains. This is a magnificent inheritance and so long as this endures and influences the life of our people, so long will the basic genius of India continue.

Pt. Jawaharlal Nehru
13 February 1949

neeta

neeta prakashan
A-4, Ring Road, South Extension -1
New Delhi - 110049 INDIA

ISBN 81-7202-579-3
9788172025793

Price 550/-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अमृतेनेव संसिक्ता, चन्दनेनेव शीतला ।
दिव्या मञ्जुल-मञ्जूषा, संस्कृतसूक्ति-चर्चिता ॥

Amṛteneva saṁsiktā, candaneneva śītalā ।
Divyā mañjula-mañjūṣā, saṁskṛitasūkti-carcitā ॥

If I was asked what is the greatest treasure which India possesses and what is her finest heritage, I would answer unhesitatingly, it is the Sanskrit language and literature and all that it contains. This is a magnificent inheritance and so long as this endures and influences the life of our people, so long will the basic genius of India continue.

Pt. Jawaharlal Nehru
13 February 1949

neeta prakashan
A-4, Ring Road, South Extension -1
New Delhi - 110049 INDIA

ISBN 81-7202-579-3

Price 550/-

MANJUL - MANJUSHA

मञ्जुल-मञ्जूषा

SHASTRI - PANDEY

MANJUL - MANJUSHA

मञ्जुल-मञ्जूषा

(सुभाषित - कोष)

SHASTRI - PANDEY

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh